दास्तान ईमान फ़रोशों की

2

अलतमश

दास्तान ईमान फ़रोशों की

दूसरा हिस्सा

सलाहुद्दीन अय्यूबी के दौर की हक़ीक़ी कहानियाँ औरतों और मर्दों की मारका आराइयाँ

अलतमश

فرید بکڈپو (پرائیویٹ) لمٹیڈ
FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.
NEW DELHI-110002

नाम किताबः

दास्तान ईमान फ़रोशों की

❁ दूसरा हिस्सा ❁

लेखकः **अलतमश**

सफ़हातः 324

पहला एडीशनः जौलाई 2004

पेशकशः

मुहम्मद नासिर ख़ान

فرید بُک ڈپو (پرائیویٹ) لمیٹڈ

FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.

Corp. Off.: 2158, M.P. Street, Pataudi House Darya Ganj, N. Delhi-2
Phones: 23289786, 23289159 Fax: 23279998 Res.: 23262486
E-mail: farid@ndf.vsnl.net.in Websites: faridexport.com, faridbook.com

Name of the book

Dastan Iman Faroshon ki (Part II)

Author: **Altamash**

Ist Edition: **July 2004**
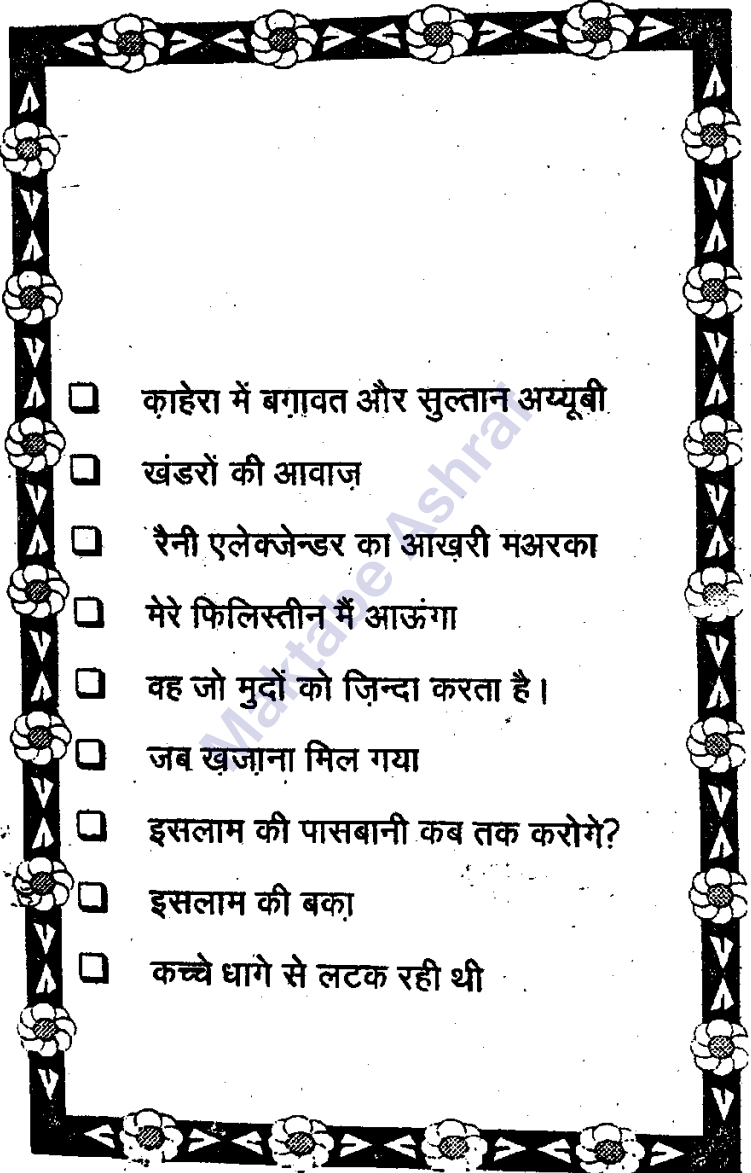
Pages: 324 Size: 20x30/16

Printed at: Farid Enterprises, Delhi-6

आ़लमे इस्लाम के नौजवानों के नाम

तआरुफ़

आप ने इस वलवला अंगेज़ सिलसिले का पहला हिस्सा पढ़ लिया है। दूसरा हिस्सा पेश किया जारहा है।

हम "दासतान ईमान फ़रोशों की" के मुसन्निफ़ मोहतरम अलतमश के ममनून हैं जिन्हों ने "हिकायत" में मुजाहिद आज़म सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी के दौर व कीमती कहानियों का यह सिलसिला शुरू किया। इन में आप को वह तमाम लवाज़मा मिलें गे जो आप के और नौजवान नसल के मुतालिबों की तसकीन करें गे। साथ साथ उस क़ौमी जज़बे को भी ज़िन्दा व बेदार करें गे जिसे हमारा दुशमन पुर लज़्ज़त और तख़रीबी कहानियों के ज़रिए मारने की कोशिश कर रहा है।

सलाहुद्दीन अय्यूबी के दौर में जितनी इस्लाम कुश साज़िशें हुई हैं उतनी और किसी दौर में नहीं हुई। सलीबियों को मैदाने जंग में सलाहुद्दीन अय्यूबी को शिकस्त देना आसान नज़र न आया तो उन्हों ने मुसलमान ओमरा और सालारों को हाथ में लेने के लिए जहां बे दरेग़ ज़रो जवाहरात इस्तेमाल किए वहां ग़ैर मामूली तौर पर हसीन और चालाक ईसाई और यहूदी लड़कियों का भी इस्तेमाल किया। इस के साथ ही मुसलमानों की नौजवान नसल की किरदार कुशी के निहायत दिलकश ज़राऐ इख़्तयार किये।

उस दौर का दुश्मन आज भी हमारा दुश्मन है और अभी तक वही पुर लज़्ज़त हरबे इस्तेमाल कर रहा है। ये कहानियां खुद भी पढ़ें, बच्चों को भी पढ़ाऐं। अगर आप सच्चे दिल से फहश, उरयां और मुख़र्रबुलअख़लाक कहानियों से अपने बच्चों को महफ़ूज़ करना चाहते हैं तो ये क़िताब घर लेजाईऐ। आज फिर तारीख़ अपने आप को दोहरा रही है और सलाहुद्दीन अय्यूबी को पुकार रही है।

हमारी हिन्दी किताबें

क़ुरआन मजीद
बुख़ारी शरीफ़
तारीख़े इस्लाम
आफ़ताबे आलम
मारका-ए-करबला
फ़ज़ाइले आमाल
कससुल अंबिया
मरने के बाद क्या होगा?
सोलह सुरह शरीफ़
रसूलुल्लाह सल्ल० की दुआऐं
रसूलुल्लाह सल्ल० की नातें सलाम
मेरी नमाज़
मुसलमान बीवी
मुसलमान ख़ाविंद
सय्यदा का लाल
आमना का लाल
क़यामत कब आऐगी?
आमाले क़ुरआनी
बहिश्ती ज़ेवर
नक़्शे सुलेमानी
हिदायतुल मुसलिमीन
मसनून व मक़बूल दुआएं
तर्कीब नमाज़
छः बातें
औरतों की नमाज़
मर्द औरतों के मख़सुस मसाइल
मियां बीवी के हुक़ूक़
पन्ज सूरः शरीफ़
यासीन शरीफ़
दुआऐं गन्जुल अर्श
नूरानी रातें
मौत की याद
इस्लाम क्या है?
हिन्दी अरबी टीचर
आईन-ए नमाज़
आईन-ए अमलियात
रूहानी इलाज
अमलियात व तावीज़ात सुबहानी
वज़ाइफ़े व अमलियात हमानी
मिलादे अकबर
पारए अम्म मुर्तजम
जन्नत की कुन्जी
दौज़ख़ का खटका
सिरत ग़ौसुल आज़म
ख़ाब नामा फ़ाल नामा
हिन्दी उर्दू टीचर

क़ाहेरा में बग़ावत और सुल्तान अय्यूबी

फिलिस्तीन अभी सलीबियों के पांव तले कराह रहा था। युरो शलम सलीब पर लटका हुआ था। इस मुकद्दस शहर से खून रिस रहा था। वहां के मुसलमान जो सलीबियों के ज़ालिमाना शिकंजे में आए हुए थे। पिस रहे थे, तड़प रहे थे और सलाहुद्दीन अय्यूबी का इन्तज़ार कर रहे थे। उन तक ये इत्लाऐं पहुंच चुकी थीं कि सुल्तान अय्यूबी फिलिस्तीन की सरज़मीन में दाख़िल हो चुका है और शूबक का किला मुसलमानों के कब्ज़े में है। ये उन के लिए खुश ख़बरी की बात थी मगर ये खुशख़बरी पैग़ामे अजल साबित हूई। सलीबियों ने शूबक की शिकस्त का इन्तकाम युरोशलम और दीगर शहरों और कस्बों के मुसलमानों से लेना शुरू कर दिया था। वह मुसलमानों को मुरदह कर देना चाहते थे ताकि वह जासूसी न कर सकें और हमले की सूरत में सलाहुद्दीन अय्यूबी की मदद करने की जुरत न करें। सब से ज़्यादा मज़ालिम करक के मुसलमानों पर तोड़े जारहे थे। शूबक के बाद करक एक बड़ा किला था जिस पर सलीबियों को बहुत नाज़ था. ऐसा ही नाज़ उन्हें शूबक पर भी था मगर उन के नाज़ को सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी की निहायत अछी चाल और उस के मुजाहिदीन की शुजाअत ने रेत के ज़र्रों की तरह बिखेर दिया था। अब सलीबी करक को मज़बूत कर रहे थे। वहां के मुसलमान बाशिंदों पर तशद्दुद एक एहत्याती तदबीर थी। सलीबियों को ये वहम था कि मुसलमान जासूसी करते हैं। चुनानचे उन्हों ने शूबक की तरह मुश्तबह मुसलमानों को बेगार कैम्प में फेंकना शुरू कर दिया था।

"फिलिस्तीन की फ़तह हमारा एक अज़ीम मकसद है मगर करक से मुसलमानों को निकालना उस से भी अज़ीम तर मक़सद होना चाहिऐ।" जासूसों के एक गिरोह का सरबराह सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी को बता रहा था। वह तलअत चंगेज़ नामी एक तुर्क था जो छः जासूसों को शूबक से भागते हुए ईसाई बाशिन्दों के बहरूप में करक ले गया था। वह तीन महीनों बाद वापस आया था। सुल्तान अय्यूबी को अली बिन सुफ़ियान की मौजूदगी में वहां के हालात बता रहा था। सलीबी जो भाग कर करक पहुंचे थे उस के मुतअल्लिक उस ने बताया कि खासी बुरी हालत में है और फौरी तौर पर लड़ने के क़ाबिल नहीं। इस हारी हुई फ़ौज ने करक में जाते ही मुसलमानों का जीना हराम कर दिया। अन्धा धुन्द गिरिफतारियां शुरू हो गईं। मुसलमान औरतों ने बाहर निकलना छोड़ दिया है। जहां इंसान ऐसा मवेशी बन जाता है जो बोल नहीं सकता। सुबह के अंधेरे से रात के अंधेरे तक काम करता, सूखी रोटी और पानी पर ज़िन्दा रहता है। "हम ने वहां ज़मीन दोज़ मुहिम चलाई है कि जितने मुसलमान जवान हैं या लड़ने की उम्र में हैं वह यहां से निकल कर शूबक पहुंचें और फ़ौज में भरती

होजाएं ताकि कमक का इन्तज़ार किए बगैर करक पर हमला किया जासके।" चंगेज़ तुर्क ने कहा। "हमारी मौजूदगी में कुछ लोग वहां से निकल आए थे लेकिन ये काम एक तो इस लिए मुश्किल है कि हर तरफ सलीबी फौज फैली हुई है और दूसरी मुश्किल ये है कि करक पर हमला किया जाए और मुसलमानों को निजात दिलाई जाए।"

इस से पहले एक और जासूस ये इत्तेला देचुका था कि सलीबियों की स्कीम अब यह है कि सुलतान अय्यूबी करक का मुहासरा करेगा तो सलीबियों की एक फ़ौज, जो एक सलीबी हुक्मरान रेमांड के ज़ेरे कमान है, अक़्ब से हमला करे गी। सुल्तान अय्यूबी ने पहले ही से अपने फौजी सरबराहों से कह दिया था कि सलीबी अक़्ब से हमला करेंगे। इस सूरते हाल के लिए उसे ज़्यादा फौज की ज़रूरत थी। उस ने चंगेज़ को रुखसत करके अली बिन सुफ़ियान से कहा– "जज़बात का तक़ाज़ा यह है कि हमें फ़ौरन करक पर हमला करदेना चाहिए। मैं अछी तरह जानता हूं कि वहां के मुसलमान किस जहन्नम में पड़े हुए हैं लेकिन हक़ाइक का तक़ाज़ा यह है कि अपनी सफों को मुस्तहकम किए बगैर आगे एक क़दम न उठाओ। ज़र्ब उस वक़्त लगाओ जब तुम्हें यक़ीन हो कि ज़र्ब कारी होगी। हम उन औरतों और बच्चों को नहीं भूल सकते जो दुश्मन के हाथों ज़लीलो ख्वार और क़त्ल हो रहे हैं। ये हमारे गुम्नाम शहीद हैं। ये क़ौम की अज़ीम क़ुर्बानी है। मैं उन्हीं की आबरू और उन्हीं के वक़ार के लिए फिलिस्तीन लेना चाहता हूं। अगर मेरा मक़्सद ये न हो तो जंग का मक़्सद डाका और लूट मार रह जाता है। वह क़ौम जो अपनी उन बच्चियों और बच्चों को भूल जाए जो दुश्मन से इन्तक़ाम लेने की बजाए एक दूसरे को धोके और फरेब देते हैं। उन के हाकिम क़ौम को लूटते और ऐशो इश्रत करते हैं और जब दुश्मन उन्हें कम्ज़ोर पाकर उन के सर आजाता है तो खोखले नारे लगा कर क़ौम को बेवकूफ बनाते और दुश्मन के साथ दरपरदह सौदा बाज़ी करते हैं। वह अपने मुल्क का कुछ हिस्सा और उस हिस्से की आबादी निहायत राज़ दाराना तरीक़े से दुशमन के हवाले करके बाक़ी मुल्क में अपनी हुक्मरानी क़ाएम रखते हैं। फिर वह और ज़ियादा एश और लूट खसूट करते हैं कियोंकि वह जानते हैं कि दुशमन उन्हें बख़शेगा नहीं ... ये ऐश चन्द रोज़ा है, लिहाज़ा क़ौम की रगों से खून का आखरी क़तरा भी जल्दी जल्दी निचोड़ लो।"

सुलतान अय्यूबी ने एसी मुतअदद क़ौमों के नाम लिये और कहा ..." वह तौसीअ पसन्द थे। उन के सामने इस के सिवा कोई मक़सद न था कि सारी दुन्या पर बादशाही करें और दुनिया भर की दौलत समेट कर अपने क़दमों में ढेर लगा लें। उन्होंने दुसरी क़ौमों की इसमत दरी की और उन की अपनी बेटियां और बहनें दूसरों के हाथों बेआबरू हुईं उन क़ौमों के हुकमरान पराई ज़मीन पर हलाक हुएऔर उन का नाम व निशान किस ने मिटाया? उन क़ौमों ने जो ग़ैरत मन्द थीं और जिन्हें एहसास था कि उन की ज़मीन को और उन की इसमत को दुश्मन ने नापाक किया है और उस का इन्तक़ाम लेना है। हम भी हमला आवर हैं सलेबी भी हमला आवर हैं, लेकिन हम में फर्क है। वह दूर दराज़ मुल्कों से हमारे मज़हब का नाम व निशान मिटाने आयें हैं। वह इस लिये आये हैं कि मुसलमान औरतों को अपनी गिरफत में लेकर उनके बत्न से सलीबी पैदा करें। हम उन की आबरू के दिफा के लिये हमला आवर हुए

है। अगर हम कुफर के तूफान को न रोकें । तो हम बेग़ैरत हैं और हम मुसलमान नही, और अगर इसलाम का दिफा इस अन्दाज़ से करें कि दुशमन का हमला पसपसा कर दिया है तो ये सबूत है हमारी बुज़दिली का । दिफा का तरीका ये होता है कि दुशमन तुम्हें मारने के लिये नियाम से तलवार निकालने लगे तो तुम्हारी तलवार उसकी गरदन काट चूकी हो। वह कल हमले के लिये आने वाला हो तो आज उस पर हमला कर दो।"

"मेरे पास इसका एक ही इलाज है कि मुहतरम नुरुद्दीन ज़न्गी से कुम्क मांगी जाए।" अली बिन सुफ़ियान ने कहा। "और करक पर हमला कर दिया जाए।"

"ये भी नुकसान देह होगा ...." सुलतान अय्यूबी ने कहा......."ज़न्गी के पास इतनी फ़ौज मौजूद रहनी चाहिये कि सलीबी हमारे अकब पर हमला करें तो ज़न्गी उन के अकब पर हमला कर सकें। मैं मदद मांगने का काएल नहीं। इसकी बजाए मैं ये भी कर सकता हूं कि करक में छापे मार दस्ते भेज कर सलीबीयों का जीना हराम किये रखूं। मुझे उम्मीद है कि हमारे जासूस छापा मार सलीबीयों की जड़ें चूहों की तरह काटते रहेंगे मगर उस की सज़ा वहां के बेगुनाह बाशिन्दों को मिलेगी। छापा मार तो अपना काम करके इधर उधर हो जाएंगे। वह हर किस्म की सख्ती और मुसीबत झेल सकते हैं। हमारे निहत्ते बहन भाई कुचले जाएगें। अलबत्ता इस तजवीज़ पर गौर करो कि वहां से मुसलमान कुम्बों को निकालने का कोई खुफया इन्तज़ाम किया जाए। हमले में कुछ वक़्त लगेगा। हमें खासी भरती मिल गई है। करक के जवान भी आगए हैं और आरहे हैं।"

❖

"मैं महसूस करने लगा हूं कि हमें यहां के मुसलमान बाशिन्दों के मुतअल्लिक अपनी पालीसी में तबदीली करनी पड़ेगी।" सलीबीयों के मोहक्माए जासूसी और सुरागरसानी के सर बराह हरमन ने कहा। किला करक में चन्द एक सलीबी बादशाह, उन के फ़ौजी कमाण्डर और इन्तमज़ामिया के हुकाम जमा थे। वह जुं जुं अपनी हारी हुई फ़ौज को देख रहे थे, उन की अकल पर गुस्सा और इन्तकाम गालिब आता जारहा था। वह शिकस्त को बहुत जल्दी फतेह में बदलना चहते थे। उन में उनकी इन्टेली जिन्स का सरबराह हरमन, वाहिद आदमी था, जो ठण्डे दिल से सोंचता और अकल की बात करता था। वह देख रहा था कि उस के सलीबी भाई करक के मुसलमान बाशिन्दों के साथ कैसा वहशियाना सुलूक कर रहे हैं। उस ने कहा......"आप ने यही सुलूक शोबक के मुसलमानों के साथ रवा रखा था। इस का नतीजा ये था कि उन्होंने वहां मुसलामानों के कैम्प से उस मुसलमान फ़ौजी को भगा दिया जिसे हम ने ख़तरनाक जासूस समझ कर कै़द मे डाल दिया था। मुझे यक़ीन है कि उसे वहां के मुसलमानों ने पनाह दी थी। वह क़िले की अन्दुरूनी हालात और दिफा को देख गया था। उस के अलावा सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने हमारे किले की दीवार जो तोड़ी थी इस में अन्दर के मुसलमानों का भी हाथ था। वह आप के इस सुलूक से इस कदर तंग आये हुए थे कि उन्होंने जान की बाज़ी लगाकर मुसलमान फ़ौज की मदद की और जब फ़ौज का हरावल दस्ता अन्दर आया तो मुसलमानों ने उनकी रहनुमाई की।"

"इसी लिये हम करक के मुसलमानों का दम ख़म तोड़ रहें हैं कि उन मे जज़्बा और

हिम्मत ही न रहे".... एक सलीबी सालार ने कहा।

"इसके बजाए अगर आप उन्हें अपना दोस्त बना लें तो वह आपकी मदद करेंगे।" हरमन ने कहा। "अगर आप मुझे इजाज़त दें तो मैं प्यार और मुहब्बत से उन्हें उनका मज़हब तबदील किये बगैर सलीब का गरवीदा बना लुंगा। मै उन्हीं मुसलामानों को मुसलमानों के ख़िलाफ़ लड़ा दुंगा।"

"तुम भूल रहे हो हरमन !" एक मशहूर सलीबी बादशाह रिमाण्ड ने कहा......" तुम चन्द मुसलमानों को लालच देकर उन्हें ग़द्दार बना सकते हो मगर हर एक मुसलमान को इसलामी फौज के ख़िलाफ़ नही कर सकते । पूरी कौम ग़द्दार नही हो सकती। हरमन! तुम उन लोगों पर इतना भरोसा न करो। हम उन्हें दोस्त नही बनाना चाहते। हम उनकी नस्ल ख़त्म करना चाहते हैं। कोई भी ग़ैर मुस्लिम किसी मुसलमान के साथ मुहब्बत करता है तो उस का मतलब य है कि वह इसलाम से मुहब्बत करता है जब्कि हमारा मकसद इसलाम का खातमा है । करक मे, अकरा और अदीसा में और जहां भी सलीब की हुक्मरानी है मुसलमानों को इस कदर परीशान करदें कि वह मर जाऐं या वह सलीब के आगे घुटने टेक दें।"

" मुसलमानों के साथ जो कुछ हो रहा है वह सलाहुद्दीन अय्यूबी को बाकायदा मालूम होता जा रहा है ।" हरमन ने कहा।....."आप उसे उकसा रहे हैं कि वह करक पर जल्दी हमला करे। आप ये भूल रहें हैं कि हमारी फौज फौरी हमले के आगे ठहरने के काबिल नहीं।"

" उस का हल ये नहीं कि हम यहां के बाशिन्दों को सर पर बिठालें ।" फिलप आगसिटस ने कहा। " आप लोग मुसलमान जनगी कैदियों को अभी तक पाल रहे हैं । इन्हें क़त्ल क्यों नही कर देते?"

" इस लिये कि अय्यूबी हमारे कैदियों को क़त्ल कर डालेगा ।"गेआफ लोजिबान ने जवाब दिया......" हमारे पास मुसलमानों के कुल तीन सौ इकसठ जनगी क़ैदी हैं। मुसलमानों के पास हमारे बारह सौ पचहत्तर क़ैदी हैं।

"क्या हम एक मुसलमान को मारने के लिये चार सलीबी नही मरवा सकते?" .... आगसटिस ने कहा ......" हमारे वह क़ैदी जो सलाहुद्दीन के पास हैं बुज़दिल थे। वह लड़ने कि बजाए क़ैद हुए। वह जिन्दा रहना चाहते थे। वह मुसलमानों के हाथों मर जाऐं तो अच्छा है । तुम इतमिनान से मुसलमान क़ैदियों को ख़त्म कर दो।"

" क्या मुसलमान बाशिन्दों के साथ दरिन्दो जैसा सूलूक करके और मुसलमान जनगी क़ैदियों को क़त्ल करके तुम सलाहुद्दीन अय्यूबी को शिकस्त दे दोगे?" सालार के ओहदे के एक सलीबी ने कहा। ....." इस वक़्त फ़ौज के साथ मसला ये है कि अय्यूबी पेश कदमी कर आया तो उसे किस तरह रोकेंगें और उस से शोबक का क़िला वापस किस तरह लिया जा सकता है। करक के तमाम मुसलमानों को क़त्ल करदो। फिर क्या होगा? अय्यूबी की तरह तुम अपनी नज़र में वुसअत क्यों नही पैदा करते। क्या हरमन बता सकता है कि मिस्र मे उसकी ज़मीन दूज़ कारवाईयां किया हैं और कामयाबी कितनी है?"

" तवक्को से ज़्यादा हरमन ने जवाब दिया। " अली बिन सुफ़यान सलाहुद्दीन अय्यूबी के

साथ शोबक में हैं काहरा से उस की ग़ैर हाज़री से बहुत फाइदा उठााया है। काहिरा के नाएब नाज़िम मुसलिहुद्दीन को फातमियों ने अपने साथ मिला लिाग है। मुसलिहुद्दीन अय्यूबी का मोतमदे खास है लेकिन अब हमारे हाथ में है । फातमियों ने दर परदा एक ख़लीफ़ा मुकर्रर कर दिया है। वह काहिरा के अन्दर से बग़ावत और सूडानियों के हमले का इन्तजार कर रहें है। हमारे फौजी अफ़सर सूडान में सूडानियों की फ़ौज तय्यार कर रहें हैं काहिरा में जो सुलतान अय्यूबी फौज छोड़ आया है, उसके दो नाएब सालार हमारे हाथ में खेल रहे हैं। उधर से सूडानी हमला करेंगे । काहिरा में बग़ावत होगी और फातमी अपनी ख़िलाफ़त का एलान कर देगें।"

"तुम लोग ये भूल रहे हो कि सलाहुद्दीन अय्यूबी इस क़दर तेज़ है कि करक पर हमला करके काहिरा पहूंच जाएगा।" रिमाण्ड ने कहा। ......" उसे यहीं रहने के लिये मजबूर करने के लिये ज़रूरी है कि उसे यहीं उलझा लिया जाये। इस का एक तरीका यह है कि उसका रास्ता रोक लिया जाये और उसका एक भी सिपाही काहिरा तक न पहूंच सके।"

"मुझे सौ फिसद उम्मीद है कि काहिरा मे जो उसकी फ़ौज है वह उसके काम नही आसकेगीं" हरमन ने कहा।...."मेरे आदमियों ने फौज में इस किस्म के कूक पैदा कर दिये हैं कि इन्हें काहिरा में पीछे छोड़ कर माले ग़नीमत से महरूम कर दिया गया है और शोबक की सैकड़ों इसाई लड़कियां सलाहुद्दीन अय्यूबी के हाथ आई हैं जो उसने वहां फ़ौज के हवाले कर दी हैं। मेरी कामयाबी ये है कि मैंने मुसलमान फौजी हुक्काम के ही मूंह में ये अफवाहें डाल कर उनकी फ़ौज में फैलाई हैं। मैंने एसे हालात पैदा कर दियें हैं कि काहिरा की तमाम फ़ौज सूडानीयों का साथ देंगी और सलाहुद्दीन अय्यूबी को बग़ावत रफा करने के लिये यहां से तमाम अफवाज ले जानी पड़ेगी। मगर यह फौज उस वक़्त वहां पहुंचेगी जब काहिरा एक बार फिर फातमी ख़िलाफ़त की गद्दी बन चुका होगा और वहां सूडान की फ़ौज काबिज़ होगी । ज़रूरी नहीं कि हम यहां सलाहुद्दीन अय्यूबी पर हमला करें और उसे रोकें। हम उसे भटकने के लिये खुला छोड़ देंगे। हम उसे मुसलमानों के हाथों मरवाएगें।" हरमन ने जोर देकर कहा। "आप अभी तक मुसलमान की नफसियात नहीं समझ सके। यही वजह है कि मेरी बाज कारगर बातें नज़र अन्दाज़ करदेते हैं। मुसलमान अगर फ़ौजी हो और उसको टरेनिंग के दौरान उसके दिमाग़ में ये बिठा दिया जाए कि वह मुल्क और कौम का मुहाफिज़ है तो वह मुल्क और कौम की खातिर जान कुरबान करदेता है । दुनिया की बादशाही उसके कदमों पर रख दो, वह सिपाही रहना पसन्द करेगा कौम से गद्दारी नही करेगा। अगर उसी फ़ौज में जिन्सी लज़्ज़त ,शराब नोशी और ओहदों की ख़्वाहिश पैदा करदो तो वह अपना मज़हब भी दाव पर लगा देता है। हमने जिन मुसलमान फ़ौजी हुक्काम को अपने साथ मिलाया है उनमें यही खामियां पैदा की थीं और कर रहें हैं।"

"मगर फौजी को गद्दार बनाना इतना आसान नही जितना इन्तिज़ामिया के हुक्काम को अपने हाथ मे लेना आसान है।" हरमन ने कहा। " इन्तिज़ामिया के हर हाकिम में उमरा और वुज़रा की सफ़ मे आने की श्दीद ख्वाहिश होती है। उन लोगों पर बादशाह बन्ने का खब्त

सवार है । मुसलमानों की तारीख़ देखें। उनके रसूल (सलअम) के बाद ये लोग ख़िलाफ़त पर एक दूसरे से लड़ते रहे। उनके जरनलयों ने निहायत दियानत दारी से अपना काम जारी रखा। वह दूसरे मुल्कों को तहो तेग़ करते रहे और इसलामी सलतनत को वसीअ करते रहे। लेकिन उनके ख़लीफ़ों ने जहां देखा कि फलां जरनल एसा मकबूल हो गया है कि उस की फतुहात की बदौलत कौमे उसे ख़लीफ़ा से ज़्यादा मुक़ाम देने लगी है तो ख़लीफ़ा उसके हव्वारीयों ने उस जरनल को ग़लत अहकाम देकर उसे ज़लील और रुसवा कर दिया। खुद ख़लीफ़ा की गद्दी मुखालीफ़ीने से महफूज़ न रही। मुखालिफीन की निगाह इसलामी सलतनत की वुसअत से हट कर ख़िलाफ़त के हुसूल पर मरकूज़ हो गई। नतीजे में हारते चले गये और उनके फ़तह किये हुए इलाके उनके हाथों से निकलते चले गये। इसी का नतीजा है कि आज हम अरब में बैठे हैं। सलाहुद्दीन अय्यूबी इन्हीं जरनलियों में से है जो सलतनत को उन्हीं सरहदों तक ले जाना चाहता है जहां तक उन जरनैलों ने पहुंचाई थीं। उस शख़्श में खूबी ये है कि वह इन्तिज़ामिया और ख़िलाफ़त की परवाह नही करता। उसने मिस्र की ख़िलाफ़त को अपने इरादों के सामने रुकावट बनते देखा तो ख़लीफ़ा को ही माजूल कर दिया। ये दिलेराना कदम उसने फ़ौजी ताकत और अपनी फहम व फरासत के बल बूते पर उठाया है।"

हरमन बोलता जारहा था। तमाम हुक्मरां और सलीबी कमाण्डर इनहिमाक से सुन रहे थे। वह कह रहा था ...." सलाहुद्दीन अय्यूबी अपनी कौम की इस कमज़ोरी को समझ गया है। कि ग़ैर फ़ौजी कियादत गद्दी की ख्वाहिश मन्द है और ये ख्वाहिश ऐसी है जो ज़न और ज़र परसती और शराब नोशी जैसी आदतें पैदा करती हैं। हमने सिर्फ़ उन फ़ौजी अफ़सरों को हाथ में लिया है जो इकतदार के ख्वाहिश मन्द हैं। इसी लिये हम ज़्यादा तर असर इन्तिज़ामिया के सरबराहों पर डाल रहें हैं। फ़ौज को कमज़ोर करने का तरीका ये है कि उसे लोगों कि नज़रों में रुसवा कर दिया जाये। यह काम मेरा है जो मैं कर रहा हूं। आप शायद मेरी ताईद न करें लेकिन मैं आपको बता देना चाहता हूं कि आप सलाहुद्दीन अय्यूबी को मैदाने जनग में आसानी से शिकस्त नही दे सकते। वह सिर्फ़ लड़ने के लिये नही लड़ता। उसकी अज़्म की बुनयाद एक एसे मनसूबे पर है जिसे उसकी सारी फ़ौज समझती है। उसकी बुन्यादी खूबी यह है कि वह अपने ख़लीफ़ा से या ग़ैर फ़ौजी कियादत से हुक्म नहीं लेता। वह कट्टर मुसलमान है। वह कहता है कि मैं खुदा और कुरआन से हुक्म लेता हूं। मेरे जो जासूस बग़दाद में हैं उन्होंने इत्तिला दी है कि अय्यूबी ने नूरुद्दीम ज़न्गी को साथ मिला कर यहां से इनकलाबी तजावीज़ भेजी हैं जिन पर अमल दर आमद शुरूअ हो गया है। एक यह है कि अमीरे उलमा से ये फतवा सादिर कराया गया है कि ख़िलाफ़त सिर्फ़ एक होगी और ये बुगदाद की ख़िलाफ़त होगी। ये ख़िलाफ़त दूसरे मुमालिक के मुतअल्लिक एहकाम नाफिज़ करने और समझौतों की बात चीत करने से पहले आला फ़ौजी कियादत से मन्जूरी लेगी। जंगी उमूर में फ़ौजी हुक्काम के हाथ में होगें। खलिफा दूर दराज़ इलाकों में लड़ने वाले जरनैलों को कोई हुक्म नही भेज सकता। तिसरे यह कि खलिफा का नाम खुतबे में नही लिया जाएगा और ख़िलाफ़त का असर व रसूख ख़त्म करने के लिये अय्यूबी ने हुक्म जारी करादिया है कि ख़लीफ़ा या

उसके नाएब या कोई किला दार वग़ैरह जब दौरे वगैरह के लिये बाहर निकलेगें तो लोगों को रास्ते मे खड़े होने , नारे लगाने और सलाम करने की इजाजत नही होगी........

" सलाहुद्दीन अय्यूबी ने सब से अहम काम ये किया है कि सुन्नी शीआ तफरका मिटा दिया है ।" हरमन ने कहा। ...." उसने शीओं को फौज और इन्तिज़ामिया में पूरी नुमाइन्दगी दे दी है और निहायत पुरअसर तरीकों से शीआ ओलमा को काएल कर लिया है कि वह एसी रसमें तर्क कर दें जो इसलाम के मुनाफी हैं........... सलाहुद्दीन के ये इन्कलाबी इक्दामात हमारे लिये नुकसान देह है । हम मुसलमानों की इन्हीं खामियों को इसतेमाल करना चाहते हैं। अब हमारी कोशिश यह होनी चाहिये जो दर असल जारी है कि मुसलमानों की इन्तेज़ामी कियादत को सलाहुद्दीन अय्यूबी और उसकी फौज के खिलाफ किया जाए।"

"सिर्फ आज नहीं, हमेशा के लिये।" फल्प आगसिटस जो मुसलमानों का कट्टर दुशमन था बोला।"हमारी अदावत सिर्फ सलाहुद्दीन से नहीं। हमारी जनग इसलाम के ख़िलाफ है। हमारी कोशिश ये होनी चाहिये कि अय्यूबी मर जाए तो ये कौम कोई दूसरा अय्यूबी न पैदा करसके। इस कौम को गलत अकीदों और बेबुनियाद अकीदों के हथियारों से मारो। इन में बादशाह बन्ने का जुनून पैदा करदो। इन्हें अय्याश बनादो और एसी रिवायात पैदा करदो कि ये लोग खिलाफ़त की गदी पर आपस में लड़ते रहें फिर इस खिलाफ़त को इन की फौज पर सवार करदो। मैं यकीन के साथ कहता हूं कि ये कौम एक न एक दिन सलीब की गुलाम होजाएगी। उसका तमद्दुन और उसका मज़हब सलीब के रगं में रंगा होगा। वह बादशाही और खिलाफत के हुसूल के लिये आपस में दस्त व गिरेबां होंगे । और अपने मुख़ालिफीन को दबाने के लिये हम से मदद मागेंगे। उस वक़्त हम में से कोई भी ज़िन्दा न होगा। हमारी रूहें देखेगीं कि मैं ने जो पैशन गोई की है वह हर्फ ब हर्फ सच साबित हुई है। इसलाम की जड़े खोखली करने के लिये यहूदी तुम्हें अपनी लड़कियां पेश कर रहे हैं। उन्हें इसतेमाल करो । यहूदयों को सिर्फ इस लिये अपना दुशमन समझो कि वह युरोशलम को अपना मुकद्दस शहर और फलसतीन को अपना घर समझते हैं। उन्हें कहो कि फलसतीन तुम्हारा है। आख़िर में यह खित्ता हम तुमको ही देंगें। अभी हमारा साथ दो। लेकिन ये इहतियात ज़रूर करना कि यहूदी बहुत चालाक कौम है । उसे जब तुम्हारे तरफ से ख़तरा नजर आया तो तुम्हारे ही ख़िलाफ हो जाएगी। इसकी दौलत और उसकी लड़कियां इसतिमाल करो और उसके एवज़ उन्हें फलसतीन पेश करो ।"

❖

किला शोबक और किला करक से बहुत दूर एक एसा वसीअ ख़ित्ता था जो मिट्टी, रेत और सिल्लों की पहाड़ीयों और उंची नीची चट्टानों में घिरा हुआ था। ये खित्ता कमो बेश ढेढ़ मील वसीअ और चौड़ा था। इस मे बहुत सा इलाका रेतिला मैदानी था और उसमे खड भी थे और कम ऊंची टेकरियां भी। जब सलीबी हुक्मरान और कमांडर इस्लाम की बेख़कनी के मनसूबे बना रहे थे और निहायत पुर कशिश और ख़तरनाक तरीके वजअ कर रहे थे सेहरा का यह खित्ता मैदाने जनग बना हुआ था । हज़ारों प्यादा असकरी घोड़ा सवार और शुतर

सवार भाग दौड़ रहे थे। तलवारें और बरछियों की अन्नयां चमक रही थीं। घोड़ो और ऊंटों की दौड़ से गर्द गहरे बादलों की तरह आसमान की तरफ उठ रही थी। इस गर्द में बरछियां भी उड़ रही थीं तीर भी प्यादा सिपाही घोड़ों से आगे निकल जाने की रफतार से दौड़ने की कोशिश कर रहे थे। घोड़ा सवार खड फलांग रहे थे। इर्द गिर्द पहाड़ियों की चोटियों पर दो दो सिपाही आराम आराम से घूम फिर रहे थे। एक पहाड़ी के दामन में आग के शोले उड़ते और पहाड़ी से टकरा कर भड़कते और बुझ जाते थे। शोरो गुल असमान को हिला रहा था।

सलाहुद्दीन अय्यूबी घोड़े पर सवार एक बुलन्द चट्टान पर खड़ा ये नजारह इनहिमाक से देख रहा था। वह बहुत देर से इस मैदान के इर्द गिर्द की चट्टानों पर घूम रहा था। उस के साथ उसके दो नाएब थे।

" मैं आपको यकीन दिला सकता हूं कि जिस रफतार से सिखलाई हो रही है । नऐ सिपाही चन्द दिनों मे तजरबाकार हो जाऐगें ।" एक नाएब ने कहा। " आप ने जिन सवारों को वह इतना चौड़ा खड फलांगते देखा था। वह सब करक से आए हुए सवार हैं। मैं इन्हें अनाड़ी समझता था। तीर अन्दाजों का मेआर भी अच्छा हो रहा है।"

मैदाने जनग का ये मन्जर दर असल टरेनिन्ग थी जिस के मुतअल्लिक सुलतान अय्यूबी ने बड़े सख्त एहकाम जारी किये थे। इर्द गिर्द से बहुत से नौजवान फौज में भरती किये गए थे। और करक से भी बहुत मुसलमान चोरी छिपे निकल आए थे। ये सुलतान अय्यूबी के जासूसों का कमाल था कि करक से भी जवान हासिल कर लिये थे। शोबक के वह मुसलमान जिन्होंने सलीबीयों का जुल्म व तशद्दुद बरदाशत किया था। जोश व खरोश से सुलतान अय्यूबी की फौज में शामिल हुए थे। उनकी टरेनिन्ग का इन्तेजाम वहीं कर दिया था। सुलतान अय्यूबी उस में जाती दिलचसपी ले रहा था। उसे उसके नाएब यकीन दिला रहे थे कि वह नई भरती को थोड़े से अर्से में पोखता कार बना देंगे।

" सिपाही सिर्फ़ हथियारों के इसतेमाल और जिसमानी फुर्ती से तजर्बाकार नही बन सकता।" सुलतान अय्यूबी ने कहा। अक़्ल और जज़बे का इसतेमाल जरूरी है। मुझे एसी फौज की जरूरत नहीं जो अन्धा धून्द दुशमन पर चढ़ दौड़े और सिर्फ़ हलाक करे। मुझे एसी फ़ौज चाहिये जिसे मालूम हो कि उसका दुशमन कोन है और उसके अजाएम किया हैं। मेरी फ़ौज को इल्म होना चाहिये कि ये अल्लाह की फौज है और अल्लाह की राह में लड़ रही है । जोश व खरोश जो मैं देख रहा हूं बहुत जरूरी है मगर मक़सद वाजेह न हो अपनी हैसियत वाजेह न हो तो हमारा ये जोश ठण्डा पड़ जाता है । उन्हें बताओ और ज़िहन नशीन कराओ कि हम फलसतीन क्यों लेना चाहते हैं इन्हें बताओ कि गद्दारी कितना बड़ा जुर्म है । इन्हें समझाओ कि तुम सिर्फ़ फलसतीन के लिये नही बल्कि इसलाम की तहफुज़ और फरोग़ के लिये लड़ रहे हो और तुम आने वाली नस्लों के लिये लड़ रहे हो। अमली सिखलाई के बाद इन्हें वाज़ दो और उन पर उनकी कौमी अज़मत वाजह करो।"

हर शाम इन्हें वाज़ दिये जाते है सालार आज़म!" एक नाएब ने कहा । " हम इन्हें दरिन्दे और वहशी नही बना रहे।"

"और ये खियाल रखो कि उनके दिलों में कौम की वह बेटियां नक्श करदो जो कुफ्फार के हाथों अगवा और बेआबरू हुई हैं।"सुलतान अय्यूबी ने कहा। "इन्हें कुरआन के वह वरक याद दिलाते रहना जिन्हें सलीबीयों ने पाओं तले मसला था और इन्हें वह मसजिदें याद दिलाते रहना जिनमें कुफ्फार ने मवेशी और घोड़े बान्धे थे और बान्ध रहें हैं बेटी की इज्ज़त और मस्जिद का एहतराम मुसलमान की अज़मत के निशान होते हैं। इन्हें बताओ कि जिस रोज़ तुम असमत और मस्जिद को ज़ेहन से उतार दोगे उस रोज़ इस दुनियां को तुम अपने लिये जहन्नम बना.लोगे और आख़िरत में जो अजाब है उसका तसव्वुर भी नही कर सकते।"

पहाड़ियों पर जो दो दो सिपाही घूम फिर रहे थे वह पहरे दार थे। सलीबीयों के जवाबी हमले का ख़तरा मौजूद था दूर आगे तक फौज मौजूद थी फिर भी टरेनिन्ग के इस इलाके के गिर्द पहरे की जरूरत थी। उन पहरे दारों मे से दो एक चोटी पर जा रहे थे वह रुक गए। उन्हें नीची एक टिकरी पर सलाहुद्दीन अय्यूबी खड़ा नज़र आरहा था। उन की तरफ उस की पीठ थी। फासला दो अढ़ाई सौ गज़ था। एक पहरे दार ने कहा..." कम्बखत की पूरी पीठ हमारे सामने है।अगर यहां से तीर चलाऊं तो उसके दिल के आर पार कर सकता हूं। कया ख्याल है?"

" फिर भाग कर कहां जाओगे ?" उसके साथी ने पूछा।

" हां! " दूसरे ने कहा ....." तुम ठीक कहते हो अगर ये लोग हमें पकड.कर जान से मार डालें तो कोई बात नही। वह ज़िन्दा पकड़कर एसे शिकन्जे में जकडेंगें कि हमें अपने तमाम साथियों के नाम बताने पड़ेगे।"

"ये काम उसके मुहाफिजों को करने दो।" उस के साथी ने कहा। "अगर सलाहुद्दीन को कत्ल करना इतना आसान होता तो ये अब तक जिन्दा न होता।"

"ये काम अब हो जाना चाहिये।" दुसरे ने कहा। " सुना है कि फातमी कहते हैं कि तुम कुछ किये बग़ैर हम से मुहं मांगी रकम लेते जारहे हो।"

'मुझे उम्मीद है ये काम जल्दी हो जाएगा।' उसके साथी ने कहा। "सुना था कि हशिशिन बहुत दिलेर हैं। क़त्ल करने के लिये जान पर खेल जाते हैं। अभी तक उन्होंने कुछ करके तो नही दिखाया है। मैं ये भी जान्ता हूं कि अय्यूबी के मुहाफिज़ दसते में तीन हशिशिन हैं। ये तो उनका कमाल है कि मुहाफिज़ दसतें तक पहुंच गए हैं और किसी को उनकी असलियत का इल्म न हूआ। मगर वह कत्ल कब करेंगे? कमबख़्त डरते हैं।

वह बातें करते आगे चले गए।

❖

मोअर्रिखीन लिखते हैं। कि मिस्र से सलाहुद्दीन अय्यूबी की ग़ैर हाज़री से वहां मुख़ालिफीन की ज़मीन दूज़ सर गरमियां उभर आईं तो सूरत हाल एसी पैदा करदी गई जिसे सिर्फ मोअज्ज़ा संभाल सकता था। ये एक साज़िश थी जो फातमी ख़िलाफ़त की माज़ूली और तख़रीब कारों की गिरफतारी के बाद बजाहिर दब गई थी। लेकिन राख में दबी हुई चिन्गारी की तरह दहकती रही थी। उसकी पुश्त पनाही करने वाले सलीबी थे और उसके अमली

जामा पहनाने वाले वह मुसलमान जोअमा थे जिन पर सुलतान अय्यूबी को भरोसा था। सलीबीयों ने यहूदी लड़कियां हासिल कर ली थीं जो अरब और मिस्र की जबान रवानी से बोलती और अपने आप को हर रंग में ढाल सकती थीं। मिस्र के इन्तेजामिया के मुतअदद हुक्काम इकतदार में हिस्से के या कुल्ली तौर पर खुद मुख़तारी के ख़ाहिश मन्द थे । इन में क़ौमी वकार और जज़्बा ख़त्म हो चुका था। वह हरमों के बादशाह थे। उन लोगों को आलाए कार बनाने वालों में फातमियों ने दानिशमन्दी का सुबूत दिया और उन्होंने हसन बिन सब्बाह के हशिशिन की ख़िदमत भी हासिल कर ली।

उस वक़्त के वकाऐ निगारों ने जिन में असदुल असदी , इबनुल असीर, अबी ज़रा और इबनुल जौज़ी खास तौर पर काबिल जिक्र हैं । लिखते हैं कि सलीबीयों ने सूडानियों को मदद देकर उन्हें मिस्र पर हमला के लिये तय्यार किया था। मिस्र में जो थोड़ी सी फौज थी वह बग़ावत के लिये तय्यार कर दी गई थी। सलाहुद्दीन अय्यूबी के हामी सख्त परीशान थे कि वह कब्ल अज़ वक़्त न पहुंचा तो मिस्र हाथ से निकल जाएगा। उन वकाए निगारों और दो कातिबों की ग़ैर मतबुआ तहरीर से एक कहानी की कड़ियां मिलती हैं। उन में काहिरा के मोहकमाए मालियात के एक बड़े नाज़िम ख़िज़रुल ह्यात का ज़िक्र मिलता है। वह ख़ज़ाने का भी ज़िम्मेदार था। दुसरे इलाकों के जज़िये और तावान वगैरह की रकमें , ज़कात, सजा के तौर पर वसूल होने वाले जुर्माने, अतियात और निज़ामते मिस्र का तमाम तर हिसाब किताब और पैसा मालियात के मुहकमे में आता और खर्च होता था। ये बड़ा ही अहम और नाज़ुक मुहकमा था। उसके नाज़िम का काबिले एतमाद होना बहुत ज़रूरी था। ये सुलतान अय्यूबी की खुशनसीबी थी कि नाज़िम ख़िज़रुल ह्यात दीन दार मुसलमान था।

एक दिन वह बाहर से आया । घर में दाखिल हुआ तो अन्धेरे को चीरता हुआ एक तीर आया जो ख़िज़रुल ह्यात की पीठ में उतर गया और दिल तक जा पहुंचा । उसकी करबनाक आवाज़ सुनकर मुलाज़िम बाहर आए। मशअल की रौशनी में ख़िज़र को ओन्धे मूहं पड़े देखा। इत्तिफाक से किसी ने देख लिया कि खिज़र की दायें हाथ की उंगली ज़मीन पर थी । और मिट्टी पर उसने उन्गुली से कुछ लिखा था। वह मर चूका था । ज़मीन पर उसने उन्गुली से लिखा था " मुसलेह" ....'ह' पूरी नहीं हुई थी । उस हर्फ की गोलाई के निस्फ में जाकर उसकी जान निकल गई होगी। लाश उठा ली गई और उस लफज़ को महफूज़ रखा गया। एक आदमी को कोतवाल ग़ियास बलबीस को बुलाने दौड़ादिया गया। यही कहा जा सकता था कि ख़िज़र ने मरते मरते मिट्टी पर अपने कातिल का नाम लिखा है। ग़ियास बलबीस कोतवाल भी था और मिस्र की तमाम तर पुलिस का हाकिमे आला। ये भी सलाहुद्दीन अय्यूबी का काबिले एतमाद हाकिम था। अली बिन सुफ़ियान की तरह शहरी जराएम का माहिर सुरागरसां था।

बलबीस ने आते ही ज़मीन पर लिखे हुए लफज़ " मुसलेह' को गौर से देखा। इतने में शहर का नाएब नाज़िम मुसलेहुद्दीन ख़िज़र की कत्ल की ख़बर सुन कर आ गया । बलबीस ने उसे देखते ही ज़मीन पर पावं रगड़कर " मुसलेह' का लफज़ मिटा दिया। मुसलेहुद्दीन

चूंकि शहर का नाएब नाज़िम था इस लिये कोतवाली का मोहकमा उसके मातेहत था। उस बलबीस को हुक्म के लहजे में कहा।" कातिल का सुराग़ सूबह से पहले मिल जाना चाहिये। मैं ज़्यादा इन्तेजा़र नहीं करुंगा। "..... बलबीस ने उसे यकीन दिलाया कि कातिल को जल्द पकड़ लिया जाएगा। वह वहां से चला गया। रात को ही बलबीस ने खिज़रुल हयात के नाएब मुआविन और उसके दफतर में उन अफराद को बुलाया जो मकतूल के करीब रहते थे और बता सकते थे कि कत्ल के रोज़ उनकी सरगरमियां किया रहीं। उन लोगों से उन्हें पता चला कि आज शहरी इन्तेजा़मिया के हुक्कामे आला का एक इजलास था जिस में फौज का कोई नुमाईन्दा नही था। खिज़र का नाएब उस की मदद के लिये इजलास में शरीक था। इजलास में मालियात के सिलसिले में फौज के इखराजात जेरे बहस आऐ तो खिज़र ने कहा कि मिस्र में बाज इखराजात रोकने पड़ेगें क्योंकि अमीरे मिस्र सलाहुद्दीन अय्युबी ने शोबक में बहुत सी फौज भरती की है जिस के लिये कसीर रकम की ज़रूरत है।

नाएब नाज़िम मुसलिहुद्दीन ने उनकी मुखालिफत की और कहा कि फौज के इखराजात ग़ैर ज़रूरी हैं। मज़ीद फौज भरती करने कि बजाए हमें तवज्जा इस फौज के मसाएल की तरफ़ देनी चाहिये जो पहले ही हमारे लिये महंगा मसला बनी हुई है। उसने बताया कि मिस्र में जो फौज है उसमे बेइतमिनानी और बदअमनी पाई जाती है। शोबक से जो माले ग़नीमत हाथ आया है उस से उस फौज के लिये कोई हिस्सा नहीं भेजा गया। खिज़रुल हयात ने कहा।... " क्या आपको मालूम नही कि अमीरे मिस्र ने माले ग़नीमत तकसीम करने की बिदअत खत्म करदी है? ये निहायत अच्छा फैसला है माले ग़नीमत के लालच से लड़ने वाली फौज का कोई कौमी जज़बा और मज़हबी नज़रिया नही होता।"

इस मसले पर बहस तुरश कलामी में बदल गई। मुसलेहुद्दीन ने यहां तक कह दिया कि अमीरे मिस्र मिस्री सिपाही के साथ इतना अच्छा सुलूक नही कर रहा जितना शामी और तूर्क सिपाहियों के साथ करता है। उस ने गुस्से में कुछ और नारवां बातें कह दीं जिन के जवाब में खिज़र ने कहा.... "मुसलेह! तुम्हारी ज़बान से सलीबी और फातमी बोल रहें हैं।" इस पर इजलास हंगामें की सूरत इखतियार कर गया। और बरखास्त हो गया। खिज़रुल हयात के मुआविन और नाएब ने बताया कि इजलास के बाद मुसलेहुद्दीन खिज़रुल हयात के दफतर में आया। वहां फिर उन में गरमा गरमी हुई। मुसलेहुद्दीन इसपर खिज़र को काएल करने की कोशिश कर रहा था कि मिस्री फौज मुतमईन नहीं। उसने फिर वही बातें दुहराई जो उसने इजलास में कही थी। खिज़रुल हयात ने कहा ..... " अगर एसा ही है तो मैं ये मसला अमीरे मिस्र के सामने रख दुगां लेकिन मैं ये ज़रूर लिखुगां कि तुम ने इजलास में तमाम शोराका को बावर कराने की कोशिस की थी। कि अमीरे फौज में इमतिज़ी सुलूक कर रहा है और मैं ये भी लिखुंगा कि तुम ने हमें ये यकीन दिलाने की भी कोशिश की कि सलाहुद्दीन अय्यूबी ने शोबक का माले ग़नीमत शामियों और तुर्कियों में तकसीम कर दिया है और मै। ये राए ज़रूर दुंगा कि तुम ने जो ये इलजा़मात आएद किये हैं उन्हें सच साबित करने की भी कोशिश की है और फौज में जो अफवाहें दुशमन फैला रहा है उनके मुतअल्लिक तुम ने कहा है कि ये अफवाह

नहीं बल्कि ये सच है।"

खिज़रुल हयात के नाएब ने बयान दिया कि मुसलेहुद्दीन जब खिज़र के कमरे से निकला तो उसके मूहं से ये अलफाज़ सुने गये थे ..." अगर तुम ज़िन्दा रहे तो सब कुछ लिख कर सलाहुद्दीन अय्युबी के आगे रख देना।"

ग़ियास बलबीस ने फौरी तौर पर मुसलेहुद्दीन से कुछ पूछना मुनासिब न समझा। एक तो उसकी हैसियत बहुत ऊंची थी और दूसरे ये कि बलबीस उसके खिलाफ मज़ीद शहादत जमा करना चाहता था। उसे डर ये था कि अगर उसने मुसलेहुद्दीन पर बेगैर ठोस शहादत के हाथ डाला तो ये अकदाम उसके अपने लिये मुसीबत बन जाएगा। अगर सलाहुद्दीन अय्यूबी काहरा में मौजूद होता तो बलबीस उसकी पुश्त पनाही हासिल करलेता। वह इतना समझ गया था कि ये क़त्ल ज़ाती रंजिश का नतिजा नहीं। खिज़रुल हयात ज़ाती रंजिश रखने वाला हाकिम नहीं था। रात को उसने बन्द एक के दरवाज़े खटखटाए और तफतीश में लगा रहा। अपने खुफिया आदमी को भी सरगरम कर दिया लेकिन उसे कोई कामयाबी नहीं मिली।

❖

बाद की शहादतों और वाकिआत से जो वारदात सामने आई वह कुछ इस तरह बनती है कि क़त्ल की रात से अगली रात मुसलेहुद्दीन अपने घर गया तो पहली बीवी ने उसे कमरे में बुलाया। उसने बीस अशरफियां मुसलेहुद्दीन के आगे करते हुए कहा....." खिज़रुल [illegible] का क़ातिल ये बीस अशरफियां वापस कर गया है और कह गया है कि तुम ने पचास अशरफियां और सोने के दो टुकड़े कहे थे। मैं ने तुम्हारा काम कर दिया है जो तुम ने सिर्फ़ बीस अशरफियां भेजी हैं। ये मैं तुम्हारी बीवी को वापस दे चला हूं। तुम ने मुझे धोका दिया है। अब एक सौ अशरफियां और सोने के दो टुकड़े लूंगा। अगर दो दिन तक माल न पहुंचा तो वैसा ही तीर जो दिल में उतरा है तुम्हारे भी दिल में उतर जाएगा।"

मुसलेहुद्दीन का रंग उड़ गया। संभल कर बोला।...." तुम क्या कह रही हो? कौन था वह? मैने किसी को खिज़रुल हयात के क़त्ल के लिये ये रकम नही दी थी।"

" तुम खिज़र के कातिल हो।" बीवी ने कहा। ...." मुझे मालूम नही की क़त्ल की वजह क्या है। इतना जरूर मालूम है कि तुम ने उसे क़त्ल किया है।"

ये मुसलेहुद्दीन की पहली बीवी थी। उसकी उमर ज़्यादा नही थी। बमुशकिल तीस साल की होगी। खासी खूबसूरत औरत थी। कोई एक माह कबल वह घर में एक गैर मामुली तौर पर खूबसूरत और जवान लड़की लेआया था। एक खाविन्द के लिये बीवीयों की तादाद के लिये कोई पाबन्दी नही थी। उस ज़माने में ज़्यादा बीवीयां रखने का रिवाज था कोई बीवी दूसरी बीवीयों से हसद नही करती थीं। मगर मुसलेहुद्दीन ने पहली बीवी को बिलकुल नज़र अन्दाज़ कर दिया था। जब से नई बीवी आई थी उस ने पहली बीवी के कमरे में जाना ही छोड़ दिया था। बीवीने उसे कई बार बुलाया तो भी वह न गया। बीवी के अन्दर इन्तेक़ामी जज़्बा पैदा होगया था। ये आदमी जो उसे बीस अशरफियां दे गया था ग़ालिबन मुसलेहुद्दीन से बड़ा

ही संगीन इन्तेकाम लेना चाहता था। इसी लिये उसने उसके पहली बीवी को बतादिया था कि ख़िज़र को मुसलेहुद्दीन ने कत्ल कराया है ।

"तुम अपनी ज़बान बन्द रखना"....... मुसलेहुद्दीन ने बीवी को बा रोब लहजे मे कहा। .. .." ये मेरे किसी दुशमन की चाल है वह मेरे और तुम्हारे दरमियान दुशमनी पैदा करना चाहता है।"

"तुम्हारे दिल में मेरी दुश्मनी के सेवा और रहा ही क्या है?" बीवी ने पूछा।

"मेरे दिल में तुम्हारी पहले रोज़ वाली मोहब्बत है।" मुस्लेहुद्दीन ने कहा– "क्या तुम उस आदमी को पहचानती हो?"

"उसने चेहरे पर नक़ाब डाल रखा था।" बीवी ने कहा– "मगर तुम्हारा नक़ाब उतर गया है मैं ने तुम्हें पहचान लिया है।" मुस्लेहुद्दीन ने कुछ कहने की कोशिश की मगर बीवी ने उसे बोलने न दिया। उस ने कहा– "मुझे शक है तुम ने बैतुलमाल की रक्म हज़म की है जिस का इल्म ख़िज़रुलहयात को होगया था। तुम ने किराए के क़ातिल से उसे रास्ते से हटा दिया है।"

"मुझ पर झूटे इलज़ाम आइद न करो" मुस्लेहुद्दीन ने कहा– "मुझे रकम हज़म करने की क्या ज़रूरत है?"

"तुम्हें नहीं उस फिरंगिन को रकम की ज़रूरत है जिसे तुम ने निकाह के बग़ैर रखा हुआ है।" बीवी ते जेल कर कहा– "तुम्हें शराब के लिए रकम की ज़रूरत है। अगर यह इलज़ाम झूटा है तो बताओ कि यह चार घोड़ों की बग्घी कहां से आई है? घर में आए दिन नांचने वालियां जो आती हैं वह क्या मुफ्त आती हैं? शराब की जो दावतें दी जाती हैं, उन के लिए रकम कहां से आती है?"

"ख़ुदा के लिए चुप होजाओ।" मुस्लेहुद्दीन ने गुस्से और प्यार के मिले जुले लहजे में कहा– "मुझे मालूम कर लेने दो वह आदमी कौन था जो यह ख़तरनाक चाल चल गया है। असल हक़ीकत तुम्हारे सामने आजाएगी।"

"मैं अब चुप नहीं रह सकूंगी।" बीवी ने कहा– "तुमने मेरा सीना इन्तक़ाम से भर दिया है। मैं सारे मिस्र को बतोऊं गी कि मेरा ख़ाविंद क़ातिल है। एक मोमिन का क़ातिल है। तुम मेरी मोहब्बत के क़ातिल हो। मैं इस कतल का इन्तक़ाम लूंगी।"

मुस्लेहुद्दीन मिन्नत समाजत करके उसे चुप कराने लगा और उसे काइल कर लेगया कि वह सिर्फ़ दो रोज़ चुप रहे ताकि वह उस आदमी को तलाश करके साबित करसके कि वह क़ातिल नहीं है। उसने बीवी को यह भी बताया कि ग़यास बलबीस ने चंद एक मुश्तबह अफ़राद पकड़ लिए हैं और क़ातिल बहुत जल्दी पकड़ा जाए गा।

❖

रात गुज़र गई। अगला दिन भी गुज़र गया। मुस्लेहुद्दीन घर से ग़ायब रहा। उस की दुसरी बीवी या दाशतह भी कहीं नज़र न आई। शाम के बाद मुस्लेहुद्दीन घर आया और पहली बीवी के कमरे में चला गया। उस के साथ प्यार मोहब्बत की बातें करता रहा। बीवी उस के

फरेब में नहीं आना चाहती थी मगर प्यार के धोके में आगई। मुस्लेहुद्दीन ने उसे कहा कि वह उस आदमी को ढूंढ रहा है जो बीस अशरफियां देगया था...... कुछ देर बाद बीवी सोगई। उस रात मुस्लेहुद्दीन ने मुलाज़िमों को छुट्टी देदी थी जो पहले कभी नहीं हुई थी। मुस्लेहुद्दीन बहुत देर सोई हुई बीवी के कमरे में रहा, फिर उठ कर कमरे से निकल गया।

आधी रात का अमल होगा। एक आदमी उस घर की बाहर वाली दीवार के साथ पीठ लगा कर खड़ा होगया। एक आदमी उस के कंधों पर चढ़ गया। तीसरा आदमी उन दोनों को सीढ़ी बनाकर ऊपर गया और दीवार से लटक कर अन्दर की तरफ़ कूद गया। उस ने अन्दर से बड़ा दरवाज़ह खोल दिया। उस के दोनों साथी अन्दर आगए। उस घर में रखवाली वाला कुत्ता हर रात खुला रहता था। उस रात वह भी डरबे में बंद था। शायद मुलाज़िम जाते हुए भूल गए थे कि उसे खुला रखना है। तीनों आदमी बरामदे में चले गए। अंधेरा गहरा था। व ; दबे पांव चले गए। घुप अंधेरें में एक दूसरे के पीछे चलते एक ने उस दरवाज़े पर जा हाथ रखा जिस में मुस्लेहुद्दीन की पहली बीवी जिसे वह फातमा के नाम से बुलाया करता था सोई हुई थी। केवाड़ खुल गया कमरा तारीक था। तीनों आदमी अंदर आगए और अंधेरे में टटोलते हुए फातमा के पलंग तक पहुंच गए। एक आदमी का हाथ उस के मुंह पर लगा तो उस की आंख खुल गई। वह समझी मुस्लेहुद्दीन का हाथ है। उस ने हाथ पकड़ लिया और पूछा— "कहां जा रहे हैं आप?"

उस के जवाब में एक आदमी ने उस के मुंह पर कपड़ा रख कर उस का कुछ हिस्सा उस के मुंह में ठूंस दिया। फौरन बाद तीनों ने उसे बाज़ूओं में जकड़ लिया। एक ने मुंह पर एक और कपड़ा कस कर बांध दिया। एक ने एक बोरी की तरह का थैला खोला। दूसरे दो आदमियों ने फातमा को दोहरा करके रस्सियों से उस के हाथ और पांव बांधे और उसे थैले में डाल कर थैले का मुंह बंद कर दिया। उन्हों ने थैला उठाया और बाहर निकल गऐ। बड़े दरवाज़े से भी बाहर निकल गए। घर में कोई मर्द मुलाज़िम न था। खादमाऐं भी उस रात छुट्टी पर थीं। थोड़ी दूर एक दरख़्त के साथ तीन घोड़े बंधे हुए थे। तीनो आदमी घोड़ों पर सवार हुए। एक ने थैला अपने आगे रख लिया। तीनों घोड़े क़ाहेरा से निकल गए और स्कंदरिया का रुख करलिया।

सुबह मुलाज़िम आगए। मुस्लेहुद्दीन ने फातमा के मुतअल्लिक पूछा। दो खादमाओं ने उसे तलाश करके बताया कि वह घर में नहीं है। बहुत देर तक जब उस का कोई सुराग़ न मिला तो मुस्लेहुद्दीन एक खादमा को अलग लेगया। बहुत देर तक उस के साथ बातें करता रहा। फिर उसे साथ लिए ग़यास बलबीस के पास चला गया। उसे कहा कि उस की बीवी लापता होगई है। उस ने इस शक का इज़हार किया कि ख़िज़रुलहयात को फातमा ने क़त्ल कराया है और ख़िज़र ने मरते मरते उंगली से "मुस्लेह" जो लिखा था वह दर असल उस की बीवी लिखना चाहता था लेकिन मौत ने तहरीर पूरी न होने दी। इस के सबूत में उस ने अपनी खादमा से कहा कि वह बलबीस को उस आदमी के मुतअल्लिक बताए। ख़ादमा ने बयान किया कि परसों शाम एक अजनबी आया जिस के चेहरे पर नक़ाब था। उस वक़्त मुस्लेहुद्दीन

घर पर नहीं था। उस आदमी ने दरवाज़े पर दस्तक दी तो यह ख़ादमा बाहर गई। अजनबी ने कहा कि वह फातमा से मिलना चाहता है। ख़ादमा ने कहा कि घर में कोई मर्द नहीं है इस लिए वह फातमा से नहीं मिल सकता। उस ने कहा कि फातमा से यह कहदो कि वह अशर्फयां वापस करने आया है, कहता है कि मैं पूरी रक़म लूंगा। ख़ादमा ने फातमा को बताया तो उस ने उस आदमी को अंदर बुला लिया।

ख़ादमा ने बयान में कहा कि उसे फातमा ने बरामदे में खड़ा रहने को कहा और यह हेदायत दी कि कोई आजाए तो मैं उसे ख़बरदार करदूं। ख़ादमा कमरे के दरवाज़े के साथ खड़ी रहीं। अंदर की बातें जो उसे सुनाई दीं, उन में उस आदमी का गुस्सा और फातमा की मिन्नत समाजत थी। उन बातो से साफ पता चलता था कि फातमा ने उस आदमी से कहा था कि अली बिन सुफ़यान के नायब हसन बिन अब्दुल्लाह को क़तल करना है जिस के एवज़ वह उसे पचास अशर्फयां और दो टुकड़े सोना देगी। ख़ादमा को यह नहीं मालूम हो सका कि फातमा ने उस आदमी को बीस अशर्फयां किस वक़्त और कहां भेजी थीं और कौन लेगया था। वह पूरी पचास अशर्फयां मांग रहा था। फातमा उससे कह रही थी कि उस ने ग़लत आदमी को क़तल किया है। यह नक़ाब पोश आदमी कह रहा था कि तुम ने यक़ीन के साथ बताया था कि हसन बिन अब्दुल्लाह फलां वक़्त ख़िज़रुलहयात के घर जाए गा। वह घात में बैठ गया। उस ने एक आदमी को ख़िज़र के घर के दरवाज़े के क़रीब जाते देखा। उसका क़द बुत हसन बिन अब्दुल्लाह की तरह था। क़त्ल करते वक़्त इतनी मोहलत नहीं मिलती कि शिकार को अछी तरह देख कर यक़ीन कर लिया जाए। तुम ने जो वक़्त बताया था, यह वही वक़्त था। मैं ने तीर चला दिया और वहां से भाग निकला।

वह फातमा से पचास अशर्फयां मांग रहा था। फातमा ने पहले तो मिन्नत समाजत की। फिर वह भी गुस्से में आगई और कहा कि असल आदमी को क़त्ल करोगे तो इन बीस अशर्फयों के इलावह पचास अशर्फयां और सोने के दो टुकड़े दूं गी। उस आदमी ने कहा कि मैं काम की पूरी उजरत लूंगा। फातमा ने इंकार कर दिया। वह आदमी बड़े गुस्से में यह कह कर चला गया कि मैं पूरी उजरत वसूल कर लूंगा। फातमा ने ख़ादमा को सख़ती से कहा कि वह इस आदमी के मुतअल्लिक़ किसी से ज़िक्र न करे। उसने ख़ादमा को दो अशर्फी इनआम दिया। आज सुबह वह उस के कमरे में गई तो फातमा वहां नहीं थी। उसे शक है कि उस आदमी ने इन्तक़ामन उसे इग़वा कर लिया है।

ग़यास बलबीस ने कुछ सोंच कर मुस्लेहुद्दीन को बाहर भेज दिया और ख़ादमा से पूछा— "यह बयान तुम्हें किस ने पढ़ाया है? फातमा ने या मुस्लेहुद्दीन ने?"

"फातमा तो यहां नहीं है" उस ने कहा— "यह मेरा अपना बयान है।"

"मुझे सच बतादो।" बलबीस ने कहा— "फातमा कहां है, वह किसके साथ गई है?" ख़ादमा घबराने लगी। कोई तसल्ली बख़्श जवाब न देसकी। बलबीस ने कहा— "कोतवाली के तहख़ाना में जाना चाहती हो? अब तुम वापस नहीं जासको गी।"

वह ग़रीब औरत थी। उसे मालूम था कि कोतवाली के तह ख़ाने में जाकर सच और झूट

अलग अलग होजाते हैं। और उससे पहले जिस्म के जोड़ भी अलग अलग होजाते हैं। वह रो पड़ी और बोली– "सच कहती हूं तो आका सज़ा देता है, झूट बोलती हूं तो आप सज़ा देते हैं" बलबीस ने उस की हौसला अफज़ाई की और उसे तहफ्फुज़ का यकीन दिलाया। ख़ादमा ने कहा– "मैं ने कत्ल के दूसरे रोज़ सिर्फ इतना देखा था कि एक नकाब पोश आया था। आका मुस्लेहुद्दीन घर नहीं थे। नकाब पोश ने फातमा को बाहर बुलाया था। वह बड़े दरवाज़े के बाहर और फातमा अंदर थी। वह उस के सामने नहीं हुई। मुलाज़िमों ने उसे देखा था लेकिन किसी ने भी करीब जाकर नहीं सुना कि उन के दरमियान क्या बातें हुई। नकाब पोश चला गया तो फातमा अंदर चली आई। उस ने छोटी सी एक थैली उठा रखी थी। फातमा का सर झुका हुआ था। वह कमरे में चली गई थी... दूसरी शाम मुस्लेहुद्दीन ने चारों मुलाज़िमों और साईस को रात भर की छुट्टी देदी थी। चार मुलाज़िमों में दो मर्द और दो औरतें हैं।"

"उससे पहले कभी मुलाज़िमों को रात भर के लिए छुट्टी नहीं दी गई है?" बलबीस ने पूछा।

"कभी नहीं।" उस ने जवाब दिया। "कोई एक मुलाज़िम कभी छुट्टी लेलेता है। सब को कभी छुट्टी नहीं दी गई। ख़ादमा ने सोच कर कहा– "अजीब बात यह है कि आका ने कहा था कि आज रात कुत्ते को बंधा रहने देना। इस से पहले हर रात कुत्ता खुला रहता था। बड़ा खूंख्वार कुत्ता है। अजनबी की बू पर चीरने फाड़ने के लिए तैयार होजाता है।"

"मुस्लेहुद्दीन के तअल्लुकात फातमा के साथ कैसे थे?" ग़यास बलबीस नें पूछा।

"बहुत खिंचे हुए।" ख़ादमा ने बताया। "आका एक बड़ी ख़ूबसूरत और जवान लड़की लाया है जिसने आका को अपना गुलाम बना लिया है फातमा के साथ आका की बोल चाल भी बंद है।"

ग़यास बलबीस ने ख़ादमा को अलग बिठा कर मुस्लेहुद्दीन को अंदर बुलाया और बाहर निकल गया। वापस आया तो उस के साथ दो सिपाही थे। उन्हों ने मुस्लेहुद्दीन को दाएं और बाएं बाजुओं से पकड़ लिया और बाहर ले जाने लगे। मुस्लेहुद्दीन ने बहुत एहतजाज किया। बलबीस यह हुकम देकर बाहर निकल गया कि इसे कैद में डाल दो। उस ने दूसरा हुकम यह दिया कि मुस्लेहुद्दीन के घर पर पहरा खड़ा करदो। किसी को बाहर न जाने दो।

❖

उस वक़्त फ़ातमा काहेरा से बहुत दूर शुमाल की तरफ़ एक ऐसी जगह पहुंच चुकी थी जहां इर्द गिर्द ऊंचे टीले, सबज़ह और पानी भी था। यह जगह आम राह गुज़र से हटी हुई थी। वहां वह सूरज निकलने के वक़्त पहुंची थी। घोड़े रुक गए। उसे थैले में से निकाला गया। उस के मुंह से कपड़ा हटा दिया गया। और हाथ पांव भी खोल दिए गए। उस के होश ठिकाने नहीं थे। वह तीन नकाब पोशों के नर्ग़े में थी। तीन घोड़े खड़े थे। फातमा चीखने चिल्लाने लगी। नकाब पोशों ने उसे पानी पिलाया और कुछ खाने को दिया। वह हाथ नहीं आरही थी। उस के पेट में पानी और खाना गया और ताज़ह हवा लगी तो जिस्म में ताकत आगई। वह अचानक उठी और दौड़ पड़ी। तीनों बैठे देखते रहे। कोई भी उस के तआकुब में न गया। दूर

जाकर वह एक टीले के ओट में चली गई तो एक नक़ाब पोश घोड़े पर सवार हुआ। ऐड़ लगाई और फातमा को जालिया। वह दौड़ दौड़ कर थक गई थी। लेट गई। नक़ाब पोश ने उसे उठाकर घोड़े पर डाल लिया और खुद उस के पीछे स्वार होकर वापस अपने साथियों के पास लेगया।

"भागो।" एक ने उसे तहम्मुल से कहा। "कहां तक भागो गी। यहां से तो कोई तनवमनद मर्द भी भाग कर क़ाहेरा नहीं पहुंच सकता।" फातमा रोती चीखती और गालियां देती थी। एक नक़ाब पोश ने उस से कहा– "अगर हम तुम्हें क़ाहेरा वापस लेचलें तो भी तुम्हारे लिए कोई पनाह नहीं। तुम्हें तुम्हारे ख़ाविंद ने हमारे हवाले किया है।"

"यह झूट है।" फातमा ने चिल्ला कर कहा।

"यह सच है।" उस ने कहा। "हम ने तुम्हें उजरत के तौर पर लिया है। तुम ने मुझे पहचाना नहीं। मैं तुम्हारे हाथ में बीस अशर्फयों की थैली दे आया था। तुम ने ख़ाविंद से कहदिया कि तुम क़ातिल हो और तुम ने बेवक़ूफी यह की कि उसे यह भी कह दिया कि तुम कोतवाल को बता दोगी। वह तुम से पहले ही तंग आया हुआ था। उस की दाशतह ने उस के दिल पर और उस की अक़्ल पर कब्ज़ा कर लिया था। मैं तुम्हें यह नहीं बता सकता कि वह लड़की कौन है और कहां से आई है और वह क्या करने आई है। दुसरे दिन तुम्हारा खाविंद हमारे ठिकाने पर आया। ऐसा बेइमान आदमी है कि उसने हमें ख़िज़रुलहयात के क़तल के एवज़ पचास अशर्फी और सोने के दो टुकड़े देने का वादह किया था, मगर काम होगया तो सिर्फ़ बीस अशर्फी भेजी। मैं ने तुम्हें इस्तेमाल किया और यह रक़म तुम्हारे हाथ में देदी ताकि तुम्हें भी इस राज़ का इल्म हो जाए। हमारा तीर निशाने पर बैठा। दूसरे दिन वह हमारे ठिकाने पर आया और पचास अशर्फियां देने लगा। सोने के टुकड़े फिर हज़म कर रहा था। मेरे इन साथियों ने कहा कि अब हम बहुत ज़्यादा उजरत लेंगे। अगर वह नहीं देगा तो हम किसी न किसी तरह कोतवाल तक ख़बर पहुंचा देंगे। उसे अब ख़तरा नज़र आरहा था कि तुम्हें भी पता चल गया था कि क़ातिल वही है। इस का इलाज उसने यह सोचा कि हमें कहा कि तुम मेरी बीवी को उठा ले जाओ। मैं तुम्हारे लिए रास्ता साफ कर दूंगा। हम जान गए कि वह अपनी दाश्ता के ज़ेरे असर तुम से जान छुड़ाना चाहता है और अब वह इस लिए तुम्हें ग़ायब करना चाहता था कि तुम उस के जुर्म की गवाह बन गई हो और उसे कह भी चुकी हो कि तुम कोतवाल को ख़बर कर दोगी।"

फातमा के आंसू खुश्क हो चुके थे। वह हैरतज़दह होकर उन तीनों को बारी बारी देखती थी। उन की सिर्फ़ आंखें नज़र आती थी। यह आंखें डरावनी और ख़ौफनाक थीं। उन की ज़ुबान में मिठास और अपनाईयत की झलक ज़रूर थी। उन्हों ने उसे धमकी नहीं दी बल्कि समझाने की कोशिश कर रहे थे कि उस का तड़पना, रोना और भागना बेकार है।

"मैं ने तुम्हें देखा था।" नक़ाब पोश ने उस से कहा– "जब मुस्लेहुद्दीन ने कहा कि मेरी बीवी को उजरत के तौर पर उठा लेजाओ तो मैं ने स्कंदरिया की मंडी के भाव से तुम्हारी कीमत का अंदाज़ा लगाया। तुम अभी जवान हो और तुम हसीन भी हो। तुम बड़े अछे दामों

बिक सकती हो। हम मान गए अगर तुम्हारा खाविंद हमें इत्नी उजरत न देता तो हम ने उसे ...ता दिया था कि आज रात उस के घर में कोई मुलाज़िम नहीं होगा। कुत्ता भी बंधा हुआ होगा। अलबत्ता बड़ा दरवाज़ा अंदर से बंद होगा ताकि तुम देख लो तो शक न करो.. हम तीनों ने एक दूसरे के ऊपर खड़े होकर तुम्हारे घर की दीवार फलांगी। हम ने हाथों में खंजर ले रखे थे और हम संभल संभल कर चल रहे थे क्यों कि हमें तुम्हारे खाविंद पर भरोसा नहीं था। वह हमें मरवासकता था लेकिन ऐसा ना हुआ। हमारे लिए रास्ता वाक़ई साफ़ था। तुम्हें र उठा और लेआए।"

"इस ने तुम्हें यह कहानी इस लिए सुनाई है कि तुम अपने खाविंद के घर को दिल से निकाल दो।" दूसरे नक़ाब पोश ने कहा– "हम तुम्हें यह भी बतादेते हैं कि हम तीन आदमी अकेली औरत की मजबूरी से फायदा नहीं उठाऐं गे। हम ब्योपारी हैं। तीन मर्द एक औरत को इग़वा और मजबूर करके तफरीह करें तो यह कोई फखर वाली बात नहीं।"

"तुम मुझे स्कंदरिया के बाज़ार में बेचोगे?" फातमा ने बेबसी के लहज़े में पूछा– "मेरी क़िसमत में अब इस्मत फ़रोशी लिखी है?"

"नहीं।" एक नक़ाब पोश ने जवाब दिया–"इस्मत फरोशी के लिए जंगली और सेहराई लड़कियां खरीदी और बेची जाती हैं। तुम हरम की बाइज़्ज़त अमीर के पास जाओ गी। हमें भी तो कीमत चाहिए। हम तुम्हें मिट्टी में नहीं फेंकेंगे। तुम अब रोना और ग़म करना छोड़ दो, ताकि तुम्हारे चेहरे की दिलकशी और रौनक़ क़ाएम रहे वरना तुम इस्मत फरोशी के क़ाबिल रह जाओगी। थोड़ी देर के लिए सो जाओ।"

❖

यह देखकर कि उन लोगों ने उसके साथ कोई बेहूदा हरकत नहीं की, दस्त दराज़ी नहीं की, फातमा को कुछ सकून सा महसूस हुआ। रात भर वह अज़ीयत में भी रही थी। थैले में भी दोहरी करके उसे बंद किया गया था। जिस्म दर्द कर रहा था। वह लेटी और उसकी आंख लग गई। थोड़ी ही देर बाद उस की आंख खुल गई उस का दिल खौफ़ और घबराहट की ग्रिफ्त में था। इस सूरते हाल को वह कबूल नहीं कर सकती थी। उस ने देखा कि तीनों नक़ाब पोश सोए हुए हैं। वह भी रात भर के जागे हुए थे। फातमा ने पहले तो यह सोंचा कि किसी एक का खंजर निकाल कर तीनों को क़तल कर दे लेकिन इतनी जुरअत न करसकी। तीनों को क़तल करना आसान नहीं था। उस ने घोड़े देखे। उन लोगों ने घोड़ों से ज़ीनें नहीं उतारी थीं। वह आहिस्ता से उठी और दबे पांव एक घोड़े तक पहुंची। सूरज टीलों के पीछे जारहा था और फातमा को मालूम ही न था कि वह किस तरफ़ और कितनी दूर है। उस ने यह ख़तरा मोल ले लिया कि सेहरा की वुसअत में भटक भटक कर मरजाए गी उन लोगों के हाथों से ज़रूर निकले गी।

उस ने घोड़े पर सवार होते ही एड़ लगादी। टापों ने नक़ाब पोशों को जगा दिया। उन्हों ने फातमा को टीले की ओट में जाते देख लिया था। वह नक़ाब पोश घोड़ों पर सवार हुए और तआक़ुब में घोड़े सरपट भगादिए। फातमा के लिए मुश्किल यह थी कि उस टीलों के क़ैद

खाने से निकलने का रास्ता मालूम न था। सेहराई टीले भूल भुलैयाँ जैसे होते हैं। सिर्फ़ सेहरा के भेदी उन से वाकिफ होते हैं। फातमा एसे रुख़ होली जहां आगे एक और टीले ने रास्ता रोक रखा था। उसने वहां जाकर पीछे देखा तो नक़ाब पोश तेज़ी से उस के क़रीब आरहे थे। उस ने घोड़े को टीले पर चढ़ा दिया और एड़ मारती गई। घोड़ा अच्छा था। ऊपर जाकर परे उतर गया। वह एक तरफ़ को घोड़ा मोड़ लेगई। आगे रास्ता मिल गया। नक़ाब पोश भी पहुंच गए। फासला भी कम होरहा था। फातमाको अपनी आंखों पर यक़ीन न आया। जब उसने अपने सामने समुंदर की तरह खुला सेहरा और चार शुत्र सवार अपनी सिम्त आते देखे। उस ने चिल्लाना शुरू कर दिया। "बचाओ। डाकुओं से बचाओ।" वह उन तक पहुंच गई।

उस के पीछे दोनों नक़ाब पोशों के घोड़े बाहर आए। शुत्र सवारों को देख कर उन्हों ने घोड़ों की बागें खींचीं और घोड़े मोड़े भी। शुत्र सवारों ने ऊंट दौड़ा दिए। एक ने कमान में तीर रख कर छोड़ा तो तीर एक घोड़े की गर्दन में उतर गया। घोड़ा दर्द से तड़पा, उछला और बेक़ाबू होगया। सवार कूद गया। शुत्र सवारों ने उन्हें ललकारा तो दूसरे ने घोड़ा रोक लिया। उन्हें मालूम था कि वह चार शुत्र सवार तीर अंदाज़ों की ज़द में हैं। फातमा ने बताया कि उन का एक साथी अंदर है। उन दोनों को पकड़ लिया गया यह चारों सुलतान अय्यूबी की फ़ौज के किसी गश्ती दस्ते के सिपाही थे। सुल्तान अय्यूबी ने सारे सेहरा में गशती पहरे का इन्तज़ाम कर रखा था ताकि अचानक हमले का खतरह न रहे और सलीबी त ़रीब कार मिश्र में दाख़िल न होसकें। उन गश्ती दस्तों का बहुत फ़ायदा था। उन्हों ने कई मुश्तबह लोग पकड़े थे। अब यह नक़ाब पोश उनके फंदे में आगए। फातमा ने उन्हें बताया कि उसे किस तरह यहां तक लाया गया है, वह किस की बीवी है। उस ने यह भी बताया कि नाज़िमे मालियात क़तल होगया है। क़तल उस के ख़ाविंद मुस्लेहुद्दीन ने कराया है जो शहर का नाज़िम है, और क़ातिल इन तीनों में से एक है।

तीसरे नक़ाब पोश को भी पकड़ लिया गया। उन से खंजर ले लिए गए। हाथ पीठ पीछे बांध दिए गए। उन का एक घोड़ा तीर लगने से भाग गया था। एक घोड़े पर दो नक़ाब पोशों को और तीसरे पर एक को बिठा कर सिपाही अपने कमानडर के पास लेचले। फातमा को उन्हों ने ऊंट पर बिठा लिया। उस ऊंट का सवार अपने एक साथी के पीछे सवार होगया। उस काफले के सामने चार मील की मुसाफत थी जो उन्हों ने सूरज गुरूब होने तक तै कर ली। वह एक नख़्लिस्तान था, जहां खेमे भी थे। यह उस दस्ते का हेड क्वार्टर था। फातमा को उस कमानदार के सामने पेश किया गय। तीनों नक़ाब पोशों को पहरे में बिठा दिया गया। उन्हें अगले रोज़ क़ाहेरा भेजना था।

❖

सलीबियों ने यह फ़ैसला कर लिया था कि वह कर्क में बैठे बैठे सलाहुद्दीन अय्यूबी का इन्तज़ार नहीं करें गे। उन्हों ने फ़ौज को तक्सीम करना शुरू करदिया। फ्रांस की फ़ौज को रास्ते में रोकने के लिए तैयारी का हुक्म दिया। रीमांड की फ़ौज मुसलमानों की फ़ौज पर अक़ब से हमले के लिए मुक़रर हुई। कर्क के क़िले के दिफा के लिए जरमनी की फ़ौज थी

जिस के साथ फ्रांस और इंगलिस्तान के कुछ दस्ते थे। उन्हें जासूसों ने बतादिया था कि सुल्तान अय्यूबी नई फौज तैय्यार कर रहा है। सलीबी हुक्मरानों ने इस इक़दाम का जायज़ा लिया कि वह सलाहुद्दीन अय्यूबी के ट्रेनिंग कैम्प पर हमला करके पीछे हट आऐं लेकिन उन की एंटली जेंस ने इस तजवीज़ की मुखलफत की। दलील यह दी कि सलाहुद्दीन अय्यूबी ने दिफा की तीन तहें बना रखी हैं जिन में एक तह मफ़्तहर्रिक है। उस के अलावह उस के देख भाल के दस्ते दूर दूर तक घूमते फिरते और सेहरा में हिल्ती हुई हर चीज़ को क़रीब जाकर देखते हैं। इन दिफाई इन्तज़ामात को देख कर सलीबियों ने इस हमले का खयाल दिल से निकाल दिया।

एक अमरीकी मुसन्निफ एन्टेनीवेस्ट ने मुतअदिद मोअर्रिखों के हवाले से लिखा है कि सलीबियों के पास सलाहुद्दीन अय्यूबी की निस्बत चार गुना फौज थी जिस में ज़िरह पोश प्यादह और सवार दस्तों की बुहतात थी। अगर यह फौज सलाहुद्दीन अय्यूबी पर बराहे रास्त हमला करदेती तो मुसलमान ज़्यादह देर जम न सकते थे मगर सलीबी फ़ौज को शूबक की शिकस्त में जो नुक़सान उठाना पड़ा था, उस की एक दहशत भी थी जो मैदान जंग से भागे हुए फौजियों पर तारी थी। सलीबियों का मूराल मुतज़लज़ल था जिस की एक वजह यह थी कि शूबक को वह लोहे का किला समझते थे। वह अपनी फौज को सेहरा में भेज कर इस खुश फहमी में मुब्तला हो गएथे कि सुलतान अय्यूबी को किलों से दूर ही खत्म कर देंगे। वह कर्क के दिफा में बैठे रहे और सुलतान अय्यूबी ने शुबक लेलिया और सेहरा में सलीबियों को आमने सामने की जंग का मौका दिए बगैर उन्हें छापा मारों से मरवादिया। उस की "आग की हांडियों" ने घोड़ों और ऊंटों को इत्ना दहशत ज़दा किया कि खासे अर्से तक जानवर मामूली सी आग देख कर भी बिदक जाते थे। एंटनी वेस्ट ने यह सबूत भी मोहैया किया है कि सलीबी फौज मुखतलिफ बादशाहों और मुल्कों की मुरक्कब थी जो बज़ाहिर मुत्तहिद थी लेकिन यह इत्तहाद बराए नाम था क्योंकि हर बादशाह और उसकी आला फौज का कमांडर मुल्क गीरी और बादशाही की तौसीअ का ख़्वाहिशमंद था। उन में सिर्फ यह जज़्बा मुशतरक था कि मुसलमानों को खत्म करना है, मगर उन के दिलों में जो इख़्तेलाफात थे वह उन के फैसलों पर असर अंदाज़ होते थे।

मोअर्रिख़ लिखते हैं कि सलीबी साज़िशों के माहिर थे और मुसलमानों के जिस इलाके पर काबिज़ होजाते थे वहां क़त्ल आम और आबरू रेज़ी शुरू कर देते थे। इस के बरअक्स सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी मोहब्बत और अख़लाकी कदरों को एसी खूबी से इस्तेमाल करता था कि दुशमन भी उस के ग्रिवीदा होजाते थे। उस के एलावह उस ने अपनी फ़ौज में यह खूबी भर दी थी कि दस सिपाहियों का छापा मार दस्ता एक हज़ार नफरी के फ़ौजी कैम्प को तहस नहस करके गायब होजाता था। यह लोग जान कुर्बान करने को मामूली सी कुर्बानी समझते थे। सुल्तान अय्यूबी जिस अंदाज़ से मैदाने जंग में थोड़ी सी फ़ौज को तरतीब देता था, वह बड़ी से बड़ी फौज को भी बेबस करदेती थी। शूबक और कर्क के मैदान में भी उस ने उसी जंगी दानिश्मंदी का मुज़ाहेरा किया था। सलीबियों ने उस का जायज़ा लिया, अपनी फौज की

जिसमानी और जज़्बाती कैफ़ियत देखी तो उन्हों ने बराहे रास्त हमले का ख्याल छोड़ दिया और कोई दूसरा ढंग सोच लिया लेकिन उस ढंग के मुताअल्लिक़ भी उन्हें शक था। इस का एलाज उन्हों ने यह किया कि मिश्र में बग़ावत भड़काने और सूडानियों को मिश्र पर हमला करने पर उकसाने का एहतमाम कर लिया।

मिश्र के नायब नाज़िम मुस्लेहुद्दीन की तरफ़ से उन्हें उम्मीद अफ़ज़ा रिपोरटें मिल रही थीं। वहां अभी यह इत्तेला नहीं पहुंची थी कि मिश्र का नाज़िमे मालियात खिज़रुलहयात क़त्ल हो गया है और मुस्लेहुद्दीन पकड़ा गया है। कर्क तक यह इत्तेला पहूंचने के लिए कम अज़ कम पंद्रह दिन दरकार थे क्यों कि रास्तें में सुल्तान अय्यूबी की फ़ौज थी। क़ासिद बहुत दूर का चक्कर काट कर और क़दम फूंक फूंक कर कर्क जासकते थे। बहुत दिनों का चला हुआ एक क़ासिद उस रात वहां पहुंचा जिस रात फ़ातमा इग़वा हुई थी। उस ने रिपोर्ट दी कि बग़ावत के लिए फिज़ा साज़गार है, लेकिन सूडानी अभी हमले के लिए तैयार नहीं हैं। उनके यहां घोड़ों की कमी है। उन के पास ऊंट ज़्यादा हैं। उन्हें कमो बेश पांच सौ अच्छे घोड़ों की ज़रूरत है। इतनी ही ज़ीनें दरकार हैं। फ़रांसीसी फ़ौज के कमांडर ने कहा कि पांच सौ घोड़े फ़ौरन रवाना कर दिए जाएँ और उन के साथ सलीबी फ़ौज के पांच सात अफ़सरों को भी भेज दिया जाए जो सूडानियों की जंगी अहलियत और कैफ़ियत का जायज़ा ले कर हमला कराऐं।

सलीबियों के पास घोड़ों की कमी थी। उन्हों ने कर्क में एलान करदिया कि मिश्र पर हमले के लिए पांच सौ घोड़ों की फौरी जरूरत है। ईसाई बाशिंदों ने तीन चार दिनों में घोड़े मुहैया कर दिए जो ऐसे रासते से रवाना कर दिए गए जिस के मुतअल्लिक़ यक़ीन था कि पकड़े नहीं जाऐं गे। उन का राहनुमा वही जासूस था जो घोड़े मांगने आया था। वह सूडानी था और तीन साल से जासूंसी कर रहा था। उन घोड़ों के साथ आठ सलीबी फौज के अफ़सर थे जिन्हें सूडानी हमले की क़यादत करनी थी। उन्हें यक़ीन दिलाया गया था कि सलाहुद्दीन अय्यूबी की फ़ौज को यहां से निकलने नहीं दिया जाए गा। सुलतान अय्यूबी को सिर्फ़ यह मालूम था कि मिश्र के हालात ठीक नहीं लेकिन उसे यह मालूम नहीं था कि उस ने जासूसी का जो जाल बिछाया है, वह ख़तरों से क़ब्ल अज़ वक़्त ख़बरदार करदेगा। उन्हें खिज़रुलहयात के क़त्ल और मुस्लेहुद्दीन की गिरिफ़तारी का भी इल्म नहीं था। ग़यास बलबीस को मशवरा दिया गया था कि वह सुलतान अय्यूबी को इतला भेजवादे लेकिन उस ने यह कहकर इस मशवरे पर अमल नहीं किया था कि तफ़तीश मुकम्मल करके असल सूरते हाल से सुलतान अय्यूबी को आगाह करे गा।

❖

फ़ातमा को गश्ती दस्ते के कमांडर ने रात अलग खेमे में रखा। सहर का धुंदलका अभी साफ़ नहीं हुआ था। जब उसे और तीनों नक़ाब पोशों को आठ के आठ मोहाफ़िज़ों के साथ क़ाहेरा के लिए रवाना करदिया गया। यह क़ाफ़िला सूरज ग़ुरूब होने के बाद क़ाहेरा पहुंचा और सीधा कोतवाली गया। ग़यास बलबीस इस वारदात की तफ़तीश में मसरूफ़ था। उस वक़्त वह तहख़ाने में था। उस ने मुस्लेहुद्दीन की तलाशी ली और वहां से उस की दाश्ता को बरआमद

किया था। वह अपने आप को उज़बक मुसलमान बताती थी। उस ने बलबीस को गुमराह करने की बहुत कोशिश की। उस के जवाब में बलबीस ने उसे कोठरी की झलक दिखाई जहां बड़े बड़े सख्त जान मर्द भी सीने के राज़ को उगल दिया करते थे। लड़की ने एतराफ कर लिया कि वह युरोशलम से आई है और ईसाई है। उस ने इस एतराफ के साथ बलबीस को अपने जिस्म और दौलत के लालच देने शुरू कर दिए। बलबीस ने मुस्लेहुद्दीन के घर की तलाशी में जो दौलत बरआमद की थी उस ने उसका दिमाग़ हिला दिया था। वह समझ गया था कि मुस्लेहुद्दीन क्यों सलीबियों के जाल में फंस गया था। खुद लड़की इस क़दर पुर कशिश और चर्ब ज़बान थी कि उसे ठूकराने के लिए पत्थर दिल की ज़रूरत थी।

बलबीस ने अपना ईमान ठिकाने रक्खा। उस ने देख लिया था कि यह तो कोई बहुत बड़ी साज़िश है जिस की कड़ियां युरोशलम से जामिलती हैं। उसने लड़की से कहा कि वह हर एक बात बता दे। लड़की ने जवाब दिया-- मैं जो कुछ बता सकती थी बता दिया है। इस से आगे कुछ बताऊं गी तो यह सलीब के साथ धोका होगा। मैं सलीब पर हाथ रखकर हलफ उठा चुकी हूं कि अपने फर्ज़ की अदाएगी में जान दे दूंगी। मेरे साथ जो भी सलूक करना चाहो कर लो, कुछ नहीं बताऊं गी। अगर मुझे आज़ाद करके युरोशलम या कर्क पहुंचा दोगे तो मुंह मांगी दौलत तुम्हारे क़दमों में रख दी जाए गी। मुस्लेहुद्दीन तुम्हारी क़ैद में है। उस से पूछ लो। वह तुम्हारा भाई है शायद कुछ बतादे।"

बलबीस ने उससे कुछ मज़ीद न पूछा। वह मुस्लेहुद्दीन के पास चला गया। मुस्लेहुद्दीन बड़ी बुरी हालत में था। उसे छत के साथ इस तरह लटकाया गया था कि रस्सा कलाइयों से बंधा हुआ था और उस के पांव फर्श से ऊपर थे। बलबीस ने जाते ही उस से पूछा-- "मुस्लेह दोस्त! जो पूछता हूं बता दो। तुम्हारी बीवी कहां है? और उसे किसने इग़वा कराया है? अब तुम्हें कुछ और बातें भी बतानी पड़ें गी। तुम्हारी दाशता अपने आपको बे नक़ाब कर चुकी है।"

"खोल दो मुझे रज़ील इन्सान!" मुस्लेहुद्दीन ने ग़ुस्से और दर्द से दांत पीस कर कहा। "अमीरे मिश्र को आने दे, मैं तेरा यही हश्र करांऊगा।"

इतने में बलबीस के एक अहलकार ने आकर उस के कान में कुछ कहा। हैरत से उस की आंखें ठहर गईं। वह दौड़ता हुआ तह खाने से बारह निकला और ऊपर चला गया। वहां मुस्लेहुद्दीन की बीवी और उसे इग़वा करने वाले तीन आदमी खड़े थे। फातमा ने उसे बताया कि वह किस तरह पकड़े गए हैं। बलबीस फातमा और तीनों मुजरिमों को तहख़ाने में लेगया और मुस्लेहुद्दीन के सामने जा खड़ा किया। मुस्लेहुद्दीन ने उन्हें देखा और आंखें बंद करलीं। बलबीस ने पूछा "इन तीनों में क़ातिल कौन है?" मुस्लेहुद्दीन ख़मोश रहा। बलबीस ने तीन दफा पूछा। वह फिर भी ख़ामोश रहा। बलबीस ने तहख़ाने के एक आदमी को इशारह किया। वह आदमी आगे आया और मुस्लेहुद्दीन की कमर के ग्रिद बाजू डाल कर उस के साथ लटक गया। उस आदमी का वज़न मुस्लेहुद्दीन की कलाईयों को काटने लगा जो रस्से से बंधी हुई थीं। उसने दर्द से चीख़ते हुए कहा।-- "दरमियान वाला।"

बलबीस तीनों को अलग ले गया और उन्हें कहा कि वह बतादें कि वह कौन हैं और यह

सारा सिलसिला क्या है वरना वह यहां से ज़िंदा नहीं निकल सकें गे। उन्हों ने आपस में मशवरह किया और बोलने में रज़ामंद हो गए। बलबीस ने उन्हें अलग अलग कर दिया और फातमा को ऊपर लेगया। फातमा ने उसे वही बात सुनाई जो सूनाई जा चुकी है। उसने अपने मुतअल्लिक़ यह बताया कि उस की मां सूडानी और बाप मिश्री है। तीन साल गुज़रे वह अपने बाप के साथ मिश्र आई। मुस्लेहुद्दीन ने उसे देख लिया और उस के बाप के पास आदमी भेजे। उसे यह मालूम नहीं कि रक़म कितनी तै हुई बाप उसे मुस्लेहुद्दीन के घर छोड़ गया और एक थैली लेकर चला गया। मुस्लेहुद्दीन ने एक आलिम और चंद एक आदमियों को बुलाकर बाक़एदा निकाह पढ़वाया और वह उस की बीवी बन गई। वह उस के साथ बहुत मोहब्बत करता था। मोहब्बत फातमा की कमज़ोरी थी। बाप से उसे मोहब्बत और शफ़क़त नहीं मिली थी। उसे शक था कि बाप उसे यहां बेचने के लिए ही लाया था। मुस्लेहुद्दीन के ख़िलाफ उसे कभी भी शक नहीं हुआ था कि वह इतना बुरा आदमी है। वह शराब नहीं पीता था। उस की बाहर की सरगर्मियों के मुतअल्लिक़ कुछ भी मालूम नहीं था।

सलाहुद्दीन अय्यूबी ने शूबक की तरफ़ कूच किया तो उस के फ़ौरन बाद मुस्लेहुद्दीन में एक तबदीली आई। वह रात बहुत देर तक बाहर रहने लगा। एक रात फातमा ने देखा कि वह शराब पी कर आया है। फातमा का बाप शराबी था। वह शराब की बू और शराबी को पहचान सकती थी। उस ने मुस्लेहुद्दीन की मोहब्बत की खातिर यह भी बरदाश्त किया। फिर घर में रात के वक़्त अजनबी से आने लगे। मुस्लेहुद्दीन ने एक रात फातमा को अशर्फी की दो थैलियां और सोने के चंद एक टुकड़े दिखा कर घर में रख लिए और एक रात जब वह शराब में बदमस्त होकर आया तो उस ने फातमा से कहा। "अगर मिश्र का शुमाली इलाक़ा जो बहिरार-ए-रूम के साथ मिलता है मुझे मिल जाए तो तुम पसंद करो गी या सूडान की सरहद के साथ का इलाक़ा? तुम जो पसंद करो उस की तुम मलका होगी और मैं बादशाह।" फातमा इतने ऊंचे दिमाग़ की लड़की नहीं थी कि इस सिलसिले में उससे कुछ पूछती। वह समझी की उस का खाविंद ज़्यादा शराब पी कर बहक गया है। होश में वह एसी बातें नहीं करता था। फिर एक रोज़ एक बड़ी हसीन लड़की उस के घर लाई गई। साथ दो आदमी थे। यह लड़की उसके घर में ही रही। निकाह नहीं पढ़ाया गया। उस लड़की ने फातमा को दोस्त बनाने की बहुत कोशिश की लेकिन उसे उस लड़की से नफरत होगई। उस लड़की ने उससे उसका खाविंद छीन लिया। उसके बाद ख़िज़रुलहयात के क़त्ल का वाक़आ हुआ।

❖

तीनो नक़ाब पोशों ने पहले बलबीस को ग़लत बातें बताने की कोशिश की लेकिन बलबीस उन्हें रास्ते पर ले आया। तीनों ने अलग अलग जो बयान दिए उन से यह इन्कशाफ हुआ कि तीनों हैशीश के गिरोह के आदमी हैं। उन्हें सलीबियों के साथ लगाया गया था। मुस्लेहुद्दीन को बेशुमार दौलत, एक ईसाई लड़की दी गई थी और यह वादा कि सलाहुद्दीन के ख़िलाफ बग़ावत कामयाब करादे तो मिश्र की सरहद के साथ उसे एक अलग रियासत बनाकर दी जाए गी जिस की हुक्मरानी उसके हाथ में और ईसाई लड़की के हाथ में होगी। मुस्लेहुद्दीन ने आला

हुक्काम को अपने हाथ में लेना शुरू कर दिया था। मगर ख़िज़रुलहयात उस के हाथ में नहीं आरहा था। मालियात और बैतुलमाल पर कब्ज़ा ज़रूरी था जो ख़िज़रुलहयात की मौजूदगी में मुमकिन न था। ख़ज़ाने का मुहाफ़िज़ दस्ता जांबाजों का मुंतख़ब गिरोह था। मुस्लेहुद्दीन ख़िज़रुलहयात को क़तल करवाके उस दस्ते को तब्दील कराना चाहता था। उस में बाग़ी अफराद रखने थे और दो हशीशीन। उन तीनों के ज़िम्मे हर हाकिम का कत्ल था जिस का फ़ैसला मुस्लेहुद्दीन को करना था। उन्हें उस काम की उजरत सलीबियों की तरफ़ से बाक़ाएदा मिल रही थी। वह चूंकि यह काम कारो बार और पेशे के तौर पर करते हैं, इस लिए फालतू उजरत लेने की भी कोशिश करते हैं इसी लिए उन्हों ने मुस्लेहुद्दीन से पचास अशर्फियां और सोना अलग मांगा जो उसने ख़िज़रुलहयात के क़त्ल के बाद नहीं दिया। उस ने कहा था कि तुम्हें पूरी उजरत मिल रही है। उन्हों ने उसे क़त्ल की धमकी दी तो उसने उन्हें अपनी बीवी पेश की और कहा कि उसकी अछी क़ीमत मिल जाए गी। फातमा उस के साथ तआवुन नहीं कर रही थी।

मुस्लेहुद्दीन अभी तक छत के साथ लटका हुआ था। उसे बयान लेने के लिए उतारा गया तो वह बेहोश हो चुका था। जासूस लड़की की कोठरी में गए तो वह मरी पड़ी थी। उस के मुंह से झाग निकल रही थी। तबीबों ने आकर देखा और कहा कि उस ने ज़हर खा लिया है। उस के पास छोटा सा एक कपड़ा पड़ा हुआ था। साफ पता चलता था कि उस में ज़हर बंधा हुआ था जो लड़की ने अपने कपड़ों में कहीं छुपा रखा था। बहुत देर बाद मुस्लेहुद्दीन को होश आया लेकिन वह बहकी बहकी बातें करता था। बोलते बोलते चुप होजाता और फटी फटी नज़रों से सब को देखने लगता फिर बेमाना सी बातें शुरू कर देता। तबीबों ने उसे दवाईयां खिलाई लेकिन उस का दिमाग़ अज़ीयत से और पकड़े जाने के डर से बिगड़ गया था।

उसी रात ग़यास बलबीस के पास एक मोअज़्ज़ज़ शखसियत आई। उस का नाम ज़ैनुद्दीन अली बिन नजा अलवाइज़ था। उस ने बलबीस से कहा कि उसे पता चला कि कुछ जासूस और तख़रीब कार पकड़े गए हैं और वह भी कुछ इंकशाफ करना चाहता है। ज़ैनुद्दीन मज़हब, सियासत और मआशरत के मैदान का बुज़ुर्ग काइद था। वह पीर वो मुर्शिद तो नहीं था लेकिन बड़े बड़े हाकिम भी उस के मुरीद थे। छोटे से छोटा आदमी भी उसे पीरों की तरह मानता था। उसे हाकिमों और मआशरत में ऊंची हैसियत के दो चार अफराद से पता चला कि सुलतान अय्यूबी और उस की फ़ौज की ग़ैर हाज़री से दुशमन फायदा उठा रहा है और ऐसी चाबुकदस्ती से साज़िश और बग़ावत का ज़हर फैला रहा है कि किसी को पकड़ना आसान नहीं। ज़ैनुद्दीन ने ग़यास बलबीस और अली बिन सुफ़ियान के नाएब हसन बिन अब्दुल्लाह को बताने के बजाए अपने तौर पर इस तख़रीब कारी की जासूसी करनी शुरू करदी थी। फ़ौज के छोटे बड़े अफ़सर भी इस की महफिल में आते थे। उस ने उन से बहुत सी बातें मालूम कर ली थीं, और मुतअदिद ज़िम्मा दार अफराद के नाम और उन की सरगरमियां भी मालूम कर ली थीं। उस ने दर असल ज़ाती तौर पर तख़रीब कारों के ख़िलाफ़ अपना एक गिरोह तैयार कर लिया था जिस ने निहायत नाज़ुक राज़ हासिल कर लिए थे।

एक मिश्री वकाए निगार मोहम्मद फ़रीद अबू हदीद ने अपनी तसनीफ "सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी" में साज़िश और बग़ावत के इंकेशाफ का सेहरा ज़ैनुद्दीन अली के सर बांधा है और तीन चार मोअर्रिखीन के हवाले दिए हैं लेकिन उस दौर की जो तहरीरें महफूज़ हैं, उनसे पता चलता है कि मोहकमाए मालियात के नाज़िम के कत्ल से सलीबियों की यह साज़िश बेनकाब हुई थी जिस के आलए कार वह मुसलमान थे जिन पर सुलतान अय्यूबी को एतमाद था। बहर हाल बुज़ुर्ग शखसियत की ज़ाती काविश और उस का जो हासिल था वह कौमी सतह का ऐसा कारनामा था जिसे मोअर्रिख़ीन ने बजा तौर पर खेराजे तहसीन पेश किया है। उस ने बलबीस से कहा कि वह अभी कुछ दिन और अपनी जासूसी जारी रखना चाहता था ताकि हर एक साज़िश की निशानदेही होजाए लेकिन उन तख़रीब कारों की गिरिफतारी की ख़बर शहर में मशहूर हो गई है जिस से उन के साथी रूपोश हो जाऐं गे। उसने नाम और पते वग़ैरह बतादिए। अपने आदमी भी बलबीस के हवाले कर दिए। हसन बिन अब्दुल्लाह को बुला लिया गया।

हसन और बलबीस ने फ़ैसला किया कि सुलतान अय्यूबी को फ़ौरी तौर पर इत्ला दी जाए। इस के लिए ज़ैनुद्दीन को ही मुंतखब किया गया और उसी रोज़ उसे बारह सवारों के मुहाफिज़ दस्ते के साथ शूबक रवाना कर दिया गया।

❖

तीसरी शाम यह काफिला शूबक पहुंच गया। सुलतान अय्यूबी ने जब ज़ैनुद्दीन को देखा तो हैरान भी हुआ और खुश भी। उस शखसियत से वाकिफ था बगलगीर होकर मिला। ज़ैनुद्दीन ने कहा– "मैं कोई अछी ख़बर नहीं लाया। नाज़िमे मालियात ख़िज़रुलहयात कत्ल होचुका है और उस का कातिल आप का नायब नाज़िम मुस्लेहुद्दीन कोतवाली में पागल हो चुका है।" सुलतान का रंग पीला पड़ गया। ज़ैनुद्दीन ने उसे तसल्ली दी और तफ़सीलात सुनादीं। उस फौज के मुतअल्लिक जो मिश्र में थी उस ने बताया, कि उस में बेइतमीनानी फैला दीगई है। इस किस्म की अफवाहें फैलाई गई हैं कि शूबक को सर करने वाली फ़ौज को सोने चांदी से माला माल करदिया गया है और उसे इसाई लड़कियां भी दी गई हैं। मिश्र वाली फ़ौज में यह दहशत भी पैदा कर दी गई है कि सूडानियों का बहुत बड़ा लशकर मिश्र पर हमला करने वाला है जिसे मिश्र की थोड़ी सी फ़ौज रोक नहीं सकेगी। उस फ़ौज के हर एक सिपाही को कतल कर दिया जाए गा और सलाहुद्दीन अय्यूबी चाहता ही यही है कि यह फ़ौज कत्ल हो जाए। इस के इलावह यह अफवाह भी फैलाई गई है कि सुलतान महाज़ पर शदीद ज़ख़मी हो गया है। शायद ज़िंदा नहीं रहे गा। उस के कमांडर वहां मनमानी कर रहे हैं। ज़ैनुद्दीन ने बताया कि सुलतान अय्यूबी के ज़ख़मी होने की ख़बर पर यकीन कर लिया गया है। इसी लिए मुस्लेहुद्दीन जैसे हाकिमे मिश्र को सलीबियों की मदद से छोटे छोटे टुकड़ों में तकसीम करने और अपनी अपनी खुद मुख़तार रियासतों के क़याम के इंतेज़ामात कर रहे हैं।

सुलतान अय्यूबी ने वक़्त ज़ाऐ किए बग़ैर बर्क रफतार कासिद बुलाया और नूरुद्दीन ज़ंगी के नाम एक पैग़ाम में मिश्र के यह सारे हालात लिखे और उस से फ़ौजी मदद मांगी। उस ने

लिखा कि मैं यहां रहता हूं तो मिश्र हाथ से जाता है, चला जाता हूं तो शूबक की फ़तह शिकसत में बदल जाए गी। लिया हुआ इलाक़ा किसी क़ीमत पर वापस नहीं किया जाए गा। मैं अभी फ़ैसला नहीं कर सका हूं कि यहां रहूं या मिश्र चला जाऊं उस ने क़ासिद से कहा कि वह दिन रात घोड़ा भगाता रहे। घोड़ा थक जाए तो जो कोई सवार सामने आए उससे घोड़ा बदल ले। कोई इंकार करे तो उसे क़त्ल कर दे। रफ़तार कम न हो। और उसे यह हिदायत भी दी कि अगर दुशमन के घेरे में आजाए तो निकलने की कोशिश करे और अगर पकड़ा जाए तो यह पैग़ाम मुंह में डाल कर निगल ले। दुशमन के हाथ पैग़ाम न लगे। क़ासिद रवाना हो गया। सुलतान अय्यूबी ने ऐसा ही एक क़ासिद बुलाया और उसे अपने भाई तक़ीउद्दीन के नाम पैग़ाम लिख कर उसे वही हेदायात दीं जो पहले क़ासिद को दी थीं। इस पैग़ाम में उस ने अपने भाई को लिखा कि तुम्हारे पास जो कुछ भी है जितने लड़ाका आदमी इकठे कर सकते हो घोड़ों पर सवार हो जाओ और क़ाहेरा पहुचो। रास्ते में बिला ज़रूरत रुकना नहीं। मुझे मालूम नहीं मैं तुम्हें कहां मिलूंगा। मिलूंगा भी या नहीं। अगर क़ाहेरा में हमारी मुलाक़ात न होसकी और अगर मैं ज़िंदा न हुआ तो इमारते मिश्र संभाल लेना। मिश्र बग़दाद की ख़िलाफ़त की ममलिकत है और ख़ुदाए जुलजलाल ने इस ममलेकत की ज़िम्मे दारी अय्यूबी खानदान को सौंपी है। रवांगी से पहले क़िबला वालिदे मोहतरम (नजमुद्दीन अय्यूब) के आगे झुकना और उन्हें कहना कि वह तुम्हारी पीठ पर हाथ फेरें। फिर मोहतरमा वालेदा की क़ब्र पर फ़ातेहा पढ़ कर उन की रूह से दुआऐं लेकर आना। अल्लाह तुम्हारे साथ है। मैं जहां हूं वहां इस्लाम का परचम सरनिगूं नहीं होगा। तुम मिश्र में इस परचम को सरबुलंद रखो।

उन दोनों में से जो क़ासिद नूरुद्दीन ज़ंगी के पास पहुंचा उस की जिस्मानी हालत यह थी कि उस का बायां बाज़ू तलवारों के ज़ख़्मों से क़ीमा बना हुआ था और उस की पीठ में एक तीर उतरा हुआ था। वह ज़ंगी के क़दमों में गिरा। इतना ही कह सका कि रास्ते में दुशमन मिल गया था। इस हाल में पैग़ाम लेकर निकला हूं।

उस ने पैग़ाम ज़ंगी के हाथ में दिया और शहीद होगया। नूरुद्दीन ज़ंगी की फ़ौज जब शूबक के क़रीब पहुंची तो क़िले और शहर में एलान हो गया कि सलीबियों का बहुत बड़ा हमला आरहा है। गर्द आसमान तक जारही थी। पता नहीं चलता था कि गर्द में क्या है। इम्कान यही था कि यह सलीबी फ़ौज है एक लम्हा ज़ाए किए बग़ैर शूबक की फ़ौज मुक़ाबिले के लिए तैयार हो गई लेकिन गर्द मे जो झण्डे नज़र आए वह इस्लामी थे। फिर गर्द में से तकबीर के नारे सुनाई दिए। क़िले से सुलतान अय्यूबी के नाएबीन इस्तक़बाल के लिए आगे चले गए।

❖

तीन चार रोज़ बाद सुबह सवेरे क़ाहेरा में जो फ़ौज थी उसे मैदान में जमा होने का हुकम मिला। फ़ौजी चेमीगोईयां करने लगे कि उन्हें तैयारी का यह हुक्म क्यों मिला है। बाज़ ने कहा बग़ावत होगी। किसी ने कहा कि सूडानियों का हमला आरहा है। उन के कमांडरों तक को इल्म नहीं था कि इस इज्तेमा का मक़सद क्या है। यह हुक्म फ़ौज की मरकज़ी कमान से जारी

हुआ था। जब तमाम फौज अपनी तरतीब से मैदान में आगई तो एक तरफ से छ सात घोड़े दौड़ते आए। सब देख कर हैरान रह गए कि सब से आगे सलाहुद्दीन था। सब जानते थे कि वह शूबक में है। सुलतान अय्यूबी ने एक अजीब हरकत की। उस ने तहबंद के सिवा तमाम कपड़े उतार कर फेंक दिए सर भी नंगा कर दिया और फौज की तमाम सफों के सामने से घोड़ा दुलकी चाल चलाता गुज़र गया। फिर सामने आकर बुलंद आवाज़ से कहा– "मेरे जिस्म पर किसी ने कोई ज़ख्म देखा है? क्या मैं ज़िंदा हूं या मुर्दा?"

"अमीरे मिश्र का इक़बाल बुलंद हो।" एक शुत्र सवार ने कहा– हमें बताया गया था कि आप ज़ख्मी हैं और जांबर नहीं हो सकें गे।"

"अगर यह ख़बर झूटी है तो वह अफवाहें भी झूटी हैं जो तुम्हारे कानों में डाली गई हैं। सुलतान अय्यूबी ने इतनी बुलंद आवाज़ से कहा कि आख़िरी सफ तक आवाज़ पहुंचती थी। उस ने कहा– "जिन मुजाहेदीन के मुतअल्लिक तुम्हें बताया गया है कि वहां सोना और चांदी लूट रहे हैं और इसाई लड़कियों के साथ ऐश कर रहे हैं वह रेगिस्तान में अगला क़िला और उस से अगला क़िला और उस से अगला क़िला सर करने की तैयारियों में पागल हो रहें हैं। वह क्यों भूके प्यासे मर रहे हैं सिर्फ़ इस लिए कि तुम्हारी माओं, बहनों और बेटियों की इस्मतों को सलीबी दरिंदों से बचा सकें। शूबक में हम ने मुसलामन बच्चियों और उन की माओं और उन के बापों का यह हाल देखा है कि बच्चियां ईसाईयों के पास और उन की माएँ और उन के बाप ईसाइयों की बेगारी करके मर रहे थे। अब कर्क, युरोशलम और फिलिस्तीन की हर बस्ती में जो ईसाइयों के कब्ज़े में हैं मुसलमानों का यही हाल होरहा है। मस्जिदें अस्तबल बना दी गई हैं और क़ुर्आन के मुक़द्दस वर्क़ गलियों में ईसाइयों के कदमों में मसले जारहे हैं।"

यह तक़रीर इतनी जोशीली और संसनी खेज़ थी कि एक कमांदार ने चिल्ला कर कहा– "फिर हम यहां क्या कर रहे हैं? हमें भी महाज़ पर क्यों नहीं लेजाया जाता?"

"तुम्हें यहां इस लिए बैठाया गया है कि दुशमन की फैलाई हुई अफवाहे सुनो और उन पर यक़ीन करो।" सुलतान अय्यूबी ने कहा "तुम यहां अपने परचम के ख़िलाफ़ बग़ावत करो ताकि सूडानियों के साथ सलीबी इस सरज़मीन पर भी कब्ज़ा करले और तुम्हारी बेटियों की भी इस्मत दरी करें। तुम क़ुर्आन के वर्क़ अपने हाथों बाहर क्यो नहीं बिखेर देते? क्या तुम क़ुर्आन की तौहीन सलीबियों से कराना चाहते हो? तुम जो अपने इमान की हिफाज़त नहीं करसकते कौम की आबरू की हिफ़ाज़त क्या करोगे?" तमाम फौज में हलचल सी पैदा हो गई। सुलतान अय्यूबी ने कहा– "तुम्हें यहां चंद एक कमांदार नज़र नहीं आरहे हैं वह मैं तुम्हें दिखाता हूं।"

उस ने इशारह किया तो एक तर्फ से दस ग्यारह आदमी गरदनों में रस्सियां पड़ी हुई और हाथ पीठ पीछे बंधे हुए आगे लाए गए। उन्हें सफों के आगे से गुज़ारा गया। सुलतान अय्यूबी ने एलान किया– "यह तुम्हारे कमांदार थे लेकिन यह उस कौम के दोस्त हैं जो तुम्हारे रसूल स0 और तुम्हारे क़ुर्आन की दुशमन है। यह पकड़े गए हैं।" सुलतान अय्यूबी ने फौज को खिज़रुलहयात के कत्ल और मुस्लेहुद्दीन की गिरिफतारी का पूरा व्वाक़ेआ सुनाया और

मुस्लेहुद्दीन को सामने लाया गया। वह अभी तक पागल पन की हालत म था। सुलतान अय्यूबी गुज़िश्ता रात कोतवाली के तह खाने में उसे देख आया था। उस ने सुलतान अय्यूबी को पहचाना नहीं था। वह अपनी रियासत और खुदमुखतारी की बातें कर रहा था। अब सुलतान अय्यूबी ने उसे घोड़े पर बिठा कर फौज के सामने खड़ा कर दिया उसने फ़ौज को देखा और बुलंद आवाज़ से बोला– "यह मेरी फ़ौज है। मिश्र की हुकूमत के खिलाफ़ बगावत करदो। मैं तुम्हारा बादशाह हूं। सलाहुद्दीन अय्यूबी मिश्र का दुशमन है। तुम उसे कत्ल करदो।"

वह बोले जारहा था। उस के मुंह से पागल पन की झाग निकल रही थी। फ़ौज की सफों से "पिंग" की आवाज़ आई और एक तीर मुस्लेहुद्दीन की शहे रग में उतर गया। जब कई और तीर उस के जिस्म में उतर गए सुलतान अय्यूबी ने चिल्ला कर तीर अंदाज़ों को रोका। कमांदारों ने तीर चलाने वालों को आगे आने को कहा। उन में से एक ने कहा कि हम ने ग़द्दार को मारा है। अगर यह कत्ल है तो गरदनें हाज़िर हैं" सुलतान अय्यूबी ने उन्हें माफ करदिया। उस के जिस्म पर अभी तक सिर्फ़ तहबंद था बाकी जिस्म नंगा था। उस ने जल्लाद को वहीं बुलाया और उन ग़द्दारों को जिन्हें फ़ौज के सामने लाया गया था, जल्लाद के हवाले करके उनके सर जिस्मों से अलग करा दिए।

उस ने एक और हुक्म देकर सब को हैरान कर दिया। उसने हुकम दिया कि यह फ़ौज यहीं से महाज़ को कूच करे गी। तुम्हारा ज़ाती और दीगर साज़ोसामान और रसद तुम्हारे पीछे आए गा। फ़ौज कूच कर गई जिस का मतलब यह था कि मिश्र फ़ौज के बग़ैर रहे गा। सुलतान अय्यूबी ने ग़द्दारों के कटे हुए सर देखे। वह किसी से कोई बात करने लगा तो उसे हिचकी सी आई और उस के आंसू बह निकले। उस ने कपड़े पहने और एक सिम्त चल पड़ा। उस ने अपने साथ के हुक्काम से कहा। "मुझे ख़तरा यह नज़र आरहा है कि दुशमन मिल्लते इस्लामिया में इसी तरह ग़द्दार पैदा करता रहेगा और वह दिन आजाए गा, जब ग़द्दारों की गर्दनें मारने वाले भी दुशमन को दोस्त कहने लगें गे। मेरे दोस्तो! इस्लाम को सर बुलंद देखना चाहते हो तो दोस्त और दुशमन को पहचानों।"

मिश्र के जिन हाकिमों को मालूम नही था कि सुलतान अय्यूबी ने फ़ौज को क्यों कूच करा दिया है, उन्हें उस ने बताया कि यह फ़ौज यहां फारिग़ बैठी थी। मैं हुक्म देगया था कि उसे फारिग़ न रहने दिया जाए। जंगी मश्कें जारी रहें और शहर से दूर लेजाकर उस फ़ौज को वक़्तन फवक़्तन जंगी हालत में रखा जाए और ज़ेहनी तरबियत भी जारी रहे मगर मेरे हुक्म पर अमल नहीं किया गया। मैं ने दो ज़िम्मेदार हाकिमों को सज़ाए मौत देदी है। उन्हों ने एक साज़िश के तेहत फ़ौज को फारिग रखा। सिपाही जुए और नशे में दिल बहलाने लगे और उन के ज़ेहन अफवाहों को क़ुबूल करने लगे। तूम शायद यह सोंच रहे हो कि मिश्र में फ़ौज नहीं रही। घबराओ नहीं। फ़ौज आरही है। जिस फ़ौज ने शूबक फ़तह किया है वह क़ाहेरा में दाख़िल हो चुकी है। उस ने मेरे पीछे पीछे कूच किया था। वह फ़ौज दुशमन के गुनाहों को बहुत क़रीब से देख आई है। उसे कोई बाग़ी नहीं कर सकता। उस के सिपाही शहीदों को धोका नहीं देंगे और यह फ़ौज जो यहां से जारही है यह कर्क पर हमला करे गी या दुशमन उस पर

हमला करेगा। फिर यह फ़ौज भी दुशमन को जान जाए गी। जो सिपाही एक बार दुशमन की आंखों में आंखें डाल कर लड़े उसे कोई लालच ग़द्दारी पर आमादह नहीं करसकता।

यह इंक़लाब इस तरह आया कि नूरुद्दीन ज़ंगी और अपने भीई तक़ीउद्दीन की तरफ़ क़ासिद भेज कर सुलतान अय्यूबी खुफ़िया तौर पर क़ाहेरा के लिए रवाना हो गया था। अपने नाएबीन को कमान देकर उस ने सख़्त हिदायत दी थी कि उस की ग़ैर हाज़री की किसी को ख़बर न हो। उस ने कहा कि ज़ंगी ज़रूर मदद भेजे गा। जूंही मददआए उतनी ही अपनी फ़ौज यहां से क़ाहेरा भेज दी जाए। लेकिन रास्तें में पड़ाव ज़्यादा न करे। इस से सुलतान अय्यूबी के दो मक़ासिद थे। एक यह कि अगर मिश्र की फ़ौज बाग़ी हो गई तो महाज़ से आने वाली फ़ौज बग़ावत फ़रो करे गी और अगर हालात ठीक हुए तो मिश्र की फ़ौज महाज़ पर आजाए गी और महाज़ की फ़ौज मिश्र में रहे गी। सुलतान अय्यूबी क़ाहेरा पहुंचा तो उसकी मौजूदगी खुफ़िया रखी गई। रात ही रात उस ने ज़ैनुद्दीन की निशानदेही के मुताबिक़ तमाम ग़द्दारों को सोते में पकड़वाया। कई और जगहों पर छापे मरवाए। तीन हशीशीन ने भी बाज़ अफ़राद के नाम बताए थे। उन्हें भी पकड़ा गया। किसी के ओहदे और रुतबे का लेहाज़ न किया गया।

फ़ातमा को सुलतान अय्यूबी के हुकम के मुताबिक़ ज़ैनुद्दीन के हवाले कर दिया गया और उसे कहा गया कि किसी मौज़ूं जगह उस की शादी करदी जाए। अब सुलतान अय्यूबी तक़ीउद्दीन का इंतज़ार करने लगा। उसे तीन दिन इंत्ज़ार करना पड़ा। तक़ीउद्दीन कमो बेश दोसौ सवारों के साथ आगया। सुलतान अय्यूबी ने उसे मिश्र के हालात और वाक़ेआत और आइंदा लाहिए अमल बताकर क़ाएम मुक़ाम अमीरे मिश्र मुक़र्रर करदिया और यह एजाज़त भी देदी कि वह सूडान पर नज़र रखे और जब ज़रूरत समझे हमला करदे।

यह हेदायात और एहकाम देकर सुलतान अय्यूबी शूबक को रवाना होने लगा तो अली बिन सुफ़यान जो उस के साथ आया था बोला– "कर्क के सलीबियों ने आप के लिए एक तोहफ़ा भेजा है। अगर कुछ देर और इंतज़ार करें तो तोहफ़ा देखते जाएं।" अली बिन सुफ़यान सुलतान अय्यूबी को हैरत में छोड़ कर बाहर निकल गया। उस ने सुलतान अय्यूबी को बाहर चलने को कहा।

सुलतान अय्यूबी घोड़े पर सवार होकर अली बिन सुफ़यान के साथ चला गया। थोड़ी ही दूर मैदान में पांच सौ घोड़े खड़े थे। हर घोड़े पर ज़ीन कसी हुई थी। उन घोड़ों से ज़रा परे सात आठ सलीबी रस्सियों से बंधें हुए खड़े थे और अपनी फ़ौज का एक सरहदी दस्ता भी मुस्तइद खड़ा था। सुलतान अय्यूबी ने पूछा कि यह घोड़े कहां से आए हैं? अली बिन सुफ़यान ने एक आदमी को बुला कर सुलतान के सामने खड़ा करदिया और कहा– "यह मेरा जासूस है। यह तीन साल से सलीबियों के लिए जासूसी कर रहा है। यह सलीबियों और सूडानियों के दरमियान राबते का काम करता है। वह इसे अपना जासूस समझते हैं लेकिन यह मेरा जासूस है। यह कर्क गया था और सलीबी बादशाहों को सूडानियों का पैग़ाम दिया कि उन्हें पांच सौ घोड़ों और ज़ीनों की ज़रूरत है। उन्हों ने घोड़े देकर अपने यह फ़ौजी अफ़सर भी भेज दिए।

यह उस सूडानी फौज की क़यादत करने जारहे थे जिसे मिश्र पर हमले के लिए तैयार किया जारहा है। मेरा शेर उन्हें शुमाल की तरफ़ से घुमा फिरा कर एक फंदे में ले आया और अपने सरहदी दस्ते को बुला लाया। अपनी शनाख़्त बताई और यह दस्ता पांच सौ घोड़ों और इन सलीबी फौजी अफ़सरों को क़ाहेरा हांक लाया।"

सलीबी अफ़सरों को मालूमात हासिल करने के लिए अली बिन सुफ़यान ने अपने नायब हसन बिन अब्दुल्लाह के हवाले करदिया और खुद सुलतान के साथ शूबक को रवाना होगया।

❖❖

खंडरों की आवाज़

साज़िश और ग़द्दारी के मुजरिमों का खून काहेरा की रेत ने अभी अपने अंदर जज़्ब भी नहीं किया था कि सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी का भाई तक़ीउद्दीन उसके बुलावे पर दोसौ मुंतखब सवारों के साथ क़ाहेरा पहुंच गया। साज़िश के मुजरिमों की गरदनें काटी जाचकी थीं और यूं नज़र आरहा था जैसे क़ाहेरा की रेत इन मरे हुए मुसलमानों का खून अपने अंदर जज़्ब करने से गुरेज़ कर रही है जो सलीबियों के साथ मिल कर सलतनते इस्लामिया के परचम को सरनिगूं करने की कोशिश में मसरूफ थे। सुलतान अय्यूबी ने इन सब की लाशें देखीं। उनके कटे हुए सर उन की बेजान जिसमों के सीनों पर रख दिए गए थे। सिर्फ़ एक लाश थी जो सबसे बड़े गद्दार की थी और जिस पर सुलतान अय्यूबी को कुल्ली तौर पर एतमाद था। उस लाश का सतर उस के साथ ही था। एक तीर उस की शहे रग में दाख़िल होकर दूसरी तरफ़ निकला हुआ था। यह काहेरा का नायब नाज़िम मुस्लेहुद्दीन था। फ़ौज के सामने जब उसका जुर्म सुनाया जारहा था। तो एक जोशीले और मोहिब्बे इस्लाम सिपाही ने कमान में तीर डाल कर मुस्लेहुद्दीन की शहे रग से पार कर दिया था। सुलतान अय्यूबी ने सिपाही की इस ग़ैर क़ानूनी हरकत को जो फ़ौजी डिसिलिन के ख़िलाफ थी सिर्फ़ इस लिए नज़र अंदाज़ करके माफ करदिया था कि कोई भी साहिबे ईमान इस्लाम के ख़िलाफ़ ग़द्दारी बरदाश्त नहीं कर सकता। सुलतान अय्यूबी ने ही अपनी फ़ौज में ईमान की यह कूवत पैदा की थी।

इन लाशों को देख कर सुलतान अय्यूबी के चेहरे पर ऐसी खुशी की हलकी सी भी झलक नहीं थी कि उसकी सफों और निज़ामे हुकूमत में से इतने ज़्यादा ग़द्दार अैर साज़िशी पकड़े गए और उन्हें सज़ाए मौत देदी गई है। उस के चेहरे पर उदासी और आंखें गहरी सुर्ख थीं जैसे वह आंसू रोकने की कोशिश कर रहा था। गुस्सा तो था ही जिसका इज़हार उस ने इन अलफ़ाज़ में किया– "इन में से किसी का जनाज़ा नहीं पढ़ाया जाए गा। इन की लाशें इन के रिशते दारों को नहीं दी जाऐं गी ताकि इन्हें कफन नह पहनाऐ जाऐं। रात के अंधेरे में उन्हें एक ही गहरे गढ़हे में फेंक कर मिट्टी डाल दो और ज़मीन हमवार करदो। इस दुन्यिा में इनका निशान भी बाक़ी न रहे।"

"अमीरे मोहतरम!" सुलतान अय्यूबी के एक रफ़ीक़ और मोतमद खास क़ाज़ी बहाउद्दीन शद्दाद ने सुलतान अय्यूबी से कहा। "कोतवाल और शाहिदों के बयान और क़ाज़ी का फ़ैसला तहरीर में लाकर दस्तावेज़ में महफूज़ करलेना ज़रूरी है ताकि यह एतराज़ न रहे कि यह फ़ैसला सिर्फ़ एक फर्द का था। आप का फ़ैसला बरहक़ है। इन्साफ कर दिया गया है मगर

कानून का तकाज़ा कुछ और है।"

"क्या कुर्आन हकीम ने यह हुक्म दिया है कि दीने इलाही की जड़ें कुफ्फार के साथ मिलकर काटने वाले को यह हक दिया जाए कि वह कानून के सामने खड़ा होकर दीनदारों और अल्लाह व रसूल सल्ललाहो अलैहे व सल्लम की अज़मत के पासबानों को झूटा साबित करे?" सुलतान अय्यूबी ने ऐसे तहम्मुल से कहा जिस में एक दीनदार और मुसलमान का एताब साफ झलक रहा था। उसने उन तमाम हाकिमों को जो वहां मौजूद थे मोखातिब होकर कहा– "अगर मैं ने बे इन्साफी की है तो मुझे इतने ज़्यादा इंसानों के कत्ल के जुर्म में सज़ाए मौत देदो और मेरी लाश शहर से दूर फेंक दो जहां सेहराई लोमड़ियां और गिध मेरी कोई हड्डी भी इस ज़मीन पर न रहने दें लेकिन मेरे रफीको! मुझे सज़ा देने से पहले कुर्आन पाक अलिफ लाम मीम से वन्नास तक पढ़ लेना। अगर कुर्आन मुझे सज़ा देता है तो मेरी गर्दन हाज़िर है।"

"बेइन्साफी नहीं हुई सालारे आज़म!" किसी और ने कहा "काज़ी शद्दाद का मकसद यह है कि कानून की बेहुर्मती न हो।"

"मैं समझ गया हूं" सुलतान अय्यूबी ने कहा "उन का मकसद आईने की तरह साफ है। मैं आप सब को सिर्फ यह बताना चाहता हूं कि हाकिमे वक़्त ज़ाती तौर पर जानता है कि जिसे ग़द्दारी के जुर्म में उस के सामने लाया गया है वह ग़द्दारी का मुज्रिम है तो हाकिमे वक़्त पर यह फर्ज़ आइद होता है कि वह शहादतों और कानून के दीगर झमेलों में पड़े बग़ैर ग़द्दार को वही सज़ा दे जिस का वह हकदार है, अगर वह सज़ा देने से गुरेज़ करता, डरता या हिचकिचाता है तो वह हाकिमे वक़्त खुद भी ग़द्दार है या कम अज़ कम नाअहल और बेईमान ज़रूर है। वह डरता है कि काज़ी के सामने जाकर मुजरिम उसे भी मुजरिम कह दें गे। मेरा सीना साफ है। मुझे ग़द्दारों की सफ में खड़ा कर दो। खुदा का हाथ मुझे उन से अलग करदेगा। अगर तुम्हारे सीने रब्बे काबा के नूर से मोनव्वर हैं तो मुजरिमों का सामना करने से मत डरो। ताहम मेरे दोस्त बहाउद्दीन ने जो मशवरा दिया है उस पर अमल करो। कागज़ात तैयार करके मोहतरम काज़ी से फैसला तहरीर करवालिया करो। ज़ाहिर है कि यह फ़ैसला उनका नहीं होगा। तहरीर करदिया जाए कि अमीरे मिश्र जो अफवाजे मिश्र का सालार आला भी है, ने अपने खुसूसी इख्तियारात इस्तेमाल करते हुए उन मुजरिमों को सज़ाए मौत देदी है जिनका जुर्म बिलाशको शुबहा साबित हो गया था।" सुलतान अय्यूबी ने अपने भाई तकीउद्दीन की तरफ देखा। वह बड़े लमबे सफर से आया था। थका हुआ था। सुलतान अय्यूबी ने उससे कहा "मैं तुम्हारे चेहरे पर तफक्कुर और थकन देख रहा हूं लेकिन तुम आराम नहीं कर सको गे। तुम्हारा सफर ख़त्म नहीं हुआ बल्कि अब शुरू हुआ है। मुझे शूबक जलदी जाना है। तुम्हारे साथ कुछ ज़रूरी बातें करके जाऊंगा।"

"जाने से पहले एक हुकम और सादिर फरमा जाईऐ "नाज़िम शहर ने कहा। "जिन्हें सज़ाऐ मौत दी गई है, उन की बेवाओं और बच्चों का क्या बने गा।"

"उन के लिए भी मेरे इसी हुकम पर अमल करो जो मैं ने पहले ग़द्दारों के अहलो अयाल के

मुतअल्लिक दे चुका हूं।" सुलतान अय्यूबी ने जवाब दिया। "बेवाओं के मुतअल्लिक यह छान बीन करलो कि अपने खाविंदों की तरह उनमें से किसी का तअल्लुक दुश्मन के साथ न हो। हमारे हां ज़न परस्ती ने भी ग़द्दार पैदा किए हैं। आप ने देख लिया है कि सलीबियों ने हमारे भाईयों को खूबसूरत लड़कियां देकर उन के एवज़ उन का ईमान खरीदा है। उन में से जो बेवाऐं नेक और मोमिन हैं उन की शादियां उन की मंशा के मुताबिक करदो। किसी पर अपना फ़ैसला ठूंसने की कोशिश न करना। खयाल रखना कि कोई औरत बेसहारा न रहे और बाइज़्ज़त रोटी से महरूम न रहे और उस में मुहताजी का एहसास न पैदा हो। यह भी खयाल रखना कि उन के कानों में कोई यह न फूंकदे कि उनके खाविंदों को बेगुनाह सज़ाए मौत दी गई है। उन्हें ज़ेहन नशीन करादो कि तुम खुश किसमत हो कि ऐसे गुनहगार खाविंदों से नजात मिल गई है और उन के बच्चों की तालीम व तरबियत खूसूसी इन्तज़ामात के तेहत करो। तमाम इखराताज बैतुलमाल से लो। ग़द्दारों के बच्चे ग़द्दार नहीं हुआ करते बशर्ते कि उन की तालीम व तरबियत सही हो। यह सब मुसलमानों के बच्चे हैं इन की तालीम व तरबियत ऐसी हो कि इन को महरूमी का एहसास पैदा न हो। कहीं ऐसा न हो कि बाप के गुनाह का कफ्फारह बच्चे को अदा करना पड़े।"

❖

सुलतान अय्यूबी को वापसी की जलदी थी। उसे फिक्र यह था कि उस की ग़ैर मौजूदगी में सलीबी कोई जंगी कारवाई न करदें। नूरुद्दीन ज़ंगी की भेजी हुई कुमक तो वहां (कर्क और शूबक के इलाके में) पहुंच चुकी थी। क़ाहेरा की फ़ौज अभी उधर जारही थी लेकिन उन दोनो फ़ौजों को उस इलाके से रूशनास कराना था। उस ने अपने दफ़तर में जाकर अपने भाई तक़ीउद्दीन, अली बिन सुफ़यान, उस के नायब हसन बिन अब्दुल्लाह, कोतवाल ग़यास बलबीस और चंद एक नाएबीन और हुक्काम को बुलाया। वह ज़्यादा तर हिदायात तक़ीउद्दीन को देना चाहता था। उस ने इजलास में एलान किया कि उस की ग़ैर हाज़री में उसका भाई तक़ीउद्दीन क़ायम मुक़ाम अमीरे मिश्र और यहां की अफवाज का सालारे आला होगा और उसे उतने ही इख्तियारात हासिल होंगे जो सुलतान अय्यूबी के अपने थे।

"तक़ीउद्दीन!" सुलतान अय्यूबी ने अपने भाई से कहा– "आज से दिल से निकाल दो कि तुम मेरे भाई हो। नअहली, बद दियानती, कोताही, ग़द्दारी या साज़िश और बे इंसाफी का इरतकाब करो गे तो उसी सज़ा के मुसतहिक समझे जाओगे जो शरीअत के क़ानून में दर्ज है।"

"मैं अपनी ज़िम्मे दारियों को अछी तरह समझता हूं अमीरे मिश्र!" तक़ीउद्दीन ने कहा "और इन ख़तरों से भी आगाह हूं जो मिश्र को दरपेश हैं।"

"सिर्फ़ मिश्र को नहीं।" सुलतान अय्यूबी ने कहा "यह खतरे सलतनते इस्लामिया को दरपेश हैं और इसलाम के फरोग़ और सलतनत की तौसीअ के लिए बहुत बड़ी रुकावट हैं। हमेशा याद रखो कि कोई भी खित्ता जो सलतनते इस्लामिया कहलाता है, वह किसी एक फर्द या गिरोह की जागीर नहीं। वह खुदाए अज्ज़ व जल्ल की सरज़मीन है और तुमसब इस

के पासबान और अमीन हो। इस की मिट्टी भी जब अपने काम में लाना चाहो तो सोंच लो कि तुम किसी दूसरे इनसान का हक तो नहीं मार रहे? खुदा की अमानत में खयानत तो नहीं कर रहे? मेरी बातें गौर से सुन लो तकीउद्दीन! इस्लाम की सब से बड़ी बदनसीबी यह है कि उस के पैरूकारों में ग़द्दारों और साज़िश पसंदों की तादाद बहुत ज्यादा है किसी कौम ने इतने गद्दार पैदा नही किए जितने मुसलमानों ने किए हैं। यहां तक कि हमारी तारीख़ जो जेहाद और अल्लाह के नाम पर जंग व जदल की काबिले फ़ख्र तारीख़ है, ग़द्दारी की भी तारीख़ बन गई है और अपनी कौम के ख़िलाफ़ साज़िश गरी हमारी रेवायत बन गई है अली बिन सुफ़यान से पूछो तकी! हमारे वह जासूस जो सलीबियों के इलाकों में सरगरम रहते हैं, बताते हैं कि सलीबी हुकमरान, मज़हबी पेशवा और दानिशवर इस्लाम की इस कमज़ोरी से वाकिफ हैं कि मुसलमान ज़न, ज़र और इक्तेदार के लालच में अपने मज़हब, अपने मुल्क और अपनी कौम का तख्ता उलट देने से गुरेज़ नहीं करता।"

"सुलतान अय्यूबी ने इजलास के शुरका पर निगाह दौड़ाई और कहा– "हमारे जासूसों ने हमें बताया है कि सलीबियों ने अपने जासूसों को ज़ेहन नशीन कराया है कि मुसलमान की तारीख़ जितनी फतूहात कीहै उतनी ही गद्दारी की तारीख़ है। मुसलमानों ने उतनी फतूहात हासिल नहीं कीं जितने ग़द्दार पैदा किए हैं। रसूले अकरम सल्ललाहो अलैहे व सल्लम की वफात के फ़ौरन बाद खेलाफत पर एक दूसरे के ख़िलाफ़ लड़ने के लिए उठ खड़े हुए। उन्हों ने इक़्तदार की खातिर एक दूसरे को क़त्ल किया। एक ख़लीफा या अमीर मुकर्रर हुआ तो ख़िलाफ़त और इमारत के दूसरे उम्मीदवारों ने उस के ख़िलाफ़ यहां तक साज़िशें कीं कि इस्लाम के दुशमनों तक से दर पर्दा मदद ली और जिस के हाथ में ख़िलाफ़त और इमारत आगई उस ने हर उस काइद को क़त्ल कराया जिस से इकतेदार को ख़तरा महसूस हुआ। क़ौमी वकार ख़त्म हो गया और ज़ाती इक़्तेदार रह गया। फिर तहफ्फुज़ इसी का होता रहा। सलतनत की तौसीअ ख़त्म हुई फिर सलतनत का दिफा ख़त्म हुआ और फिर सलतनत सिकुड़ने लगी। सलीबी हमारी इस तारीख़ी कमज़ोरी से आगाह हैं कि हम लोग ज़ाती इक्तेदार के तहफ्फुज़ और इस्तेहकाम के लिए सलतनत का बहुत बड़ा हिस्सा भी कुर्बान करने को तैयार होजाते हैं यही हमारी तारीख़ बनती जारही है।

"तकीउद्दीन और मेरे रफीको! मैं जब माज़ी पर निगाह डालता हूं और जब अपने मौजूदा दौर में ग़द्दारों की भरमार और साज़िशों के जाल देखता हूं तो यह ख़तरा महसूस करता हूं कि एक वक़्त आएगा कि मुसलमान तारीख़ की तहरीरों के साथ भी ग़द्दारी करें गे। वह कौम की आंखों में धूल झोंक कर लिखेंगे कि वह बहादुर हैं और उन्हों ने दुशमन को नाक चने चबवा दिऐ हैं मगर दरपरदह दुशमन को दोस्त बनाए रखेंगे। अपनी शिकस्तों पर परदह डाले रखें गे। सलतनते इस्लामिया सिकुड़ती चली जाऐगी और हमारे खुद साख्ता खलीफ़े इस का इल्ज़ाम किसी और पर थोप देंगे। मुसलमानों की एक नसल ऐसी आएगी जिन के पास सिर्फ़ नारह रहजाएगा। "इस्लाम ज़िन्दा बाद" वह नसल अपनी तारीख़ से आगाह नहीं होगी। उस नसल को यह बताने वाला कोई न होगा कि इस्लाम के पासबान और अलमबरदार वह थे जो

वतन से दूर रेगज़ारों में, पहाड़ों और वादियों में, अजनबी मुलकों में जाकर लड़े। वह दरिया और समुन्दर फलांग गऐ। उन्हें कड़कती बिजलियां, आंधियां और ओलों के तूफान भी न रोक सके। वह उन मुलकों में लड़े जहां के पत्थर भी उन के दुशमन थे। वह भूके लड़े, प्यासे लड़े, हथ्यारों और घोड़ों के बगैर लड़े। वह जखमी हुए तो किसी ने उन के ज़खमों पर मरहम न रखा। वह शहीद हुए तो उन के रफीकों को उन के लिए क़बरें खोदने की मोहलत न मिली। वह खून बहाते गए। अपना भी, दुशमन का भी। और पीछे एवाने ख़िलाफ़त में शराब बहती रही। बरहना लड़कियों के नाच होते रहे। यहूदी और सलीबी सोने से और अपनी बेटियों के हुसन से हमारे ख़लीफ़ों और हमारे अमीरों को अंधा करते गए। जब ख़लीफ़ों ने देखा कि कौम उन तेग़ज़नों की पुजारी होती जारही है जिन्हों ने यूरप और हिन्दुस्तान में इस्लाम के झंडे गाड़ दिए हैं तो ख़लीफ़ों ने उन मुजाहेदीने इस्लाम पर लूट मार और ज़नाकारी जैसे इल्ज़ाम थोपने शुरू कर दिए। उन्हें कुमक और रसद से महरूम करदिया। मुझे कासिम का वह कमसिन और खूबरू बेटा याद आता है जिस ने इस हाल में हिन्दुस्तान के ताक़त वर हुकमरान को शिकसत दी और हिन्दुस्तान के इतने बड़े हिस्से पर क़ब्ज़ा कर लिया था कि उस ने कुमक नहीं मांगी, रसद नहीं मांगी। मफतूहा इलाकों का ऐसा इनतज़ाम किया कि हिन्दू उस के गुलाम हो गए। और उस की शफक़त से मुतअस्सिर होकर मुसलमान होगए। मुझे जब यह लड़का याद आता है तो दिल में दर्द उठता है, उस वक़्त के ख़लीफा ने उस के साथ क्या सलूक किया था? उस पर ज़िना का इल्ज़ाम आइद किया और मुजरिम की हैसियत से वापस बुला लिया।" सुलतान अय्यूबी को हिचकी सी आई और वह खामोश हो गया।

बहाउद्दीन शद्दाद अपनी याद दाशतों में लिखता है– "मेरा अज़ीज़ दोस्त सलाहुद्दीन अय्यूबी अपनी फ़ौज के सैकड़ों शहीदों की लाशें देखता तो उस की आंखों में चमक और चेहरे पर रौनक आजाया करती थी मगर सिर्फ़ एक ग़द्दार को सज़ाए मौत दे कर जब उस की लाश को देखता तो उसका चेहरा बुझ जाता और आंखों से आंसू जारी होजाते थे। मोहम्मद बिन कासिम का ज़िक्र करते करते उसे हिचकी आयी और वह खामोश होगया। मैं देख रहा था कि वह आंसू रोक रहा है। कहने लगा "दुशमन उसका कुछ न बिगाड़ सका। अपनों ने उसे शहीद कर दिया। दुशमन ने उसे फातेह तसलीम कर लिया। अपनों ने उसे ज़ानी कहा। सलाहुद्दीन अय्यूबी ने तारिक़ के बेटे ज़्याद का भी ज़िक किया और उस रोज़ वह इतना जज़बाती हो गया था कि उस की ज़ुबान रुकती ही नहीं थी हालांकि वह कमगो था। हकीकत पसंद था। हम सब पर खामोशी तारी थी और हम सब जिस्म के अंदर अजीब सा असर महसूस कर रहे थे। सलाहुद्दीन अय्यूबी बिला शक व शुबहा अज़ीम क़ाइद था। वह माज़ी को नहीं भूलता था। हाल के ख़तरों और तक़ाज़ों से नबुर्द आज़मा रहता और उस की नज़रें सदयों बाद आने वाले मुस्तकबिल पर लगी रहती थीं।"

"सलीबियों की नज़रें हमारे मुस्तकबिल पर लगी हुई हैं" सुलतान अय्यूबी ने कहा– "सलीबी हुकमरान और फौजी हुक्काम कहते हैं कि वह इस्लाम को हमेशा के लिए ख़त्म कर दें गे। वह हमारी सलतनत पर क़ाबिज़ नहीं होना चाहते। वह हमारे दिलों को नज़रियात की

तलवार से काटना चाहते हैं। मेरे जासूसों ने मुझे बताया है कि सलीबियों का सब से ज़्यादा इस्लाम दुशमन बादशाह फिल्प आगसटस कहता है कि उन्हों ने अपनी कौम को एक मकसद दे दिया है और एक रिवायत पैदा कर दी है। अब सलीबियों की आने वाली नसलें इस मकसद की तकमील के लिए सरगरम रहें गी। ज़रूरी नहीं कि वह तलवार के ज़ोर से अपना मकसद हासिल करेंगे। उन के पास कुछ हरबे और भी हैं। तकीउद्दीन ! जिस तरह उनकी नज़र मुसतकबिल पर है उसी तरह हमें भी मुसतकबिल पर नज़र रखनी चाहिए। जिस तरह उन्हों ने हम में गद्दार पैदा करने की रिवायत काएम करदी है। इसी तरह हमें ऐसे ज़राए इख्तयार करना चाहिए कि गद्दारी के जरासीम हमेशा के लिए ख़त्म हो जाऐं। गद्दारों को कत्ल करते चले जाना कोई इलाज नहीं। गद्दारी का रुजहान ख़त्म करना है। इक्तदार की हवस ख़त्म करके हुब्बे रसूल पैदा करनी है। यह उसी सूरत में पैदा हो सकती है कि कौम की आंखों में रसूल स0 के दुशमन का तसव्वुर मौजूद हो। मुसलमानों को मालूम होना चाहिए कि सलीबियों की तहज़ीब में एसी बेहयाई है जो पुरकशिश है। कौमें उन की तहज़ीब में जज़ब होती चली जारही हैं। उन के हां शराब भी जायज़ है, औरतों का गैर मर्दों के साथ नाचना कूदना और तंहा रहना भी जायज़ है। हमारे और उन के दरमियान यही सब से बड़ा फर्क है कि हम इस्मतों के पासबान हैं और वह इस्मतों के ब्योपारी। यही वह फर्क है जो हमारे मुसलमान भाई मिटा देते हैं। तकीउद्दीन! तुम्हारा एक महाज़ ज़मीन के ऊपर है दूसरा ज़मीन के नीचे। एक महाज़ दुशमन के ख़िलाफ़ दूसरा अपनों के ख़िलाफ़। अगर अपनो में गद्दार न होते तो हम इस वक्त यहां नहीं यूरप के कलब में बैठे हुए होते और सलीबी हमारे ख़िलाफ़ अपनी हसीन बेटियों के बजाए कोई बेहतर हथ्यार इस्तेमाल करते और अछी किस्म की जंगी चालें चलते। ईमान की हरारत तेज़ होती तो इस वक्त तक सलीब इंधन की तरह जल चुकी होती।"

"मुझे आपकी बहुत सी दुशवारियों का इल्म यहां आकर हुआ है।" तकीउद्दीन ने कहा– "मोहतरम नूरुद्दीन ज़ंगी भी पूरी तरह आगाह नहीं कि मिश्र में गद्दारों की एक पूरी फ़ौज के घेरे में आए हुए हैं। आप उनसे कुमक मांग लेते। उन्हें मदद के लिए कहते।"

"तकी भाई!" सुलतान अय्यूबी ने जवाब दिया। "मदद सिर्फ़ अल्लाह से मांगी जाती है। मदद अपनों से मांगी जाए या गैरों से, अपना ईमान कमज़ोर करदेती है। सलीबियों की फ़ौज ज़िरह बक्तर में है। मेरे सिपाही मामूली से कपड़ों में मलबूस हैं फिर भी उन्हों ने सलीबियों को शिकस्त दी है। ईमान लोहे की तरह मज़बूत हो तो ज़िरह बक्तर की ज़रूरत नहीं रहती। ज़िरह बक्तर और खंदकें तहफ्फुज़ का एहसास पैदा करती हैं और सिपाही को अपने अंदर कैद कर लेती हैं। याद रखो मैदान में खंदक से बाहर रहो। घूम फिर कर लड़ो, दुशमन के पीछे न जाऔ, उसे अपने पीछे लाओ। मरकज़ को काएम रखो। पहलुओं को फैला दो और दुशमन को दोनो बाजुओं में जकड़ लो। महफूज़ा वहां रखो जहां से वह दुशमन के अकब में जासके। छापा मारों के बगैर कभी जंग न लड़ना। छापा मारों से दुशमन की रसद तबाह कराओ। वह रसद जो पीछे से आए और वह भी जो दुशमन अपने साथ रखे। छापा मारों को दुशमन के जानवरों को मारने या हरासां करने के लिए इस्तेमाल करो। आमने सामने की

टक्कर से बचों। जंग को तूल दो। दुशमन को परेशान किए रखो। मैं जो फ़ौज छोड़ चला हूं यह महाज़ से आई है। उसने शूबक का किला सर किया है, उस ने दुशमन की आंख से आंख मिलाई है। अपने सिपाहियों को शहीद कराके आई है। इस फ़ौज में जान पर खेलजाने वाले छापा मार दस्ते भी हैं। उसे सिर्फ़ इशारे की ज़रूरत है। मैं ने इस फौज में ईमान की हरारत पैदा कर रखी है। कहीं ऐसा ना हो कि तुम अपने आप को बादशाह समझ कर इस फ़ौज का ईमान सर्द करदो। हम पर जो हमला होरहा है वह हमारे ईमान पर हो रहा है। सलीबी तमद्दुन के असरात बड़ी तेज़ी से मिश्र में आरहे हैं। सुलतान अय्यूबी ने अपने भाई तक़ीउद्दीन को पूरी तफ़सील से बताया कि सूडान में मिश्र पर हमले की तैयारियां हो रही हैं सूडानियों में अकसरीयत वहां के हबशियों की है। जो मुसलमान हैं न ईसाई। उन में मुसलमान भी हैं जिन में मिश्र की उस फ़ौज के भगोड़े भी हैं। जिसे बग़ावत के जुर्म में तोड़ दिया गया था। सुलतान अय्यूबी ने कहा लेकिन घर बैठे दुशमन का इंतज़ार न करते रहना। जासूस तुम्हें ख़बरें देते रहें गे। हसन बिन अब्दुल्लाह तुम्हारे साथ है जहां महसूस करो कि दुशमन की तैयारी मुकम्मल हो चुकी है और वह अब हमले के लिए इजतेमा कर रहा है तुम वक़्त ज़ाए किए बग़ैर हमला कर दो और दुशमन को तैयारी की हालत में ही ख़त्म करदो। लेकिन पीछे के इन्तेज़ामात मज़बूत रखना। कौम को मुहाज़ के हालत से बेख़बर न रखना। अगर ख़ुदा न ख्वास्ता शिकसत हो जाए तो अपनी ग़लतियों और कोताहियों को तस्लीम कर लेना और क़ौम को बता देना कि शिकस्त के असबाब क्या थे। जंग क़ौम के खून और पैसे से लड़ी जाती है। बेटे क़ौम के शहीद और अपाहिज होते हैं लेहाज़ा क़ौम को एतमाद में लेना ज़रूरी है। जंग को बादशाहों का खेल न समझना। यह एक कौमी मसला है। इस में क़ौम को अपने साथ रखना। मैं ने जिस फातमी ख़िलाफ़त को माजूल किया था उस के हवारी हमारे ख़िलाफ़ सरगरम हैं। मालूम हुआ है कि उन्हों ने दरपर्दा अपना ख़लीफ़ा मुकर्रर कर रखा है। उन का ख़लीफ़ा अलआज़िद तो मर गया है लेकिन वह ख़िलाफ़त को इस उम्मीद पर जिंदा रखे हुए हैं कि सूडानी मिश्र पर हमला करें गे। हमारी फ़ौज बग़ावत करे गी और सलीबी चुपके से अंदर आकर फातमी ख़िलाफ़त बहाल करदें गे। फातमियों को हसन बिन सब्बाह के क़ातिल गिरोह की हिमायत हासिल है। मैं अली बिन सुफ़यान को अपने साथ लिए जारहा हूं। उसका नायब हसन बिन अब्दुल्लाह और कोतवाल ग्यास बलबीस तुम्हारे साथ रहें गे। यह उस ज़मीन दोज़ गिरोह पर नज़र रखेंगे। फ़ौज की भरती तेज़ करदो और उन्हें जंगी मशकें कराते रहो।

थोड़े ही अर्से से हमें इत्तलाऐं मिल रही हैं कि मिश्र के जुनूब मग़रबी इलाके से फ़ौज के लिए भरती नहीं मिल रही। हसन बिन अब्दुल्लाह ने कहा यह भी मालूम हुआ है कि वहां के लोग फ़ौज के ख़िलाफ़ होते जारहे हैं। मालूम कराया है कि बाइस क्या है।" अली बिन सुफ़यान ने पूछा।

"मेरे दो मुख़बिर उस इलाके में क़त्ल हो चुके हैं।" हसन बिन अब्दुल्लाह ने कहा। "वहां से ख़बर लेना आसान नहीं। ताहम मैं ने नए मुख़बिर भेज दिए हैं।"

"मैं अपने ज़राए से मालूम कर रहा हूं।" ग्यास बलबीस ने कहा "मुझे शक है कि उस

वसीअ इलाके के लोग किसी नए वहम में मुबतला होगए हैं। यह इलाका दुशवार गुज़ार है। लोग सख्त जान हैं लेकिन अकीदों के ढीले और तौहुमात परस्त हैं।"

"तवहुम परस्ती बहुत बड़ी लानत है।" सुलतान अय्यूबी ने कहा "उस इलाके पर नज़र रखो और वहां के लोगों को तौवहुमात से बचाओ।"

❖

तीन चार रोज़ बाद कर्क के किले में भी एक इजलास मुनअकिद हुआ। वह सलीबी हुकमरानों और फौज के आला कमांडरों का इजलास था। उन्हें यह तो मालूम था कि सलाहुद्दीन अय्यूबी फलस्तीन का एक किला (शूबक) लेचुका है और अब कर्क पर हमला करे गा। उन्हें इस एहसास ने परेशान कर रखा था कि अगर मुसलमानों ने कर्क को भी शूबक की तरह फतह कर लिया तो युरोशलम को बचाना मुशकिल होजाएगा। सलीबी जान गए थे कि सुलतान अय्यूबी संभल संभल कर आगे बढ़ रहा है। वह एक जगह लेलेता है। फौज की कमी नई भरती से पूरी करता है। उसे पुरानी फौज के साथ ट्रेनिंग देता है और जब उसे यकीन हो जाता है कि वह अगली टक्कर लेने के काबिल होगया है तो आगे बढ़ता है। चुनांचे वह कर्क के देफा को मज़बूत कर रहे थे और बाहर आकर लड़ने की भी स्कीम बना चुके थे मगर उस इजलास में उन्हें अपनी स्कीम में रद्द व बदल की ज़रूरत महसूस होरही थी क्यों कि उनकी एंटलीजेंस के सरबराह हरमन ने उन्हें सुलतान अय्यूबी, उसकी फौज और मिश्र के ताज़ा हालात के मुतअल्लिक इंकलाबी ख़बरें दी थीं।

सलीबी जासूसों ने बहुत ही थोड़े वक्त में कर्क में यह इत्तलाऐं पहुंचा दी थी कि सुलतान अय्यूबी उस फौज को काहेरा लेगया है जो इस मोहाज़ पर लड़ी और शूबक का किला लिया था और काहेरा में जो फौज है उसे उजलत में मोहाज़ पर भेज दिया गया है और नूरुद्दीन जंगी ने अपनी बेहतरीन फौज की कुमक उस मोहाज़ पर भेज दी है और सुलतान अय्यूबी का भाई तकीउद्दीन दमिश्क से काहेरा पहुंच गया है जहां वह सुलतान अय्यूबी का कायम मुकाम होगा और सुलतान अय्यूबी काहेरा चला गया है जहां वह साज़िशयों को सज़ाए मौत देकर मोहाज़ की तरफ़ रवाना हो गया है। सलीबियों के लिए यह ख़बर अछी नहीं थी कि काहेरा का नायब नाज़िम मुस्लेहुद्दीन भी पकड़ा गया है। और ग़द्दारी के जुर्म में मारा गया है। मुस्लेहुद्दीन सलीबियों का कार आमद और अहम एजेंट था। सलीबी निज़ामे जासूसी का सरबराह हरमन इजलास को इन तबदीलियों से आगाह कर रहा था। उस ने कहा– "मुस्लेहुद्दीन के मारे जाने से हमें नुक्सान तो हुआ है लेकिन तकीउद्दीन का तकर्रुर हमारे लिए उम्मीद अफ़ज़ा है। वह बेशक सलाहुद्दीन का भाई है लेकिन वह सुलतान अय्यूबी नहीं है। मेरे तख़रीब कार जासूस उसे चक्कर देने में कामयाब हो जाऐंगे। यह भी उम्मीद अफ़ज़ा है कि सलाहुद्दीन और अली बिन सुफ़यान काहेरा से ग़ैर हाज़िर हैं"

"मैं हैरान हूं कि तुम्हारे हशीशीन क्या कर रहे हैं?" रेमांड ने पूछा– "क्या वह दोहरा खेल तो नहीं खेल रहे? कमबख्त आभी तक सलाहुद्दीन को कत्ल नहीं करसके। हम बहुत रकम ज़ाए कर चुके हैं।"

"रकम जाए नहीं होरही है।" हरमन ने कहा। "मुझे उम्मीद है कि सलाहुद्दीन महाज़ तक नहीं पहुंच सके गा। उसके साथ चौबीस बाड़ी गार्ड काहेरा गए हैं उन में चार हशीशीन हैं। उन के लिए मौका आगया है। मैं ने इन्तज़ाम कर दिया है। वह सलाहुद्दीन को रास्तें में कत्ल कर देंगे।"

"हमें खुशफहिमयों में मुबतला नहीं रहना चाहिए।" फिल्प आगस्टस ने कहा– "यह फ़र्ज करके सोंचो कि सलाहुद्दीन अय्यूबी कत्ल नहीं होसका और वह ज़िंदा व सलामत महाज़ पर मौजूद है। उसके पास अब ताज़ह दम फौज है। उस ने नई भरती को ट्रेनिंग दे ली है और उसे नूरुद्दीन ज़ंगी की कुमक मिल गई है। उस ने शूबक जैसा मज़बूत अड्डा भी हासिल कर लिया है, लेहाज़ा अब उस की रसद काहेरा से नहीं आए गी। शूबक में उस ने बेशुमार रसद जमा कर ली है। इस सूरत में हमें क्या करना चाहिए? मैं उसे मौका नहीं देना चाहता कि वह कर्क का मुहासरा करले और हम मोहासरे में लड़ें।"

"अब मोहासरे तक नौबत नहीं आने देंगे।" एक और सलीबी हुकुमरान ने कहा– "हम बाहर लड़ें गे और इस अंदाज़ से लड़ेंगे कि शूबक का मोहासरा कर लें।"

"सलाहुद्दीन सेहराई लोमड़ी है" फिल्प आगस्टस नें कहा– "उसे सेहरा में शिकस्त देना आसान नहीं। वह हमें शूबक के मोहासरे की इजाज़त देगा मगर हमारा मोहासरा कर लेगा। मैं उस की चालें समझ चुका हूं। अगर तुम उसे आमने सामने लाकर लड़ सकते हो तो मै। तुम्हें फ़तह की ज़मानत दे सकता हूं, मगर तुम उसे सामने नहीं लासकोगे।"

बहुत देर के बहस मोबाहसे के बाद यह फ़ैसला हुआ कि निस्फ फ़ौज को किले से बाहर भेज दिया जाए और सुलतान अय्यूबी की फौज के करीब खेमा ज़न कर दिया जाए और उस की फ़ौज की नक्ल व हरकत पर गहरी नज़र रखी जाए। इस स्कीम में बाहर लड़ने वाली फ़ौज की तादाद के मुतअल्लिक फ़ैसला किया गया कि सुलतान अय्यूबी की फ़ौज से तीन गुनी न हो तो दुगनी ज़रूर हो। अकब से हमले के लिए अलग फ़ौज मुकर्रर की गई और पलान में यह भी शामिल किया गया कि मुसलमान फौज की कुमक और रसद शूबक से आए गी लिहाज़ा शूबक और मुसलमानों के दरमियानी फासले को छापा मारों की ज़द में रखने का इन्तज़ाम किया जाए। फौजी कमांडरों ने कहा कि सामने से इतनी ज़्यादा कूवत से हमला किया जाए कि सुलतान अय्यूबी जम कर लड़ने पर मजबूर होजाए। सलीबियों को दरअसल अपनी बकतर फ़ौज पर भरोसा था। उन की बेशतर फ़ौज ज़िरह पोश थी। सरों पर आहनी ख़ोद थे। पेशानियों से नाक और मुह तक चेहरे आहनी खोदों के मज़बूत नकाबों में ढंके हुए थे। उन्हों ने ऊंटों को भी ज़िरह पोश कर लिया था। सरों पर आहनी गेलाफ चढ़ा दिए गए थे। और पहलुओं के साथ लोहे की पतरियां लटकती थीं जो तीरों को रोक लेती थी। उन्हों ने कोशिश की थी कि बेहतर किस्म के घोड़े हासिल कर सकें। यूरपी ममालिक से लाए हुए घोड़े सेहरा में जलदी थक जाते और प्यास से बेहाल होजाते थे। सलीबियों ने अरबी इलाकों से घोड़े खरीदे थे। मगर उन की तादाद इतनी ज़्यादा नहीं थी। उन्हों ने मुसलमानों के काफिलों से घोड़े छीनने शुरू कर दिए थे। घोड़े चुराए भी थे। सुलतान अय्यूबी के घोड़े बेहतर थे।

अरबी नसल के या सेहराई घोड़े प्यास से बेनियाज़ मीलों भाग सकते थे।

इन जंगी तैयारियों और एहतमाम के इलावा सलीबियों ने नज़रियाती जंग का महाज़ खोला था। उस के मुतअल्लिक उन की एंटलीजेंस के डायरेक्टर हरमन ने रिपार्ट पेश की कि सलाहुद्दीन अय्यूबी को मिश्र के जुनूब मग़रिब के सरहदी इलाक़े से भरती नहीं मिले गी। यह वही इलाक़ा था जिस के मुतअल्लिक सुलतान अय्यूबी की एंटलीजेंस के नायब सरबराह हसन बिन अब्दुल्लाह ने रिपोर्ट दी थी कि वहां के लोग अब फ़ौज में भरती नहीं होते बल्कि बाज़ लोग फ़ौज के ख़िलाफ़ भी हो गए हैं। यह जफाकश और जंगजू कबाएल का इलाक़ा था जिस ने सुलतान अय्यूबी को निहायत अछे सिपाही दिए थे मगर अब हरमन की रिपोर्ट से ज़ाहिर होता था कि सलीबी तख़रीब कार उस इलाक़े में पहुच गए हैं। वहां नौबत यहां तक पहुंची हुई थी कि हसन बिन अब्दुल्लाह ने यह मालूम करने के लिए कि इस इलाक़े के लोग फ़ौज के ख़िलाफ़ क्यों हो गए हैं। दो मुख़बिर भेजे थे, दोनो क़त्ल हो गए थे। उन की लाशें नहीं मिली थीं। पुर असरार सी एक इत्तला मिली थी कि हमेशा के लिए ग़ायब कर दिए गए हैं। वह इलाक़ा जो बहुत वसीअ व अरीज़ था जासूसों और मुख़बिरों के लिए बहुत ही मज़बूत क़िला बन गया था। वहां से कोई मालूमात हासिल होती ही नहीं थी। इतना ही पता चला था कि वहां के लोग हैं तो मुसलमान लेकिन तौहुम परस्त और अक़ीदे के बहुत ढीले हैं।

हरमन ने तफ़सीलात बताए बग़ैर कहा कि उस का तजरबा कामयाब रहा है। वह अब मिश्र के तमाम तर सरहदी इलाके में इस तरीक़ाए कार को फैलाए गा। फिर इन असरात को मिश्र के अंदर लेजाने की कोशिश करे गा। उन ने उम्मीद ज़ाहिर की कि वह मिश्र के क़सबों और शहरों को भी अपने असर में लेलेगा। उस ने कहा– "मैं मुसलमानों की एक ऐसी ख़ामी को उन के ख़िलाफ़ इस्तेमाल कर रहा हूं जिसे वह अपनी खूबी समझते हैं। मुसलमान दुरवेशों, फक़ीरों, वज़ीफे और चिल्ले करने वालों, आमिलों और मोलवियों और कुटिया में बैठ कर अल्लाह अल्लाह करने वाले महज़बी किस्म के लोगों के फ़ौरन मुरीद बन जाते हैं। दुरवेशों वग़ैरह का यह गिरोह इस्लामी फ़ौज के उन सालारों के ख़िलाफ़ है जिन्हों नें हमारे ख़िलाफ़ जंगें लड़ कर शोहरत हासिल की है। यह दुरवेश अपने मुतअल्लिक लोगो को यक़ीन दिलाते हैं कि खुदा उन के हाथ में है और वह खुदा के खास बंदों में से है। वह सिर्फ़ नाम पैदा करना चाहते हैं। उन में मैदाने जंग में जाने की हिम्मत और जुर्अत नहीं? लिहाज़ा वह घर बैठे वही शोहरत हासिल करना चाहते हैं जो सालारों ने जिहाद में हासिल की है। अगर दियानत दारी और ग़ैर जानिब दारी से देखा जाए तो मुसलमानों के यह फ़ौजी लीडर जिन में सलाहुद्दीन अय्यूबी और नूरुद्दीन ज़ंगी भी शामिल हैं क़ाबिले तहसीन इंसान है। उन में से जिन्हों ने यूरोप तक इस्लाम फैला दिया था और स्पेन को अपनी सलतनत में शामिल कर लिया था, बजातौर पर हक रखते हैं कि क़ौम अपनी इबादत में उन का नाम ले मगर उन के ख़लीफ़ों ने अपना नाम इबादत में शामिल करके फ़ौजी लीडरों की अहमियन घटा दी। इस के साथ मुसलमानों में नाम निहाद आलिमों और इमामों का एक गिरोह पैदा हुआ जो अमल से घबराता था। उन्हों ने कहा कि जो कुछ हैं वह आलिम हैं और इमाम हैं। यह गिरोह ख़लीफ़ों की आड़ में जिहाद

के माना मसख कर रहा है ताकि लोग जेहाद में जाने की बजाए उन के गिर्द जमा हूं और उन्हें खुदा के बरगुज़ीदा इंसान मानें। उन के पास पुर असरार सी बातें और बातें करने का ऐसा तिल्समाती अंदाज़ है कि लोग यह समझने लगे हैं कि उन बरगुज़ीदा इंसानों के सीने में वह राज़ छुपा हुआ है, जो खुदा ने हर बंदे को नहीं बताया। चुनांचे सीधे साधे मुसलमान की यह कमज़ोरी हमें बहुत फाएदे दे रही है। मैं मुसलमानों को इस्लाम की ही बातें सुना सुना कर इस्लाम की बुन्यादी रूह से दूर लेजारहा हूं। तारीख़ गवाह है कि यहूदियों ने नज़रयाती तख़रीब कारी करके इस्लाम को काफ़ी हद तक कमज़ोर कर दिया है। मैं उन्हीं के उसूलों पर काम कर रहा हूं।"

यही वह महाज़ था जिस के मुतअल्लिक़ सुलतान अय्यूबी परेशान रहता था। परेशानी का असल बाइस यह था कि इस महाज़ पर अपनी कौम के अफराद उस के ख़िलाफ़ लड़ रहे थे और यह महाज़ उसे नज़र नहीं आता था।

❖

तक़ीउद्दीन और अपने उन हुक्काम को जिंहें काहेरा में रहना था, हिदायात देकर सुलतान अय्यूबी महाज़ की तरफ रवाना हो गया। उस केसाथ चौबीस ज़ाती मुहाफिज़ों का दस्ता था। सलीबियों को बाडी गार्डज़ की नफरी का इल्म था और उन्हें यह भी इल्म था कि उस दस्ते में चार हशीशीन हैं जो निहायत कामयाब अदाकारी से और बहादुरी के कारनामों से मुहाफिज़ दस्ते के लिए मुंतख़ब होगए थे। उन का मक़सद सलाहुद्दीन अय्यूबी का क़त्ल था लेकिन उन्हें मौका नहीं मिल रहा था, क्योंकि मुहाफिज़ दस्ते की नफरी चौबीस से कहीं ज्यादा रहती और उन की डयूटी बदलती रहती थी। कभी भी एसा न हुआ कि उन चारों की डुयटी एकटठी लगी हो। मुहाफिज़ों के कमांडर बहुत होशयार और चौकस रहते थे। उन्हें यह तो इल्म नहीं था कि उन के दरमियान क़ातिल भी मौजूद हैं वह बेदार रहते थे कि कोई मुहाफिज़ कोताही न करे। अब सुलतान अय्यूबी सफर में था। उस ने खुद ही कहा था कि वह मुहाफिज़ों की पूरी फ़ौज को साथ नहीं रखे गा, चौबीस काफी हैं, हालांकि रास्तें में सलीबी छापा मारों का ख़तरा था।

सुलतान अय्यूबी काहेरा से दिन के पिछले पहर रवाना हुआ था। आधी रात सफर में और बाकी आराम में गुज़री। सहर की तारीकी में उस ने कूच का हुकम दिया। दोपहर का सूरज घोड़ो को परेशान करने लगा तो एक ऐसी जगह पर क़ाफला रुक गया, जहां पानी भी था, दरख्त भी और टीलों का साया भी था। ज़रा सी देर में सुलतान के लिए खेमा नसब कर दिया गया। उस के अंदर सफरी चारपाई और बिस्तर बिछा दिया गया। खाने पीने से फारिग़ होकर सुलतान अय्यूबी ओंघने के लिए लेट गया। दो मोहाफिज़ खेमे के आगे और दो पीछे खड़े हो गए। दस्ते के बाकी मोहाफिज़ करीब ही साया देख कर बैठ गए। कुछ घोड़ों को पानी पिलाने के लिए लेगए। अली बिन सुफ़यान और दीगर हुक्काम जो सुलतान अय्यूबी के साथ थे, एक दरख्त के नीचे जाकर लेट गए। उन्हों ने खेमे नसब नहीं कराए थे। उस जगह के खद व खाल ऐस थे कि सुलतान अय्यूबी का खेमा उन की नज़रों से ओझल हो गया था। सेहरा का सूरज ज़मीन व आसमान को जला रहा था। जिस किसी को

जहां छांव मिली वहां बैठ या लेट गया।

यह पहला मौका था कि सुलतान अय्यूबी के खेमें पर जिन दो मुहाफिज़ों की डियूटी लगी वह दोनों हशीशीन थे जो एक अरसे से ऐसे मौके की तलाश में थे। इस मौके को पूरी तरह मौजूं बनाने के लिए यह सूरत पैदा होगई कि मुहाफिज़ों की ज़्यादा तर नफरी घोड़ों को पानी पिलाने चली गई थी। पानी एक टीले की दूसरी तरफ़ था। काफले का सामान उठाने वाले ऊंटों के शुत्र बान भी ऊंटों को पानी के लिए ले गए थे। जो मुहाफिज़ डियूटी वालों के इलावह पीछे रह गए थे उन में दो और हशीशीन थे। उन्हों ने इशारों इशारों में तै कर लिया। सुलतान अय्यूबी के खेमे के सामने खड़े मुहाफिज़ ने खेमे का पर्दा ज़रा सा हटा कर अंदर देखा और बाहर वालों को इशारह किया। सुलतान अय्यूबी इस हालत में गहरी नींद सोया हुआ था कि उस की पीठ खेमे के दरवाज़े की तरफ़ थी। मुहाफिज़ दबे पांव अंदर चला गया। उस ने खंजर नहीं निकाला, तलवार नहीं निकाली, बल्कि उस के हाथ में जो बरछी थी वह भी उस ने खेमे के बाहर रख दी थी। हर मुहाफिज़ की तरह वह क़वी हैकल जवान था। देखने में वह सुलतान अय्यूबी की निस्बत दुगना नहीं तो डेढ़ गुना ताक़त वर जरूर था।

वह दबे पांव सुलतान अय्यूबी तक गया और बिजली की सी तेज़ी से सुलतान की गर्दन दोनो हाथों में जकड़ ली। सुलतान अय्यूबी जाग उठा। उस ने करवट भी बदल ली लेकिल जिस शिकंजे में उस की गर्दन आगई थी उस से गर्दन छुड़ाना मुमकिन नहीं था। इस्लाम के इस जरी जरनेल की ज़िन्दगी सिर्फ़ दो मिनट रह गई थी। वह अब पीठ के बल पड़ा था। हमला आवर ने उस के पेट पर घुटना रख कर एक हाथ उस की गर्दन से हटा दिया, दूसरे हाथ से सुलतान की शहे रग को दबाए रखा। उस ने अपने कमर बंद से एक पुड़िया सी निकाली। उसे एक ही हाथ से खोला और सुलतान अय्यूबी के मुंह में डालने लगा। वह सुलतान को ज़हर देकर मारना चाहता था क्यों कि गला दबाकर मारने से साफ पता चल जाता है कि गला दबाया गया है। सुलतान अय्यूबी बे बस था। पेट पर इतना क़वी हैकल जवान और बोझ था। शहे रग दुशमन के शिकंजे में थी और सांस रुक गया था। उस का मुंह खुला हुआ था जो उस ने पुड़िया देख कर बंद कर ली थी। उस ने होश ठिकाने रखे। मौत सर पर आगई थी। सुलतान अय्यूबी ने अपने कमर बंद से तलवार नुमा खंजर निकाल लिया जो वह ज़ेवर की तरह अपने साथ रखता था। हमला आवर उस के मुंह में ज़हर डालने की कोशिश में मगन था, देख न सका कि सुलतान ने खंजर निकाल लिया है। सुलतान अय्यूबी ने खंजर उस के पहलू में उतार दिया। खींचा और एक बार फिर खंजर हमला आवर के पहलू में उतर गया। हमला आवर सांड जैसा आदमी था। इतनी जलदी मर नहीं सकता था। सुलतान अय्यूबी सिपाही था। वह खंजर के वार हदफ़ से आगाह था। उस ने खंजर हमला आवर के पहलू से निकाला नहीं। वहीं खंजर घुमाया और नीचे को झटका दिया। हमला आवर की अंतड़ियां और पेट का अंदरूनी हिस्सा बाहर आगया।

हमला आवर के हाथ से सुलतान अय्यूबी की गर्दन छूट गई दूसरे हाथ से ज़हर की पुड़िया गिर पड़ी। सुलतान अय्यूबी ने जिस्म को झटका दिया, हमला आवर को धक्का दिया तो

हमला आवर चारपाई से नीचे जापड़ा। वह अब उठने के काबिल नहीं था। यह मारका बमुश्किल आधे मिनट में खत्म होगया। मगर खेमे से बाहर दूसरा मुहाफिज़ खड़ा था। उस ने अंदर धमक सी सुनी तो परदह उठाकर झांका। वहां कुछ और ही नक्शा देखा। वह तलवार सौंत कर आया और सुलतान अय्यूबी पर वार किया मगर सुलतान खेमे के दर्मियानी बांस के पीछे होगया। तलवार बांस पर लगी। सुलतान तो जैसे पैदाईशी तेग़ ज़न था। उधर तलवार बांस में लगी इधर सुलतान अय्यूबी ने झपटा मारने के अंदाज़ से हमला आवर पर खंजर का वार किया। हमला आवर भी लड़ाका था। इसी लिए तो मुहाफिज़ दस्ते के लिए चुना गया था। वह वार बचा गया। उस के साथ ही सुलतान अय्यूबी ने मुहाफिज़ दस्ते के कमांडर को आवाज़ दी। हमला आवर ने दूसरा वार किया, तो सुलतान अय्यूबी आगे से हट गया मगर एसा हटा कि हमला आवर के पहलू में चला गया। अब के हमला आवर सुलतान के खंजर का वार न बचा सका। सुलतान अय्यूबी की पुकार पर दो मुहाफिज़ खेमे में आए। दोनों ने सुलतान अय्यूबी पर हमला कर दिया। इतने में सुलतान अय्यूबी दूसरे मुहाफिज़ को भी जख़्मी कर चुका था मगर वह अभी तक लड़ रहा था। उस के दो और साथी आगएथे।

सुलतान अय्यूबी ने हौसला कायम और दिमाग़ हाज़िर रखा। अल्लाह ने मदद की कि दस्ते का कमांडर अन्दर आगया उस ने दूसरे मुहाफिज़ों को आवाज़ें दीं और सुलतान अय्यूबी के कहने पर हमला आवरों से उलझ गया। इतने में चार पांच मुहाफिज़ आ गए। उधर से अली बिन सुफ़यान और दूसरे हुक्काम भी शोर सुन कर आगए। खेमे में देखा तो उन के रंग उड़ गए। चार मुहाफिज़ लहू लुहान हो कर पड़े थे। दो मर चुके थे। तीसरा मर रहा था। वह होश में नहीं था। उस का पेट ऊपर से नीचे तक फटा हुआ और सीने पर दो गहरे ज़ख़्म थे। चौथे के पेट में एक ज़ख़्म था दूसरा ज़ख़्म रान पर। वह ज़मीन पर बैठा हाथ जोड़ कर चिल्ला रहा था। "मैं ज़िंदा रहना चाहता हूं, मुझे मेरी बहन के लिए ज़िंदा रहने दो।" सुलतान अय्यूबी ने अपने मुहाफिज़ों को रोक लिया। मुहाफिज़ इतने भड़के हुए थे कि उन्हों ने तीसरे मुहाफिज़ को बेहोशी में सांस लेते देखा तो उस की शहे रग काट दी। चौथे को सुलतान अय्यूबी ने बचा लिया। यह रहम का जज़्बा भी था और यह ज़रूरत भी कि उससे बयान लेने थे और इस साजिश की कड़ियां भी मिलानी थीं।

सलाहुद्दीन अय्यूबी का तबीब उस के काफिले के साथ था। वह जर्राह भी था। हर जगह उस के साथ रहा करता था। सुलतान अय्यूबी ने उसे कहा कि उस ज़ख़्मी को हर कीमत पर ज़िंदा रखने की कोशिश करे। सुलतान अय्यूबी को खराश तक नहीं आई थी। वह हांप रहा था लेकिन जज़्बाती तौर पर बिलकुल मुतमइन था। गुस्से का शाएबा तक न था। उस ने मुस्कुरा कर कहा "मैं हैरान नहीं हूं, ऐसा होना ही था।" अली बिन सुफ़यान की जज़्बाती हालत बिगड़ी हुई थी। यह उस की ज़िम्मे दारी थी कि मुहाफिज़ दस्ते के लिए जिसे मुंतखब किया जाए उस के मुतअल्लिक छान बीन करे कि वह काबिले एतमाद है। अब देखना था कि दस्ते के बाकी सिपाहियों में कोई उन का साथी रह गया है या बाकी देयानतदार हैं। सुलतान अय्यूबी के बिस्तर पर वह पुड़िया पड़ी हुअई थी जो हमला आवर उसके मुंह में डालना चाहता

था। एक सफेद सा सफूफ था जिस में से कुछ बिस्तर पर बिखर गया था। तबीब ने यह सफूफ देखा और जब सुना कि यह सुलतान अय्यूबी के मुंह में डाला जारहा था तो तबीब का रंग उड़ गया। उस ने बताया कि यह एसा ज़हर है कि जिस का सिर्फ़ एक ज़र्रह हलक़ से नीचे उतर जाए तो थोड़ी सी देर में इंसान निहायत इतमीनान से मर जाता है। वह तलखी महसूस नहीं करता और न वह अपने अंदर कोई तबदीली महसूस करता है। तबीब ने सुलतान अय्यूबी का बिस्तर उठवाकर बाहर भेजवाया और साफ करादिया।

सुलतान अय्यूबी ने ज़ख़्मी को उठवाकर बिस्तर पर लेटा दिया। उस के पेट में तलवार लगी थी और दूसरा ज़ख़्म रान पर था। पेट का ज़ख़्म मुहलिक नज़र नही आरहा था। तिरछा था। रान का ज़ख़्म लमबा था और गहरा भी। वह हाथ जोड़ कर सुलतान अय्यूबी से ज़िंदगी की भीक मांग रहा था। सुलतान के ख़िलाफ़ उस के दिल में कोई ज़ाती दुशमनी नहीं थी। कोई नज़रयाती अदावत नहीं थी। वह किराए का क़ातिल था। अपनी शिस्तक के साथ उसे अपनी एक ग़ैर शादी शुदह बहन का ग़म खाए जा रहा था। वह बार बार उस का नाम लेता और कहता था कि मैं मुसलमान हूं। मेरा गुनाह बख़्श दो। एक मुसलमान बहन की खातिर मुझे बख़्श दो।

"ज़िंदगी और मौत ख़ुदा के हाथ में है।" सुलतान अय्यूबी ने ऐसे लहजे में कहा जिस में तहम्मुल था। मगर रोब और जलाल भी था। सुलतान ने कहा– "तुम ने देख लिया है कि कौन मारता है और कौन ज़िंदा रखता है, लेकिन मेरे दोस्त! इस वक़्त तुम्हारी जान जिस के हाथ में है तुम उसे देख रहे हो। अपना गुनाह देखो, अपनी बेबसी देखो। मैं तुम्हें तुम्हारे साथियों के साथ बाहर सेहरा में फेंक दूंगा। सेहरा की लोमड़ियां और भेड़िए तुम्हें इस हाल में नोच कर खाऐं गे कि तुम ज़िंदा होगे, होश में होगे मगर भाग नहीं सको गे। बोटी बोटी होकर मरोगे और अपने गुनाह की सज़ा पाओगे।"

ज़ख़्मी तड़प उठा। उस ने सुलतान अय्यूबी के दोनो हाथ पकड़ लिए और धाड़ें मार मार कर रोने लगा। सुलतान अय्यूबी ने पूछा– "तुम कौन हो? मेरे साथ तुम्हारी क्या दुशमनी है?"

"मैं फातमियों का आदमी हूं" उस ने जवाब दिया। "हम चारो हशीशीन थे। कोई दो साल और कोई तीन साल पहले आप की फ़ौज में भरती हुआ था। हमें सिखाया गया था कि किस तरह आप के मुहाफिज़ दस्ते में पहुंचा जासकता है।" उस ने बोलना शुरू कर दिया और राज़ की बातें बताने लगा। उस ने बताया मुहाफिज़ दस्ते में यही चार क़ातिल थे। उस के बयान के दौरान सुलतान अय्यूबी ने तबीब से कहा कि वह उस की मरहम पटटी करता रहे। तबीब ने उसे एक दवा पिलादी और खून रोकने की कोशिश करने लगा। उस ने ज़ख़्मी को तसल्ली दी कि वह ठीक होजाए गा। ज़ख़्मी इन्कशाफ करता गया। उस ने माज़ूल फातमी ख़िलाफ़त और हशीशीन के मुआहदे को बेनक़ाब किया। फातमियों ने सलीबियों से जो मदद ली थी और ले रहे थे उस की तफ़सील बताई..... खासा वक़्त सर्फ करके तबीब ने उस की मर्हम पट्टी मुकम्मल करदी। असल मरहम तो सुलतान अय्यूबी की शफक़त थी जिस में इन्तक़ाम का ज़रा सा भी शक नहीं होता था।

सुलतान अय्यूबी ने कहा कि लाशें बाहर फेंक दो और उस ज़ख़्मी से मुतअल्लिक उस ने अली बिन सुफ़्यान से कहा कि वह वहीं से उसे काहेरा लेजाए और उस ने जो निशान देहियां की हैं उन के ख़िलाफ़ कारवाई करे। ज़ख़्मी ने निहायत कार आमद सुराग़ दिए थे जिन में कुछ ऐसे ख़तरनाक थे जिन की तफ़्तीश अली बिन सुफ़्यान ही अछी तरह कर सकता था। उसे उसी वक़्त ऊंट पर खास तरीक़े से लेटा कर अली बिन सुफ़्यान वापसी के सफर पर चल पड़ा।

सलाहुद्दीन पर मुतअद्दिद बार क़ातेलाना हमले हुए थे। तारीख़ में उन तमाम का जिक्र नहीं आया। मुंदरजा बाला तर्ज़ के दो हमलों का ज़िक्र मिलता है। एक बार एक फ़िदाई क़ातिल ने सुलतान अय्यूबी पर सोते में खंजर का वार किया था। खंजर पगड़ी में लगा और सुलतान अय्यूबी जाग उठा था। यह क़ातिल सुलतान अय्यूबी के हाथों मारा गया और उस के मुहाफ़िज़ दस्ते के चंद ऐसे मुहाफ़िज़ पकड़े गए जो किराए के क़ातिल थे।

❖

मिश्र के जुनूब मग़रिबी इलाक़े में जो सूडान की सरहद के साथ मिलता था, सदियों पुरानी किसी पेच दर पेच इमारत के खंडर थे। उस ज़माने में मिश्र की सरहद कुछ और थी। सलाहुद्दीन अय्यूबी कहा करता था कि मिश्र की कोई सरहद नहीं। ताहम सूडानियों ने एक खयाली सी सरहद बना रखी थी। खंडरों के इर्द गिर्द का इलाक़ा दुशवार गुज़ार था। ग़ालेबन फ़िरऔनों के वक़्तों में यह इलाक़ा सर सबज़ था और वहां पानी की बुहतात थी। खुश्क झीलें और दो नदियों के गहरे और खुश्क पाट भी थे। रेतीली चटानें भी थीं और रेतीली मिट्टी के टीले भी। उन की शकलें किसी बहुत बड़ी इमारत के खंडरों की मानिंद थीं। कहीं टीला सुतून की तरह ऊपर तक चला गया था और कहीं टीले दीवारों की तरह खड़े थे। जहां जहां जगह हमवार थी वहां रेत थी। चटानें ऊंची भी थीं नीची भी। इस इलाक़े के इर्द गिर्द कहीं कहीं पानी था, लेहाज़ा दरख़्त थे और वहां के रहने वाले खेती बाड़ी करते थे। कम व बेश चालीस मील लमबा और दस मील चौड़ा यह इलाक़ा आबाद था। यह आबादी मुसलमान थी। इन में कुछ लोग मुसलमान नहीं थे। उन के अजीबो ग़रीब से अक़ीदे थे।

फ़िरऔनों की इमारत के खंडरों से लोग डरा करते थे। उन के इर्द गिर्द का इलाक़ा भी एसा था कि देखने वाले पर हैबत तारी होजाती थी। वहां से कोई गुजरता ही नहीं था। लोग कहते थे कि वहां फ़िरऔनों की बद रूहें रहती हैं जो दिन के दौरान भी जानवरों की सूरत में घूमती फिरती रहती हैं और कभी ऊंटों पर सवार सिपाहियों के भेस में और कभी खूबसूरत औरतों के रूप में नज़र आती हैं और रात को वहां से डरावनी आवाज़ें भी सुनाई देती हैं कोई एक साल से यह खंडर लोगों की दिलचस्पियों का मरकज़ बना हुआ था। इस से पहले सुलतान अय्यूबी की फ़ौज के लिए भरती की मुहिम शुरू हुई थी तो भरती करने वाले इस इलाके के इर्द गिर्द भी घूमते फिरते रहते थे। वहां के बाशिंदों ने उन्हें ख़बर दार किया था कि आप टीलों के अंदर न जाऐं उन्हें पुर असरार आवाज़ों, डरावनी चीज़ों और बदरूहों की कहानियां सुनाई गई थीं। उस इलाक़े से फ़ौज को बहुत भरती मिली थी मगर इस के बाद

भरती करने वाले गए तो लोगों का रुजहान बदला हुआ था। सरहद पर गश्त करने वाले दस्तों ने रिपोर्ट दी थी कि गश्ती संतरी भी इस इलाके के अंदर नहीं जाया करते थे और उन्हों ने कभी किसी इंसान को उधर जाते नहीं देखा था मगर वह अब लोगों को अंदर जाता देखते हैं और वहां से आने जाने वाले लोग डरे हुए नहीं होते बल्कि मुतमइन से नज़र आते हैं उस के बाद यह इत्ला मिली कि हर जुमेरात के रोज़ रात तक, अन्दर मेला सा लगता है। और उस के बाद इस किस्म का वाकेआ हुआ कि सरहदी दस्तों के चार पांच सिपाही लापता होगए। उन के मुतअल्लिक यह रिपोर्ट दी गई थी कि भगोड़े होगए हैं।

सुलतान अय्यूबी ने जहां दुशमन के मुलकों में जासूस भेज रखे थे, वहां उस ने अपने मुल्क में भी जासूसों का जाल बिछा रखा था। ग़ैर मुस्लिम मोअर्रिखों ने सुलतान अय्यूबी को खास तौर पर खिराजे तहसीन पेश किया है कि उस ने आज के एंअलीजेंस नेज़ाम और कमांडो तरीकाए जंग को खुसूसी अहमियत देकर ट्रेनिंग के नए तरीके दरयाफत किए और यह साबित करदिया था कि सिर्फ़ दस अफ़राद से एक हज़ार की नफरी की फ़ौज का काम लिया जासकता है। यह अलग बात है। कि मुसलमान होने की वजह से यूरपी मोअर्रिखों ने सुलतान अय्यूबी के इस फन को तारीख़ में इतनी जगहर नहीं दी जितनी दीजानी चाहिए थी लेकिन उस दौर के वक़ाए निगारों ने जो तहरीरें क़लम बंद की हैं उन से पता चलता है कि इसलाम का यह अज़ीम पासबान एंटलीजेंस, गोरीला और कमांडों आपरेशन का किस क़दर माहिर था। अन्दरूने मुल्क उस की एंटलीजेंस गोशे गोशे पर नज़र रखती और फ़ौज की मरकज़ी कमान को रिपोर्टें देती रहती थी। यह उसी नेज़ाम की आला कार करदगी का सबूत था कि मिश्र के दूर दराज़ के ऐसे इलाके की सरगरमियों की भी इतला मरकज़ को पहुंचा दी गई थी जिस के मुतअल्लिक कहा जाता था कि इस छोटे से खित्ते को खुदा ने भी फरामोश कर रखा है मगर मुखबिरों ने वहां के लोगों की सिर्फ़ ज़ेहनी तबदीली देखी और उसी की इतला दी थी, उन्हें अभी यह मालूम नहीं था कि अन्दर क्या होता है। इस इतलाअ के बाद दो मुखबिर क़त्ल या लापता होगऐ थे।

वहां के लोगों ने न सिर्फ़ टीलों के डरावने इलाके के अन्दर जाना शुरू कर दिया था बल्कि वह फ़िरऔनों की उस पेच दर पेच इमारत के खंडरों में जाने लगे थे जहां जाने के तसव्वुर से ही उन के रोंगटे खड़े होजाया करते थे। कुछ अरसा पहले उस की इब्तदा इस तरह हुई थी कि एक गांव में एक शुत्र सवार आया। यह अजनबी मुसलमान और मिश्री था। उस का ऊंट अच्छी नसल का और तन्दरुस्त था। उस मुसाफिर ने गांव वालों को इकटठा करके यह किस्सा सुनाया कि वह गुरबत से तंग आचुका था। अब वह रहज़नी और चोरी के इरादे से घर से निकल खड़ा हुआ। वह पैदल था। वह इस उम्मीद पर इस इलाके में आगया कि यहां कोई आबादी नहीं इस लिए रहज़नी करते पकड़ा नहीं जाएगा। वह बहुत दिन पैदल चलता रहा मगर उसे कोई शिकार न मिला। आख़िर टीलों के इस इलाके में जहां कोई नहीं जाता वह जाकर गिर पड़ा। उस के जिस्म में ताकत नहीं रही थी। उस ने आसमान की तरफ़ हाथ बुलंद करके खुदा से मदद मांगी। उसे एक गूंज दार आवाज़ सुनाई दी— "तुम खुश

किसमत हो कि तुम ने अभी गुनाह नहीं किया, गुनाह की सिर्फ नियत की है। अगर तुम किसी को लूट कर यहां आते तो तुम्हारा जिस्म हड्डयों का पंजर बन जाता और शैतान के छोड़े हुए दरिंदे तुम्हारा गोश्त जो तुम्हारे सामने पड़ा हुआ होता, तुम्हें दिखा दिखा कर खाजाते।"

उस आवाज़ ने अजनबी पर गशी तारी कर दी। उस ने महसूस किया कि उसे कोई उठा रहा है। उस ने आंखें खोलीं तो वह बैठा हुआ था और उस के सामने सफेद रेश बुजुर्ग खड़ा था जो दूध की मानिंद सफेद और आंखों से नूर की मानिंद शुआऐं निकलती थीं। वह जान गया कि यह आवाज़ जो उस ने सुनी थी। उसी बुजुर्ग की थी। अजनबी की जुबान बंद होगई और वह कांपने लगा। बुज़ुर्ग ने उसे उठा कर कहा– "मत डरो मुसाफिर! यह सब लोग जो यहां आने से डरते हैं, बदनसीब हैं। इन्हें शैतान इधर आने नहीं देता। तुम जाओ और लोगों से कहो कि यहां अब फ़िरऔनों की खुदाई नहीं रही। यह हजरत मूसा की ममलिकत है। हज़रत ईसा भी यहीं आसमान से उतरने वाले हैं। अब इस्लाम की कन्दीलें इसी खंडर से रौशन होंगी जिन की रौशनी सारी दुनिया को मुनव्वर कर देगी। जाओ, लोगों को हमारा पैग़ाम दो उन्हें यहां लाओ।" अजनबी ने कहा कि वह उठ नहीं सकता, चल नहीं सकता, जिस्म सूख गया है। सफेद रेश बुजुर्ग ने कहा– "तुम उठो और पचास कदम शिमाल की जानिब जाओ। पीछे मुड़ कर न देखना। डरना नहीं लोगों तक पैग़ाम पहुंचादेना वरना नुकसान उठाओ गे। तुम्हें एक ऊंट बैठा हुआ नज़र आए गा। उस के साथ खाना और पानी होगा और उस के साथ जो कुछ होगा वह तुम्हारा होगा।"

अजनबी ने गांव वलों को सुनाया कि वह उठ कर चलने लगा तो उस के जिस्म में ताकत आगई। वह डर रहा था कि यह किसी फ़िरऔन की बदरूह है। उस ने पीछे नहीं देखा। बदरूह के डर से कदम गिनता रहा और रास्ता घूम गया। पचास कदम पर यह ऊंट बंधा हुआ था। इस के साथ खाना बंधा हुआ था जो उस ने खालिया और पानी पी लिया। उस के जिस्म में ऐसी ताकत आगई जो पहले उस के जिस्म में नहीं थी। उस ने लोगों को एक थैली खोल कर दिखाई जिस में सोने की अशर्फियां थीं। यह थैली ऊंट के साथ बंधी हुई थी। अजनबी ऊंट पर सवार होगया और उस गांव में आगया जिस में वह बैठ कर किस्सा सुना रहा था। उस के बाद उस ने गांव वालों को सफेद रेश बुजुर्ग का पैगाम दिया और चला गया। उस का सुनाने का अंदाज़ एसा पुर असर था कि लोगों के दिलों में टीलों के इलाके में जाने का इश्तियाक पैदा होगया, लेकिन गांव के बूढ़ों ने कहा कि यह अजनबी इन्सान नहीं बल्कि खंडर के शरे शरार का हिस्सा है... इन्सानी फितरत में यह कमज़ोरी है कि छुपे हुए को बेनकाब करने की और भेद को पालेने की कोशिश करती है। जिन जिस्मों में जवानी का खून होता है वह खतरे मोल ले लेते हैं। गांव के जवानों ने इरादह कर लिया कि वह वहां जाऐं गे। अशर्फियों का जादू बड़ा सख्त था जिससे वह बच नहीं सकते थे।

❖

इस चालीस मील लम्बे और दस मील चौड़े खित्ते में जितने गांव थे, उन सब से इत्तलाऐं मिलीं कि एक अजनबी मुसाफिर यही किस्सा सुना गया है। कुछ लोग तज़बजुब में थे और

कुछ लजबजुब और फैसले के दरमियान भटक रहे थे। मगर उधर जाने से सब डरते थे। बाज़ आदमी गए भी लेकिन टीलों के पुरअसरार इलाके को दूर से देख कर वापस आगए। कुछ रोज़ बाद दो जवां साल शुत्र सवार तमाम इलाके में घूम गए। उन्हों ने भी ऐसा ही किस्सा सुनाया जो ज़रा मुखतलिफ था। वह बहुत दूर के सफर पर घोड़ों पर जारहे थे। उन के साथ दो टट्टू थे जिन पर कीमती माल लदा था। यह तिजारत का माल था। जो वह सूडान ले जारहे थे। रास्ते में उन्हें डाकुओं ने लूट लिया। माल के साथ घोड़े और टट्टू भी छीन लिए और उन्हें ज़िंदा छोड़ दिया। यह दोनो टीलों के इलाके में थकन, भूक प्यास और ग़म से गिर पड़े। उन्हें भी सफ़ेद रेश बुज़ुर्ग नज़र आया। उस ने उन्हें वही पैग़ाम दिया और कहा– "तुम्हें शैतान के दरिंदों ने लूटा है। तुम अल्लाह के नेक बंदे हो, जाओ, तुम्हें पचास कदम पर दो ऊंट खड़े मिलें गे और उन के साथ जो कुछ बंधा होगा वह तुम्हारा होगा लेकिन मालो ज़र देख कर आपस में लड़ न पड़ना वरना हमेशा के लिए अंधे हो जाओ गे।" उन्हें भी उस बुज़ुर्ग ने कहा कि गांव जाकर लोगों को पैग़ाम दो कि उन खंडरों से डरें नहीं।

उस के बाद ऐसी ही बहुत सी रिवायतें सुनी और सुनाई जाने लगीं। उन में डर और खौफ का कोई ताअस्सुर नहीं था, बल्कि ऐसी कशिश थी कि लोगों ने टीलों के इर्द गिर्द फिरना शुरू कर दिया। उन्हों ने बाज़ लोगों को अंदरूनी इलाके से बाहर जाते और आते भी देखा। उन्हों ने बताया कि अन्दर ऐक दुरवेश बुज़ुर्ग है जो ग़ैब का हाल बताता और आसमानों की ख़बर देता है। यह भी कहा गया कि वह इमाम मेहदी है। किसी ने कहा कि हज़रत मूसा हैं और कोई हज़रते ईसा कहता था। एक बात वसूक से कही जाती है कि वह जो कोई भी है खुदा का भेजा हुआ है और वह गुनेहगारों से न मिलता है न उन्हें नज़र आता है। उस के पास जाने के लिए नीयत साफ होनी चाहिए। यह भी कहा गया कि वह मुर्दों को भी ज़िंदा करता है। यह तिल्समाती और पुर असरार रिवायतें और हिकायतें लोगों को अंदरूनी इलाके में लेजाने लगीं। आगे जाकर उन्हों ने पहली बार वह खंडर देखे जिन से वह डरते थे। वह उन के अन्दर भी गए। यह कमरों, गुलाम गर्दिशों और ग़ारों जैसे रास्तों की भूल भुलैयां थीं। एक कमरा बहुत ही वसीअ और उस की छत ऊंची थी। जाले लटक रहे थे और माहोल पर हैबत तारी थी। लेकिन वहां खुशबू फैली हुई थी। कहीं सीढ़ियां फर्श से नीचे जातीं और तह खानों में जा ख़त्म होतीं थीं।

यह इमारत उन फ़िरऔनों की थी जो अपने आप को खुदा कहते थे। वह किसी को नज़र आते थे। लोगों को इस इमारत में इकठा कर लिया करते और लोगों को उन की सिर्फ़ आवाज़ सुनाई देती थी। यह आवाज़ ऐसी सुरंगों में से गुज़र कर आती थी जिन के दहाने बड़े कमरे में थे मगर नज़र नहीं आते थे। बोलने वाला सुरंग के दूसरे सिरे पर होता था जिस के मुतअल्लिक कोई जान नहीं सकता था कि कहां है। वह उसे खुदा की आवाज़ समझते थे जो आम आदमी को नज़र नहीं आता। उन बड़े कमरों में रोशनियों का ऐसा इन्तज़ाम हुआ करता था कि मशअलें नज़र नहीं आती थीं, कमरे रौशन रहते थे। आईने की तरह चमकीली धात की चादरें इस्तेमाल की जाती थीं जिनसे छुपी हुई मशअलों की रौशनी मुनअकिस होती थी। वह तो सदियों पुरानी बात थी। अब सलाहुद्दीन अय्यूबी के दौर में इस इमारत में फिर वही आवाज़ें

गूंजने लगीं जिन्हें लोग खुदा की आवाज़ें समझा करते थे। ज़रा से वक़्त में लोगों के दिलों से खंडरों की हैबत निकल गई। वह जब बड़े कमरे में जाते तो उस से पहले उन्हें अंधी और फराख सुरंगों में से गुज़रना पड़ता था। आगे बहुत ही फराख और ऊंची छत वाला कमरा आजाता जिस में रौशनी होती मगर कोई मशअल नज़र नहीं आती थी। वहां गूंज की तरह आवाज़ आती– "हम ने तुम्हें अंधेरों में से निकाल कर रौशनी दिखाई है। यह कोहे तूर की रौशनी है। इस नूर को दिलों में दाख़िल करलो। फ़िरऔनों की बदरूहें भी मर गई हैं। अब यहां मूसा क़ा नूर है और इस नूर को ईसा और ज्यादा मोनव्वर करे गा। खुदा को याद करो। कलमा पढ़ो।" और लोग हैरत से मुंह खोले और आंखें फाड़े एक दूसरे को देखते और कलमा तय्यबा गुनगुनाना शुरू कर देते थे।

अगर इस आवाज़ में खुदा, हज़रत मूसा, हज़रते ईसा और कलमाए तय्यबा का ज़िक्र न होता तो शायद इस का यह असर कुबूल न करते जो वह कर रहे थे। वह सब मुसलमान थे। अपने मज़हब के नाम पर वह इस असर को कुबूल कर रहे थे। और जब उन्हें यह आवाज़ सुनाई दी– "रसूले खुदा स० को खुदा ने ग़ारे हिरा के अंधेरे में रिसालत अता की थी। तुम्हें भी इन ग़ारों के अंधेरे में खुदा का नूर नज़र आए गा।" तो लोगों ने सर झुका लिए और उस आवाज़ को जिस की गूंज में तिलस्माती असर था अपने दिल पर नक़्श कर लिया, लेकिन लोग इस हस्ती तक पहुंचना चाहते थे जिस की यह आवज़ थी और जो मुसाफिरों को ऊंट, खाना, पानी और अशर्फियां देती और मुर्दों को ज़िंदा करती थी। लोगों की बेताबियां बढ़ती जारही थी। वह अपने घरों को जाते तो उन्हें औरते बतातीं कि एक अजनबी अया था जो खंडर वाले दुरवेश की करामात सुना गया है। वह कहता था कि उस ने दुरवेश की ज़ियारत की है। एक रोज़ उन दीहात में जो सब से बड़ा गांव था वहां की मस्दि के पेश इमाम से लोगों ने इस्तिफसार किया। उस ने कहा– "वह मुक़द्दस इंसान है सिर्फ़ नेक लोंगों से मिलता है। नेक वह होता है जो खून खराबा न करे। सुल्ह और अमन की ज़िंदगी बसर करे। यह मुक़द्दस दुरवेश हज़रत ईसा का पैग़ाम लाया है। उस पैग़ाम में मोहब्बत है जंगो जदल नहीं। उस पैग़ाम में नसीहत है कि किसी को ज़ख़मी न करो बल्कि ज़खमी के ज़खमों पर मरहम रखो। अगर तुम लोग इन उसूलों पर ज़िंदगी बसर करोगे तो यह दुरवेश तुम्हारी काया पलाट देगा।"

जब एक इमामे मस्जिद ने भी इस मुक़द्दस दुरवेश को और उस की आवाज़ को बरहक़ कह दिया तो किसी शक व शुबहे की गुन्जाइश न रही। लोगों के ठठ के ठठ खंडरों में जाने लगे तो एलान हुआ कि हर जुमेरात के रोज़ अन्दर जाने की इजाज़त होगी और शाम को मेला लगा करे गा। चुनांचे उस रोज़ से जुमेरात का दिन मखसूस होगया और उस के साथ ही औरतों को भी वहां जाने की इजाज़त मिल गई। अब खंडरों के अन्दर अपनी मर्ज़ी से कोई नहीं जासकता था। जुमेरात के रोज़ उन के इर्द गिर्द मेले का समां होता था। दूर दूर से लोग ऊंटों, घोड़ों और खच्चरों पर पैदल भी आते और शाम को खंडरों में जाने के वक़्त का इन्तज़ार करते थे। अन्दर की संसनी खेज़ दुन्यि में इंक़लाब आगया। वहां अब लोगों को

गुनाह और नेकी के, तारीकी और रौशनी के तसव्वुरात ऐसी सूरत में नज़र आते थे कि लोग उन्हें मुजस्सम और मफ़्तहर्रिक सूरत में देखते और हैरत ज़दह होते थे। किसी को कोई उलटा सीधा सवाल और शक करने की जुरअत नहीं होती थी और न ही वह किसी सवाल और शक की ज़रूरत महसूस करते थे।

सूरज गुरूब होते ही अंधेरी सुरंग का मुंह खुल जाता जो अन्दर लेजाती थी। यह दर असल उस इमारत के दरमियान से गुज़रने वाला रास्ता था। उस की दीवारें बहुत बड़ी बड़ी बिलाकों की थी। ऊपर एसी ही छत थी। यह सुरंग हर दस बारह कदमों बाद दाएँ या बाएँ को मुड़ती थी। उस के दरवाज़े या दहाने से बाहर चंद एक आदमी खड़े होते थे। उन के पास खजूरों के अंबार लगे होते थे। यह खजूरें लोगों की लाई हुई होती थीं जिसे नज़राना कहा जाता था। ज़ाएरीन खजूरें एक जगह ढेर कर देते थे। खजूरों के पास पानी के मशकीज़े रखे होते थे। शाम को जब ज़ायरीन को अंदर जाने की इजाज़त मिलती थी तो दरवाज़े पर हर एक को तीन खजूरें खिला कर चंद घूंट पानी पिला दिया जाता और अन्दर भेज दिया जाता था। एक सुरंग से गुज़र कर जब यह लोग रौशन हाल कमर में पहुंचते तो वहां उन्हें आवाजें सुनाई देतीं। "कलमए तय्यबा पढ़ो। अपने अल्लाह को याद करो। हज़रत मूसा तशरीफ ले आए हैं। हज़रत ईसा का ज़हूर होने वाला है। दिल से बदी और दुश्मनी निकाल दो। लड़ाई झगड़ा ख़त्म करो और देखो उन का हश्र जिन्हें जन्नत का धोका देकर लड़ाया गया था।"

उस आवाज़ के साथ ही लोगों की आंखों में निहायत तेज़ रौशनी पड़ती। उन्हें एक तरफ़ मुंह करके खड़ा किया जाता था। उन की आंखें ख़ीरह होने लगतीं तो रौशनी ज़रा मधम होजाती। उस के बाद रौशनी कभी तेज़ होती कभी मधम और लोगों को सामने वाली दीवार पर सितारे चमकते नज़र आते। उन सितारों में जुंबिश होती और इंतहाई मकरूह और भद्दी शकलों वाले इंसान जाते नज़र आते। गूंजदार आवाज़ सुनाई देती। "यह सब तुम्हारी तरह जवान और खूबसूरत थे। इन्हों ने खुदा का पैग़ाम न सुना। यह कमर के साथ तलवारें सजाकर घोड़ों पर सवार हुए और अपने जैसे खूबसूरत जवानों को क़त्ल किया। उन्हें धोका दिया गया कि तुम लड़ो। मर जाओगे तो जन्नत में जाओ गे। देख लो इन का अंजाम। खुदा ने इन्हें शैतान के दरिंदे बना कर खुला छोड़ दिया है" इन आवाज़ों के साथ बादल की गरज और बिजली की कड़क सुनाई देती। कुछ और आवाज़ें भी सुनाई देतीं जो मुखतलिफ दरिंदों की मालूम होती थीं। रौशनी इतनी तेज़ होती कि देखने वालों की आंखें चुंधिया जातीं। फिर लम्बे लम्बे दांतों वाले दरिंदे दाएँ से बाएँ जाते नज़र आते। यह भी इंसान थे लेकिन इन की शकलें बड़े ही डरावने भेड़ियों जैसी थीं। उन्हो ने बाज़ुओं पर बरहना लड़कियां उठा रखी थीं। लड़कियां खूबसूरत थीं। लड़कियां तड़पती थीं। बादल की गरज और ज़्यादा बुलंद सुनाई देती और आवाज़ आती– "इन्हें अपने हुस्न पर नाज़ था। उन्हों ने खुदा के हुस्न को नापाक किया था।" इन डरावनी और भयानक शकलों के बाद बड़े ही खूबरू मर्द और खूबसूरत औरतें गुज़रतीं। यह सब हंसते खेलते जाते थे। यह नेक और पाक लोग थे जिन के मुतअल्लिक बताया जाता था कि इन्हों ने कभी लड़ाई झगड़े की बात नहीं की थी। वह सरापा मोहब्बत प्यार

और खुलूस थे।

उसके बाद ज़ाएरीन को एक तह खाने में लेजाया जाता जहां इंसानी हड्डियों के पंजर भी थे और खूबसूरत लड़कियां भी घूमती फिरती और मुस्कुराती नज़र आती थीं। थोड़ी थोड़ी देर बाद आवाज़ सुनाई देती– "हज़रत ईसा का ज़ुहूर होने वाला है। जंगो जदल और खून खराबा दिल से निकाल दो।"तह खाने का एक रास्ता और था। जिस से लोगों को बाहर निकाल दिया जाता था। लोगो पर एसा तअस्सुर तारी होता कि जैसे वह सो गए थे। लेकिन किसी को उस तरफ़ जाने नहीं दिया जाता था जिधर से लोग अंदर जाते थे। वह अपने घरों को वापस नहीं जाना चाहते थे। रात वहीं खंडरों के करीब ही गुज़ार देते थे। वहां कुछ लोग उन के पास बैठ कर उन्हें अंदर के राज़ बताते थे। एक राज़ यह था कि जिस की आवाज़ सुनाई देती है वह खुदा की तरफ़ से यह पैग़ाम लेकर आया है कि हज़रत ईसा दुन्या में आरहे हैं और ख़लीफ़ा अलआज़िद भी दुन्या में वापस आगया है।

अलआज़िद फातमी ख़िलाफ़त का ख़लीफ़ा था जिस की गद्दी मिश्र में थी। सुलतान अय्यूबी ने उसे माज़ूल करके मिश्र को बुग़दाद की ख़िलाफ़ते अब्बासिया के तेहत कर दिया था। अलआज़िद उस के फ़ौरन बाद मर गया था। यह दो ढाई साल पहले का वाक़ेआ था। फातमियों ने सलीबियों और हशीशीन के साथ साज़ बाज़ करके एक साज़िश तैयार की थी जिस के तेहत सुलतान अय्यूबी का तख़्ता उलटना और मिश्र में फातमी ख़िलाफ़त बहाल करना था। इस साज़िश की कामयाबी के लिए सूडानियों को तयार किया जा रहा था कि वह मिश्र पर हमला करदें।

खंडर के मुरीदों की तादाद में और उन की अक़ीदत मन्दी मे इज़ाफा होता जारहा था और जुनूब मग़रिबी इलाक़े के लोग क़ाइल होते जारहे थे कि हज़रत ईसा ख़लीफ़ा अलआज़िद को वापस भेज चुके हैं और खुद भी वापस आरहे हैं। उन लोगों ने फ़ौज में भरती होने से तौबा कर ली थी क्योंकि वह जंग व जदल को गुनाह समझने लगे थे। सलाहुद्दीन अय्यूबी को एक गुनाह गार बादशाह क़रार देदिया गया था जो अपनी बादशाही को वुस्अत देने के लिए जवानों को यह धोका दे कर फ़ौज में भरती करता था कि वह शहीद हूंगे और जन्नत में जाऐंगे। खंडरों के अंदर की दुनिया लोगों के लिए इबादत गाह बन गई थी। बाज़ ने तो टीलों के इलाक़े में ही डेरे डाल दिए थे। वह इस मुक़द्दस दुरवेश की ज़ियारत के लिए बेक़रार रहते थे जिस की आवाज़ खंडरों में सुनाई देती थी मगर वह नज़र नहीं आता था। एक नया फिरक़ा जनम लेरहा था।

❖

उस ज़ख़मी हशीश को जो सुलतान अय्यूबी पर क़ातेलाना हमले मे ज़खमी हुआ था, अली बिन सुफ़ियान क़ाहेरा लेगया जहां उसे एक अलग थलग मकान में रखा गया। सुलतान अय्यूबी के हुकम के मुताबिक़ उस के इलाज के लिए एक जर्राह मुकर्रर कर दिया गया। वह आख़िर मुजरिम था। उसे जिस मकान में रखा गया उस के दरवाज़े पर एक संतरी खड़ा रहता था। वह अभी भागने के क़ाबिल नहीं था। खंडरों की निशांदेही उसी ने की थी। फ़ैसला

हुआ था कि यह ठीक होजाए तो उस की रहनुमाई में जासूस भेज कर खंडरों के अंदर के हालात देखे जाएं। हो सकता था कि यह ज़खमी झूट बोल रहा हो। अली बिन सुफ़ियान ने काहेरा आते ही अपने नायब हसन बिन अबदुल्लाह और कोतवाल ग़यास बलबीस से कह दिया था कि वह इस इलाक़े में अपना कोई मुखबिर और जासूस न भेजें जिस के मुतअल्लिक़ उन्हें रिपोर्ट मिली है कि वहां के लोग फ़ौज के ख़िलाफ़ होगए है। अली को किसी बहुत बड़े और कार आमद इंकशाफ की तवक्को थी।

ज़खमी को मालूम नहीं क्यों यह वहम हो गया था कि वह जिंदा नहीं रहेगा। वह रोता था और बार बार अपने गांव का नाम बता कर कहता था कि मेरी बहन को बुलादो, मैं उसे देख नहीं सकूंगा। अली बिन सुफ़यान उस की इसी कमज़ोरी को उस से मज़ीद राज़ उगलवाने के लिए इस्तेमाल कर रहा था। ज़ख़मी अपनी बहन के मुतअल्लिक़ गैर मामूली तौर पर जज़बाती था। अली को जब यक़ीन हो गया कि ज़ख़मी के सीने में अब और कोई बात नहीं रह गई है तो उस ने दो पैयामबर बुला कर उन्हें ज़ख़मी का गांव और इलाक़ा बताया और कहा कि उस की बहन को अपने साथ ले आएं। यह इलाक़ा मिश्र के जुनूब मग़रिब में ही था। पयामबर उसी वक़्त रवाना हो गए।

सुलतान अय्यूबी महाज़ पर पहुंच गया और शूबक के क़िले में चला गया। उस के चेहरे पर क़ातलाना हमले का कोई ताअस्सुर नहीं था जैसे कुछ हुआ ही नहीं। उस के मुहाफिज़ दस्ते का कमांडर और दीगर हुक्काम जो उस के साथ थे बहुत परेशान और शरमसार थे। वह डरते भी थे कि सुलतान अय्यूबी किसी न किसी मुक़ाम पर उन पर बरस पड़े गा और जवाब तलबी भी करेगा मगर उस ने इस तरफ़ इशारह भी नहीं किया। अलबत्ता अपने मरकज़ी कमान के फ़ौज़ी हुक्काम से कहा— "आप ने देख लिया है कि मेरी जिंदगी का कोई भरोसा नहीं। आप मेरी जंगी चालें गौर से देखते रहा करें। दुशमन ने जो दूसरा महाज़ खोल रखा है, उस पर गहरी नज़र रखें और तख़रीब कारों की पकड़ धकड़ और सरकोबी करते रहें।" उस ने किसी से इतना भी नहीं कहा कि मुहाफिज़ दस्ते की छान बीन की जाए। उस ने इतने बड़े हादसे का कोई असर ही नहीं लिया। शूबक के किले में पहुंचा और सब से पहले पूछा कि कोई जासूस वापस आया है या नहीं। उसे बताया गया कि दो जासूस कारआमद मालूमात लाए हैं। उस ने दोनों को बुला लिया और सलीबियों के इरादों के मुतअल्लिक़ रिपोर्टें लीं। उसे तक़रीबन तमाम पलान बता दिया गया जो सलीबियों ने तैयार किया था। उस ने नूरुद्दीन ज़ंगी की भेजी हुई कुमक के सालार और मिश्र से आई हुई फ़ौज के सालार दोनों के नायबीन को बुला भेजा और गहरी सोंच में खेगया।

चौथे रोज़ ज़खमी हशीश की बहन आगई। उस के साथ चार आदमी थे जिन के मुतअल्लिक बताया गया कि ज़खमी के चचा और ताया ज़ाद भाई हैं। बहन जवान और पुरकशिश थी। अपने भाई के लिए बहुत ही परेशान थी। ज़खमी उस का अकेला भाई था। उन के मां बाप मर चुके थे। उसे और उस के साथ आए हुए चार आदमियों को ज़खमी से मिलने के लिए अली बिन सुफयान की इजाज़त की जरूरत थी। अली बिन सुफ़यान ने बहन को इजाज़त देदी,

उस के साथ आए हुए आदमियों को न मिलने दिया। उन्हों ने मिन्नत समाजत की और कहा कि वह इतनी दूर से आए हैं। उन्हें सिर्फ़ इतनी इजाज़त दी जाए कि ज़ख्मी को देख लें। वह कोई बात नहीं करें गे। अली बिन सुफ़यान ने इस तरह इजाज़त दी कि खुद उन के साथ होगा और उन्हें फौरन बाहर निकाल देगा। उस ने एसा ही किया। उसी वक़्त उन सब को ज़खमी के पास लेगया। बहन ने भाई को देखा तो उस के ऊपर गिर पड़ी। भाई का मुंह चूमने लगी और ज़ार व क़तार रोने लगी। दूसरे आदमियों के मुतअल्लिक़ अली बिन सुफ़यान ने ज़खमी से कहा कि उन से हाथ मिला लो, यह वापस जारहे हैं। उस ने चारों से हाथ मिलाया तो अली बिन सुफ़यान ने उन्हें बाहर चले जाने को कहा और यह भी कह दिया कि वह आइंदा उससे नहीं मिल सकें गे। वह चले गए। बहन ने अली बिन सुफ़यान के क़दमों में बैठ कर उस के पांव पकड़ लिए और रो रो कर मिन्नत समाजत की कि उसे भाई कि खिदमत के लिए वहीं रहने दिया जाऐ। अली बिन सुफ़यान एक बहन की ऐसी जज़बाती इल्तजा को ठुकरा न सका। उस ने लड़की की जामा तलाशी ली और उसे वहीं रहने की इजाज़त देदी और वहां से चला गया।

बहन भाई अकेले रह गए तो बहन ने भाई से पूछा कि उस ने क्या किया है। भाई ने बतादिया। बहन ने पूछा कि उस के साथ क्या सलूक होगा। भाई ने जवाब दिया– "अमीरे मिश्र पर क़ातेलाना हमले का जुर्म बखशा तो नहीं जाए गा। अगर इन लोगों ने मुझ पर रहम किया तो सज़ाए मौत नहीं देंगे, सारी उम्र के लिए तहखाने में डालदेंगे।"

"फिर मैं सारी उम्र तुम्हें नहीं देख सकूंगी?" बहन ने पूछा

"नहीं शारजा!" भाई ने रुंधी हुई आवाज़ में कहा। "फ़िर मैं मर भी नहीं सकूंगा। जी भी नहीं सकूंगा। वह जगहर बड़ी खौफनाक है जहां मुझे हमेशा के लिए कैद करदेंगे।"

बहन जिस का नाम शारजा था बच्चों की तरह बिलबिला उठी। उस ने कहा– "मैं ने तुम्हें उस वक़्त भी रोका था, कि उन लोगों के चक्कर में न पड़ो मगर तुम ने कहा कि सलाहुद्दीन का क़त्ल जायज़ है। तुम लालच में आगए थे। तुम ने मेरी भी परवाह न की। मेरा क्या बने गा। तुम न हुए तो मेरा आसरा कौन होगा?"

ज़खमी भाई का ज़ेहन तक़सीम होगया था। कभी वह पछतावे की बातें करता और कहता कि वह उन लोगों के झांसे में आगया था। उस ने यह भी कहा– "सलाहुद्दीन इनसान नहीं, खुदा का भेजा हुआ फरिश्ता है। हम चार हट्टे कट्टे जवान मिल कर इतना भी न कर सके कि उस के जिस्म पर खंजर की नोक से खराश ही डालदेते। उस पर ज़हर ने भी असर नहीं किया। उस अकेले ने तीन को जान से मार दिया और मुझे मौत के मुंह में डाल दिया।"

"यह कहने वाले झूट तो नहीं कहते थे कि सलाहुद्दीन अय्यूबी का ईमान इतना मज़बूत है कि उसे कोई गुनहगार क़त्ल नहीं कर सकता।" बहन ने कहा– "तुम चारों मुसलमान थे। इतना भी न सोंचा कि वह भी मुसलमान है।"

"उस ने खुदा के खलीफ़ा की गद्दी की तौहीन की है।" ज़खमी भाई का दिमाग़ उलटी तरफ़ चल पड़ा। उस ने जोशीले लहजे में कहा– "तुम नहीं जानती कि खलीफ़ा अलआजिद

खुदा के भेजे हुए ख़लीफ़ा थे।"

"जो कोई जो कुछ भी था।" बहन ने कहा– "मैं यह जानती हूं कि तुम मेरे भाई हो और मुझ से हमेशा के लिए जुदा हो रहे हो। क्या तुम्हारे बचने की कोई सूरत पैदा हो सकती है?"

"शायद पैदा हो जाए।" भाई ने जवाब दिया। "मैं ने इस शर्त पर उन्हे सारे राज़ बता दिए हैं कि मेरा गुनाह बख़्श दें। मगर मेरा गुनाह इतना संगीन है जो शायद न बख़शा जाए"

उस वक़्त ज़ख़्मी को सोजाना चाहिए था और उसे इतना ज़्यादा नहीं बोलना चाहिए था क्योंकि पेट के ज़ख़्म खुल जाने का डर था, मगर वह बोलता जारहा था और बहन रो रही थी। बोलते बोलते उसे पेट के ज़ख़्म में टीसें महसूस होने लगीं और वह बेहाल होगया। उस ने बहन से कहा। "शारजा! बाहर जाओ। कोई आदमी मिले तो उसे कहो कि तबीब या जर्राह को बुलादे। मैं मर रहा हूं।" शारजा दौड़ती बाहर गई। बाहर संतरी खड़ा था। उस ने उसे भाई की हालत बताई तो उस ने शारजा को उस जर्राह के घर का रास्ता बता दिया जिसे ज़खमी की देख भाल के लिए मुकर्रर किया गया था। उसे सखती से हुकम दिया गया था कि दिन हो या रात, ज़खमी को जिन्दा रखने की पूरी कोशिश करे। वह शाही जर्राह था।

शारजा दौड़ती गई। जर्राह का घर बिलकुल क़रीब था। शारजा ने जर्राह को भाई की हालत बताई तो वह भागम भाग आया और ज़खमी को देखा। उस के पेट की पट्टी खून से लाल होगई थी। जर्राह ने फ़ौरन पट्टी खोली। खून बन्द करने के लिए उस में सफूफ डाले और बहुत सा वक़्त सर्फ करके पट्टी बांधी। खून बंद होगया। उस ने ज़खमी को दवाई पिलादी जिस के असर से उसे नींद आगइ और वह सो गया। शारजा उस जवां साल जर्राह को हैरत और दिलचस्पी से देखती रही। उसे तवक्को नहीं थी कि इतनी रात गए कोई उस के मुर्जिम भाई को देखने आजाए गा। लेकिन जर्राह दौड़ता आया और इतने इन्हमाक से ज़ख़मी की मरहम पट्टी की कि शारजा को हैरान कर दिया। ज़खमी की आंख लग गई तो जर्राह ने आंखें बन्द करके हाथ ऊपर उठा लिया और सरगोशी की– "ज़िंदगी और मौत तेरे हाथ में है मेरे खुदा! इस बदनसीब के हाल पर करम करो। इसे जिन्दगी अता करो खुदाए अज़्ज़ व जल।"

शारजा के आंसू निकल आए। उस पर जर्राह का तकद्दुस तारी हो गया। उस ने जर्राह के क़रीब दो ज़ानू होकर उस का एक हाथ पकड़ा और चूम लिया। जर्राह के पूछने पर शारजा ने बताया कि वह ज़खमी की बहन है। उस ने जर्राह से पूछा– "क्या आप के दिल में इतना रहम है कि मेरे भाई को आप तकलीफ में नहीं देख सकते या उसे इस लिए ज़िन्दा रखना चाहते हैं कि यह आप को राज़ की सारी बातें बतादे?"

"मुझे इस से कोई दिलचसपी नहीं कि उस के पास कोई राज़ है या नहीं।" जर्राह ने कहा– "मेरा फर्ज यह है कि इसे ज़िंदा रखूं और इस के ज़खम बिलकुल ठीक कर दूं। मेरी निगाह में मुजरिम औा मोमिन में कोई फर्क़ नहीं"

"आप को शायद मालूम नहीं कि इस का जुर्म क्या है।" शारजा ने कहा– "अगर मालूम होता तो आप इस के ज़खम पर मरहम रखने के बजाए उस पर नमक भर देते।"

"मुझे मालूम है।" जर्राह ने जवाब दिया। "लेकिन मैं इसे जिंदा रखने की पूरी कोशिश

करूंगा।"

शारजा इतनी मुतअस्सिर हुई कि उस ने जर्राह के साथ अपनी बातें शुरू कर दीं। उसे बताया कि उस के मां बाप उस के बचपन में मर गए थे। उस वक़्त उस का भाई दस ग्यारह साल का था। उस ने शारजा को पाला पोसा और जवान होगये। अगर उस का भाई न होता तो कोई उसे इग़वा करके लेजाता। भाई ने ज़िंदगी बहन के लिए वक़्फ कर दी थी। जर्राह इन्हेमाक से उस की बातें सुनता रहा और इस खयाल से बाहर सेहन में लेगया कि ज़खमी की आंख न खुल जाए। जर्राह ऐसे अंदाज़ से शारजा की बातें सुन रहा था जैसे वह रात यहीं गुज़ारे गा मगर वह जाने लगा तो शारजा ने उस का हाथ पकड़ लिया– "आप चले जाएं गे तो मुझे डर आएगा।" जर्राह ने बताया कि वह उसे अपने साथ नहीं लेजासकता और उस के साथ रह भी नहीं सकता। जर्राह घर में अकेला रहता था। वह शारजा की खातिर कुछ देर और रुक गया और रात के पिछले पहर गया... दूसरे दिन का सूरज अभी तुलू नहीं हुआ था कि वह ज़खमी को देखने आगया। उस ने रात वाले इन्हमाक से उस की मरहम पट्टी की। ज़खमी को दूध पिलाया और ऐसा खाना दिया जो शारजा ने ख्वाब में भी नहीं देखा था।

उस दौरान अली बिन सुफ़यान आया। ज़खमी की हालत देख कर चला गया लेकिन जर्राह न गया। वह शारजा के साथ बातें करता और उस की बातें सुनता रहा। उस रोज़ शाम तक वह तीन बार ज़खमी को देखने आया, हालांकि वह सिर्फ दोपहर आया करता था। शाम को वह चला गया तो ज़खमी ने अपनी बहन से कहा– "शारजा! मेरी एक बात गौर से सुन लो। मेरी ज़िंदगी इस जर्राह के हाथ में है लेकिन मैं देख रहा हूं कि तुम्हें देख कर मेरा इलाज पहले से ज़्यादा अछे तरीक़े से करने लगा है। मैं मौत क़ुबूल कर लूंगा मगर इसे इतनी ज़्यादा क़ीमत नहीं दूंगा जो इस ने दिल में रख ली है। मुझे शक नहीं यक़ीन है कि यह मुझे ज़िंदा रखने के लिए तुम्हारी इज़्ज़त का नज़राना लेना चाहता है।"

"मैं तो इसे फरिश्ता समझती हूं" शारजा ने कहा– "उस ने अभी तक कोई ऐसा इशारह भी नहीं किया और मैं बच्ची भी तो नहीं, लेकिन मैं उसे ऐसा समझती नहीं"

शारजा का अंदाज़ ऐसा था जिस ने भाई को शक में डाल दिया कि वह जर्राह में दिलचस्पी लेती है।

❖

उस रात जर्राह आया। ज़खमी सो गया था। शारजा जाग रही थी। वह जर्राह के साथ सेहन में चली गई। कुछ देर बातें होती रहीं। जर्राह ने उससे कहा कि उस का भाई दवाई के असर से इतनी गहरी नींद सोगया है कि सुबह तक इस की आंख नहीं खुले गी। आओ, मेरे घर चलो... शारजा कुछ झिजकी लेकिन जर्राह की पेशकश ठुकरा न सकी। उस के साथ चली गई। यह खूबरू, जवां साल और हलीमुत्तबा जर्राह अकेला रहता था। शारजा बालिग़ दिमाग़ लड़की थी। उसे तवक्को थी कि आज रात यह आदमी उस के सामने बेनक़ाब होजाए गा, मगर ऐसा न हुआ। वह उस के साथ हमदर्द दोसतो की तरह बातें करता रहा। लड़की को उस के इतने मुशफेकाना सलूक ने परेशान कर दिय। उस ने बे इख्तियार उस से पूछा– "मैं

सेहरा के दूर दराज़ इलाके की ग़रीब सी लड़की हूं और एक ऐसी मुजरिम की बहन हूं जिस ने मिश्र के बादशाह पर क़ातेलाना हमला किया है इस के बावजूद आप मेरे साथ ऐसा सलूक क्यूं कर रहे हैं जिस की मैं हक़दार नहीं हूं" जर्राह ने मुसकुराहट के सिवा कोई जवाब न दिया। लड़की ने साफ कह दिया– "मुझ में इस खुबी के सिवा और कुछ भी नहीं है। कि मैं जवान लड़की हूं और शायद मेरी शकल व सूरत भी अछी है।"

"तुम में एक खूबी और भी है जिस का तुम्हें इल्म नहीं।" जर्राह ने कह– "तुम्हारी उम्र और तुमहारी शकल व सूरत की मेरी एक बहन थी। जिस तरह तुम बहन भाई अकेले हो उसी तरह मैं और मेरी बहन अकेले रह गए थे। मैं ने तुम्हारे भाई की तरह अपनी बहन को पाला पोसा और अपनी ज़िन्दगी और सारी खुशयां उस के लिए वक़्फ कर दी थीं। वह बीमार हुइ, और मेरे हाथों में मर गई मैं अकेला रह गया। तुम्हें देखा तो शक हुआ जैसे मेरी बहन मुझे मिल गइ है। अगर तुम अपने आप को जवान और खूबसूरत लड़की समझती हो और मेरी नीयत पर शक है तो इस का यही इलाज है कि मैं तुम में एसी दिलचस्पी का इजहार न करूं गा जो अब तक किया है। तुम्हारे भाई में पूरी दिलचस्पी लेता रहूंगा। उसे ठीक करना मेरा फर्ज है"

शारजा रात देर से वहां से वापस आई जर्राह उस के साथ था। लड़की के शकूक रफा हो चुके थे। दूसरे दिन जर्राह जख्मी को देखने आगया। उस ने शारजा के साथ कोई बात न की। वह जाने लगा तो शारजा ने बाहर जाकर उसे रोक लिया। वह रोरही थी। उसे डर था कि जर्राह उससे नाराज़ होकर चला गया है। जर्राह ने उसे बताया कि वह नाराज़ नहीं लेकिन वह उसे किसी और शक में डालना नहीं चाहता... रात को जब ज़ख़्मी सो गया तो शारजा वहां से निकल गई और जर्राह के घर चली गई। यह उस की बेताबी थी जिस पर वह काबू न पासकी। बहुत देर तक जर्राह के पास रही। उस के ज़ेहन में कुछ गांठें पड़ी हुई थीं जिन्हें वह खोलना चाहती थी। उस ने जर्राह से पूछा– "क्या ख़लीफ़ा ख़ुदा के भेजे हुए होते हैं?"

"ख़लीफा इन्सान होता है" जर्राह ने जवाब दिया– "ख़ुदा के भेजे हुए नबी और पैगम्बर थे। यह सिलसिला रसूले अकरम सल्ललाहो अलैहे व सल्लम पर ख़त्म हो गया है।"

"सलाहुद्दीन अय्यूबी ख़ुदा का भेजा हुआ है?" लड़की ने पूछा।

"नहीं।" जर्राह ने जवाब दिया– "वह भी इंसान है लेकिन आम इंसानों से उस का रुतबा बुलद है क्यों कि वह ख़ुदा और ख़ुदा के भेजे हुए रसूल स० के अज़ीम पैग़ाम को दुन्यिा के गोशे गोशे में पहुंचाना चाहता है।"

ऐसे और बहुत से सवाल थे जो शारजा ने पूछे और जर्राह ने उस के शकूक रफा किए। उस ने कहा– "फिर मेरा भाई बहुत बड़ा गुनहगार है। अगर उसे कोई यह बातें बतादेता जो आप ने मुझे बताई हैं तो वह उस गुनाह से बचा रहता। अब तो इस की जांबख़शी नहीं होगी"

"हो जाए गी।" जर्राह ने उसे बताया। अगर सलाहुद्दीन अय्यूबी ने कह दिया कि उसे ज़िन्दा रखने की कोशिश करो तो इस का मतलब यह है कि उसे सज़ा नहीं दी जाए गी। उसे चाहिए कि गुनाहों से तौबा कर ले। मुझे पूरा यक़ीन है कि उसे कोई सज़ा नहीं दी जाए गी।"

"मैं सारी उम्र सालाहुद्दीन अय्यूबी और आप की ख़िदमत में गुज़ार दूंगी।" शारजा ने रोते

हुए कहा। "और मेरा भाई आप सब का गुलाम रहे गा।" वह जज़्बाती होगई। उस ने जर्राह के हाथ पकड़ कर कहा– "आप मुझ से जो क़ीमत वसूल करना चाहें मैं दूंगी। आप मुझे अपनी लौंडी बना लें, उस के एवज़ मेरे भाई को ठीक करदें और उसे सज़ा से बचा लें।"

"क़ीमत अल्लाह से वसूल की जाती है।" जर्राह ने उस के सर पर हाथ रख कर कहा– "भाई के गुनाह की सज़ा बहन को नहीं दी जाएगी और भाई की सेहत की क़ीम बहन से वसूल नहीं की जाएगी। सब का पासबान अल्लाह है। उस की ज़ाते बारी ने मुझे तुम्हारी इस्मत की पासबानी और तुम्हारे भाई की सेहत की ज़िम्मेदारी सौंपी है। दुआ करो कि मैं इस अमानत में ख़यानत न करूं। बहन की दुआ अर्श को भी हिला दिया करती है। दुआ करो... दुआ करो.... उस खुदा की अज़मत को याद रखो जिस के ख़िलाफ़ गुमराह किया जारहा है।"

जर्राह ने उस लड़की पर तिलिस्म तारी कर दिया। एक तो बातें ही ऐसी थीं जो जर्राह ने उसे बताई थीं। तअस्सुर तो जर्राह के सुलूक ने पैदा किया था। जर्राह के मुतअल्लिक तो उसे कुछ और भी शक होगया था लेकिन वह कुछ और निकला। उसे जैसे एहसास ही नहीं था कि ऐसी तनहाई में और रात के वक़्त इतनी हसीन और जवान लड़की उस के रहम व करम पर है... रात आधी गुज़र गई थी। जर्राह ने उसे कहा– "उठो, तुम्हें वहां तक छोड़ आऊं और तुम्हारे भाई को भी देख आऊं।"

दोनों घर से निकले और आहिस्ता आहिस्ता चल पड़े। रात तारीक थी। वह दोनों मकानों के पिछवाड़ों के दरमियान से गुज़र रहे थे। यह छोटी सी एक गली थी जिस में से गुज़रते ही वह मकान आजाता था जहां ज़ख़मी हशीश क़ैद में पड़ा था और उस के दरवाज़े पर संतरी खड़ा रहता था। वह दोनो उस गली में दाख़िल हुए ही थे कि पीछे से दोनों को मज़बूत बाजुओं में जकड़ लिया गया। दोनों के मुंह कपड़ों में बंध गए। उन की आवाज़ भी न निकल सकी। जर्राह जिसमानी लिहाज़ से कमज़ोर नहीं था मगर वह बेख़बरी में जकड़ा गया था। हमला आवर चार पांच मालूम होते थे। उन्हों ने दोनों को उठा लिया और तारीकी में गायब होगए। कुछ दूर घोड़े खड़े थे। जर्राह के हाथ पांव रस्सियों में बांध दिए गए और उसे घोड़े पर डाल कर एक आदमी घोड़े पर सवार होगया। उसे किसी की आवाज़ सुनाई दी जो शारजा से मुख़ातिब थी। "शोर न कर शारजा! तुम्हारा काम होगया है। घोड़े पर सवार हो जाओ। यह तुम्हारे लिए लाए हैं।"

शारजा के मुंह से कपड़ा उतार दिया गया था। जर्राह को उस की आवाज़ सुनाई दी। "इसे छोड़ दो इसका कोई क़ुसूर नहीं, यह बहुत अछा आदमी है।"

"इसकी तो हमें ज़रूरत है।" किसी ने कहा।

"शारजा!" किसी ने हुकम के लहजे में कहा– "ख़ामोशी से अपने घोड़े पर सवार होजाओ।"

"ओह!" शारजा की आवाज़ सुनाई दी। "यह तुम हो?"

"सवार हो जाओ।" किसी ने फिर हुकम दिया। "वक़्त ज़ाए न करो।"

और घोड़े सरपट दोड़ पड़े। ज़रा सी देर में काहेरा से निकल गए। शारजा निहायत अछी सवार थी।

❖

सुबह संतरी बदलने का वक़्त हुआ। नया संतरी आया तो रात वाला संतरी वहां नहीं था। उस ने अन्दर जाके देखा तो वहां ज़ख़्मी सोया हुआ था। उस के ऊपर कमबल पड़ा हुआ था। उस का मुंह ढका हुआ था। नया संतरी बाहर वाले दरवाज़े पर जा कर खड़ा होगया। उसे मालूम था कि अभी जर्राह ज़ख़्मी को देखने आए गा और अली बिन सुफ़यान भी आए गा। उसे यह भी मालूम था कि ज़ख़्मी की बहन ज़ख़्मी के साथ रहती है और उस के सिवा अन्दर जाने की किसी को इजाज़त नहीं, मगर बहन भी उसे कहीं नज़र नहीं आयी थी। सूरज तुलू हुआ तो अली बिन सुफ़यान आया। उस ने संतरी से पूछा कि जर्राह आचुका है या ज़ख़्मी को देख कर चला गया है? संतरी ने उसे बताया कि जर्राह नहीं आया। पहला संतरी यहां नहीं था और अन्दर ज़ख़्मी की बहन भी नहीं है। अली बिन सुफ़यान यह सोच कर अन्दर गया कि ज़ख़्मी की तकलीफ बढ़ गई होगी और उस की बहन जर्राह को बुलाने चली गई होगी। अली बिन सुफ़यान के लिए ही नहीं, यह ज़ख़्मी सलतनते इस्लामिया के लिए भी मिश्र जितना कीमती था। उस के सेहत याब होने का इन्तज़ार था और एक बड़ी ख़तरनाक साज़िश के बे नक़ाब होने की तवक्को थी।

वह तेज़ी से अन्दर गया। ज़ख़्मी के सर से पांव तक कमबल पड़ा हुआ था। अली बिन सुफ़यान को ताज़ा खून की बू महसूस हुई। उस ने ज़ख़्मी के मुंह से कमबल हटाया तो यूं बिदक कर पीछे हट गया जैसे वह ज़ख़्मी नहीं अज़्दहा था। उस ने वहीं से बाहर खड़े संतरी को आवाज़ दी। संतरी दौड़ता अन्दर आगया। अली बिन सुफ़यान ने उसे ज़ख़्मी का चेहरा दिखाते हुए पूछा– "यह रात वाला संतरी तो नहीं?" नए संतरी ने चेहरा देख कर हैरत और घबराहट से बोझल आवाज़ में कहा– "यही था। यह इस बिस्तर में क्यूं सोया हुआ है हुज़ूर? ...ज़ख़्मी कहां है?"

"यह सोया हुआ नहीं।" अली बिन सुफ़यान ने उसे कहा– "मरा हुआ है।"

उस ने कमबल उठा कर फेंक दिया। बिस्तर खून से लाल था। वह ज़ख़्मी हशीश नहीं बल्कि रात वाले संतरी की लाश थी। अली बिन सुफ़यान ने देखा, लाश के दिल के करीब खंजर के दो ज़ख़्म थे। ज़ख़्मी हशीश गायब था। अली बिन सुफ़यान ने कमरे में, सेहन में और बाहर ज़मीन को ग़ौर से देखा। कहीं खून का एक क़तरा भी नज़र न आया। इस से जाहिर होता था कि संतरी को जिंदा उठा कर अन्दर लाया गया और बिस्तर पर लेटा कर उस के दिल में खनजर मारे गाए। उसे तड़पने नहीं दिया गया वरना खून के छींटे बिखरे हुए होते। वह मर गया तो उस पर कमबल डाल दिया गया और कातिल ज़ख़्मी कैदी को उठा कर लेगए और उस की बहन को भी ले गए। साफ ज़ाहिर था कि ज़ख़्मी की बहन ने ज़ख़्मी के फरार होने में मदद दी है। वह जवान और हसीन लड़की थी। उस ने संतरी को फांस लिया होगा। उसे अंदर ले गई होगी। लड़की के साथियों ने संतरी को बेख़बरी में जकड़ लिया होगा। अली बिन सुफ़यान को अपनी इस गलती पर ताअस्सुफ हुआ कि उस ने ज़ख़्मी के चार साथियों को ज़ख़्मी से मिलने की इजाज़त दी थी। उन्हो ने बताया था, कि वह ज़ख़्मी के

चचा ज़ाद और ताया ज़ाद भाई हैं। वह अन्दर आकर देख गए थे कि यहां के हिफ़ाज़ती इन्तज़ामात क्या हैं। उसकी बहन को भी यहां रहने की इजाज़त नहीं देनी चाहिए थी। उस ने यह भी यक़ीन नहीं किया था कि यह लड़की ज़ख़्मी की बहन थी या उस गिरोह की फ़र्द थी।

अली बिन सुफ़यान को गुस्सा आया और वह अपनी भूल पर पछताया भी लेकिन उस ने दिल ही दिल में ज़ख़्मी और उस के साथियों के इतने कामयाब फ़रार को सराहा। अली बिन सुफ़यान जैसे सुराग़रसां को धोका देना आसान नहीं था। वह लोग उसे भी जुल दे गए थे। उस ने नए संतरी से कुछ बातें पूछीं तो उस ने बताया कि उस से पहले वह रात को भी पहरे पर खड़ा रह चुका है। उस ने लड़की को जर्राह के साथ उस के घर जाते और रात बहुत देर बाद दोनों को वापस आते देखा था। इस से अली बिन सुफ़यान को शक हुआ कि लड़की ने जर्राह को भी अपने हुस्न व जवानी के ज़ेरे असर कर लिया था। अली ने संतरी से कहा कि दौड़ कर जाए और जर्राह को बुला लाए। संतरी के जाने के बाद वह सुराग़ ढूंढने लगा। बाहर गया। ज़मीन देखी। उसे पांव के निशान नज़र आए लेकिन निशान उस की मदद नहीं कर सकते थे। ज़ख़्मी शहर में तो रूपोश नहीं होसकता था। एक ही तरीक़ा रह गया था। ज़ख़्मी के गांव पर जहां से उस की बहन को लाया गया था छापा मारा जाए। वह गांव बहुतर दूर था।

संतरी ने वापस आकर बताया कि जर्राह अपने घर नहीं है। अली बिन सुफ़यान उस के घर गया। उस के मुलाज़िम ने बताया कि जर्राह रात बहुत देर बाद एक लड़की के साथ बाहर निकला था फिर वापस नहीं आया। उस लड़की के मुतअल्लिक़ उस ने बताया कि पहले भी जर्राह के साथ आचुकी है। और दोनो बहुत देर तक अन्दर बैटे रहे थे। अली ने अपने मुहकमे के सुराग़रसानों को बुलाया और उन्हें फ़रार के मुतअल्लिक़ बताया। वह सब इधर उधर बिखर गए। एक जगह उन्हें बहुत से घोड़ों के खुरों के निशान नज़र आए। इर्द गिर्द के रहने वालों में से तीन चार आदमियों ने बताया कि रात उन्हों ने बहुत से घोड़े दौड़ने की आवाज़ें सुनी थीं। सुराग़रसां खुरों को देखते शहर से बाहर निकल गए मगर आगे जाना बेकार था। रात के भागे हुए घोड़ों को अब खुर देख देख कर पकड़ना किसी पहलू मुमकिन नहीं था। उन्हें सिर्फ़ इतना पता चला कि मफ़रूर इस सिम्त गए है। अली बिन सुफ़यान के करने का काम अब यही रह गया था कि क़ायम मुक़ाम अमीरे मिश्र तक़ीउद्दीन को इत्तला देदे कि ज़ख़्मी हशीश को उस के साथी इग़वा कर के ले गऐ हैं। उसे यह ख़याल भी आया कि ज़ख़्मी ने राज़ की जो बातें बताई थीं वह बे बुनियाद थीं और उस ने अपनी जान बचाने और फ़रार का मौक़ा पैदा करने के लिए यह चाल चली थी। वह सुलतान अय्यूबी और अली बिन सुफ़यान को भी उल्लू बना गया था।

आधा दिन गुज़र गया था जब अली बिन सुफ़यान तक़ीउद्दीन को इत्तलाअ देने के लिए चला गया। उस वक़्त उस का ज़ख़्मी क़ैदी जो खड़ा होने के भी क़ाबिल नहीं था, क़ाहेरा से बहुत दूर उस वीराने में पहुंच चुका था मगर वह ज़िंदा नहीं था। जर्राह के हाथ पांव बंधे हुए थे और वह एक घोड़े पर बेजान चीज़ की तरह पड़ा था। उस की टांगें घोड़े के एक तरफ़ ऊपर का धड़ा और बाज़ू दूसरी तरफ़ थे। रात भर वह इसी हालत में रहा था। सुबह का उजाला

साफ नहीं हुआ था जब घोड़े रुके। जर्राह की आंखों पर पट्टी बांध दी गई। उसे पट्टी बांधने वाला आदमी नज़र नहीं आसका क्योंकि उस का सर नीचे था। पट्टी बंध जाने के बाद उस के पांव खोल दिए गए और उसे घोड़े पर बिठा दिया गया। उस के हाथ बंधे रहे। उस के पीछे एक आदमी घोड़े पर सवार होगया और घोड़े ज़रा से आराम के बाद चल पड़े। उसे इतना ही पता चल सकता था कि उस के पीछे चंद और घोड़े आरहे हैं और सवार आहिस्ता आहिस्ता बातें कर रहे हैं घोड़े चलते गए और सूरज ऊपर उठता गया। फिर जर्राह ने महसूस किया कि घोड़ा चढ़ाई चढ़रहा है। थोड़े थोड़े फ़ासले पर दाऐं बाऐं मुड़ रहा है। नीचे उतर रहा है। इस से वह अंदाज़ा कर रहा था कि यह इलाक़ा टीलों और खाईयों का है।

बहुत देर बाद जब सूरज सर पर आ गया था उसे पीछे से बुलन्द आवाज़ें सुनाई दीं जिनसे उसे पता चला कि कोई सवार गिर पड़ा है। उस का घोड़ा रूक गया और पीछे को मुड़ा। उसे इस तरह की आवाज़ें सुनाई दीं– "उठा लो– साये में ले चलो बेहोश हो गया है। ओ ख़ुदाया– इस का खून बह रहा है"– उसे शारजा की घबराई आवाज़ सुनाई दी। "जर्राह की आंखें और हाथ खोल दो। वह खून रोक लेगा, वरना मेरा भाई मर जायेगा।" – यह जख़्मी हशीश था जो घोड़े से गिर पड़ा था। रात भर की घोड़ सवारी से और घोड़ा इतनी तेज़ भगाने से उस के पेट का जख़्म खुल गया था और रान के जख़्म से भी खून जारी हो गया था। वह दर्द को बर्दाश्त करता रहा था। खून निकलता रहा। आख़िर यहां आकर ख़ून इतना निकल गया कि उस पर बेहोशी तारी हो गयी और वह घोड़े से गिर पड़ा। उसे उठाकर एक टीले के साये में ले गये। उस के मुंह में पानी डाला लेकिन पानी हलक़ से नीचे न गया। उसके कपड़े ख़ून से तर हो गये थे।

जर्राह की आंखें खोल दी गयीं और उसे कहा गया कि वह इधर उधर न देखे। उस ने अपनी पीठ में ख़न्जर की नोक महसूस की। वह आगे–आगे चल पड़ा। टीले के दामन में जख़्मी पड़ा था और शारजा उस के पास बैठी थी। उस ने जर्राह से कहा – "ख़ुदा के लिए मेरे भाई को बचाओ।" जर्राह ने सब से पहले जख़्मी की नब्ज़ पर हाथ रखा। उस के लिए हुक्म था कि वह इधर–उधर न देखे। वह बैठ गया था और जख़्मी की नब्ज़ देख रहा था। उस की पीठ में ख़न्जर की नोक चुभ रही थीर। जख़्मी की नब्ज़ महसूस करके वह तेज़ी से उठा और पीछे को मुड़ा। उस के सामने चार आदमी खड़े थे जिन के चेहरे स्याह नक़ाबों में थे।

उन की सिर्फ़ आंखें नजर आती थीं। उन में से एक के हाथ में ख़ंजर था। जर्राह ने गुस्से से कहा– "तुम सब पर अल्लाह की लानत बरसे। तुमने उसे बचाने के बजाय उसकी जान ले ली है। तुम सब उस के क़ातिल हो। यह मर चुका है। हम ने उसे चारपाई से हिलने भी नहीं दिया था और तुम उसे घोड़े पर बिठाकर लाये। उस के जख़्म खुल गये, और जिस्म का तमाम खून ज़ाया हो गया।"

शारजा भाई की लाश पर गिर पड़ी और चीखें मार–मार कर रोने लगी। नक़ाब पोशों ने जर्राह की आंखों पर पट्टी बांध दी और उसे वहां से कुछ दूर ले गये। लाश घोड़े पर डाल दी गयी और क़ाफ़िला फिर रवाना हो गया। जर्राह को शारजा के रोने और चिल्लाने की आवाज़ें

सुनाई देती रहीं। जर्राह के घोड़े पर जो सवार था उस से जर्राह ने कहा कि यह जख़्मी बिल्कुल ठीक हो सकता था मगर तुम लोगों ने उसे मार दिया। उसे कोई सज़ा न मिलती। सवार ने कहा– " हम उसे ज़िन्दा रखने के लिस नहीं लाये थे। हम ने दरअसल वह राज अग़वा किया है जो उस के पास था। उस के मर जाने का हमें कोई ग़म नहीं। हम ख़ुश हैं कि तुम और तुम्हारी हुकूमत उस राज से बेख़बर है जो उस के सीने में था।"

"मुझे तुम लोग किस जुर्म की सजा दे रहे हो?" जर्राह ने पूछा।

"हम तुम्हें पैग़म्बरों की तरह रखेंगे" सवार ने जवाब दिया। " तुम्हे गर्म हवा नहीं लगने दी जायेगी। हम तुम्हे इस लिए लाये थे कि रास्ते में जख़्मी को तकलीफ हो गयी तो उस की मरहम पट्टी करोगे मगर हम ने यह नहीं सोंचा कि तुम्हारे पास न कोई दवाई है न मरहम। तुम्हे अग़वा करने की दूसरी वजह यह थी कि हम उस लड़की को भी साथ लाना चाहते थे। हम उसे ही लाते तो तुम जो उसके साथ थे हमारे तआक़ुब में पूरी फ़ौज भगा देते। इसलिए तुम्हें भी उठा लाना ज़रूरी था।

तीसरी वजह यह है कि हमें एक जर्राह की ज़रूरत है। तुम्हें हम अपने साथ रखेंगे।"

"मैं ऐसे किसी आदमी का इलाज नहीं करूंगा जो मेरी हुकूमत के ख़िलाफ़ होगा।" जर्राह ने कहा। "तुम सब सलीबियों और सुडानियों और फिलिस्तिनियों के दोस्तस हो और उनके इशारों पर सल्तनते इस्लामियां के ख़िलाफ़ तख़रीब कारी कर रहे हो। मैं तुम्हारे किसी काम न आ सकूंगा।"

"फिर तुम क़त्ल हो जाओगे।" सवार ने कहा।

"फिर हम तुम्हारे साथ वह सलूक करेंगे जो तुम्हारे लिए बेहतर नहीं होगा।" सवार ने जवाब दिया। "फिर तुम हमारा हर हुक्म मानोगे लेकिन मैं तुम्हे यह भी बता देता हूं कि बुरे सलूक की नौबत ही नहीं आयेगी। तुम ने सलाहुद्दीन अयुबी की बादशाही देखी है। हमारी बादशाही देखोगे तो अपनी ज़बान से कहोगे कि मैं यही रहना चाहता हूं, यह तो जन्नत है। अगर तुम ने हमारी जन्नत को ठुकरा दिया तो हम तुम्हे अपना जहन्नम दिखायेंगे।"

घोड़े चलते रहे जर्राह आखों पर बंधी हुई पट्टी के अंधेरे में अपने मुस्तकबिल को देखने की कोशिश करता रहा। वह फरार की तरकीबें भी सोंचता रहा। उसे बार–बार शारजा का ख्यला आता मगर वह यह सोंच कर मायूस हो जाता था कि यह लड़की भी उसी गिरोह की है, वह उस की मदद नहीं करेगी।

❖

उन का सफर इतना लम्बा नहीं था लेकिन सरहदी दस्तों और उनके गश्ती सन्तारियों के डर से मुजरिमों का यह क़फ़िला बच बच कर, छुप–छुप कर और बड़ी दूर का चक्कर काट कर जा रहा था। शाम के बाद भी यह क़फ़िला चलता रहा और रात गुजरती रही। आधी रात से ज़रा पहले काफ़िला रूक गया। जर्राह को घोड़े से उतार कर उसके हाथ खोल दिये गये और चूंकि अंधेरा था इस लिए उसकी आंखों की पट्टी भी खोल दी गयी। उसे खाने को कुछ दिया गया, पानी भी पिलाया गया। उसके बाद उस के हाथ भी बांध दिये गये और पांव भी और

उसे सो जाने को कहा गया। सवार थके हुए थ। उस से एक रात पहले के जागे हुए थे, लेटे और सो गये। घोड़ों की ज़ीने उतार कर ज़रा परे बांध दिया गया था। जर्राह के भागने का तो सवाल ही नहीं पैदा होता था। वह बंधा हुआ था। वह भी सो गया।

कुछ देर बाद उसकी आंख खुल गयी। वह समझा कि उसे रवानगी के लिए जगाया जा रहा है लेकिन कोई उसके पांव की रस्सी खोल रहा था। वह चुप चाप पड़ा रहा। वह मरने के लिए भी तैयार हो गया। उसे यह भी तवक्को थी कि उसे क़त्ल करके फेंक जायेंगे, लेकिन पांव की रस्सी खुलने के बाद जब यह साया उसके हाथों की रस्सी भी खोलने लगा तो उसने झुक कर जर्राह के कान में कहा– "मैं ने दो घोड़ों पर ज़ीनें कस दी हैं। ख़ामोशी से मेरे पीछे आओ। मैं तुम्हारे साथ चलूंगी। वह बेहोशी की नींद सोये हुए हैं।" यह शारजा की अवाज़ थी।

जर्राह आहिस्ता से उठा और शारजा के पीछे पीछे चल पड़ा। रेत पर पांव की आहट पैदा ही नहीं होती थी। आगे दो घोड़े खड़े थे। एक पर शारजा सवार हो गयी। दूसरे पर जर्राह सवार हो गया। शारजा ने कहा– "अगर तुम अच्छे सवार नहीं तो डरना नहीं, गिरोगे नहीं। ऐड़ लगाओ और लगाम ढीली छोड़ दो। घोड़े को दायें–बायें मोड़ना तो जानते होगे।" जर्राह ने जवाब दिये बग़ैर घोड़े को ऐड़ लगायी। शारजा का घोड़ा भी उस के साथ ही दौड़ा। दौड़ते घोड़े से शारजा ने कहा – "मेरे पीछे रहो। मैं रास्ता जानती हूं। अंधेरे में मुझ से अलग न होना।

सरपट भागते घोड़ों ने मुजरिमों को जगा दिया लेकिन तआक़ुब आसान नहीं था। उन्हें पहले तो देखना था कि यह किस के घोड़े हैं। उन्हें शारजा के भागने का ख़तरा हीं नहीं था। कुछ वक़्त देखने में लग गया होगा कि वह कौन थे और ज़रा देर बाद ही उन्हें पता चला होगा कि शारजा और जर्राह भाग गये हैं। फिर उन्हें अपने घोड़ों पर ज़ीनें डालनी थीं। उस में इतना वक़्त ख़र्च होगा कि शारजा और जर्राह भाग गये होंगे.... शारजा और जर्राह ने बारहा पीछे देखा। आवाज़े सुनने की भी कोशिश की उन्हें यक़ीन सा हो रहा था कि उनके पीछे कोई नहीं आ रहा। वह अभी घोड़ों की रफ्तार कम करने का ख़तरा मोल नहीं ले सकते थे, इसलिए ऐड़ लगाते चले गये। आख़िर वह हद आ गयी जहां घोड़े खुद ही आहिस्ता होने लगे लेकिन वह बहुत दूर निकल गये थे। जर्राह ने शारजा को बताया कि वह उन दस्तों से बचने के लिए दूर के रास्ते से गये थे वरना उसका गांव दूर नहीं था। उस ने उसे यह यक़ीन दिलाया कि वह क़ाहिरा की सही सम्त को जा रहे हैं और क़ाहिरा दूर नहीं।

अगला दिन आधा गुजर गया था जब अली बिन सुफ़ियान क़ायमे मुक़ाम अमीरे मिस्र तकीउद्दीन के सामने बैठा था। तकीउद्दीन कह रहा था– "मैं इस पर हैरान नही कि आप जैसे तजुरबा कार हाकिम ने यह ग़लती की थी कि मश्कूक लड़की को जख़्मी कैदी के पास रहने की इजाजत दे दी और चार मशकूक अफ़राद भी जख़्मी के पास ले गये। मैं इस पर हैरान हूं कि यह गिरोह इतना ज्यादा दिलेर और मुन्जिम है। जख़्मी को उठा ले जाना, संतरी को क़त्ल करके जख़्मी के बिस्तर पर डाल जाना दिलेराना इक़दाम भी और यह एक मुनज़्ज़म जुर्म भी है।"

"मेरा ख़्याल है कि इस जुर्म को जर्राह और लड़की ने आसान बनाया है।" अली बिन सुफ़ियान ने कहा– "इस जुर्म में भी हमारी कौम की उसी कमज़ोरी ने काम किया जिस के मुतअल्लिक सलाहुद्दीन अयुबी परेशान रहते हैं और कहा करते हैं कि औरत इक़्तदार का नशा मिल्लते इस्लामिया को ले डूबेगा। जर्राह को मैं नेक और साहबे किरदार समझता था मगर एक लड़की ने उसे भी अंधा कर दिया। बहरहाल जख़्मी क़ैदी के गांव का पता चल गया है। मैं ने एक दस्ता रवाना कर दिया है।"

"और जुनूब मग़रिबी इलाके के जिस खंडहर का जख़्मी क़ैदी ने ज़िक्र किया था उस के मुतअल्लिक आप क्या करना चाहते हैं?" तकीउद्दीन ने पूछा।

"मुझे शक है कि उस ने झूठ बोला था"। अली बिन सुफ़ियान ने जवाब दिया। " उस ने अपनी जान बचाने के लिए यह बेबुनियाद किस्सा गढ़ा था। ताहम उसके इलाके की सुरागरसानी की जायेगी।"

वह उसी मसअले पर बातें करते रहे थे कि दरबान ने अन्दर आकर ऐसी इत्तलाअ दी जिस ने दोनों को सुन्न कर दिया। उन्होंने एक दूसरे की तरफ़ देखा। ऐसे मालूम होता था जैसे उन की ज़बाने बोलने से मआज़ूर हो गयी हों। अली बिन सुफ़ियान उठा और यह कह कर बाहर निकल गया। "कोई और होगा।" उस के पीछे तकीउद्दीन भी बाहर निकल गया। मगर वह कोई और नहीं उन का अपना जर्राह उनके सामने खड़ा था और उसके साथ जख़्मी क़ैदी की बहन शारजा थी। उनके घोड़े बुरी तरह हांप रहे थे। जर्राह और शारजा के चेहरे और सर गर्द से भरे हुए थे। होंठ ख़ुश्क और मुंह खुले हुए थे। अली बिन सुफ़ियान ने ज़रा ग़ुस्से से पूछा– "क़ैदी को कहां छोड़ आये?" जर्राह ने हाथ से इशारा किया कि हमें ज़रा दम मारने दो। दोनों को अन्दर ले गये। उन के लिए पानी और खाना वग़ैरह मंगवाया गया।

जर्राह ने तफ़सील से बताया कि वह किस तरह अग़वा हुआ था और सफ़र में जख़्मी क़ैदी मर गया है। उसे बिल्कुल इल्म नहीं था कि जख़्मी क़ैदी भी अग़वा किया गया है। यह उसे अगले रोज़ सफ़र में पता चला कि जब जख़्मी घोड़ा से गिरा और जख़्म खुल जाने की वजह से मर गया। जर्राह को जिस तरह शारजा ने आज़ाद कराया और उसके साथ भागी वह तफ़सील से सुनाया.... शारजा ने अपना बयान दिया अली बिल सुफ़ियान जान गया कि यह सेहराई लड़की है, उजट और दिलेर है और यह इतनी चालाक है नहीं जितना समझा गया था। उस ने बताया कि वह अपने भाई के सहारे और उसी की ख़ातिर ज़िन्दा थी। उसी भाई की ख़ातिर वह जान देने के लिए भी तैयार थी। जर्राह ने जिस खुलूस से उसके भाई का इलाज किया उससे वह इतनी मुतासिर हुई कि उसकी मुरीद बन गयी। जर्राह को वह फ़रिश्ता समझने लगी। पहले रोज़ उसके साथ जो चार आदमी आये थे वह उसके कुछ नहीं लगते थे। वह उसके चचा ज़ाद और ताया ज़ाद भाई नहीं थे। वह उसी गिरोह के आदमी हैं जो सलाहुद्दीन अयुबी को और उसके आला हाकिमों को क़त्ल करना चाहता है। जब अली बिन सुफ़ियान के आदमी शारजा के गांव उसे साथ लाने गये थे, उस वक़्त यह चारों आदमी गांव में थे। उन्हें पता चला कि शारजा का भाई जख़्मी होकर क़ैद हो गया है तो वह इस इरादे से साथ चल पड़े

कि जख़्मी को अग़वा करेंगे। उन्हें डर यह था कि जख़्मी के पास जो राज़ है वह फ़ाश न हो। वह जानते थे कि जख़्मी कहां और किस कार्रवाई में जख़्मी हुआ है।

शारजा के बयान के मुताबिक़, उस का इरादा भी यही था कि भाई को अग़वा करायेगी। उसने भाई के पास रहने की जो इल्तिजा की थी उससे उसके दो मक़सद थे। एक यह कि भाई की ख़िदमत और देखभाल करेगी और दूसरा यह कि मौका मिला तो उसे अग़वा करायेगी। वह चारों आदमी जख़्मी से मिल कर वापस नहीं गये। बल्कि क़ाहिरा में ही रहे थे। वह शारजा के इशारे के मुन्तज़िर थे लेकिन जर्राह ने लड़की को इतना मुतासिर किया कि उसकी सोंच ही बदल गयी। जर्राह ने उसे यक़ीन दिलाया कि उस के भाई को कोई सज़ा नहीं मिलेगी। उस के अलावा जर्राह ने उसे ऐसी बातें बतायीं जो उस ने पहले कभीनहीं सुनी थी। जर्राह ने उस के अन्दर इस्लाम की अज़मत बेदार कर दी थी और आला किरदार का मुज़ाहिरा करके उसे अपना मुरीद बना लिया था। वह हर वक़्त जर्राह के पास बैठ कर उसकी बातें सुनने के लिए बेताब रहने लगी। एक रोज़ वह जर्राह के घर जा रही थी तो उसे उन चारों में से एक आदमी रास्ते में मिल गया। उसने शारजा से कहा कि जख़्मी के अग़वा में अब देर नहीं होनी चाहिए शारज़ा ने उसे कहा कि वह इरादा बदल चुकी है। उसका भाई यहीं रहेगा। उस आदमी ने शारजा से कहा कि अगर उस ने शहर में आकर अपना दिमाग़ ख़राब कर लिया है तो उसे क़त्ल कर दिया जायेगा। जख़्मी यहां नहीं रहेगा।

शारजा को तवक्को नहीं थी कि ये चारों इतनी दिलेरी से उसके भाइ को अगवा कर लेंगे। उसने उन्हें फ़ैसला सुना दिया कि वह उनकी कोई मदद नहीं करेगी। उस आदमी ने उसे कहा .. हम तुम्हारी हर एक हरकत देख रहे हैं । हम समझ रहे थे कि तुम ने जर्राह को फांस लिया है लेकिन मालूम होता है कि तुम खुद उसके जाल में फंस गई हो।

शारजा ने उसे धुत्कार दिया । उसे चूँकि तवक्को नहीं थी कि वह लोग इतनी दिलेरी का मुजाहरा कर सकेंगे इस लिए उस ने जर्राह के साथ भी ज़िक्र न किया कि उसके जख्मी भाई के अग्वा का ख़तरा है। उसी रात शारजा और जर्राह उन चारों के चंगुल में आ गए। उन्हें जब घोड़ों पर सवार कराने के लिए उठा ले गए तो उसने देखा कि एक घोड़े पर उसका जख्मी भाई बैठा था। उस वक़्त वह कुछ खुश हुई कि उसका भाई आजाद हो गया है। वह फरार पर आमादा हो गई लेकिन जर्राह को उन लोगों की क़ैद में नहीं देखना चाहती थी। उस ने उन्हें कहा भी कि उसे छोड़ दो लेकिन वह न माने उसके हाथ और पाँव बांध कर घोड़े पर डाल लिया। रास्ते में शारजा को बताया गया कि उसके भाई को किस तरह अग्वा किया गया है। वहां सिर्फ़ दो आदमी गए थे। एक ने सन्तरी से कहीं का रास्ता पूछने के बहाने उसे बातों में लगा लिया। दूसरे ने पीछे से उस की गरदन जकड़ ली और दोनों उसे उठा कर अंदर ले गए। जख्मी उन्हें देख कर उठ बैठा। उसके बिस्तर पर संतरी को लिटा दिया गया और उसके दिल पर खंजर के दो गहरे वार कर के उसे ख़त्म कर दिया गया। फिर उस पर कम्बल डाल दिया गया। दोनों ने जख्मी क़ैदी को उठाया और निकल गए। उन्हें डर था कि वह नहीं मानेगी और अग्वा नाकाम बना देगी लेकिन उसे भी वहां से ग़ायब करना जरूरी था क्योंकि

उसके पास भी एक राज था। दो आदमी घात में बैठे थे। ज्योंही जर्राह और शारजा तंग और तारीक गली में आए उन्हें जकड़ लिया गया और अग्वा कामयाब हो गया।

❖

अली बिन सुफ़ियान जैसा घाघ सुराग रसां कोई और तजुर्बा नहीं करना चाहता था। उस ने जर्राह और शारजा के बयानों पर फ़ौरी एतबार न किया। यह भी साजिश की एक कड़ी हो सकती थी। उसने दोनों को अलग कर दिया और उन से अपने अन्दाज़ में पूछ गछ की। जर्राह दानिशमन्द आदमी था। उस ने अली बिन सुफ़यान को क़ाइल कर लिया कि उस ने जो बयान दिया है वह लफ़्ज़ बलफ़्ज़ दुरुस्त है। उस ने कहा कि एक तो जज़्बाती पहलू था। उस लड़की की शकल व सूरत उस की मरी हुई बहन से मिलती जुलती थी इस लिए वह उसे अछी लगी और वह उसे अपने घर भी लेजाता रहा और ज़ख़्मी के मकान में भी उस के साथ ज़्यादा वक़्त बैठा रहता था। जर्राह ने बताया कि उस के इस सुलूक से लड़की इतनी मुतअस्सिर हुई कि उस ने अपने कुछ शकूक उस के सामने रख दिए। यह उस लड़की का दूसरा पहलू था जिस पर जर्राह ने ज़्यादा तवज्जुह दी। लड़की मुसलमान थी लेकिन मालूम होता था कि उस पर बड़े ही खतर नाक असरात जो बाहर से आए थे काम कर रहे थे। जर्राह ने उस के ज़हन से यह असरात साफ कर दिए। लड़की चूंकि पसमांदा ज़ेहन की थी, सेहरा के दूर दराज़ गोशे की रहने वाली थी इस लिए उस के ज़ेहन में जो कुछ डाला गया वह उस को सही समझती थी। उस की बातों से यह इन्कशाफ हुआ कि इस इलाक़े में इस्लाम के मनाफी असरात और सलाहुद्दीन अय्यूबी के ख़िलाफ़ तख़रीब कारी ज़ोर व शोर से बिला रोक टोक जारी है।

शारजा से अली बिन सुफ़यान ने कोई बयान नहीं लिया, उस पर सवाल करता रहा और उस के जवाबों से एक बयान मुरत्तब होगया। उस ने फ़िरऔनों के उस खंडर के मुतअल्लिक़ वही इंकशाफ किया जो बयान किया जा चुका है। वह भी उस खंडर के पुर असरार आदमी की मोतकिद थी जिस के मुतअल्लिक़ कहा जाता था कि गुनहगारों को नज़र नहीं आता और उस की सिर्फ़ आवाज़ सुनाई देती है। शारजा ने बताया कि उस का भाई फ़ौज में था और वह घर में अकेली रहती है। उसे गांव के कुछ लोगों ने कहा था कि वह उस खंडर में चली जाए क्यों कि वह मुक़द्दस इन्सान खूबसुरत कुंवारियों को बहुत पसंद करता है। शारजा पर अली बिन सुफ़यान की माहेराना जिरह से लड़की के सीने से यह राज़ भी निकल आया कि उस के गांव की तीन कुंआरी लड़कियां उस खंडर में चली गईं थीं फिर वापस नहीं आईं। एक बार उस का भाई गांव आया था। शारजा ने उससे पूछा कि वह खंडर में चली जाए? भाई ने उसे मना कर दिया था। शारजा अछी तरह तो बयान न कर सकी लेकिन यह पता चल गया कि मिश्र के जुनूब मग़रिबी इलाक़े में क्या होरहा है। जर्राह के मुतअल्लिक़ लड़की ने बताया कि उसे अगर गांव में ले जाते और क़ैद में डाल देते तो वहां से भी वह उसे अपनी जान की बाज़ी लगा कर आज़ाद करा देती। उन चारों मुजरिमों को वह अपना हमदर्द समझा करती थी लेकिन जर्राह ने उसे बताया था कि यह अल्लाह के बहुत बड़े मुजरिम हैं। उन के मुतअल्लिक़ उसे यह भी पता चल गया था कि उन्हें उस के भाई के साथ कोई हमदर्दी नहीं बल्कि उस राज़ से

दिलचस्पी थी जो उस के पास था। इसी लिए उन्हों ने उसे मार दिया।

अली बिन सुफ़यान ने उससे पूछा कि अब वह क्या करना चाहती है और अपने मुतअल्लिक उस ने क्या सोंचा है। उस ने जवाब दिया कि वह सारी उम्र जर्राह के कदमों में गुज़ार देगी और अगर जर्राह उसे आग में कूद जाने को कहे गा तो वह कूद जाएगी। उस ने इस पर रिज़ामंदी का इज़हार किया कि वह खंडर तक जाने वालों की रहनमाई करे गी और अपने इलाके के हर उस फर्द को पकड़वाए गी जो मिश्र की हुकूमत के खिलाफ़ काम कर रहा है।

अली बिन सुफ़यान के मशवरे पर फ़ौज और इन्तज़ामिया का इजलास बुलाया गया और सूरते हाल तकीउद्दीन के सामने रखी गई। सब का ख़्याल था कि तकीउद्दीन नया नया मिश्र में आया है और उस के सर पर पहली बार इतनी बड़ी जिम्मेदारी पड़ी है? इस लिए वह मुहतात फैसले करेगा और शायद कोई ख़तरा मोल न लेना चाहे। इजलास में बेशतर हुक्काम ने इस पर इत्तफाक किया कि चूंकि इतने वसीअ इलाके की इतनी ज़्यादा आबादी गुमराह कर दी गई है इस लिए इस आबादी के खिलाफ़ फ़ौजी कारवाई न की जाए। मसअला यह था कि खंडरात के अन्दर के जो हालात मालूम हुए थे उन से ज़ाहिर होता था कि वहां से एक नया अकीदा निकला है जिसे लोगों ने कुबूल कर लिया है। लेहाज़ा यह लोग अपने मअबद और अकीदे पर फ़ौजी हमला बरदाश्त नहीं करेंगे। उस का हल यह पेश किया गया कि उस इलाके में अपने मुअल्लिम, आलिम और दानिशवर भेजे जाऐं जो लोगों को राहे रास्त पर लाऐं। उन के जज़बात को मजरूह न किया जाए......इजलास में एक मशवरा यह भी किया गया कि सुलतान अय्यूबी को सूरते हाल से आगाह किया जाए और उन से हुक्म लेकर कारवाई कीजाए।

"इस का मतलब यह है कि आप इंसानों से डरते हैं" तकीउद्दीन ने कहा– "और आप के दिल में खुदा और उस के रसूल स0 का डर नहीं जिन के सच्चे मज़हब की वहां तौहीन हो रही है। अमीरे मिश्र और सालारे आला को ख़बर तक नहीं होने दी जाए गी कि मिश्र में क्या होरहा है। क्या आप इस से बेख़बर हैं कि वह मैदाने जंग में कितने ताकतवर दूशमन के मुकाबले में सीना सिपर हैं? क्या आप सलाहुद्दीन अय्यूबी को यह ताअस्सुर देना चाहते हैं कि हम सब दोचार हज़ार गुनहगारों और दुशमनाने दीन से डरते हैं? मैं बराहे रास्त कारवाई का और बड़ी सख्त कारवाई का काइल हूं।"

"गुस्ताख़ी माफ अमीरे मोहतरम!" एक नाएब सालार ने कहा– "सलीबी हम पर यह इलज़ाम आईद करते हैं कि इस्लाम तलवार के ज़ोर से फैलाया गया है। हम इस इलज़ाम की तरदीद अमली तौर पर करना चाहते हैं। हम प्यार और खुलूस का पैग़ाम लेकर जाऐं गे।"

"तो फिर अपनी कमर के साथ तलवार क्यों लटकाए फिरते हो?" तकीउद्दीन ने तनज़िया लहजे में कहा– "फ़ौज पर इतना खर्च क्यों कर रहे हो? क्या इस से यह बेहतर नहीं कि हम फ़ौज की छुट्टी कर दें और हथ्यार दरयाए नील में फेंक कर मुबल्लिग़ों का एक गिरोह बनालें और दुरवेशों की तरह गांव गांव, करिया करिया धक्के खाते फिरें?" तकीउद्दीन ने जज़बाती लहजे में कहा। "अगर रसूले खुदा स0 के पैग़ाम के ख़िलाफ़ सलीब की तलवार निकले गी

तो इस्लाम की शमशीर नियाम में नहीं रहेगी और जब शमशीरे इस्लाम नियाम से निकले तो हर उस सर को तन से जुदा कर देगी जो कलमाए रसूल स0 के सामने झुकने से इंकार करता है। वह हर उस ज़ुबान को काटे गी जो कलमाए हक़ को झुठलाती है। सलीबी अगर यह इलज़ाम आइद करते हैं कि हम ने इस्लाम तलवार के ज़ोर पर फैलाया है तो मैं उन से माफी मांगने के लिए तैयार नहीं हूं। सलतनेते इस्लामिया क्यों सिकुड़ती चली आरही है? खुद मुसलमान क्यों इस्लाम के दुशमन हुए जारहे हैं? सिर्फ इस लिए कि सलीबियों ने औरत और शराब से, ज़रो जवाहेरात और हवसे इक़्तदार से इस्लाम की तलवार को ज़ंग आलूद कर दिया है। वह हम पर जंग पसंदी और तशद्दुद का इलज़ाम आइद करके हमारी असकरी रिवायात को ख़त्म करना चाहते हैं क्योंकि वह हमारे ख़िलाफ लड़ नहीं सकते। उन के बर्री लशकर और बहरी बेड़े नाकाम होगए हैं। वह हमारे दरमियान तख़रीब कारी कर रहे हैं। अल्लाह के सच्चे दीन की जडें काट रहे हैं और आप कहते हैं कि उन के ख़िलाफ़ तलवार न उठाओ.......

"ग़ौर से सुनो मेरे दोस्तो! सलीबी और आप के दूसरे दुशमन उ बको मोहब्बत का झांसा दे कर आप के हाथ से तलवार लेना चाहते हैं। वह आप की पीठ पर वार करना चाहते हैं उन का यह उसूल महज़ एक फरेब है कि कोई तुम्हारे एक गाल पर थप्पड़ मारे तो दूसरा गाल आगे कर दो। क्या तुम में से कोई ऐसा है जिसे यह मालूम नहीं कि कर्क में वह मुसलमान आबादी का क्या हश्र कर रहे हैं? क्या आप ने शूबक फ़तह करके वहां मुसलमानों का बेगार कैमप नहीं देखा था? वहां मुसलमान औरतों की जो उन्हों ने इस्मत दरी की वह नहीं सुनी थी? मक़बूज़ा फिलिस्तीन में मुसलमान खौफ व हिरास की बेआबरूई और मज़लूमियत की ज़िंदगी बसर कर रहे हैं। सलीबी मुसलमानों के क़ाफिले लूटते और औरतों को इग़वा करके ले जाते हैं और आप कहते हैं कि इस्लाम के नाम पर तलवार उठाना जुरम है। अगर यह जुर्म है तो मैं इस जुर्म से शरमशार नहीं। सलीबियों की तलवार निहत्तों को काट रही है? सिर्फ इस लिए कि वह अल्लाह और रसूल सलअम के नाम लेवा हैं। सलीब और बुतों के पुजारी नहीं.... तुम्हारी तलवार सिर्फ वहां हाथ से गिर पड़नी चाहिए जहां सामने निहत्ते हों और उन तक खुदा का पैग़ाम न पहुंचा हो। हमें इस उसूल का काईल नहीं होना चाहिए कि लोगों के जज़बात पर हमला न करो। मैं ने देखा है कि अरब में छोटे छोटे मुसलमान हुकुमरान और न अहल उमरा लोगों को खुश करने के लिए बड़े दिलकश और दिलों को मोह लेने वाले अलफाज़ इस्तेमाल करते हैं। उन के ग़लत ज़ज़बात और एहसासात को और भड़का कर उन्हें खुश रखते हैं ताकि लोग उन्हें ऐश व इशरत से और ग़ैर इस्लामी तरज़े ज़िंदगी से रोक न सकें। उन उमरा का तरीकाए कार यह है कि उन्हों ने खुशआमदियों का एक गिरोह पैदा कर लिया है जो उन की हर आवाज़ पर लब्बेक कहता और रेआया में घूम फिर कर साबित करता रहता है कि उन के अमीर ने जो बात कही है वह खुदा की आवाज़ है। उस का नतीजा यह है कि अल्लाह के बंदे, बदकार और ऐयाश इंसानों के ग़ुलाम होते चले जारहे हैं। कौम हाकिम और महकूम में तकसीम होती चली जारही है......

हम देख रहे हैं कि दुशमन हमारी जड़ें काट रहा है और हमारी क़ौम के एक हिस्से को कुफ्र की तारीकियों में लेजारहा है। अगर हम ने सख्त रवैया इख्तयार नहीं किया तो इस का मतलब यह होगा कि हम कुफ्र की ताईद कर रहे हैं। मेरे भाई सलाहुद्दीन अय्यूबी ने मुझे कहा था कि ग़द्दारी हमारी रिवायत बनती जारही है लेकिन मैं यह भी देख रहा हूं कि यह भी रिवायत बनती जारही है कि एक टोला हुकूमत क्या करे गा और क़ौम महकूम होगी। हुकुमरान टोला क़ौम का खज़ाना शराब में बहाए गा और क़ौम पानी के घूंट को भी तरसे गी। मेरे भाई ने ठीक कहा था कि हमें क़ौम और मज़हब के मुस्तकबिल पर नज़र रखनी है। हमें क़ौम में वक़ार और किरदार में बुलंदी पैदा करनी है। आने वाली नसलें हमारी क़ब्रों से जवाब मांगें गी। इस मक़सद के लिए हमें ऐसी कारवाई से गुरेज़ नहीं करना चाहिए जो मुल्क और मज़हब के लिए सूद मंद हो। अगर यह बरहक इक़दाम क़ौम के चंद एक अफराद के लिए तकलीफ देह साबित होता है तो हमें इस की परवाह नहीं करनी चाहिए। हम क़ौम का मफाद और वक़ार चंद एक अफराद की खुशनूदी पर कुर्बान नहीं कर सकते कि वहां के लोगों के जज़्बात मजरूह हूंगे। तुम देख रहे हो कि वहां के लोग सीधे सादे और बे इल्म हैं। उन्हें अपने वह मुसलमान भाई जो कबीलों के सरदार हैं और मज़हब के इजारह दार हैं दुशमन का आलाए कार बन कर गुमराह कर रहे हैं।''

इजलास में किसी को तवक्क़ो नहीं थी कि तक़ीउद्दीन का रद्देअमल इतना शदीद और फ़ैसला इतना सख्त होगा। इस ने जो दलाइल पेश किए उन के ख़िलाफ़ किसी को जुरअत न हुइ कि कोई मशवरह ही पेश करता। उस ने कहा– ''मिश्र में जो फ़ौज है यह महाज़ से आई है और इस से पहले भी लड़ चुकी है इस फ़ौज के सिर्फ़ पांच सौ घोड़े सवार, दो सौ शुत्र सवार और पांच सौ प्यादा आज शाम उस इलाक़े की तरफ़ रवाना करदो जहां वह मशकूक खंडरात हैं। यह फ़ौज उस इलाक़े से इतनी दूर रहे गी कि ज़रूरत पड़े तो फौरी तौर पर मुहासरा किया जासके। मेरे साथ दमिश्क से जो दोसौ सवार आए हैं वह इलाक़े के अन्दर जाकर खंडरों पर हमला करेंगे। एक छापा मार दस्ता खंडरों के अंदर जाए गा। दोसौ सवार खंडरों को मुहासरे में रखें गे। अगर बाहर से हमला हुआ या मज़ाहमत हुई तो फ़ौज का बड़ा हिस्सा मुकाबला करेगा और मुहासरा तंग करता जाए गा। इस कारवाई में फ़ौज को सखती से हुकुम दिया जाए कि किसी निहत्ते को नहीं छेड़ा जाएगा।''

इस फ़ैसले के फ़ौरन बाद फ़ौजी हुक्काम हमले और मुहासरे वग़ैरा का मंसूबा तैयार करने में मसरूफ होगए।

❖

सुलतान अय्यूबी मिश्र की ताज़ा सूरते हाल से बेख़बर कर्क और शूबक क़िलों के दरमियान मील हा मील वसीअ सेहरा में जहां रेतीली चटानों, टीलों और घाटियों के इलाक़े भी थे और जहां किसी किसी ज़गह पानी और साए की भी इफरात थी। सलीबियों के नए जंगी मनसूबे के मुताबिक़ अपनी अफ़ावाज की सफ बंदी कर रहा था। जासूसों ने उसे बताया था कि सलीबी दुगनी ताक़त से जो ज़्यादा तर ज़िरह पोश बक्तर बंद होगी, क़िले से बाहर आकर हमला

करेंगे। यह फ़ौज सुलतान अय्यूबी की फ़ौज को आमने सामने की जंग में उलझाए गी और दूसरी फ़ौज अक़ब से हमला करेगी। सुलतान अय्यूबी ने अपनी फ़ौज को दूर दूर तक फैला दिया। सब से पहला काम यह किया कि जहां जहां पानी और सबज़ा था वहां फ़ौरन कबज़ा कर लिया। उन जगहों के दिफा के लिए उन ने बड़े साईज की कमानों वाले तीर अंदाज़ भेज दिए। उन केतीर बहुत दूर तक जाते थे। वहां मिंजनीकें भी रखीं जो आग की हांडयां फेंकती थी। यह एहतमाम इस लिए किया गया कि दुशमन क़रीब न आसके। बुलंदयों पर भी कबज़ा कर लिया गया। सुलतान अय्यूबी ने तमाम दस्तों को हुकम दिया कि दुशमन सामने से हमला करे तो वह और ज़्यादा फैल जाऐं ताकि दुशमन भी फैलने पर मजबूर हो जाए। उस ने अपनी फ़ौज को एसी तरतीब में कर दिया किदुशमन यह फ़ैसला ही नहीं कर सकता था कि मुसलमान फ़ौज के पहलू किधर और अक़ब किस तरफ़ है।

सुलतान अय्यूबी ने फ़ौज का एक बड़ा हिस्सा रिजर्व में रख लियाथा। एक हिस्से को इस तरह मफ़तहर्रिक रखा कि जहां कुमक की ज़रूरत पड़े फ़ौरन कुमक दे सके। उस का सब से ज़्यादा ख़तरनाक हथयार उसके छापा मार दस्ते थे और उस से ज़्यादा ख़तरनाक उस का जासूसी निज़ाम था जो उसे सलीबियों की नक़लो हरकत की ख़बरे दे रहा था। शूबक का क़िला सुलतान अय्यूबी सर कर चुका था। सलीबियों के मनसूबे में यह भी था कि उन के लिए हालात साज़गार हुए तो वह शूबक को मुहासरे में लेकर फ़तह कर लेंगे। उन्हें तवक्क़ो थी कि उन का इतना ज़्यादा लशकर सुलतान अय्यूबी की क़लील तादार फ़ौज को सेहरा में ख़त्म कर देगा या इतना कमज़ोर कर देगा कि वह शूबक को बाहर से मदद नहीं दे सके गी। उन के इस मंसूबे के पेशे नज़र सुलतान अय्यूबी ने शूबक की वह तरफ़ जिस तरफ़ से सलीबी इस क़िले पर हमला कर सकते थ, खाली छोड़ दी। उस ने सलीबियों के लिए मौक़ा पैदा कर दिया कि वह रास्ता साफ़ देखकर शूबक पर हमला कर दें। उस तरफ़ से उसने देख भाल वाली चौकियां भी हटा दीं और दूर दूर तक इलाक़ा खाली कर दिया।

सलीबियों के जासूसों ने कर्क में फ़ौरन इत्ला पहुंचाई कि सुलतान अय्यूबी ने सलीबियों के साथ सेहरा में लड़ने के लिए फ़ौज शूबक से दूर इकठी कर ली है और शूबक का रास्ता साफ होगया है। सलीबियों ने फ़ौरन अपनी उस फ़ौज को जो सुलतान अय्यूबी पर सामने से हमला करने के लिए बाहर निकाली थी हुक्म देदिया कि रुख़ बदल कर शूबक की तरफ़ चली जाए। चुनांचे यह फ़ौज उधर को होली। उस के पीछे रसद के ज़ख़ीरे जारहे थे। फ़ौज जब शूबक के चार मील दूर रह गई तो उसे रोक लिया गया। यह इस फ़ौज का आरज़ी पड़ाव था। रसद की घोड़ा गाड़ियां, ऊंट और खच्चर हज़ारों की तादाद में चले आरहे थे। उन्हें कोई ख़तरा न था क्योंकि मुसलमानों की फ़ौज का दूर दूर तक नाम व निशान न था। सलीबी हुकमरान बहुत ख़ुश थे। उन्हें शूबक का क़िला अपने कदमों मे पड़ा नज़र आरहा था। मगर रात को उन्हे अपने पीछे पांच छे मील दूर आसमान लाल सुर्ख़ नज़र अया। शोले इतने बुलंद थे कि इतनी दूर से भी नज़र आते थे। सलीबियों ने सवार दौड़ा दिए। जहां से शोले उठ रहे थे वहां उन की रसद थी। सवार वहां पहुंचे तो उन्हें सेहरा में बेलगाम घोड़े और बे महार ऊंट

हर तरफ दौड़ते भागते नज़र आए।

यह तबाही सुलतान अय्यूबी के एक छापा मार दस्ते की बर्पा की हुई थी। रसद में घोड़े के लिए खुश्क घास से लदी हुई सैकड़ों घोड़ा गाड़ियां थीं। उन्हें रसद के कैमप के इर्द गिर्द खड़ा किया गया था। सलीबी खुश फहमियों में मुबतला थे। उन्हें मालूम नही था कि उन की हर एक हरकत पर सुलतान अय्यूबी की नज़र है। रात को जब रसद का कैमप सोगया तो मुसलमान छापा मारों ने ऊंटों पर जाकर खुश्क घास में आतिशी फलीतों वाले तीर चलाए। घास फौरन जल उठी। देखते ही देखते कैमप शोलों के घेरे में आगया। उन के नरगे में आए हुए इन्सान जानें बचाने के लिए इधर उधर दौड़े तो उन में से बहुत से तीरों का शिकार होगए। जो जानवर रस्सियां तोड़ सके वह तो भाग गए और जो खुल न सके वह जिंदा जल गए। दूर दूर तक फैला हुआ कैमप जहन्नम बन गया। छापा मारों ने कई एक ऊंट और घोड़े पकड़ लिए और वापस चले गए।

सुबह तुलू हुई। सलीबी कमांडरों ने जाकर रसद का कैमप देखा वहां कूछ नहीं बचा था। उन की एक माह की रसद तबाह होचुकी थी। वह समझ गए कि शूबक का रास्ता जो साफ था यह सुलतान अय्यूबी की एक चाल थी। उन्हों ने बगैर देखे कह दिया कि कर्क से शूबक तक उन की रसद और कमक का रास्ता महफूज़ नहीं है। चुनानचे उन्हों ने शूबक का मुहासरा मुलतवी कर दिया। रसद के बग़ैर मुहासरा नामुमकिन था। और जब उन्हें इत्ला मिली कि गुज़िश्ता रात उस फ़ौज की भी रसद तबाह हो गई है जो सुलतान अय्यूबी की फ़ौज पर सामने से हमला करने के लिए गई थी तो उन्हों ने अपने तमाम तर जंगी मनसूबे पर नज़र सानी करने का फ़ैसला कर लिया। उन्हें कहीं भी सुलतान अय्यूबी की फ़ौज नज़र नहीं आरही थी। उन्हें जासूस यह भी नहीं बतासके थे कि मुसलमानों की फौज का इज्तमा कहां है। दर असल यह इज्तमा कहीं भी नही था।

सुलतान अय्यूबी को इत्ला मिली कि सलीबयों ने दोनों महाज़ों पर पेश कदमी रोक दी है तो उस ने अपने कमांडरों को बुला कर कहा "सलीबियों ने जंग मुलतवी कर दी है लेकिन हमारी जंग जारी है। दोनों फ़ौजों के आमने सामने के तसादुम को जंग कहते हैं, मैं छापों और शबखूनों को जंग कहता हूं। अब छापा मारों को सरगरम रखो। सलीबी दोनों तरफ़ से पीछे हट रहे हैं उन्हों इतमीनान से पीछे न हटने दो। इन्तहाई अकब या पहलू पर शब खून मारो और गाइब हो जाओ। सलीबी आप को अपने सामने लाकर लड़ना चाहते हैं लेकिन मैं आप को उस मैदान में उनके सामने लेजाऊं गा जो आप की मर्ज़ी का होगा और जहां की रेत भी आप की मदद करेगी।"

सुलतान अय्यूबी का कोई ठिकाना नहीं था। वह अपने अमली और मुहाफिज़ दस्ते के साथ खाना बदोश था। किसी एक जगह न ठहरने के बावजूद मालूम होता था जैसे हर जगह मौजूद है।

❖

मिश्र में सुलतान अय्यूबी का भाई तकीउद्दीन सलीबियों के दूसरे महाज़ पर हमला आवर

हो रहा था। यह मिश्र का जुनूब मग़रबी इलाक़ा था जहां के डरावने टीलों के अंदर फ़िरऔनों के हौलनाक खंडरात में हज़रत ईसा आसमान से वापस आने वाले थे। तमाम तर इलाक़ा एक नए अक़ीदे का पैरोकार होगया था....... जुमेरात की शाम थी। ज़ाएरीन का हुजूम खंडर के ग़ार नुमा दरवाज़े में दाख़िल होरहा था। अंदर बड़े कमरे में पुर असरार आवाज़ गूंज रही थी। लोगों को दीवार पर गुनाह गार और निकोकार जाते नज़र आ रहे थे। वहां वही समां था जो हर जुमेरात के रोज़ हुआ करता था। अचानक उस पुर असरार मुक़द्दस इंसान की आवाज़ ख़ामोश होगई जिस के मुतअल्लिक़ मशहूर था कि गुनाह गारों को नज़र नहीं आता। उस की बजाए एक और आवाज़ सुनाई दी। "गुमराह इंसानो! आज की रात घरों को ना जाना। कल सुबह तुम पर वह राज़ फ़ाश होजाए गा जिस के लिए तुम बेताब हो। यहां से फ़ौरन बाहर निकल जाओ। हज़रत ईसा तशरीफ लारहे हैं। इस खंडर से दूर जाकर सोजाओ।" बड़े कमरे में हैरत ज़दा लोगों को दीवार पर जो चमकते हुए सितारे नज़र आते थे वह मांद पड़ गए। उन सितारों में से हसीन लड़कियां और ख़ूबरू मर्द हंसते खेलते गुज़र रहे थे। लोगों ने देखा कि फ़ौजी क़िस्म के कुछ आदमी उन्हें पकड़ पकड़ कर ले जारहे हैं। कहीं से चीखें भी सुनाई दे रही थीं। बादल जो गरजते थे वह भी ख़ामोश हो गए। लोगों के लिए यह जगह बड़ी ही मुक़द्दस थी। वह ख़ौफ ज़दा होकर बाहर को भागे और खंडर ख़ाली होगया।

यह इंक़लाब तक़ीउद्दीन और अली बिन सुफ़यान लाए थे। उन के साथ फ़ौज की वही नफरी थी जो तक़ीउद्दीन ने अपने हुकम मे बताई थी। यह दस्ते शाम के बाद टीलों वाले इलाक़े के क़रीब पहुंच गए थे। उन की रहनुमाई शारजा कर रही थी जो घोड़े पर सवार थी। वह उन्हें जुमेरात की शाम वहां लेगई थी। क्यों कि उस रोज़ वहां मेला लगता था और दूर दूर से लोग आते थे। फ़ौज के बड़े हिस्से को जिस में पांच सौ घोड़ सवार, दो सौ शुत्र सवार और पांच सौ प्यादा थे, इस इलाक़े से ज़रा दूर रखा गया था। उन्हें निहत्ते लोगों के ख़िलाफ इस्तेमाल नहीं करना था। उन के ज़िम्मे यह फ़र्ज़ था कि सूडान की सरहद पर नज़र रखें। चूंकि खंडरों के अंदर की तख़रीब कारी सलीबियों औस सूडानियों की पुश्त पनाही पर हो रही थी इस लिए यह ख़तरा था कि वहां फ़ौजी कारवाई की गई तो सूडानी हमला कर देंगे। तक़ीउद्दीन ने उस इलाक़े के क़रीब के सरहदी दस्तों को जो सरहदों की हिफ़ाज़त के लिए वहीं रहते थे क़रीब बुला कर अपने तेहत कर लिया था।

दोसौ घोड़ सवार जो तक़ीउद्दीन के साथ दमिश्क़ से आए थे वह वहां के चुने हुए और दीवानगी की हद तक दिलेर सवार थे। दौड़ते घोड़ों से तीर अंदाज़ी उन का ख़ुसीसी कमाल था। प्यादा सिपाहियों ने सुलतान अय्यूबी के अपने हाथों तैयार किए हुए छापा मार भी थे। उन्हें ऐसी ट्रेनिंग दी गईथी कि इन्तहाई दुशवार टीलों और दरख़तों पर हैरान कुन रफ़तार से चढ़ते और उतरते थे। चंद गज़ फैली हुई आग से गुज़र जाना उन का मामूल था। उन छापा मार जांबाज़ों को उस वक़्त खंडर की तरफ़ रवाना किया गया जब लोग अंदर जा रहे थे। वहां तक उन्हें शारजा लेगई थी। अली बिन सुफ़यान उन के साथ था। तेज़ रफ़तार क़ासिद भी साथ थे ताकि पैग़ाम रसानी में ताख़ीर न हो। खंडर के दरवाज़े के बाहर दो आदमी खड़े अंदर

जाने वालों को तीन तीन खजूरें खिला रहे थे। दरवाज़े के अंदर घुप अंधेरा था। उस अंधेरे से लोग गुज़र कर अंदर रौशन कमरे में जाते थे। बाहर सिर्फ़ एक मशअल जल रही थी जिस की रौशनी मामूली सी थी।

छे आदमी जिन के सर चादरों में ढके हुए थे, ज़ाएरीन के साथ दरवाज़े तक गए और हुजूम से हट कर खजूरें खिलाने वालों के पीछे जाखड़े हुए। उन्हें कहा गया कि वह सामने से गुज़रें लेकिन वह सुन होके रह गए क्योंकि उन की पीठों में खंजरों की नोकें रख दी गई थीं। यह छः आदमी छापा मार थे। उन्हों ने एक एक आदमी के पीछे होकर खंजर उन की पीठों से लगाकर आहिस्ता से कान में कहा था "ज़िंदा रहना चाहते हो तो यहां से बाहर चले जाओ। तुम सब फ़ौज के घेरे में हो" खजूरें खिलाने और पानी पिलाने वाले आदमी ज़रा सी भी मुजाहमत के बग़ैर बाहर निकल गए। छापा मारों ने खंजर इस तरह चुग्गें में छुपा लिए कि लोगों में से कोई देख न सके। यह चार आदमी ज्योंही बाहर को आए वहां दस बारह छापा मार दिहातियों के लिबास में खड़े थे। उनहों ने उन चारों को घेर लिया और ढ़केलते हुए दूर लेगए। वहां उन्हें रस्सियों से बांध दिया गया। छः छापा मार जो खजूरों और पानी के मश्कीज़ों के पास रह गए थे, उन्हों ने अंदर जाने वाले लोगों से कहना शुरू कर दिया कि खजूरों और पानी के बग़ैर अंदर जाओ, क्यों कि अंदर से नया हुकम अया है। सीधे सादे दिहाती अंदर जाते रहे।

उन के साथ अब छापा मार भी अंदर जारहे थे और मशअलें भी अंदर जारही थीं। लोग हैरान थे कि मशअलें क्यों लेजाई जारही हैं? कमो बेश पचास मशअलें और दोसौ छापा मार अंदर चले गऐ। वह रौशन कमरे में न गऐ बल्कि उन तारीक रास्तों और गुलाम गर्दिशें में चले गए जिन में बाहर के लोग नहीं जासकते थे। उन में से बाज़ के पास खंजर और खंजर नुमा तलवारें थीं। और बाज़ के पास छोटी तीर कमानें। उस दरवाज़े से भी जिस से लोग बाहर निकलते थे, छापा मार दाख़िल होगए। वह हिदायत के मुताबिक़ तारीक भूल भुलैयों में जारहे थे। तक़ीउद्दीन के दोसौ घोड़ सवार आगे गए और उन्हों ने पूरे खंडर को घेरे में लेलिया। उन के साथ प्यादा दस्ता भी था जिस के सिपाहियों ने अंदर से निकलने वालों को रोक कर एक तरफ़ इकटा करना शुरू कर दिया। छापा मार मश्अल बरदारों के साथ अंदर गए तो उन्हें ऐसे महसूस होने लगा जैसे किसी के पेट में चले गए हों। अंदर के रास्ते और कमरे अंतड़ियों के मानिंद थे। यह रास्ते उन्हें एक एसे तिलिस्म में लेगए, जिसे देख कर छापा मार बिदक कर रुक गए। यह एक बहुत कुशादा कमरा था जिस की छत ऊंची थी। अंदर बहुत से मर्द और औरतें थीं। उन में कुछ ऐसे थे जिन के चेहरे भेड़यों की तरह थे। बाज़ थे तो इंसान लेकिन वह इस क़दर बद सूरत और भयानक चेहरों वाले थे कि देख कर डर आता था। वह जिन और भूत लगते थे और उन के दरमियान खूबसूरत और जवान लड़कियां भड़कीले और चमकीले कपड़े पहने हंस खेल रही थीं। एक तरफ़ दीवार के साथ चंद एक खूबसूरत लड़कियां खूबरू मर्दों के साथ मटक मटक कर चल रही थीं। उधर छत से फ़र्श तक पर्दे लटके हुए थे जो दाएं बाएं हटते, खुलते और बंद होते थे। दूसरी तरफ़ आंखों को ख़ीरह कर देने वाली रौशनी चमकती और बुझती थी।

अगर छापा मारों को यह यकीन न दिलाया गया होता कि खंडर के अंदर जो कोई भी है और जिस हुलये में भी है वह इंसान होगा और अंदर कोई बदरूह, रूह या भूत परेत नहीं, तो छापा मार वहां से भाग जाते। वहां जो खूबसूरत लड़कियां और खूबरू मर्द थे वह भी डरावने लगते थे। उस अजीब व ग़रीब मखलूक़ ने जब मश्अल बर्दार छापा मारों को देखा तो उन्हें डराने के लिए डरावनीआवाज़ें निकालने लगे। जो आदमी बदसूरत, चुड़ैलों और भेड़ियों के चहरे वाले थे उन की आवाज़ें ज़्यादा खौफ़नाक थीं। इस दौरना एक दो आदमियों ने शायद डर कर अपने चेहरे बेनक़ाब कर दिए। यह भेड़यों के चेहरे थे जो उन्हों ने उतारे तो अंदर से इंसानों के चेहरे निकले। छापा मारों ने सब को घेर कर पकड़ लिया और सब के नक़ाब उतार दिए। वहां शराब भी पड़ी थी। उन सब को बाहर लेगए। खंडर के दूसरें हिस्सों की तलाशी में एक आदमी पकड़ा गया जो एक तंग सी सुरंग के मुंह में मुंह डाले भारीआवाज़ में कह रहा था "गुनाहों से तौबा करो, हज़रत ईसा आने वाले हैं।" और एसे कई अलफाज़ थे जो वह बोल रहा था। यह सुरंग घूम फिर कर उस रौशन कमरे में जाती थी, जहां ज़ाएरीन को यह पुर असरार, डरावनी और खुंबसूरत मखलूक़ दिखा कर हैरत ज़दा किया जाता था। उस आदमी को वहां से हटा कर छापा मारों के एक कमांडर ने सुरंग में मुह डाल कर कहा कि "ऐ गुमराह लोगो! आज रात घरों को ना जाना, कल सुबह तुम पर वह राज़ फाश होजाए गा जिस के लिए तुम बेताब हो।"

खंडरात के अंदर किसी ने भी मुज़ाहमत न की। खंजरों और तलवारों के आगे सब अपने आप को गिरिफतारी के लिए पेश करते चले गए। छापा मार उन आदमियों की निशान देही पर जिन्हें गिरिफतार कर लिया गया था। उन जगहों तक पहुंचे जहां बिजली की तरह चमकने वाली रौशनियों का इन्तज़ाम था। ढकी छुपी जगहों में मशअलें जल रही थीं। उन के पीछे लकड़ी के तख्ते थे जिन पर अबरक़ चिपकाया हुआ था। इन तख्तों के जाविए बदलते थे तो अबरक़ की चमक लोगोंकी आंखों में पड़ती और चुंधया देती थी। कमरा तारीक करने के लिए मशअलों को पीछे कर लिया जाता था। बादल गरजने की आवाज़ें धात के चादरों को झटके देकर पैदा की जाती थी। पर्दों पर जगह जगह अबरक़ के टुकड़े चिपका दिए गए थे जिन पर रौशनी पड़ती तो सितारों की तरह चमकते थे। इस तरफ़ पर्दों का रंग ऐसा था कि कोई कह नहीं सकता था कि यह कपड़ा है। वह उसे फटी हुई दीवार समझते थे। अक़्ल और होश वाले इन्सान के लिए यह कोई मोअम्मा नहीं था। बेशक यह रौशनियों के खास इंतज़ाम का जादू था जो लोगों को मसहूर कर लेता था। लेकिन अंदर जो जाता था, उस की अक़्ल और होश पर उस का कोई इख़्तयार नहीं होता था। उन्हें अंदर जाते वक़्त दरवाज़े पर जो तीन खजूरें खिलाइ जातीं और पानी पिलाया जाता था उन में नशा आवर आमेज़िश होती थी। उस का असर फ़ौरन होजाता था। उस असर के तेहत ज़ाएरीन के ज़ेहनों पर जो भी तसव्वुर बैठाया जाता और कानों में जो भी आवाज़ें डाली जातीं वह उसे सौ फीसद सही और बरहक़ समझ लेते थे। उसी नशे का असर था कि लोग बाहर जाकर दोबारा अंदर आने की ख्वाहिश करते थे। उन्हें मालूम नहीं था कि यह उस अक़ीदे का तअस्सुर नहीं बल्कि उस नशे का असर है जो उन्हें खजूरों और पानी में दिया जाता है।

खजूरों के अमबार और पानी के मशकीज़ो पर भी कबज़ा कर लिया गया था। अंदर पकड़

धकड़ और तलाशी का सिलसिला जारी था। बाहर दोसौ सिपाहियों ने खंडरों का मुहासरा कर रखा था। हर तरफ़ मशअलों की रौशनी थी। फ़ौज का बड़ा हिस्सा और दो सरहदी दस्ते सूडान की सरहद के साथ साथ घूम फिर रहे थे..... रात गुज़र गई। सूडान की तरफ़ से कोई हमला न हुआ। खंडरात में भी कोई मुज़ाहमत न हुई। सुबह के उजाले ने इस इलाक़े को रौशन किया तो वहां हरासां देहातियों का हुजूम था। कुछ लोग इधर उधर सोगए थे। घोड़ सवारों ने घेरा डाल रखा था।

❖

कुछ देर बाद तमाम लोगों को एक जगह जमा करके बिठा दिया गया। उन की तादाद तीन और चार हज़ार के दरमियान थी। एक तरफ़ से एक जलूस आया जिसे फ़ौजी हांक कर ला रहे थे। उस जलूस में भेड़ियों और चुड़ैलों के चेहरों वाले इंसान थे। उस में मकरूह और बड़ी भयानक शकलों वाले इंसान भी थे और उस जलूस में वह तमाम मखलूक़ थी जो लोगों को खंडर के अंदर दिखाई जाती थी और बताया जाता था कि यह आसमान के है जहां यह लोग मरने के बाद गुनाहों की सज़ा भुगत रहे हैं। उन का सब से बड़ा गुनाह यह बताया जाता था कि यह जंग व जदल के आदी थे। यानी यह फ़ौजी थे। उस जलूस से अलग दस बारह लड़कियों को भी लोगों के सामने लाया गया। यह बहुत ही खूबसूरत लड़कियां थीं। उन के साथ खूबरू मर्द थे। उन दोनों जुलूसों को लोगों के हुजूम के सामने एक ऊंची जगह पर खड़ा कर दिया गया और उन्हें कहा गया कि लोगों को अपने चेहरे दिखाओ। सब ने भेड़यों और चुड़ैलों के मसनूई चेहरे उतार दिए। उन के अंदर से अछे भले इंसानी चेहरे निकल आए। जो आदमी मकरूह और भयानक चेहरों वाले थे वह भी मसनूई चेहरे थे। यह चेहरे भी उतार दिए गए।

लोगों से कहा गया कि वह उन आदमियों और उन लड़कियों के क़रीब से गुज़रते जाएं और उन्हें पहचानें। लोग तो इसी पर हैरान हो गए कि यह आसमान की मखलूक नहीं इसी ज़मीन के इंसान हैं। लोगों ने क़रीब से देखा तो उन आदमियों में से बहुत से पहचाने गए। वह इसी इलाक़े के बाशिंदे थे। लड़कियां भी पहचान ली गई। उनमें ज़्यादा तर उसी इलाक़ की रहने वाली थीं, और तीन चार यहूदी थीं जिन्हें सलीबी इसी मकसद के लिए लाए थे। लोग उन्हें देख चुके तो उन मुजरिमों को सामने लाया गया जिन्हों ने यह तिलिस्माती एहतमाम कर रखा था। उन में छः सलीबी थे जो मिश्र के उस इलाक़े की ज़ुबान बोलते थे और समझते थे। उन्हों ने बहुत से आदमी उस इलाक़े से अपने साथ मिला लिए थे। रात की गिरिफ़तारी के बाद उन से एतराफ़ करा लिया गया था कि उन्हों ने तीन चार मस्जिदों में अपने इमाम रख दिए थे जो लोगों को मज़हब के पर्दे में ग़ैर इस्लामी नज़रयात के मोतक़िद बना रहे थे। इस गिरोह का मक़सद यह था कि लोगों को क़ाइल किया जाए कि फ़ौज में भरती न हूं क्योंकि यह बहुत बड़ा गुनाह है। यह गिरोह इस मकसद में कामयाब होचुका था। उन तखरीब कारों ने यह कामयाबी भी हासिल कर ली थी कि इस इलाक़े के लोगों में सूडानियों की मोहब्बत पैदा कर दी थी और उन का मज़हब तबदील किए बग़ैर उन्हें बेमज़हब कर दिया था।

लोगों से कहा गया कि अब वह खंडरों के अंदर जाकर घूमें फिरें और इस फ़रेब कारी का सबूत

अपनी आंखों देखें। लोग अंदर चले गए जहां जगह जगह फ़ौजी खड़े थे और लोगों को दिखा रहे थे कि उन्हें कैसे कैसे तरीक़ों से धोका दिया जाता रहा है। बहुत देर बाद जब तमाम लोग अंदर से घूम फिर आए तो तक़ीउद्दीन ने उन से ख़िताब किया और उन्हें बताया कि खजूरों और पानी में उन्हें नशा दिया जाता रहा है। अंदर जो जन्नत और जहन्नम था वह उस नशेके ज़ेरे एहतमाम आता था। मैं उन मुजरिमों से कहता हूं कि अंदर चल कर मुझे आसमान की चलती फिरती मखलूक दिखाएं कि हज़रत मूसा कहां और मरा हुआ ख़लीफ़ा अलआज़िद कहां है। यह सब फ़रेब था। यह वह नशा है जो हशीशीन का पीर उस्ताद हसन बिन सब्बाह लोगों को पिला कर उन्हें जन्नत दिखाया करता था। वह तो एक वक़्त में चंद एक आदमियों को नशा पिलाता था मगर यहां इस्लाम के इन दुशमनों ने इतने वसीअ इलाके की पूरी आबादी पर नशा तारी कर दिया है।

तकिउद्दीन ने लोगों को असलियत दिखाकर उन्हें बताया कि इब्तदा में एक दुर्वेश की कहानी सुनाई गई थी जो मुसाफ़िरों को ऊंट और अशर्फ़ियां दिया करता है। यह महज बे बुनियाद कहानियां थीं और बे सर व पैर की झूटी कहानियां सुनाने वालों को तुम्हारे दीन व ईमान के दुश्मन बे दरेग मालो दौलत देते थे। तकिउद्दीन ने इस फ़रेबकारी के तमाम पहलू बे नकाब किए और जब उसने मुजरिमों की असलियत को बेनकाब किया तो लोग जोश में आकर उठ खड़े हुए और उन्होंने मुजरिमों पर हल्ला बोल दिया। उस वक़्त तक लोगों का वह नशा उतर चुका था जो रात को उन्हें खजूरों और पानी में दिया गया था। फ़ौज ने हुजूम पर काबू पाने की बहुत कोशिश की लेकिन उन्होंने तमाम मुजरिमों और लड़कियों को जान से मारकर छोड़ा।

तकिउद्दीन ने फ़ौज को इसी इलाके में फैला दिया और फ़ौज की निगरानी में वहां एक तो तख़रीबकारों के एजेंटों को गिरफ़तार किया और दुसरे ये कि मस्जिदों में काहिरा के आलिम मोतऐअन कर दिये जिन्हों ने लोगों की मजहबी और असकरी तालीम व तरबियत शुरू कर दी। फ़िरऔनों के खंडरात को लोगों के हाथों मिस्मार करा दिया गया।

तकिउद्दीन ने क़ाहिरा जाकर पहला काम यह किया कि जर्राह और शारजा की ख़्वाहिश के मुताबिक उन्हें शादी की इजाजत देदी और दूसरा काम ये किया कि उसने फ़ौज की मरकजी कमान को हुक्म दिया कि सुडान पर हमले की तैयारी की जाए। उसने खंडरों की मुहिम में देख लिया था कि पड़ोसी सूडानियों ने मिस्र के इतने वसीअ इलाके को अपने असर में ले लिया था और ये असर शदीद जवाबी कार्रवाई के बगैर ख़त्म नहीं होगा। उस पर ये इनकिशाफ भी हुआ था कि सूडानी सलीबियों के आलए कार बने हुए हैं और वह बाकायदा हमले की तैयारी भी कर रहे हैं। लिहाजा जरूरी समझा गया कि सूडान पर हमला किया जाए।

इससे अगर सूडान का कुछ इलाका कब्जे में आए या न आए इतना फायदा जरूर होगा कि दुशमन की तैयारियां दरहम बरहम हो जायेंगी और इनका मंसूबा लम्बे अर्से के लिए तबाह हो जाएगा। तकिउद्दीन को सुल्तान अयूबी की पुश्त पनाही हासिल थी।

❖❖

रैनी एलेक्जेन्डर का आखरी मअरका

मिस्र के कायम मुकाम अमीर तकिउद्दीन ने सलीबियों की नजरयाती यलगार को बर वक़्त फ़ौजी कार्रवाई से रोक दिया और उस खुफिया और पुरअसरार अड्डे को ही मिस्मार कर दिया जहां से ये फितना उठा था मगर वह मुतमइन नहीं था क्योंकि वह जान चुका था कि ये इस्लाम कुश जहर कौम की रगों में उतर गया है। इस सलीबी तख़रीबकारी को सूडान से पुश्त पनाही मिल रही थी और सूडानियों को सलीबियों की पुश्त पनाही हासिल थी। तकीउद्दीन ने इस अड्डे को भी तबाह करने के लिए सूडान पर हमले की तैयारियां तेज कर दीं। सुल्तान अययूबी ने वहां भी जासूस भेज रखे थे जिनकी जां बाजाना कोशिशों से वहां के बड़े नाजुक राज मिल रहे थे मगर इन राजों से जो फायदा सुल्तान अययूबी उठा सकता था वहह उसके भाई तकीउद्दीन के बस की बात नहीं थी। दोनों भाईयों का जज़्बा तो एक जैसा था लेकिन दोनों की ज़िहानत में बहुत फर्क था। दोनों भाई जिस कार्रवाई का फ़ैसला करते थे वह शदीद होती थी। फर्क ये था कि सुल्तान अययूबी मुहतात रहता था और तकीउद्दीन बेसब्र होकर एहतियात का दामन छोड़ देता था। उसे जब फौजी मुशीरों ने कहा कि सूडान पर हमले का फ़ैसला दानिशमंदाना है लेकिन मोहतरम अययूबी से मशवरा ले लेना जरूरी है तो तकीउद्दीन ने अपने मुशीरों के इस मशवरे को मुसतरद करते हुए कहा "क्या आप लोग अमीरे मोहतरम को यक तआस्सुर देना चाहते हैं कि आप उन के बगैर कुछ सोंच नहीं सकते और कुछ कर नहीं सकते ? क्या आप भुल गए हैं मिस्र से इतनी दूर मोहतरम अययूबी किस तूफान में घिरे हुए हैं? अगर हमने उनके मशवरे और फैसले का इंतजार किया तो इसका नतीजा ये होगा कि सूडानी हमले में पहल करके हम पर सवार हो जायेंगे।"

"आप अभी हमले का हुक्म दें।" एक नायब सालार ने कहा "फ़ौज इसी हालत में रसद के बगैर कूच कर जाएगी लेकिन इतनी बड़ी और इतनी अहम मुहिम के लिए गहरी सोंच विचार की जरूरत है। हम कूच की तैयारी के तमामतर इंतजामात बहुत थोड़े वक़्त में कर लेंगे। आप मोहतरम अययूबी को इत्तला जरूर देदें ताकि वह और मोहतरम नूरुद्दीन जंगी इधर भी ध्यान रखें।"

तकीउद्दीन नहीं माना। उसने कहा " आप मिस्र में एक एक गद्दार और एक एक तख़रीबकार को पकड़ते और उसे ख़त्मा करते हैं। मैं उस मुंबये को बन्द करना चाहता हूं जहां से तख़रीबकारी और गद्दारी पैदा हो रही है।इस काम के लिए मुझे किसी और हुक्म और मशवरे की जरूरत नहीं।"

तकीउद्दीन चंद ऐसे अनासिर और क़वाइफ को नजरअंदाज कर रहा था जो उसके हमले

को नाकाम कर सकते थे। एक ये कि सलीबियों और सूडानियों के जासूस मिस्र में मौजूद थे जो यहां की फ़ौजों की नक़्लो हरकत देख रहे थे। तक़ीउद्दीन की कमज़ोरी यह भी थी कि उसके दुशमन के जासूस मुसलमान भी थे जो इंतजामिया और फ़ौज में ऊंचे ओहदों पर फाएज़ थे।इसके मुकाबले में तक़ीउद्दीन के जासूस सूडानियों के पालिसीसाज़ों और हुक्काम तक नहीं पहुंच सकते थे। दूसरे ये कि सुल्तान अययूबी ने 1169 में मिस्र की जिस सूडानी फ़ौज को बग़ावत के जुर्म में तोड़ दिया था उसके कई एक कमान्डर और ओहदेदार सूडान में थे। वह सुल्तान अययूबी की जंगी चालों से वाकिफ थे। उन्होंने इन्हीं चालों के मुताबिक अपनी फ़ौज की तरबियत की थी। सलीबियों ने उन्हें निहायत अच्छा असलहा और जरूरत से ज्यादा जंगी सामान दे रखा था। ये घर के भेदी थे। तक़ीउद्दीन ने ये भी न सोंचा कि वह सूडान के जिस इलाके में पेशकदमी करने जा रहा है वह एक वसीअ सेहरा है जहां पानी खतरनाक हद तक कम है और वह मकाम जहां हमला करना है इतना दूर है जहां तक रसद को खतरे में डाले बग़ैर रवां रखना मुमकिन नहीं होगा। मिस्र के अन्दरूनी हालात को क़ाबू में रखने और तख़रीबकारी के इन्सेदाद के लिए भी फ़ौज दरकार थी मगर तक़ीउद्दीन इस कदर भड़का हुआ थाकि उसने मुकम्मल तौर पर नेकनीयती और इस्लामी जज़्बे की शिद्दत के ज़ेरे असर हमले की तैयारियां शुरू करदीं और सुल्तान अययूबी को इत्तला न देने का फ़ैसला कर लिया।

उसकी इस खुदमुख़्तारी में वही जज़्बा था जो सुल्तान अय्यूबी में था। उसे एहसास था कि सुल्तान अय्यूबी का मुकाबला तुंद और तेज़ तूफ़ान से है और सलीबी फ़ैसलाकुन जंग लड़ने का एहतमाम किए हुए हैं। उस ने जो कुछ सोंचा था दुरुस्त था। उस वक़्त सुलतान अय्यूबी कर्क से आठ नौ मील दूर एक चटानी इलाके में अपना हेडक्वार्टर क़ाएम किए हुए था। यह उस का आरज़ी क़याम था। वह अपने हेड क्वार्टर को खाना बदोश रखता था। जिस मुकाम पर उसे हमला कराना या शबखून मरवाना होता, वह उस के क़रीब रहता और हमला करने वाले दस्ते के कमांडर को बता दिया करता था कि वह उन की वापसी के वक़्त कहां होगा। उस के छापा मार (कमांडू जांबाज़) सलीबी फ़ौज की तमाम तर कुमक तबाह कर चुके थे। छापा मारों के छोटे छोटे गिरोह उस सलीबी फ़ौज के लिए नागहानी मुसीबत बने हुए थे जो सेहरा में फैली हुई थी। सलीबियों का नुकसान तो बहुत होरहा था लेकिन छापा मारों की शहादत ग़ैर मामूली तौर पर ज़्यादा थी। दस जांबाज़ जाते तो तीन चार वापस आते थे। यह रिपार्टें भी मिलने लगी थीं कि सलीबियों ने एसे इन्तज़ामात कर लिए हैं जो शबखून और छापे को कामयाब नहीं होने देते। लेहाज़ा अब छापा मारों को जान की बाज़ी लगानी पड़ती थी। सुलतान अय्यूबी अब अपनी चालें और फ़ौजों का फैलाव बदलने की सोंच रहा था।

"मालूम होता है सलीबी मुझे आमने सामने आने पर मजबूर कर रहे हैं।"सुलतान अय्यूबी ने अपने फ़ौजी नाएबीन से कहा— "मैं उन्हें कामयाब नहीं होने दूंगा और मैं अब अपने इतने ज़्यादा जवान मरवाने से भी गुरेज़ करूंगा।"

"मैं छापा मार दस्तों की नफरी में इज़ाफा करने का मशवरा दूंगा।" एक नायब ने कहा—

"और मैं यह भी मश्वरा दूंगा कि हमें दुश्मन की कूवत को सिर्फ इस लिए नज़र अंदाज़ नहीं करना चाहिए कि हमारी फौज में जज़बा ज़्यादा है। जज़बा सिपाही को बेजिगरी से लड़वाकर मरवासकता है, फतेह का जामिन नहीं होसकता। सलीबियों के मुकाबले में हमारी नफरी बहुत कम है। हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि सलीबी फौज का बेश्तर हिस्सा ज़िरह पोश है।"

सुलतान अय्यूबी मुसकुराया और बोला– "लोहा जो उन्हों ने पहन रखा है, वह उन्हें नहीं हमें फायदा देगा। क्या आप ने देखा नहीं कि सलीबी कूच करते हैं तो रात को करते हैं या सुबह के वक़्त? इस की वजह यह है कि वह धूप से बचने की कोशिश करते हैं। सूरज ऊपर उठता है तो उस की तमाज़त ज़िरह बक्तर को अंगारों की तरह गरम कर देती है। ज़िरह पोश सिपाही और सवार लोहे के ख़ोद और आहनी सीना पोश उतार फेंकना चाहते हैं। इस के इलावह लोहे का वज़न उन की हरकत की तेज़ी ख़त्म करदेता है। मैं उन्हें दोपहर के वक़्त लड़ाऊं गा जब उन के सरों पर रखा हुआ लोहा उन का पसीना निकाल कर उन की आंखों में डालेगा और वह अंधे होजाऐं गे। आप नफरी की कमी को मफ्ताहर्रिक तरीकाए जंग से और जज़बे से पूरा करें।"

इतने में सुलतान अय्यूबी के एंटलीजेंस के सरबराह अली बिन सुफयान का एक नायब ज़ाहदान आगया। उस के साथ दो आदमी थे। सुलतान अय्यूबी की आंखें चमक उठीं। उन दोनों आदमियों को उस ने बिठाया और पूछा– "क्या ख़बर है" दोनो नें अपने अपने गिरेबान के अंदर हाथ डाले और लकड़ी की बनी हुई वह सलीबें बाहर निकालीं जो उन की गरदनों से बंधी हुई थीं। वह सलीबी नहीं मुसलमान थे। अपने आप को सलीबी ज़ाहिर करने के लिए वह सलीबें गले में लटका लेते थे। दोनों ने सलीबें उतार कर नीचे फेंक दीं। उन में से एक ने अपनी रिपार्ट पेश की।

❖

यह दोनों जासूस थे जो कर्क से वापस आए थे। पहले भी ज़िक्र आचुका है कि कर्क फिलिस्तीन का एक किला बंद शहर था जिस पर सलीबियों का कबज़ा था। सलीबी शूबक नाम का एक किला सुलतान अय्यूबी के हाथ हार चुके थे। वह कर्क किसी कीमत पर देना नहीं चाहते थे। उस के बाद उन्हों ने देफाई इन्तज़ामात बड़े ही सख़्त कर दिए थे जिन में एक बंदोबस्त यह था कि वह किला बंद होकर नहीं लड़ना चाहते थे। शूबक से जब ईसाई और यहूदी बाशिंदे मुसलमानों के डर से कर्क भाग रहे थे उस वक़्त सुलतान अय्यूबी ने अपनी फौज और इंतेज़ामिया को यह हुकम दिया था कि भागने वाले ग़ैर मुस्लिमों को रोकें और उन्हें वापस लाकर उन के साथ अछा सलूक करें लेकिन सुलतान अय्यूबी ने एक खुफया हुकम यह भी दिया था कि ज़्यादा तर बाशिंदों को जाने दें। इस हुकम में राज़ यह था कि ग़ैर मुस्लिम बाशिंदों में सुलतान अय्यूबी के जासूस भी जारहे थे। अपने जासूस दुश्मन के इस शहर में और मुज़ाफात में जिस पर थोड़े अर्से बाद हमला करना था भेजने का यह मौका निहायत अछा था। मुसलमान जासूस ईसाई और यहूदी पनाह गुज़ीनों के भेस में कर्क चले गए थे। वहां के

मुसलमान बाशिंदों को साथ मिला कर उन्हों ने खुफ़िया अड्डे बना लिए थे। वह वहां से इत्तलाआत भेजते रहते थे। सुलतान अय्यूबी ज़ाती तौर पर उन की रिपोर्टें सुना करता था।

उस रोज़ दो जासूस आए तो सुलतान अय्यूबी ने उन्हें फ़ौरन अपने ख़ीमे में बुला लिया और बाक़ी सब को बाहर निकाल दिया। जासूसों की रिपोर्ट में सलीबियों की फ़ौज की नक़ल व हरकत और तरतीब के मुतअल्लिक़ इत्तलाआत थीं। सुलतान अय्यूबी उन के मुताबिक़ नक़शा बनाता रहा। उस दौरान उस के चेहरे पर कोई तबदीली नहीं आयी। जासूसों ने जब कर्क के मुसलमान बाशिंदों की बेबसी और मज़लूमियत की तफ़सील सुनाई तो सुलतान के चेहरे पर नुमायां तबदीली आगई। एक बार तो वह जोश में आकर उठ खड़ा हुआ और ख़ेमे में टहलने लगा। जासूसों ने उसे बताया कि शूबक से सलीबी शिकस्त खाकर कर्क पहुंचे तो उनहों ने मुसलमानों का जीना हराम कर दिया। सुलतान अय्यूबी को बहुत से हालात का तो पहले से इल्म था। उन दोजासूसों ने उसे बताया कि अब वहां बाज़ार में जिन मुसलमानों की दूकानें हैं वह बहुत परेशान हैं। ग़ैर मुस्लिम तो उन की दुकानों पर जाते ही नहीं, मुसलमानों को भी डरा धमका कर उन की दुकानों से दूर रखा जाता है। वहां मुसलमानों के ख़िलाफ़ नफ़रत की बाक़ाएदा मुहिम शुरू की गई है। ईसाई और यहूदी मस्जिदों के सामने ऊंट, घोड़े और दीगर मवेशी बांध देते हैं। अज़ान और नमाज़ पर कोई पाबंदी नहीं लेकिन जब अज़ान होती है तो ग़ैर मुस्लिम शोर मचाते, नाचते और मज़ाक़ उड़ाते हैं।

जासूसों ने बताया कि मुसलमानों का क़ौमी जज़बा ख़तम करने के लिए वहां इस किस्म की अफ़वाहें ज़ोर व शोर से फैलाई जारही है कि सलाहुद्दीन अय्यूबी इतना शदीद ज़ख़्मी होकर दमिश्क़ चला गया है कि अब तक मर चुका होगा और यह भी कि सुलतान अय्यूबी की फ़ौज कमान की कमज़ोरी की वजह से सेहरा में बिखर गई है और सिपाही मिश्र की तरफ़ भाग रहे हैं और यह भी कि मुसलमान अब कर्क पर हमला करने के क़ाबिल नहीं रहे और बहुत जलदी शूबक भी सलीबियों को वापस मिलने वाला है और यह भी कि सूडानी फ़ौज ने मिश्र पर हमला करदिया है और मिश्र की फ़ौज सूडानियों के साथ मिल गई है। जासूसों ने बताया कि अब अलस्सुबह पादरी, मुसलमान मोहल्लों में घूमते फिरते और मुसलमान घर के दरवाज़े पर घंटियां बजाते, अपने मज़हबी गीत गाते और मुसलमानों को दुआऐं देते हैं। वह अपने मज़हब का और कोई प्रचार नहीं करते। यह प्रचार वहां की ईसाई और यहूदी लड़कियां करती हैं, जो मुसलमान नौजवानों को झूटी मोहब्बत का झांसा देकर उन के ज़ेहन तबाह कर रही हैं। यह लड़कियां मुसलमान लड़कियों की सहेलियां बन कर उन्हें अपनी आज़ादी की बड़ी ही दिलकश तसवीर दिखाती हैं और उन्हें बताती हैं कि मुसलमान फ़ौज जो इलाक़ा फ़तह करती है वहां मुसलमान लड़कियों को भी ख़राब करती है।

इन रिपोर्टों में सुलतान अय्यूबी के लिए कोई नई बात नहीं थी। इब्तदा में उस के जासूसों ने उसे कर्क के मुसलमानों की हालते ज़ार बता चुके थे। वहां के मुसलमानों का यह हाल था कि वह सुलतान अय्यूबी और उस की फ़ौज के ख़िलाफ़ कोई हौसला शिकन अफ़वाह नहीं सुनना चाहते थे लेकिन वहां जो भी बात उन के कानों में पड़ती थी हौसला शिकन होती थी।

वह डर से बात नहीं करते थे। उन के घरों की दीवारों के भी कान थे। वह इकट्ठे बैठने से भी डरते थे। जनाज़े और बारात के साथ भी जासूस होते थे और मस्जिदों में भी जासूस होते थे। उन की बद नसीबी तो यह थी कि जासूसी उन के अपने मुसलमान भाई करते थे। वह अपने घरों में भी सरगोशियों में बातें करते थे। किसी मुसलमान के ख़िलाफ़ सिर्फ़ यह कह देना कि वह सलीबी हुकूमत के ख़िलाफ़ है उसे बेगार कैम्प में भेजने के लिए काफी होता था।

"लेकिन सालारे आज़म!" एक जासूस ने कहा– "अब वहां एक और चाल चली जारही है। वह यह है कि मुसलमानों के साथ अछा सुलूक होने लगा है। सलीबी हुकूमत ने उस की एक मिसाल यह पेश की है कि एक ईसाई हाकिम ने एक मस्जिद को बोसीदा हालत में देखा तो उस की मरम्मत का हुकम दिया और अपनी निगरानी में मरम्मत करादी। उन्हों ने बेगार कैम्प के मुसलमानों को रेहा तो नहीं किया उन्हें कुछ सुहूलतें देदी हैं। रोज़ मर्रह मुशक्कत का वक़्त भी कम कर दिया है लेकिन उन के कानों में यही डाला जा रहा है कि तुम ने सलीब के ख़िलाफ़ बहुत बड़ा जुर्म किया है फिर भी तुम पर रहम किया जारहा है। यह प्यार और मोहब्बत का हथ्यार बड़ी ही ख़तरनाक है। इस झूटे प्यार से ग़ैर मुस्लिम मुसलमान नौजवानों को नशे और जुए का आदी बनाते जारहे हैं। अगर हम ने हमले में वक़्त जाए किया तो कर्क के मुसलमान अगर मुसलमान ही रहे तो बराए नाम मुसलमान होंगे वरना वह कुरआन से मुंह मोड़ कर गले में सलीब लटकाऐंगे। इस सूरत में वह उस वक़्त हमारी कोई मदद नहीं करेंगे जब हम कर्क का मुहासरा करेंगे। उस प्यार के साथ साथ मुसलमानों के ख़िलाफ जासूसी पहले से ज्यादा होगई है और गिरिफतारियां होती रहती हैं। अभी तक मुसलमानों का जज़बा काएम है और वह साबित कदम रहने का तहैया किए हुए हैं। उन्हों ने अभी तक ग़ैर मुस्लिमों के प्यार को कुबूल नहीं किया, मगर वह ज़्यादा देर तक साबित कदम नहीं रह सकेंगे।"

यही वह सूरते हाल थी जिस की तफ़सील सुन कर सुलतान अय्यूबी परेशान होगया था। उसे यह इत्तला बहुत तकलीफ देरही थी कि मुसलमान मुसलमान के ख़िलाफ़ जासूसी कर रहे हैं। उस के लिए परेशानी की दूसरी वजह यह थी कि मकबूज़ा इलाके में सलीबियों ने मुसलमानों के ख़िलाफ़ प्यार का हथ्यार इस्तेमाल करना शुरू कर दिया था और उस के साथ ही नौजवानों की किरदार कुशी का भी अमल शुरू होगया था। उन दोनों से ज़्यादा ख़तरनाक वह अफवाहें थीं जो वहां के मुसलमानों में इस्लामी फ़ौज के ख़िलाफ फैलाई जा रही थीं। उस ने अपने निज़ामे जासूसी के नाएब ज़ाहदान को बुलाया और पूछा– "क्या तुम ने उन की बातें सुन ली हैं?"

"एक एक लफ़्ज़ सुना और उन्हें आप के पास लाया हूं।" ज़ाहदान ने जवाब दिया।

"अली बिन सुफ़यान को काहेरा से बुला लूं?" सुलतान अय्यूबी ने पूछा– "या तुम उस की जगह पुर कर सकोगे? यह मामला नाज़ुक है। दुशमन के शहर में मुसलमानों को अफवाहों और ज़हरीले प्यार से बचाना है"

"अली बिन सुफ़यान को काहेरा से बुलाने की ज़रूरत नहीं" ज़ाहदान ने जवाब दिया– "हसन बिन अब्दुल्लाह को भी उन के साथ रहने दें। मिश्र के हालात अछे नहीं। मुल्क तख़रीब

कारों और ग़द्दारों से भरा पड़ा है। कर्क के मसअले को मैं समभाल लूंगा।"

"तुम ने क्या सोचा?" सुलतान अय्यूबी ने उस से पूछा। वह दर असल ज़ाहेदान का इम्तहान लेरहा था। वह जान्ता था कि ज़ाहेदान मुख्लिस और मेहनती सुराग रसां है और अपने शोबे के सरबराह अली बिन सुफ़यान का शागिर्द है। उस पर सुलतान को पूरा पूरा एतमाद था। फिर भी वह तसल्ली करना ज़रूरी समझता था कि यह शागिर्द अपने उस्ताद की कमी पूरी कर लेगा। उस ने ज़ाहेदान का जवाब सुने बग़ैर कहा– "ज़ाहेदान! मैं ने मैदाने जंग में शिकस्त नहीं खाई। यह खयाल रखना कि इस महाज़ पर भी शिकस्त खाना नहीं चाहता जिस पर सलीबियों ने हमला किया है। मैं कर्क के मुसलमानों को अखलाक़ी और नज़रयाती तबाही से बचाना चाहता हूं।"

"आप जानते हैं कि कर्क में हमारे जासूस मौजूद हैं" ज़ाहेदान ने कहा– "मैं उन्हें इस मक़सद के लिए इस्तेमाल करूंगा। वह वहां के मसुलमानों को आप के मुतअल्लिक़ और हमारी फ़ौज और मिश्र के मुतअल्लिक़ सही ख़बरें सुनाते रहेंगे और उन्हें आप का पैग़ाम देंगे।"

"वहां की मुसलमान औरतों में क़ौमी जज़्बे की कमी नहीं।" एक जासूस बोल पड़ा। उस ने कहा– "हम जवान लड़कियों से कहेंगे कि वह घर घर जाकर औरतों के ज़ेहन साफ़ करती रहेंगी। हमारा मुशाहेदा यह है कि वहां की लड़कियां लड़ने के लिए भी तैयार हैं।"

"औरतें अगर घर और बच्चों की तरबियत का महाज़ समभाले रखें तो उसी से इस्लाम के फरोग़ और सलतनते इस्लामिया की तौसीअ में बहुत मदद मिलेगी।" सुलतान अय्यूबी ने कहा– "उन्हें इस मक़सद के लिए इस्तेमाल करो कि मुसलमान घरानों में और बच्चों में ग़ैर इस्लामी असरात दाख़िल न होने दें। मैं इस कोशिश में मसरूफ़ हूं कि कर्क पर जलदी हमला करदूं और शूबक की तरह वहां के भी मुसलमानों को आज़ाद कराऊं।" उस ने ज़ाहेदान से पूछा– "इस मक़सद के लिए किसे कर्क भेजोगे?"

"उन्हीं दोनों को।" ज़ाहेदान ने जवाब दिया– "यह आने जाने के रासतों और तरीक़ों से वाक़िफ़ होचुके हैं और वहां के हालात और माहोल से मानूस हैं।"

यह दोनो आदमी ग़ैर मामूली तौर पर ज़हीन जासूस थे। सुलतान अय्यूबी ने उन्हें हिदायत देनी शुरू कर दीं।

❖

कर्क में मुसलमान बाशिंदों पर प्याए का जो हथ्यार चलाया जारहा था, वह सलीबियों की एंटली जेंस के डाइरक्टर, जरमन नज़ाद हरमन की इख्तरा थी। वह शूबक की शिकस्त के बाद सलीबी हुकुमरानों पर ज़ोर दे रहा था कि कर्क के मुसलमानों को प्यार का धोका देकर सलीब का वफ़ादार बनाया जाए या कम अज़ कम सलाहुद्दीन अय्यूबी के ख़िलाफ़ कर दिया जाए। सलीबी हुकुमरान मुसलमानों से इतनी ज़्यादा नफ़रत करते थे कि उन के साथ झूटा प्यार भी नहीं करना चाहते थे। वह तशद्दुद और दरिंदगी से मुसलमानों का क़ौमी जज़बा और वक़ार ख़त्म करने के क़ाइल थे। हरमन अपने फ़न का माहिर था। इंसानों की नफ़सियात

समझता था। उन ने सलीबी हुकुमरानें को बड़ी मुशकिल से अपना हम ख़याल बनाया और यह पालीसी मुरत्तब कराली कि शहर और मुज़ाफात के इस इलाके के मुसलमानों को जो सलीबी इस्तिबदाद में है, मुश्तबा और जासूस समझा जाए। जिस मुसलमान के ख़िलाफ ज़रा सी भी शहादत मिले उसे गिरिफतार करके ग़ायब करदिया जाए, लेकिन हर मुसलमान शहरी को दहशत ज़दा न किया जाए। इस पालीसी की बुनयादी रिंक यह थी कि लड़कियों के ज़रिए मुसलमान लड़कियों को बे परदा किया जाए और मुसलमान लड़कों को ज़ेहनी ऐयाशी और नशे का आदी बना दिया जाए। मुख़्तसर यह है कि उन की किरदार कुशी का इन्तज़ाम किया जाए। लेहाज़ा इस पालीसी पर अमल शुरू कर दिया गया था। इब्तदा अफवाहों से की गई थी। हरमन ने यह मंजूरी भी लेली थी कि मुसलमानों में ग़द्दारी के जरासीम पैदा करने के लिए खासी रकम खर्च की जाए। चंद एक मुसलमानों को खूबसूरत और तंदरुस्त घोड़ों की बगघयां देकर उन्हें शहज़ादा बना दिया जाए और उन्हें मुसलमानों के ख़िलाफ मुखबिरी और उन में अफवाहें फैलाने के लिए इस्तेमाल किया जाए। उन्हें शाही दरबार में वक़्तन फवक़्तन मदऊ करके उन के साथ शाहाना सुलूक किया जाए। उन की मसतूरात को भी मदऊ करके उन की इज्ज़त की जाए कि वह अपनी असलियत और अपना मज़हब ज़ेहन से उतार दें। हरमन ने कहा था– "अगर आप मुसलमान को अपना गुलाम बनाना चाहते हैं तो उस के दिमाग़ में बादशाही का कीड़ा डालदें। उसे घोड़े और बगघयां दे कर उस के दामन में चंद अशर्फियां डाल दें। फिर वह बादशाही के नशे में आप के इशारों पर नाचे गा। शराब पिए गा और अपनी बेटियों को अपने हाथों नंगा करके आप के हवाले करदेगा। अगर आप मुसलमान का मुस्तकबिल तारीक करना चाहते हैं तो यह नुस्खा आज़माऐं। मैं आप को पहले भी बता चुका हूं और अब फिर बताता हूं कि यहूदियों ने मुसलमानों की अख़लाकी तबाही के लिए अपनी लड़कियां पेश की हैं। आप जानते हैं कि मुसलमान का सब से पुराना और सब से बड़ा दुशमन यहूदी है। इस्लाम की जड़ें तबाह करने के लिए यहूदी अपनी बेटियों की इज्ज़त और अपनी पूंजी का आखरी सिक्का भी कुरबान करने को तैयार रहते हैं।"

यहूदियों में ख़तरा यह था कि वह उसी खित्ते के रहने वाले थे, इस लिए मुसलमानों की ज़ुबान बोलते थे और उन के रस्मो रवाज और घरेलू तरज़े ज़िंदगी से भी वाकिफ थे। उन की शकलें और कई दीगर कवाइफ मिलते जुलते थे। कोई यहूदी लड़की मुसलमान का लेबास पहन कर किसी मुसलमान घर में जा बैठे तो उसे बिलाशक व शुबहा मुसलामन समझ लिया जाता था। इस मोशाबेहत से यहूदी पूरा पूरा फाएदा उठा रहे थे और इस्लामी मआशरत में ग़ैर इस्लामी ज़हर दाख़िल होना शुरू होगया था।

जिस रोज़ सुलतान अय्यूबी ने दो जासूसों को हेदायत दीं और ज़ाहेदान से कहा था कि वह कर्क में जासूसों के ज़रिए मुसलमानों को सही ख़बरें पहुंचाए, इस से बीस रोज़ बाद कर्क में एक पागल और मजज़ूब अचानक कहीं से नमूदार हुआ। उस ने हाथ में लकड़ी की बनी हुई गज़ भर लमबी सलीब उठा रखी थी जिसे वह ऊपर करके चिल्लाता था– "मुसलमानों की तबाही का वक़्त करीब आगया है। शूबक में मुसलमान अपनी बेटियों की इस्मत दरी कर रहे

हैं। मिश्र में मुसलमानों ने शराब पीना शुरू कर दी है। खुदाए यसू मसीह ने कहा है कि अब यह कौम रूए ज़मीन पर ज़िंदा नहीं रह सकती। मुसलमानो! नूह के दूसरे तूफान से बचना चाहते हो तो सलीब के साए में आजाओ। अगर सलीब पसंद नहीं तो खुदाए यहूदा के आगे सजदा करो। मस्जिदों में तुम्हारे सजदे बेकार हैं।"

लेबास और शकल व सूरत से वह अच्छा भला लगता था लेकिन बातों और अंदाज़ से पगला मालूम होता था। उस की दाढ़ी भी थी। लमबा चुग़ा पहन रखा था। सर पर पगड़ी और उस पर रूमाल डाला हुआ था जो कंधों पर भी फैला हुआ था। उस के चेहरे और कपड़ों पर गर्द थी जिस से पता चलता था कि वह सफर से आया है। उस के पांव गर्द आलूद थे। उसे कोई रोकता और बात करता था तो वह रुक तो जाता था लेकिन कोई जवाब नहीं देता था। कोई बात जैसे सुनता समझता ही न था। सवाल कोई भी पूछो वह अपना एलान दोहराने लगता था– "मुसलमानों की तबाही का वक़्त करीब आगया है वग़ैरह..." किसी ने भी यह मालूम करने की कोशिश न की कि वह कौन है और कहां से आया है। ईसीाई इस लिए खुश थे कि उस ने हाथ में सलीब उठा रखी थी, और खुदाए यसू मसीह का नाम लेता था। यहूदी इस लिए खुश थे कि वह खुदाए यहूदा का नाम लेता था और दोनों की यह खुशी मुशतरक थी कि वह मुसलमानों की तबाही की खुशख़बरी सुना रहा था। सलीबी फ़ौज के चंद एक सिपाहियों ने उस की ललकार सुनी तो उन्हों ने कहक़हा लगाया। शहरी इन्तज़ामिया की फ़ौज (जो बाद में पूलिस कहलाई) ने उसे देखा तो उसे पागल कह कर नज़र अंदाज़ करदिया। मुसलमानों में इतनी जुरअत नहीं थी कि उस का मुंह बंद करते। मुसलमान उस के मुंह से अपनी तबाही का एलान सुन कर डर भी गए थे और उन्हें गुस्सा भी आया था मगर कुछ भी नहीं कर सकते थे।

यह मजज़ूब शहर की गलियों और बाज़ारों में घूम रहा था और इस एलान को दोहराता जा रहा था– "मुसलमानो! सलीब के साए में आजाओ। तुम्हारी तबाही का वक़्त आगया है। मस्जिदों में तुम्हारे सजदे बेकार हैं।" कहीं कहीं वह यह भी कहता था– "कर्क में मुसलमानों की फ़ौज नहीं आएगी। उन का सलाहुद्दीन अय्यूबी मरचुका है।" बाज़ अवक़ात वह उट पटांग और बेमाना फिक़रे बोलता था जो साबित करते थे कि वह पागल है। बच्चे उस के पीछे पीछे चले जारहे थे। बड़े उम्र के आदमी भी कुछ दूर तक उस के पीछे चलते और रुक जाते थे। वहां से चंद आदमी उस के पीछे चल पड़ते थे। मुसलमान उसे गुस्से की निगाह से भी देखते थे और अपने बच्चों को उस के पीछे जाने से रोकते थे। सिर्फ़ एक मुसलमान था जो उस पागल के पीछे पीछे जारहा था। वह पागल से दस कदम दूर था। यह एक जवां साल मुसलमान था। रास्ते में दो ईसाई नौजवानों ने उसे ताने दिए। एक ने उस से कहा– "उसमान भाई! तुम भी सलीब के साए में आजाओ।" उस ने उन्हें कहर भरी नज़रों से देखा और चुप रहा। उन ईसाईयों को मालूम नहीं था कि उसमान के पास एक खंजर है और वह उस पागल को क़त्ल करने के लिए उस के पीछे पीछे जारहा है।

उस का पूरा नाम उसमान सारिम था। उस के मां बाप जिंदा थे और उस की एक छोटी

बहन भी थी जिस का नाम अन्नूर सारिम था। उस लड़की की उम्र बाईस तेईस साल थी। उसमान उस से तीन चार साल बड़ा था। जोशीला जवान था। इस्लाम के नाम पर जान निसार करता था। सलीबी हुकूमत की नज़र में वह मुशतबह भी था क्योंकि वह मुसलमान नौजवानों को सलीबी हुकूमत के ख़िलाफ़ ज़मीन दोज़ कार रवाईयों के लिए तैयार करता रहता था। वह अभी कोई जुर्म करता पकड़ा नहीं गया था। उस ने जब उस पागल की आवज़ सुनी तो बाहर निकल आया। पागल इतनी बड़ी सलीब बुलंद किया मुसलमानों के ख़िलाफ़ बुलन्द आवाज़ में वाही तबाही बकता जारहा था। उसमान सारिम ने यह भी न देखा कि यह तो कोई पागल है। उस ने सलीब देखी और पागल के अलफ़ाज़ सुने तो उस पर दीवांगी तारी होगई। अपने घर जाकर उस ने खंजर लिया और कुरते के अंदर नाफ़ में उड़स कर पागल के पीछे पीछे चल पड़ा। वह उसे ऐसी जगह क़त्ल करना चाहता थां जहां उसे कोई पकड़ न सके। वह सलीबियों के ख़िलाफ़ मज़ीद कार रवायों के लिए ज़िंदा रहना चाहता था। वह पागल से दस बारह क़दम पीछे चलता गया और उस का एलान सुनता गया। जब दो ईसाईयों ने उसे ताने दिए और एक ने कहा उसमान तुम भी सलीब के साए में आजाओ तो उस की आंखों में खून उतर आया। उस के दिल में क़त्ल का इरादा और ज़्यादा पुख़्ता होगया।

पागल के पीछे और उस के साथ साथ लोगों और बच्चों का जलूस जमा होगया था। क़त्ल का यह मौका अच्छा नहीं था। दिन गुज़रता गया और पागल की आवाज़ धीमी पड़ती गई। उस के पीछे चलने वाले कम होते गए। सूरज ग़यब होने में अभी कुछ देर बाक़ी थी। एक मस्जिद आगइ। पागल मस्जिद के दरवाज़े में बैठ गया और उस ने सलीब ऊपर करके कहा "अब यह गिरजा है मस्जिद नहीं है।" उस वक़्त उसमान सारिम उस के क़रीब जा खड़ा हुआ। उसे अच्छी तरह एहसास था कि यह बेशक पागल है लेकिन उस के क़त्ल की सज़ा भी मौत होगी। क्यों कि उस ने सलीब उठा रखी है। और यह मुसलमानों के ख़िलाफ़ नारे लगा रहा है। उस्मान सारिम ने पागल के क़रीब होकर धीमी आवाज़ में कहा "यहां से फ़ौरन उठो और अपनी सलीब के साथ ग़ायब हो जाओ वरना सलीबी यहां से तुम्हारी लाश उठाएंगे।"

पागल ने उसे नज़र भर कर देखा। उस के सामने बहुत से बच्चे खड़े थे। उस ने उसमान सारिम की धमकी का जवाब दिए बग़ैर बच्चों को डांट कर भाग जाने को कहा। बच्चे डर कर भाग गए तो पागल मस्जिद के अंदर चला गया। उसमान सारिम के लिए यह मौका बहुत अच्छा था। उस ने कुछ सोंचे बग़ैर चौकड़ी भरी, दरवाज़े के अंदर गया और दरवाज़ा बंद कर लिया। उस ने बहुत तेज़ी से खंजर निकाला मगर वार करने लगा तो पागल ने घूम कर देखा। उसमान के खंजर का वार अपनी तरफ़ आता देखकर उस ने सलीब आगे करके वार सलीब पर लिया और कहा। "रुक जाओ जवान! अंदर चलो मैं मुसलमान हूं।"

उसमान सारिम ने दूसरा वार न किया। पागल जूते उतार कर मस्जिद के अंदरूनी कमरे में चला गया। उस ने सलीब अपने हाथ में रखी। अंदर जाकर उस ने उसमान सारिम से नाम पूछा और कहा। "मैं मुसलमान हूं। मेरी बातें ग़ौर से सुन लो। मुझे बताओं कि तुम कब से मेरे पीछे आरहे हो?"

"मैं सारा दिन तुम्हारे पीछे फिरता रहा हूं।" उस्मान सारिम ने जवाब दिया। "मगर मुझे कत्ल का मौका नहीं मिल रहा था।"

"तुम मुझे क्यों कत्ल करना चाहते हो?" पागल ने पूछा।

"क्यों कि मैं इस्लाम और सलाहुद्दीन अय्यूबी के खेलाफ कोई बात बरदाश्त नहीं कर सकता।" उसमान सारिम ने जवाब दिया। "तुम पागल हो या नहीं, मैं तुम्हें ज़िन्दा नहीं छोडूंगा।"

पागल ने उस से कई और बातें पूछीं अखिर उस ने कहा। "मुझे तुम जैसे एक जवान की ज़रूरत थी। अच्छा हुआ तुम खुद ही मेरे पीछे आगए। मेरा खयाल था कि मुझे अपने मतलब का कोई मुसलमान बड़ी मुश्किल से मिलेगा। मैं सलाहुद्दीन अय्यूबी का भेजा हुआ जासूस हूं। मैं ने यह ढोंग सलीबियों को धोका देने के लिए रचाया है। मैं ने इसी भेस में सफर किया है। मुझे तुम से कुछ बातें करनी हैं। याद रखो कि मस्जिद में कोई सलीबी आगया तो मैं फिर वही बकवास शुरू कर दूंगा जो दिन भर करता रहा हूं। तुम ग़ौर से सुनते हना जैसे तुम मुझ से मुतअस्सिर हो रहे हो। मैं बहुत तेज़ी से बोलूंगा। शाम की नमाज़ का वक़्त हो रहा है। मुसलमानों में सलीबियों के भी जासूस हैं। मैं नमाज़ियों के आने तक अपनी बात खत्म करना चाहता हूं।" उसमान सारिम ने कभी जासूस नहीं देखा था। उसे मालूम नहीं था कि यह ग़ैर मामूली तौर पर ज़हीन जासूस है। जिस ने उसे चंद सवाल पूछ कर पहचान लिया है कि यह जवान काबिले एतमाद है। जासूस ने उस से कहा "अपने जैसे चंद एक जवान इकटठे करो और कुछ मुसलमान लड़कियों को भी तैयार कर लो। तुम्हें हर एक मुसलमान घराने में यह पैग़ाम पहुंचाना है कि सलाहुद्दीन अय्यूबी ज़िंदा है और वह अपनी फ़ौजों के साथ सिर्फ़ आधे दिन की मुसाफत जितना दूर है। उसकी तमाम फ़ौज कर्क पर हमला करने के लिए न सिर्फ़ तैयार है बल्कि उस फ़ौज ने सलीबी फ़ौज की नाक में दम कर रखा है। मिश्र में हालात पुरसुकून हैं। वहां सलीबियों ने जो तख़रीब कारी की थी वह जड़ से उखाड़ दी गयी है।"

"सलाहुद्दीन अय्यूबी कब हमला करेगा?" उसमान सारिम ने पूछा "हम उस की राह देख रहे हैं। हम तुम्हें यकीन दिलाते हैं कि तुम बाहर से हमला करोगे तो हम सलीबियों पर अंदर से हमला कर देंगे। खुदा के लिए जलदी आओ।"

"तहम्मुल से काम लो जवान!" जासूस ने कहा। "पहले सलाहुद्दीन अय्यूबी का पैग़ाम सुन लो और यह हर एक नौजवान के ज़ेहन पर नक़्श करदो। अय्यूबी ने कहा है कि कर्क के मुसलमान नौजवानो से कहना कि तुम मुल्क और मज़हब के पासबान हो। मैं ने पहली जंग लड़कपन में लड़ी थी और मुहासरे में लड़ी थी। फ़ौज की कमान मेरे चचा के पास थी। उस ने मुझे कहा था कि मुहासरे में घबरा न जाना। अगर तुम इस उम्र में घबरा गए तो तुमहारी सारी उम्र घबराहट और खौफ में गुज़रे गी। अगर इस्लाम के अलमबर्दार बनना चाहते हो तो यह अलम आज ही उठालो और दुशमन की दीवारें तोड़ कर निकल जाओ। फिर घूम कर आओ और दुशमन पर झपट पड़ो। मैं घबराया नहीं तीन महीनों के मुहासरे ने हमें फाका कशी भी कराई लेकिन हम मुहासरा तौड़ कर निकल आए और हम ने जिस खुराक से पेट भरे वह

दुशमन की रसद से छीनी हुई खुराक थी। हमारे जो घोड़े मुहासरे में भूक से मर गए थे हम ने उन की कमी दुशमन के घोड़ों से पूरी की......

"सलाहुद्दीन अय्यूबी ने कहा है कि मेरी कौम के बेटों से कहना कि तुम पर दुशमन ने प्यार के हथ्यार से हमला किया है। हमेशा याद रखना कि कोई गैर मुस्लिम किसी मुसलमान का दोसत नहीं हो सकता। सलीबी मैदाने जंग में ठहर नहीं सके उन के मंसूबे खाक में मिल गए हैं, इस लिए अब वह मुसलमानों की उभरती हुई नस्ल के ज़ेहन से कौमियत और मज़हब निकालने के जतन कर रहे हैं। उन्हों ने जो हथ्यार इस्तेमाल किया है वह बड़ा ही ख़तरनाक है यह है ज़ेहनी ऐयाशी, काहिली और कोताही। तुम में यह तीनों खराबियां पैदा करने के लिए ईसाई और यहूदी एक होगए हैं। यहूदी अपनी लड़कियों के ज़रिए तुम में हैवानी जज़्बा भड़का रहे हैं और तुम्हें नशे का आदी बना रहे हैं। मैं यह नहीं कहूं गा कि हैवानी जज़्बे और नशे से तुम्हारी आकबत खराब होगी और मौत के बाद तुम जहन्नम में जाओगे। मैं यह कहना चाहता हूं कि किरदार की यह खराबियां तुम्हारे लिए इस दुन्या को ही जहन्नम बना देंगी। तुम जिसे जन्नत की लज़्ज़त समझते हो वह जहन्नम का अज़ाब है। तुम सलीबियों के गुलाम होजाओगे जो तुम्हारी बहनों को बेआबरू करते फिरेंगे, तुम्हारे कुरआन के वरक गलियों में उड़ें गे और तुम्हारी मस्जिदें अस्तबल बन जाऐं गी....

"सलाहुद्दीन अय्यूबी ने कहा है कि बावकार कौम की तरह जिंदा रहना चाहते हो तो अपनी रेवायात को न भूलो। सलीबी एक तरफ तुम पर तशद्दुद कर रहे हैं और दूसरी तरफ तुम्हें दौलत और घोड़ा गाड़ियों का लालच दे रहे हैं। मुसलमान इन ऐयाशियों का काइल नहीं होता। तुम्हारी दौलत तुम्हारा किरदार और ईमान है। यह सलीबियों की शिकस्त का सबूत है कि वह तुम्हारी तलवार से ख़ौफज़दा होकर इतने ओछे हथियारों पर उतर आए है कि अपनी बेटियों को बे हया बनाकर तुम्हें अपना गुलाम बनाने के जतन कर रहे हैं। मेरी कौम के बेटो अपने किरदार को महफूज़ रखो। अपने आप को काबू में रखो। ज़ालिम हुक्मरान दर असल कमजोर हुक्मरान होता है। वह अपने मुख़ालफीन में से किसी को जुल्मो तशद्दुद से ज़ेर करने की कोशिश करता है और किसी को दौलत का लालच दे कर। तुम जुल्मो तशद्दुद से भी ना डरो और किसी लालच में भी ना आओ। तुम कौम का मुस्तकबिल हो। हम कौम का माज़ी हैं। दुशमन तुम्हारे ज़ेहनों से तुम्हारा दरख़शां माज़ी निकाल कर इस में अपने नज़रयात और मुफादात की स्याही भरने की कोशिश कर रहा है ताकि इसलाम का मुसतकबिल तारीक हो जाए। अपनी अहमियत पहचानो। दुशमन तुम्हें सिर्फ़ इसलिए अपने ताबे करने की कोशिश कर रहा है कि यह तुम से ख़ाएफ है। अपनी नज़र आज पर नहीं कल पर रखो क्योंकि तुम्हारे दुशमन की नज़र तुम्हारे मज़हब के कल पर है। तुम ने देख लिया है कि कुफ्फार तुम्हारा क्या हाल कर रहे हैं। अगर तुम ज़ेहनी ऐयाशी में पड़ गए तो तमाम तर मिल्लते इसलामिया का यही हश्र होगा।

जासूस ने सुल्तान अय्यूबी का पैग़ाम बहुत तेज़ी से उसमान सारिम को सुना दिया और उसे अमल के तरीके बताने लगा। उसने कहा " सालारे आज़म ने ख़ास तौर पर कहा है कि

अपने ऊपर जोश और जज़बात का ग़लबा तारी न करना अक्ल पर जज़बात को ग़ालिब न आने देना। इशतआल से बचना। अपने आप पर काबू रखना। एहतियात लाज़मी है। जासूस ने उसे बताया कि वह और उसके दो साथी किसी न किसी रूप में उसे खुद ही मिलते रहेंगे और यह राब्ता कायम रहेगा। फ़ौरी तौर पर ज़रूरत यह हैकि मुसलमान अपने घरों में चोरी छिपे कमानें तीर और बरछियां बनाएँ और घरों में छुपा कर रखें। औरतों को घरों के अंदर ही ख़ंजर और बरछी मारने और वार से बचने के तरीके सिखायें। यहूदी लड़कियों की बातों पर ध्यान न दें उनके साथ ऐसी कोई बात न करें जिससे उन्हें कोई शक पैदा हो। अपने तौर पर कोई जंगी कार्रवाई न करें। पहले मुनज्ज़म होजायें फिर कयादत बनायें। हर एक फर्द का ज़रा सा भी अमल काएद की नज़र में होना चाहिए और किसी फर्द का कोई इकदाम काएद की एजाज़त के बग़ैर न हो।"

सूरज गुरूब होने लग था। मस्जिद का पेश इमाम आ गया। उसे देखते ही जासूस ने सलीब उठाई और दौड़ता हुआ बाहर निकल गया। बाहर से फिर वही एलान सुनाई देने लगा. .."मुसलमानों ! सलीब के साए में आ जाओ तुम्हारा इसलाम मर गया है।" इमाम ने उसमान सारिम को कहर भरी नज़रों से देखते हुए पूछा..."ये यहां क्या कर रहा था? और तुम ने उसे अंदर क्यों बिठा रखा था? उसे हलाक क्यों न कर दिया? क्या तुम्हारी रगों में मुसलमान बाप का खून जम गया है ? मैं इतना बूढ़ा ना होता तो यहां से उसे ज़िंदा बाहर न जाने देता।"

"मैं उसके पीछे इसी लिए आया था कि ये यहां से जिंदा न निकल सके।" उसमान सारिम ने कहा और इमाम को अपना ख़ंजर दिखाकर कहने लगा "खुदा का शुक है कि उस ने मेरा ख़ंजर सलीब पर रोक लिया था। ये आदमी पागल नहीं,इसाई और यहूदी भी नहीं। ये मुसलमान है। सल.हुद्दीन अय्यूबी का पैग़ाम लाया है।" उसने बूढ़े इमाम को सुल्तान अय्यूबी का पैग़ाम सुनाया और कहा .."मैं इस पैग़ाम पर अमल करूंगा। आज शाम से ही बिस्मिसल्लाह कर रहा हूं लेकिन हमें एक अमीर की ज़रूरत है। क्या आप मेरी कयादत करेंगे ?ये सोंच लें कि सलीबी हुकूमत को ख़बर मिल गई तो सब से पहले अमीर की गरदन उड़ाई जायेगी।"

"क्या मस्जिद में होकर मैं यह कहने की जुर्रत कर सकता हूं कि मैं कौम से अलग रहूंगा?" इमाम ने जवाब दिया। "लेकिन यह फ़ैसला कौम करेगी मैं अमीर और काएद बनने के काबिल हूं या नहीं। मैं ख़ुदा के घर में खड़ा ये अह्द करता हूं कि मेरी दानिश,मेरा माल , मेरी औलाद और मेरी जान इसलाम के तहफ्फुज और फरोग़ के लिए और सलीब को रू ब ज़वाल करने के लिए वक़्फ हो गई है। मेरे अज़ीज़ बेटे ! सलाहुद्दीन अय्यूबी के पैग़ाम का एक एक लफ्ज़ ज़ेहन में बिठा लो। उसने ठीक कहा है कि नौजवान कौम और मज़हब का मुसतकबिल होते हैं। वह उसे रौशन भी कर सकते हैं और वह आवारा होकर उसे तारीक भी कर सकते हैं। जब कोई नौजवान सलीबियों और यहूदियों की बे हयाई का दिलदादा होकर लड़कियों को बुरी नजर से देखता है तो वह यह महसूस नहीं करता कि उस की अपनी बहन भी उस जैसे नौजवानों की बुरी नजर का शिकार हो रही है। यह वह मुकाम है ,जहां कौमें तबाह होती हैं..... मेरे नौजवान बेटे! ख़ुदा के इस घर में तुम सलाहुद्दीन अय्यूबी के पैग़ाम पर

अमल करोगे।"

❖

उसमान सारिम ने घर जाकर अपनी बहन अन्नूर को अलग बिठाकर सुल्तान अय्यूबी का पैग़ाम सुनाया और कहा.."अलनूर! हमारा मज़हब और हमारा कौमी वकार तुम से बहुत बड़ी कुरबानी मांग रहा है। आज से अपने आपको परदा नशीन लड़की समझना छोड़ दो। मुसलमान लड़कियों तक यह पैग़ाम पहुंचाकर उन्हें जेहाद के लिए तैयार कर लो। मैं तुम्हें खंजर, तीर कमान और बरछी का इस्तेमाल सिखा दूंगा। एहतियात यह करनी है कि किसी को शक भी न हो कि हम लोग क्या कर रहे हैं।"

"मैं हर तरह की कुरबानी के लिए तैयार हूं।" अन्नूर ने कहा "मैं और मेरी सहेलियां तो पहले ही सोंच रही हैं कि हम अपनी आज़ादी और अपनी कौम के लिए क्या कर सकती हूं। हम तो मर्दों के मुंह की तरफ़ देख रही हैं।"

उसमान सारिम ने उसे बताया कि सलाहुद्दीन अय्यूबी और उसकी फ़ौज के मुतअल्लिक जितनी ख़बरें यहां मशहूर की जाती हैं वह सब झूटी होती हैं। तमाम मुसलमान घरानों में जाकर औरतों को सही ख़बरें सुनाओ। उसमान सारिम ने उसे सही ख़बरें सुनाई और यह भी बताया कि मुसलमानों में ग़द्दार और सलीबियों में मुख़बिर भी हैं। उसने बहन को ऐसे तीन चार घराने बताए और कहा कि इन औरतों को हाथ में लो और उन्हें बताओ कि उनके आदमी ग़द्दार हैं। उन्हें यह भी कहो कि इसाई और यहूदी लड़कियों के प्यार से बचो। उनका प्यार महज़ धोखा है।

"क्या मैं रैनी को यहां आने से रोक दूं?" अन्नूर ने पूछा..."वह तो तुम्हारे साथ भी बेतकल्लुफ हो गई है।"

"उसे मैं कहूंगा कि हमारे घर न आया करे।" उसमान सारिम ने कहा .."वह बहुत तेज़ और होशियार लड़की है।"

रैनी एक नौजवान ईसाई लड़की थी। उसमान सारिम के घर से थोड़ी दूर उस का घर था। उस का बाप शहरी इन्तज़ामिया के किसी ऊंचे ओहदे पर फाइज़ था। लड़की का पूरा नाम रैनी एलगज़ैन्डर था। वह अन्नूर की सहेली बनी हुई थी। उसमान सारिम के साथ भी उस ने गहरे मरासिम पैदा कर लिए थे। उसे देख कर वह बहुत खुश होती थी। उसमान सारिम अभी उस के करीब नहीं हुआ था। यह वजीह जवान समझता था कि यह ईसाई लड़की है और यहां जासूसी करने आती है। उस ने रैनी को कभी नापसंदीदगी की निगाह से नहीं देखा था बल्कि उस के साथ हंसी मज़ाक भी करलेता था ताकि उसे शक न हो। अब जब उसे यह ज़रूरत पेश आई कि रैनी उस के घर न आया करे तो रैनी को यह कहना उस के लिए मुश्किल हो गया कि अब हमारे घर न आया करो। मगर उसे रोकना ज़रूरी था क्योंकि वह घर में अपनी बहन को जंगी ट्रेनिंग देना चाहता था और उसे मालू नहीं था कि उसके घर में अब क्या क्या राज़ आएंगे। उस ने सोंच सोंच कर यह तरीका पसंद किया कि अन्नूर से कहा कि रैनी जब कभी आए तुम यह कह कर बाहर चली जाया करो कि किसी सहेली के घर जारही हूं।

इस तरह उसे टालती रहो। वह खुद ही आना छोड़ देगी।

कर्क शहर के लोग उस पागल की बातें कर रहे थे जो मुसलमानों की तबाही की पेशीन गोई करता फिर रहा था। ग़ैर मुस्लिमों को वह बहुत ही अच्छा लगा था। सब उसे ढूंढते फिरते थे लेकिन वह कहीं नज़र नहीं आ रहा था। सरकारी तौर पर भी उसे तलाश किया जा रहा था क्योंकि मुसलमानों को खौफज़दह करने और उन का जज़्बा सर्द करने के लिए उस पागल को इस्तेमाल करने का फ़ैसला किया गया था। किसी को मालूम नहीं था कि वह कहां चला गया है। वह उसी रात कहीं लापता होगया था। दस बारह रोज़ उस की तलाश होती रही। सलीबी हुक्काम ने शहर के बाहर भी घोड़ सवार दौड़ा दिए। उन्हें तवक्क़ो थी कि वह इस शहर से कहीं दूसरे शहर जारहा होगा, मगर वह किसी को न मिला और दस बारह दिन गुज़र गए।

उन दस बारह दिनों में उसमान सारिम ने अन्नूर और उस की तीन सहेलियों को हथ्यारों का इस्तेमाल सिखा दिया। उस ने उन्हें तेग़ज़नी बड़ी मेहनत से सिखाई उस के इलावह उस ने मुसलमान नौजवानों को दर परदह सुलतान अय्यूबी का पैग़ाम सुना कर ज़मीन दोज़ महाज़ पर जमा कर लिया। उन नौजवानों ने उन मुसलमान कारीगरों को तैयार कर लिया जो बरछयां और तीर व कमान वग़ैरह बनाते थे। यह सब सलीबियों के मुलाज़िम थे। वह अपने लिए कोई हथयार नहीं बना सकते थे। मुसलमानों को कोई हथ्यार रखने की इजाज़त नहीं थी। उन कारीगरों ने घरों में चोरी छिपे हथयार बनाने शुरू कर दिए। यह बहुत ही ख़तरनाक काम था। पकड़े जाने की सूरत में सिर्फ़ सज़ाए मौत ही नहीं थी बल्कि मरने से पहले सलीबी दरिंदों की भयानक अज़ीयतें थीं। वहां कोई मुसलमान किसी मामूली से जुर्म में या महज़ शक में पकड़ा जाता तो उस से पूछा जाता था कि मुसलमान घरानों के अंदर क्या हो रहा है और जासूस कहां हैं। उस के साथ ही उस के जिस्म को रूई की तरह धुन्ना शुरू कर देते थे। कारीगर जो हथयार बनाते थे, वह उसमान सारिम जैसे नौजवान रात को मुख़्तलिफ घरों मे छुपा देते थे। दिन के वक़्त लड़किया बुर्क़ा नुमा लिबादों में तीर व कमान छुपा कर मुसलमानों के घरों में ले जाती रहती थीं, मगर हथयार बनाने और घरों में पहुंचाने की रफ़तार बहुत सुस्त थी।

उधर सुलतान अय्यूबी को एक जासूस ने इत्तला देदी कि कर्क और मुज़ाफात के मुसलमानों तक उस का पैग़ाम पहुंच गया है और वहां के नौजवान लड़कों और लड़कियों ने ज़मीन दोज़ महाज़ बना लिया है। यह इत्तला लाने वाला भी एक ज़हीन और निडर जासूस था। उस ने बताया कि वह जासूस जिस ने सुलतान अय्यूबी का पैग़ाम उसमान सारिम तक पहुंचाया था पागल के बहरूप में कामयाब रहा है। सुलतान अय्यूबी इस इत्तला पर बहुत ख़ुश था। उस ने कहा– "जिस क़ौम के नौजवान बेदार हो जाएं उसे कोई ताक़त शिकस्त नहीं देसकती।"

"इस कामयाबी ने मेरा हौसला बढ़ा दिया है।" शोबए जासूसी के नाएब ज़ाहेदान ने कहा– "अगर आप इजाज़त दें तो मैं मक़बूज़ा इलाक़े के नौजवानों को अपने जासूसों के

ज़रिए इतना भड़का सकता हूं कि वह शोले बन कर कर्क और युरोशलम को आग लगादेंगे।"

"और इस आग में वह खुद जल मरेंगे।" सुलतान अय्यूबी ने कहा– "मैं नौजवानों को शोले नहीं बनाना चाहता। मैं उन के सीनों में ईमान की चिंगारी सुलगाना चाहता हूं। नौजवानों को भड़काना मुश्किल काम नहीं। उन में से कोई अशर्फी के चमक और लालच से तुम्हारे हाथ में खेलने लगेगा और ज़्यादा तादाद उन की है जो जज़बाती अलफ़ाज़ और जोशीले नारों से भड़क उठते हैं। फिर तुम उन से जो कुछ कराना चाहते हो करालो। उन्हें आपस में भी लड़ा सकते हो। उस की वजह यह नहीं कि वह जाहिल और गंवार हैं और उन का अपना दिमाग़ ही नहीं, असल वजह यह है कि यह उम्र ही एसी होती है कि खून का जोश कुछ कर गुज़रने पर मजबूर करता है। इस उम्र में ज़ेहन ऐयाशी की तरफ़ भी माएल होता है और अमले सालेह की तरफ़ भी। तुम नौजवान ज़ेहन को जो भी तहरीक और इश्तेआल दे दो वह उसी का असर क़ुबूल करेगा। तुम्हारे दुश्मन हमारी क़ौम के उभरते हुए ज़ेहन में ऐयाशी और जिन्सी लज़्ज़त के जरासीम डाल रहे हैं। उन का मक़सद सिर्फ़ यह है कि हम उसे जेहाद की तरफ़ माएल करके दुश्मन के ख़िलाफ़ इस्तेमाल न कर सकें। तुम यह कोशिश करो कि नौजवान भड़कें नहीं बल्कि सर्द रहें और सोंचें। रसूले मक़बूल सलअम की इस हदीस को समझें कि अपने आप को जानो अपने दुश्मनों को पहचानो। उन की सोंचें बदल दो। उन में क़ौमियत का एहसास पैदा करो। यह नौजवान क़ौम का बड़ा क़ीमती सरमाया हैं। उन्हें भड़का कर जलने से बचाओ। उन्हें मरवाना दानिशमंदी नहीं। दानाई यह है कि उन के हाथों दुश्मन को मरवाओ लेकिन दुश्मन का तसव्वुर वाज़ेह करो। कोई मुसलमान मुझे बुरा भला कहे तो वह न इस्लाम का दुश्मन है न ग़द्दार है। वह मेरा दुश्मन है। मैं उसे इस क़ानून का सहारा लेकर सज़ा नहीं दूंगा जो इस्लाम और सलतनत के तहफ़्फ़ुज़ के लिए बनाया गया है। मिल्लत का क़ानून मिल्लत के अमीर के ज़ाती इस्तेमाल के लिए नहीं होता। ग़द्दारी की सज़ा उसे दीजाती है जो मुल्क और क़ौम की जड़ें काटे और दीन के दुश्मनों के हाथ मज़बूत करे। ख़्वाह हुकुमरान खुद ही उस का मुजरिम हो वह गद्दार है और सज़ा का मुस्तहिक़ है।"

"इस सूरत में जबकि वहां नौजवान तैयार होगए हैं। हम उन्हें किस तरह इस्तेमाल करें।" ज़ाहेदान ने पूछा।

"उन्हें जोश में न आने दो।" सुलतान अय्यूबी ने जवाब दिया– "उन की सोंचें बेदार करो। वहां के हालात के मुताबिक़ वह खुद फ़ैसला करें कि उन्हें क्या करना चाहिए। वह जज़्बात के ग़लबे के तेहत न सोंचें। वहां और ज़्यादा ज़हीन जासूस भेजो, और यह याद रखो ज़ाहेदान कि दुश्मन हमें नहीं हमारे नौजवान बच्चों का किरदार बिगाड़ने की कोशिश कर रहा है या हमारे उन हाकिमों को जिन के ज़ेहन बच्चों की तरह ख़ाम है। किसी भी क़ौम को जंग के बग़ैर शिकस्त देना चाहो तो उस के नौजयानों को ज़ेहनी ऐयाशी में डाल दो। यह क़ौम इस हद तक तुम्हारी ग़ुलाम हो जाए गी कि अपनी मसतूरात तुम्हारे हवाले करके उस पर फ़ख़्र करेगी। सलीबी और यहूदी हमारी क़ौम को उसी सतह पर लाने की कोशिश कर रहे हैं।" सुलतान अय्यूबी को जैसे अचानक कुछ याद आगया हो। उस ने ज़ाहेदान से कहा–

"मैं ने किसी से कहा था कि कर्क के उन मुसलमानों तक जो हथयार बना रहे हैं आतिश गीर माद्दा पहुंचा दो या उन्हें बता दो कि यह किस तरह बनता और इस्तेमाल होता है।"

"वह उन्हें बता दिया गया है।" ज़ाहेदान ने जवाब दिया। "इत्तला मिली है कि मुसलमानों ने यह माद्दा तैयार करना शुरू कर दिया है।"

❖

कर्क में ऐसे हालात फ़ौरन पैदा होगए जिन में वहां के नौजवानों को खुद ही सोंचना और अमल करना पड़ा। मकबूज़ा इलाकों में सलीबियों ने काफ़ले लूटने का भी सिलसिला शुरू कर रखा था। काफ़ले इतने आम नहीं थे। ताजिर और दीगर सफ़र करने वाले इकट्ठे होते रहते थे। उन की तादाद डेढ़ दो सौ होजाती तो काफ़ले की सूरत में चलते थे। यह एक हिफ़ाज़ती इकदाम होता था। काफ़ले के साथ लड़ने वाले मुसल्लह अफ़राद भी होते थे। घोड़ों और ऊंटों की इफ़रात होती थी। ताजिरों का बेशुमार माल और दौलत होती थी। काफ़ले में चंद एक कुंबे भी होते थे। यह लोग नकले मकानी करते थे। सलीबी इस्तिबदाद में आए हुए मुसलमान अकसर वहां से हिजरत करके मुसलमानों की हुकुमरानी के इलाकों में जाते रहते थे। इतने बड़े काफ़ले को चंद एक डाकू नहीं लूट सकते थे। सलीबियों ने यह काम अपनी फ़ौज के सुपुर्द कर दिया था। उन्हें अगर किसी काफ़ले की इत्तला मिल जाती तो अपनी फ़ौज के एक दो दस्तों को सेहराई लोगों के भेस में भेज कर उसे लूट लेते थे। काफ़िलों में सिर्फ़ मुसलमान होते थे। यह जुर्म उन सलीबी बादशाहों ने भी कराया और लूटे हुए माल से हिस्सा वसूल किया जिन्हें आज तारीख़ में सलीबी जंगों का हीरो बना कर पेश किया जारहा है।

इस जुर्म में मुसलमान ओमरा भी शामिल थे। वह छोटी छोटी इस्लामी रियास्तों के हुकुमरान थे। उन के पास फ़ौज भी थी। लुटे हुए क़ाफ़लों के दोचार आदमी फरयाद लेकर उन हुकुमरानो के दरबार में जाते थे तो उन की सुनवाई नहीं होती थी क्योंकि उन हुकुमरानों को भी सलीबी लड़कियों, शराब और थोड़े से सोने की सूरत में हिस्सा दिया करते थे।

अगर यह हुकुमरान चाहते तो सलीबी डाकुओं का कला कमा कर सकते थे मगर उन्हों ने इन सलीबी डाकुओं को ऐसी खुली छुट्टी दे रखी थी कि यह डाकू उन की रियास्तों के अंदर भी आकर लूट मार कर जाते थे। सलीबियों ने उन्हें अंधा करके यह फायदा भी उठाया कि उन की रियासतों के सरहदी इलाक़े हड़प करते गए। उन्हों ने बाज़ छोटी छोटी रियासतों को मुसलसल डाकुओं से परेशान करके जिज़या भी वसूल करना शुरू कर दिया था। इस तरह सलतनत इस्लामिया सिकुड़ती चली जा रही थी। नूरुद्दीन ज़ंगी और सलाहुद्दीन अय्यूबी उन मुसलमान रियास्तों पर भी कबज़ा करना चाहते थे। उन हुकुमरानों को वह सलीबियों से ज़्यादा ख़तरनाक समझते थे। एक बार नूरुद्दीन ने सलाहुद्दीन को एक पैग़ाम भेजा था जिस में कई और बातों के इलावह उन छोटे छोटे मुसलमान हुकुमरानों के मुतअल्लिक लिखा था-

"इन मुसलमान हुकुमरानों ने अपनी एश व इशरत के लिए अपनी रियासतें सलीबियों के पास गिरवी रख दी हैं। वह कुफ्फार से तोहफे और ज़र व जवाहेरात और इग़वा की हुई मुसलमान

लड़कियां लेते और इसलाम का नाम डुबोते जारहे हैं। यह मुसलमान कुफ्फार से ज़्यादा नापाक और खतरनाक हैं। वह बादशाही के नशे में बदमस्त हैं और सलीबीउन की जड़ों में दाख़िल होगए हैं। सलीबियों को शिकस्त देने से पहले ज़रूरी होगया है कि उन मुसलमान रियास्तों पर कबज़ा करके उन्हें सलतनते इस्लामिया में मुदग़म किया जाए और ख़िलाफ़त के तेहत लाया जाए। इस के बग़ैर इस्लाम का तहफ्फुज़ मुमकिन नहीं।"

इन खतरों के बावजूद कभी कभी कोई बहुत बड़ा काफिला सेहरा में जाता नज़र आजाता था। कर्क से चंद मील दूर से एक काफला गुज़र रहा था। उस में एक सौ से ज़्यादा ऊंट थे। बहुत से घोड़े भी थे। काफले में ताजिरों का माल था और चंद एक कुंबे थे। एक कुंबा ऐसा भी था, जिस में दो जवान लड़कियां थीं। यह बहनें थीं। काफला हसबे मामूल मुसलमानों का था। कर्क के इलाक़े से गुज़र रहा था तो सलीबियों को पता चल गया। उन्हों ने अपनी फौज का एक दस्ता भेज दिया जिस ने दिन दहाड़े क़ाफाले पर जा हमला किया। काफले के घोड़े सवारों ने मुक़ाबिला तो बहुत किया मगर सलीबियों की तादाद ज़्यादा थी। वहां रेत खून से लाल होगई सलीबियों ने बच्चों तक को काट डाला। पंद्रह सोला जवां साल मुसलमान रह गऐ। उन्हें क़ैदी बना लिया गया। दोनों लड़कियों को पकड़ लिया और ऊंटों और घोड़ों को माल व असबाब समेत कर्क लेगए।

यह क़ाफला जब कर्क में दाख़िल हुआ तो आगे आगे कैदी थे। उन के पीछे दो घोड़ों पर दो लड़कियां सवार थीं जिन का लिबास बताता था कि मुसलमान हैं। उन के पीछे सलीबी थे जिन के चेहरों पर नक़ाब थे और उन के पीछे माल व असबाब से लदे हुए ऊंटों की क़तार थी। लड़कियां रो रही थीं। कर्क के शहरी तमाशा देखने के लिए बाहर निकल आए। वह तालियां पीटते और क़हक़हे लगाते थे क्यों कि वह जानते थे कि लुटा हुआ यह काफिला मुसलमानों का है और क़ैदी भी मुसलमान हैं। उन क़ैदियों में एक जवां साल क़ैदी आफाक़ नाम का था। दोनो मुग़विया लड़कियां उस की बहने थीं। आफाक ज़खमी भी था। उस की पेशानी और कंधे से खून बह रहा था। वह लुटे हुए क़ाफले के आगे आगे शहर में दाख़िल हुआ तो तमाशाइयों को देख कर उस ने बुलंद आवाज़ से कहा। "कर्क के मुसलमानो! हमारा तमाशा देख रहे हो? डूब मरो। इन लड़कियों को देखो। यह मेरी नहीं तुम्हारी बहनें हैं। यह मुसलमान हैं"

एक सलीबी ने पीछे से उस की गरदन पर घूंसा मारा। वह मुंह के बल गिरा। उस के हाथ रस्सियों से पीठ पीछे बंधे हुए थे। एक क़ैदी ने उसे उठाया तो आफाक फिर चिल्लाया-- "कर्क के मुसलमानो! यह तुम्हारी बेटियां हैं।" उसे दोतीन नक़ाब पोशों ने पीटना शुरू कर दिया। उस की बहने चीख़ चीख़ कर रो रही थीं और फरयादें करती थीं। "खुदा के लिए हमारे भाई को ना मारो। हमारे साथ जो सलूक करना चाहो कर लो, उसे न मारो।" एक बहन चिल्ला रही थी। "आफाक़ ख़ामोश हो जाओ। तुम इन का कुछ नहीं बिगाड़ सकते" मगर आफाक चुप नहीं हो रहा था। तमाशाइयों में मुसलमान भी थे जो अपना खून पी रहे थे मगर बेबस थे। उन की ग़ैरत उन की नज़रों के सामने से गुज़रती जा रही है और वह देख रहे थे। उन में नौजवान मुसलमान भी थे और उन में उसमान सारिम भी था। उस ने अपने नौजवान दोस्तों

की तरफ़ देखा। सब की आंखें लाल थीं और दिल ज़ोर ज़ोर से धड़क रहे थे।

उसमान सारिम थोड़ी दूर तक उस काफिले के साथ चलता रहा। आगे एक ग़रीब मूची बैठा था, जो लोगों के जूते मरम्मत किया करता था। उसे किसी मुसलमान ने अपने घर की डयोढ़ी में सोने की जगह दे रखी थी। दिन भर वह बाहर बैठा जूते मरम्मत करता रहता था। बदकिसमत काफ़ला उस के सागने से भी गुज़रा। उस ने भी आफ़ाक़ की ललकार और लड़कियों की आह व ज़ारी सुनी। आफ़ाक़ के चेहरे को खून से लाल देखा। उस पर सलीबियों का जुलम होता भी देखा लेकिन उस तरह देखा जैसे उस ने कुछ भी नहीं देखा। उस मोची को न कभी किसी ने मस्जिद में जाते देखा था न गिरजे में। वह यहूदियों की इबादत गाह में भी कभी नहीं गया था। उस की तरफ़ वही तवज्जह देता था, जिसे जूते मरम्मत कराना होता था। उसे कभी किसी ने बोलते भी नहीं सुना था। वह ख़लक़ का रांदा हुआ इंसान था जिसे सलीबियों के साथ भी कोई दिलचस्पी नहीं थी और इस्लामियों के साथ भी कोई वास्ता नहीं था।

उस्मान सारिम चलते चलते उस मोची के करीब से गुज़रने लगा तो रुक गया। कैदी आगे निकल गए थे। ऊंट जा रहे थे। जब आख़िरी ऊंट गुज़र गया तो उसमान सारिम ने दोनों जूते उतार कर मोची के आगे रख दिए और उसके सामने बैठ गया। मोची किसी का जूता मरम्मत कर रहा था। उस ने उसमान सारिम को सर उठा कर देखा भी नहीं। उसमान ने इधर उधर देख कर सरगोशी में कहा– "इन दोनो लड़कियों को आज रात आज़ाद कराना है।"

जानते हो यह लड़कियां रात को कहां हूंगी?" मोची ने सर उठाए बग़ैर इतनी धीमी आवाज़ में पूछा कि उसमान सारिम के सिवा कोई नहीं सुन सकता था।

"जानता हूं।" उसमान सारिम ने जवाब दिया– "सलीबी बादशाहों के पास हूंगी, लेकिन हम में से किसी ने भी वह जगह अंदर से नहीं देखी।"

"मैं ने देखी है।" मोची ने अपने काम में मगन रह कर कहा। "वहां से लड़कियों का निकालना मुमकिन नहीं।"

"तुम किस मर्ज़ की दवा हो?" उसमान सारिम ने ऐसे लहजे में कहा जिस में जज़बात का लरज़ा और गुस्सा था। कहने लगा– "हमारी रहनुमाई करो। अगर हम लड़कियों तक पहुंच गए और पकड़े गए तो लड़कियों की गर्दनें काट देंगे। उन्हें सलीबियों के पास ज़िंदा नहीं रहने देंगे।"

"कितने जवानों की कुर्बानी दे सकते हो?" मोची ने पूछा।

"जितने जवान मांगोगे।"

"कल रात।"

"आज रात।" उसमान सारिम ने दबदबे से कहा। "आज ही रात बृजेसा! आज ही रात।"

"इमाम के पास पहांचो" मोची ने कहा।

"कितने जवान?"

बृजेस मोची ने सोच कर कहा– "आठ... हथ्यार सुन लो। खंजर? आतिश गीर माद्दा।"
उसमान सारिम ने अपने जूते पहने और चला गया।

❖

सूरज अभी गुरूब नहीं हुआ था। उसमान सारिम ने रास्ते में अपने सात हमजोलियों को घरों से बुला कर उन्हें इमाम के घर पहुंचने को कहा और खुद इमाम के घर चला गया। यह उसी मस्जिद का इमाम था जिस में उसमान सारिम की मुलाक़ात "पागल" से हुई थी। उसमान ने ही इमाम को अपनी ज़मीन दोज़ जमाअत की इमामत पेश की थी जिसे जमाअत के हर फर्द ने कुबूल कर लिया था। यह लोग किसी न किसी के घर में मिल बैठते और लाएहे अमल तैयार करते थे। अब उन दो मुग़विया लड़कियों का मसअला सामने आगया तो उसमान सारिम ने उन की रिहाई का इरादह कर लिया जो दरअसल खुद कुशी का इरादा था। वह मोची के कहने के मुताबिक़ इमाम के घर चला गया। इमाम बे चैनी से अपनी डयोढ़ी में टहल रहा था। उसमान सारिम को देख कर रुक गया और पूछा– "उसमान! तुम ने उस क़ैदी की ललकार सुनी थी? मालूम होता है वह लड़कियां उस की बहनें थीं।"

"मैं उसी ललकार पर लब्बेक कहने आया हूं मोहतरम इमाम!" उसमान सारिम ने कहा– "बृजेस आ रहा है और मेरे सात दोस्त भी आरहे हैं।"

"तुम क्या करोगे?" इमाम ने पूछा– "तुम कर ही क्या सकोगे?.....मैं जानता हूं कि हमारी बेशुमार लड़कियां काफिरों के कब्ज़े में हैं मगर उन दो लड़कियों ने मुझे इम्तहान में डाल दिया है।" उस ने मुंह ऊपर करके गहरी आह भरी और कहा– "या खुदा मुझे सिर्फ एक रात के लिए जवान करदे या आज रात मेरी जान ले ले। अगर मैं ज़िंदा रहा तो तमाम उम्र उन लड़कियों की आह व ज़ारी मुझे सुनाई देती रहेगी और मैं पागल हो जाऊंगा।"

"हमें अपनी दानिश की रोशनी दिखाएं।" उसमान सारिम ने कहा– "मुझे उम्मीद है कि हम आप को एक रात से ज़्यादा बेचैन नहीं रहने देंगे।"

उस्मान सारिम के दो साथी अंदर आए। इमाम ने उन्हें बैठने को कहा और तीनों से मुख़ातिब होकर कहा– "आज यों मालूम होता है जैसे मेरी दानिश जवाब देगइ है। मुझे इस तरह बे काबू नहीं होना चाहिए, लेकिन कोई ग़ैरत को ललकारे तो जज़्बे भड़क उठते हैं जिन्हें मुतमइन करने के लिए जवान होना ज़रूरी होता है.... लेकिन मेरे बच्चो! मैं बहुत बूढ़ा हो गया हूं। मुझ में अब बर्दाशत की कूवत नहीं रही। तुम जो कुछ करने का इरादा करो संभल कर करना।"

एक एक करके सात नौजवान जमा होगए और उन के फ़ौरन बाद मोची आगया। उस ने बोरी उठा रखी थी जिस में पुराने जूते और अवज़ार थे। उस ने बोरी फेंकी और कमर सीधी की। वह हंस पड़ा। वह जब सीधा खड़ा हुआ तो कोई कह नहीं सकता था कि यह वह मोची है जो दुन्यिा की गहमा गहमी से रिश्ता तोड़े हुए, रास्ते में बैठा जूते मरम्मत करता रहता है। उस वक़्त जब वह इमाम के घर में था और वह दरवाज़ा बंद हो चुका था, वह मोची नहीं बृजेस था– अली बिन सुफ़यान के मोहकमए जासूसी के एक खुफिया शोबे का तजरबा कार और निहायत

अकल मंद जासूस– उस ने इमाम से कहा– "यह लड़के आज ही उन दोनो लड़कियों को सलीबियों की कैद से आज़ाद कराने पर तुले हुए हैं। इस काम में सिर्फ़ पकड़े जाने का या नाकामी का ही ख़तरा नहीं बलिक यक़ीनी मौत का ख़तरा है।"

"हम यह ख़तरा कुबूल करते हैं मोहतरम बृजेस।" एक नौजवान ने कहा– "आप इस फन के उस्ताद हैं हमारी रहनुमई करें।"

"अगर अक्ल की बात सुनें, तो मैं एक मशवरा देना चाहता हूं।" बृजेस ने कहा– "सलीबियों के पास बहुत सी मुसलमान लड़कियां है। उन में से बाज़ को उन्हों ने बचपन में क़ाफ़िलों और घरों से इग़्वा किया था और उन्हें अपनी तालीम व तरबियत दे कर हमारे ख़िलाफ जासूसी और तुम्हारी किरदार कुशी के लिए इस्तेमाल कर रहे हैं। तुम लोग एक एक लड़की को तो आज़ाद नहीं करा सकते। अगर तुम सब मेरे फन से फ़ाएदा उठाना चाहते हो तो मैं कहूं गा कि दो लड़कियों की ख़ातिर तुम जैसे आठ जवान कुर्बान कर देना अक्ल मंदी नहीं। बुर्द बारी और तहम्मुल ज़रूरी है।"

"मैं तहम्मुल को किस तरह कुबूल कर सकता हूं?" उसमान सारिम ने भड़क कर कहा।

"मेरी तरह।" बृजेस ने कहा– "क्या मैं पेशे का मोची हूं? मैं जब मिश्र में होता हूं तो मेरी सवारी के लिए अरबी घोड़ा तैयार रहता है और मेरे घर में दो मुलाज़िम हैं मगर यहां तीन महीनों से रास्ते में बैठा लोगों के ग़लीज़ जूते मरम्मत करता रहता हूं. मैं तुम्हें दो लड़कियों की आज़ादी के लिए पूरे कर्क और उस से आगे के बहुत वसीअ इलाके को आज़ाद कराने के लिए ज़िंदा रखना चाहता हूं। बरदाश्त करो। इंतज़ार करो।"

उसमान सारिम और उस के सातों दोस्त बरदाश्त की हदों से निकल चुके थे। उन की बातों से पता चलता था कि उन में इन्तज़ार की भी हिम्मत नहीं रही। वह किसी की राहनुमाई के बग़ैर ही उस जगह पर हमला करने को तैयार थे जहां तवक्को थी कि लड़कियां हूंगी। उन्हों ने इमाम की भी बातें सुनने से इंकार कर दिया। आख़िर बृजेस ने उन्हें बताया कि उस के दो जासूस उस जगह मामूली मुलाज़िम हैं जहां सलीबी हुकुमरान रात को इकट्ठे होते और शराब पीते हैं। यह दोनो जासूस ईसाइयों के भेस में शूबक की फ़तह के बाद वहां से भागने वाले ईसाइयों के साथ आए थे। उन्हें यहां नौकरी मिल गई थी और वह कामयाब जासूसी कर रहे थे।

तुम सब ने वह इमारत देखी है जहां वह सलीबी हुकुमरान जो हमारी फौज के ख़िलाफ़ लड़ने के लिए बरतानिया, एटली, फ्रांस और जरमनी वग़ैरा से आए हुए हैं रहते हैं। इस इमारत में एक बड़ा कमरा है जहां वह शाम के बाद इकठे होते, शराब पीते और नाचते हैं। उन की तफरीह के लिए लड़कियां मौजूद होती हैं। वह आधी रात तक वहां ऊधम मचाते हैं। तुम ने देखा है कि वह जगह ज़रा बुलंदी पर है जहां से पूरा शहर नज़र आता है। वहां फौज का पहरा भी होता है। उस इमारत तक पहुंचना मुमकिन नहीं। कोई आम आदमी बल्कि कोई खास शहरी भी उस इमारत के करीब नहीं जासकता। मैं यह मालूम कर सकता हूं कि यह दो लड़कियां कहां हूंगी मगर उन तक रसाई का तरीका सिर्फ़ यह है, हमारी फौज बाहर से अभी

हमला कर दे। इस सूरत में हुकुमरान और फ़ौजी हुक्काम उस इमारत से चले जाएंगे और हमला रोकने में लग जाएंगे। मगर आज रात हमला नहीं होसकता। यह भी नहीं कहा जासकता कि सलाहुद्दीन अय्यूबी कब हमला करें गे।"

"ज़रूरत हमले की है।" इमाम ने बृजेस से वज़ाहत चाही– "दूसरे लफ्ज़ों में ज़रूरत यह है कि इस इमारत में जो लोग हैं वह वहां से चले जाए और लड़कियां वहीं रह जाएं। इस सूरत में आप यह कहना चाहते हैं कि हमारे यह बच्चे इस इमारत में दाखिल होकर लड़कियों को उठा लाएं।"

"जी हां!" बृजेस ने अपने तजरबे की बुन्याद पर खुदएतमादी से कहा। "अगर शहर के अंदर कोई बड़ा ही शदीद और खतरनाक किस्म का हंगामा होजाए, कहीं आग लग जाए और आग जंगी साज़ व सामान को लगे तो शायद हुकुमरान और दीगर लोग वहां से निकल कर मौकाए वारदात पर चले जाएं।" बृजेस गहरी सोंच में खोगया। उस ने उसमान सारिम और उस के साथियों को बारी बारी देखा और कुछ देर बाद कहा– "हां मेरे मुजाहिदो! अगर एक जगह आग लगासकते हो तो लड़कियों की रेहाई की सूरत पैदा हो सकती है।"

"जलदी बताओ मोहतरम!" उसमान बिन सारिम ने बेसब्र होकर पूछा– "कहां आग लगानी है। कहो तो सारे शहर को आग लगादें।"

"तुम ने वह जगह देखी है जहां सलीबियों की फ़ौज के घोड़े बंधे रहते हैं?" बृजेस ने कहा– "वहां इस वक़्त कम व बेश छः सौ घोड़े एक जगह बंधे हुए हैं। बाकी मुख़्तलिफ़ जगहों पर हैं। उन के करीब इतनी ही तादाद ऊंटों की बंधी हुई है। उन से ज़रा ही परे घोड़ों के खुश्क घास के पहाड़ खड़े हैं। उस से थोड़ा हट कर फ़ौज के खेमों के ढेर पड़े हैं। वहां घोड़ा गाड़ियां भी खड़ी हैं और ऐसा सामान बेशुमार पड़ा है जिसे फ़ौरन आग लग सकती है मगर उस के इर्द गिर्द संतरी घूम फिर रहे होते हैं। वहां से रात के वक़्त किसी को गुज़रने की इजाज़त नहीं। अगर तुम उस घास और खेमों के अमबार को आग लगा सको तो मैं यकीन से कहता हूं कि सलीबी हुकुमरान सारी दुन्या को भूल कर वहां पहुंच जाएंगे। घास, कपड़े और लकड़ी के शोले आसमान तक जाएंगे। सारे शहर पर ख़ौफ तारी हो जाएगा। आग लगाने के साथ ही अगर तुम ज़्यादा से ज़्यादा घोड़ों को खोल दो तो वह डर कर ऐसा भागेंगे कि लोगों को कुचलते फिरें गे। मगर सोंचना यह है कि आग कौन लगाएगा, घोड़े कौन खोलेगा और आग लगाने के लिए वहां पहुंचा किस तरह जाएगा।"

"फर्ज़ कर लो आग लग गई!" एक जवान ने कहा– "और वह इमारत भी ख़ाली होगई तो हमें क्या करना होगा?"

"मैं साथ हूंगा।" बृजेस ने जवाब दिया। "उस इमारत में तुम मेरे बग़ैर नहीं जासकोगे। वहां मेरे दो साथी मौजूद हैं। वह मुझे बतादेंगे कि लड़कियां कहां हैं। मगर यह भी सोंच लो कि लड़कियों को उठा लाएंगे तो उन्हें कहीं छुपाना भी होगा और उस के बाद कर्क के मुसलमानों पर कयामत टूट पड़े गी। सलीबी यकीन ही नहीं करेंगे कि यह मुसलमानों के सिवा किसी और का काम होसकता है।"

"मुसलमान पहले कुछ कितने आराम में हैं?" इमाम ने कहा-- "मैं मशवरा देता हूं कि हम यह काम कर गुज़रें। सलीबियों को मालूम हो जाना चाहिए कि मुसलमान कितना ही मजबूर और बे बस क्यों न हो वह गुलाम नहीं रह सकता और उस का वार जिगर चाक कर दिया करता है।"

बृजेस तो था ही कमांडू किस्म का जासूस। वह कई राज़ मालूम करके सुलतान अय्यूबी तक पहुंचा चुका था लेकिन उसे इस किस्म की तख़रीब कारी का कोई मौक़ा नहीं मिला था। वह ऐसी शदीद कार रवाई को ज़रूरी समझता था ताकि सलीबियों को मालूम होजाए कि मुसलमान क्या कर सकता है। उस ने उसमान सारिम और उसके साथियों को समझाना शुरू कर दिया कि उन्हें क्या करना है। इस सिलसिले की दो कड़यां बहुत नाज़ुक थीं। एक यह कि आग लगाने के लिए तीन चार लड़कियां जाएं। वह संतरी से किसी आला फ़ौजी हाकिम का पता पूंछे और संतरी को मार डालें। बृजेस ने लड़कियों को भेजने की इस लिए सोंची थी कि औरत, खुसूसन नौजवान लड़की जो ताअस्सुर पैदा कर सकती है वह कोई मर्द नहीं कर सकता। मर्द शक पैदा कर सकता है। दूसरा ख़तरनाक मरहला यहआया कि कितने नौजवान सलीबी हुकुमरानों की इमारत पर हमला आवर हूं। बृजेस और इमाम ने मुत्तफ़का तौर पर फ़ैसला किया कि ज़्यादा न हूं यही आठ हूं तो बेहतर है क्योंकि ज़्यादा हूजूम नज़र आ सकता है और किसी न किसी के पकड़े जाने का ख़तरा ज़्यादा होग.।

फिर यह मसअला पैदा हुआ कि इतनी दिलेर लड़कियां कहां से मिलेंगी। उसमान सारिम ने कहा कि एक उस की बहन अन्नूर होगी। एक और नौजवान ने कहा कि दूसरी उस की बहन होगी। बाक़ी छः जवानों में से किसी की बहन नहीं थी। उम्मीद ज़ाहिर की गई कि यह दोलड़कियां अपनी अपनी एक सहेलियों को साथ लेलेंगी। बृजेस ने उन लड़कियों को उन का काम समझाने की ज़िम्मे दारी अपने ऊपरली। सूरज गुरूब होगया था। इमामे मस्जिद एक तरफ़ चला गया। बाक़ी सब एक एक करके बाहर निकले। सब से आख़िर में बृजेस बाहर निकला। वह फिर वही मोची था जिसे कुछ ख़बर नहीं थी कि उस के इर्द गिर्द क्या होरहा है। वह झुका झुका इस तरह मरी हुई चाल चल रहा था जैसे सारी दुनिया के रंज व ग़म का बोझ उस के कंधों पर गिर पड़ा हो।

❖

उसमान सारिम अपने घर से अभी कुछ दूर था कि उसे रैनी एलगजेन्डर मिल गई। वह उसमान की बहन अन्नूर की गहरी सहेली बनी हुई थी। दोनो बहन भाई चाहते थे कि वह उन के घर न आया करे लेकिन उसमान सारिम उसे अचानक घर आने से रोक कर किसी शक में नहीं डालना चाहता था। रैनी उस के साथ बेतकल्लुफ होने की कोशिश किया करती थी जिस से उसमान को यह ख़याल भी आता था कि वह उस का किरदार ख़राब करके उसका कौमी जज़्बा मारना चाहती है। उस शाम रैनी रास्ते में मिल गई। उस ने मुस्करा कर देखा और रुकना न चाहा मगर रैनी रुक गई और उस का रास्ता रोक लिया। उसमान सारिम को ऐसा कोई डर नहीं था कि सलीबी और यहूदी उन्हें देख कर खुश हूंगे कि उन की एक लड़की एक

मुस्तबा मुसलमान नौजवान को अपना गिरवीदा बना रही है। वह भी रुक गया और बोला– "मैं ज़रा जलदी में हूं रैनी।"

"तुम्हें कोई जलदी नहीं उसमान!" रैनी ने दोस्ताना लेहजे में कहा– "क्या तुम इतनी आसानी से मुझ से पीछा छुड़ा सकोगे?"

"मैं तुम से पीछा छुड़ाने की तो नहीं सोच रहा।"

"झूट न बोलो उसमान!" रैनी ने मुसकरा कर कहा– "मैं तुम्हारे घर से आरही हूं। तुम्हारी बहन ने मुझे साफ कह दिया है कि यहां अब कम आया करो। उसमान नाराज़ होता है। क्यों उस्मान! यह बात तुम ने खुद क्यों न कह दी?" उसमान सारिम खामोश रहा। उस की बहन ने जलद बाज़ी से काम लिया था। उस के लिए जवाब देना मुशिकल होगया। उसे खामोश देख कर रैनी ने कहा– "मुझे यह तो बतादो कि मैं तुम्हारे घर क्यों न आऊं?"

उसमान सारिम की ज़ेहनी हालत कुछ और थी। वह जलदी में था और उस के जज़बात भड़के हुए था। वह टालने के लिए कोई मौज़ूं जवाब न सोंच सका। उस के मुंह से वही बात निकल गई जो उस के दिल में थी। उस ने कहा– "रैनी! मालूम नहीं मैं खुद क्यों न तुम्हें कह सका कि हमारे घर न आया करो। अब सुन लो। हमारी आपस में कितनी ही मोहब्बत क्यों न हो हम कौमी लेहाज़ से एक दूसरे के दुशमन हैं। तुम ज़ाती मोहब्बत की बात करोगी मगर मैं कौमी मोहब्बत का काइल हूं जो सलीब और कुरआन में कमी पैदा नहीं होसकती। यह मेरा वतन है। तुम्हारी कौम यहां क्या कर रही है?....जब तक तुम्हारी कौम के आख़री आदमी का भी वजूद यहां रहेगा हम एक दूसरे के लिए दोस्त नहीं बन सकते... मेरे दिल में जो कुछ था वह तुम्हें बतादिया है।"

"और मेरे दिल में जो कुछ है वह भी सुन लो।" रैनी ने कहा– "मेरे दिल से तुम्हारी मोहब्बत न सलीब निकाल सकती है न कुरआन। मैं जब तक तुमहें देख न लूं मुझे चैन नहीं आता। तुम्हें मुस्कुराता देखती हूं तो मेरी रूह भी मुस्कुरा उठती है। सुन लो उसमान! अगर तुम ने मुझे अपने घर आने से रोका तो हम दोनों के लिए अच्छा नहीं होगा।"

"तुम मुझे धमकी दे सकती हो। तुम हुकूमरान कौम की बेटी होना!" उसमान सारिम ने तहम्मुल से कहा।

"अगर मेरे दिमाग़ में हुकुमरानी का नशा होता तो तुम यहां न खड़े होते, कैद ख़ाने में गल सड़ रहे होते।" रैनी ने कहा– "क्या तुम यह समझते हो कि मुझे तुम्हारे मुतअल्लिक कुछ मालूम नहीं? कहो तो तुम्हारी ज़मीन दोज़ कार रवाईयों की तफ़सील सुनादूं। कहो तो तुम्हारे घर से वह सारे खंजर, तीर व कमान और आतिश गीर माददा बरआमद करादूं जो तुम नें अपने घर में मेरी कौम और मेरी हुकूमत के ख़िलाफ इस्तेमाल करने के लिए छुपा रखा है और जो तुम्हें घर में रखने की इजाज़त नहीं। अन्नूर को तुम तेग़ज़नी सिखा रहे हो और तुम्हारे साथ जो दोस्त हमारे ख़िलाफ काम कर रहे हैं मैं उन में से कई एक को जानती हूं, लेकिन उसमान! तुम नहीं जानते कि तुम्हारे और कैद ख़ाने के दरमियान मेरा वजूद हाइल है। तुम जानते हो कि मेरा बाप कौन है और वह क्या नहीं जानता और क्या नहीं कर सकता।

वह पांच मरतबा घर बता चुका है कि उसमान की गिरिफतारी ज़रूरी होगई है। मैं ने पांचों मरतबा बाप से मिन्नत करके कहा है कि उसमान की बहन मेरी प्यारी सहेली है और उस का बाप एक टांग से माजूर है। दोतीन बार मेरे बाप ने मुझे डांट कर कहा कि मैं तुम लोगों के साथ तअल्लुक तोड़ दूंगा। मुझे यह भी कहा गया है कि मुसलमान इस काबिल नहीं कि उन के साथ इतनी ज़्यादा मोहब्बत और मुरव्वत की जाए, लेकिन मैं मां बाप की अकेली औलाद हूं, वह मुझे नाराज़ भी नहीं करना चाहते।"

सूरज गुरूब होगया था। शाम तारीक होने लगी थी। उसमान सारिम ख़ामोश रहा। उस का ज़ेहन किसी और तरफ़ था। वह कुछ जवाब दिए बग़ैर चल पड़ा। अभी दो ही कदम उठाए थे कि रैनी ने आगे होकर उसे इस तरह रोक लिया कि उस का सीना उसमान के सीने से लग गया। रैनी ने दोनो हाथ उस के कुलहों पर रख दिए। उस के जिस्म से उसमान को ऐसी इतर बीज़ बू आई जो मुसलमान घरानों में नहीं होती थी। लड़की उस के क़रीब होगई। इतनी क़रीब कि उन की सांसें टकराने लगीं। रैनी के मुलाएम रेशम जैसे बाल जब उसमान सारिम के गालों से लगे तो वह यूं तड़प उठा जैसे फंदे से आज़ाद होने की कोशिश की हो। रैनी ने उसे छोड़ दिया।

"मुझे आज़ाद कर दो रैनी!" उसमान सारिम ने उखड़े हुए लहजे में कहा– "मुझे पत्थर बन जाने दो। मेरा रासता कोई और है। हम इकटठे नहीं चल सकंगे।"

"मोहब्बत कुर्बानी मांगती है।" रैनी ने नशीली आवाज़ में कहा– "कहो क्या कुर्बानी मांगते हो। वादा करती हूं कि तुम जो जी में आए करो। मैं तुम्हें कैद नहीं होने दूंगी।"

"और मैं तुम से वादा करता हूं।" उसमान सारिम ने तंज़िया कहा– "कि मैं तुम्हें बताऊंगा ही नहीं कि मेरे जी में क्या आई है और मैं क्या करने वाला हूं। मैं तुम्हारे इस हसीन जिस्म और रेशमी बालों के जादू में नहीं आऊंगा।"

"तो फिर मुझे साबित करना पड़ेगा कि मैं तुम्हारे लिए कुर्बानी कर सकती हूं।" रैनी ने कहा– "जाओ उसमान तुम जलदी में हो लेकिन मैं तुम्हारे घर आने से बाज़ नहीं आऊंगी।"

उसमान सारिम दौड़ पड़ा। रैनी उसे देखती रही और आह भर कर चली गई।

❖

उसमान सारिम घर में दाख़िल हुआ तो बृजेस वहां पहुंच चुका था। उसमान सारिम अंदर चला गया और अपने बाप, मां और अन्नूर को तफ़सील से बताया कि सलीबियों ने मुसलमानों का एक काफ़िला लूटा है और दो लड़कियों को भी साथ ले आए हैं। उस ने तमाम तर वाक़आ सुना कर कहा कि वह अपने साथियों के साथ उन लड़कियों को आज़ाद कराने जा रहा है और इस मोहिम में अन्नूर की भी ज़रूरत है। उसमान सारिम के बाप की टांग सलीबियों के ख़िलाफ़ लड़ते हुए जवानी में कट गई थी और वह बाक़ी उम्र इस अफसोस में काट रहा था कि वह जेहाद के क़ाबिल नहीं रहा। उस ने उसमान से कहा– "बेटा! तुम ने अगर इतने ख़तरनाक काम का इरादा कर लिया है तो मुझे यह न सुनना पड़े कि तुम ने अपने साथियों के साथ ग़द्दारी की है। इस काम में पकड़े जाने का इमकान ज़्यादा है। अगर तुम पकड़े गए और तुम्हारे

साथी निकल आए तो जान देदेना, अपने साथियों के नाम पते न बताना। मैं तुम्हें सलाहुद्दीन अय्यूबी की फौज के लिए जवान कर रहा था लेकिन तुम्हारी बहन की शादी करके तुम्हें रुखसत करने की सोंची थी। जाओ और मेरी रूह को मुतमइन करदो। एक बार फिर सुन लो मैं किसी से यह नही कहलवाना चाहता कि तुम्हारी रगों में सारिम का खून नहीं था।"

बाप ने बेटी को भी इजाज़त देदी। उसमान सारिम ने उसे बताया कि बृजेस ड्योढ़ी में बैठा है और वह इस मोहिम की कमान और रहनुमाई करेगा। बाप डेयोढ़ी में बृजेस के पास चला गया। उसमान ने अन्नूर से कहा कि वह फ़ौरन अपनी एक या दो ऐसी सहेलियों को बुला लाए जो इस काम में शामिल होने की जुरअत रखती हैं। अन्नूर उसी वक़्त बाहर निकल गई और ज़रा सी देर में दो सहेलियों को बुला लाई इतने में उसमान सारिम का एक साथी अपनी बहन के साथ आगया। एक एक करके सातों जवान आगए। बृजेस ने लड़कियों को बताया कि वह किस रासते कहां जाऐं गी। रासते में उन्हें एक संतरी रोके गा। लड़कियां उस से पूछें गी कि ऊपर को कौन सा रास्ता जाता है। वह कहें गी कि शाह रेनालड ने उन्हें बुलाया है लेकिन वह ग़लत रास्ते पर आ गई हैं। उन में से एक लड़की नौकरानियों के भेस में होगी जिस के सर पर सामान होगा। संतरी को ख़त्म करना होगा फिर आग लगानी होगी। आग लगाने वाला सामान नौकरानी के सर पर होगा। घोड़े इस तरह बंधे हूंगे कि लमबे लमबे रस्सों के सिरे ज़मीन में दबाए हुए हूंगे और घोड़ों की पिछली एक एक टांग से ज़ंजीर या रस्सी बंधी होगी जो रस्सों से गड़ी हुई होगी। उन लम्बे लम्बे रस्सों को खंजरों से काट देना होगा। और चंद एक घोड़ों को खंजर भी मारने होंगे ताकि वह मुंह ज़ोर होकर भाग उठें।

बृजेस ने लड़कियों को फ़ौरन लिबास और हुलिया दुरूस्त करने को कहा और एक को नौकरानी बना दिया। उस के मुंह और हाथों पर मिट्टी और स्याही मल दी। फिर वह उसमान सारिम को और उसके साथियों को हिदायात देने लगा। वह खुद उनके साथ जारहा था। उसमान सारिम के बाप ने भी उन्हें कुछ मशवरे दिए फिर सब को ख़ंजर दिए गए। ख़ासा वक़्त गुज़र गया था,लेकिन बृजेस कह रहा था कि अभी शहर जाग रहा है। उस जगह की रौनक जागती थी जब शहर सो जाता था। तैयारियों में वक़्त गुजरता रहा और रवानगी का वक़्त हो गया। सब को अकेले अकेले जाना और एक तै शुदा मुकाम पर मिलना था। लड़कियों का रास्ता अलगथा। उन्हें अंदाजन वक़्त बता दिया गया था जब उन्हें आग लगानी थी। उस वक़्त बृजेस की जमाअत को हमले के मुकाम पर होना चाहिए... यह बेहद नाज़ुक और ख़तरनाक मुहिम थी जिसमें वक़्त की गलती और किसी की कोई बेएहतियाती सबको ऐसे कैद ख़ाने में डाल सकती थी जो जहन्नम से कम नहीं था। सबसे ज्यादा ख़तरा लड़कियों का था क्योंकि वह लड़कियां थीं। तसव्वुर किया जा सकता था कि उनके पकड़े जाने की सूरत में उनका क्या हश्र होगा। अन्नूर ने कहा कि पकड़े जाने का ख़तरा हुआ तो लड़कियां अपने ख़ंजरों से खुदकुशी कर लेंगी। वह कुफ्फार के हाथों ज़िंदा नहीं आयेंगी।

शहर पर ख़ामोशी तारी होते होते सारा शहर ख़ामोश हो गया। कहीं कोई रौशनी नज़र नही आती थी। सिर्फ़ एक जगह थी जहां रात के सुकूत का जर्रा भर असर नहीं था। यह वह

इमारत थी जहां सलीबियों की मुत्तहेदा कमान का हेडक्वार्टर था। वहीं सलीबी हुक्मरानों और आला कमांडरों की रिहाइश भी थी। यह लोग उस हाल में एक एक करके आ चुके थे जहां वह हर रात शराबनोशी और रक़्स की महफ़िल जमाया क़रते थे। उस रात उनका मौज़ू दो नई मुसलमान लड़कियां और मालो असबाब था जो क़ाफ़ले से लूटा गया था .... किसी ने पूछा कि यह लड़कियां किसी और काम में भी आ सकती हैं ? इसका जवाब एक फ़ौजी कमांडर ने यह दिया कि लड़कियां बालिग़ ज़ेहन की हैं इसलिए उन्हें जासूसी वग़ैरह केलिए इस्तेमाल नहीं किया जा सकता। एक की उम्र सोलह सतरह साल है और दूसरी की बाईस तेईस साल। कुछ अरसा तफरीह केलिए इस्तेमाल हो सकती हैं।

"उसके बाद उन्हें अपने दो फ़ौजी अफ़सरों के हवाले कर देना।" एक आला कमांडर ने कहा .."वह उनके साथ शादी कर लेंगे।"

यह लड़कियां उनके हंसी मज़ाक और ग़लीज़ बातों का मौज़ू बनीं रहीं और वह मुसलमानो के ख़िलाफ नफरत का इज़हार करते रहे। उस वक़्त लड़कियां दो अलग अलग कमरों में थीं। वह रो रो कर बेहाल हो रही थीं। दोनों के साथ एक एक ख़ादमा थी। यह अधेड़ उम्र औरतें बड़ी खुरांट और इस फन की माहिर थीं। वह लड़कियों को नहला चुकी थीं और उन्हें रात का लिबास पहना रही थीं। लड़कियों ने कुछ भी नहीं खाया था। उनके आगे ऐसे ऐसे खाने रखे गए थे जो उन्होंने कभी ख़्वाब में भी नहीं देखे थे लेकिन उन्होंने किसी चीज को हाथ नहीं लगाया था। दोनों को एक दूसरे के मुतअल्लिक़ मालूम नहीं था कि कहां हैं और उसके साथ क्या बीत रही है। दोनो औरतें उन्हें बड़े हसीन सब्ज़ बाग़ दिखा रही थीं। एक को बताया जा रहा था कि उसे फरांस के बादशाह ने पसंद किया है जो उसे ज़रो जवाहरात से लाद देगा। दूसरी को जर्मन के बादशाह की मलका बनने के ख़्वाब दिखाए जा रहे थे। उसके साथ ही उन्हें बड़े प्यार से धमकियां भी दी जा रही थीं कि उन्होंने अगर इन बादशहों को नाराज़ किया तो वह उन्हें फ़ौजी सिपाहियों के हवाले कर देंगे।

यह लड़कियां सेहराई देहात की रहने वाली थीं। कोई ऐसी बुज़दिल भी नहीं लेकिन बेबस हो गई थीं। अपने तहफ्फुज़ में कुछ भी करने के क़ाबिल नहीं रही थीं। उनके मां बाप और बड़े भाई ने उनकी इस्मत की ख़ातिर सलीबी इस्तबदाद के इलाके से हिजरत की थी मगर सलीबियो के फंदे में आ गए। लड़कियां पकड़ी गई। मां बाप मारे गए और भाई क़ैद हो गया। ख़ुदा के सिवा इनकी मदद करने वाला कोई ना था। वह क़ैद से निकल भागने के भी क़ाबिल नहीं थीं। वह रोती थीं तो सिर्फ़ ख़ुदा को याद करती और ख़ुदा को ही मदद के लिए पुकारती थीं। अपनी इज्ज़त के अलावा अपने भाई आफाक के लिए वह बहुत परेशान थीं। उस वक़्त आफाक बेगार कैम्प में तड़प रहा था। वह जख़्मी था और उसे पीटा भी बहुत गया था। पहले के कैदी शाम के वक़्त रोज़मर्रा की मुशक़्क़त से आए थे। उन्होंने उन नए कैदियों को देखा। उनकी बिपदा सुनी। उनमें सिर्फ आफाक जख़्मी था। किसी ने उसकी मरहम पट्टी नहीं की थी। तीन चार कैदियों ने मरहम और कुछ देशी दवाइयां छुपाकर रखी हुइ थीं। रात को उन्होंने आफाक के जख़्म साफ किए और मरहम भर कर ऊपर कपड़े बांध दिए।

आफाक़ को अपने जख़्मों का दर्द महसूस नहीं हो रहा था। उसका ध्यान अपनी बहनों की तरफ था। कैदियों से वह पूछता था कि उसकी बहनें कहां होंगी और वह क़ैद से किस तरह भाग सकता है। कैदियों ने साफ अल्फ़ाज़ में बता दिया था कि उसकी बहनें कहां होंगी और उनके साथ क्या सलूक हो रहा होगा। उसे बताया गया कि इस कैदख़ाने की कोई दीवार नहीं और उन्हें बेड़ियां भी नहीं डाली गई फिर भी वह यहां से भाग नहीं सकता क्योंकि संतरी घूम फिर रहे हैं और अगर वह यहां से निकल भी जाए तो जाएगा कहां? कहीं ना कहीं पकड़ा जायेगा। उसकी सज़ा इतनी अज़ियय्यतनाक मौत होगी जिसका वह तसव्वुर भी नहीं कर सकता। उसे बताया गया कि यहां कई कई सालों से कैदी पड़े हैं जो कर्क ही के रहने वाले हैं लेकिन भागने की जुर्रत नहीं करते । वह जानते हैं कि वह पकड़े ना गए तो सलीबी उनके पूरे ख़ानदान को कैद में डाल देंगे। इन तमाम मजबूरियों और ख़तरों के बावजूद आफाक़ फरार और बहनों को रेहा कराने की सोच रहा था। उसका जिस्म चलने के भी क़ाबिल नहीं था। कैदी दिनभर के थके मांदे बेहोशी की नींद सो गए और आफाक़ जाग रहा था।

❖

"लड़कियां पकड़ी ना गई हों।" उसमान सारिम ने सरगोशी में कहा.

"ख़ुदा को याद करो उसमान!" बृजेस ने कहा .."हम इस वक़्त मौत के मुंह में हैं। दिल से तमाम ख़ौफ निकाल दो और ख़ुदा को दिल में बिठा लो... तुम्हें दूसरे लड़कों पर भरोसा है?"

"पूरा भरोसा।" उसमान ने कहा "उनकी फिक्र न करो। मुझे लड़कियों की फिक्र है।"

"ख़ुदा को याद करो ।" बृजेस ने कहा "हम चोरी करने नहीं आए। अल्लाह मदद करेगा।"

उस वक़्त उसमान सारिम और बृजेस घर में नहीं थे। वह उस इमारत से जिसमें मग़विया लड़कियां थीं इतनी दूर झाड़ियों में छुपे हुए थे जहां से इमारत उन्हें अपने सर पर खड़ी नज़र आ रही थी। उनके सात साथी उनसे थोड़ी दूर बिखर कर उनहीं की तरह छुपे हुए थे। बृजेस ने उन्हें अच्छी तरह बता दिया था कि कौन से इशारे पर उन्हें क्या करना है। उसमान सारिम को उन चार लड़कियों का ग़म था जो फ़ौजी सामान और घास को आग लगाने के लिए गई थीं। उनमें उसकी अपनी बहन अन्नूर भी थी। इस वक़्त तक आग लग जानी चाहिए थी। तवक्को यह थी कि अगर स्कीम कामयाब रही तो आग के शोले उठेंगे। फैलेंगे। इस इमारत से तमाम कमांडोज वग़ैरह आग की तरफ भागेंगे जो एक कुदरती अमल था क्योंकि फ़ौजी सामान को आग लगने की सूरत में वह अपनी महफिले ऐशो तरब में मगन नहीं रह सकते थे। उनके जाते ही उन नौजवानों को इमारत पर टूट पड़ना था, मगर लड़कियों को गए बहुत वक़्त हो गया था। शायद संतरी ने उन्हें रोककर वापस भेज दिया होगा।

लड़कियां अभी संतरी तक ही नहीं पहुंची थी क्योंकि वयहां संतरी था ही नहीं।संतरी का न होना ख़तरा था, क्योंकि ज़िंदा रहने की सूरत में वह इन्हें आग लगाते पकड़ सकता था। लड़कियों ने संतरी को ढूंढना शुरू कर दिया। वह ख़ुश्क घास के पहाड़ों जैसे ढेरों के पास से

गुज़र रही थीं। अंधेरे में उन्हें ख़ीमों के अम्बार नज़र नहीं आ रहे थे। वह इकट्ठी जा रही थीं। उन्हें एक जगह डंडे से बंधी हुई मशअल का शोला नज़र आया। वह उधर चली गईं। संतरी सामने आगया। मश्अल का डंडा जमीन में गड़ा हुआ था। संतरी ने मश्अल उठा ली और लड़कियों के करीब आकर उन्हें रोका।वह लड़कियों का भड़कीला लिबास और सज धज देखकर मरऊब हो गया। उनके साथ एक नौकरानी थी जिसने सर पर गठरी उठा रखी थी। संतरी ने उनसे पूछा कि वह कौन हैं और कहां जा रही हैं।

"मालूम होता है हम ग़लत रास्ते पर आ गई हैं।" अन्नूर ने बड़ी शोख़ हंसी से कहा... "शाह रेनाल्ड का दावतनामा आया था। हमने रात को आने का वादा किया था। जरा देर हो गईतो किसी ने बताया कि यह रास्ता छोटा है। यहां तो आगे मालूम होता है कि घोड़े वग़ैरह बंधे हैं। हम किधर जायें?"

एक मामूली से संतरी पर रोब तारी करने के लिए शाह रेनाल्ड का नाम ही काफी था।वह जानता था कि सलीबी बादशाह किस कुमाश के लोग हैं। रेनाल्ड ने इन लड़कियों को ऐशो इशरत और नाच गाने के लिए बुलाया होगा। लड़कियों के लिबास,उम्रें और उनकी शक्ल व सूरत और अन्नूर के बात करने का निडर और खिलंडरा सा अंदाज़ बता रहा थाकि यह उसके आला हुक्काम के मतलब की लड़कियां हैं। उसने उन्हें रास्ता बताना शुरू कर दिया। एक लड़की उसके पीछे होगई और इतनी ज़ोर से ख़ंजर उसकी पीठ में घोंपा कि दिल को चीरता हुआ आगे निकल गया। उसके हाथ से मश्अल गिर पड़ी। अन्नूर ने मश्अल पर दोनों पॉव रखकर उसका शोला बुझा दिया। बाकी लड़कियों ने भी संतरी के जिस्म में अपना ख़ंजर दाख़िल कर दिया। संतरी की आवाज भी न निकली। बृजेस ने उन्हें बताया था कि घास को आग लगेगी तो उसकी रौशनी में उन्हें ख़ीमों के ढेर और गाड़ियां नज़र आयेंगी। घास के पहाड़ तो उन्हें अंधेरे में भी नज़र आ रहे थे। जो लड़की नौकरानी बनी हुई थी उसने जल्दी से सर से गठरी उतारी। उसमें आतिशगीर माद्दा और आग लगाने का सामान था।

उन्होंने घास के एक ढेर को आग लगा दी। फिर दूसरे और तीसरे को और ज़रा सी देर में तमाम ढेरों को आग लग गई। अब ख़तरा बढ़ गया था क्योंकि रौशनी हो गई थी। थोड़ी दूर उन्हें लिपटे हुए ख़ीमों के ढेर नज़र आ गए। यह कपड़ा था। इसे आग लगाना मुश्किल न था। ख़ाली घोड़ा गाड़ियां एक दूसरे के साथ खड़ी थीं। लड़कियों में ग़ैरमामूली फुर्ती आगई थी। उन्होंने तीन चार गाड़ियों पर आतिशगीर माद्दा फेंका और आग लगा दी। इतनी देर में घास के शोले आसमान तक पहुंचने लगे। लड़कियां घोड़ों की तरफ़ भागीं। अभी तक कोई बेदार नहीं हुआ था। लड़कियों ने ख़ंजरों से वह लंबे लंबे रस्से काट दिए जिनके सिरे ज़मीन में दबे हुए थे और हर रस्से के साथ चालीस पचास घोड़े बंधे हुए थे। लड़कियों ने चंद एक घोड़ों को ख़ंजर मारे। वह बिदक कर और शोलों के डर से हैबतनाक आवाज़ से हिनहिनाने लगे और अंधाधुंध भागने लगे। जो घोड़े खुल ना सके उन्होंने ऊधम बरपा कर दिया। मालूम नहीं कितने घोड़े खुलकर इधर उधर दौड़ने और हिनहिनाने लगे। ऊंट खुले थे और आराम से बैठे थे वह उठ खड़े हुए और अंधाधुंध भागने लगे।

चारों लड़कियां बेलगाम घोड़ों और बेमहार ऊंटों के नरगे में आगईं। दूसरी तरफ़ शोले थे जिनकी तपिश दूर से भी जिस्मोंको जलाती थी और जानवरों के इस क़दर ज़्यादा शोरो गुल और धमाकों जैसे टापू से फ़ौज बेदार हो गई।

मुग़विया लड़कियों को दुल्हनें बना दिया गया था। दोनों के कमरों में बयक वक़्त एक एक आदमी दाख़िल हुआ। यह सलीबियों के जंगजू हुक्मरान थे। वह शराब में बदमस्त थे। ख़ादमायें बाहर निकल गईं। लड़कियां कमरों में भाग दौड़ कर पनाहें ढूंढने लगीं। उनकी इस्मत का पासबान ख़ुदा के सिवा कोई न था। एक लड़की दोज़ानूं गिर पड़ी और रोकर ख़ुदा को मदद के लिए पुकारा। सलीबी ने कहकहा लगाया और उसकी तरफ़ बढ़ा। बाहर उसे शोरोगुल सुनाई दिया। यह ग़ैर मामूली शोर था।उसने दरवाजा खोल कर देखा तो ऐसे लगा जैसे पूरे शहर को आग लग गई हो। घोड़ों और ऊंटों की ख़ौफ़ज़दगी का यह आलम कि कुछ घोड़े इस बुलंदी पर भी चढ़ आए जिस पर यह इमारत थी। उसका नशा फ़ौरन उतर गया। दूसरा भी बाहर निकल आया। दो तीन आदमी दौड़ते आए और घबराए लहजे में कहा कि घास ,ख़ेमों और गाड़ियों को आग लग गई है। दौड़ते हुए जानवरों ने कई आदमियों को कुचल दिया है।

अगर आग शहर को लगती तो यह हुक्काम परवाह ना करते। वहां तो फ़ौज का सामान जल रहा था और फ़ौज के सैकड़ों जानवर खुल गए थे। जरा सी देर में तमाम हुक्मरान और कमांडर और वहां जो कोई भी था ,दौड़ता निकल गया। वह अपनी निगरानी में आग बुझाने का बन्दोबस्त करना चाहते थे। इस इमारत के इर्द गिर्द जो मुसल्लह पहरेदार था वह भी वहां से हट गया। बॉडीगार्डज भी अपने हुक्काम के पीछे दौड़ते गए। बृजेस ने बुलंद आवाज से पुकारा .."तुम भी चलो।" और वह इमारत की तरफ़ उठ दौड़ा। उसके आठ जवान भी दौड़ पड़े। उनके हाथों में ख़ंजर थे। इमारत के बरामदों में जाकर उसने अपने उन दो साथियों को पुकारना शुरू करदिया जो वहां इसाईयों के भेस में मुलाजिम थे। उनमें से एक मिल गया। उसने बृजेस को पहचान लिया। बृजेस ने पूछा कि आज जो लड़कियां यहां लाई गई हैं वह कहां हैं? उसे मालूम नहीं था। उसने कमरे दिखा दिए और ख़ुद भी साथ हो लिया। वहां अब सहूलत यह पैदा हो गई थी कि कोई ज़िम्मादार आदमी मौजूद नहीं था। पीछे नौकर चाकर रह गए थे जो आगे जाकर बुलंदी से आग का तमाशा देख रहे थे। बृजेस की स्कीम पूरी तरह कामयाब थी।

वह मुलाजिम की रहनुमाई में उन कमरों में जाने लगे जहां लड़कियां होती थीं। वहां बरामदों में कुछ लड़कियां खड़ी थीं। उनमें बाज नीम बरहना थीं। उनसे पूछा गया कि आज जो लड़कियां आई हैं वह कहां हैं? उन्हें भी मालूम न था। आख़िर एक कमरे में गए तो एक लड़की मिल गई। वह कमरे में दुबकी हुई थी। उसमान सारिम और उसके बाज साथियों ने उसे दिन के वक़्त देखा था।जब उन दोनों को लुटे हुए काफ़ले के साथ ले जाया जा रहा था। बृजेस की पारटी के तमाम आदमी नकाब पोश थे। उन्हें देख कर लड़की ने चीख मारी। बृजेस ने उसे बताया कि वह मुसलमान हैं और उसे रिहा कराने आऐ हैं मगर वह लड़की

इतनी डरी हूई थी कि उन के हाथ नही आ रही थी। उन्होंने उसे ज़बरदसती उठा लिया। दूसरे कमरे में उस की बहन मिल गई उस का रद्दे अमल भी यही था। उसे भी ज़बरदस्ती उठाया गया। दूसरी लड़कियां जो एक अरसे से सलीबयों के पास थीं,ये मन्ज़र देख रही थीं। वह उन आदमियों को डाकू समझ कर इधर उधर भागने लगी। मुग़विया बहनें चीख व पूकार कर रही थीं। उन्हें बृजेस ने गुस्से से कहा वह सब मुसलमान हैंऔर उन्हें मुसलमान घरानों में ले जाकर छुपाऐगें। बड़ी ही मुश्किल से उंन्हें खामूश किया गया और जांबाज़ों की ये जमाअत वहां से निकल गई।

❖

आग का मनज़र बेहद ख़ोफ़नाक था। शोले तवक्को से कहीं ज़ियादह उंचे जारहे थे और दूर दूर तक फैल गए और फैलते ही चले जारहे थे। घोड़ों और उंटों ने सारे शहर मे कयामत बरपा कर रखी थी। सारा शहर जाग उठा था। गलियों में, सड़कों पर और मैदानों में उन जानवरों ने इस कदर दहशत फैलादी थी कि लोग दुबक कर घरों में बैठ गए थे और आग ने जो दहशत फैलाई थी उस से बाज़ लोग घरों से भागने की तय्यारीयां करने लगे थे। अफरा तफरी और भगदड़ मची हूई थी। सुलतान अय्यूबी के जासूस भी वहां मौजूद थे। वह अक़ल मन्द और मौका शनास थे। उन्होंने आग , भागते दौड़ते जानवर और अफरा तफरी देखी तो ये मालूम किये बग़ैर कि ये मामला किया है, ये मशहूर कर दिया कि सलाहुद्दीन अय्यूबी की फ़ौजें शहर में दाख़िल हो गई हैं और शहर को आग लगा रही हैं । ये अफवाह मुसलमानों के लिये हौसला अफज़ा थी। ईसाइयों और यहूदीयों के होश उड़ गए। ये अफवाह आग की तरह सारे शहर में फैल गई। ग़ैर मुसलिमों ने भागना शुरूअ कर दिया।

सलीबी हुकमरान और आला हुक्काम आग की जगह पहुंचे तो वहां कोई इनसान नही था। उन्होंने भी यही समझा कि मुसलमानों की फ़ौज किले में कहीं नक़ब लगाकर अन्दर आगई है। उन्हों ने फ़ौज को किले के दिफा के लिये जन्गी तरतीब में फ़ौरन चले जाने का हुक्म दिया और उसी फौज के कुछ हिस्से को किले के बाहर जाने को कहा। दो तीन कमाण्डर दौड़ कर किले की दीवार पर चढ़े और बाहर देखा। बाहर खामोशी थी। किसी तरफ़ से हमला नही हुआ था। क़िले का अक़बी दरवाज़ा खोल दिया गया ताकि फ़ौज बाहर जा सके। रात के वक़्त किले का दरवाज़ा खोला जाता था लेकिन इस खियाल से दरवाज़ा खोल दिया गया कि सुलतान अय्यूबी का कोई जांबाज़ दस्ता अन्दर आ गया है जिस ने भगदड़ मचादी है। ये बाहर के हमले का पेश ख़िमा है। फ़ौज आ रही होगी। इस फ़ौज को शहर से दूर रोकने के लिये सलीबीयों ने रात को ही फ़ौज बाहर भेज दी और दरवाज़ा खोलने का ख़तरा मोल ले लिया। ये फ़ैसला दर असल घबराहट में किया गया था और ये एक ग़लत फ़ैसला था। बाज़ ग़ैर मुसलिमों ने जो अकबी दरवाज़े के क़रीब थे देख लिया कि दरवाज़ा खुल गया है, वह अन्धा धुन्ध दरवाज़े की तरफ़ भागे। उन्हें देख कर दुसरे शहरी भी उन के पीछे गए। वहां से फ़ौज गुज़र रही थी । शहरियों का सैलाब आगया जिसे कोई न रोक सका।

आग फैलती जारही थी। घोड़ा गाड़ियों के करीब ही रसद की बोरियों के अम्बार थे। बहुत

सा दिगर अकसाम का सामान भी पड़ा था। आग पर काबू पाना ज़रूरी था मगर पानी की किल्लत थी। न कोई तालाब था न कोई नदी। शहर में थोड़े से कूंऐ थे लेकिन पानी लाने वाला कोई न था। शहरी घरों में छुप गए थे या भाग रहे थे । ये काम फ़ौज कर सकती थी । फ़ौज की कुछ नफरी को बुलाया गया और उस के साथ ही किसी को उन मुसलमान कैदियों का ख़्याल आ गया जो बेगार कैम्प में पड़े हुए थे। फ़ौरन हुक्म दिया गया कि कैदियों को इस एलान के साथ ले आओ कि वह आग पर काबू पा लें तो उन्हें सुबह के वक़्त रिहा कर दिया जाएगा। क़ैदी बाहर के शोर से जाग उठे थे और सन्तरी उन्हें डन्डे मार मार कर सो जाने को कह रहे थे। इतने में हुक्म आ गया कि क़ैदियों को पानी लाने और आग पर फेंकने के लिये ले चलो। रिहाई का एलान भी किया गया। उन में आफाक भी था। उस का जिस्म ठण्डा हो कर और ज़ियादह दुखने लगा था। उस ने एक क़ैदी से कहा.... " सलीबयों की सारी सलतनत जल जाए मैं आग बुझाने नहीं जाउंगा।"

" पागल न बनो" .... एक क़ैदी ने उसे कहा....." उन लोगों ने कह दिया कि आग बुझाओ और कल रिहा होजाओ लेकिन ये धोका है। ये काफिर झूट बोलते हैं। तुम हमारे साथ चलो और भाग निकलो। हम नही भाग सकते क्योंकि ये लोग घरों से वाकिफ हैं। तुम निकल जाना।"

" जाउंगा कहाँ?"

क़ैदि ने उसे अपना घर का पता बता कर कहा....." मैं कोशिश करुंगा कि मौक़ा महल देख कर तुम्हें अपने घर पहुंचा दूं, लेकिन वहां ज़ियादा दिन न रुकना क्योंकि सलीबी मेरे सारे कुम्बे को सज़ा देंगें।"

कैदियों को सलीबी ले गए और उन्हें तकसीम करके मुख़्तलिफ़ कुंओं पर ले जाया गया। फ़ौजी पानी निकाल रहे थे। कैदियों ने मश्कीज़े उठाने शुरू कर दिये । वह दौड़ दौड़ कर जाते और आग पर पानी फैंकते थे । एक दो चक्कर में सन्तरी उन के साथ रहे मगर ये मुमकिन नही था । क़ैदी और फ़ौजी गड मड हो गए। किसी को किसी का होश न रहा। सलीबी कमाण्डर घबराहट में सब को गालियां दे रहे थे। इतने में घोड़ों का डरा हुआ रेवड़ दौड़ता आया। आग बुझाने वाले कैदी और फ़ौज उन की ज़द में आ गए। सब इधर उधर भाग उठे। बाज़ कुचले भी गऐ और उस से फाइदा उठाते हुए आफाक़ को वह पूराना क़ैदी अपने साथ ले गया। मुसलमानों को कोई ख़तरा नही था। वह ख़ुश थे कि मुसलमान फ़ौज आ गई है। कैदी अपने घर में दाख़िल हुआ। उस का सारा खानदान जाग रहा था। उसे देख कर सब बहुत मसरूर हुए लेकिन उस ने आफाक़ को उन के हवाले करके कहा......" इसे छिपा लो और जल्दी

शहर से निकाल देना। मैं नही रुक सकता। सलीबीयों ने कल रिहाई का वादा किया है। इसे अभी कोई नही जानता । अगर मैं यहां रुक गया तो शायद कभी भी रिहाई न मिलेगी।"

" क्या ये सच है कि सलाहुद्दीन अय्यूबी की फ़ौज अन्दर आ गई है ?" क़ैदी के बाप ने पूछा।

" कुछ पता नही ".....कैदी ने जवाब दिया....." आग बहुत ज़ोर की है। मालूम नही कब बुझेगी।"

" अगर हमारी फ़ौज नही आई तो फिर हम ये ख़तरा मोल ले सकते हैं?" कैदी के बाप ने कहा।

" ये आदमी खुद ही निकल जाएगा".... कैदी ने कहा...... ये कल यहां से निकल जाएगा।"

"इस का हमें कोई ख़तरा नही।"..... कैदी के बाप ने कहा........ " अभी अभी तुम्हारा छोटा भीई दो मुसलमान लड़कियों को लाया है। उन्हें उस ने और सारिम के बेटे उसमान ने और उन के दोसतों ने सलीबी के शाही ख़ाना से अगवा किया है। दोंनों को हमने घर में छुपा लिया है।"

" कौन हैं वह लड़कियां?" कैदी ने पुछा।

" कहते हैं उन्हें कल एक काफले से सलीबीयों ने अग़वा किया था।" बाप ने जवाब दिया. ...... " उनका भाई सुना कैद में है।"

आफाक़ ने तड़प कर पूछा.......कहां हैं वह लड़कियां ?"

ज़रा सी देर में अफाक अपनी बहनों को गले लगा रहा था। खुदा ने उनकी फरयाद सुन ली थीं। ये बड़ा ही जज़बाती मन्ज़र था। उनके मां बाप मारे गये थे। वह लुट गये थे। उन्हें एसी मोअजिज़ा नुमा मुलाकात की तवक्को नही थी........ जिस कैदी का ये घर था वह दौड़ कर बाहर निकल गया। वह कैद से भागना नही चाहता था। उसका छोटा भाई बृजेस और उसमान सारिम के साथ था। वह लड़कियों को घर छोड़ कर कहीं चला गया था।

वह अचानक आगया। उस ने लड़कियों से कहा ......"फ़ौरन शहर से निकलने का मौका पैदा हो गया है।"...... आफाक के मुतअल्लिक उसे बताया गया कि वह इन लड़कियों का भाई है और कैद से फरार होकर आया है। उस ने आफाक को भी अपने साथ लिया और बाहर ले गया। बाहर तीन घोड़े खड़े थे। ये बृरजेस का इन्तिज़ाम था। उस ने दोनो बहनो को घोड़ों पर सवार किया और जब तीसरा घोड़े पर खुद सवार होने लगा तो उसे आफाक के मुतअल्लिक बताया गया। उस ने आफाक को तीसरे घोड़े पर सवार किया और खुद उछल पड़ा। उस ने इतना ही कहा..... "खुदा हाफिज़ दोस्तो! ज़िन्दा रहे तो मिलेंगें।" ..... और वह दौड़ पड़ा। वह शहर के अकबी दरवाज़े की तरफ़ जारहा था जहां से डरे हुऐ शहरीयों का जुलूस बाहर को भागा जा रहा था। ये दरवाज़ा बृजेस ने पहले से ही देख रखा था। शहर से निकलने का मौक़ा पैदा हो गया था। उस ने कहीं से तीन घोड़े पकड़े और ले आया। किसी सलीबी क़माण्डर ने देख लिया कि शहरी तो भाग रहे हैं। उस ने दरवाज़ा बन्द करने का हुक्म दे दिया। बृजेस जब वहां पहुंचा तो दरवाज़ा आहिसता आहिसता बन्द हो रहा था। और शहरियों का एक हुजूम दरवाज़े में फंस गया था। एक वावेला बपा था। बृजेस ने चिल्लाना शुरू कर दिया....." पीछे से फ़ौज आरही है। दरवाज़ा खोल दो। भागो। मुसलमान आरहे हैं। "हुजूम ने आगे को ज़ोर लगाया तो बन्द होते होते दरवाज़ा खुल गया। इनसान रुके हुए दरयिा कि तरह बन्द तोड़ कर निकल गये।

बाहर निकल कर बृजेस ने आफाक़ से कहा कि किसी एक बहन के पीछे सवार हो जाओ। अगर मैं तुम्हारे साथ सवार हुआ तो एक घोड़े पर दो मरदों का वज़न ज़ियादा हो जाएगा। हमारा सफर लम्बा है.....आफाक़ एक बहन के पीछे सवार हो गया। दुसरी से उस ने कहा कि वह सवारी से डरे नहीं। घोड़ा उसे गिराएगा नहीं। उन्होने घोड़े दौड़ा दिये। बृजेस को मालूम था कि रास्ते में सलीबी फ़ौज खीमा ज़न है। उसे ये भी मालूम था कि कौन सी जगह फ़ौज नही है। वह उस सिम्त हो लिया। करक के भागे हुए लोग इधर उधर बिखरते जा रहे थे। शोलों की रौशनी दूर दूर तक जारही थी। आफाक़ और लड़कियों को मालूम नही था कि उन्हे किस तरह रिहा कराया गया है। बृजेस खामूश था। वह अगर बोलता था तो सिर्फ़ इतना कि आफाक़ से उसकी खैरियत पूछता था और उस की जो बहन घोड़े पर अकेले सवार थी, उस से पुछ लेता था कि वह डर तो नही रही। करक के शोले पीछे हटते जारहे थे और रात घोड़ों की रफतार के साथ गुज़रती जारही थी।

❖

सुबह तुलू हुई तो बृजेस सुलतान अय्यूबी के फ़ौज में दाख़िल हो चूका था। उस ने एक कमाण्डर से अपना तआरुफ कराया और सुलतान अय्यूबी के मुतअल्लिक पूछा कि कहां होगा। कमान्दार उसे अपने दसतों के कमान्दार के पास ले गया जिस ने उसे बताया कि सुलतान अय्यूबी कहां हो सकता है। बृजेस अपनी इस कामयाबी पर बेहद खूश था। उस ने सिर्फ़ लड़कियों को सलीबयों से आज़ाद नही कराया था बल्कि करक में आतिश ज़नी जैसी तख़रीबी कारवाई करके सलीबी फ़ौज के ग़ैर मुसलिम शहरीयों के जज़बे पर खौफ तारी कर आया था। वह सुलतान अय्यूबी को ये मशवरा देना चाहता था कि करक पर फ़ौरन हमला कर दिया जाए।

करक की सुबह बड़ी भयानक थी। शोलों की बुलन्दी और तुन्दी ख़त्म हो गई थी लेकिन आग अभी तक सुलग रही थी। सलीबी फ़ौज के रसद और जानवरों का तमाम तर खुश्क चारा जल गया था। खीमों के एलावा बेशुमार जन्गी सामान नज़्रे आतिश हो गया था। कुछ ऊंट ज़िन्दा जल गये थे। तमाम घोड़े और ऊंट रात भर दौड़ दौड़ कर थक गये और अब सारे शहर में आवारा फिर रहे थे, जगह जगह उन लोगों की लाशें पड़ी थीं जो बे लगाम घोड़ों और बेमुहार ऊंटों के ज़द में आकर कुचले गये थे। फ़ौजी और कैदी अभी तक कूएं से पानी ला ला कर आग पर फेंक रहे थे। सलीबी हुक्काम अभी तक ये समझ रहे थे कि सुलतान अय्यूबी की फ़ौज अन्दर आ गई लेकिन वहां कोई आसार नही थे। उन्हों ने किले की दीवारों पर जाकर हर तरफ़ देखा। बाहर सलीबीयों की अपनी फ़ौज किले के इर्द गिर्द मौजूद थी। इसलामी फ़ौज का दूर दूर तक नाम व निशान न था। अब ये तफतीश करनी थी कि आग किस तरह लगी।

उस सन्तरी की लाश मिली जिसे लड़कियों ने हलाक किया था लेकिन घोड़ों और ऊंटों ने उसे एसी बुरी तरह रौंदा था कि खन्जरों के ज़ख़्म पहचाने नही जाते थे। उस से थोड़ी दूर चार ज़नाना लाशें मिलीं। ये उस मैदान में पड़ी हुई थीं जहां घोड़े और ऊंट बान्धे जाते थे। ये

तफतीश करने वाला हाकिम कोई मामूली आदमी नहीं बल्कि सलीबीयों की इन्टली जिन्स का डाइरेक्टर हरमन था। उस मैदान में लाशें तो और पड़ी थीं लेकिन उसे चार औरतों की लाशें मिलीं। उनके चेहरे घोड़ों के पावं तले आकर मस्ख हो गये थे। जिस्म का कोई हिस्सा सलामत नही था। ये लाशें एक दूसरे से दूर दूर पड़ी थीं। उनके कपड़े तार तार हो गये थे। ख़ाक व ख़ून में उसका असल रंग नज़र नही आता था। इतना ही पता चलता था कि ये ज़नाना कपड़े हैं। लाशें देख कर भी ये सबूत मिलता था। कि ये औरतों की हैं। सब के जिस्मों से खाल उखड़े हुए थे। और कई जगहों से गोश्त बाहर आया हुआ था। कई हड्डीयां नन्गी हो गई थीं और टूटी हुई भी थीं। हर लाश के गले में ज़न्जीर और ज़न्जीर के साथ एक छोटी सलीब बन्धी हुई थी। ये सलीबें उस अमर का सबूत था कि औरतें ईसाइ थी।

हरमन और फ़ौजी अफ़सर हैरान थे कि औरतों की लाशें यहां क्यों पड़ी हैं। ये फ़ौजी इलाक़ा था और उस तरफ़ से किसी शहरी को गुज़रने की इजाज़त नही थी और न ही ये आम गुज़रगाह थी। ये तो जानवरों और रसद वगैरों की जगह थी। वहां चन्द लाशें और भी पड़ी थीं वह फ़ौजीयों की थी। औरतें रात के वक़्त इधर क्यों आई?.....इस सवाल का जवाब देने वाला कोई न था। सिर्फ़ कियास आराई की जासकती थी जो की गई। कहा गया कि फ़ौजी पेशा वर औरतों को इधर ले आये होंगें मगर असल मसला तो ये था कि आग किस तरह लगी। शहर के मुसलमानों पर शक किया जा सकता था, लेकिन मुजरिमों का सुराग लगाना आसान नही था। हुक्म दिया गया कि खुफ़िया पुलिस और फ़ौज के सुराग़ रिसां शहर में मुशतब्बह मुसलमानों की छान बीन करें और जिस पर ज़रा सा भी शक हो उसे क़ैद में डाल अज़ियत रिसां तहकीकात करें।

अन्नूर और उन की लड़कीयों के घर वाले बहुत परीशान थे। लड़कियां वापस नही आई थीं। डर ये था कि पकड़ी न गई हों। उन्होंने अपना फ़र्ज़ मुकम्मल कामयाबी से अदा कर दिया था लेकिन वह अभी तक ला पता थीं। उसमान सारीम और उसके दोस्त उन तमाशाईयों के हुजूम में जा खड़े हुऐ जो आतिश जदह जगह खड़े थे। वहां उन्हें पता चला की चार औरतों की लाशें मिली हैं। थोड़ी देर बाद एलान हुआ कि चार औरतों की लाशें फलां जगहें रख दी गई हैं। तमाम शहरी उन्हें देखकर पहचानने की कोशिश करें। तमाशाईयों का हुजूम उधर को चला गया। उसमान सारीम और उसके दोसतों ने इकट्ठी रखी हुई चार लाशों को देखा। उनकी सलीबें उन के सीने पर रख दी गई थी। कोई भी किसी लाश को न पहचान सका। पहचान्ने के लिये वहां कुछ था ही नहीं। चेहरों से भी खाल उतरी हुई थीं। बाज़ के चेहरे अन्दर को पचक गये थे।

उसमान सारिम के आसूं निकल आए। वह तमाशाईयों में से निकल गया। उसके दोस्त भी उस से जा मिले। उन सब को मालूम था कि ये लाशें किन की हैं। उन में एक उसमान सारिम की बहन अन्नूर की लाश थी। बाकी तीन लाशें उस की सहेलीयों की थीं चारों रात को अपना फर्ज अदा करके शहीद हो गई थीं। उनकी शहदात का एनी शाहिद कोई भी नही था। लाशों की हालत जो कहानी बियान करती थी वह कुछ इस तरह हो सकती थी कि उन

लड़कियों ने सन्तरी को हलाक करके आग लगाई। बाद में घोड़ों के रस्से काटे और उन्ही घोड़ों की भगदड़ की ज़द में आ गईं। मालूम नही कितने सौ घोड़े और ऊंट उन लाशों को रौंदते रहे। दो लड़कियों की इसमत बचाने के लिये चार लड़कियां कुरबान हो गईं। बृजेस ने अपने हाथों उन लड़कियों के गले में सलीबें लटकाई थीं। ताकि बवक़्ते ज़रूरत वह सलीबें दिखाकर ज़ाहिर कर सकें कि वह ईसाइ हैं।

उन लड़कियों का जनाज़ा नहीं पढ़ा गया। उनहें सलीबीयों ने ईसाइ समझ कर अपने कबरिसतान में कहीं दफन कर दिया। उन के लवाहेक़ीन ने मातम नही किया। ईसाले सवाब के लिये कुरआन ख्वानी कराई गई। घरों में ग़ाइबाना नमाज़े जनाज़ा पढ़ी गई। चारों लड़कियों के बापो ने एक ही जैसे जज़बात का इज़हार किया। उन्होंने कहा कि इसलाम के नाम पर वह चार चार बेटे को कुरबान करने को तय्यार हैं मगर उन से जो कुरबानी ली जाने लगी वह बड़ी ही अज़ियत नाक थीं। सलीबी फौज ने तमाम मुसलमान घरों की खाना तालाशी शुरू कर दी। ख़तरा था कि जो हथियार उन्होंने घरों में छुपा रखें हैं वह पकड़े जायेगें। सब ने हथियार अन्दरूनी कमरों को खोद कर दबा दिये। दूसरा ख़तरा ये था कि जो चार लड़कियां शहीद हो गई थीं, उन के मुतअल्लिक जवाब देना मुश्किल था कि कहां चली गई हैं। आग की रात दूसरे ही दिन इमाम को जब लड़कियों की ख़बर सुनाई गई तो उस ने पहली बात ये कही......" तुम्हारे ग़ैर मुसलिम पड़ोसी और मुसलमान मुखबिर ज़रूर पूछेंगें कि लड़कियां कहां हैं तो क्या जवाब दोगे?"

इमाम दानिशमन्द और दूर अन्देश इनसान था। उसने गहरी सोंच के बाद कहा........" चारों लड़कियों के बाप और भाई मेरे साथ आएँ।"........ वह आगए तो उसने सब को एक तरीका बताया और कुछ बातें ज़ेहन नशीन कराईं। वह सब को सलीबीयों की इन्तेजामिया के दफतर में ले गया और वहां के सब से बड़े हाकिम से मुलाकात की इजाज़त लेकर बड़े गुस्से और जज़बाती लहजे में कहा...... "मैं इन लोगों का इमाम हूं। ये मेरे पास फरयाद ले कर आएँ हैं कि रात आग लगी तो ये सब आग बुझाने के लिय दौड़ पड़े। ये रात भर कूएँ से पानी निकालते रहे। शहर में भगदड़ मच गई। किसी को किसी का होश न रहा। ये लोग सुबह के वक़्त घरों को गए तो इन्हें पता चला की आपकी फौज के कुछ आदमी उन के घरों मे घुस गये और उनकी कुवांरी लड़कियां उठा कर ले गये। हमारी चार लड़कीयां ला पता हैं।"

" हमारी फौज पर इलज़ाम लगाने से पहले सोंच लो।" ......सलीबी हाकिम ने रोब से कहा।

" जनाब! मैं मज़हबी पेशवा हूँ।" ....इमाम ने कहा...... " मैं आपको ये बताना चाहता हूँ कि आप हमें धुतकार सकते हैं और अपनी फौज को बे गुनाह कह सकते हैं लेकिन खुदा से कोई अच्छा और बुरा अमल नही छुपा सकते। आप हमारे हाकिम हैं खुदा तो नही। इन लोगों ने आप की फौज को नुकासान से बचाने के लिये सारी रात आग से लड़ाई लड़ी। आप उन्हें ये सिला देरहें हैं कि ये भी तसलीम नही करना चाहते कि उन की लड़कियों को आप के फौजी उठा ले गये हैं।"

कुछ देर की बहस के बाद हाकिम ने उन्हें कहा कि उन लड़कियों को तलाश किया जाएगा। इमाम उस से यही कहलवाना चाहता था। बाहर आकर वह जब वापसी के लिये चले तो इमाम ने सब से कहा कि अब यही मशहूर कर दो कि रात इनकी लड़कियां अगवा हो गई हैं। चुनान्चे यही मशहूर कर दिया गया। उन के पड़ोस मे रहने वाले ग़ैर मुसलिमों ने यकीन कर लिया। शहर की हालत ही एसी थी कि लूट मार और अगवा आसानी से की जा सकती थी।

❖

बृजेस सुलतान अय्यूबी के खे़मे मं बैठा था। आफाक़ की मरहम पट्टी सुलतान अय्यूबी का जर्राह कर चुका था। आफाक़ की दोनों बहनें भी खेमे में बैठी थीं। बृजेस रात का कारनामा सुना चुका था। सुलतान अय्यूबी बार बार लड़कियों को देखता था। हर बार उस की आंखें सुर्ख़ होजाती थीं। बृजेस ने कहा कि वह कर्क को ऐसी अफरातफरी और भगदड़ में छोड़ आया है कि फौरी तौर पर हमला किया जाए तो हमला कामयाब हो सकता है। शहर में फ़ौजों के लिए रसद नहीं रही। जानवरों के लिए चारा नहीं रहा। जानवर डरे हुए हैं। शहरियों पर ख़ौफ तारी है। फ़ौज डरी हुई है।

सुलतान अय्यूबी गहरी सोंच में खोगया। बहुत देर बाद उस ने सर उठाया और अपने नायबीन और मुशीरों को बुलाया। उस ने पहला हुकुम यह दिया कि इन लड़कियों और इन के भाई को काहेरा रवाना करदिया जाए और उन की रेहाइश और वज़ीफे का इन्तज़ाम किया जाए।

"आप मेरी बहनों को अपनी आफियत में ले लें।" आफ़ाक़ ने कहा। "मैं आप के साथ रहूंगा। मुझे अपनी फ़ौज में शामिल करलें। मुझे अपनी मां और अपने बाप के खून का इंतक़ाम लेना है। अगर आप मुझे कर्क में दाख़िल करसकें तो मैं अंदर तबाही मचादूंगा।"

"जंग जज़्बात से नहीं लड़ी जाती।" सुलतान अय्यूबी ने कहा– "बड़ी लमबी तरबियत की ज़रूरत है। तुम सिर्फ़ अपनी मां और अपने बाप के खून का इन्तक़ाम लेने को बेताब हो, मुझे उन तमाम बापों और तमाम बेटयों के खून का इन्तकाम लेना है जो सलीबी दरिंदों का शिकार हुई हैं। अपने आप को ठंडा करो।"

आफाक़ की जज़बाती हालत ऐसी थी कि सुलतान अय्यूबी उसे ज़बरदस्ती काहेरा भेजने से गुरेज़ करने लगा। उसे कहा कि वह पहले अपना इलाज कराए, सेहत याब होजाए फिर उस की ख़ुवाहिश पूरी कर दी जाएगी....इतने में नायब सालार और आला कमांदार आगए। उन में ज़ाहेदान भी था। सुलतान अय्यूबी ने आफाक़ और उस की बहनों को बाहर भेज दिया। उस ने इजलास में यह मसअला पेश किया कि कर्क को फ़ौरन मुहासरे में लेलिया जाए? उस ने सब को कर्क की उस वक़्त की कैफियत बताई। इस मसअले पर बहस शुरू होगई। ज़ाहेदान ने अपने जासूसों की रिपार्टों की रौशनी में कहा कि सलीबी फ़ौज सिर्फ़ कर्क में नहीं बाहर भी है और उसका एक हिस्सा ऐसी पाेज़ीशन में है जो हमारी फ़ौज का मुहासरा बाहर से तोड़ देगा। उन्हों ने एसा इन्तज़ाम कर रखा है कि रसद की आमदोरफत की हिफाज़त के

लिए उन की पूरी फ़ौज मौजूद है। उन के पास सिर्फ़ वही रसद और सामान नहीं था जो जल गया है। उन की हर फ़ौज के साथ अपनी अपनी रसद और सामान मौजूद है और उन की नफरी हम से पांच छः गुना है।

इजलास के दूसरे शुरका ने अपने अपने मशवरे पेश किए उन की अकसरीयत फ़ौरी हमले के हक़ में थी और बाज़ ने इन्तज़ार की तजवीज़ पेश की। तजावीज़ और मशवरे जैसे कैसे भी थे सुलतान अय्यूबी ने सुने, उसे यह देख कर इतमीनान हुआ कि कमांडरों का जज़्बा शदीद था। उन में बेशतर ने कहा कि हमला जलदी करें या देर से, यह पेश नज़र रखें कि एक बार हमला करके यह न सुन्ना पड़े कि मुहासरा उठालो क्योंकि हम कमज़ोर हैं। सुलतान अय्यूबी ख़ामोशी से सुनता रहा। उस ने आख़िर में फ़ौज के जज़्बे और दीगर कवाइफ़ के मुतअल्लिक पूछा। उसे तसल्ली बख़्श जवाब मिला।

"मैं जलदी हमला करना चाहता हूं।" आख़िर में सुलतान अय्यूबी ने कहा– "लेकिन मैं जलद बाज़ी का काइल नहीं। मेरे सामने सिर्फ़ कर्क का किला बंद शहर नहीं बल्कि सलीबियों की वह तमाम फ़ौज है जो उन्हों ने बाहर फैला रखी है। ज़ाहेदान ने ठीक कहा है कि कर्क के अंदर की तबाही से हमें खुश फहमी में मुबतला नहीं होना चाहिए। ताहम हमला जलदी होगा। फासला ज़्यादा नहीं। एक ही रात में हमारे दस्ते कर्क तक पहुंच सकते हैं मगर उन्हें एक जंग किले से बाहर लड़नी पड़ेगी। कूच से पेशतर हमें कर्क के मुसलमानों को तैयार करना पड़ेगा। मुझे अंदर की जो ताज़ा इत्तलाऐं मिली है। वह यह हैं कि वहां के मुसलमान दर पर दा एक जमाअत की सूरत में मुनज़्ज़म होचुके हैं उम्मीद की जासकती हैं कि वह मुहासरे की सूरत में शहर में तख़रीब कारी करें गे। उन की लड़कियां भी मैदान में निकल आई हैं। सिर्फ़ चार लड़कियों ने सलीबियों को जो नुकसान पहुंचाया है वह पचास पचास नफरी के चार दस्ते भी नहीं पहुंचा सकते। हम कोशिश करेंगे कि शहर में अपने छापा मार भी दाख़िल करदें।"

"मुदाख़लत की माफी चाहता हूं।" बृजेस ने कहा– "अगर छापा मार भेजने हैं तो फ़ौरन भेजए। कर्क के जो शहरी भाग गए हैं वह यक़ीनन वापस जाऐंगे। उन के पर्दे में छापा मार दाख़िल किए जासकते हैं। उस के बाद मुमकिन नहीं होगा। आतिश ज़नी के वाक़ेआ के बाद सलीबी मुहतात होजाएंगे और शहर के तमाम दरवाज़े बंद करदेंगे। मुझे इजाज़त दें कि मैं उन के साथ आज ही रवाना होजाऊं। वह अपने साथ कोई हथ्यार न लेजाऐं। वहां से हथ्यार मिल जाएंगें।"

आख़िर फ़ैसला यह हुआ कि आज ही रात छापा मार बृजेस की क़्यादत में रवाना कर दिए जाऐं। जहां तक घोड़े ले जासकते हैं वहां तक घोड़ों पर जाऐं। आगे पैदल जाऐं। घोड़े वापस लाने के लिए कुछ आदमी साथ भेज दिए जाएं। उसी वक़्त ज़ाहेदान से कहा गया कि वह बृजेस की हिदायत के मुताबिक़ छापा मारों को शहरी लिबास मुहैया करे और शाम के बाद रवाना करदे। सुलतान अय्यूबी ने उन फ़ौजी कमांडररों को जंगी नौइयत की हिदायात दीं और खास तौर पर कहा– "यह याद रखना कि जिस फ़ौज से हम हमला करा रहे हैं यह वह

फ़ौज नहीं जिस ने शूबक फ़तह किया था। यह फ़ौज मिस्र से आई है जिस में दुशमन ने बे इतमीनानी फैलाई थी। इस फ़ौज को मुहासरे में लड़ने का तजरबा नहीं। कमांदारों को चौकन्ना रहना पड़ेगा। मुझे शक है कि इस फ़ौज में तख़रीबी ज़ेहन के सिपाही भी हैं। मैं ने जो दस्ते अपने हाथ में रखे हैं, वह तुरुक और शामी हैं और नूरुद्दीन ज़ंगी की भेजी हुई कुमक को भी अपने पास महफ़ूज़ा में रखूंगा। हालात तुम्हारे ख़िलाफ़ होगए तो घबरा कर पीछे न हट आना। मैं तुम्हारे पीछे मौजूद हूंगा... और यह भी याद रखो कि कर्क के मुसलमानों के साथ उम्मीदें वाबस्ता न किए रखना। उन के लिए जो हिदायात भेज रहा हूं वह एसी हरगिज़ नहीं हूंगी कि यह अपने आप को ऐसे खतरे में डाल लें कि उन की मस्तूरात की इज्ज़त भी महफ़ूज़ न रहे। मैं उन से इतनी ज़्यादा कुर्बानी नहीं मांगूंगा। वह महकूम और मजबूर हैं। ज़ुल्म व तशद्दुद का शिकार हैं। हम उन की आज़ादी और निजात के लिए जारहे हैं, उन के भरोसे पर नहीं जारहे हैं।"

❖

चार पांच दिनो तक कर्क में यह कैफ़ियत रही कि मुसलमानों के घरों पर छापे पड़ रहे थे। कई मुसलमान महज़ शक में गिरिफ़तार कर लिए गए थे। बेगार कैम्प मे जिन क़ैदियों को इस वादे पर आग बुझाने के लिए ले गए थे कि उन्हें रेहा कर दिया जाए गा, रेहा नहीं किया गया था। सलीबियों ने मज़ालिम का एक नया दौर शुरू कर दिया था। उन का नुक्सान मामूली नहीं था। वह जानते थे कि मुसलमानों के सेवा यह दिलेराना तख़रीब कारी और कोई नहीं कर सकता। गिरिफ़तार होने वालों में उसमान सारिम के दो दोस्त भी थे जो लड़कियों को रेहा कराने के लिए उस के साथ थे। उन्हें दरिंदों की तरह अज़ीयतें दी जारही थीं। सलीबी बरबरीयत की हदों से भी आगे निकल गए थे मगर उन्हें कोई सुराग़ नहीं मिल रहा था। सिर्फ़ यह दो कम उम्र लड़के थे जिन के सीनों में सुराग़ था लेकिन उन की ज़ुबानें बंद थीं। उन के जिस्मों में कुछ नहीं रहा था। चक्कर शिकंजें में कस कस कर और झटके दे दे कर उन के जोड़ अलग कर दिए गए थे लेकिन लड़के ख़ामोश थे।

आख़िर हरमन खुद क़ैद खाने में गया। उसकी तवज्जो भी उन दो लड़कों पर थी। उसे मुसलमान मुख़बिरों ने बताया कि आतिश ज़नी में उन दो लड़कों का भी हाथ है। मुसलमान मुखबिर दो थे। दोनो उन लड़कियों के पड़ोसी थे। वह मामूली सी हैसियत के आदमी हुआ करते थे लेकिन अब घोड़ा गाड़ियों में सवारी करते थे और सलीबीयों के दरबारी बन गये थे। वह सलीबी हाकिमों को घर में भी मदऊ करते थे और अपनी बेटियों के साथ बिठाते और फख्र करते थे। उन की दो दो तीन तीन बीवियां थीं और वह शराब भी पीते थे। उन्होंने उन दो लड़कों को आतिश ज़नी की रात कहीं मशकूक हालत में देखा था और उन्हें गिरफतार करा दिया। हरमन ने क़ैद खाने मे उन दो नवजवानों की हालत देखीतो उस ने महसूस किया कि नज़ा की हालत में पहूंच कर भी उन्होंने कुछ नहीं बताया तो ये कुछ भी न बतायेगें। उनके जिस्म आदी हो चुके हैं। वह उन्हें अपने साथ लेगया। उन्हें बड़ा अच्छा खाना खिलाया। प्यार और शफक़त से पेश आया। डाकटरों को बुलाकर उन्हें दवा पिलाई और तशद्दुदके ज़ख़्मो

और चोटों का इलाज कराया। फिर उन्हें सुलादिया। वह फौरन ही गहरी नीन्द सो गये।

हरमन दोनो के दरमियान बैठ गया। कुछ देर बाद उन में से एक नौजवान साफ अलफाज़ में बड़बड़ाने लगा। " मैं क्या जानू? मेरा जिस्म काट दो। मुझे कुछ भी नही मालूम। अगर कुछ मालूम होगा तो कभी न बताऊगा। तुम गरदन के साथ बान्धते हो , मैंने कुरआन की एक आयत बान्धी हुई है।"

"तुम ने आग लगाई थी।" ......हरमन ने कहा........." तुम ने सलीबीयों की कमर तोड़ दी है। तुम बहादुर हो। मर गये तो शहीद कहलाओगे।"

"अगर मर गया तो"..... नौजवान बड़बड़ाया....."अगर मर गया तो । जब तक जिस्म में जान है। उस जान में ईमाल भी रहेगा। जान निकल जाएगी ईमान नहीं निकलेगा।"

हरमन ने उसके सोए हुये ज़ेहन में अपने मतलब की बातें डालने की बहुत कोशिशकी लेकिन नौजवान के ज़ेहन ने कुबूल न कीं। इतने में दुसरा लड़का भी बड़बड़ाने लगा। हरमन ने उस की तरफ़ तवज्जो दी। उसी तरह उस के ज़ेहन में बातें डालीं जो उस नौजवान ने उगल दीं। हरमन के साथ उसके तीन चार सुरागरसां भी मौजूद थे। उसने बहुत देर की कोशिश के बाद आह भरी और कहा ...... " मज़ीद कोशिश बेकार है। उनकी जबान से तुम कोई भी राज़ नही उगलवा सकोगे। ये बेगुनाह मालूम होते हैं। मगर मैं तुम्हें ये भी बता देन। चाहता हूँ कि ये अपने अकीदे और जज़्बे के पक्के हैं। मैनें मुरग्गन खानों में इतनी ज्यादा हशीश खिलाई है जितनी घोड़े को खिलादो तो वह भी बातें करने लगे मगर इन पर कोई असर नहीं हुआ। इसका मतलब यह है कि इन का कौमी जज़्बा जिसे ये लोग ईमान कहते हैं, इन की रूहों में उतरा हुआ है। तुम इनकी रूहों पर कोई नशा तारी नही कर सकते। दूसरी सूरत यही है कि ये बे गुनाह होंगे।"

वह बेगुनाह नही थे वह आतिश ज़नी और लड़कियों को आज़ाद कराने के मोहिम में शरीक थे। सलीबी जिसे गुनाह और जूर्म कह रहे थे वह मुसलमान के लिये अज़ीम नेकी और जिहाद था। जवान लड़कों ने रूह और ईमान की कूव्वत से किया था। हशीश ने उन्हें बेहोश कर दिया था। उनकी अकल को सुला दिया गया था मगर उनकी रूहें बेदार थीं। सलीबी उनकी ज़बान से हलका सा इशारा भी न ले सके । उन्हों ने ये फ़ैसला किया कि ये लड़के बेकुसूर हैं। ये सलीबीयों की मजबूरी थी........ उन लड़कों की आखं खुली तो बाहर वीराने में पड़े थे। सलीबीयों ने उन्हें बेहोशी की हालत में दूर ले जाकर फेंक दिया था। वह उठे। एक दूसरे को देखा और घरों को चल दिये।

जो ईसाई और यहूदी बाशिन्दे आतिश ज़नी की रात शहर से निकल गये थे वह ये देख कर कि कोई हमला नहीं हुआ और अम्नों अमान है तो वापस आने लगे । सलीबीयों की फ़ौज बाहर खिमा ज़न थी उस ने भी उनहें यकीन दिलाया कि कोई हमला नही हुआ, वह वापस चलें जाएँ। चुनान्चे एक हुक्म के तेहत शहर के दरवाज़े उन लोगों के लिये खुले रखे गये जो वापस आ रहे थे। लोग कुम्बा दर कुम्बा चले अरहे थे........ और उन्हीं में बृजेस भी करक में दाख़िल होगया। और उसके साथ सुलतान अय्यूबी के पन्द्रह छापा मार भी शहर में दाख़िल होगये।

करक के लोगों ने देखा कि वह चुप चाप और ग़रीब सा मोची जो दुनिया के हंगामों से बेख़बर रासते में बैठा जूते मरम्मत किया करता था तीन दिनो की ग़ैर हाज़री के बाद फिर रासते में बैठा है। उस ने रात ही रात पन्द्रह के पन्द्रह छापा मारों को उसमान सारिम और उसके साथियो की मदद से मुसलमान घरानों में छुपा दिया था। उनें में अब कोई किसी दुकान में मुलाज़िम था, कोई सलीबीयों के असतबल का साईस बन गया था, कोई मज़हब के तालिबे इल्म के रूप में मसजिद में झाडू देता था।

उन्हें अब ये देखना है कि सुलतान अय्यूबी के हमले की सूरत में वह अन्दर से क्या कर सकते हैं। करने वाला काम सिर्फ़ ये था कि कहीं से किले की दीवार में इतना बड़ा शिगाफ पैदा कर दें कि उस में से घोड़े भी अन्दर आ सकें या किले का कोई दरवाज़ा खोल सकें। वह उन्हीं कामों के लिये ज़मीन हमवार कर रहे थे। उसमान सारिम ने अपने नौजवान जमात में इज़ाफा कर लिया था। लड़कियां भी तैय्यार हो गई थीं। मगर रैनी एलगेज़ेण्डर साए की तरह उसमान सारिम के साथ लगी हूई थी। उसे रासते में रोक लेती थी, उसके घर चली जाती थी और एक रोज़ उसमान सारिम से पूछा ...." उसमान ! अन्नूर कहां है?"

" तुम्हारी कौम के किसी गुनाहगार के पास ......उसमान सारिम ने जल कर जवाब दिया. .... " उसपर अल्लाह की लानत।"

"रहमत कहो उसमान !"....रैनी ने कहा....." तुम हमारे ख़िलाफ़ लड़कर मरने वालों को शहीद कहा करते हो। अन्नूर शहीद हो गई है।"

उसमान सारिम चकरा गया। उसे कोई जवाब न बन पड़ा।

" और उन दो लड़कियों को उठाने वालों में तुम भी थे।" रैनी ने कहा........ " लेकिन तुम अभी तक गिरफतार नही हूए। मैने कहा था कि तुम्हारी कैद और आजादी के दरमियान मेरा वजूद हाइल है...... कहो। और कितनी कुरबानी मांगते हो।"

उसमान सारिम आख़िर नौजवान था। जिस्म में जितना जोश और जितना जज़बा था इतनी अकल नहीं थी। वह दानिशमन्द नही था। रैनी की बातों ने उसे परीशान कर दिया। उसने झंझला कर पूछा ...."रैनी तुम क्या चाहती हो?"

" एक ये कि मेरी मोहब्बत कुबूल कर लो"....... रैनी ने जवाब दिया।.......'दुसरे ये कि उन ज़मीन दूज़ हरकतों से बाज़ आ जाओ।"

" तुम अपनी कौम और हुकूमत से मुहब्बत करती हो। " उसमान सारिम नेकहा। ..." अगर तुम्हारे दिल में मेरी मुहब्बत इतनी शदीद है तो मेरी कौम से हमदरदी क्यों नहीं करतीं?"

"मुझे न अपनी कौम से मुहब्बत है न तुम्हारी कौम से।" रैनी ने कहा........ " मैं तुम्हें ख़तरनाक कारवाइयों से सिर्फ़ इस लिये रोक रही हूँ कि तुम मारे जाओगे। हासिल कुछ भी न होगा। मैं जज़बाती नहीं हकीकत की बात कर रही हूँ कि सुलतान अय्यूबी करक फ़तह नहीं कर सकेगा। मैं अपने बाप की बताई हुई बातों के मुताबिक बात कर रही हूँ। जन्ग मुहासरे की नही होगी। बाहर करक से दूर होगी। हमारे कमाण्डर अय्यूबी की चालें समझ गऐ हैं। शोबक की शिकस्त से उन्होंने सबक हासिल करलिया है अब करक के मुहासरे की नौबत ही नहीं

आएगी। अगर तुम लोगों ने शहर के अन्दर से कोई कारवाई की तो उसका नतीजा यही होगा कि मारे जाओगे या गिरफतार होकर बाकी उमर नाकाबिले बरदाश्त अजियतों में गुज़ारोगे। मैं तुम्हें सिर्फ जिन्दा और सलामत देखना चाहती हूँ।"

उसमान सारिम वहां से सर झुकाए चल पड़ा । उसे रैनी की आवाज़ सुनाई दी ...... " सोंचो उसमान ! सोंचो। मेरी बातें एक गैर कौम की लड़की की बातें समझ कर ज़ेहन से उतार न देना।"

❖

" मैं आप सबको एक बार फिर बता देता हूँ कि ये करक है शोबक नही।" सुलतान अय्यूबी ने अपने कमाण्डरों को आख़री हिदायत देते हुए कहा......."सलीबी चौकन्ने और बेदार हैं। मेरी जासूसी मुझे बतारही है कि हमें एक जन्ग करक से बाहर लड़नी पड़ेगी। शहर के अन्दर से मुसलमानों ने कोई ज़मीन दूज़ कारवाई की तो शायद वो हमारे काम नहीं आ सकेगी। उसका नतीजा ये भी हो सकता है कि वह बेचारे मारे जाएगें मैं उन्हें इतने बड़े इम्तहान में नही डालना चाहता। उन्हें बचाने की एक ही सूरत है कि हमला तेज़ और बहुत सख्त करो।" एसे ही चन्द एहकामात के बाद सुलतान अय्यूबी ने उस फ़ौज को कूच का हुक्म दे दिया जिसे करक का मुहासिरा करना था।

कूच सूरज़ गुरूब होने के बाद किया गया। फासला ज़्यादा नही था। सुबह तुलू होने तक फ़ौज करक के मज़ाफात में पहूचं गई जहां से मुहासरे की तरतीब में आगे बढ़ी। उस फ़ौज के सालार के लिये ये एक अजूबा था कि रासते में उसे सलीबीयों का कोई एक दसता भी नजर न आया। उसे बताया गया था कि सलीबीयों ने बाहर भी खिमा ज़नी कर रखी है। उसे एसे रासते से भेजा गया था जिस तरफ़ सलीबीयों की फौज नहीं थी। फिर भी मज़ाहिमत ज़रूरी थी। जो बिल्कुल ही न हुई । मुसलमानों की इस फौज ने किले का मुहसिरा कर लिया। किलों की दीवारों से तीरों की बारिश बरसने लगीं। सुलतान अय्यूबी की फ़ौज ने उस के जवाब में कोई शदीद कारवाई न की । उसके कमाण्डार इधर उधर से दीवारों पर चढ़ने या नकब लगाने या किसी दरवाज़े को तोड़कर अन्दर जाने के इमकानात देखते फिर रहे थे। उन्होंने तीर अन्दाजों को भी खामूश रखा। उनके साथ वह जासूस थे जो शहर से वाकिफ़ थे। वह उन्हें बतारहे थे कि अन्दर कौन सी अहम जगह कहां है।

शहर के अन्दर अभी किसी को ख़बर नही मिली थी कि सुलतान अय्यूबी की फ़ौज ने किले का मुहासिरा कर लिया है लेकिन ये मुहासिरा अभी मुकम्मल नही था। अकब अभी खाली था जहां दो दरवाज़े थे। अचानक किले के अन्दर फौजी इलाके में आग बरसने लगी। ये आतिश गीर मादे वाली हाण्डीयां थीं जो सुलतान अय्यूबी की इजाद थी ये मिनजिनीकों से अन्दर फेंकी जारही थी। शहर के लोगों ने देखा कि उनकी फौज किले की दीवार पर चढ़ गई और बाहर को तीर पे तीर चला रही थी । शहर में ख़ौफो हरास फैल गया । ईसाई और यहूदी बाशिन्दे घरों में दुबक गये। मुसलमान बाशिन्दे दुआओं में मसरूफ हो गये। वह सुलतान अय्यूबी की फतह की दुआऐं मांग रहे थे। कुछ मुसलमान ऐसे थे जो दुआओं के साथ बड़ी

ख़तरनाक सरगरमियों में मसरूफ थे। ये वहां के नौजवान थे, जिन में लड़कियां भी थीं और उसमे सुलतान अय्यूबी के पन्द्रह छापा मार भी थे। शहर की अफरा तफरी से फ़ाइदा उठाते हुए वह कहीं इकट्ठा हो गये और किले के बड़े दरवाज़े को अन्दर से खोलने या तोड़ने के लिये तय्यार हो गये।

दरवाज़ा बहुत मज़बूत और मोटी लकड़ी का था जिस पर लोहे की मोटी मोटी पतरीयां भी मढ़ी हुई थीं। उसे तोड़ना आसान नही था। बाहर से मुसलमान फ़ौज ने दरवाज़े पर मिनजिनीकों से हांडियां फेंकी। ये दूसरे किसिम की थीं। ये टूटती थीं तो उस में से सय्याल माद्दा बिखर जाता था। उस पर फलीतें वाली आतिशीं तीर चलाए जाते तो सय्याल माद्दा को आग लग जाती थी। इस तरीके से उस दरवाज़े को आग लगाई गई लेकिन लोहे ने लकड़ी को जलने नही दिया। दरवाज़ा बहुत मज़बूत था। उपर से सलीबीयों ने वह तीर बरसाने शुरू कर दिये जो बहुत दूर तक जाते थे। ये मिनजिनीकों तक पहूंच गये जिन से कई आदमी ज़ख़मी और शहीद हो गये। इस ख़तरे से बचने के लिये मिनजिनीकें पीछे कर ली गई और आग फेंकने का तरीका नाकाम हो गया।

आख़िर मुसलमान तीर अन्दाज़ों को हुक्म दे दिया गया कि किले की दीवरों पर जो दुश्मन के सिपाही हैं उन पर तीर बरसाई जाऐं। सारा दिन दोनो तरफ़ से तीर अन्दरजी होती रही। हवा में सिर्फ़ तीर उड़ते नज़र आते थे। सलीबी दिफाई पोज़िशनों में थे और दीवारों की बुलन्दी पर थे। इस लिये ज़्यादा नुकसान मुसलमान फ़ौज का हो रहा था। मुसलमानों के नकब ज़न जो किलों की दीवारें तोड़ने के माहिर थे। हर तरफ़ घूम फिर कर देख रहे थे कि दीवार में कहां शिगाफ डाला जा सकता है। वहां चारों तरफ़ से इतने तीर आरहे थे कि दीवार के करीब जाना खुदकुशी के बराबर था। शाम से कुछ देर पहले नकब जज़नों की आठ आदमियों की एक जमाअत आगे बढ़ी। ये जांबाज़ जब दीवार से थोड़ी दूर रह गये तो उपर से उन पर इस कदर तीर बरसे और तीरों के साथ इतनी ज़्यादा बरछियां आयीं कि आठों जांबाज़ वहीं शहीद हो गए। एक एक के जिस्म में कई कई तीर और बरछियां लगीं।

रात का पहला पहर था। रैनी अपने घर में थी। उसका बाप थका हुआ आया था। ये कहकर सो गया कि जल्दी जाग उठेगा क्योंकि रात को भी उसे काम पर जाना है। उस ने कहा था कि शहर के मुसलमानों के मुतअल्लिक इत्तेला मीली है कि वह अन्दर से कोई ख़तरनाक कारवाई करने वाले हैं। हमें हर एक मुसलमान घराने पर नज़र रखनी पड़ेगी। ये कह कर वह सो गया था। दरवाज़े पर दसतक हूई तो किसी मुलाज़िम के बजाए रैनी ने दरवाज़ा खोला। बाहर एक मुसलमान खड़ा था जो बड़ी ऊंची हैसियत का मालिक था। सलीबीयों की तरफ़ से उसे खूब इनाम व इकराम मिलता था। रैनी ने उसे बताया कि उसका बाप सोया हूआ है। वह पैग़ाम दे दे। थोड़ी देर बाद वह जागेगा तो उसे बता दिया जाऐगा। मुसलमान ने कहा कि वह खुद बात करना चाहता है। बात बहुत अहम और नाज़ुक है।

" आज रात मुसलमानों के बहुत से लड़के और लड़कियां अन्दर से दीवारें तोड़ देंगें।" ....रैनी के पूछने पर उसने मुखतसरन बताया। उस ने कहा..... " मैं ने उनका हमदरद और

साथी बनकर ये राज़ हासिल किया है। मुझे ये भी पता चला है कि उन में बाहर से आऐ हुए छापा मार भी हैं। और नया इनकिशाफ़ ये है कि वह गरीब सा मोची जो रासते में बैठा रहता है वह सुलतान अय्यूबी का भेजा हुआ जासूस है और उसका नाम बृजेस है...... मैं तुम्हारे वालिद को ये ख़बर देना चाहता हूं ताकि उन लोगों को फांसने के लिये घात लगाई जाए।"

रैनी ने चन्द एक मुसलमान का नाम लेकर उसमान सारिम का नाम भी लिया और पूछा. ....." क्या ये लड़के भी इस मुहिम में शामिल हैं?"

" सारिम का बेटा उसमान तो उस गिरोह का सरगना है। "........मुसलमान मुख़बिर ने बताया........" उनका सब से बड़ा सरगुना इमाम राज़ी है।"

"आप थोड़ी देर तक आजाऐं"......रैनी ने उसे कहा........." बाप को ज़रा सी देर सोने दें।"

मगर वह जाना नहीं चाहता था। सलीबीयों को खुश करने और उस से इनाम हासिल करने का निहायत मौजू मौका मिल गया था। उस के मुतअल्लिक मुसलमान को पता नही था कि कुरआन की बजाए सलीब का वफ़ादार है। उसी रोज़ मुसलमान नौजवान और छापा मारों ने दीवार तोड़ने की स्कीम बनाई थी। इस खुफ़िया इजतिमा में तीन चार बुजुर्ग, इमाम और ये मुसलमान भी था जिस ने लड़कों को अच्छें मशवरे दिये और सब से ज़ियादा जज़्बे का इज़हार किया था। मुसलमानों को शक तक न हुआ कि वह सलीबीयों का पाला हुआ सांप है सभी उसे शहर का अमीर और मोअज़्ज़ज़ ताजिर समझते थे जिस के हुस्न व सुलूक की बदौलत सलीबी भी उसकी इज्ज़त करते थे।

वह वापस नही जाना चाहता था। रैनी गहरी सोंच में खो गई। उसने उसे अन्दर बिठाने की बजाए ये कहा कि वह उसे पूरी बात सुनाए और ये भी कहा कि आओ ज़रा बाहर टहल लेते हैं, इतनी देर में बाप जाग उठेगा। वह तो सलीबीयों का गुलाम था। इतने बड़े अफ़सर की बेटी के साथ खरामा खरामा चल पड़ा। चलते चलते वह कूऐं तक पहूंच गए। ये कूआं शहरियों के लिये खोदा गया था। बहुत ही दूर से पानी निकला था। रैनी कुऐं के मुहं पर रुक गई। मुसलमान मुख़बिर उसे बात सुना रहा था। वह भी कुऐं के करीब खड़ाथा। रैनी ने उसके सीने पर हाथ रखे और पूरी ताकत से धक्का दिया। मुसलमान पीछे को गिरा और सीधा कूऐं में गया। उस की चीख़ सुनाई दी जो धड़ाम की आवाज़ में ख़त्म हो गई। रैनी उस मुसर्रत के साथ घर आगई कि उसने एक एसा राज़ कूऐं में डुबो दिया है जो उसमान सारिम की यकीनी मौत का बाअस बन सकता था।

❖

वहां से वह दौड़ती हुई उसमान सारिम के घर गई। उसकी मां के पास बैठी अन्नूर की बातें करती रही। उसने उसमान के मुतअल्लिक पूछा तो उसकी मां ने बताया कि वह शाम के बाद ही घर से निकल गया था। रैनी को ख़्याल आगया कि वह दीवार तोड़ने की मोहिम पर चला गया होगा। वह उसे रोकना चाहती थी। उसे डर था कि उनके इजतिमा मे कोई और मुख़बिर होगा। कहीं एसा न हो कि किसी और ने फ़ौज को इत्तेला दे दी हो। वह बाहर निकल गई और उस तरफ़ चल पड़ी जिस तरफ़ से उन लोगों ने दीवार तोड़ने का मनसूबा

बनाया था। उस मुसलमान ने जिसे उसने कूऐं में फेंक दिया था बतादिया था कि छापा मार दीवार के ऊपर जाकर सलीबी तीर अन्दाजों को ऐसे तरीके से ख़त्म करेंगे कि किसी को पता न चल सके। नौजवान लड़के और लड़कियां नीचे से दीवार खोदेंगें। दीवार मीट्टी की थी उसकी चौड़ाई इतनी थी कि उसके ऊपर दो घोड़े पहलू ब पहलू आसानी से दौड़ सकते थे। मिट्टी की वजह से उसकी खुदाई मुशकिल नही,दिक्कत तलब थी। इस पारटी ने बवक़्ते ज़रूरत लड़ाई का इन्तेज़ाम भी कर रखा था। उनके पास खन्जर और बरछियां भी थीं। ये एक ग़ैर मामूली तौर पर दिलेराना मोहिम थी जिस की नाकामी के इमकानात ज़्यादा थे। उन्होंने जगह एसी मुन्तख़ब की थी जहां पकड़े जाने का इमकान ज़रा कम था।

ये गिरोह मुकर्रर जगह की तरफ़ रवाना हो गया। रैनी उसी तरफ़ दौड़ी जा रही थी। वह उसमान सारिम को रोकना चाह रही थी। उसे शायद इल्म हो गया था कि ये लोग पकड़े जाऐंगें और उसमान सारिम मारा जाएगा। उन जांबाजों का जाने का तरीका कार रासता कुछ और था। रैनी पहले वहां पहूंच गई जहां से दीवार तोड़नी थी। वहां अभी कोई नहीं पहुंचा था। उस ने अन्धेरे में इधर उधर देखा। अचानक पीछे से उसे किसी ने पकड़ लिया और घसीट कर परे ले गया। ये एक फौजी था। परे लेजाकर फौजी ने उस से पूछा कि वह कौन है। उस ने बाप का नाम लिया। उसे कहा गया कि वह वहां से चली जाए मगर वह वहां से नही हटना चाहती थी। वहां दर असल फौज का एक पूरा दसता छुपा हूआ था। उसके कमाण्डर ने रैनी को बताया कि मुसलमानों का एक गिरोह यहां नकब लगाने आ रहा है और उसे पकड़ने के लिये घात लगाई है..... ये इत्तेला एक और मुसलमान मुख़बिर ने फ़ौज को दी थी।

रैनी उन्हें ये नही कह सकती थी कि वह घात से उठ जाऐं। वह तो सिर्फ़ उसमान सारिम को बचाना चाहती थी। इस नौजवान की मुहब्बत ने उसकी अकल पर परदा डाल दिया था। इतने में एक फ़ौजी ने कहा....... इत्तेला ग़लत नही थी वह आरहें हैं।" ......रैनी तड़प उठी। उस ने चिल्ला कर कहा....... "उसमान! वापस चले जाओ"...... दसते के कमाण्डर ने उसके मुहं पर हाथ रख दिया और कहा......."ये बदबख़्त जासूस मालूम होती है। इसे गिरफ्तार कर लो"....... लेकिन उन्हें गिरफतारी की मोहलत न मिली क्यांकि कुछ दूर से शोर शराबा सुनाई देने लगा था।

जांबाजों की ये पारटी सीधे घात मे आ गई थी। सलीबीयों के दसते की तादाद ज़्यादा थी। पेशतर इसके कि जांबाज़ संभलते वह घेरे में आगए। मशअलें जल उठीं जिनकी रौशनी में जांबाज साफ नज़र आनेलगे। उनके पास खुदाई का सामान, बरछियां और खन्जर थे। भाग निकलने की कोई सूरत नहीं थी। उनमें ग्यारह लड़कियां थीं। सलीबी कमाण्डर ने बआवाज़े बुलन्द कहा......."लड़कियों को ज़िन्दा पकड़ो"...... छापा मारों में से किसी ने कहा। ....मुजाहिदो! भागना नहीं एक एक लड़की को साथ रखो।"

और जो मारका लड़ा गया। वह बड़ा ही खूनरेज़ था। छापा मार तो तरबियत याफता लड़ाके थे, खूब लड़े, लेकिन लड़कों और लड़कियों ने सलीबी को हैरान करदिया। लड़कियां डरने की बजाए नौजवानों को ललकार रही थीं। उन्हें जिन्दा पकड़ने की कोशिश में मुतअद्द

सलीबी उनके खन्जरों का शिकार हो गये। मगर सलीबी तादाद में ज़्यादा थे। चूकीं ये मारका क़िले में लड़ा जा रहा था इस लिये सलीबी फौज के दो दसते आगऐ। उस मारके में एक निसवानी आवाज़ बार बार सूनाई देती थी। ....." उसमान निकल जाओ.... उसमान! तुम निकल जाओ"..... ये रैनी की आवाज़ थी । उस वक़्त तक उसमान सारिम लड़ रहा था। उसके सामने एक सलीबी आया। उसमान के पास खन्जर था और उसके पास तलवार। अचानक उस सलीबी की पीठ में एक खन्जर दाख़िल हो गया। ये रैंनी का खन्जर था। एक और सलीबी ने उसे ललकारा। उस ने मरे हुए सलीबी की तलवार उठा ली और मुक़ाबले पर उतर आई।

उसमान सारिम उसकी मदद के लिये आगे बढ़ा लेकिन किसी सलीबी की तलवार ने उसको शहीद कर दिया । कुछ देर बाद जांबाज़ों में सिर्फ़ दो लड़कियां जिन्दा रहीं। वह इकट्ठी थीं और बहुत सी सलीबीयों के घेरे में आ गई । घेरा तन्ग हो रहा था। उन्हें कहा गया कि वह खन्जर फेंक दें। दोनों ने एक दूसरे की तरफ़ देखा। दोनों ने बयक वक़्त अपना अपना खन्जर अपने अपने दिल पर रखा और दूसरे लम्हे उन्होंने खन्जर अपने दिलों में उतार दिये। रेनी को ज़खमी कर के पकड़ लिया गया था। उसनेबाद में पागलपन की कैफियत में बियान दिया कि वह इस स्कीम को नाकाम करके उसमान सारिम को बचाना चाहती थी।

क़िले की दीवार तोड़ने की उम्मीद ख़त्म हो गई । शहर के अन्दर मुसलमानों की तख़रीब कारी भी ख़त्म हो गई । मुसलमानो की कियादत करने वाले जांबाज शहीद हो चुके थे। बृजेस भी शहीद हो चूका था। लेकिन सुलतान अय्यूबी की उम्मीदें सिर्फ़ उन सरफरोशों के साथ वाबिसता नही थीं। वह क़िले सर करना जानता था। अभी तो मुहासरे का दूसरा दिन था मगर अब के सलीबीयों ने भी कसम खाली थी कि वह करक का क़िला सुलतान अय्यूबी को नहीं देंगें।

❖❖

मेरे फिलिस्तीन मैं आऊंगा

सालाहुद्दीन अय्यूबी ने सलीबियों के ग़ैर मामूली तौर पर मुसतहकम मुस्तक़र कर्क पर ऐसी बेखबरी में हमला किया था कि सलीबियों को उस वक़्त ख़बर हुई जब सुलतान अय्यूबी की फ़ौज कर्क को मुहासरे में ले चुकी थी लेकिन मुहासरा मुकम्मल नहीं था। यह सेह तरफ़ा मुहासरा था। जासूसों ने सुलतान अय्यूबी को यक़ीन दिलाया था कि कर्क शहर के मुसलमान बाशिंदे उन छापा मारों के साथ जिन्हें सुलतान अय्यूबी ने पहले ही शहर में दाख़िल कर दिया था, अंदर से क़िले की दीवार तोड़ देंगे। मुहासरे के चौथे पांचवें रोज़ अंदर से एक जासूस ने आकर सुलतान अय्यूबी को इत्तला दी कि तमाम छापा मार और चंद एक मुसलमान शहरी दीवार तोड़ने की कोशिश में शहीद होगए हैं। उन में मुसलमान लड़कियां भी थी, और उन में एक ईसाई लड़की भी शामिल होगई थी। सुलतान अय्यूबी को यह भी बताया गया कि किसी ईमान फरोश मुसलमान ने उस जांबाज़ जमाअत में शामिल होकर दुशमन को इत्तला देदी थी जिस के नतीजे में दुशमन ने घात लगाई और सारी की सारी जमाअत को शहीद करदिया। यह इत्तला भी दी गई कि अब अंदर से दीवार तोड़ने की उम्मीदें ख़त्म हो चुकी हैं।

उम्मीदें ख़त्म होनी ही थीं। सलीबियों ने जब देखा कि दीवार तोड़ने वालों में कर्क के मुसलमान नौजवान, और लड़कियों की लाशें थीं तो उन्हों ने मुसलमानों की पकड़ धकड़ शुरू कर दी। लड़कियों तक को न बख़्शा। जवानों को बेगार कैम्प में, बूढ़ों को उन के अपने घरों में और जवान लड़कियों को क़िले की फ़ौजी बैरिकों में क़ैद कर दिया। उन में से कुछ लड़कियों ने खुदकुशी भी कर ली थी क्योंकि वह जानती थीं कि कुफ्फार उन के साथ क्या सलूक करेंगे। सलाहुद्दीन अय्यूबी को भी यही ग़म खाने लगा कि कर्क के मुसलमानों की क़ुर्बानी बहुत महंगी पड़ेगी। उस ने जब इन जांबाज़ों की ख़बर सुनी तो अपने नायबीन से कहा– "यह कारिस्तानी सिर्फ़ एक ईमान फरोश मुसलमान की है। इस एक ग़द्दार ने इस्लाम की इतनी बड़ी फ़ौज को बेबस कर दिया है। एक वह हैं जिन्हों ने अल्लाह के नाम पर जानें क़ुर्बान करदीं, एक यह मुसलमान हैं जिन्हों ने अल्लाह का ईमान कुफ्फार के क़दमों में रख दिया है। यह ग़द्दार इस्लाम की तारीख़ का रुख़ फेर रहे हैं" सुलतान अय्यूबी गुस्से से उठ कर खड़ा होगया और अपनी रान पर घूंसा मार कर बोला– "मैं कर्क बहुत जलदी फ़तह करूंगा और उन ग़द्दारों को सज़ा दूंगा।"

सुलतान अय्यूबी की एंटली जेंस का अफ़सर, ज़ाहेदान ख़ेमे में दाख़िल हुआ। उस वक़्त सुलतान अय्यूबी कह रहा था– "आज रात को मुहासरा मुकम्म्ल होजाना चाहिए। मैं आप को अभी बताता हूं कि दस्ते कर्क के पीछे भेजे जाएं।"

"मुदाखलत की माफी चाहता हूं अमीरे मिश्र!" ज़ाहेदान ने कहा– "अब शायद आप मुहासरा मुकम्मल नहीं करसकेंगे हम ने कुछ वक़्त ज़ाए कर दिया।"

"क्या तुम कोई नई ख़बर लाए हो?" सुलतान अय्यूबी ने उस से पूछा।

आप ने जिस कामयाबी से दुशमन को बेख़बरी में आन लिया था उस से आप पूरा फायदा नहीं उठासके।" ज़ाहेदान ने जवाब दिया। वह ऐसे बेधड़क अंदाज़ से बोल रहा था जैसे अपने से छोटे ओहदे के आदमी को हिदायत दे रहा हो। सुलतान अय्यूबी ने अपने तामाम सीनयर और जूनियर कमांडरों और तमाम शोबो के सरबराहों से कह रखा था कि वह उसे बादशाह समझ कर फरशी सलाम न किया करें। मशवरे दिलेरी और खुद एतमादी के दें और नुक्ता चीनी खुल कर किया करें। ज़ाहेदान इन्हीं हेदायात पर अमल कर रहा था। उस के इलावा वह एंटली जेंस का सरबराहा था। उस की हैसियत ऐसी आंख की थी जो अंधेरों में भी देख लेती थी और वह ऐसा कान था जो अपने जासूसों के ज़रिए सैंकड़ों मील दूर दुशमन की सरगोशियां भी सुन लिया करता था। सुलतान अय्यूबी को उस की अहमीयत का एहसास था। वह जानता था कि कामयाब जासूसी के बग़ैर जंग नहीं जीती जासकती। खुसूसन इस सूरते हाल में जहां सलीबियों ने सलतनते इस्लामिया में जासूसों और तख़रीब कारों का जाल बिछा रखा था। सुलतान अय्यूबी को निहायत आला और ग़ैर मामूल तौर पर ज़हीन और तजरबा कार जासूसों की ज़रूरत थी। उस मैदान में वह पूरी तरह कामयाब था। उस एंटली जेंस के तीन अफ़सर अली बिन सुफ़यान और उस के दो नायब, हसन बिन अब्दुल्लाह और ज़ाहेदान जांबाज़ किस्म के सुरागरसां और जासूस थे। उन्हों ने इस महाज़ पर सलीबियों के कई वार बेकार किए थे।

"आप को मालूम था कि सलीबियों ने जहां कर्क का दिफा मज़बूत कर रख है वहां बहुत सी फ़ौज कर्क से दूर ख़ेमा ज़न कर रखी है" ज़ाहेदान ने कहा– "आप को यह भी बतादिया गया था कि इस फ़ौज को बाहर से मुहासरा तोड़ने के लिए इस्तेमाल किया जाएगा। जासूसों की इत्तला साफ बता रही थीं कि अब सलीबी क़िले से बाहर लड़ेंगे, फिर भी आप ने फौरी तौर पर मुहासरा मुकम्मल नहीं किया। इस से दुशमन ने फायदा उठा लिया।"

"तो क्या उन्हों ने हमला कर दिया है?" सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने बेताबी से पूछा।

"आज शाम तक उन की फ़ौज उस मुक़ाम तक आजाए गी जहां हमारी कोई फ़ौज नहीं. "ज़ाहेदान ने जवाब दिया।

"मेरे जासूस जो इत्तलाऐं लाए हैं वह यह हैं कि सलीबी फ़ौज घोड़ सवार और शुत्र सवार होगी। प्यादा दस्ते बहुत कम हैं। वह मुहासरे की जगह पर आजाऐंगे और दाऐं बाऐं हमले करेंगे। उस का नतीजा इस के सिवा और क्या होसकता है कि हमारा मुहासरा टूट जाएगा। सलीबियों की तादाद भी ज़्यादा बताई जाती है।"

"मैं तुम्हें और तुम्हारे जासूसों को ख़ेराजे तहसीन पेश करता हूं जो यह इत्तलाऐं लाऐ हैं। "सुलतान अय्यूबी ने कहा– "मैं जानता हूं यह काम कितना दुशवार और ख़तरनाक है। मैं तुम सब को यक़ीन दिलाता हूं कि सलीबी हमारे मुहासरे का जो ख़ला पुर करने और मुहासरे

तोड़ने आरहे हैं मैं उन्हें इसी ख़ला में गुम करदूंगा। मुझे अल्लाह की मदद पर भरोसा है। अगर तुम में कोई ग़द्दार नहीं तो अल्लाह तुम्हें फ़तह अता फरमाए गा।"

"अभी वक़्त है।" एक नायब सालार ने कहा– "अगर आप हुकम दें तो हम महफ़ूज़ा के तीन चार दस्ते सलीबियों के पहुंचने से पहले भेज देते हैं। मुहासरे का ख़ला पुर होजाएगा और सलीबियों का हमला नाकाम होजाएगा।"

सुलतान अय्यूबी के चेहरे पर परेशानी या इज़तराब का हलका सा तअस्सुर भी नहीं था। उस ने ज़ाहेदान से पूछा– "अगर तुम्हारी इत्ला बिलकुल सही है तो क्या तुम यह बता सकते हो कि सलीबी फ़ौज किस वक़्त हमले के मुक़ाम पर पहुंचेगी?"

"उन की पेश कदमी ख़ासी तेज़ है।" ज़ाहेदान ने जवाब दिया– "उन के साथ ख़ेमे और रसद नहीं आरही पीछे आरही है। इस से यह ज़ाहिर होता है कि वह रास्ते में कोई पड़ाव नहीं करेंगे। अगर वह इसी रफतार पर आते रहे तो रात गहरी होने तक पहुंच जाएंगे।"

"ख़ुदा करे वह रास्ते में न रुकें।" सुलतान अय्यूबी ने कहा..... " मगर वह थके हूए और भूके पियासे घोड़ों और ऊंटों के साथ हमला नही करेंगें। हमले के मुक़ाम पर आकर जानवरों को आराम और खूराक देंगें। इस दौरान वह देखेगें कि हम ने जो मुहासिरा कर रखा है। उस में खला है या नहीं। सलीबी इतने कोढ़ मग़ज़ नहीं कि एसी पेश बीनी और पेश बन्दी न करें".

...... सुलतान अय्यूबी ने अपने अमले के दो तीन हुकाम को बुलाया और उन्हें नई सूरत हाल से आगाह करके कहा...." सलीबी हमारे जाल में आ रहे हैं। किले के अकब मे हम ने मुहासिरे में जो खला छोड़ दिया है उसे और ज़्यादह ख़ुला करदो। दाऐं और बाऐं के दसतों से कह दो कि उन पर अकब से हमला आवर आरहा है। अपने पहलूओं को मज़बूत कर लें और दुशमन को अपने दरमियान आने दें। कोई तीर अन्दाज़ हुक्म के बेग़ैर कमान से तीर न निकाले।"

इस क़िसम के एहकाम के बाद सुलतान अय्यूबी ने पियादह और सवार तीर अन्दाज़ों के चन्द एक दसतों को जो उस ने रिज़र्व में रखे हूए थै, सूरज ग़ूरूब होते ही एसे मुकाम पर चले जाने को कहा जो सलीबीयों के हमले के मुमकिना मुक़ाम के क़रीब था। वह इलाका मैदानी नहीं था और सेहरा की तरह रेतिला भी नही था। वह टीलों ,चट्टानों और घाटियों का इलाका था। सुलतान अय्यूबी ने छापा मार दसतों के कमाण्डर को भी बुलाया था। उसे उस ने ये काम सोंपा कि सलीबीयों की फ़ौज के पीछे फलां रासते से ये रसद आ रही है जो रात को रासते में तबाह करनी है। ऐसे और कई एक ज़रूरी एहकामात दे कर सुलतान अय्यूबी खीमे से निकला। अपने घोड़े पर सवार हुआ। अपने अमले के ज़रूरी अफराद को साथ लिया और मुहाज़ की तरफ़ रवाना हो गया।

❖

सलाहुद्दीन अय्यूबी खुश फ़हमीयों मे मुबतला होने वाला इनसान नही था। उस ने दूर से मुहासरे का जाइज़ा लिसयां और अपने अमले से कहा......" सलीबीयों से ये क़िला लेना आसान नही। मुहासरे बड़े लम्बे अरसे तक काइम रखना पड़ेगा।" उस ने देखा कि क़िले के सामने वाली दीवार से तीरोंका मेंह बरस रहा है। क़िले के दरवाजे तक पहुंचना ना मुमकिन

9
—
2

था...... सुलतान अय्यूबी की फौज तीरों की ज़द से दूर थी। जवाबी तीर अन्दाजी का कोई फाइदा नहीं था। सुलतान अय्यूबी किले के पहलू की तरफ गया । वहां उसे एक वलवला अन्गेज़ मन्ज़र नज़र आया। उस का ऐक दसता हैरान कुन तेजी से किले की दीवार पर तीर बरसा रहा था। छे मिनजिनीकें आग फेंक रही थीं।दीवार पर जहां तीर और आग के गोले जारहे थे वहां कोई सलीबी नज़र नही आ रहा था। वह दुबक गये थे। सुलतान अय्यूबी दूर खड़ा देखता रहा । उस के तकरीबन चालीस सीपाही हाथों में बरछियां और कुदालें उठाए दीवार की तरफ़ सरपट दौड़ पड़े और दीवार तक पहुंच गए। किले की दीवार पत्थरों और मीट्टी की थी। उन्होंने दीवार तोड़नी शुरू कर दी । इसी मकसद के लिये उपर तीर और आग के गोले बरसाए जा रहे थे कि उपर से दुशमन उन पर दीवार तोड़ते वक़्त तीर न चला सके।

सुलतान अय्यूबी के मुहं से बेइख़तियार निकला........" आफरीन"........... मगर उसकी आंखें ठहर गईं। किले की दीवार पर ललकार सुनाई दी। एन उसी जगह के उपर से जहां सुलतान अय्यूबी के जांबाज़ दीवार तोड़ रहे थे बहुत से सलीबीयों के सर और कन्धे नज़र आ रहे थे। फिर बड़े बड़े डोल और ड्रम नज़र आए। ये उलटा दिये गये। उन में से जलती लकड़ीयां और अन्गारे निकले जो इन मुजाहिदीन पर गिरे जो नीचे दीवार तोड़ रहे थे। मुजाहिदीन ने आगे जाकर तीर बरसाने शूरू कर दिये जिन में मुतअद्दद सलीबी घाएल हो गए। दीवार की किसी और तरफ से तीर आए जिन्होंने मुजाहिदीन तीर अन्दाजों को ज़खमी और शहीद कर दिया। फिर दोनों तरफ से इस कदर तीर बरसने लगे कि हवा में उड़ते हूऐ तीरों का जाल तन गया। जांबाज़ दीवार तोड़ रहे थे। ये काम आसन नही था। क्योंकि दीवार बहुत ही चौड़ी थी ।नीचे से उस की चौड़ाई उपर की निसबत ज़्यादा थी। उन जांबाज़ों पर उपर से तीर नही चलाया जा सकता था मगर उन पर जलती लकड़ियां और दहकते अन्गारे फेंके जारहे थे। आग के डोल और डरम फेंकने वालों में बजाहिर कोई मुसलमान तीर अनदाज़ों से बच कर नही जाता था लेकिन वह तीर खा कर गिरने से पहले आग उन्डेल देते थे।

नीचे ये आलम था कि आग भड़क रही थी और दीवार तोड़ने वाले शोलों और अन्गारों में भी दीवार तोड़ रहे थे। तीरों का तबादला हो रहा था। आख़िर दीवार तोड़ने वाले झुलुस गये और उन में से चन्द एक इस हालत में पीछे को दौड़े के उन के कपड़ों को आग लगी हुई थी। वह दीवार से हटे ही थे कि उपर से तीर आए जो उन की पीठों में उतर गए। इस तरह उन में से कोई ज़िन्दा वापस न आसका। दस और मुजाहिदीन दीवार की तरफ़ दौड़े और दुशमन के तीरों में से गुज़रते दीवार तक पहुंच गए। उन्होंने बड़ी फुरती से दीवार के बहुत से पत्थर निकाल लिये ।उपर से उन पर भी आग के डरम और डोल उन्डेल दिये गये। आग फेंकने वालों में से दो इतना ऊपर गये थे। कि मुजाहिदीन के तीर सीनों में खाकर वह पीछे गिरने की बजाए आगे को गिरे और दीवार से सीधे नीचे अपनी ही फेंकी हुई आग में जल गये। मगर दीवार तोड़ने वालों में से भी कोई ज़िन्दा न बचा।

सुलतान अय्यूबी ने अपने घोड़े को ऐड़ लगाई और उस दसते के कमाण्डर के पास जाकर कहा......" तुम पर और तुम्हारे जानिबदारों पर अल्लाह की रहमत हो। इसलाम की

तारीख इन सब को याद रखेगी जो अल्लाह के नाम पर जल गये हैं अब ये तरीका छोड़ दो पीछे हट आओ। इतनी तेजी से इन्सान और तीर खत्म न करो। सलीबी इस किले के लिये इतनी ज़्यादा कुरबानी दे रहे हैं जिस का मैं तसव्वुर भी नही कर सकता था।"

" और हम भी इतनी ज़्यादा कुरबानी देगें जिस का सलीबी तसव्वुर नही कर सकते।" कमाण्डर ने कहा। .... " दीवार यहीं से टूटेगी और हम आप को यहीं से अन्दर ले जाऐंगें।"

" अल्लाह तुम्हारी आरजू पूरी करे।" सुलतान अय्यूबी ने कहा.... " अपने मुजाहिदीन को बचा कर रखो। सलीबी बाहर से हमला कर रहे हैं। तुम्हें शायद बाहर लड़ना पड़ेगा। मुहासरा मज़बूत रखो। हम सलीबीयों को भूका मारेंगें।"

इस दसते को पीछे हटा लिया गया मगर कमाण्डर ने सुलतान अय्यूबी से कहा.... " सालारे आज़म की इजाज़त हो तो मैं शहीद की लाशें उठवालूं? इस मकसद के लिये मुझे फिर यही तरीका इखतियार करना पड़ेगा।

"हां!" सुलतान अय्यूबी ने कहा....... उठवालो। किसी शहीद की लाश बाहर न पड़ी रहे।"

सुलतान अय्यूबी वहां से चला गया। इस जांबाज़ दसते ने जिस तरह अपने साथियों की लाशें उठाई, वह एक वलवला अन्गेज़ मन्जर था। जितनी लाशें उठानी थीं इतने ही मुजाहिदीन शहीद होगये। सुलतान अय्यूबी दूर निकल गया था जन्ग के दौरान वह अपना परचम साथ नही रखता था ताकि दुशमन को मालूम न हो सके कि वह कहां है। वह अपनी फौज से दूर हट गया और बहुत दूर जाकर वह टीलों, और चट्टानों और घाटियों के इलाके में चला गया। वह घोड़े से उतरा और एक टीले पर जाकर लेट गया ताकि उसे दुशमन न देख सके। उसे किले और शहर की दीवार नज़र आ रही थी और कम व बेश एक मील लम्बा वह इलाका भी नज़र आ रहा था जहां अभी उस की फौज नही पहुची थी। उस ने टीलों के इलाके का जाइज़ा लिया। हर जगह घूमा फिरा।

इसी जाइज़े और देख भाल में सूरज गुरूब हो गया। वह वहीं रहा। शाम गहरी हुई तो उसे इत्तेला दी गई कि उस के हुक्म के मुताबिक पियादा और सवार तीर अन्दाज़ों के दसते आरहे हैं। उस ने अपने कासिद से कहा कि कमाण्डरों को बुलाया जाये.... जब कमाण्डर उसक के पास आए तो छापा मार दसते का कमाण्डर भी उन के साथ था। उसे सुलतान अय्यूबी ने रासता बता कर अपने हदफ पर चले जाने को कहा। फिर वह दूसरे कमाण्डरों को हिदायात देने लगा।

रात आधी गुज़री ही थी कि दूर से घोड़ों की आवाज़ें इस तरह सुनाई देने लगीं जैसे सैलाब बन्द तोड़ कर आ रहा हो। चान्द पूरा था। चान्दनी शफाफ थी। सलीबीयों के चोक सवार टीलों और चट्टानों से कुछ दूर तक आगये। उन के पीछे शुत्र सवार थे। उन के तादाद के मुतअल्लिक गैर मुस्लिम मोअर्रिखों ने तीन हज़ार से कम बियान की है। मुसलमान मोअर्रिख पांच से आठ हज़ार तक बताते हैं। उस वक़्त के वकाए निगारों की जो तहरीरें दसतियाब हो सकी हैं वह कम से कम तादाद दस हज़ार और ज़्यादा से ज़्यादा बारह हज़ार बताते हैं। उन का कमाण्डर एक मशहूर सलीबी हुकमरां रीमाण्ड था। दो मोअर्रिखों ने कमाण्डर का नाम

रिनालट लिखा है लेकिन वह रिमाण्ड था। वह इसी हमले के लिये लम्बे अरसे से वहां से दूर खीमा ज़न था। उसे अब रात को या सुबह होते ही सुलतान अय्यूबी की फौज पर हमला करना था। जिस ने करक को मुहासरे में ले रखा था।

सलीबी सवार घोड़ों और ऊंटों से उतरे। घोड़ों के साथ दाने की थैलियां थी जो घोड़ों के आगे लटका दी गईं। सवारों को हुक्म दिया गया कि वह अपने अपने जानवरों के साथ रहें और ज़्यादा देर के लिये सो न जाएं। जानवरों के लिये चारह और पानी के मशकीज़े पीछे आरहे थे। सलीबीयों ने ये सोंचा कि मुसलमानों पर अकब से अचानक हमला करके घोड़ो को किल के अन्दर से पानी पीलायेंगे। सुलतान अय्यूबी के दीद बीन सलीबीयों को बड़ी अच्छी तरह देख रहे थे। और घबरा भी रहे थे क्योंकि सलीबीयों की ताकत बहुत थी। इतनी ज़्यादा ताकत से वह मुहासरे तोड़ सकते थे।

सेहर अभी घुन्धली थी। सलीबीयों को सवार होने , बरछियों और तलवारें तय्यार रखने का हुक्म मिला। ये दर असल हमले का हुक्म था। वह एक बड़ी ही लम्बी सफ की सूरत में आगे बढ़े। जूंही अगली सफ ने एड़ लगाई अकब से तीरों की बोछारें आने लगीं। जिन सवारों को तीर लगे, वह घोड़ो पर ही औंधे हो गए या गिर पड़े, और जिन घोड़ों को तीर लगे वह बे काबू होकर भाग उठे। ऊंट अभी चले ही थे कि उन में भगदड़ मच गई । सलीबी कमाण्डर समझ न सके कि ये हुआ किया है और उन की तरतीब बिखरती क्यों जारही है। उन्हों ने गुस्से की हालत में चिल्लाना शुरू कर दिया। ज़खमी घोड़ों और ऊंटों ने जो वावेला बपा किया उस ने सारी फौज पर दहशत तारी कर दी। सुबह का उजाला साफ हुआ तो रिमाण्ड को मालूम हुआ कि वह सुलतान अय्यूबी के घेरे में आ गया है। उसे ये मालूम नही थ कि मुसलमानों की तादाद कितनी है। वह उसे बहुत ज़्यादा समझ रहा था। एसी सूरते हाल के लिये वह तय्यार नही था । उस ने हमला को रुकवा दिया लेकिन उस के सवारों की अगली सफ उस खला के क़रीब पहूंच चूकी थी जहां उस पूरे लशकर को पहुंचना था।

मुहासरे वाली फ़ौज को पहले से ही ख़बरदार कर दिया गया था। वह इस हमले के इसतकबाल के लिये तय्यार थी। उस के मुजाहिदीन ने गर्द के बादल ज़मीन से उठते और अपनी तरफ़ आते देखे तो वह तय्यार होगये। गर्द क़रीब आई तो उस में से घोड़ा सवार नमुदार हुए। मुजाहिदीन ने अपने आप को हमला रोकने की तरतीब मे कर लिया। वह दाऐं और बाऐं थे। जुंही घोड़े उन के दरमियान आये, मुजाहिदीन पहलूओं से उन पर टूट पड़े। तब सलीबी सवारों को एहसास हुआ कि वह अपने लशकर से कट गये हैं और उनका लशकर अपनी जगह से चला ही नही। सुलतान अय्यूबी इस मारके की कमान और निगरानी खुद कर रहा था। सलीबी पीछे को मुड़े ताकि मुकाबला करें लेकिन सुलतान अय्यूबी ने उन्हें ये चाल चल कर बहुत मायुस किया कि सलीबीयों का कोई दसता सरपट रफतार से किसी तरफ़ हमला करता था तो आगे मजाहिमत न मिलती थी। अलबत्ता पहलुओं और अकब से उस पर तीर बरसते थे। सलीबी कमाण्डरों ने अपने लशकरों को छोटे छोटे दसतों में तकसीम कर दिया। सुलतान अय्यूबी के कमाण्डरों ने उस की हिदायत के मुताबिक आमने सामने की

मुकाबले की नौबत ही न आने दी । सलीबीयों के घोड़े थके हुए थे । भूके और पियासे भी थे। उन्हें जन्ग रोकनी पड़ी। वह चारे और पानी के मुनतज़िर थे। रसद को सुबह तक पहुंच जाना चाहिये था।

दोपहर तक रसद न पहुंची। चन्द एक सवार दौड़ाये गये लेकिन वह मुसलमान तीर अन्दाज़ो का शिकार होगये। अगर वह ज़िन्दा पीछे चले जाते तो उन्हे रसद न मिलती । वह रात को ही सुलतान अय्यूबी के छापा मार दसते की लपेट में आई थी। इस दसते ने बड़ी कामयाबी से शब खून मारा और रसद तबाह कर दी थी। सुलतान अय्यूबी ने अपने महफ़ूज़ा में से मज़ीद दसते बुला लिये और रिमाण्ड के लशकर को घेरे मे ले लिया । अगर मुसलमानों की तादाद सलीबीयों जितनी होती तो वह हमला करके सलीबीयों को ख़त्म कर देते सुलतान अय्यूबी अपनी नफरी ज़ाए नही करना चाहता था। उसने उस लशकर को लड़ाते लड़ाते टीलों और घाटियों के इलाके मे ले जाकर घेरे मे ले लिया। उसे मालूम था कि जूं जूं वक़्त गुजरता जाएगा सलीबी बेकार होते जाऐंगें। मगर सलीबीयों को बड़ी कामयाबी से घेरे में लेकर उसे खुद भी नुकसान हो रहा था। उस ने जहां सलीबीयों के इतनी बड़ी कुव्वत को बान्ध लिया था। उस के अपने बहुत से रिजर्व दसते भी बन्ध गये थे। उन्हें अब वह किसी और तरफ़ से इसतेमाल नही कर सकता था।

इस इलाके के अन्दर पानी मौजूद था। जो जानवरों को कुछ अरसे के लिये जिन्दा रखने के लियें काफी था। फ़ौज को ज़िन्दा रखने के लिये ज़खमी घोड़ों और ऊंटों का गोश्त काफी था। सुलतान अय्यूबी ने शहर का मुहासरा मुकम्मल करने का हुक्म दे दिया। सलीबी चैन से नहीं बैठे। हर रोज़ किसी न किसी जगह झड़प होती थी और दिन गुज़रते जारहे थे। सुलतान अय्यूबी ने किले और शहर के गिर्द घूमना शुरूअ कर दिया। कहीं से भी दीवार तोड़ने की सूरत नज़र नहीं आई।

❖

मुहासरे का सोलहवां सतरहावां रोज़ था। शाम के वक़्त सुलतान अय्यूबी अपने खीमें में बैठा अपने नाएबीन वग़ैरह के साथ इस मसले पर बातें कर रहा था कि किले को तोड़ने की किया सूरत इखतियार की जाए। मुहाफिज़ ने अन्दर आकर इत्तेला दी कि सूडान के मुहाज़ से क़ासिद आया है। सुलतान अय्यूबी तड़प कर बोला...." उसे फ़ौरन भेज दो".... और उस के साथ ही उसके मूहं से निकल गया। ....." अल्लाह करे ये कोई अच्छी ख़बर लाया हो।"

क़ासिद अन्दर आया तो सुलतान अय्यूबी ने फ़ौरन पहचान लिया कि ये क़ासिद नहीं, किसी दसते का कमाण्डर है सुलतान अय्यूबी ने बेताबी से पूछा...." कोई अच्छी ख़बर लाए हो?..... बैठ जाओ।"

कमाण्डर ने नफी में सर हिलाया और बोला ...." जिस रन्ग में सालारे आज़म देखें। ख़बर इस लिये अच्छी नही कि हम सूडान में फ़तह हासिल न कर सके और इस लिहाज़ से ख़बर अच्छी है कि हम ने अभी शिकशत नही खाई और पसपा नही हूए।"

" इस का मतलब ये हुआ कि शिकश्त और पसपाई के आसार भी नज़र आरहे हैं। "

सुलतान अय्यूबी ने पूछा।

"साफ नज़र आरहे हैं।" कमाण्डर ने जवाब दिया..... "मैं आपका हुक्म लेने अया हूँ कि हम किया करें। हमें कुमक की शदीद ज़रूरत है। अगर हमारी ये ज़रूरत पूरी न हूई तो पसपाई के बगैर चारह नहीं।"

सुलतान अय्यूबी ने पूरा पैग़ाम सुन्ने से पहले उस के लिये खाना मंगवाया और कहा कि खाओ और पैग़ाम सुनाते जाओ। सुलतान अय्यूबी की गैर हाज़री में उस का भाई तकियुद्दीन मिस्र का काएम मुकाम अमीर मुकर्र हुआ था। उस ने सूडान और मिस्र की सरहद के करीब फिरऔनो के ज़मानों के खण्डरों में सलीबीयों का पैदा करदह एक बड़ा ही खतरनाक नज़रया और डरामा पकड़ा था और उसके फौरन बाद उसने ये सोंच कर सूडानीयों पर हमला कर दिया था कि वहां मिस्र पर हमले की तय्यारियां हो रही थी। मुशीरों और सालारों ने उसे कहा था कि वह सुलतान अय्यूबी से इजाज़त लेकर हमला करें मगर तकियूद्दीन ने ये कह कर सूडानीयों पर हमला कर दिया था कि वह अपने भाई को इस लिये परीशान नहीं करना चाहता कि वह सलीबीयों के इतने बड़े ताक़तवर लशकर के खिलाफ लड़ रहा है। आम कासिद कि बजाए तकियूद्दीन ने एक कमाण्डर को इस लिये भेजा था कि वह सुलतान अय्यूबी को मुहाज़ की सही सूरते हाल फन्नी निगाह से सुना सके। उस से पहले सुलतान अय्यूबी को सिर्फ ये इत्तेला मिली थी कि तकियूद्दीन ने सूडान पर हमला कर दिया है। कमाण्डर ने जो वाकिआत सुलतान अय्यूबी को सुनाए वह मुख्तसरन ये थे कि तकियूद्दीन ने हकाएक पर नज़र रखने की बजाए जज़बे और जज़बात से मग़लूब होकर हमले का हुक्म दे दिया। उस का जज़बा वही था। जो उसके भाई सुलतान अय्यूबी का था। लेकिन दोनो भाईयों की जन्गी फहम व फिरासत में फर्क था। तकियूद्दीन ने जो फैसला किया नेक नीयती और इसलामी जज़बे के तेहत किया मगर इस हकीकत को नज़र अन्दाज़ कर गया कि दुशमन पर सोंचे समझे बेगैर टूट पड़ने को जिहाद या जन्ग नही कहते। उसने सूडान में फैलाए हूए अपने जासूसों की रिर्पोटों पर भी पूरी तरह गौर न किया। उनकी सिर्फ़ इस इत्तेला पर तव्वजो मरकूज रखी कि सूडानीयों को सलीबी कमाण्डर टरेनिंग दे रहे हैं और वहां हमले की तय्यारीयां तकरीबन मुकम्मल हो चूकी हैं। तकियूद्दीन ने दुशमन को तय्यारी की हालत में दबोच लेने का फैसला कर लिया मगर इस किसम की इन्तहाई अहम मालूमात हासिल न कीं कि सूडानीयों की जन्गी ताकत कितनी है? वह कितनी ताकत लड़ाएगें और कितनी रिजर्व में रखेंगे? उनके हथियार कैसे हैं? सवार कितने और पयादा कितने हैं? और सब से ज़्यादा मसला ये था कि मैदाने जन्ग किस किसम का और मिस्र से कितनी दूर होगा और रसद के इन्तजामात क्या होंगे?

दो खराबियां तो इबतदा में ही आगई। एक ये कि सूडानियों ने बल्कि सलीबी कमाण्डरों ने तकीयुद्दीन को सरहद पर नही रोका। उसे बहुत दूर तक सूडान के उस इलाके तक जाने का रास्ता दे दिया जो बड़ा ही ज़ालिम सेहरा था और जहां पानी नही था। दूसरा नुकसान ये सामने आया कि तकीयुद्दीन की फ़ौज सलाहुद्दीन अय्यूबी की चालों पर लड़ने वाली फौज थी। जो इन्तहाई कम तादाद में दुशमन के बड़े बड़े दसतों को तहस नहस कर दिया करती थी।

उस फौज को सिर्फ सुलतान अय्यूबी इसतेमाल क्या करता था। सुलतान अय्यूबी आमने सामने के टक्कर से हमेशा गुरेज़ करता था। वह मफ़तहर्रिक किसम की जन्ग लड़ता था। तकीयुद्दीन लशकर कशी का काईल था। उस फौज में तजरबा कार और जांबाज छापा मार दसते भी थे लेकिन उसका इसतेमाल अय्यूबी जानता था। सूडान में जाकर यूं हूआ कि फौज एक लशकर की सूरत में बन्धी रही और दुशमन अपनी चाल चल गया। दुशमन तकीयुद्दीन को अपनी पसन्द के इलाके में ले गया और उसकी फौज पर सुलतान अय्यूबी के अन्दाज़ के शबखून मारने शुरूअ कर दिये। तकीयुद्दीन के जानवरों और जवानों को पानी की एक बून्द भी नही मिलती थी। छापा मार दसतों के कमाण्डरों ने उसे कहा कि वह उन्हें सेहरा में आज़ाद छोड़ दे मगर तकीयुद्दीन ने इस खदशे के पेशे नज़र उन्हें कोई कारवाई न करने दी कि जमीयत और मरकज़ियत ख़त्म हो जाएगी।

जब रसद का मसला सामने आया तो ये तकलीफ देह एहसास हुआ कि वह इतनी दूर चले आऐ हैं जहां तक रसद को पहुचंते कई दिन लगेगें और रसद का रासता महफूज़ भी नहीं। हुआ भी एसे ही कि रसद के पहले ही काफले की इत्तेला मिली कि दुशमन ने उसे तबाह नही किया बल्कि तमाम तर रसद और जानवर उड़ा ले गया है। इस हादसे की इत्तेला पर छापा मार दसतों के एक सिनियर कमाण्डर और तकीयुद्दीन में गरमा गरमी हो गई। कमाण्डर ने कहा कि वह लड़ने आए हैं और लड़ेगें लेकिन इस तरह नही कि दुशमन शबखून मार रहा है। रसद लूट कर ले गया है और हम मरकज़ियत के पाबन्द बैठे रहें। तकीयद्दीन ने हुक्म के लहजे में सख़्त कलामी की तो कमाण्डर ने कहा........." आप तकीयुद्दीन हैं सलाहुद्दीन नहीं। हम उस अज़्म और उस तरीके से लड़ेगें जो हमें सलाहुद्दीन ने सिखाया है। हम छापा मार हैं। हम दुशमन के पेट में जाकर उसके पेट चाक किया करते हैं। आपका ये लशकर भूका मर रहा है और रसद दुशमन ले गया है। हम दुशमन की रसद लूट कर अपनी फ़ौज को खिलाने वाले हैं।"

वकाए निगार लिखते हैं कि तकीयुद्दीन की आँखों में आंसू आगए। वह जानता था कि छापा मारों का ये कमाण्डर किस जज़्बे से पागल हुआ जा रहा है। उस ने जज़्बाती लहजे में कहा........मैं जाते बारी ताला के अज़ाब से डरता हूं। मैं उन जांबाजों को जो फलसतीन में लड़ते हुए आए हैं नाहक मौत के मूंह में नहीं धकेलना चाहता।"

" फिर आपको हमला भी नही करना चाहिय था।" कमाण्डर ने कहा........." हम में कौन है जो अल्लाह के नाम पर कुरबानी देने को तय्यार नहीं। हम मौत के मूहं में आ चुके हैं, और यही मुसलमान की शान है कि वह मौत के मूहं में जाकर अपने आप को अल्लाह के करीब महसूस करता है। आप जज़्बात से निकलें हम दुशमन की जाल में आ चुके हैं।"

तकीयुद्दीन कोई एसा अनाड़ी भी नही था। उसे सुलतान अय्यूबी के ये अलफाज़ याद थे कि अपने आप को बादशाह समझकर किसी को हुक्म न देना और मैदाने जन्ग में जाकर अपनी गलतीयों से चश्म पोशी न करना। उस ने उस कमाण्डर की सख़्त कलामी को गुसताखी न समझा और उसी वक़्त तमाम आला कमाण्डरों को बुलाकर जन्ग की सूरतेहाल और आईन्दा

इकदाम के मुतअल्लिक बात चीत की। फ़ैसला ये हुआ कि छापा मारों को जवाबी कारवाईयां करने को फैलादी जाए। रसद को भी छापा मार सलतनत में ले लें। फ़ौज के मुतअल्लिक ये फ़ैसला हुआ कि उन्हें तीन हिस्सों में तकसीम करके दुशमन पर तीन तरफ़ से हमला किया जाए। तकियुद्दीन ने जो अपने पास जो खासा रखा वह खासा कम था। उस तकसीम और तरतीब से ये फाईदा हुआ कि फ़ौज उस इलाके से निकल गई जहां पानी नहीं था। रेत और टीलों का समुन्दर था। मगर फ़ौज बिखर गई दुशमन ने तीनों हिस्सों पर हमला करके उन्हें और ज़्यादा बिखेर दिया। जानी नुकसान बहुत होने लगा। निहायत तेज़ी से कमाण्डरों ने अपने अपने दसतों को अलग अलग करके उसी नौईयत की जन्ग शुरूअ कर दी जो उन्हें सुलतान अय्यूबी ने सीखाई थी मगर साफ पता चल राह था कि वह जीत नहीं सकेंगें। उन्होंने जज़बा काइम रखा रसद और कुमक का सवाल ही ख़त्म हो गया था। वह शबखून मारते और खाने पीने के लिये कुछ हासिल कर लेते थे। छापा मार दसते निहायत जांबाज़ी से शबखून मारते दुशमन का नुकसान करते और जो हाथ लगता वह मुखतलिफ दसतों तक पहुंचा देते थे।

मरकज़ी कमान ख़त्म हो चुकी थी। तकीयुद्दीन अपने अमले के साथ भागता दौड़ता रहता था। जज़बे की हद तक वह मुतमईन था। उसे कहीं से भी एसी इत्तेला नहीं मिली कि किसी दसते या जमाअतने हथियार डाल दिये हों। जन्ग छोटे छोटे मारकों और झड़पों में तकसीम होते होते आधे सूडान तक फैल गई। मुसलमान कमाण्डरों ने फरदन फरदन ये फ़ैसला कर कि वह छापा मार किसम की जन्ग लड़ते रहेंगें सूडान से निकलेंगें नहीं। दूशमन का नुकसान भी हो रहा था। एक वक़्त आगया जब दुशमन परीशान हो गया कि मुसलमानों को सूडान से किस तरह निकाला जाए। मुसलमान फ़ौजी सेहराओ, बियाबानों और देहाती आबादीयों में फैल गए थे। अब मरकज़ को यह भी पता नही चलता था कि जानी नुकसान कितना हो चूका है और कितनी नफरी बाकी है। ये अन्दाज़ा ज़रूर हो रहा था कि दुशमन भी मुसीबत में मुबतला है और अब वह मिस्र पर हमला नहीं कर सकेगा। मगर इस तरीक़ए जन्ग से कोई ठोस फाइदा हासिल नही किया जा सकता था। कोई इलाक़ा फ़तह नही किया जा सकता था। फ़ौज मरती जा रही थी।

उन हालात में तकीयुद्दीन ने सुलतान अय्यूबी को अपने एक कमाण्डर की ज़बानी पैग़ाम भेजा। उस ने कहा कि सूडान की मुहिम सिर्फ़ उसी सूरत में कामियाब हो सकती है कि उसे कुमक मिल जाए। उसकी तमाम फ़ौज छापा मार पारटियों मेंबट गई थी। उन पारटियों की कारवाई से फाईदा उठाने के लिये मज़ीद फ़ौज की ज़रूरत थी। तकीयुद्दीन ने सुलतान अय्यूबी से पूछा था कि कुमक न मिल सके तो क्या सूडान में बिखरी फ़ौज को इकट्ठा करके वापस मिस्र आ जाए ? मिस्र में जो फ़ौज थी वह मिस्र की अन्दूरूनी हालात और सरहदों की हिफाज़त के लिये भी नाकाफी थी। उसे मुहाज़ पर ले जाने का सवाल ही पैदा नही था। सुलतान अय्यूबी पसपाई का क़ाएल नही था उस के लिये ये फ़ैसला करना मुशकिल हो गया कि वह अपने भाई को पसपाई का हुक्म दे या नहीं लेकिन हक़ाएक़ उसे मजबूर कर रहे थे।

वह कुमक नहीं दे सकता था। वह खुद कुमक की ज़रूरत महसूस कर रहा था। वह गहरी सोंच में पड़ गया।

❖

तकीयुद्दीन के इस क़ासिद ने सुलतान अय्यूबी को जन्ग की सूरते हाल तो बतादी लेकिन सलीबीयों और सूडानीयों ने वहां जो एक और मुहाज़ खोल दिया था वह न बताया। ग़ालिबन उस कमाण्डर को मालूम न होगा। एसे इनकिशाफ बहुत बाद में हुए थे। तकीयुद्दीन की फ़ौज दस दस बारह बारह नफ़री टोलियों में बिखर कर लड़ रही थी बाज़ इलाकों में ख़ाना बदोशों के झोंपड़ो और खीमें भी थे बाज़ जगहें हरी भरी और सबज थीं और बेशतर इलाके बन्जर और वीरान और रेगिसतान थे। एक शाम तीन छापा मार मुजाहिद वापस अपने एक सिनियर कमाण्डर के पास आए। उन में दो ज़खमी थे। उन्होंने सूनाया कि उनकी पार्टी में इक्कीस अफराद थे और बाईसवां पार्टी कमाण्डर था। दिन के वक़्त ये पार्टी एक जगह छुपी हूई थी। पार्टी कमाण्डर इधर उधर इस तरह टहल रहा था जैसे पहरा दे रहा हो या किसी की राह देख रहा हो। एक सूडानी शुतर सवार गुज़रा और पार्टी कमाण्डर को देख कर रुक गया। कमाण्डर उसके पास गया और मालूम नही उस के साथ क्या बातें कीं। शुतर सवार चला गया तो कमाण्डर ने अपने जांबाज़ों को ये खुशख़बरी सुनाई कि दो मील दूर एक गावं है जहां मुसलमान रहते हैं। इस शुतर सवार ने पार्टी को अपने गावं में मदऊ किया है। रात को गावं वाले पार्टी को अपना मेहमान रखेंगें और दुशमन की एक जमीअत की जगह बताएगें।

तमाम जांबाज़ बहुत खुश हुए। खाना वाना मिलने के इलावह दुशमन पर हमले का मौक़ा मिल रहा था। सूरज ग़ुरूब होते ही यह सब उस गांव की तरफ़ चल दिए। वहां जाके देखा कि सिर्फ़ तीन झोंपड़े थे। इधर उधर दरख़्त थे और पानी भी था। सिपाहियों को झोंपड़ों के बाहर डेरे डालने को कहा गया। पार्टी कमांडर एक झोंपड़े में चला गया। बाहर मशअलें जला दी गईं और सब को खाना दिया गया। पार्टी कमांडर ने कहा सब सोजाओ, हमले के वक़्त उन्हें जगालिया जाए गा। थके हुए सिपाही सो गए। यह तीन जो वापस आए उन में से एक सो न सका या उस की आंख खुल गई। उसे एक झोंपड़े में औरतों के क़हक़हों की आवाज़ें सुनाई दीं। उस ने झांक कर देखा। झोंपड़े में पार्टी कमांडर दो निहायत हसीन लड़कियों के साथ हंस खेल रहा था और शराब चल रही थी। लड़कियां सेहराई लिबास में थीं लेकिन सेहराई नहीं लगती थीं। उस सिपाही को बाहर कुछ दबी दबी आवाज़ें सुनाई दीं। चांदनी में उस ने देखा कि बहुत से आदमी आरहे थे, जिन के हाथों में बरछियां और तलवारें थीं। सिपाही झोंपड़े की ओट में होगया और देखता रहा कि यह कौन लोग हैं। झोंपड़े में कोई दाख़िल हुआ। उस की आवाज़ सुनाई दी। "क्यां भाई काम करदें?" पार्टी कमांडर ने कहा– "तुम आगए? सब सोए हुए हैं ख़त्म करदो।" और लड़कियों के क़हक़हे सुनाई दिए।

वह आदमी जो आरहे थे सोई हुई पार्टी पर टूट पड़े। कुछ तो सोते में ख़त्म होगए और जो जाग उठे उन्हों ने मुक़ाबला किया। यह सिपाही छुपा हुआ देखता रहा। उसे अपने दो साथी भागते नज़र आए। मौक़ा देख कर यह सिपाही भी भाग उठा और अपने दो साथियों से

जामिला। वह दोनो ज़ख़्मी थे। किसी ने उन का तआक़ुब न किया। यह मालूम नहीं होसका कि पार्टी कमांडर शुत्र सवार के दिए हुए लालच में आगया था वह पहले से ही दुशमन का एजेंट था और अपने आदमियों को मरवाने का मौक़ा देख रहा था। बहर हाल यह इन्कशाफ़ हुआ कि दुशमन ने बिखरे हुए मुसलमान दस्तों को ख़त्म करने या अपने हाथ में करने के लिए लड़कियों को इस्तेमाल करना शुरू कर दिया है। दुशमन इंसानी फ़ितरत की कमज़ोरियों को इस्तेमाल कर रहा था। इन हालात में लड़ने वाले सिपाही को पेट और जिंस की भूक बहुत परेशान किया करती है। दुशमन मुजाहिदीन को ढूंढ ढूंढ कर अलग कर रहा था और नफ़सियाती हथ्यार भी इस्तेमाल कर रहा था। ऐसे चंद और वाक़आत हुए। मुजाहिदीन को ख़बर दार किया गया कि किसी के झांसे में न आएं।

ऐसे बहुत से वाक़आत में एक वाक़आ क़ाबिले ज़िक है। छापा मार दस्ते का एक कमांडर अता अलहाशमी एक तरफ़ बैठा हुआ था। उस का दस्ता तीन चार पार्टियों में बिखरा हुआ था। यह मिश्र से आने वाली रसद का रास्ता था। अता अलहाशमी ने सिर्फ़ एक दस्ते से जिस की नफ़री एक सौ से कुछ कम थी, रसद के तमाम तर रास्ते को महफ़ूज़ कर दिया था। रसद पर छापा मारने वाले दुशमन का उसने बहुत नुक़सान किया था। उस के जांबाज़ अचानक झपट पड़े थे। सूडानियों ने उन्हें ख़त्म करने के बहुत जतन किए लेकिन पांच छः जांबाज़ों को शहीद करने के सिवा कोई कामयाबी हासिल न कर सके। अता अलहाशिम टीलों में ढकी हुई एक जगह बैठा था। उस के साथ छः सात जांबाज़ थे। यह उसने हेड क्वारटर बना रखा था। उसे सेहराई ख़ाना बदोशों के लिबास में दो लड़कियां एक अधेड़ उम्र आदमी के साथ नज़र आईं। अता अलहाशिम को देख कर तीनों उस के पास आगए। लड़कियां सूडानी मालूम होती थीं लेकिन उन्हों ने जो लिबास पहन रखा था वह बहरूप लगता था। उन के चेहरों पर गर्द थी। चेहरे उदास थे और थकन भी मालूम होती थी। लड़कियां अधेड़ उम्र आदमी के पीछे हो गईं। यह झिझक और शर्म का इज़हार था।

उस आदमी ने कुछ मिश्री और कुछ सूडानी ज़ुबान में कहा कि वह मुसलमान है और यह दोनों उसकी बेटियां हैं। वह भूक से मर रहे हैं। उस ने खाने के लिए कुछ मांगा। अता अलहाशिम सूडान की ज़बान जानता था। वह छापा मार था। सूडानी इलाक़े कमांडू कार रवायों की कामयाबी के लिए उस ने सूडानी ज़ुबान सीखी थी। उस के पास ख़ुराक की कमी नहीं थी। रसद का मुहाफ़िज़ था। दो तीन बार रसद गुज़री थी जिस में से उस ने अपने दस्ते के लिए बहुत सारा राशन पानी अपने पास रख लिया था। उस ने उन तीनों को खाना दिया और पूछा कि वह कहां से आए हैं और कहा जा रहे हैं। उस आदमी ने किसी गांव का नाम लेकर कहा कि उन का गांव जंग की ज़द में आगया है। कभी सूडानी आजाते थे, कभी मुसलमान। दोनों घर में खाने की कोई चीज़ नहीं छोड़ते थे। वह इन लड़कियों को फ़ौजयों से छिपाता फिरता था। आख़िर तंग आकर घर से निकल खड़ा हुआ। वह लड़कियों की इज्ज़त बचाना चाहता था। उस ने बताया कि चूंकि वह मुसलमान है, इस लिए इस कोशिश में है कि मिस्र चला जाए मगर मुमकिन नज़र नहीं आता। उस ने अता अलहाशिम से कहा कि वह

उन्हें मिश्र पहुंचा दे। उस के साथ ही उस ने पूछा– "तुम लोग इस जगह कब तक रहोगे?"

"जब तक रहूंगा तुम तीनों को अपने साथ रखूंगा।" अता अलहाशिम ने जवाब दिया।

"आप इन दोनो लड़कियों को अपनी पनाह में लेलें।" अधेड़ उम्र आदमी ने कहा– "मैं चला जाता हूं।"

"मैं यह देख कर हैरान हो रही हूं कि आप की ज़िंदगी कितनी दुशवार है।" एक लड़की ने मासूम लहजे में कहा और पूछा– "आप को अपना घर और बीवी बच्चे याद नहीं आते?"

"सब याद आते हैं" अता अलहाशिम ने जवाब दिया। "लेकिन मैं अपने फ़र्ज़ को नहीं भूल सकता।"

यूं मालूम होता था जैसे खाना खाकर और पानी पीकर उन के जिस्मों में नई जान और नई रूह पैदा होगई हो। एक तो ख़ामोश रही, दूसरी की ज़ुबान रवां होगई। उस ने जितनी भी बातें कीं उन में अता अलहाशिम और उस के जांबाज़ों के लिए हमदर्दी थी। उस ने यह भी कहा कि आप लोग वतन से इतनी दूर आकर अपनी जानें क्यों ज़ाए करते हैं।

अता अलहाशिम उठ खड़ा हुआ। उस ने तीनों को उठाया और अपने आदमियों को बुलाया। उन्हें कहा कि इस सूडानी के पांव रस्सयों से बांध कर मेरे घोड़े के पीछे बांध दो। उन्हों ने उसे गिरा कर पांव बांध दिए और घोड़ा खोल लाए। रस्सी का एक सिरा घोड़े की ज़ीन के साथ बांध दिया। अता अलहाशिम ने एक सिपाही से कहा कि घोड़े पर सवार हो जाए। वह सवार होगया। अता अलहाशिम ने लड़कियों को इकट्ठा खड़ा करके दो तीर अंदाज़ बुलाए। उन्हें कहा कि मेरे इशारे पर लड़कियों की आंखों के दरमियान एक एक तीर चलादें और घोड़ सवार घोड़े को एड़ लगादे। घोड़े के पीछे सूडानी बंधा हुआ ज़मीन पर पड़ा हुआ था। उसे मालूम था कि घोड़ा दौड़े गा तो उस का क्या हश्र होगा। तीर आंदाज़ों ने एक एक तीर कमानों में डाल लिया और घोड़ सवार ने लगामें थाम लीं। अता अलहाशिम ने लड़कियों और आदमी से कहा– "मैं तुम तीनों को सिर्फ़ एक बार कहूंगा कि अपनी असलियत बतादो, जिस मक़सद के लिए आए हो साफ़ बता दो, वरना अपने अंजाम के लिए तैयार होजाओ।"

ख़ामोशी तारी होगई। लड़कियों ने घोड़े के पीछे बंधे हुए अपने साथी को देखा। वह भी ख़ामोश था। उन्हों ने आंखों ही आंखों में आपस में मशवरा कर लिया। सूडानी ने कहा कि वह अपना आप ज़ाहिर करदेगा। अता अलहाशमी उस के पास बैठ गया और कहा कि वह सच बोलेगा तो उसे खोला जाएगा। उस आदमी ने कहा– "ओ पत्थर दिल इंसान! तेरे पास इतनी ख़ूबसूरत लड़कियां लाया हूं और तू उन्हें तीरों का निशाना बना रहा है। उन्हें अपने पास रख ले और अपने दस्ते को समेट कर यहां से चला जा। अगर यह क़ीमत थोड़ी है तो अपनी क़ीमत बता। सोने के सिक्के मांग, कुछ और मांग। शाम से पहले लादूंगा।"

अता अलहाशिम उठा और सवार से कहा– "घोड़ा दुलकी चाल पंद्रह बीस क़दम चलाओ।"

घोड़ा चल पड़ा। चंद क़दम गया तो सूडानी बिलबिला उठा। अता अलहाशिम ने कहा– "रुक जाओ।" घोड़ा रुका तो अता अलहाशिम ने उस के पास जाकर कहा कि वह सीधी बातें करने पर आजाए। वह मान गया। उस ने बतादिया कि वह सूडानी जासूस है, और सलीबियों

ने उसे ट्रेनिंग दी है। लड़कियों के मुतअल्लिक उस ने बताया कि मिश्र की पैदाइश हैं और सलीबियों ने उन्हें तख़रीब कारी के फ़न का माहिर बना रखा है। अता अलहाशिम ने उस के पांव खोल दिए और उसे अपने पास बिठा कर बातें पूछीं। उस ने बताया कि उसे यह काम दिया गया है कि सूडान में फैले हुए मुसलमान कमांडरों को लड़कियों या सोने चांदी का चकमा देकर उन्हें और उन के सिपाहियों को ख़त्म कर दिया जाए या उन्हें अपने हाथ में लिया जाए। उस ने बताया कि अता अलहाशिम ने रसद का रासता ऐसी ख़ूबी से महफ़ूज़ कर रखा था कि सलीबी और सूडानी छापा मारों को जानी नुक़सान भी हुआ और रसद भी निकल गई। उसे यह मिशन देकर भेजा गया था कि अता अलहाशिम को उन लड़कियों से अंधा करके उसे क़त्ल करदे या उसे ऐसे फंदे में ले आए कि उसे क़त्ल या क़ैद कर लिया जाए और अगर वह ईमान का कच्चा साबित हुआ तो उसे अपने साथ मिला लिया जाएगा। यह सूडानी हैरान था कि अता अलहाशिम ने इतनी ख़ूबसूरत लड़कियों को क़ुबूल नहीं किया। उस ने जब अता अलहाशिम से पूछा कि उस ने लड़कियों को और ज़र व जवाहरात की पेश कश को क्यों ठुकरा दिया है तो अता अलहाशिम ने मुसकरा कर कहा– "क्यों कि मैं ईमान का कच्चा नहीं।"

अता अलहाशिम ने लड़कियों को भी अपने पास बुला लिया। ज़्यादा बातें करने वाली ने पूछा कि उन के साथ क्या सूलक होगा। अता अलहाशिम ने बताया कि उन्हें कल सुबह अपने हेड क्वार्टर में सालारे आला तक़ीउद्दीन के पास लेजाएगा या भेज देगा। उस ने सूडानी को लड़कियों समेत इस हिदायत के साथ अपने आदमियों के हवाले कर दिया कि उन्हें अलग अलग रखा जाए। उन की तलाशी लीगई। तीनों के पास एक एक खंजर था। आदमी के पास एक पोटली थी जिस में हशीश बंधी हुई थी।

सूरज ग़ुरूब होने वाला था जब उस के दस्ते की एक टोली वापस आगई। उस ने टोली को कुछ दूर दूर तक फैला दिया था। उस ने हर किसी को बता दिया कि यह तीनो जासूस और तख़रीब कार हैं। हो सकता है उन के साथयों को मालूम हो कि यह यहां हैं और वह इन्हें छुड़ाने के लिए हमला करें। इन इन्तज़ामात के बाद वह आराम के लिए लेट गया। वह जगह नशीब व फ़राज़ की थी। उस ने लेटने से पहले देख लिया था कि उस के सिपाहियों ने लड़कियों और मर्द को क़िस तरह लेटाया है। वह ख़ुद एक टीले के साथ लेटा जहां से वह अपने सिपाहियों को नहीं देख सकता था। उस की आंख लग गई। कुछ देर बाद उस की आंख खुल गई। उस के ज़ेहन में यह दो लड़कियां आगई। वह इस सोंच में खोगया कि यह कितनी ख़ूबसूरत और बज़ाहिर कैसी मासूम सी लड़कियां हैं और उन से कितना ग़लीज़ और कितना ख़तर नाक काम कराया जा रहा है। अगर यह किसी मुसलमान घराने में पैदा हुई होतीं तो किसी बाइज़्ज़त घराने में दुल्हनें बन कर जातीं। उसे अपनी बीवी याद आगइ जो दुल्हन बन कर उस के घर आई थी तो उन्हीं की तरह जवान और दिल कश थी। अपनी बीवी की याद उसे रूमान अंगेज़ तसव्वुरात में लेगई। उस वीरान सेहरा में जहां वह मौत के साथ आंख मचोली खेल रहा था, उन तसव्वुरों ने उस पर नशा सा तारी कर दिया। जंग में सिपाही

ऐसे ही तसव्वुरों और बड़ी ही दिलकश यादों से दिल बहलाया करते हैं।

चांदनी निखर आई थी। सेहरा की चांदनी बड़ी ही शफ़्फ़ाफ़ और नाज़ुक हुआ करती है। उस की खुन्की में ऐसा ताअस्सुर होता है जो ज़ेहन और दिल से मौत के ख़ौफ को धो डालता है। अता अलहाशिम उठा और इस अंदाज़ से ख़रामां ख़रामां उस जगह गया जहां लड़कियां सोई हुई थीं। जैसे वह हिफ़ाज़ती इन्तज़ाम का मुआएना करने जा रहा हो। वह इकट्ठी सो रही थीं। उन के इर्द गिर्द सिपाही सोए हुए थे। सूडानी आदमी कुछ दूर तीन सिपाहियों के नरग़े में सोया हुआ था। अता अलहाशिम ने एक लड़की के पांव को अपने पांव से दबा दिया। लड़की की आंख खुल गई। अता अलहाशिम को चांदनी में पहचान कर वह उठ बैठी। अता अलहाशिम ने उसे उठने और साथ चलने का इशारा किया। लड़की इस मुसर्रत के साथ उठी कि उस पत्थर जैसे कमांडर पर उस की जवान निसवानियत का जादू चल गया है। वह उस के साथ चल पड़ी। अता अलहाशिम ने देखा कि उस के सिपाही कैसी बे होशी की नींद सोए हुए हैं कि उन्हें यह ख़बर भी नहीं कि कोई आदमी उन के दर्मियान से लड़की को उठा कर ले जारहा है। उसे अपने सिपाहियों पर गुस्से के बजाए तरस आगया' जो एक ग़ैर यक़ीनी सी जंग लड़ रहे थे। किसी बाक़ाएदा कमान और कंट्रोल के बावजूद वह नज़्म व ज़ब्त की पाबंदी कर रहे थे।

लड़की को वह अपनी जगह लेगया। लड़की के सर पर अब ओढ़नी नहीं थी। चांदनी उस के बिखरे हुए बालों को सोने के तारों का रंग दे रही थी। वह कुछ देर लड़की को देखता रहा और लड़की उसे देखती रही। लड़की ने नशीली सी आवाज़ में मुसकुरा कर कहा– "मैं हैरान हूं कि आप डर क्यों रहे हैं। मुझे आप के पास आप ही के लिए लाया गया है। क्या आप मेरी ज़रूरत महसूस नहीं करते?" वह उसे चुप चाप देखता रहा जैसे बुत बन गया हो। लड़की ने उस का हाथ पकड़ कर अपने होंटों के साथ लगा लिया और बोली– "मैं जानती हूं आप ने मुझे क्यों बुलाया है। आप क्या सोंच रहे हैं।

"मैं सोंच रहा हूं कि तुम्हारा बाप मेरी तरह का एक मर्द होगा।" अता अलहाशिम ने उस के हाथ से अपना हाथ छुड़ा कर कहा– "मैं भी एक बाप हूं। हम दोनों बापों में ज़मीन आसमान का फ़र्क़ है। वह बाप कितना बे इज़्ज़त है और मैं हूं कि ग़ैरत की पासबानी के लिए अपने बच्चों को यतीम करने की कोशिश कर रहा हूं।"

"मेरा कोई बाप नहीं" लड़की ने कहा – "देखा होगा। उस की सूरत याद नहीं।"

"मर गया था?"

"यह भी याद नहीं।"

"और मां?"

"कुछ भी याद नहीं।" लड़की ने कहा– "यह भी याद नहीं कि मैं किस घर में पैदा हुई थी या किसी ख़ाना बदोश के खेमे मे......मगर यह वक़्त एसी बे मज़ा बातें करने का नहीं।"

"हम सिपाही यादों से मज़े हासिल किया करते हैं।" अता अलहाशिम ने कहा– "मैं चाहता हूं कि तुम्हारे ज़ेहन में भी तुम्हारे माज़ी की चंद यादें ताज़ा करदूं।"

"मैं बजाए खुद एक हसीन याद हूं।" लड़की ने कहा– "जिस के साथ थोड़ा सा वक़्त

गुज़ार जाती हूं वह हमेशा याद रखता है। मेरी अपनी कोई याद नहीं।"

"अपने आप को हसीन नहीं एक ग़लीज़ याद कहो।" अता अलहाशिम ने कहा– "मुझे तुम्हारे जिस्म से सलीबियों के, सूडानियों के, मुसलमानों के और बड़े ही ग़लीज़ इंसानों के गुनाहों की बू आरही है। तुम मेरे क़रीब आओगी तो मुझे मतली आजाए गी। तुम्हें कोई मर्द याद नहीं रखता। तुम जैसी लड़कियों के शिकारी आज यहां और कल वहां होते हैं। दूसरा शिकार मिल जाता है तो पहले को भूल जाते हैं। तुम्हारा यह हुस्न चंद दिनों का मेहमान है। तुम मेरी कैद में हो, मैं तुम्हारा यह चेहरा इसी वक़्त सज़ा के तौर पर ज़ख़्मी करके हमेशा के लिए मकरूह बना सकता हूं, मगर ऐसी ज़रूरत नहीं। यह सेहरा, शराब, हशीश और बदकारी तुम्हें साल के अन्दर अन्दर मुरझाया हुआ फूल बना देगी जिसे लोग उठा कर बाहर फेंक देते हैं। यह सलीबी और यह सूडानी तुम्हें भीक मांगने के लिए बाहर निकाल देंगे। तुम बड़े ही घटया इंसानों के लिए तफरीह का ज़रिया बन जाओगी......" अता अलहाशिम के लेहज़े में ऐसा ठेहराव और एसा तअस्सुर था कि लड़की की ज़ेहनी कैफ़ियत में हलचल सी पैदा होगई। यह मुसलमान कमांडर कह रहा था..... "मेरी एक बेटी है जो तुम से दोतीन साल छोटी होगी। उस की शादी एक बाइज्ज़त जवान के साथ होगी जो मेरी तरह कमर से तलवार लटका कर बड़ी अछी नसल के घोड़े पर सवार हुआ करेगा। वह मेरी तरह मैदाने जंग का शहज़ादा होगा। मेरी बेटी दुलहन बने गी। अपने ख़ाविंद के दिल में और उस के घर में राज करे गी। लोग मेरी बेटी को एक नज़र देखना चाहेंगे मगर देख नहीं सकेंगे। मैं भी उस पर फख़्र किया करूंगा और उस का ख़ाविंद उस के साथ इतनी मोहब्बत करेगा कि वह बूढ़ी हो जाएगी तो भी मोहब्बत ख़त्म नहीं होगी। बढ़े गी। तुम्हें देखने के लिए कोई बेताब नहीं होता क्योंकि तुम एक नंगा भेद हो। तुम्हारी इज्ज़त किसी के दिल में नहीं और कोई भी नहीं जो तुम्हें मोहब्बत के क़ाबिल समझे गा।"

"आप मेरे साथ ऐसी बातें क्यों कर रहे हैं" लड़की ने ऐसी आवाज़ में पूछा जो उस की अपनी नहीं लगती थी।

"मैं तुम्हें यह बताना चाहता हूं कि तुम जैसी बेटियां मुक़द्दस होती हैं।" अता अलहाशिम ने जवाब दिया। "हम मुसलमान लोग बेटी को अल्लाह का पैग़ाम समझते हैं। अगर तुम इस्मत और मज़हब के मानी समझ लो तो तुम पर अल्लाह की रहमत बरस जाए गी मगर तुम समझ नहीं सकोगी। क्यों कि तुम इस मोहब्बत से वाकिफ़ नहीं जो रूह की गहरायों तक पहुंचा करती है तुम बदनसीब हो। तुम ने मर्दों की हवस देखी है मोहब्बत नहीं देखी।"

अता अलहाशिम आहिस्ता आहिस्ता बोलता रहा। उस के लब व लहजे और अंदाज़ का अपना एक तअस्सुर था लेकिन लड़की उस पर हैरान हो रही थी कि यह भी दूसरे मर्दों की तरह मर्द है मगर इस ने उस के हुसन को ज़र्रह भर अहमियत नहीं दी। अता अलहाशिम जज़्बाती लेहाज़ से पत्थर भी नहीं था। वह तो सर ता पा जज़्बात में डूबा हुआ था। लड़की ने बेताब सा होकर कहा– "आप की बातों में ऐसा नशा और ख़ुमार है जो मैं ने शराब और हशीश में नहीं पाया। मुझे आप की कोई भी बात समझ नहीं आरही लेकिन हर एक बात दिल में उतर

जारही है।" लड़की ज़हीन थी। इस किस्म की तख़रीब कारी के लिए ज़हीन होना लाज़मी था। मर्दों को उंगलियों पर नचाने की उसे ट्रेनिंग दी गई थी मगर उस मर्द ने उस नागिन का ज़हर मार दिया। उस ने अता अलहाशिम से बहुत सी बातें पूछीं जिन में कुछ मज़हब से तअल्लुक रखती थीं। उस के लहजे और अंदाज़ में अब पेशा वराना अदाकारी नहीं रही थी। वह अपने कुदरती रंग में बातें कर रही थी। उस ने पूछा– "मुझे आप लोग क्या सज़ा देंगे?"

"मैं तुम्हें कोई सज़ा नहीं दे सकता।" अता अलहाशिम ने कहा– "कल सुबह तुम्हें अपने सालारे आला के हवाले कर दूंगा।"

"वह मेरे साथ क्या सलूक करे गा?"

"जो हमारे कानून में लिखा है।"

"आप मुझ से नफ़रत करते हैं?"

"नहीं।"

"मैं ने सुना है कि मुसलमान एक से ज़्यादा बीवियां रखते हैं" लड़की ने कहा– "अगर आप मुझे अपनी बीवी बना लें तो मैं आप का मज़हब कुबूल करके सारी उम्र आप की ख़िदमत करूंगी।"

"मैं तुम्हें बेटी बना सकता हूं बीवी नहीं"– अता अलहाशिम ने कहा– "क्यों कि तुम मेरे हाथों में मजबूर हो। तुम मेरी पनाह में भी हो और मेरी कैद में भी।"

❖

वह बातों में मसरूफ़ थे। लड़की का साथी मर्द तीन सिपाहियों के नरग़े में लेटा हुआ था मगर वह जाग रहा था। उस ने अता अलहाशिम को देख लिा था कि वह लड़की को जगा कर लेगया है। वह ख़ुश था कि लड़की अता अलहाशिम को चकमा देकर कत्ल कर देगी या उसे यहां से कहीं दूर लेजाए गी वह लेटा हुआ लड़की का वापसी का इन्तज़ार करता रहा। बहुत देर बाद उस ने सिपाहियों को देखा कि वह बेहोश होके सोए हुए थे। उन्हें बेहोश होना ही था क्योंकि उस सूडानी ने शाम के बाद उन सिपाहियों के साथ गप शप शुरू कर दी थी और उन्हें हंसते खेलते हशीश पिला दी थी। उस से हशीश की एक पोटली तो बरआमद कर ली गई थी लेकिन उस ने थोड़ी सी हशीश अपने चुग़्गे में कहीं सी रखी थी। वहां से निकाल कर उस ने तीन सिपाहियों को पिला दी। वह चूंकि उस नशे के आदी नहीं थे इस लिए बेहोशी की नींद सो गए। यह सूडानी रात को भागने के जतन कर रहा था।

उस ने देखा लड़की अता अलहाशिम के पास बैठी हुई है और बहुत देर गुज़र गई है तो वह समझा कि लड़की उस मुसलमान कमांडर को दूर नहीं लेजासकी लेहाज़ा उस शख़्स को यहीं ख़त्म कर दिया जाए। वह वापस गया और सोए हुए सिपाहियों में से एक की कमान और तर्कश में से तीन चार तीर ले आया। रासते में चंद फ़िट ऊंची जगह थी जिस की ओट में वह अता अलहाशिम को नज़र नहीं आसकता था वह इस लिए भी नज़र नहीं आसकता था कि उस की तरफ़ अता अलाहाशिम की पीठ थी। लड़की का मुंह उधर ही था। लेकिन वह अपने आदमी को देख नहीं सकी थी। वह आदमी तीर व कमान ले कर आया तो लड़की को चांदनी

में उस का सर और कंधा नज़र आया फिर उसे कमान नज़र आई। अता अलहाशिम अपनी मौत से बेख़बर बैठा था। उस का खंजर नियाम में पड़ा हुआ था और नियाम करीब ही रखी हुई थी। लड़की ने नियाम उठा कर खंजर निकाल लिया। अता अलहाशिम झपट कर उस से खंजर छीनने ही लगा था कि लड़की ने निहायत तेज़ी से घुटनों के बल होकर अपने आदमी की तरफ़ पूरी ताक़त से खंजर फेंका।

फासला चंद गज़ का था। उधर से आह की आवाज़ सुनाई दी। खंजर सूडानी की शहे रग में उतर गया था और उस ने ज़ख़्मी होते ही तीर चला दिया था। निशाना चूक जाना ज़रूरी था। तीर का ज़न्नाटा अता अलहाशिम के क़रीब से गुज़रा और धक की आवाज़ सुनाई दी। उस ने देखा कि तीर लड़की के सीने में उतर गया था। वह दौड़ कर उस तरफ़ गया जिस तरफ़ खंजर गया था और तीर आया था। वहां सूडानी अपनी शहे रग से खंजर निकाल रहा था। उसने खंजर निकाल लिया और उठा। इस ख़तरे के पेशे नज़र कि वह हमला करेगा अता अलहाशिम ने उछल कर उस के पहलू में दोनों पाव जोड़ कर मारे। सूडानी दूर जा पड़ा। अता अलहाशिम भी गिरा और फ़ौरन उठ खड़ा हुआ। सूडानी न उठ सका। उस की शहे रग से खून उबल उबल कर निकल रहा था। अता अलहाशिम ने ख़ंजर उठाया और लड़की के पास गया। लड़की सीने में अपने ही साथी और मुहाफ़िज़ का तीर लिए इतमीनान से पड़ी थी। वह अभी ज़िंदा थी। तीर निकालने का कोई इन्तज़ाम नहीं था।

लड़की ने अता अलहाशिम का हाथ पकड़ लिया और कराहती हुई आवाज़ में बोली– "मैं ने तुम्हारी जान बचाई है। इस के एवज़ अपने खुदा से कहना कि मेरी रूह को अपनी पनाह में लेले। मेरे जिस्म की तरह मेरी रूह भी इन सेहराओं में न भटकती रहे। मेरी उम्र गुनाहों में गुज़री है। मुझे यकीन दिलाओ कि खुदा इस एक नेकी के बदले मेरे सारे गुनाह बख़्श देगा। मेरे सर पर उसी तरह हाथ फेरो जिस तरह अपनी बेटी के सर पर फेरा करते हो।"

अता अलहाशिम ने उस के सर पर हाथ फेर कर कहा। "अल्लाह तेरे गुनाह बख़्श दे, तुझ से गुनाह करवाए गए हैं तू बेगुनाह है। तुझे किसी ने नेकी की रोशनी दिखाई ही नहीं।"

लड़की ने दर्द की शिद्दत से कराहते हुए अता अलहाशिम का हाथ बड़ी मज़बूती से पकड़ लिया और बड़ी तेज़ी से बोलने लगी। उस ने कहा "यहां से तीन कोस दूर सूडानियों का एक अड्डा है। वह लोग आप सब को खत्म करना चाहते हैं और ग़ौर से सुनो। आप की फ़ौज इतनी ज़्यादा फैल गई है कि उस की क़िसमत में अब मौत या क़ैद है। आप के हर एक कमांडर और हर एक टोली के पीछे मुझ जैसी लड़कियां या मर्द लगे हुए हैं। मैं इस लड़की के साथ आप के चार कमांडरों को फांस कर ख़त्म करा चुकी हूं। मिश्र की फ़िक्र करो। सलीबियों ने वहां बड़े ही खतरनाक और खूबसूरत जाल बिछा दिए हैं। आप की क़ौम और फ़ौज में ऐसे मुसलमान हाकिम मौजूद हैं जो सलीबियों के तंख्वाह दार जासूस और वफ़ादार हैं। उन्हें मुझ जैसी लड़कियां और बे पनाह दौलत दी जारही है। मिश्र को बचाव, सूडान से निकल जाओ। अपने ग़द्दारों को पकड़ो। मैं किसी का नाम नहीं जानती जो मालूम था बता दिया है। आप पहले मर्द हैं जिस ने मुझे बेटी कहा है। आप ने मुझे बाप का प्यार दिया है। मैं उस का मुआवज़ा यही दे

सकती हूं कि आप को ख़तरों से आगाह करदूं। अपने बिखरे हुए दस्ते को इकट्ठा कर लो और हमला रोकने के लिए तैयार हो जाओ। दोतीन दिनों में आप पर हमला होगा फातमियों और फ़िदाइयों से बचो। उन्हों ने मिश्र में बहुत से ऐसे हाकिमों को कत्ल का मंसूबा तैयार कर लिया है जो सलाहुद्दीन और अपनी क़ौम के वफ़ादार हैं।"

लड़की की आवाज़ डूबती और रुकती गई और एक लमबे सांस के बाद वह हमेशा के लिए ख़ामोश होगई। सुबह तुलू हुई तो अता अलहाशिम दोनों लाशों और ज़िंदा लड़की को साथ लेकर तक़ीउद्दीन के पास चला गया। उसे सारा वाक़ेआ सुनाया और लड़की की आख़री बातें भी सुनाई। तक़ीउद्दीन पहले ही परेशान था। वह सटपटा उठा और उस ने कहा– "अपने भाई की इजाज़त और हिदायत के बग़ैर मैं पस्पा नहीं होना चाहता। मैं ने एक ज़िम्मा दार ज़हीन कमांडर को कर्क भेजा है। उस की वापसी तक साबित क़दम रहो।"

❖

सुलतान अय्यूबी ने क़ासिद कमाण्डर की ब्यान की हुई जन्गी सूरते हाल पर ग़ौर किया तो अपने मुशीरों को बुलाकर उन्हें भी तफ़सील सुनाई। उस ने कहा......" बिखरी हुई फ़ौज को यकजा करके पीछे हटाना आसान काम नहीं। दुशमन उन्हें यकजा नहीं होने देगा। पसपाई से उस फ़ौज के जज़्बे पर भी बुरा असर पड़ेगा जो मिस्र में है और जो यहां मेरे साथ है और क़ौम का दिल टूट जाएगा। मगर हक़ाएक़ से फ़रार भी मुमकिन नहीं। अपने आप को फरेब देना भी ख़तरनाक है हक़ाएक़ का तक़ाज़ा ये है कि तक़ीयुद्दीन अपनी फ़ौज को वापस ले आए। हम उसे कमक नहीं दे सकते। हम करक का मुहासरा उठा कर उस की मदद को नहीं पहूंच सकते। मेरे भाई ने बहुत बड़ी ग़लती की है। बड़ी ही क़ीमती फ़ौज ज़ाए हो रही है।
"

" ये ज़ाती वक़ार का मसला नहीं बन्ना चाहिये"........एक आला हाकिम ने कहा....... "हमें सूडान की जन्ग से दस्त बरदार होने का फ़ैसला करना चाहिये। क़ाएदीन-और हुक्काम के ग़लत फ़ैसलों से फ़ौज बदनाम हो रही है। हमें क़ौम को साफ़ अलफ़ाज़ में बता देना चाहिये कि सुडान में हमारी नाकामी की ज़िम्मे दारी फ़ौज पर आएद नहीं होती।"

" बिला शुबा ये मेरे भाई की ग़लती है।"....... सुलतान अय्यूबी ने कहा........" और ये मेरी भी ग़लती है कि मैंने तक़ीयुद्दीन को इजाजत दी थी कि हालात के मुताबिक़ वह जो कारवाई मुनासिब समझे मुझ से पूछे बग़ैर कर गुज़रे। उसने इतनी बड़ी कारवाई हक़ाएक़ का जाइज़ा लिये बग़ैर करदी और अपने आप को दुशमन के रहमो करम पर छोड़ दिया। मै अपनी और अपने भाई की लग़ज़िशों को अपनी क़ौम से और नूरूद्दीन ज़ंगी से छुपाऊंगा नहीं। मैं तारीख़ को धोखा नहीं दूगां। मैं अपने काग़ज़ात में तहरीर करदूगां कि उस शिकस्त की ज़िम्मे दारर फ़ौज नही हम थे। वरना हमारी तारीख़ को आने वाले हुकमरान हमेशा धोका देगें। मै सलतनते इसलामिया के आने वाले हुकमरानों के लिये ये मिसाल क़ाएम करना चाहता हूं कि वह अपनी लग़ज़िशें पर परदा डाल कर बेगुनाहों को तारीख़ में ज़लील नहीं करें। ये एसी ग़लती और एसा फ़रेब है जो कुर्रह अर्ज़ पर इसलाम की

फैलने के बजाए सुकड़ने पर मजबूर करेगा।"

सुलतान अय्यूबी का चेहरा लाल हो गया। उस की आवाज़ कांपने लगी। यूं मालूम होता था जैसे वह अपनी ज़बान से पसपाई का लफ़्ज़ कहना नहीं चाहता। वह कभी पसपा नही हुआ था। उस ने बड़े ही मुशकिल हालात में जन्गें लड़ी थीं मगर अब हालात ने उसे मजबूर कर दिया था। उस ने तकीयुद्दीन के भेजे हूए कमाण्डर से कहा...." तकियुद्दीन से कहना कि अपनी फौज को समेटो और उन्हें थोड़ी थोड़ी नफरी में पीछे भेजो। जहां दुशमन तआकुब में आए वहां जम कर लड़ो और इस अन्दाज़ से लड़ो कि दुशमन तुम्हारे तआकुब में मिस्र में दाखिल न हो जाए। दसते जो मिस्र में पहूंच जाएं उन्हें इकट्ठा रहने का हुक्म दो ताकि मिस्र पर दुशमन हमला करे तो उसे रोक सको। महफूज़ पसपाई के लिये छापा मारों को इसतेमाल करो। किसी दसते को दुशमन के घेरे में छोड़कर न आना। मैं पसपाई बड़ी मुशकिल से बरदाश्त कर रहा हूं। मैं ये ख़बर बरदाश्त नहीं कर सकूंगा कि तुम्हारे किसी दसते ने हथियार डाल दिये हैं। पसपाई आसान नहीं होती। पेश क़दमी की निसबत महफूज़ और बाइज़्ज़त पसपाई बहुत मुशकिल है। हालात पर नज़र रखना। तेज़ रफ़्तार क़ासिदों की फ़ौज अपने साथ रखना। तहरीरी पैग़ाम नहीं भेज रहा हूं क्योंकि ख़तरा है कि तुम्हारा क़ासिद रासते में पकड़ा गया तो दुशमन को मालूम हो जाएगा कि तुम पसपा हो रहे हो।"

सुलतान अय्यूबी ने क़ासिद कमाण्डर को बहुत सी हिदायात दीं और उसे रुख़सत कर दिया। उस के घोड़े के कदमों की आवाज़ अभी सुनाई दे रही थी कि जाहिदान खीमें में दाखिल हुआ और कहा कि क़ाहिरा से एक क़ासिद आया है। सुलतान अय्यूबी ने उसे अन्दर बुला लिया। वह एन्टली जिन्स का ओहदेदार था। वह मिस्र के अन्दुरूनी हालात के मुतअल्लिक हौसला शिकन ख़बर लाया था। उस ने बताया कि वहां दुशमन की तख़रीब कारी बढ़ती जा रही है। अली बिन सुफ़यान अपने पूरे मोहकमे के साथ शबो रोज़ मसरूफ़ रहता है। हालात एसे हो गए हैं कि फ़ौजी बग़ावत का ख़तरा पैदा हो गया है।

सुलतान अय्यूबी का चेहरे का रगं एक बार तो उड़ ही गया। अगर मिस्र का ग़म होता तो वह परवा न करता। उस ने मिस्र को बड़े ही ख़तरनाक हालात से बचाया था। सलीबीयों और फातिमीयों की तख़रीब कारी की बड़ी ही कारी ज़रबें बेकार की थीं। समुन्दर की तरफ़ से सलीबीयों का बड़ा ही शदीद हमला रोका था। ख़लीफ़ा तक मअज़ूल करके नताएज का सामना दिलेरी और कामयाबी से किया था मगर अब करक को मुहासरे में ले कर वह वहां पा ब जूलां हो गया था। वहां से उस की ग़ैर हाजरी मैदाने जन्ग का पांसा उस के ख़िलाफ पलट सकती थी। करक के मुहासरे के अलावह उस ने किले के बाहर सलीबियों की फ़ौज को घेरे में ले रखा था। ये फ़ौज घेरा तोड़ने की कोशिश में हमले पे हमले किये जा रही थी। वहां ख़ूनरेज़ जन्ग लड़ी जा रही थी। सुलतान अय्यूबीअपनी ख़ुसूसी चालों से दुशमन के लिये आफत बना हुआ था। एसी जन्ग उस की निगरानी के बग़ैर नहीं लड़ी जा सकती थी।

उधर सूडान की सूरते हाल ने भी मिस्र को ख़तरे में डाल दिया था। ये एक इज़ाफ़ी मसला पैदा हो गया था। सुलतान अय्यूबी को ये ख़तरा नज़र आ रहा था कि तकीयुद्दीन ने भागने के

अन्दाज़ से पसपाई की तो दुशमन की फ़ौज उस की फ़ौज को वहीं खत्म कर देगी और सीधी मिस्र में दाख़िल होजाएगी । मिस्र में जो फ़ौज थी वह हमला रोकने के लिये काफी नहीं थी। इधर करक के मुहासरे की कामयाबी या जलदी कामयाबी मख़दूश नज़र आ रही थी। दोनो मुहाज़ों की कैफियत में मिस्र में बग़ावत के ख़तरे की ख़बर ऐसी चोट थी जिस ने सुलतान अय्यूबी के पांव हिला दिये। वह कुछ देर सर झुकाए हुए खीमें में टहलता रहा। फिर उस ने कहा ......" मैं सलीबीयों की तमाम फ़ौज का मुक़ाबला कर सकता हूं। उस फ़ौज का भी जो उन्हों ने युरोप में जमा कर रखी है। मगर मेरी कौम के ये चन्द एक ग़द्दार मुझे शिकस्त दे रहें हैं। कुफ़फार के ये हव्वारी अपने आप को मुसलमान कियों कहते हैं ? वह ग़ालिबन जानते हैं कि उन्होंने मज़हब तबदील कर लिया तो ईसाई उन्हें ये कह कर धुतकार देगें कि तुम ग़द्दार हो, ईमान फ़रोश हो, अपने मज़हब में रहो, हम से उजरत लो और अपनी कौम से ग़द्दारी करो। "......... वह ख़ामूश हो गया। उस के ख़ीमे में जो अफ़राद मौजूद थे वह भी ख़ामूश थे। सुलतान अय्यूबी ने सब को बारी बारी देखा और कहा......" ख़ुदा हम से बड़ा ही सख़्त इमतिहान लेना चाहता है । अगर हम सब साबित क़दम रहे तो हम ख़ुदा के हुज़ूर सुरखरू होंगे।"

उस ने अपने साथियों का हौसला बढ़ाने के लिये ये बात कह दी लेकिन उस का चेहरा बता रहा था कि उस पर घबराहट तारी है जिसे वह छुपाने की कोशिश कर रहा है।

❖

सुलातन अय्यूबी को इतना ही बताया गया था कि मिस्र में बग़ावत का ख़तरह है और सलीबीयों की तख़रीब कारी बढ़ती जा रही है। उसे तफ़सीलात नहीं बताई गई थी। तफ़सीलात बड़ी ही खौफ़नाक थीं। उस की ग़ैर हाज़री से फाइदा उठाते हुए मुसलमान हुक्काम में से तीन चार सलीबीयों के हाथों खेल रहे थे। तकीयुद्दीन ने सूडान पर हमला किया तो चन्द दिन बाद उसने रसद मागीं। क़ासिद ने कहा था कि ज़्यादा से ज़्यादा रसद फ़ौरन भेज दी जाए मगर दो रोज़ तक कोई इन्तेज़ाम न किया गया । जो हाकिम रसद की फराहमी और तरसील का ज़िम्मे दार था, उस से बाज़ पुर्स हुई तो उस ने ये एतराफ किया कि बयक वक़्त दो मुहाज़ खोल दिये गऐ हैं । दो मुहाज़ों को रसद कहां से दी जा सकती है ।एक ही तरीका है कि मिस्र में जो फ़ौज है , उसे भूका रखा जाऐ, बाज़ार से सारे अनाज उठाकर क़ाहिरा के बाशिन्दों के लिये कहत पैदा किया जाए और मुहाजों का पेट भरा जाए।

ये एक आला रुतबे का हाकिम था। मुसलमान था और सुलतान अय्यूबी के मसाहिबों में से भी था। उस की निय्यत पर शक नही किया जा सकता था। उस की बात सच्ची मान ली गई कि अनाज वग़ैरह की वाक़ई कमी है। ताहम उसे कहा गया कि जिस तरह हो सके मुहाज़ पर लड़ने वाले फ़ौजियों को रसद ज़रूर पहूंचे। उस हाकिम ने इन्तेज़ाम कर दियामगर दो और दिन ज़ाए कर दिये। पांचवीं रोज़ रसद का क़ाफ़ला रवाना हुआ। ये ऊंटों और ख़च्चरों का बड़ा ही लम्बा काफला था। मशवरा दिया गया कि काफ़ले के साथ फ़ौज का एक घोड़ सवार दसता हिफ़ाज़त के लिये भेजा जाए। उसी हाकिम ने जो रसद फ़राहम करने का ज़िम्मेदार

था फौज का दसता भेजने पर एतराज किया और जवाज़ ये पेश किया कि तमाम रसता महफूज है। उस के अलावा मिस्र में फौज की ज़रूरत है। चूनानचे रसद हिफाज़ती दसते के बगैर भेज दी गई रवान्गी के छे रोज़ बाद इत्तेला आ गई कि रासते में ही (सूडान में) दुशमन की घात में आ गई है। सूडानी , रसद बमआ जानवरों के ले गये हैं और उन्होंने तमाम शुत्र बानों को क़त्ल कर दिया है।

काहिरा हेड कुवार्टर के बालाई हुक्काम परीशान हो गए। रसद का जाए हों जाना मामूली सी चोट नही थी। सूडानी मैदाने जन्ग में फ़ौज की ज़रूरत का एहसास उन की परीशानी में इज़ाफ़ा कर रहा था। उन्हों ने ज़िम्मेदार हाकिम से कहा कि वह फ़ौरी तौर पर इतनी ही रसद का इन्तेज़ाम करे। उस ने कहा कि मण्डी में अनाज की किल्लत हो गई है। ताजिरों से कहा जाए कि अनाज मुहय्या करें। ताजिरों से बात हूई तो उन्होंने गुदाम खोल कर दिखा दिये। सब खाली थे। गोश्त के लिये एक भी दुम्बा , बकरा, बैल गाय और कोई और जानवर नज़र नही आता था। मालूम हुआ कि मिस्र में जो फ़ौज है उसे भी पूरा राशन नही मिल रहा , जिस से फ़ौजों में बे इतमिनानी फैल रही है ताजिरों ने बताया कि देहात से माल आ ही नहीं रहा। अली बिन सुफ़यान की जासूसी का इन्तेज़ाम बड़ा अच्छा था। ये इन्केशाफ जलदी हो गया कि बाहर के लोग देहात में आते है और वह अनाज और बकरे वगैरह मण्डी की निसबत ज़ियादा दाम दे कर ख़रीद ले जाते हैं। इस का मतलब ये था कि अनाज वगैरह मुल्क से बाहर जा रहा था। तब सब को याद आया कि तीन चार साल क़बल सुलतान अय्यूबी ने मिस्र की पहली फ़ौज को जिस में सूडानी बाशिनदों की अकसरियत थी, बग़ावत के जुर्म में तोड़ कर उस के अफ़सरों और सिपाहीयों को सरहद के साथ साथ काबिले काश्त असजी देकर काशत कार बना दिया था वह लोग अब मिसरी हुकूमत को और मण्डीयों को अनाज दे ते ही नही थे। ये सूडान पर हमले का रद्दे अमल था। ये इनक़लाब छे सात दिनों में आ गया था। अनाज की फराहमी का काम फौज को सौंपा गया। दिन रात की भाग दौड़ से थोड़ा सा अनाज हाथ आया जो फ़ौज की हिफ़ाज़त में सूडान के मुहाज़ को रवाना कर दिया गया।

बालाई हुक्काम के लिये रसद का मसला बहुत टेढ़ा हो गया। उस से पहले एसी किल्लत कभी नहीं हूई थी। उन्हें ये डर भी था कि सुलतान अय्यूबी ने रसद मांग ली तो किया जवाब देंगे। सुलतान अय्यूबी कभी भी तसलीम नहीं करेगा कि मिस्र में अनाज का कहत पैदा हो गया है। इस मसले का हल तलाश करने के लिये तीन हुक्काम की एक कमीटी बनाई गई। उन मे इन्तेज़ामिया के बड़े ओहदे का एक हाकिम , सलीमुल इदरीस था। उस दौर की गैर मतबूआ तहरीरों के मुताबिक़ अलइदरीस उस कमीटी का सरबराह था। दूसरे दो इस से एक ही दरजा कम ओहदे के ग़ैर फौजी यानी शहरी इन्तेज़ामिया के हाकिम थे। रात के वक़्त ये तिनों पहले इजलास में बैठे तो दो ने अलइदरीस से कहा कि सुलतान अय्यूबी ने दो मुहाज को खोल कर सख़्त ग़लती की है और तकियुदीन हारी हूई जन्ग लड़ रहा है।

" फलसतीन मुसलमान की सर ज़मीन है"......... अलइदरीस ने कहा......" वहां से सलीबीयों को निकालना ज़रूरी है। वहां मुसलमान कीड़ों मकोड़ों की सी ज़िन्दगी बसर कर

रहे हैं। वहां मुसलमान मसतूरात की इज्ज़त महफूज़ नही। मसजिदें असतबल बन गई है।"

" यह सब बोहतान है"....... एक ने कहा ....." क्या आप ने अपनी आँखों से देखा है कि सलीबी मुसलमानों पर ज़ुल्म व तशद्दुद कर रहें हैं ?"

" मैं एक खुली हकीकत ब्यान कर रहा हूं।" सलीमुल इदरीस ने कहा।

" हम से हकी़कत छुपाई जारही है। "......... दूसरें ने कहा.........." सलाहुद्दीन अय्यूबी का़बिले क़दर शखसीयत है लेकिन आपस में सच बात करने से हमें डरना नहीं चाहिये। अय्यूबी को मुल्क गीरी की हवस चैन से बैठने नही दे रही। वह अय्यूबी ख़ानदान को शाही ख़ानदान बनाना चाहता है। सलीबीयों की फौज एक तूफ़ान है। हम उसका मुका़बला नहीं कर सकते। अगर सलीबी हमारे दुशमन्न होते जो वह फलसतीन की बजाए मिस्र पर कबजा़ करते। उन के पास इतनी ज़्यादा फौ़ज है कि हमारी इस छोटी सी फौ़ज को अब तक कुचल चुके होते। वह हमारे नहीं सलाहुद्दीन अय्यूबी के दुशमन हैं।"

" आपकी बातें मेरे लिये नाकाबिले बरदाश्त हैं"....... एक ने कहा......." लेकिन एक आदमी की ख़्वाहिश पर हमें पूरी कौम के मफाद को कुरबान नही करन चाहिये। आप दोनों मुहाज़ों के लिये रसद की बात करना चाहते हैं। रसद की हालत आपने देख ली है कि नही मिल रही। सूडान का मुहाज़ टूट रहा है। मैं ने ये सोंचा है कि हम उस मुहाज़ की रसद रोक लें। उस से ये फ़ाईदा होगा कि तकी़युद्दीन पीछे हट आऐगा और फौज मरने से बच जाएगी।"

" यह भी हो सकता है कि हम रसद न भेजें तो तकीयुद्दीन मजबूरी के आलम में घेरे में आजाए"......... अलइदरीस ने कहा। " एसा भी हो सकता है कि हमारी फ़ौज दुशमन के आगे हथियार डाल दे।"

" डाल दे हथ्यार "..... उस ने कहा........." हम शिकस्त का इलजा़म फ़ौज के सर थौप देंगें।"

" आप क्या सोंच कर ये बातें कर रहें हैं"......... सलीमुल इदरीस ने पूछा।

" मेरी सोंच बड़ी साफ है।" उस ने जवाब दिया। " सलाहुद्दीन अय्यूबी हम पर फ़ौजी हुकूमत ठूंसना चाहते हैं। वह सलीबीयों से मुसलसल मुहाज़ आराई करके कौ़म को बताना चाहता है कि कौ़म की सलामती की जा़मिन सिर्फ़ फौज है और कौम की कि़समत फ़ौज के हाथ में है। अगर अय्यूबी अम्न पसन्द होता तो सलीबीयों और सूडानीयों के साथ जन्ग न करने का और सुलह जूई से रहने का मुआहिदा कर लेता।"

अलइदरीस सटपटा उठा। वह सुलतान अय्यूबी के ख़िलाफ और सलीबीयों की हिमायत में कोई बात सुन्ना नहीं चाहता था। इजलास में गरमा गरमी हो गई। कमीटी के बाकी़ दो मेम्बर उसे बात भी नही करने दे रहे थे। उस ने आख़िर तन्ग आकर कहा। " मैं इजलास बरख़ास्त करता हूं। कल ही मैं आप की राय और तजावीज़ क़लमबन्द करके मुहाज़ को अमीरे मिस्र को भेज दूगां।" वह गुस्से में उठ खड़ा हुआ।

एक मेम्बर वहां से चला गया। दूसरा जिस का नाम अरसलान था अलइदरीस के साथ रहा। अरसलान का शजराए नसब सूडानीयों से मिलता था। उस ने अलइदरीस से कहा......

.. " आप शखसियत परस्त और जज़बाती मुसलमान हैं। मैंने हक़ीकत ब्यान की और आप नाराज़ हो गए। मैं आप को ये मशवरा देता हूँ। कि मेरे ख़िलाफ़ सलाहुद्दीन अय्यूबी को कुछ न लिखना। आप के लिये अच्छा न होगा। "........ उस के लहजे में चेलेंज और धमकी थी। अलइदरीस ने उस की तरफ सवालिया निगाहों से देखा तो अरसलान ने कहा। " अगर आप पसन्द फरमाऐं तो मैं आप से इलाहिदगी में बात करुगां। "

" यहीं कर लो।" अलइदरीस ने कहा।

" मेरे घर चलें "......... अरसलान ने कहा........ " खाना मेरे साथ खाऐं मगर ये ख़ियाल रखें कि ये मुलाक़ात एक राज़ होगी। "

अलइदरीस उस के साथ उसके घर चला गया। अन्दर गया तो उसे यूं लगा जैसे किसी बादशाह के महल में आगया हो। अरसलान इतनी ज़्यादह ऊंची हैसियत का हाकिम नहीं था। दोनों कमरे में बैठे हुए थे कि एक ख़ूबसूरत लड़की निहायत ख़ूबसूरत सूराही और चान्दी के दो पियाले चान्दी के गोल थाल में रखे हुऐ अन्दर आई और उन के आगे रख दिया। अलइदरीस ने बू से जान लिया कि ये शराब है। उस ने पूछा ...." अरसलान ! मुसलमान हों और शराब पीते हो ?"......अरसलान मुसकूरा दिया और बोला ....." एक घोंट पी लें, आप उस हकीकत को समझ जाएगें जो में आप को समझाना चाहता हूँ।"

दो सूडानी हबशी अन्दर आए। उनके हाथों में चमकती हूई तशतरीयों में खाना था। खाना लग चूका तो अलइदरीस हैरत से अरसलान को देखने लगा। अरसलान ने कहा....... " हैरान न हों मोहतर अलइदरीस ! ये शानो शौकत आप को भी मिल सकती है। मैं भी आप ही की तरह पारसा हुआ करताथा। मगर अब इस तरह की दो लड़कियां मेरे घर में हैं। दमिश्क और बुग़दाद के अमीरों और वज़ीरों के घरों में जाकर देखो। उन्हों ने इस तरह हसीन लड़कियों से हरम भर रखे हैं। वहां शराब बहती हैं। "

" ये लड़कियां, ये दौलत और ये शराब सलीबीयों की करम नवाज़ियां है।" अलइदरीस ने काह। ...." औरत और शराब ने सलतनते इसलामिया की जड़ें खोखली कर दी हैं। "

" आप सलाहुद्दीन के अलफ़ाज़ में बातें करते हैं।" अरसलान ने कहा......... " यही आप की बदनसीबी है।"

तुम क्या कहना चाहते हो ?" ....अलइदरीस ने झुंझला कर पूछा......." मुझे शक है कि तुम सलीबीयों के जाल में आ गये हो।"

" मैं फौज का गुलाम नही बन्ना चाहता।"..... अरसलान ने कहा। " मैं फौज को गुलाम बनाना चाहता हूं। इसका वाहिद तरीक़ा ये है कि सूडान में तकीयुद्दीन को रसद और कुमक न दी जाए। उसे धोका दिया जाए कि कुमक आरही है। उसे झूठी उम्मीदों पर लड़ाते रहो हत्ता कि वह हथियार डालने पर मजबूर हो जाए। ज़ाहिर है सूडानी उसे क़त्ल कर देगें। और उसकी फौज हमेशा के लिये उधर ही ख़त्म हो जाएगी। हम फ़ौज को शिकस्त का ज़िम्मेदार ठहराकर उसे कौम की नज़रों में ज़लील करदेंगे। फिर कौम सलाहुद्दीन अय्यूबी की फ़ौज से भी मुतनफ्फिर हो जाएगी......... आप मेरी बात समझने की कोशिश कर रहें है। आप को कोई

नुकसान नही होगा। उस का आप को इतना और एसा मुआवजा मिलेगा जिस का आप तसव्वुर भी नही कर सकते।"

"मैं तुम्हारा मतलब समझ गया हूँ।" अलइदरीस ने कहा........ "तुम इतनी खतरनाक बातें इतनी दिलेरी से किस तरह कह रहे हो? क्या तुम नहीं जानते कि मैं तुम्हें गिरफतार करके गद्दारी की सजा दिला सकता हूँ?"

"क्या मैं यह नही कह सकुगां कि आप मुझ पर झूटा इलज़ाम आएद कर रहें हैं?" अरसलान ने कहा......... "सलाहुद्दीन अय्यूबी मेरे ख़िलाफ़ एक लफ़्ज़ नही सुनेगा। अलइदरीस सटपटा गया वह हैरान था कि इतने बड़े ओहदे का हाकिम किस कदर शैतान है और यह कितनी दिलेरी से बातें कर रहा है। दर असल अलइदरीस खुद मर्द मोमिन था। वह समझ ही नही सकता था कि इसलाम को नीलाम कर देने वाले किन पसितयों तक पहुंच सकते हैं। उसके पास अरसलान को पाबन्द करने और राहे रास्त पर लाने का एक ही ज़रिया था। वह अरसलान के ओहदे से ज़्यादा बड़े ओहदे का हाकिम था। उस ने अरसलान से कहा........"मैं जान गया हूँ कि तूम क्या कहना चाहते हो और तुम क्या कर रहे हो। तुम जिस जुर्म के मुरतकिब होरहे हो उस की सज़ा मौत है। मैं तुम्हें ये रिआयत देता हूँ कि तु म सात रोज़ के अन्दर अपना रवैय्या दुरुस्त कर लो और दुशमन से तअल्लुकात तोड़ कर मुझे यकीन दिला दो कि ख़िलाफ़ते बुग़दाद और अपनी कौम के वफ़ादार हो। मैं तुम्हें रसद की ज़िम्मे से सुबकदोश करता हूँ। ये इन्तेज़ाम हम खुद कर लेंगे। अगर मुझे ज़रूरत महसूस हुई तो मैं इस महल में जो तुम्हें सलीबीयों ने बना कर दिया है नज़र बन्द कर दुगां। सात दिन बड़ी लम्बी रिआयत है। कहीं एसा न हो कि आठवीं रोज़ जल्लाद तुम्हें यहां से निकाले।"

अलइदरीस उठ खड़ा हुआ। उस ने देखा कि अरसलान मुसकुरा राह था। अरसलान ने कहा...... मोहतरम अलइदरीस! आप के दो बेटे हैं दोनों जवान हैं।"

"हाँ!" अलइदरीस ने कहा और पूछा।" क्या हुआ है मेरे बेटों को?"

"कुछ नहीं!" अरसलान ने कहा......." मैं आप को याद दिला रहा हूँ कि आप के दो जवान बेटे हैं और यही आप की कुल औलाद है।"

अलइदरीस इस इशारे को समझ न सका। उस ने कहा......... "शराब ने तुम्हारा दिमाग़ ख़राब कर दिया है।"...... और वह बाहर निकल गया।

❖

अरसलान के घर से अलइदरीस अली बिन सुफ़ियान के घर चला गया और उसे अरसलान की बातें सुनाई। अली बिन सुफ़यान ने उसे बताया कि अरसलान उस की मुशतबा फेहरीस्त में है लेकिन उस के ख़िलाफ़ कोई सूबूत नहीं मिल रहा। ताहम वह जासूसों की नज़र में है। अलइदरीस बहुत परीशान था और हैरान भी कि अरसलान इतनी दिलेरी से गद्दारी का मुरतकिब हो रहा है। अली बिन सुफ़यान ने उसे बताया कि वह अकेला नहीं, गद्दारी एक मुनज़्ज़म तरीक़े से हो रही है। उसके जरासीम फ़ौज में भी फैला दिये गये हैं। इस वक़्त सब से बड़ा मसला सूडान के मुहाज़ के लिये रसद का था। अलइदरीस ने उसे बताया कि उसने अरसलान

को इस ज़िम्मेदारी से सुबकदोश कर दिया है और रसद का इन्तेज़ाम ख़ुद करता है। अली बिन सुफयान ने उसे बताया कि एक साज़िश के तेहत देहात से अनाज और बकरे वगैरह सरहद से बाहर भेजवाए जारहे हैं। मण्डी में गल्ले और दिगर सामाने ख़ुर्द व नोश का मसनूई कहत पैदा कर दिया है। उस ने बताया कि उस ने अपने जासूसों और मुख़बिरों को ये काम दे रखा है कि रात को इधर उधर घूमते रहा करें। जहां कहीं उन्हें अनाज की एक बोरी भी जाती नज़र आऐ पकड़ लें। तवील बात चीत के बाद उन्हों ने रसद के इन्तेज़ाम का कोई तरीक़ा सोच लिया।

सलीमुल इदरीस इस क़ौमी मोहिम और अपने फ़राएज़ में इस क़दर मगन था। कि उसके ज़ेहन से ये इशारा निकल गया कि तुम्हारे दो जवान बेटे हैं और यही तुम्हरी कुल औलाद है। अलइदरीस को अपने बेटों के किरदार पर भरोसा था। मगर जवानी अन्धी होती है। क़ाहिरा में सुलतान अय्यूबी की ग़ैर हाज़री में बदकारी की एक लहर आई थी जिस ने नौजवान ज़ेहन को लपेट में लेना शुरू कर दिया था। दो तीन साल पहले भी एसी ही एक लहर आई थी जिस पर क़ाबू पा लिया गया था। अब ये लहर ज़मीन के नीचे से आई और काम कर गई। ये मुख़तलिफ़ खेल तमाशाईयों की सूरत में आई जिन में शोअबदा बाज़ी और खेलों की सूरत में जूवा बाज़ी शामिल थी। ये लोग ख़ीमे और शामियाने तान कर तमाशा दिखाते थे जिस में कुछ भी क़ाबिले एतराज नहीं था, मगर शमियानों के अन्दर ख़ुफ़िया ख़ीमे थे। जहां अकेले नौजवान को बुलाया जाता था। उन से पैसे लेकर कपड़ों पर बनी हुई दसती तसवीरें दिखाई जाती थी। ये उरयां और बेहद फहश तसवीरें थीं जो मुसव्वीरों ने बड़ी मेहनत से बनाई थीं। तसवीरें दिखाने का काम लड़कियां करती थीं जिन की मुसकुराहट और अन्दाज़ में दावत गुनाह होती थी।

वहीं नौजवानों को थोड़ी थोड़ी हशीश पीलाई जाती थी। ये शरमनाक और ख़तरनाक सिलसिला ज़मीन के ऊपर चल रहा थामगर उसे पकड़ कोई नही सकता था। वजह ये थी कि जो कोई ये तसवीरें देख कर या हशीश का ज़ाएका चख कर आता था, वह अपने गुनाह को छिपाए रखता था। उस गूनाह में लज़्ज़त एसी थी कि जानने वाले बार बार जाते थे। वह इस लिये भी बाहर किसी से ज़िक्र नही करते थे कि हुकूमत तक बात पहूंच गई तो उन्हें इस नशा आवर लज़्ज़तों से महरूम कर दिया जाएगा। इस लज़्ज़त परसती का शिकार नौजवान और फ़ौजी हो रहे थे। उन के लिये दर परदा क़हवा ख़ाने भी खोल दिये गये। किरदार कुशी की ये मोहिम किस क़दर कामयाब थी। .... इस का जवाब करक के क़िले में सलीबीयों की एन्टली जिन्स और नफसियाती जन्ग का माहिर जरमन निज़ाद हरमन अपने हुकमरनो को इन अलफाज़ में दे रहा था।

"स्पीन के मुसव्वीरों ने ये जो तसवीरें बनाई हैं, ये लोहे के बने हुए मरदों को भी मिट्टी के बुत बना देती हैं।" उस ने एक मर्द और एक औरत की एक फहश तसवीर हाज़रीन को दिखाई। ये बड़े साईज़ की तसवीर थी जो बुरश से दिलकश रंगों में बनाई गई थी। सलीबी हुकमरानों ने तसवीर देख कर एक दूसरे के साथ नंगे मज़ाक़ शुरू कर दिये। हरमन ने कहा,

......" मैंने बेशुमार तसवीर बनवाकर मिस्र के बड़े बड़े शहरों में उन की खुफिया नुमाईश का इन्तेजाम कर दिया है। वहां से हमारी कामयाबी की इत्तेला आ रही हैं। मैं ने काहिरा की नौजवान नस्ल में हैवानी जज़्बा भड़का दिया है। ये एसा ताकत वर जज़्बा है जो मुशतअिल हो जाए तो तमाम इनसानी जजबों को जिन में कौमी जज़्बा खास तौर पर शामिल है, तबाह कर देता है। इन तसवीरों ने मिस्र में मुकीम मुसलमान फ़ौज को ज़ेहनी और अखलाकी लिहाज से बेकार करना शुरू कर दिया है। उन तसवीरों की लज़्ज़त नशा भी मांगती है। इसका इन्तेजाम भी कर दिया है। मेरे तखरीब कारों और जासूसों की गिरोह ने सेहराई लड़कियों की फौज कांहिरा और दूसरे कसबों में दाखिल कर दी है। ये लड़कियां दीमक की तरह सलाहुद्दीन की कौम और फ़ौज को खारही हैं। वह वजूहात कुछ और थीं जब मेरी मोहिम काहिरा में पकड़ी गई थी। अब मैंने कुछ और तरीके आज़माए हैं जो कामयाब हो रहें हैं। अब वहां के मुसलमान खुद मेरी मोहिम की हिफाज़त करेगें और उसे तक्वीयत देगें। वह उस ज़ेहनी अय्याशी के शिकार हो गए हैं थोड़े ही अरसे बाद मैं उनके ज़ेहनों में उनकी अपनी ही कौम और अपने ही मुल्क के खिलाफ ज़हर भरना शुरू कर दुगां।"

" सलाहुद्दीन अय्यूबी बहुत होशियार आदमी है।" हाज़िरीन में । किसी ने कहा। वह जूंही मिस्र पहुंचा, तुम्हारी मोहिम को जड़ से उखाड़ देगा।"

अगर वह मिस्र पहुंचा तो...." हरमन ने कहा......." इस सवाल का जवाब आप ही दे सकते हैं कि आप उसका मुहासरा कामयाब होने देंगे या नहीं बेशक उसने रिमाण्ड की फौज को किले से बाहर घेरे में ले रखा है और किला उस के मुहासरे में है लेकिन ये घेरा और ये मुहासरा इसी के लिये नुकसान का बाअस बन सकता है। आप यहां फैसला कुन जन्ग न लड़ें। अय्यूबी को मुहासरे किये रखने दें ताकि वह यहीं पाबन्द रहें और मिस्र न जा सके। सूडान में हमारे कमाण्डरों ने तकीयुद्दीन की फौज को निहायत कामायबी से बिखेर दिया है। वह अब न लड़ सकता है और न वहा से निकल सकता है। मिस्र की मण्डीयों का और वहां की खेतियों का गल्ला मैंने गाएब करा दिया है। आप की दी हुई दौलत आप को पूरा सिला दे रही है। अय्यूबी का वफ़ादार हाकिम अरसलान दर असल आप का वफा दार हैं वह हमारे साथ पूरा तआवुन कर रहा है। उसके कुछ और साथी भी हमारे साथी हैं।"

" अरसलान को कितना मुआवजा दिया जा रहा है?" फलप आगसिटस ने पुछा।

"जितना एक मुसलमान हाकिम का दिमाग़ ख़राब करने के लिए काफी होता है।" हरमन ने जवाब दिया। "औरत और शराब दौलत और हुकूमत का नशा किसी भी मुसलमान का ईमान ख़रीद सकता है। वह मैं ने ख़रीद लिया है.... मैं आप को यह बता रहा था कि अब सलाहुद्दीन अय्यूबी मिश्र जाए गा तो उसे वहां की दुन्यिा बदली हूई नज़र आएगी। वह जिस नौजवान नसल की बात फख़र से किया करता है वह मुसलमान होते हुए इसलाम के लिए बेकार होगी। उस की सोंचें और उस का किरदार हमारे हाथ में होगा। यह नसल जज़्बे की मारी हुई होगी। यही हाल इस फौज का होगा जिसे वह मिश्र में छोड़ आया है। इस फौज में मेरे तखरीब कारों ने इतनी ज़्यादा बेइतमीनानी फैलादी है कि वह बग़ावत से भी गुरेज़ नहीं

करेगी। मैं आज यह दावा वसूक से करसकता हूं कि आप से पहले मैं अपना महाज़ ख़त्म करचुका हूंगा। दुशमन के किरदार और अख़लाक़ को तबाह कर देने से फ़ौजों के हमलों की ज़रूरत बाक़ी नहीं रहती।"

हरमन की इस हौसला अफ़ज़ा रिपोर्ट पर सलीबी हुकमरान बहुत ख़ुश हुए। फ़लप आगसटस ने वही अज़्म दोहराया जिस का इज़हार वह कई बार कर चुका था। उस ने कहा-- "हमारी लड़ाई सलाहुद्दीन से नहीं इस्लाम से है। अय्यूबी भी मर जाए गा। हम भी मर जाएंगे। लेकिन हमारा जज़्बा और अज़्म ज़िंदा रहना चाहिए ताकि इस्लाम भी मर जाए और दुन्या पर सलीब की हुकमरानी हो। इस के लिए यह ज़रूरी था कि ऐसा महाज़ खोला जाए जहां से मुसलमानों के नज़रयात और किरदार पर हमला किया जाए। मैं हरमन को ख़ेराजे तहसीन पेश करता हूं कि उस ने महाज़ न सिर्फ़ खोल दिया है बल्कि हमला करके एक हद तक कामयाबी भी हासिल कर ली है।"

❖

सलीमउलइदरीस के दो बेटे जवान थे। एक की उम्र सत्तरह साल और दूसरे की इक्कीस साल थी। कहा नहीं जा सकता कि वह भी लज्ज़त परस्ती के इस लपेट में आगए थे या नहीं जो सलीबी तख़रीबकार क़ाहेरा में लाए थे। अलबत्ता यह सबूत बाद मे मिला कि बड़े बेटे के दर परदा तअल्लुक़ात एक जवान और ख़ूबसूरत लड़की के साथ थे। यह लड़की अपने आप को मुसलमान ज़ाहिर करती थी और बेपरदा रहती थी। किसी बड़े ख़ानदान की लड़की थी। उन की मुलाक़ातें ख़ुफ़्या होती थीं। जिस रोज़ अरसलान ने इदरीस से कहा था कि तुम्हारे दो बेटे जवान हैं उस से अगले रोज़ उस लड़की ने अलइदरीस के बड़े बेटे से कहा कि एक नौजवान उसे बहुत परेशान करता है। वह जिधर जाती है उस का पीछा करता है और उसे इग़वा की धमकियां भी देता है। उस बड़े बेटे ने लड़की से पूछा कि नौजवान कौन है तो लड़की ने न बताया। बात गोल कर गई कहने लगी कि उस ने ज़्यादा परेशान किया तो उसे बतादेगी।

बाद के इन्कशाफ़ात से पता चलता है कि उसे कोई नौजवान परेशान नहीं करता था बल्कि वह ख़ुद नौजवानों को परेशान और ख़राब करती फिर रही थी। उस ने जिस शाम बड़े बेटे से यह शिकायत की उस से अगले ही रोज़ उस ने अलइदरीस के छोटे बेटे को जिस की उम्र सत्तरह साल थी अपने जाल में फांस लिया और एसी वालेहाना और बेताबाना मोहब्बत का इज़हार ज़ुबानी आर अमली तौर पर किया कि लड़का अपना आप उस के हवाले कर बैठा। दो दरपरदा मुलाक़ातों के बाद उस ने उसे भी बताया कि एक नौजवान उसे बहुत परेशान करता है और उसे इग़वा की धमकियां देता है। लड़के का ख़ून जोश में आगया। उस ने पूछा कि वह कौन है तो लड़की ने कहा कि अगर उस ने ज़्यादा परेशान किया तो बताऊंगी। उसी शाम वह उस लड़के के बड़े भाई से मिली और उसे कहा कि वा नौजवान मुझे ज़्यादा परेशान करने लगा है। वह तुम्हारे मुत्अल्लिक़ कहता है कि उसे मैं ऐसे तरीक़े से क़त्ल करूंगा कि किसी को पता ही नहीं चल सकेगा। "तुम अपने पास ख़ंजर रखा करो।"

दूसरी शाम की मुलाकात में उस ने छोटे भाई को इसी तरह मुश्तइल किया और उसे कहा कि वह खंजर अपने पास रखा करे। चुनानचे दोनों भाई इस हकीकत से बेख़बर कि वह एक ही लड़की के जाल में फंसे हुए हैं खंजर अपने पास रखने लगे। लड़की दोनों से अलग अलग मिलती रही। सिर्फ़ पांच दिनों में लड़की ने दोनो भाइयों को पहले हैवान फिर दरिंदा बना दिया। उस शाम उस ने बड़े भाई को शहर से ज़रा बाहर एक अंधेरी जगह मिलने को कहा। छोटे भाई को भी उस ने वही वक़्त और वही जगह बताई और दोनों से यह भी कहा कि वह नौजवान जो मुझे परेशान किया करता है आज कह गया है कि शाम को जहां भी जाओगी मुझे वहां पाओगी। मैं तुम्हारे चाहने वाले को तुम्हारे सामने कत्ल करूंगा। लड़की ने कहा--"मैं ने उसे कहा है कि अगर तुम इतने दिलेर हो तो शाम को इस जगह आजाना। अगर तुम ने उसे कत्ल कर दिया तो मैं तुम्हारी होजाऊंगी।" यह दोनों भाई खुंरेज़ मारका लड़ने के लिए तैयार होगए।

शाम को बड़ा भाई खंजर लिये उस जगह पहूंच गया जो उस लड़की ने उसे बताई थी। उस ने एसी उसतादी का मुज़ाहिरा किया कि जगह अंधेरी का इंतखाब किया और ये भी ख़ियाल रखा कि दोनों भाई उस के पहूंचने से पहले ही इकट्ठे होकर एक दूसरे को पहचान न लें। वह वहां पहूंची तो बड़े भाई को वहां मौजूद पाया। उसे बताया कि वह नौजवान मेरे पीछे आ रहा है बड़े भाई ने खंजर निकाल लिया। फ़ौरन ही बाद छोटा आगया। लड़की ने बड़े भाई से कहा वह आ गया है लेकिन में नही चाहती कि ख़ून ख़राबा हो। मैं उसे कहती हूं कि चला जाए। ये कह कर वह छोटे भाई के पास गई और उसे कहा वह पहले से मौजूद है और उस के हाथ में खंजर है। छोटे भाई की अक़्ल पर जवानी का ताज़ा खून सवार था। उस ने खंजर निकाला और अंधेरे में अपने भाई की तरफ़ दौड़ा। बड़े भाई ने हमला आवर को इतनी तेज़ी से आते देखा तो वह भी आगे बढ़ा। भाईयों ने एक दूसरे पर रकाबत के जोश में बड़े गहरे वार किये। वह गिर गिर कर उठे और एक दूसरे को लहू लुहान करते रहे। लड़की उन्हें भड़काती रही।

अली बिन सुफ़यान के शोबे के आदमी रात को गश्त पर रहते थे। इत्तेफ़ाक से एक घोड़ा सवार गश्त पर उधर आ निकला। लड़की भाग उठी। घोड़ा सवार ने उसे दूर जाने न दिया। और पकड़ कर वापस ले गया। वहां दोनों भाई ज़मीन पर पड़े आखरी सांसे ले रहे थे। लड़की ने उन से लातअल्लुकी के इज़हार की बहुत कोशिश की लेकिन उस आदमी ने उसे न छोड़ा। लड़की के दिये हुए लालच को भी उस ने कुबूल न किया। उस ने पूकार पूकार कर गश्ती पहरा दारों को बुला लिया। उस वक़्त तक दोनों भाई मर चूके थे। लड़की को उसी वक़्त अली बिन सुफ़यान के पास ले गये। लाशें भी लाई गईं। रौशनी में देखा तो दोनो भाई थे। सलीमुल इदरीस को इत्तेला दी गई तसव्वुर किया जा सकता है कि अपने जवान बेटों की लाशों को देख कर उसका किया हश्र हुआ होगा। लड़की ने उलटे सीधे बयान दिये मगर वह इसका जवाब देने से गुरेज़ कर रही कि वह किसकी बेटी है और कहां रहती है। अलइदरीस बहुत बुरी ज़ेहनी हालत में था। उसने गुस्से से कांपती हूई आवाज़ में कहा। "इसे शिकंजे में डालो

अली, इस तरह ये कुछ नहीं बताएगी।"

"बताने के लिये है ही किया।" लड़की ने भी गुस्से में कहा। बड़े भाई की लाश की तरफ इशारा करके बोली। "इस ने मुझे बुलाया था। मैं चली गई। ऊपर से ये (छोटा भाई) आगया। दोनों ने खंजर निकाल लिये और लड़ पड़े। मैं डर के मारे भाग उठी और एक घोड़े सवार ने मुझे पकड़ लिया। मैं अपने बाप का नाम इस लिये नही बताती कि उसकी भी रुसवाई होगी।"

अली बिन सुफ़यान का दिमाग़ हाज़िर था। उसे याद आगया कि अरसलान और अलइदरीस की आपस में तुरश कलामी हुई थी। अरसलान उसके मुशतब्बों की फेहरीस्त में था और ये भी जानता था कि उस के घर मे क्या हो रहा है। उस ने अलइदरीस को आखँ से इशारा करके कहा........."ये लड़की कोई भी है ये क़ातिल नहीं। ये दो जवानों को अकेले क़त्ल नहीं कर सकती। उस ने सच बात बतादी है। मैं उस के ख़िलाफ़ कोई कारवाई नहीं कर सकता।" उस ने लड़की से कहा........." जाओ तुम आज़ाद हो। आईन्दा किसी के साथ इतनी दूर न जाना वरना क़त्ल हो जाओगी।"

लड़की बड़ी तेज़ी से कमरे से बाहर निकल गई। अली बिन सुफ़यान ने अपने दो मुखबिरों से कहा उनमे से एक लड़की का रासता देख कर दूसरे रासते से अरसलान के घर के बड़े दरवाज़े से ज़रा दूर छुप जाए और दूसरा ऐसे तरीक़े से लड़की का तआकुब करे कि लड़की को पता न चले। और वह जहां भी जाए फ़ौरन इत्तेला दी जाए। दोने आदमी चले गए। लड़की तेज़ तेज़ कदम उठाती जा रही थी और उसका तआकुब हो रहा था। अली बिन सुफ़यान का शक ठीक साबित हूआ। लड़की अरसलान के घर चली गई। वहां एक आदमी मौजूद था। उसने आकर इत्तेला दी कि लड़की उस घर में दाख़िल हूई है। जब अलइदरीस को मालूम हुआ कि लड़की का तअल्लुक़ अरसलान के घर से है तो उस ने अली बिन सुफ़यान से बताया कि अरसलान ने उसे कहा था कि तुम्हारे दो जवान बेटे हैं। मगर अलइदरीस ये इशारा नहीं समझ सका था। साफ ज़ाहिर हो गया कि ये अरसलान की कारिसतानी हैं दोनों भाईयों को उसी ने अजीबो ग़रीब तरीक़े से एक दूसरे के हाथों से क़त्ल कराया है। अल इदरीस ने हाकिम को इत्तेला दी। पुलिस का सरबराह ग़ियास बिलबिस भी आगया। अली बिन सुफ़यान को भी खुसूसी इख़तियारात हासिल थे। उन्होंने फ़ैसला किया कि अरसलान के घर पर छापा मार कर उसे घर में ही नज़र बन्द कर दिया जाए।

"अब मैं सलीमुल इदरीस को बताऊंगा कि मैं क्यों इतनी दिलेरी से बातें करता हूँ।" अरसलान ने लड़की की कामयाबी की रुइदाद सुन कर कहा.........." मैं उसे बताऊंगा कि मैं क्या कर सकता हूँ।" उसने लड़की को शराब पेश की और दोनो कामयाबी की जश्न मनाने लगे।

उनका जश्न अभी ख़त्म नहीं हुआ था कि बग़ैर इत्तेला किये कोई अन्दर आगया। ये अल इदरीस था। उस ने अरसलान और लड़की को नशे और उरयानी की हालत में देखा और लड़की को पहचान लिया। अरसलान ने नशे की हालत में कहा......."अपने बेटों को क़त्ल कराके तुम मेरे पास क़त्ल होने आए हो?........ दरबान काहां है? ये शख्स मेरी जन्नत में

बगैर इजाजत क्यों कर आ गया है ?"

" तुम्हें जहन्नम में ले जाने के लिये।" अलइदरीस ने कहा........" मैं अपने बेटों का इन्तेकाम लेने नही आया, तुम्हें गद्दारों के अन्जाम तक पहुंचाने आया हूँ।"

इतने में शहर का वह हाकिम आला अन्दर आया जिस के पास अमीरे मिस्र के इख़तियारात थे। उसके साथ ग़यास बिलबिस और अली बिन सुफ़यान थे । लड़की को गिरफ्तार कर लिया गया। अरसलान के तमाम मुलाज़िम और दिगर अफ़राद को बाहर निकाल कर उसके महल जैसे मकान के अन्दर और बाहर फ़ौज का पहरा खड़ा कर दिया। उस के घर में एक तह खाना बर आमद हुआ जो बहुत ही वसीअ और गहरा था। वहां से तीर कमानों और बरछियों के अम्बार निकले । एक ढेर खंजर का था। आतिश गीर मादा भी था। एक सन्दूक में से हशीश और ज़हर बर आमद हुआ। एक और कमरे में से सोने की ईट और अशरफियों की थैलीयां बर आमद हूई। उस ने अपनी पूरानी दो बीबीयों और उनके बच्चों को कहीं और भेज रखा था। घर में तीन लड़कीयां थी तीनों एक से बढकर खूबसूरत थीं और तीनों गैर मुसलिम । रात ही रात मुलाज़िमों की छान बीन कर ली गई। उन में तीन सलीबीयों के जासूस निकले।

" क्या तुम खुद बताओगे तुम्हारे अजाएम किया हैं।" हाकिम आला ने अरसलान से पूछा. ...." ये माल व दौलत और असलहा के ये अम्बार तुम्हें सज़ाए मौत दिलाने के लिये काफी हैं।"

" फिर सज़ाए मौत दो।" उस ने नशे की हालत में कहा....." अगर मुझे जान ही देनी है तो खामूशी से क्यों न मर जाऊं?"

" खुदा की निगाह में ये बहुत बड़ी नेकी होगी कि तुम हमें और उस के नाम लेवा को खतरे से आगाह कर दो ।" हाकिम आला ने कहा......." मुझे उम्मीद है कि इसी नेकी के बदले खुदा तुम्हारे इतने ज्यादा गुनाह को बख्श देगा।"

" तुम लोग मुझे नही बख़शोगे।" अरसलान ने कहा।

" सुलतान अय्यूबी इस से भी बड़ा गुनाह बख्श देता है। " अली बिन सुफ़यान ने कहा। .... 'आप की बचने की सूरत पैदा हो सकती हैं आप बतादें कि यहां किस किसम की तख़रीब कारी हो रही है कुछ और लोग गिरफतार करा दें।"

वह कमरा में टहल रहा था। बाकी लोग इधर उधर बैठे थे। अलइदरीस ने अपनी खंजर नुमा तलवान अपनी कमर से बांध रखी थी। अरसलान खामुशी से टहलते टहलते उसके करीब गया और बड़ी ही तेज़ी से उसके मियान में से तलवार निकाल कर अपने सीने और पेट के दरमियान रखी । पेशतर इसके कि उसके हाथ से तलवार छीनी जाती उसने दसते पर दोनों हाथ रख कर पूरी ताक़त से तलवार अपनी पेट में घोंप ली। वह अपने बिसतर पर गिरा और दुसरे आदमी उस के पेट से तलवार निकालने लगे तो उस ने कहा......" रहने दो मेरी दो तीन बातें सुन लो। मर जाऊंगा तो तलवार निकाल लेना। मैंने अपने आप को सज़ा दी है। मैं ज़िंदा सलाहुद्दीन अय्यूबी के सामने नही जाना चाहता था क्योंकि वह मुझे अपना वफा दार

दोस्त समझता था. ..... मैं तुम्हारे किसी सवाल का जवाब नहीं दुगां। तलवार अपना काम कर चूकी है। होश करो, मिस्र सख़्त खतरे में है। मिस्र में जो फ़ौज है वह बग़ावत के लिये तय्यार है। फ़ौजों की रसद को मैंने नापैद किया है। सिपाहियों को खाने के लिये कुछ नहीं मिलता। सलीबी तख़रीब कारों ने फ़ौज में ये बात फैलादी है कि मुहाजों पर बकरे, अनाज और शराब जारी हैं और वहां के सिपाहियों को माला माल करके अय्याशी कराई जा रही है..... मेरे गिरोह में अच्छे ओहदे के लोग हैं। मैं किसी का नाम नहीं बताऊंगा। फातमी और फिदाई तबाही की पूरी तय्यारी कर चूके हैं। तुम बग़ावत को रोक नही सकोगे। नई फ़ौज लाओ, हालात तुम्हारे काबू से ...." और वह फिक़रा मुकम्मल किये बग़ैर मर गया।

उस के घर से जो तीन लड़कियां बर आमद हूई थीं। वह भी उस के फिक़रे को मुकम्मल न कर सकीं। उन्होंने अपने मुतअल्लिक बता दिया कि उन्हें अखलाकी तख़रीब कारी और मरदों को फांस कर इसतेमाल करने के लिये भेजा गया था। अरसलान के घर रातों को महफिलें जमा करती थीं जिस में फ़ौज और इन्तेजामिया के अफ़सर आया करते थे। उनकी ख़ुफ़या इजलास उन लड़कियों के बगैर होते थे। लड़कियों ने ये तसदीक कर दी कि मिस्र में बग़ावत के लिये ज़मीन हमवार कर दी गई है। जिस लड़की ने दोनों भाईयों को एक दूसरे के हाथों क़त्ल करा दिया था, उस ने क़त्ल की सारी कहानी सुना दी जो बयान की गई है। उस ने बताया कि वह अलइदरीस के बड़े बेटे को पहले ही अपने जाल में मुहब्बत का झांसा देकर ले चूकी थी। उसे अरसलान उसके बाप अलइदरीस के ख़िलाफ इसतेमाल करना चाहता था लेकिन अरसलान ने मनसूबा बदल दिया और उस लड़की से कहा कि दोनों भाईयों को एक दूसरे के हाथों क़त्ल करा दो।

एक ही रात में तक़रीबन अढाई सौ ऊंट मरकज़ी दफतर के सामने लाए गए। उन पर गल्ला और खुर्द नोश का दीगर सामान लदा हुआ था। ये ऊंट तीन चार काफलों की सूरत में मुख़्तलिफ जगहों से पकड़े गए थे। अनाज वग़ैरह को सरहद से बाहर जाने से रोकने के लिये गश्ती पार्टी का इन्तेज़ाम किया गया था। ये उनकी पहली कामयाबी थी। उन काफलों के साथ जो आदमी थे उन्हों ने शहर के चन्द एक ताजिरों के नाम बताए। उन ताजिरों ने तमाम ग़ल्ला और दीगर सामान ज़ेरे ज़मीन कर लिया था। आधी रात को वह ये सामान बाहर के अजनबी ताजिरों के हाथ बेचते थे। उन आदमीयों ने देहाती इलाकों में भी चन्द एक जगहों की निशान देही की जहां अजनबी से ताजिर मौजूद रहते और तमाम तर रसद इकट्ठी कर के ले जाते थे। शूतर बानों में से बाज़ ने एक जगह बताई जहां से ये काफले सूडान जाया करते थे। वहां एक सरहदी दसता मौजूद था। इनकेशाफ़ हुआ कि उस दसते का कमाण्डर दुशमन से बाकाइदा मुआवजा या रिशवत लेता और काफले गुज़ार देता था। ये इनकेशाफ भी हुआ कि ये एहतमाम अरसलान की ज़ेरे कमान हो रहा था।

❖

ये उन सैकड़ों में से चन्द एक वाकिआत है जो सुलतान अय्यूबी की गैर हाज़री में मिस्र को लपेट में लिये हुए थे। अलइदरीस और दीगर आला हुक्काम ने अरसलान की ग़द्दारी और

अलइदरीस के बेटों की मौत और दीगर वाकिआत पर गौर करने के लिये इजलास मुनअकिद किया। अली बिन सुफ़यान और गयास बिलबिस ने ये मशवरा पेश किया कि हालात इतने बिगड़ गए हैं कि उनके बस में नही रहे पेशतर इसके कि मिस्र में बगावत हो जाए या फ़ातमियों या फ़िदाइयों के हाथों कोई आला शख़्स क़त्ल हो जाए सुलतान अय्यूबी को मुकम्मल हालात से आगाह कर दिया जाए और उन्हें मशवार दिया जाए कि मुमकिन हो सके तो वह करक का मुहासारा अपने नाइबीन के सुपर्द करके काहिरा आजाएं। एक क़ासिद को पहले ही भेज दिया गया था मगर उन्हें तफ़सीलात नहीं बतलाई गई थीं। अब संगीन वरदातें हो गई तो इजलास में फ़ैसला हुआ कि अली बिन सुफ़यान मुहाज़ पर सुलतान अय्यूबी के पास जाए।

करक के मुहासरे को दो महीने गुज़र चुके थे मगर कामयाबी की कोई सूरत नज़र नहीं आ रही थी। सलीबी ने दिफ़ा की गैर मामूली इन्तेज़ामात कर रखे थे। एक इन्तेज़ाम ये था कि शहर में सामाने खुर्द व नोश का ज़खीरा काफ़ी था। एक जासूस ने अन्दर से तीर के साथ पैग़ाम बांध कर फेंका था जिस में तहरीर था कि अन्दर ख़ुराक की कोई कमी नहीं। मुसलमान बाशिनदों पर इतनी सख़्त पाबन्दीयां आएद कर दी गई थीं कि उनके घरों की दीवारे भी उनके ख़िलाफ़ मुख़्बरी और जासूसी करती थीं इस लिये अन्दर तख़रीब कारी मुमकिन नही रही थी वरना खुराक का ये ज़खीरा तबाह कर दिया जाता। शहर में सुलतान अय्यूबी के जासूस की भी कमी न थी। वह कभी कभी रात के वक़्त तीर के साथ पैगाम बांध कर और मौक़ा महल देख कर बाहर को तीर चला देते थे। फ़ौजों को हुक्म था कि एसा तीर नज़र आए तो वह अपने कमाण्डर तक पहुंचा दें। सलीबीयों ने मुहासरा तोड़ने की कोशिश तरक कर दी थीं। वह सुलतान अय्यूबी की ताक़त ज़ाएल करते जा रहे थे। सुलतान अय्यूबी उनकी चाल समझ गया था। उस के जवाब में उस ने भी अपना तरीक़ा बदल दिया था।

सलीबीयों की ये कोशिश नाकाम हो चूकी थी कि उन्होंने बाहर से हमला किया था। सुलतान अय्यूबी उस हमले के लिये तय्यार था। उस ने निहायत अच्छी चाल से उस फ़ौज को घेरे में ले लिया था। उस फौज को घेरे में आए हुए ढेढ़ महीना गुज़र गया था। घेरे में आई हूई फ़ौज घेरा तोड़ने के लिये हर तरफ़ हमले करती थी। सुलतान अय्यूबी उसका कोई हमला कामयाब नही होने दे रहा था। अलबत्ता घेरा कई मीलों पर फैल गया था। वह इलाका सर सब्ज़ था इस लिये सलीबीयों को पानी और ज़ानवरों को चारा मिल जाता था। उनके जानवर मरते थे तो वह उनको खा लेते थे। मगर ये काफ़ी नही था। हज़ारों घोड़ों और ऊंटों के लिये ये चारा काफी नहीं था। पानी के लिये वहां कोई नदी या दरया नहीं था। तीन चार चशमे थे जिन में से दो ढेढ़ महीने में ही खुश्क हो गए थे। सलीबी सिपाहियों मे बद दिली पैदा हो गई थी। उन्हें गिज़ा बहुत कम मिलती थी और पानी के लिये बहुत दूर जाना पड़ता था। रात को सुलतान अय्यूबी के छांपा मार उन पर शबखून मारते और नुकसान करते रहते थे। ढेढ़ माह में ये फ़ौज आधी रह गई थी। उनके जानवारों में भी दम निकल रहा था। सलीबी हुकमरान रीमाण्ड जो इस फ़ौज का कमाण्डर था, सख़्त परीशानी के आलम में इन्तेज़ार कर रहा था कि

सलीबी हमला करके उसे सुलतान अय्यूबी से छुड़ाएगें मगर उस की मदद को कोई नहीं आ रहा था।

सुलतान अय्यूबी चाहता तो चारों तरफ़ से हमला करके उस फ़ौज को शिकस्त दे सकता था लेकिन उस से अपना जानी नुकसान भी होना लाज़मी था और जन्ग का पांसा पलट जाने का ख़तरह भी था। सुलतान अय्यूबी अपनी ताकत जाएल नही करना चाहता था। वह सलीबीयों को आहिसता आहिसता मार रहा था। उसे ये नुकसान ज़रूर हो रहा था कि उसकी फ़ौज के तीसरा हिस्सा उस सलीबी फ़ौज को घेरे में रखने में उलझ गया था। उसे वह शहर के मुहासरे की कामयाबी के लिये इसतेमाल नहीं कर सकता था। उस के पास अभी रिजर्व दस्ते मौजूद थे और वह सोंच रहा था कि किला तोड़ने के लिये उन्हें इसतेमाल करे। वह अब मुहासरे को और ज़्यादा तूल देना नहीं चाहता था। उस दौर में मुहासरे उमुमन तवील हुआ करते थे। एक एक शहर को दो दो साल तक भी मुहासरे में रखा गया है। छे सात माह का मुहासरा तवील नहीं समझा जाता था। लेकिन सुलतान अय्यूबी मुहासरे को तूल देने का काएल नहीं था। वह उन हमला आवरों में से भी नहीं था जो किसी मुल्क के दारुल हुकूमत का मुहासरा करके अन्दर वालों को पैग़ाम भेजा करते थे कि इतनी मिकदार ज़रो जवाहरात की इतने घोड़े और इतनी औरतें बाहर भेज दो, हम चले जाएगें। सुलतान अय्यूबी सलीबीयों को अरब की सर ज़मीन से निकालना चाहता था। वह कहा करता था कि ये सर ज़मीन इसलाम का सर चशमा है जो सारी दुनया को सैराब करेगा और वह अपनी उमर को बहुत कम समझा करता था। उस ने ये अलफ़ाज़ बारहा कहे थे कि मैं ये काम अपनी मुख़तसर सी उमर में पूरा कर देना चाहता हूँ वरना मैं देख रहा हूँ कि मुसलमान उमरा उस मुकद्दस ख़ित्ते को सलीबीयों के हाथ बेचते चले जारहे हैं।

एक रात वह अपने खीमें में गहरी सोंच में खोया हुआ था। उस ने यहां तक सोंचा था कि किले के इर्द गिर्द से इतनी फ़राख़ सुरंगें खूदाई जाए जिन में पियादा सिपाही गुज़र सकें। कुछ और तरीके भी उस के ज़ेहन में आए। वह अब चन्द दिनों में करक पर कबज़ा कर लेना चाहता था। इस कैफ़ियत में अली बिन सुफ़यान उस के खीमें में दाख़िल हूआ। उसे देख कर सुलतान अय्यूबी ख़ूश नही हुआ क्योंकि उसे इत्तेला मिल चूकी थी कि मिस्र के हालात खतरनाक हालात में दाख़िल हो चूके हैं। चेहरे पर तशवीश के आसार लिये हुए सूलतान अय्यूबी अली बिन सुफ़यान से बग़ल गीर हुआ और कहा........ " तुम मेरे लिये यकीनन कोई ख़ुशख़बरी नहीं लाए।"

" बज़ाहिर ख़ैरियत है।" अली बिन सुफ़यान ने कहा.........." मगर खुशख़बरी वाली बात भी कोई नहीं।" उस ने मिस्र के हालात और वाकिआत सूनाने शुरू कर दिये। अली बिन सुफ़यान जैसा ज़िम्मेदार हाकिम सुलतान अय्यूबी से कुछ भी नहीं छुपा सकता था। न ही उसे ख़ूश फहमीयों में मुबतला कर सकता था। हालात का तकाज़ा ये था। कि लगी लिपटी रखे बग़ैर बात की जाए। अली बिन सुफ़यान ने तकीयुद्दीन की ग़लतीयों और सुलतान अय्यूबी की भी एक दो ग़लतीयों का खुल कर ज़िक किया। अरसलान की ग़द्दारी का किस्सा और

अलइदरीस के जवान बेटों की मौत का हादसा सुनकर सुलतान अय्यूबी के आंसू निकल आए। अगर अरसलान मर न गया होता तो सुलतान अय्यूबी कभी यक़ीन न करता कि उसका ये हाकिम जिसे वह अपना वफ़ादार दोस्त समझता है ग़द्दारी कर सकता है। उस से पहले भी दो दोस्त उस से ग़द्दारी कर चूके थे।

"अगर अरसलान ज़रा सी देर और ज़िन्दा रहता तो बाक़ी राज़ भी बेनक़ाब कर देता।" अली बिन सुफ़यान ने कहा......." उस ने आख़री फिक्रे से जो मौत ने उसे पूरा न होने दिया साफ सबूत मिलता है कि मिस्र में बग़ावत होने ही वाली है। मिस्र में जो हमारी फ़ौज है उसे ज़ेहनी लिहाज़ से पस्त कर दिया गया है। मेरी जासूसी बताती है कि कमाण्दार तक ग़लत फहमियों और बे इतमिनानी का शिकार हो गए हैं। फ़ौज के लिये गल्ला और गोश्त की किल्लत पैदा करके ये बे बुनयाद बात फैला दी गई है कि तमाम तर रसद मुहाज़ों पर भेजी जारही है और ये भी कि फ़ौज का माल हाकिम बेच कर खारहे हैं। दुशमन की साज़िश पूरी तरह कामयाब है।"

"दूशमन की साज़िश उसी मुल्क में कामयाब होती हैं जहां के चन्द एक अफ़राद दुशमन का साथ देने पर उतर आते हैं।" सुलतन अय्यूबी ने कहा... .... "अगर हमारे अपने भाई दुशमन के आला कार बन जाएं तो हम दुशमन का क्या बिगाड़ सकते हैं। मैं जिस तरह अल्लाह के उन शेरों के जज़्बे के ज़ोर पर और उनकी जानें कुरबान करके सलीबीयों को मैदाने जंग में नाकों चने चबवा रहा हूँ इसी तरह हाकिम भी पक्के मुसलमान होते तो आज किबल.ए. अव्वल आज़ाद होता और हमारी आज़ानें यूरोप के कलीसाओं में गूजं रही होतीं, मगर मैं मिस्र में क़ैद होकर रह गया हूँ, मेरे जज़्बे और मेरा अज़्म ज़ंजीरों में जकड़े गए हैं।" उस ने कुछ देर की गहरी ख़ामोशी और सोंच के बाद कहा....... "मुझे सब से पहले उन ग़द्दारों को ख़त्म करना होगा वरना ये क़ौम को दीमक की तरह

खाते रहेंगें।"

"मैं ये मशवरा ले कर आया हूँ कि मुहाज़ आप को इजाज़त दे तो आप मिस्र चलिये।" अली बिन सुफ़यान ने कहा।

"मैं हक़ाएक़ से चश्म पोशी नही कर सकता अली।" सुलतान अय्यूबी ने कहा ...." लेकिन मैं ये इज़हार किये बग़ैर भी ज़िन्दा नही रह सकता कि मेरे हाथों सलीबीयों की गर्दन और फलसतीन छुड़ाने वाले मेरे अपने भाई हैं। अली बिन सुफ़यान ! अगर मैं ग़द्दारों को इसलाम के दुशमनों के साथ दोसती करने वाले मुसलमानों को अभी ख़त्म न किया तो ये कभी ख़त्म न होंगे और हमारी तारीख़ को ये गिरोह हमेशा शरमसार करता रहेगा। क़ौम में हर दौर में यह गिरोह मौजूद रहेगा। वह दीन और रसूल (स0)के दुशमनों से दोसती करके इसलाम की जड़ें खोखली करता रहेगा।" उस ने पूछा सूडान की मुहाज़ की क्या ख़बर है? मैं ने तकीउद्दीन को पैग़ाम भेज दिया है। कि उस महाज़ को समेटना शुरूअ कर दो."

"मिस्र में किसी को भी मालूम नहीं कि आप ने एसा हुक्म दिया है।" अली बिन सुफ़यान ने कहा।

" और किसी को मालूम होना भी नहीं चाहिये। " सुलतान अय्यूबी ने कहा । उस ने दरबान को बुलाया और कहा........ कातिब को फ़ौरन बुला लाओ।"

कातिब कलमदान और कागज़ ले कर आया तो सुलतान अय्यूबी ने कहा। " लिखो..... काबिले सद एहतराम नूरुद्दीन जंगी........"

❖

वह क़ासिद बड़ा ही तेज़ रफ़तार था जिस ने सुलतान अय्यूबी का पैग़ाम अगली रात के आख़री पहर बुग़दाद नूरुद्दीन ज़ंगी तक पहुंचा दिया। सुलतान अय्यूबी ने उसे कहा था कि रास्ते में हर चौकी पर उसे ताज़ा दम घोड़ा मिल जाए गा लेकिन वह घोड़ा सिर्फ़ तबदील करे, खुद आराम और खाने के लिए न रुके। कहीं भी घोड़ा आहिस्ता न चले। अगर रात को नूरुद्दीन ज़ंगी के पास पहुंचे तो दरबान से कहदे कि उन्हें जगादे। अगर ज़ंगी ख़फ़गी का इज़हार करे तो कह देना कि सलाहुद्दीन ने कहा है कि हम सब जाग रहे हैं। क़ासिद जब नूरुद्दीन के दरवाज़े पर पहुंचा तो मुहाफ़िज़ दस्ते ने उसे रोक दिया और कहा कि पैग़ाम सुबह दिया जाए गा। क़ासिद ने घोड़े तो कई बदले थे मगर पानी का एक घूंट पीने के लिए भी नहीं रुका था। थकन, भूक प्यास और दोरातों की बेदारी से वह लाश बन गया था। ज़ुबान प्यास से अकड़ गई थी। वह पांव पर खड़ा नहीं होसकता था और उस के मुंह से बात नहीं निकलती थी। उस ने इशारों में बताया कि पैग़ाम बहुत ज़रूरी है। नूरुद्दीन ज़ंगी ने भी सुलतान अय्यूबी की तरह अपने ख़ुसूसी अमले, दरबान और बाडी गारडज़ के कमांडर को कह रखा था कि कोई ज़रूरी बात या पैग़ाम हो तो उस की नींद और आराम की परवा न की जाऐ।

क़ासिद की हालत देख कर बाडी गार्डज़ ने अंदर जाकर नूरुद्दीन ज़ंगी की ख़्वाबगाह का दरवाज़ा खटखटाया। वह बाहर आगया और पैग़ाम और क़ासिद को मुलाक़ात के कमरे में लेगया। क़ासिद कमरे में दाख़िल होते ही गिर पड़ा। ज़ंगी ने अपने मुलाज़िमों को बुलाया और क़ासिद की देख भाल करने को कहा। उस ने पैग़ाम पढ़ना शुरू किया। सुलतान अय्यूबी ने लिखा था।

"आप पर अल्लाह की रहमत हो। मेरा पैग़ाम आप को खुश नहीं करेगा। आप के लिए खुशीऔर इतमीनान की बात सिर्फ़ यह है कि मैं ने हौसला नहीं छोड़ा। आप के साथ क्या हुआ अहद पूरा कर रहा हूं। आप मेरे पास तशरीफ़ लाऐंगे तो तमाम हालात सुनाऊंगा। मैं ने कर्क को मुहासरे में ले रखा है। अभी कामयाबी नहीं हुई है। इतनी कामयाबी हासिल कर चुका हूं कि सलीबियों की एक फ़ौज ने शाह रीमांड की सरकरदगी में बाहर से मुझ पर हमला कर दिया था। मैं ने महफ़ूज़ा से उसे घेरे में लेलिया है। अब तक उस की आधी फ़ौज ख़त्म कर चुका हूं। भूके सलीबी अपने उन घोड़ों और ऊंटों को खा रहे हैं जो उन्हें इतनी दूर से यहां लाए थे। मैं इस कोशिश में हूं कि रीमांड को ज़िंदा पकड़ लूं मगर कर्क का मुहासरा लमबा होता जारहा है। सलीबियों का दिमाग़ और तरीक़ाए जंग पहले से बहुत बेहतर है। मैं मुहासरे को कामयाब करने के तरीक़े सोच रहा था और मुझे उम्मीद थी कि मेरे जांबाज़ मुजाहिद किला तोड़ लेंगे।वह जिस जज़बे से लड़ रहे हैं वह आप को हैरान कर देगा मगर सूडान में

मेरा भाई तक़ीयुद्दीन ना काम हो गया है। उस की ग़लती कि उस ने अजनबी सेहरा में जाकर फ़ौज को फैला दिया है। वह मदद मांग रहा है। मैं ने उसे मुहाज़ समेटने और वापस आने को कह दिया है। मिस्र से आई हुई ख़बर अच्छी नहीं। गद्दारों और ईमान फ़रोशों ने दुशमन का आला कार बन कर मिस्र में बग़ावत और सलीबी यलग़ार के लिये रासता साफ़ कर दिया है। अली बिन सुफ़यान को आप अच्छी तरह जानते हैं। वह ख़ुद मेरे पास आया है। मैं उस के मशवरे को नज़र अन्दाज़ नहीं कर सकता कि मैं मिस्र चला जाऊं.........मोहतरम ! मैं करक का मुहासरा उठा नहीं सकता वरना सलीबी कहेंगें की सलीहूद्दीन पसपा भी हो सकता है। दुशमन की गरदन मेरे हाथ में है। आइये और ये गरदन आप अपने हाथ में पकड़ें। अपनी फ़ौज साथ लाऐं। मैं अपनी फौज मिस्र ले जाऊंगा। वरना मिस्र बग़ावत का शिकार हो जाएगा। उम्मीद है आप मेरे दूसरे पैग़ाम का इंतज़ार नहीं करेंगें।"

नूरुद्दीन ज़ंगी ने एक लम्हा भी इंतजार न किया। शब ख़्वाबी के लिबास में ही मसरूफ़े कार हो गया। फ़ौजी हुकाम को बुलाया गया। उन्हें एहकाम दिये गये। और दिन अभी आधा भी नहीं गुज़रा था कि उस की फ़ौज करक की सिम्त कर चूकी थी। ज़न्गी वह मरदे मुजाहिद था जिस का नाम सुन कर सलीबी बिदक जाते थे। उसके सीने में ईमान की शमा रौशन थी। वह फ़न्ने हरब व ज़र्ब का माहिर था। उस ने रासते में कम से कम पड़ाव किये और इतनी जलदी मुहाज़ पर पहुंचा कि सुलतान अय्यूबी हैरान रह गया। अगर क़ासिद पहले से उसे इत्तेला न दे देता कि ज़न्गी अपनी फ़ौज के साथ आ रहा है। तो दूर से गर्द के बादल देख कर सुलतान अय्यूबी समझता कि सलीबीयों की फ़ौज आ रही है। सुलतान अय्यूबी घोड़ा सरपट भगाता हूआ इसतक़बाल के लिये गया। नूरूद्दीन ज़न्गी उसे देख कर घोड़े से कूद आया। इसलाम की अज़मत के ये दोनों पासबान जब गले मिले तो जज़बात की शिद्दत से सुलतान अय्यूबी के आंसू निकल आए।

❖

सूलतान अय्यूबी ने नूरूद्दीन ज़ंगी को तमाम तर हालात और ग़द्दारों की सारी कारिसतानियां सुनाई। ज़न्गी ने कहा.......... सलाहुद्दीन ! तुम्हारी उमर अभी इतनी नहीं गुज़री कि चन्द एक हक़ाएक़ को क़बूल कर सको। ये इसलाम की बदनसीबी है कि ग़द्दार हमारी क़ौम का लाज़मी हिस्सा बन गए हैं और क़ौम उन से कभी पाक नहीं होगी। मुझे साफ नज़र आ रहा है कि एक वक़्त आएगा जब ग़द्दार क़ौम पर बाक़ाइदा हुकूमत करेंगें। दुशमन के ख़िलाफ़ बातें करेंगें। बुलन्द दावे करेंगे। दुशमन के कुचल देने के नारे लगाऐंगे मगर क़ौम जान नहीं सकेगी कि उनके हुक्मरां दर असल उसके और उसके दीन के दुशमन के साथ दरपरदा दोसती कर चूके हैं। दुशमन उन्हीं का ढाल और उन्हीं को तलवार बनाएगा और उनके हाथों क़ौमों को मर वाएगा........ परीशान न हो सलाहुद्दीन ! हम हालात पर क़ाबू पा लेगें। तुम मिस्र पहुचों और तक़ीयुद्दीन को मदद देकर सूडान से निकालो। दाऐं बाऐं हमले करके दुशमन को उलझाए रखो ताकि तक़ीयुद्दीन का कोई दसता कहीं घेरे में न आ जाए। मिस्र में फ़ौजों को यकजा करो और मिस्र में जो फौज है उसे मेरे पास भेज दो। मैं उस के दीमाग़ से बग़ावत का

कीड़ा निकालदूंगा।"

शाम के बाद ज़न्गी ने अपनी फ़ौज को करक के मुहासरे पर लगा दिया और सुलतान अय्यूबी की फ़ौज पीछे हट आई उसे फ़ौरन क़ाहिरा के लिये कूच का हुक्म दिया गया। कुछ गलती वहां हो गई जहां सुलतान अय्युबी ने रिमाण्ड की फ़ौज को घेरे में ले रखा था।ज़न्गी ने जब वहां अपने दसते इस हिदायत के साथ भेजे कि सुलतान अय्यूबी की फ़ौज की बदली करनी है तो अहकाम और हिदायात पर किसी ग़लत फहमी की बिना पर अमल न हो सका। रीमाण्ड ने इत्तेफाक से उस सिम्त हमला किया, जहां उसे तवक्को थी कि मुसलमान का दसता कमज़ोर है। उस ने किसी को भी हमला रोकने के लिये तय्यार न पाया। वह उस तरफ से निकल गया और कुछ फ़ौज भी निकल गई। सलीबीयों की बची खुची फ़ौज फंसी रह गई जिसे अगले रोज़ पता चला कि उनका हुकमरान कमाण्डर भाग गया है तो उस ने भी अंधा दुंध भागने की कोशिश की। सलीबी अपनी जाने बचाने के लिये लड़े कुछ मारे गए और बाज़ पकड़े गए। नुकसान ये हुआ कि रिमाण्ड निकल गया। फाइदा ये हुआ कि घेरा कामयाब रहा और नूरुद्दीन ज़ंगी की ये फ़ौज का ये हिस्सा करक के मुहासरे को कामयाब करने के लिये फारिग़ हो गया।

सुलतान अय्यूबी जब क़ाहिरा को रवाना होने लगा तो हसरत भरी नज़रों से करक को देखा। उस ने ज़न्गी से कहा...... "तारीख़ ये तो नहीं कहेगी कि सुलतान अय्यूबी पसपा हो गया था ? मैंने मुहासरा नहीं उठाया !"

"नही सलाहुद्दीन !".........नूरूद्दीन ज़न्गी ने उस का गाल थपक कर कहा....." तुम ने शिकस्त नहीं खाई। तुम जज़बाती हो गए हो। जंग जज़बात से नहीं लड़ी जाती।"

"मैं आऊंगा मेरे फलसतीन !"....... सुलतान अय्यूबी ने करक को देखते हुए कहा......... "मैं आऊंगा।" उस ने घोड़े को ऐड़ लगादी, फिर पीछे मुड़कर नहीं देखा।

नूरुद्दीन ज़न्गी उसे देखता रहा। वह जब अपने घोड़े समेत दूर जाकर गर्द में छुप गया तो ज़न्गी ने अपने नाएब से कहा....." इसलाम को हर दौर में एक सलाहुद्दीन अय्यूबी की ज़रूरत होगी।"

ये वाकया 1173 ई0 (569 हि0) के वक्त का है।

❖❖

वह जो मुर्दों को ज़िन्दा करता है।

मिस्र के देहाती उसकी राह देख रहे थे। हर किसी की ज़बान पर यही अलफाज़ थे....... "वह आसमान से आया है । खुदा का दीन आया है। दिल की बात बताता औरआने वाले वक़्त के अंधेरों को रोशन करके दिखा देता है। मरे हुओं को उठा देता है।"

वह कौन था? जिन्हों ने उसे देखा था वह उस की करामात से इस कदर मसहूर हो गये थे, कि ये जान्ने की ज़रूरत ही महसूस नहीं करते थे कि वह कौन है। वह तसलीम कर लेते थे कि वह आसमान से आया है , खुदा का दीन लाया है और जो लोग

उसकी राह देख रहे थे वह इस सवाल से बेनियाज़ थे कि वह कौन है। काफ़ले गुज़रते थे तो उसी की करामात सुनाते थे। कोई अकेला धुकेला मुसाफिर किसी गांव मे जाता था। तो उसी के मोअजज़े का ज़िक किया करता था। बाज़ लोग उसे नबी और पैग़म्बर भी कहते थे और कुछ एसे भी थे जो उन्हें बारिश का देवता मानते थे। और उस की खुशनूदी के लिये इंसानी जान की कुरबानी देने के लिये भी तैय्यार ताजिरों रहते थे। उन में से कोई भी यह जानने की कोशिश नही करता था कि उस का मज़हब क्या है और वह कैसा अकीदा साथ लाया है। लोग अभी पसमांदगी के दौर में थे । इल्म से बे बहरा थे और कुदरत के सितम का शिकार रहते थे। उन्हें जहां उम्मीद बंधती थी कि उनके मसाएब का हल मौजूद है वहां जाकर सजदे करते थे। उनकी अकसरीयत मुसलमान थी। इसलाम की रौशनी वहां पूरी आब व ताब से पहुंची थी। मुसलमानों ने मसजिदें भी बना रखी थीं। रब्बे काबा के हुजूर पांचों वक़्त सजदा भी करते थे। मगर इसलाम के सच्चे अकीदे को पुख़ता करने का कोई इनतेजाम नही था। उनके इमाम बे इल्म थे जो अपनी इमामत को बरकरार रखने के लिये लोगों को अजीबो ग़रीब बातें बताते रहते थे।. कुरआन को उन्होंने (नउजोबिल्ला) काले इल्म की एक किताब बना डाला और एसा तास्सुर पैदा कर रखा था कि कुरआन को सिर्फ इमाम समझ सकता है। चूनानचे ये मुसलमान कुरआन को हाथ लगाने से भी डरते थे ।

इन इमामों ने लोगों के दिलों में ग़ैब का एक लफ्ज़ बिठा दिया था और उन्हें बावर करा दिया था कि जो कुछ भी है वह ग़ैब में है और ग़ैब में झांकने की कुदरत सिर्फ इमाम को हासिल है। इमामों ने इनसान को एक कमज़ोर चीज़ बना दिया था। इस मकामात से वसवसे और तोहमात पैदा हुए। सेहराई आंधीयों की चीखों में उन्हें उस मखलूक की आवाजें सुनाई देने लगीं जो इमाम कहते थे,कि इनसानों को नज़र नही आ सकती। बीमारीयां जिन्नात और शए शरार बन गईं। इमाम मुआलिज और आमिल बन गए जिन्हों ने दावा किया कि उनके कबज़े में जिन्नात हैं । इनसान ग़ैब से और ग़ैब की सज़ा से इतने खौफ ज़दह रहने लगे कि उन के

दिलों में इसलाम का अकीदा कमज़ोर पड़ गया और वह हर उस आवाज़ पर लब्बेक कहने लगे जो उन्हें ग़ैब की मख़लुक और ग़ैब की सज़ा से बचाने का यकीन दिलाती थी....... यही वजह थी कि लोग बेताबी से उस की राह देख रहे थे जो आसमान से आया और मरे हुए को उठा देता है।"

वह मिस्र के उस देहाती इलाके में वारिद हुआ था जो जुनूब मग़रिब की सरहद में वाकेअ था। उस ज़माने मे सरहद का कोई वाजेह वूजूद नही था। सलाहुद्दीन अय्युबी ने कागजो पर एक लकीर खींच रखी थी लेकिन वह भी कहा करता था कि दीन इसलाम की और सलतनत इसलामिया की कोई सरहद नहीं। दर असल सरहद अकीदों के दरमियान थी। जहां तक इसलाम की गिरफ्त थी वह इसलामी सलतनत थी और जहां से ग़ैर इसलामी नज़रयात शुरू होते थे वह इलाका गैर कहलाता था। मिस्र के जिस आख़री गावं में मुसलमानो की अकसरीयत ग़ालिब थी वह इमारते मिस्र का आखरी और सरहदी गावं समझा जाता था। इसी बाइस सलीबी मिल्लते इसलामिया के नज़रयात पर हमला करते और इसलामी अकीदों को कमज़ोर करके वहां अपने अकाएद का ग़लबा पैदा करते थे। इस से साबित होता है कि उस वक़्त सरहदों की हैसियत जुग़राफ़ियाई कम और नज़रयाती ज़्यादा थी। उस दौर के वाके़आत से यह भी साबित होता है कि ग़ैर मुसलिमों ने ग़लबाए इसलाम के साथ ही मुसलमानों पर नज़रयाती हमले शुरू कर दिये थे। वह जानते थे कि मुसलमान जंग को जिहाद कहते हैं और कुरआन ने मुसलमानों पर जिहाद फर्ज़ कर दिया है। यहां तक कि हालात के तकाज़े के पेशे नज़र जिहाद को नमाज़ पर फ़ौकियत हासिल है और ये भी कि किसी ग़ैर मुसलिम सलतनत में मुसलमान बाशिन्दों पर ज़ुल्म व सितम हो रहा हो तो दूसरी सलतनतों के मुसलमानो पर ये इकदाम फर्ज़ हो जाता है कि मज़लूम रिआया को ग़ैर मुसलिमों के ज़ुल्म व सितम से बचाऐं खाह इस मकसद के लिये जंगी कारवाई करनी पड़े।

इन्हीं कुरआनी एहकाम ने मुसलमानों में असकरी जज़बा पैदा किया था जिस का असर ये था कि मुसलमान जिस मुल्क पर फ़ौज कशी करते या जिस मैदान में भी लड़ते थे उनके ज़ेहन में जंग का मकसद वाज़ेह होता था। गो उन पर माले ग़नीमत हलाल करार दिया गया था लेकिन उन के हां लूट मार जंग के मकासिद में शामिल नहीं होती थी न ही वह माले ग़नीमत के लालच से लड़ते थे। इस के बरअक्स सलीबीयों की जंग मुल्क गीरी की हवस की आईना दार होती और वह लूट मार पर ज़्यादा तवज्जो देते थे। जैसा कि पहले बयान किया जा चुका है कि मुसलमानों के काफलों को लूटने का काम भी सलीबी फ़ौज के हवाले कर दिया गया था। सलीबीयों को उस का ये नुकसान उठाना पड़ता था, कि हर मैदान में उन में जंगी ताकत मुसलमानों की निसबत पांच से दस गुना होती थी मगर वह मुट्ठी भर मुसलमानों से शिकस्त खा जाते थे। शिकस्त न खाऐं तो फतह भी हासिल न कर सकते थे। वह जान गए थे कि मुसलमानों में जंगी जुनून पैदा कर रखा है। वह अल्लाह के नाम पर लड़ते और जानें कुरबान करते हैं सलीबीयों के जरनैलों में कुछ एसे भी थे जो मुसलमानों पर मज़हबी जुनून की गिरफ्त कमज़ोर कर ने की तरकीबें सोंचते और उन पर अमल करते थे। वह जान गये

थे किएक मुसलमान जो दस गैर मुसलिमों का मुकाबला करता है वह कोई फरिशतर जिन भूत नहीं होता, बल्कि वह अपने अन्दर अल्लाह की ताकत और अपने अकीदे की कुव्वत महसूस करता है जो उसे किसी लालच से और अपनी जान से भी बेनियाज़ कर देती है। चूनानचे सलाहुद्दीन अय्यूबी से बहुत पहले ही यहूदी और सलीबी आलिमों और मुफक्किरों ने मुसलमानों की असकरी रूह को मुरदा करने के लिये उन की किरदार कुशी शुरू कर दी थी और उन के मज़हबी अकाएद में पुर कशिश मिलावट करके उनके ईमान को कमज़ोर करना शुरू कर दिया था।

सलाहुद्दीन अय्यूबी और नूरूद्दीन ज़ंगी की बदनसीबी ये थी कि वह जब सलीबीयों के ख़िलाफ़ उठे तो उस वक़्त तक सलीबीयों की नज़रयाती यलग़ार बहुत हद तक कामयाब हो चूकी थी। इसलाम के दुशमनों ने उस यलग़ार को दो तरफ़ा इसतेमाल किया था। ऊपर के तबक़े को जिसमे हुकमरान, उमरा, और वुज़रा वग़ैरह थे, दौलत, औरत और शराब का दिलदाह बनादिया था और नीचे यानी पसमान्दा लोगों में तवहहुम परसती और मज़हब के ख़िलाफ़ वसवसे पैदा कर दिये थे। जिस तरह ज़ंगी और अय्यूबी ने फन्ने हरबो ज़र्ब में नए तजरबे किये थे और नई चालें वज़ाअ कीं इसी तरह सलीबीयों ने दरपरदा किरदार कुशी के मैदान में नए तरीक़े दरयाफ़त किये। तीन चार यूरोपी मोअर्रिखीन ने यहां तक लिखा है कि एक वक़्त एसा भी आया कि बाज़ सलीबी हुकमरानों ने मैदाने जंग को अहमियत ही देनी छोड़ दी थी। वह इस नज़रये के काएल हो गए थे कि जंग इस तरीक़े से लड़ो कि मुसलमानों की जंगी ताक़त ज़ाएल होती रहे। ज़ोर दार हमला उनके मज़हबी अकाएद पर करो और उनके दिलों में एसे वहम पैदा कर दो जो मुसलमान फ़ौज के दरमियान बदएतमादी और हिक़ारत पैदा कर दें। इस मकतबे फ़िकर के सलीबी मुफक्किरों में फिलप आगसटस सरे फेहरिस्त था। ये सलीबी हुकमरान इसलाम दुशमनी को अपने मज़हब का बुन्यादी उसूल समझता था। और कहा करता था कि हमारी जंग सलाहुद्दीन अय्यूबी और नूरूद्दीन ज़ंगी से नहीं, ये सलीब और इसलाम की जंग है जो हमारी ज़िन्दगी में नहीं तो किसी न किसी वक़्त ज़रूर कामयाब होगी। उस के लिये ज़रूरी है कि मुसलमानों की उठती हूई नसल के ज़ेहन में कौमियत की बजाए जिनसियत भर दो और उन्हें ज़ेहनी अय्याशी में डाल दो।

आगसटस अपने मिशन की कामयाबी के लिये मैदाने जंग में मुसलमानों के आगे हथियार डाल कर सुलह कर लेने से भी गुरेज़ नहीं करता था। हम जिस दौर यानी 1169 ई0 के लग भग की कहानी सुना रहे हैं उस वक़्त वह नूरूद्दीन ज़ंगी के हाथों शिकस्त खाकर मफतूहा इलाक़े वापस कर चूका था। उसने ज़ंगी को तावान भी दिया था और जंग न करने के मुआहिदे पर दसतख़त करके जिज़या दे रहा था। मगर ज़ंगी कैदियों के तबादले में उस ने चन्द एक माज़ूर मुसलमान सिपाही वापस किये। तन्दुरुस्त कैदियों को उस ने क़त्ल कर दिया था। और अब वह करक के क़िले में इसलाम के बेख़ कुनी के मनसूबे बना रहा था। उस के ज़ेहन में इसलाम दुशमनी ख़ब्त की सूरत इख़तियार कर गई थी। उस की बाज चालें एसी खुफ़या होती थीं कि उस के अपने सलीबी हुकमरान और जरनल भी उसे शक की

निगाहों से देखने लगते थे। उस पर अपने साथियों ने ये इल्ज़ाम आएद किया था कि वह अन्दर से मुसलमान का दोस्त है और उनके साथ सौदा बाज़ी कर रहा हैं एक युरोपी मोअर्रीख़ आन्दरे आजून के मुताबिक इस इलज़ाम के जवाब में एक बार आगसटस ने कहा था........ "एक मुसलमान हुकमरान को फांसने के लिये मैं अपनी कुंवारी बेटियों को भी उसके हवाले करने से गुरेज़ नहीं करुंगा। तुम मुसलमानों के साथ सुलह नामें और दोसती के मुआहिदे करने से घबराते हो क्योंकि इस में तुम अपनी तौहीन का पहलू देखते हो, तुम ये नहीं समझते कि मुसलमान को मैदाने जंग की ब निसबत सुलह के मैदान में मारना आसान है। ज़रूरत पड़े तो उसके आगे हथियार डाल कर सुलह करो, मुअहदा करो और घर आकर मुआहिदे और सुलह नामे के उलट अमल करो। क्या मैं ऐसा नहीं कर रहा? क्या तुम नहीं जानते कि मेरे ख़ून के रिशते की दो लड़कियां दमिशक के एक शेख़ के हरम मे हैं? क्या तुम इस शेख़ से लड़े बग़ैर बहुत से इलाका नहीं लिये? उस ने दोसती का हक अदा नही किय? वह मुझे अपना दोस्त समझता है और मैं उस का जानी दुशमन हूँ। मैं हर एक ग़ैर मुसलिम से कहुगां कि मुसलमानों के साथ मुआहिदे करो और उन्हें धोका देकर मार दो।"

❖

ये थी वह सलीबी ज़ेहनियत जो एक कामयाब साज़िश के तेहत सलतनते इसलामिया की जड़ों को दीमक की तरह खा रही थी। इसी साजिश का नतीजा था कि मिस्र में बग़ावत की चिंगारी शोले बन्ने लगी थी जिसे सर्द करने के लिये सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी को करक का मुहसरा इस हालत में उठाना पड़ा जब वह सलीबीयों की एक सवार फ़ौज को क़िले से बाहर शिकस्त दे चूका था। उसे मुहासारा नूरूद्दीन ज़ंगी के हवाले करके अपनी फ़ौज समेत काहरा जाना पड़ा। वह दिल बरदाश्ता तो नहीं था लेकिन दिल पर ऐसा बोझ था जो उस के चेहरे पर साफ़ नज़र आ रहा था। उसके फ़ौज के सिपाही इस ख़याल से मुतमईन थे कि उन्हें आराम के लिये क़ाहिरा ले जाया जा रहा है लेकिन दसतों के वह कमान दार जो सुलतान अय्यूबी के अज़्म और लड़ने के तरीक़े कार को समझते थे, हैरान थे कि उस ने नूरूद्दीन को फ़ौज समेत क्यों बुलाया और मुहासारा क्यों उठाया गया है। वह तो फ़तह या शिकस्त तक लड़ने का क़ाएल था। उस के हेड कुवार्टर के दो तीन सालारों के सिवा किसी को इल्म नही था कि मिस्र के हालात बहुत ख़राब हो गए हैं और सूडान में तकीयुद्दीन का हमला नाकाम हो गया है और उसे ख़ैरियत से पीछे हटाना है। सुलतान अय्यूबी के साथ अली बिन सुफ़यान भी था। वही मिस्र के अन्दुरूनी हालात की रिपोर्ट ले कर अया था।

सुलतान अय्यूबी ने करक से कूच के हुक्म के साथ ये हुक्म भी दिया था कि रासते में बहुत कम पड़ाव किये जाऐंगें। और कूच बहुत तेज़ होगा। उस हुक्म से सब को शक हुआ था कि कुछ गड़बड़ है। सफर की पहली शाम आई। फ़ौज रात भर के लिये रुक गई। सुलतान अय्यूबी का ख़ीमा नसब हो गया तो उस ने अपने आला कमाण्डरों और अपनी मरकज़ी कमान के ओहदे दारों को बुलाया। उस नेकहा ....." आप में ज़्यादह तादाद उनकी है जिन्हें मालूम नही कि मैं न मुहासरा क्यों उठाया है। और मैं फ़ौज को काहिर क्यों ले जारहा हूँ।

बेशक मुहासरा टूटा नहीं, आप में कोई भी पसपा नही हुआ लेकिन मैं इसे शिकस्त नहीं तो पसपाई ज़रूर कहूंगा। मेरे रफीको ! हम पसपा हो रहे हैं और ये सुन कर हैरान होंगे कि आप को पसपा करने वाले आप के अपने भाई हैं अपने रफीक़ वह सलीबीयों के रफीक़ बन चूके हैं। और उन्होंने बगावत का मनसूबा बना लिया है। अगर अली बिन सुफ़यान, उसके नाएब और ग़यास बिलबिस चौकस न होते तो आज आप मिस्र न जा सकते । वहां सलीबीयों और सूडानीयों की हुक्मरानी होती। अरसलान जैसा हाकिम सलीबीयों का आला कार निकला । वह अल इदरीस के दो जवान बेटों को मरवाकर खुदकुशी कर चूका है। अगर अरसलान गद्दार था तो आप और किस पर भरोसा करेंगें ?"

हाज़रीन पर सन्नाटा तारी हो गया । बेचैनी और इज़्तराब उन की आंखों में चमक रहा था। सुलतान अय्यूबी ने खामूश होकर सब को देखा। उस दौर का एक वकाए निगार, काज़ी बहाउद्दीन शद्दाद की किसी ग़ैर मतबुआ तहरीर के हवाले से लिखता है कि दो कंदीलों की कांपती हूई रोशनी में सब के चेहरे इस तरह नज़र आ रहे थे जैसे वह एक दूसरे के लिये अजनबी हों वह आंख भी नहीं झपकते थे । सुलतान अय्यूबी के अलफाज़ से ज़यादा उस का लब व लहजा और अन्दाज़ उन पर असर अन्दाज़ हो रहा था। सुलतान की आवाज़ में रोज़ वाला जोश नही बल्कि लरज़ह सा था जो सब को डरा रहा था । उस ने कहा...... " मैं ये कहकर कि आप में भी गद्दार हैं माफी नहीं मांगुंगा। मैं आप को ये भी नहीं कहुंगा। कि कुरआन पर हलफ उठाओ कि आप इसलाम और सलतनतें इसलामिया के वफादार हैं। ईमान बेचने वाले क़ुरआन हाथ में लेकर भी वफ़ादारी का यक़ीन दिलाया करते हैं। मैं आप को सिर्फ़ यह बताना चाहता हूं कि हर वह इंसान जो मुसलमान नहीं वह आप का दुशमन है। दुशमन जब आप के साथ मोहब्बत और दोसती का इज़हार करता है तो उस में उस की दुशमनी छिपी होती है। वह आप को आप के भाईयों के ख़िलाफ़ और आप के मज़हब के ख़िलाफ़ इस्तेमाल करता है और जहां उसे मुसलमानों पर हुकूमत करने का मौक़ा मिलता है वह मुसलमान मसतूरात की इस्मत दरी और इस्लाम की बेख़कनी करता है। यही उस का मक़सद है। हम जो जंग लड़ रहे हैं यह हमारी ज़ाती जंग नहीं। यह ज़ाती हुकुमरानी क़ाएम करने के लिए किसी मुल्क पर क़ब्ज़े की कोशिश नहीं। यह दो अक़ीदों की जंग है। यह कुफ़ और इस्लाम की जंग है। यह जंग उस वक़्त तक लड़ी जाती रहेगी जब तक कुफ़ या इस्लाम ख़त्म नहीं होजाता।"

गुस्ताख़ी माफ़ सालारे आज़म! "एक सालार ने कहा– "अगर हमें साबित करना है कि हम ग़द्दार नहीं हैं तो हमें मिश्र के हालात से आगाह करें। हम अमल से साबित करें गे कि हक क्या हैं। अरसलान फ़ौज का नहीं इन्तज़ामिया का हाकिम था। आप को ग़द्दार इन्तज़ामी शोबों में मिलेंगे फ़ौज में नहीं। कर्क क़िले का मुहासरा आप ने उठाया है, हम ने नहीं। मोहतरम जंगी को आप ने बुलाया है हम ने नहीं, हमारा इम्तेहान मैदाने जंग में हो सकता है, पुर अम्न कूच में नहीं... मिश्र में क्या होरहा है।"

सलाहुद्दीन अय्यूबी ने अली बिन सुफ़यान की तरफ़ देखा और कहा0 "अली! इन्हें बताओ

वहां क्या होरहा है।"

अली बिन सुफ़यान ने कहा-- "ग़द्दारों ने दुशमन के साथ मिल कर सूडान के महाज़ के लिए रसद रोक ली है। मंडियों से ग़ल्ला ग़ायब कर दिया गया है। रसद अगर भेजी जाती है तो दानिस्ता ताख़ीर की जाती है। यूं भी हुआ कि रसद भेज कर दुशमन को इत्तला देदी गई। दुशमन ने रसद के क़ाफ़ले को रास्ते में रोक लिया। शहर में बदकारी आम होगई है। जुए बाज़ी के एसे दिलचस्प तरीक़े राईज होगए हैं जिन के हमारे लड़के आदी होते जारहे हैं। दीहाती इलाक़ों से फ़ौज को भरती नहीं मिलती और जानवर भी नहीं मिलते। फ़ौज में बे इतमीनानी पैदा होगई है। हमारे क़ौमी किरदार को तबाह करने के सामान पैदा करदिए गए हैं। इन्तज़ामिया के हुक्काम छोटी छोटी रियास्तों के हुकमरान बनने के ख़्वाब देख रहे हैं। उन्हें यह लालच सलीबियो ने दे रखे हैं। उन हाकिमों को बाहर से बेदरेग़ दौलत मिल रही है चूंकि सलतनत और इमारत का इन्तज़ाम इन्हीं लोगों के हाथ में है, इस लिए इन्हों ने ऐसी फ़िज़ा पैदा कर दी है जो दुशमन के लिए साज़गार है। सब से ज़्यादा ख़तरनाक सूरत यह पैदा होगई है कि देहाती इलाक़ों में अजीब व ग़रीब अक़ीदे फैल रहे है। लोग ग़ैर इस्लामी उसूलों के क़ाइल और पाबंद होते जारहे हैं। इस में ख़तरा यह है कि हमें फ़ौज उन्हीं इलाक़ों से मिलती है और हमारी मौजूदा फ़ौज इन्हीं इलाक़ों से आई है। बेबुनियाद और ग़ैर इस्लामी अक़ीदे फ़ौज में भी आ गए हैं।"

" क्या आप ने इस का तदारुक नही कया ?" हाज़रीन में से किसी ने पूछा।

" जी हां !" अली बिन सुफ़यान ने कहा......." मेरा तमाम तर शोबा मुजरिमों के सुराग़ लगाने और उन्हें पकड़ने में मसरुफ है। मै ने अपने जासूस और मुख़बिर देहाती इलाक़ों में भी फैला रखे हैं। मगर दुशमन की तख़रीब कारी इतनी ज़्यादा बढ़ गई है कि उस के आदमियों को पकड़ना बहुत मुशकिल हो गया है। मुशकिल ये है कि हमारे मुसलमान भाई दुशमन के जासूसों और तख़रीब कारों को पनाह और तहफ्फुज़ देते हैं। किया आप ये सुन कर हैरान नही होंगे कि देहाती इलाक़ों की बाज मस्जिदों के इमाम भी दुशमन की तख़रीब कारी में शामिल हो गए हैं।"

" ये तो नही हो सकता कि मैं इन्तेज़ामिया फौज के सुपूर्द कर दूं।"........ सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने कहा......" फ़ौज जिस मक़सद के लिय तय्यार की गई है। ये उसी की तकमील का फर्ज अदा करती रहे तो सलतनत के लिये भी बेहतर होता है और फ़ौज के लिये भी। जिस तरह एक कोतवाल सालार नहीं बन सकता उसी तरह कोई सालार कोतवाल के फराएज सर अन्जाम नहीं दे सकता। किया वाकई फ़राएज़ मे कोताही तो नही हो रही है ...... मेंरे रफीको! हमें खूदा ने तारीख़ की सब से ज़्यादा कड़ी आज़माईश में डाल दिया है। मिस्र के हालात आप ने सुन लिये हैं। सूड़ान का हमला नाकाम हो गया है। तक़ीयूद्दीन अपनी ग़लतीयों की बदोलत सूडान के सेहरा में फंस के रह गया है। उस की फ़ौज छोटी छोटी टोलियों मे बिखर गई है। उसकी पसपाई भी मुमकिन नज़र नही आती। मैं कह नही सकता कि मोहतरम ज़न्गी करक फ़तह कर लेंगें या नहीं, लेकी उसे भी अपनी नाकामी कह सकता हूं। आप इन्ते हाई मुशकिल

हालात में भी मैदाने जंग में दुशमन को शिकस्त दे सकते हैं। सेहराओं का सीना चीर सकते हैं मगर मुझे खतरा नज़र आ रहा है कि सलीबीयों के इस मुहाज़ पर आप हथयार डाल देगें।"

हाज़रीन में चन्द एक जोशीली और पुर अज़म आवाज़ें सुनाई दीं। सुलतान अय्यूबी ने कहा......." इस वक़्त जो फ़ौज मिस्र में है वह फ़ौज शोबक और करक के मुहाज़ से मिस्र गई थी। तो उस के कमान्दारों औ ओहदे दारों का जज़्बा बिलकुल एसा ही था। जैसा आज आप का है मगर क़ाहिरा पहुंच कर जब उन्होंने दुशमन के सब्ज़ बाग़ देखे तो बग़ावत के लिये तय्यार हो गए। अब उस फ़ौज की कैफ़ियत ये है कि आप इस पर भरोसा नहीं कर सकते।"

" हम एसे एक एक कमानदार और ओहदे दार को क़त्ल करके दम लेंगे।" एक सालार ने कहा।

" हम सब से पहले अपनी सफों को गद्दारों से पाक करेंगे।" एक और ने कहा।

" अगर मेरा बेटा सीलीबीयों का दोस्त निकला तो मैं अपनी तलवार से उस का सर काट कर आप के क़दमों में रख दुगां।" एक बूढे नाएब सालार ने कहा।

" मैं इस क़िसम की जोशीली और जज़बाती बातों का क़ाएल नहीं "...... सुलतान अय्यूबी ने कहा।

हाज़रीन का जोश ग़ज़ब नाक हो गया। ये वह लोग थे जो सुलतान अय्यूबी के सामने बात करने से डरा करते थे। मगर अब ये सुन कर कि उनकी फ़ौज की वह नफरी ज़ो मिस्र में है दुशमन की तख़रीब कारी का शिकार हो कर अपनी सलतनत के ख़िलाफ़ बग़ावज पर उतर आई है तो वह लोग आग बगोला हो गए। एक ने सुलतान अय्यूबी को यहां तक कह दिया......" आप हमें हमेशा से तहम्मुल से सोंचने और बुरदबारी से अमल करने की तलक़ीन करते हैं, मगर बाज़ हालात ऐसे होते हैं जिन्हें तहम्मुल और बुरदबारी और ज़्यादा बिगाड़ देती है। हमें इजाज़त दें कि क़ाहिरा तक हम एक भी पड़ाव न करें। हम आराम और खुराक़ के बग़ैर मुतवातिर सफ़र करेंगे। हम उस फ़ौज को निहत्ता करके क़ैद कर लेंगे।"

सलहुद्दीन अय्यूबी के लिये हुक्काम पर क़ाबू पाना मुहाल होगया। उस ने कुछ और बातें कह सुन कर मजलिस बरख़ास्त करदी। अलस सबह फ़ौज ने कूच किया। ये कूच तरत्तीब से हो रहा था। सुलतान अय्यूबी अपने अमले के साथ अलग थलग जा रहा था। उस ने देखा की अली बिन सुफ़यान उस के साथ नहीं था। शाम तक फ़ौज को दो मरतबा कुछ देर के लिये रोका गया। शाम गहरी होने के बाद भी फ़ौज चलती रही। रात का पहला पहर ख़त्म हो रहा था जब सुलतान अय्यूबी ने रात के क़ियाम के लिये फ़ौज को रोका। सुलतान अय्यूबी खाने से फ़ारिग़ हुआ तो अली बिन सुफ़यान आ गया।

" सारा दिन कहां रहे अली।" सुलतान अय्यूबी ने पूछा।

" गुज़शता रात मेरे दिल में एक शक पैदा हो गया था।"......... अली बिन सुफ़यान ने जवाब दिया......' उस की तसदीक या तरदीद के लिये सारा दिन फ़ौज में घूमता रहा।"

" कैसा शक?"

" आप ने रात देखा नहीं था कि तमाम सालार, कमान्दार और ओहदेदार किस तरह उस

फ़ौज के ख़िलाफ भड़क उठे थे जो मिस्र में है?" ..... अली बिन सुफ़यान ने कहा। ...." मुझे शक होने लगा था कि ये अपने अपने दस्तों को भी इसी तरह भड़काऐंगे। मेरा शक सही साबित हुआ। उन्हों ने तमाम तर फ़ौज को मिस्र की फ़ौज के मुतअल्लिक ऐसी बातें बताई हैं कि तमाम फ़ौज इन्तकामी जज़्बे से मुशतइल हो गए हैं। मै ने सिपाहियों को ये कहते सुना है कि हम मुहाजों पर ज़खमी और शहीद होते हैं और हमारे ही साथी काहिरा में ऐश करते और इसलामी परचम के ख़िलाफ अल्मे बग़ावत बुलन्द करना चाहते हैं हम जाते ही उन्हें ख़त्म करेंगे फिर सूडान में फंसी हूई फौज की मदद को पहुंचेगें। काबिले सद एहतराम अमीर! अगर हम ने कोई पेश बन्दी न की तो काहिरा में पहुंचते ही ख़ाना जंगी शुरूअ हो जाएगी। हमारी वह फ़ौज पहले ही बग़ावत के बहाने ढूंढ रही है।"

"मुझे इस पर ख़ुशी है कि मुसलसल मारको की थकी हुई इस फ़ौज में ये जज़्बा पैदा हो गया है।" सुलतान अय्यूबी ने कहा......... 'मगर दुशमन यही चाहता है कि हमारी फ़ौज दो हिस्सों में बट कर आपस में टकरा जाए।" वह गहरी सोंच में पड़ गया फिर कहने लगा। ...." जब हम काहिरा से काफी दूर होंगे तो मैं ज़िम्मे दार और ज़हीन क़ासिद भेज कर मिस्र वाली फ़ौज को किसी दूसरे रास्ते से करक की सिम्त कूच करने को हुक्म दे दुगां। शायद मैं खुद आगे चला जाऊं और उस फ़ौज को कूच करा दूं ताकि ये फ़ौज जो हमारे साथ है जब वहां पहुचें तो वहां उसे उस फ़ौज का कोई सिपाही नज़र न आए। तुम ने अच्छा किया है अली! मेरी तवज्जो उधर नही गई थी।

❖

वह पुर असरार ग़ैब दान जिस के मुतअल्लिक सरहद के देहाती इलाकों में मशहूर हो गया था कि असमान से आया है। खुदा का दीन लाया है और मरे हुए को जिन्दा करता है अपने मसाहिबो के काफ़ले के साथ सफर करता था। जिन्हों ने उसे देखा था वह कहते थे कि वह बूढ़ा नहीं। उस की दाढ़ी भूरे रगं की और चेहरे की रगंत गोरी बताई जाती थी। उस ने सर के बाल बढ़ा रखे थे। लोग बताते थे कि उ स की शरबती आंखों में पूरे चांद जैसी चमक है और उस के दांत सितारों की तरह सुफैद और शफ्फाफ हैं। उस का कद ऊंचा और जिस्म गठा हुआ बताया जाता था और वह बोलता था तो सुन्ने वाले मसहूर हो जाते थे। उस के साथ बहुत से मसाहिब और बहुत से ऊंट थे। सामान वाले ऊंट अलग थे जिन में से बाज़ पर बहुत बड़े बड़े मटके लदे होते थे। उस का काफ़ला आबादी से दूर रुकता और वह वहीं लोगों से मिलता था। किसी आबादी में नहीं जाता था। वह एक जगह से कूच करता तो उस के आगे आगे कुछ लोग ऊंट और घोड़े भगा देते और रास्ते में आने वाले गावं और बसतियों में ख़बर कर देते थे कि वह आ रहा है ये लोग हर किसी को उस की करामात और रूहानी लज्ज़तों के करिशमें सुनाते थे। लोग कई कई दिन उस के लिये रास्ते में बैठे रहते थे।

जिस रात अली बिन सूफ़यान सलाहुद्दीन अय्यूबी को बता रहा था कि मुहाज़ से काहरा को जाने वाली फौज मिस्र में मुक़ीम फ़ौज के ख़िलाफ़ मुशतइल होगई है, उस रात वह ग़ैब दान काहरा से बहुत दूर एक नख़लिसतान में ख़ीमा ज़न हुआ। उस का एक उसूल ये था कि

चान्दनी रातो मे किसी से नहीं मिलता था दिन के दौरान किसी के साथ बात नहीं करता था। अन्धेरी रातें उसे पसन्द थीं। उस की महफिल एसी कन्दीलों से रौशन होती थी जिन में से हर एक का रंग दूसरी से मुख़्तलिफ़ था। उन रोशनियों का भी एक तास्सुर था जो हाज़रीने महफिल के लिये तिलसमाती था। वह जहां ख़ीमे ज़न हुआ था उस से कुछ दूर एक बसती थी जिस में ज़्यादा तर मुसलमान और कुछ सूडानी हबशी रहते थे। उस बसती में ऐक मस्जिद भी थी जिसका इमाम एक ख़ामूश तबीअत इनसान था। एक जवां साल आदमी कोई डेढ़ दो महीनों से उस के पास दीनी तालीम हासिल करने आया करता था। ये आदमी जो अपना नाम महमूद बिन अहमद बताता था किसी दूसरी बसती से मस्जिद में जाया करता था। उस की दिलचसपी इमामे मस्जिद और उस के इल्म के साथ थी मगर उस की एक दिलचस्पी और भी थी। ये एक जवान लड़की थी जिस नें अपना नाम सादिया बताया था। सादिया को महमूद इतना अच्छा लगा कि वह उसे कई बार अपनी बकरीयों का दूध पिला चूकी थी।

उन की पहली मुलाकात बसती से दूर एक एसी जगह हुई थी जहां सादिया अपनी चार बकरियां और दो ऊंट चराने और उन्हें पानी पिलाने के लिये ले गई थी। महमूद वहा पानी पीने के लिये रुका था। सादिया ने उस से पूछा था। कि वह कहां से आया है और कहां जा रहा है। महमूद ने कहा था कि न कहीं से आ रहा हूं और न ही कहीं जा रहा हूँ। सादिया सादगी से हंस पड़ी थी। जवाब ही कुछ एसा था। सादिया ने महमूद से कुदरती सा सवाल पूछा..... "मुसलिम? सूडानी?" .... महमूद ने जब जवाब दिया कि वह मुसलमान है तो सादिया के होंटों पर मुसकुराहट आ गई थी। महमूद ने उसे अपना सही ठिकाना नही बताया था। उस के साथ कुछ एसी बातें कीं जो सादिया को अच्छी लगीं थीं। सादिया उस से सूडान की जंग के मुतअल्लिक पूछने लगी। उस के अन्दाज़ से पता चलता था कि उसे इसलामी फ़ौज के साथ दिलचसपी है। उस ने जब सलाहुद्दीन अय्यूबी के मुतअल्लिक पूछा तो महमूद ने उस की एसी तारीफ की जैसे सुलतान अय्यूबी इन्सान नहीं ख़ुदा का उतारा हुआ फरिशता है। सादिया ने पूछा............" किया सलाहुद्दीन अय्यूबी उस से ज़्यदा मुकद्दस और बरगुज़ीदा है जो आसमान से उतरा है और मरे हुओं को जिन्दा कर देता है?"

"सलाहुद्दीन अय्यूबी मरे हुओं को जिन्दा नहीं कर सकता।" महमूद ने जवाब दिया।

"हम ने सुना है कि जो लोग ज़िन्दा होते हैं उन्हें सलाहुद्दीन अय्यूबी मार डालता है।" सादिया ने शक्की लहजे में कहा।.........."लोग ये भी बताते हैं कि वह मुसलमान है और हमारी तरह कलमा और नमाज़ पढ़ता है?"

"तुम्हें किसने बताया है कि वह लोगों को मार डालता है?"

"हमारे गावं में से मुसाफिर गूज़रते रहतें हैं, वह बता जाते हैं कि सलाहुद्दीन अय्यूबी बहुत बुरा आदमी है।" सादिया ने कहा।

"तुम्हारी मस्जिद का इमाम क्या बताता है?" महमूद ने पूछा।

"वह बहुत अच्छी बातें बताता है।" ...... सादिया ने कहा। ...." वह सब को कहता है कि सलाहुद्दीन अय्यूबी इसलाम की रोशनी सारे मिस्र और सूडान में फैलाने आया है और

इसलाम ही खुदा का सच्चा दीम है।"

महमूद उस के साथ उसी मोजू पर बातें करता रहा था। सादिया से उसे पता चला कि उस के गावं में एसे आदमी आते रहते हैं जो अपने आप को मुसलमान बताते हैं मगर बातें एसी करते हैं कि कई लोगों के दिलों में इसलाम के ख़िलाफ़ शुकूक पैदा हो गए हैं। महमूद ने सादिया के शुकूक रफ़ा कर दिये और अपनी ज़ात, मीठी ज़बान और शख़सीयत का उस पर एसा असर पैदा किया कि सादिया ने बेताबी से कहा कि वह अकसर यहां बकरीयां चराने आया करती है और महमूद जब कभी इधर से गुज़रे उसे ज़रूर मिले। महमूद उसे जज़बात और हकाएक के दरमियान भटकता हुआ छोड़ कर उसके गावं की तरफ़ चला गया। सादिया ये सोंचती रह गई कि वह कौन है? कहां से आया और कहां जा रहा है? उस का लिबास उसी इलाका का था मगर उस की शकल व सूरत और उसकी बातें बताती थीं। कि वह इस इलाके का रहने वाला नहीं .... सादिया के शुकूक सही थे। महमूद देहाती इलाके का रहने वाल नहीं था। सिकन्दरया शहर का बाशिन्दा था और वह अली बिन सुफ़ियान की दाख़ली जासूसी (एंटली जिंस)का एक ज़हीन कारकुन था। वह कई महीनों से अपनी फ़र्ज की अदाएगी के लिये सरहदी देहात में घूम फिर रहा था। उस ने खाने पीने और रहने का इन्तेज़ाम खुफया रखा हुआ था। उस के साथ चन्द और जासूस भी थे जो इस इलाके में फैले हुए थे। वह कभी कभी इकट्ठे होते और उन के जो मुशाहिदात होते थे वह अपने किसी एक साथी के सुपुर्द करके उसे काहिरा भेज देते थे। इस तरह अली बिन सुफ़यान के शोबे को पता चलता रहता था कि सरहदी इलाके में कया हो रहा है।

महमूद बिन अहमद को सादिया मिल गई तो उस ने उस लड़की के साथ भी एसी बातें कीं जिन से उसे गावं और गिरदो पैश के इलाके के लोगों के ख़ियालात का इल्म हो सकता था। उस ने सादिया के गावं की मस्जिद के इमाम के मुतअल्लिक खास तौर पर पूछा था। वजह ये थी कि दो गावं में उस ने ऐसे इमाम मस्जिद देखे थे जो मशकूक से लगते थे। वहां के लोगों से उसे पता चला कि ये दोनों इमाम नए नए आए हैं। उस से पहले मस्जिदों में इमाम थे ही नहीं। दोनों जिहाद के ख़िलाफ़ वाज़ सुनाते और कुरआन की आयात पढ़कर गलत तफसीरें बियान करते थे। और ये दोनों पुर असरार ग़ैब दान को बर हक बताते और लोगों में उसकी ज़ियारत का इशतियाक पैदा करते थे। महमूद और उस के दो साथियों ने उन दोनों इमामों के मुतअल्लिक पूरी रीपोर्ट काहिरा भेज दी थी औरअब वह सादिया के गावं जा रहा था। उसे ये सुन कर वहुत खुशी हुई थी कि उस गावं का इमाम सुलतान अय्यूबी का मुरीद इसलाम का अलमबरदार है। उस ने उसी मस्जिद को अपना ठिकाना बनाने का फ़ैसला किया।

❖

वह मस्जिद में गया और इमाम से मिला। अपना झूटा तआरुफ कराके उस ने कहा कि वह मज़हबी इल्म की तलाश मे मारा मारा फिर रहा है। इमाम ने उसे तालीम देने का वादा किया और उसे मस्जिद में ही रहने की पेश कश की। महमूद मस्जिद में कैद नही होना

चाहता था। उस ने इमाम से कहा कि वह दो तीन रोज़ बाद अपने घर जाया करेगा। उस ने इमाम को भी अपना नाम नहीं बताया था। इमाम नेउस से नाम पूछा तो उस ने कुछ और नाम बतादिया। इमाम ने पूछा कि वह कहां का रहने वाला है तो उस ने दूर किसी सरहदी गांव का नाम बताया। इमाम मुसकुरा दिया और आहिस्ता से बोला .... " महमूद बिन अहमद ! मुझे खुशी हुई कि तूम अपने फराएज़ से बे ख़बर नहीं। सिकन्दरया के मुसलमान फ़र्ज़ के पक्के होते हैं।"

महमूद एसा चोंका जैसे बिदक उठा हो। वह समझा कि ये इमाम सलीबी का जासूस है लेकिन इमाम ने उसे ज़्यादा देर तक शक में न रहने दिया और कहा........."मैं महसूस करता हूँ कि मुझे कम अज़ कम तुम्हारे सामने अपने आप को बेनकाब कर देना चाहिये। मै तुम्हारे ही मोहकमे का आदमी हूँ। मैं तुम्हारे तमाम साथयों को जो इस इलाके मे हैं जान्ता हूँ। मुझे तुम में से कोई भी नही जानता। मैं मोहतरम अली बिन सुफयान के उस अमले का आदमी हूँ जो दुशमन पर नज़र रखने के साथ साथ अपने जासूसो पर भी नज़र रखता है। मैं इमाम बन कर जासूसी का काम कर रहा हूँ।"

" फिर मैं आप को दानिशमन्द आदमी नही कहुंगा।" महमूद बिन अहमद ने कहा ...." आप ने जिस तरह मेरे सामने अपने आप को बेनकाब किया है। इस तरह आप किसी दुशमन के जासूस के सामने भी बेनकाब हो सकते हैं।"

" मुझे यकीन था कि तुम मेरे आदमी हो।" इमाम ने कहा......... " ज़रूरत एसी आ पड़ी है कि तुम्हें अपना असली रूप बताना ज़रूरी समझा। मेरे साथ दो मुहाफिज़ हैं जो यहां बाशिन्दों के बहरूप में गावं में मौजूद रहतें हैं। मुझे ज़्यादा आदमियों की ज़रूरत है। अच्छा हुआ कि तुम आगए। इस गावं में दुशमन के तखरीब कार आरहें हैं। तुम ने उस आदमी के बारे में सुना होगा जिस के मुतअल्लिक मशहूर हो गया है कि वह मुसतकबिल की अन्धेरे की ख़बर देता और मरे हुओं को जिन्दा करता है। ये गावं भी उस की अन देखी करामात की ज़द में आगया है। मैं ने गावं वालों को शुरूअ में बताया था कि ये सब झूट है और लाशों में कोई इनसान जान नही डाल सकता, मगर उसकी शोहरत का जादू इतना सख़्त है कि लोग मेरे ख़िलाफ़ होने लगे हैं। मैं संभल गया क्योंकि मैं इस मस्जिद से निकलना नही चाहता। मुझे एक अड्डे और ठिकाने की ज़रूरत है। यहां के गुमराह किये हुए लोगों को इसलाम का सीधा रास्ता भी दिखाना है। पन्द्रह बीस रोज़ गुज़रे रात को दो आदमी मेरे पास आए। मैं अकेला था। उन दोनो के चेहरे पर नकाब थे। उन्होंने मुझे धमकी दी कि मैं यहां से चला जाऊं। मैंने उन्हें कहा कि मेरा और कोई ठिकाना नहीं। उन्हों ने कहा कि अगर यहां रहना चाहते हो तो दरस बन्द कर दो और उसकी बातें करो जो आसमान से आया है और खुदा का सच्चा मज़हब लाया है। मैं दोनो का मुकाबला कर सकता था। मैंने अक़्ल से काम लिया और उन्हें ये तास्सुर दिया कि आज से वह मुझे अपना आदमी समझें। उन्होंने कहा कि अगर वह उनकी बातों पर अमल करेगा तो उसे एक इनाम ये मिलेगा कि उसे कत्ल नहीं किया जाएगा और दूसरा ये कि उसे अशरफियां दी जाएगी।"

" फिर आप ने अपने वाज़ और खुतबे का रंग बदल दिया है ?" महमूद ने पूछा।

" किसी हद तक ।" इमाम ने जवाब दिया।......" मैं अब दोनों किसम की बातें कर ता हूँ। मुझे अशरफियों की नहीं, अपनी जान की ज़रूरत है। मैं अपना फर्ज पूरा किये बगैर मरना नही चाहता। मैं गावं से बाहर जाकर तुम्हें या तुम्हारे दुसरे साथी को ढूंढ़ना भी नहीं चाहता क्यों कि उस की जान भी खतरे में पड़ जाती। खुदा ने खुद ही तुम्हें मेरे पास भेज दिया है। मेरे मुहाफिज़ उस रात मेरे पास नहीं थे। अब तुम ही मेरे साथ रहो। तुम मेरे शागिर्द की हैसियत से मेरे पास रहोगे तुम सीधी सादी गंवारों की सी बातें किया करना। गावं में चार पाचं आदमी ऐसे हैं जो हमारा साथ दे सकते हैं। अगर हमें करीब कोई सरहदी दसता मिल जाए तो हमारा मकसद पूरा हो सकता है मगर हमारे सरहदी दसतों के किसी कमान्दार पर भरोसा करना बड़ा खतरनाक है। दुशमन ने उसे अशरफियों और औरतों से उन्हें अपने साथ मिला लिया है। वह तनखाह हमारे खज़ाने से लेते और काम दुशमन का करते हैं।"

महमूद बिन अहमद उस के पास रुक गया। उसी रोज़ इमाम ने उसे अपने दोनों मुहाफ़िजों से मिलादिया।

शाम को जब सादिया मस्जिद में इमाम के लिये खाना ले कर आई तो महमूद को देखकर ठिठक गई और मुसकुराई। महमूद ने पूछा.......... " मेरे लिये खाना नही लाओगी ?" सादिया इमाम के कमरे में खाना रख कर दौड़ी गई और रोटी के साथ एक पियाले में बकरियों का दूध भी ले आई। वह चली गई तो इमाम ने महमूद से कहा......" ये इस इलाके की सब से ज़्यादा खूबसूरत लड़की है। ज़हीन भी है और कम उमर भी। इसका सौदा हो रहा है।"

" सौदा या शादी ?"

"सौदा।".......... इमाम ने कहा........" तुम जानते हो कि इन लोगों की शादी दर असल सौदा होता है मगर सादिया का सीधा सौदा हो रहा है। हमें इस के मुतअल्लिक परीशान नहीं होना चाहिये था लेकिन ख़रीदार मशकूक लोग हैं। वह यहां के रहने वाले नहीं। ये वही लोग मालूम देते हैं जो लोग मुझे धमकी दे गये हैं। तुम अच्छी तरह समझ सकते हो कि वह इस लड़की को अपने रंग में रंग कर हमारे ख़िलाफ़ इसतेमाल करेंगें इस लिये इसे बचाना ज़रूरी है और इस लिये भी बचाना ज़रूरी है कि ये लड़की मुसलमान है। हमें सलतनत के साथ साथ सलतनत की बच्चियों की इसमत की हिफाज़त भी करनी है। मुझे उम्मीद है कि ये सौदा नही हो सकेगा। सादिया के बाप को मैं अपना मुरीद बना रखा हूं लेकिन वह ग़रीब और तन्हा आदमी है और रस्म व रिवाज से भाग भी नहीं सकता। बहर हाल सलतनत और सादिया के मुहाफिज़हमारे सिवा और कोई नहीं।"

इस के बाद महमूद इमाम का शागिर्द बन गया। दिन गुज़रने लगे और उस की मुलाकातें सादिया के साथ होने लगीं। लड़की चरागाह में चली जाती और महमूद वहां पहुंच जाता था। उन की बेतकल्लुफ़ी बढ़ गई तो महमूद ने सादिया से पूछा कि कौन लोग हैं जो उसे ख़रीदना चाहते हैं। सादिया उन्हें नहीं जानती थी। उस के लिए वह अजनबी थे। उन्हों ने उसे इस तरह आकर देखा था जिस तरह गाए भेंस को ख़रीदने से पहले देखा जाता है। सादिया को अछी

तरह मालूम था कि वह किसी की बीवी नहीं बनेगी। उसे अरब का कोई दौलत मंद ताजिर या कोई अमीर या वज़ीर अपने हरम में रख कर कैद करेगा जहां वह अपना घर बसाए बग़ैर बूढ़ी हो कर मर जाए गी। या उसे नाचना सिखा कर तफ़रीह की चीज़ बना लिया जाए गा। उस ने अपने गांव के फौजियों से एसी लड़कियों के बहुत किस्से सुने थे। वह इतने पसमांदा इलाके में रहते हुए भी ज़हीन थी और अपना बुरा भला सोंच सकती थी। उस ने महमूद को देखा तो उसे दिल में बिठा लिया और उस ने जब यह देखा कि महमूद उसे चाहने लगा है तो उस ने दिल में यह पुख़्ता इरादा कर लिया कि वह फ़रोख़्त नहीं होगी। वह जानती थी कि ख़रीदारों से बचना उस के लिए मुहाल नहीं। ऐक रोज़ उस ने महमूद से पूछा– "तुम मुझे ख़रीद नहीं सकते?"

"ख़रीद सकता हूं।" महमूद ने कहा– "लेकिन जो कीमत दूंगा वह तुम्हारे बाप को मंजूर नहीं होगी।"

"कितनी कीमत दोगे?"

"मेरे पास देने के लिए अपने दिल के सिवा कुछ भी नहीं।" महमूद बिन अहमद ने जवाब दिया– "मालूम नहीं तुम दिल की क़ीमत जानती हो या नहीं।"

"अगर तुम्हारे दिल में मेरी मोहब्बत है तो मेरे लिए यह कीमत बहुत ज़्यादा है।" सादिया ने कहा– "तुम ठीक कहते हो कि मेरे बाप को यह कीमत मंजूर नहीं होगी लेकिन मैं तुम्हें यह बतादूं कि मेरा बाप मुझे बेचना भी नहीं चाहता। उस की मजबूरी यह है कि ग़रीब है और अकेला है। मेरा कोई भाई नहीं है। मेरे ख़रीदारों ने मेरे बाप को धम्की दी है, कि उस ने उन की कीमत कुबूल न की तो वह मुझे इग़वा कर लेंगे।"

"तुम्हारा बाप इतनी ज़्यादा कीमत क्यों कुबूल नहीं करता?" महमूद ने पूछा। "लड़कियों के बेचने का तो यहां रिवाज है।"

"बाप कहता है वह लोग मुसलमान नहीं लगते।" सादिया ने कहा– "मैं ने भी बाप से कह दिया है कि मैं किसी ग़ैर मुस्लिम के पास नहीं जाऊंगी।" उस ने बेताब होकर कहा। "तुम अगर मुझे अपने साथ लेजाने के लिए तैयार हो तो मैं अभी तुम्हारे साथ चल पडूंगी।"

"मैं तैयार हूं।" महमूद ने कहा।

"तो चलो।" सादिया ने कहा। "आज ही रात चलो।"

"नहीं।" महमूद के मुंह से निकल गया। "मैं अपना फ़र्ज़ पूरा किए बग़ैर कहीं भी नहीं जासकता।"

"कैसा फ़र्ज़ सादिया ने पूछा।

महमूद बिन अहमद चौंका। वह सादिया को नहीं बता सकता था कि उस का फ़र्ज़ क्या है। उसने मुंह से निकली हुई बात पर पर्दा डालने की कोशिश की मगर सादिया उस के पीछे पड़गई। महमूद को अचानक याद आगया। उस ने कहा– "मैं इमाम से मज़हबी तालीम लेने आया हूं। उस की तकमील के बग़ैर मैं कहीं नहीं जाऊंगा।"

"उस वक़्त तक मुझे मालूम नहीं कहां पहुंचा दिया जाएगा।" सादिया ने कहा।

महमूद फ़र्ज़ को एक लड़की पर क़ुर्बान करने पर आमादा ना हो सका। उस के दिल में यह शक भी पैदा हुआ कि यह लड़की दुशमन की जासूस भी होसकती है जिसे उसे बेकार करने के लिए इस्तेमाल किया जारहा है। लेहाज़ा उस ने सादिया के मुतअल्लिक़ छान बीन करना ज़रूरी समझा।

❖

सलाहुद्दीन अय्यूबी की फ़ौज क़ाहेरा से आठ दस मील दूर थी। उसे बता दिया गया था कि फ़ौज मुश्तअइल है और मिश्र की फ़ौज पर टूट पड़ेगी। सुलतान अय्यूबी ने वहां पड़ाव का हुक्म देदिया और सिपाहियों में घूमने फिरने लगा। वह खुद सिपाहियों के जज़्बात का जाएज़ा लेना चाहता था। वह एक सवार के पास जारुका तो कई सवार और प्यादा उस के गिर्द जमा होगए। उस ने उन के साथ ग़ैर ज़रूरी सी बातें कीं तो एक सवार बोल पड़ा। उस ने पूछा– "गुसताख़ी माफ़ सालारे आज़म! यहां पड़ाव की ज़रूरत नहीं थी। हम शाम तक क़ाहेरा पहुंच सकते थे।"

"तुम लोग लड़ते हुए आए हो।" सुलतान अय्यूबी ने कहा– "मैं तुम्हें इस खुले सेहरा में आराम देना चाहता हूं।"

"हम लड़ते आए हैं और लड़ने जारहे हैं।" सवारा ने कहा।

"ल ड़ने जारहे हैं" सुलतान अय्यूबी ने अनजान बनते हुए पूछा। "मैं तो तुम्हें क़ाहेरा ले जारहा हूं जहां तुम अपने दोस्तों से मिलोगे।"

"वह हमारे दुशमन हैं।" सवार ने कहा। "अगर यह सच है कि हमारे दोस्त बग़ावत करने पर तुले हुए हैं तो वह हमारे दुशमन हैं।"

"सलीबियों से बदतरीन दुशमन।" एक और सिपाही ने कहा।

"क्या यह सच नहीं सालरे आज़म कि क़ाहेरा में ग़द्दारी और बग़ावत हो रही है?" किसी और ने पूछा।

"कुछ गड़ बड़ सुनी है।" सुलतान अय्यूबी ने कहा। "मैं मुजरिमों को सज़ा दूंगा।"

"आप पूरी फ़ौज को क्या सज़ा देंगे?" एक सवार ने कहा। "सज़ा हम देंगे। हमें कमानदारों ने क़ाहेरा के सारे हालात बता दिए हैं। हमारे साथी शूबक और कर्क में शहीद हुए है। दोनो शहरों के अन्दर हमारी बेटियों औ बहनों की इस्मत दरी हुई है। और कर्क में अभी तक हो रही है। हमारे साथी क़िले की दीवारों से दुशमन की फेंकी हुई आग में ज़िंदा जल गए हैं। क़िबलाए अव्वल पर काफ़िरों का कबज़ा है। और हमारी फ़ौज क़ाहेरा में बैठी ऐश कर रही है। आप के ख़िलाफ़ बग़ावत की तैयारी कर रही है। जिन्हें शहीदों का पास नहीं, अपनी बेटियों की इस्मतों का ख़याल नहीं उन्हें ज़िंदा रहने का हक़ नहीं। हम जानते हैं वह इस्लाम के दुशमन के दोस्त बन गए हैं। हम जब तक ग़द्दारों की गरदनें अपने हाथों नहीं काटेंगे, हमें शहीदों की रूहें माफ़ नहीं करेंगी। ज़रा उन ज़ख़्मियों को देखए जिन्हें हम अपने साथ ला रहे हैं। किसी की टांग नहीं किसी का बाज़ू नहीं। क्या यह इसी लिए सारी उम्र के लिए अपाहिज हो गए हैं कि हमारे साथी और हमारे दोस्त दुशमन के हाथ में खेलें?"

"हम उन्हें अपने हाथों सज़ा देंगे।" और फिर शोर बपा होगया कि सारी फौज वहां जमा होगई। सलाहुद्दीन अय्यूबी के लिए इस जोशो व ख़रोश पर काबू पाना मुश्किल होगया। वह सिपाहियों के जोश और जज़बे को सर्द करके उन का दिल भी नहीं तोड़ना चाहता था। उस ने उन्हें सब्र व तहम्मुल की तलकीन की। कोई हुक्म न दिया। अपने ख़ेमें में गया। मुशीरों और नाएबीन को बुला कर कहा कि यह फौज अगले हुकम तक यहीं पड़ाव करेगी। उस ने कहा– "मैं ने देख लिया है कि ख़ाना जंगी होगी। फ़ौज का आपस में टकरा जाना दुशमन के लिए फ़ाएदे मंद होता है। मैं आज रात काहेरा जारहा हूं। किसी को मालूम ना होसके कि मैं यहां नहीं हूं। सिपाहियों के जोश को सर्द करने की भी कोशिश न की जाए।"

उस ने ज़रूरी एहकाम और हिदायात दे कर कहा। " हमारी काहिरा वाली जो फ़ौज बग़ावत पर आमादा है मेरी नज़र में बेगुनाह है और हमारी कौम के वह नौजवान जो जूए और ज़ेहनी अय्याशी के आदी होते जा रहे हैं वह भी बे गुनाह हैं। फौज को हमारे आला हुक्काम ने गलत बातें बता कर भड़काया है। इन्हीं हुक्काम के इमा पर दुशमन ने हमारे मुल्क के सब से बड़े शहर में ज़ेहनी अय्याशी के सामान फैलाए हैं। इस अख़लाकी तबाह कारी को फरोग़ सिर्फ इस लिये हासिल हुआ है कि हमारे इन्तेज़ामिया के वह हुक्काम जिन्हें इस तख़रीब कारी को रोकना था वह उसे फैलाने में शरीक हैं। दुशमन उन्हें उजरत दे रहा है जब किसी कौम के सरबराह और उमरा दुशमन के हाथों में खेलने लगते हैं उस कौम का यही हशर होता है। हमारी फ़ौज सूडान के ज़ालिम सेहरा में बिखरी हुई लड़ रही है, कट रही है, सिपाही भूके और पियासे मर रहे हैं और हमारे हाकिम उस की कमक रसद और हथयार रोके बैठे हैं। किया ये दुशमन की साज़िश नही जिसे हमारे अपने भाई कामयाब कर रहे हैं ? इस से दुशमन एक फाइदा ये उठा रहा है कि तकीयुद्दीन और उस के वह असकरी जो जज़्बा जिहाद से लड़ रहे हैं और मर रहे हैं और नौबत हथयार डालने तक आ गई है और दुसरा फाइदा ये के हमारी कौम को बताया जाएगा कि ये देखो तुम्हारी फ़ौज शिकस्त खा गई है कियोंकि ये इसी काबिल थी। हमारे बाज़ भाई मिस्र की इमारत पर काबिज़ होने के ख़वाब देख रहें हैं। वह सब से पहले फ़ौज को कौम की नज़रों में रुसवा और ज़लील करना चाहते हैं ताकि वह मन मानी कर सकें। मुझे इमारत के साथ चिपके रहने की कोई ख़्वाहिश नहीं। अगर मेरे मुख़ालेफीन में से कोई मुझे ये यकीन दिला दे कि वह मेरे अज़्म को पाया तकमील तक पहुंचाएगा तो मैं उस की फ़ौज में सीपाही बन कर रहुंगा मगर एसा कौन है? ये लोग अपनी बाकी ज़िन्दगी बादशाह बन कर गुज़ारना चाहते हैं ख्वाह दुशमन के साथ साज़ बाज़ करके बादशाही मिले और मैं अपनी ज़िन्दगी में कौम को उस मुकाम पर लाना चाहता हूँ जहां वह अपने दीन के दुशमनों के सर पर पावं रख कर बादशाही करे। हमारे इन लालची और ग़द्दार हाकिमों की नज़र अपने हाल पर है, मेरी नज़र कौम के मुसतकबिल पर है।"

उस ने बोलते बोलते तवक्कुफ किया और कहा ...." मेरा घोड़ा फ़ौरन तैयार करो"..... .... उस ने उन अफ़राद के नाम लिये जिन्हें उस के साथ जाना था। उस ने कहा......." निहायत ख़ामूशी से उन सब को बुलाओ और उन्हें काहिरा चलने के लिये कहो। मेरा ख़ीमा

यहीं लगा रहने दो ताकि किसी को शक न हो कि मैं यहां नहीं हूँ"...... उस ने गहरा सांस लिया और कहा......... " मैं आप को सख़्ती से ज़ेहन नशीन कराता हूँ कि जो फ़ौज बग़ावत के लिये तैयार है मैं उस के ख़िलाफ कोई कारवाई नहीं करुंगा। तुम में से कोई भी उस फ़ौज के ख़िलाफ़ कदूरत न रखे। इसी तरह अपने नौजवानों को भी काबिले नफ़रत न समझना। मैं उन के ख़िलाफ़ कारवाई करूंगा जो फौज और कौम को गुमराह और ज़लील करने के ज़िम्मेदार हैं। यही फ़ौज जब अपने दुशमन के सामने आएगी और दूशमन उस का तीरों से इसतकबाल करेगा तो फौज को याद आजाएगा कि वह अल्लाह की फ़ौज है। दिमाग़ से बग़ावत के कीड़े निकल जाएंगें। आप जब अपने बच्चों को अपने दीन का दुशमन दिखाऐंगें तो उन का ज़ेहन अज़ खुद जूऐ से हटकर जिहाद की तरफ़ जाएगा। मैं आप को साफ़ अलफाज़ में बता देता हूँ कि इसलाम और सलतनते इसलामिया कि बक़ा और वक़ार फ़ौज के बेग़ैर मुमकिन नहीं। मै सलीबीयों और यहूदीयों के अज़ाएम और उनके तरज़े जंग औ उनके ज़मीन दूज़ कारवाईयों को देख कर कह सकता हूँ कि वह इसलाम की फ़ौज को कमज़ोर करके इसलाम का ख़त्मा करेगें जिस रोज़ और जिस दौर में किसी भी मुसलमान मुल्क की फ़ौजा कमजो़र हो गई वह मुल्क अपनी आज़ादी और अपना बक़ार खो बैठेगा। किसी भी दौर में कोई मुसलमान ममलिकत मज़बूत और बावकार फ़ौज के बग़ैर ज़िन्दा नहीं रह सकेगी। हमारा आज का ग़लत इक़दाम इसलाम के मुसतकबिल को तारीक करदेगा। मैं नहीं कह सकता कि आने वाली नसलें हमारी लग़ज़ीशों, नाकामियों और कामयाबियों से फाईदा उठाएंगी या नहीं।"

"अमीरे मिस्र !"......... एक मुशीर ने कहा......" अगर हमारे भाई ग़द्दारी के फन में ही महारत हासिल करते रहे तो आने वाली नसलें गुलाम होंगी। उन्हें मालूम नहीं होगा कि आज़ादी किसे कहते हैं और कौमी वक़ार किया है। किया हमारे पास इस का कोई ईलाज है?"

" कौम का ज़ेहन बेदार करो"......... सुलतान अय्यूबी ने कहा........" कौम को रिआया न कहो। कौम का हर फ़र्द अपनी जगह बादशाह होता है। किसी भी फर्द को कौमी वक़ार से महरूम न करो। हमारे उमारा और हकिमो में चूंकि बादशाह और ख़लीफ़ा बन्ने का जुनून सवार है इस लिये वह कौम को रिआया बनाकर उसके अपने इक़तेदार के इसतेहकाम के लिये इस्तेमाल करना चाहते हैं। याद रखो, कौम जिसमों का मजमुआ नहीं जिसे तुम मवेशियों की तरह हांकते फिरो। कौम मे दिमाग़ भी है, रूह भी है और कौमी वक़ार भी हैं कौम की उन ख़ूबियों को उभारो ताकि कौम खुद सोंचे कि अच्छा किया और बुरा किया है। अच्छा कौन और बुरा कौन है। अगर कौम महसूस करे कि सलाहुद्दीन अय्यूबी से बेहतर अमीर मौजूद है जो सलतनते इसलामिया को तहफ्फुज़ के साथ उसे समुन्दरों से पार भी वुसअत दे सकता है तो कौम का कोई भी फर्द मुझे रासते में रोक ले और जुरअत से कहे कि सलाहुद्दीन अय्यूबी तुम ये मसनद ख़ाली कर दो। हम ने तुम से बेहतर आदमी ढूंढ लिया है। कौम में ये सोंच भी हो और जुरअत भी और मुझ में फिरओनियत न हो कि अपने ख़िलाफ़ बात करने वाले की

गरदन मारदूँ। मुझे खतरा नज़र आ रहा हैकि मिल्लते इसलामिया एसे ही फ़िरऔनों की नज़र हो जाएगी। कौम को रिआया और मुवेशी बना दिया जाएगा और फ़िर मुसलमान मुसलमान नही रहेंगें या बराए नाम मुसलमान होगें। मज़हब तो शायद उन का यही रहे गा मगर तहज़ीब व तमद्दुन सलीबीयों का होगा।"

इतने में एक मुहाफिज़ ने अन्दर आकर बताया कि घोड़ा तैयार है और जिन तीन चार नाएब सालारों को बुलाया गया था वह भी आ गए हैं। सुलतान अय्युबी ने अपने साथ चार मुहाफिज़ लिये। बाकी मुहाफिज़ दसते से कहा कि वह इस के ख़ाली खीमें पर पहरा देते रहें और किसी को पता न चलने दें कि वह यहां नहीं है। उस ने अपने साथ जाने वाले अमले से कहा कि वह ख़ामूशी से फलां जगह पहुंच जाऐं वह उन से आगे आ मिलेगा। उस ने अपना काएम मुकाम मुकर्रर किया और बाहर निकल गया।

❖

सेहरा तारीक था। चौदह घोड़े सरपट दौड़े जा रहे थे। सलाहुद्दीन अय्यूबी तारीकी छटने से पहले काहरा पहुंच जाना चाहता था। अली बिन सुफ़यान को उस ने अपने साथ रखा था। उस की फौज पड़ाव में गहरी नीन्द सो गई थी। जागने वाले सन्तरीयों को भी इल्म नही हो सका था कि उनका सलारे आला निकल गया है। काहरा वालों के तो वहम व गुमान में भी नहीं आ सकता था कि सुलतान अय्यूबी मिस्र में दाख़िल हो चूका है........ रात का पहला पहर था जब सुलतान अय्यूबी का काफ़ला काहरा में दाख़िल हुआ। उसे किसी सन्तरी ने न रोका। वहां कोई सनतरी था ही नहीं। सुलतान अय्यूबी ने अपने साथियों से कहा। ...." ये है बग़ावत की इबतेदा। शहर में कोई सनतरी नहीं। फ़ौज सोई हूई है। बेपरवाह, बे नियाज़ हालांकि हम दो मुहाज़ों पर लड़ रहे हैं और दुशमन के हमले का ख़तरा हर लमहा मौजूद है।"

अपने ठिकाने पर पहूंचते ही, एक लमहा आराम किये बगैर, उस ने मिस्र के काएम मुकाम सालार आला को बुला लिया। अल इदरीस को भी बुला लिया जिस के दोनो जवान बेटों को ग़द्दारों ने धोके में एक दूसरे के हाथों कत्ल करादिया था। काएम मुकाम सालारे आला सुलतान अय्यूबी को देख कर घबरा गया। सुलतान अय्यूबी ने अल इदरीस से अफसोस का इज़हार किया। अल इदरीस ने कहा। " मेरे बेटे मैदाने जंग में जानें देते तो मुझे खुशी होती। वह घोके में मारे गए हैं।" उस ने कहा........" ये वक़्त मेरे बेटों के मातम करने का नही, आप ने मुझे किसी और मकसद के लिय बुलाया था हुक्म फ़रमाऐं।"

काएम मुकाम सालारे आला मुहिब्बे इसलाम था। उन दोनों से सुलतान अय्यूबी ने काहरा के अन्दूरूनी हालात के मुतअल्लिक तफ़सीली रीपार्ट ली और पूछा कि उन की नज़रों में कौन कौन से हाकिम मुशतबा हैं। वह फ़ौजी हुक्काम के मुतअल्लिक ख़ास तौर पर पूछ रहा था। उसे चन्द एक नाम बताए गए। उस ने एहकाम देने शुरू कर दिये जिन में अहम ये था कि मुशतब्बा हुक्काम को काहरा में मरकज़ी कमान में रहने दिया जाए और तमाम फौज को सूरज निकलने से पहले कूच की तैयारी में जमा कर लिया जाए। और भी बहुत सी हिदायात दे कर सुलतान अय्यूबी ने एक पलान तैयार करना शुरू कर दिया। कुछ हिदायात

अली बिन सुफ़यान को देकर उसे फ़ारिग़ कर दिया । कुछ देर के बाद फ़ौज के कैम्प मे हड़बोंग मच गई । फ़ौज को कबल अज़ वक़्त जगा लिया गया था। फ़ौज और इनतेज़ामिया के मुतअल्लक़ा हुक्काम को सलाहुद्दीन अय्यूबी के हेड कुवारटर में बुलाया गया था। वह हैरान थे कि ये किया होगया है। उन्हें इतना ही पता चला था कि सुलतान अय्यूबी अगया है। उन्हों ने उस का घोड़ा भी देख लिया था लेकिन उन्हें सुलतान अय्यूबी नज़र नहीं अया था और सुलतान अय्यूबी उन्हें अभी मिलना भी नहीं चाहता था । उस ने उन्हें कूच तक फ़ौज से अलग रखने का बन्दोबस्त कर दिया था । यही उस का मक़सद था।

अभी सुबह की रौशनी साफ़ नहीं हुई थी । फ़ौज तरतीब से खड़ी कर दी गई । पियादों और सवारीयों के सफ़ों के पीछे रसद और दीगर सामान से लदे हुए ऊंट थे। सुलतान अय्यूबी ने फ़ौज को ये टरेनिंग ख़ास तौर पर दी थी कि जब भी फ़ौरी कूच का हुक्म मिले फ़ौज एक घंटे के अन्दर बमआ रसद और दीगर सामान के काफ़ले के साथ तैयार हो जाए। इसी टरेनिंग और मश्क़ का करिशमा था कि फ़ौज तुलूअ सुबह के साथ ही कूच के लिये तैयार हो गई थी। सुलतान अय्यूबी अपने घोड़े पर सवार होगया । उस के साथ मिस्र का क़ाएम मुक़ाम सालारे आला भी था। सुलतान अय्यूबी ने फ़ौज को एक नज़र देखा और एक सफ़ के सामने से गुज़रने लगा। उस के चेहरे पर मुसकुराहट थी और उस के मुहं से बार बार ये अलफ़ाज़ निकलते थे........" आफरीन सद आफरीन । इसलाम के पासबानो ! तुम पर अल्लाह की रहमत हो "....... सलाहुद्दीन अय्यूबी की शख़सीयत का अपना एक असर था जिसे हर एक सीपाही महसूस कर रहा था। उस के साथ उस की मुसकुराहट और दाद व तहसीन के कलमें सीपाहीयों पर उस असर को और ज़्यादा गहरा कर रहे थे। अमीर और सालार आला को सीपाहियों के इतनी क़रीब जाना ही काफी था।

तमाम फ़ौज का मुआइना करके सुलतान अय्यूबी ने मुकम्मल तौर पर बुलन्द आवाज़ से फ़ौज से ख़िताब किया । उस वक़्त की तहरीरों में उस के जो अलफ़ाज़ महफ़ूज़ मिलते हैं वह कुछ इस तरह थे। ....." अल्लाह के नाम परकट मरने वाले मुजाहिदो ! इसलाम की नामूस तुम्हारी तलवारों को पुकार रही है। तुम ने शोबक का मज़बूत किला जो कुफ़्र का सब से ज्यादा मज़बूत मोरचा था रेत का टीला समझ कर तोड़ डाला था। तुम ने सलीबीयों को सेहराओं में घेर कर मारा और जन्नतुल फ़िरदोस में घर बना ली है। तुम्हारे साथी तुम्हारे अज़ीज़ दोस्त तुम्हारे सामने शहीद हुए। तुम ने उन्हें अपने हाथों दफ़न किया । उन छापा मार शहीदों को याद करो जो दुशमन के सफ़ों के पीछे आकर शहीद हुए। तुम उनका जनाज़ा न पढ़ सके । उन की लाशें भी न देख सके। तमु तसुव्वुर कर सकते हो कि दुशमन ने उन की लाशों के साथ क्या सूलूक किया होगा। शहीदों के यतीम बच्चों को याद करो। उन की बीबीयों को याद करो जिन के सुहाग खुदा के नाम पर कुरबान हो गए हैं। आज शहीदों की रूहें तुम्हें ललकार रही हैं। तुम्हारी ग़ैरत को और तुम्हारी मरदान्गी को पुकार रही हैं। दुशमन ने करक के किले को इतना मज़बूत कर लिया है कि तुम्हारे कई साथी दीवारों से फेंकी हुई आग में जल गए हैं। तुम अगर वह मनज़र देखते तो सर की टक्करों से किले की दीवारें तोड़ देते

। वह आग में जलते रहे और दीवार में शीगाफ डालने की कोशिश करते रहे। मौत ने उन्हें मोहलत न दी...........

" अज़मते इसलाम के पासबानो ! करक के अन्दर तुम्हारी बेटियों और तुम्हारी बहनों की इसमत दरी हो रही है बूढ़ों से मवेशियों की तरह मुशक्कत से काम लिये जा रहे हैं । जवानों को कैद में डाल दिया गया है। माओं को बच्चों से अलग कर दिया गया है मगर मैं कि जिस ने पत्थरों के किले तोड़े हैं , मिट्टी का किला सर नहीं कर सका। मेरी ताकत तुम हो। मेरी नाकामी तुम्हारी नाकामी है। "....... उसकी आवाज़ और ज़्यादा बुलन्द हो गई। उसने बाजू उपर कर के कहा। ......" मेरा सीना तीरों से छलनी कर दो। मैं नाकाम लौटा हूँ। मगर मेरी जान लेने से पहले मेरे कान में ये ख़ुशख़बरी ज़रूर डालना कि तुम ने करक ले लिया है और अपनी इसमत बुरीदा बेटियों को सीने से लगा लिया है।"

उस वक़्त एक वकाए निगार अलअसदी लिखता है कि यूं मालूम होता था जैसे घोड़े अपने सवारों की जज़बाती कैफियत को समझते थे। सवार ख़ामूश थे लेकिन कई घोड़े बड़ी जोर से हनहनाए तड़ाख तड़ाख की आवाजें सुनाई दीं। सवार बागों को जोर से झटक कर अपनी बेताबी और जज़बा इन्तेकाम की शिद्दत का इज़हार कर रहे थे । उन की ज़बानें ख़ामूश थीं। उनके चेहरे लाल सुर्ख़ होकर उनके जज़बात की तरजुमानी कर रहे थ। सुलतान अय्यूबी के अलफाज़ तीरों की तरह उनके दिलों में उतरते जा रहे थे। बग़ावत की चिंगारियां बुझ चूकी थीं। सुलतान अय्यूबी का मकसद पूरा हो रहा था।

" सलतनते इसलामिया की इसमत के मुहाफिज़ों ! तुम कुफ्फार के लिये दहशत बन गए हो। तुम्हारी तलवारों को कुन्द करने के लिये आज सलीबी अपनी बेटियों की इसमत और हशीश इसतेमाल कर रहे हैं। तुम नहीं समझते कि सलीबी अपनी एक बेटी की इसमत लुटाकर एक हज़ार मुजाहेदीन को बेकार कर देते हैं और अपने इलाके में अपनी एक बेटी के बदले हमारे एक हज़ार बेटियों को बे आबरू करते हैं। तुम्हारे दरमियान एक फ़ाहिशा औरत भेज कर हमारी सैंकड़ों बेटियों को फ़ाहिशा बना लेते हैं। जाओ और अपनी बेटियों की इसमतों को बचाओ। तुम करक जा रहे हो जिसकी दीवारों के घेरे में कुरआन के वरक बिखरे हुए हैं और जहां की मस्जिदें बैतुल ख़ुला बन गई है। वह सलीबी जो तुम्हारे नाम से डरते हैं आज तुम पर कहकहा लगा रहे हैं। शोबक तुम ने लिया था करक भी तुम ही लोगे।"

सुलतान अय्यूबी ने फ़ौज पर ये इलज़ाम आएद नही किया कि वह गुमराह हो गई है और बग़ावत पर आमादा है। उस ने किसी के ख़िलाफ़ शक व शुबहे का इशारा भी नहीं किया । इस की बजाए फ़ौज के जज़बे और ग़ैरत को एसा ललकारा कि फ़ौज जो हैरान थी कि उसे इतनी सवेरे क्यों जगाया गया है। अब इस पर हैरान थी कि उसे करक की तरफ कूच का हुकम क्यों नही दिया जाता । तमाम तर फ़ौज मुशतअिल हो गई थी। सुलतान अय्यूबी ने आला और अदना कमाण्डरों को बुलाया और उन्हें कूच के मुतअल्लिक हिदयात दीं। कूच के लिये कोई और रास्ता बताया । ये रास्ता उस रास्ते से बहुत दूर था जिस पर मुहाज़ की फ़ौज आ रही थी । कूच करने वाली फ़ौज के साथ सुलतान अय्यूबी ने अपने वह कमाण्डर भेज दिये जिन्हें वह

अपने साथ लाया था। उन्हें उस ने खुफिया तौर पर हिदायात दे दी थीं। फौज को जब कूच का हुक्म मिला तो सिपाहियों के नारे काहरा के दरो दीवार को हिलाने लगे। सुलतान अय्यूबी का चेहरा जज़बात की शिद्दत से दमक रहा था।

जब फौज उस की नज़रों से ओझल हो गई तो उस ने एक क़ासिद को पैग़ाम दे कर उस पड़ाव की तरफ रवाना करदिया जहां मुहाज़ से आने वाली फौज रुकी हुई थी। क़ासिद को बहुत तेज़ जाने को कहा गया। पैग़ाम ये था कि पैग़ाम मिलते ही फौज को काहरा के लिये कूच करा दिया जाए। फासला आठ दस मील था। क़ासिद जल्दी पहुंच गया। उसी वक़्त कूच का हुक्म मिल गया। गुरूबे आफ़ताब के बाद फौज के हरावल दसते काहरा में दाख़िल हो गए। उनके पीछे बाकी फौज भी आगई। उसे रिहाइश के लिये वही जगह दी गई जहां गुज़श्ता रात तक कूच कर जाने वाली फौज क़याम पज़ीर थी सीपाहियों को कमाण्डरों ने बताना शुरूअ कर दिया कि पहली फौज को मुहाज़ पर भेज दिया गया है। आने वाली फौज भड़की हुई थी। अली बिन सुफ़यान ने उन्हें ठण्डा करने का इन्तेज़ाम कर रखा था। सुलतान अय्यूबी ने दानिशमन्दी से फौजी बग़ावत का ख़तरा भी ख़त्म कर दिया और खाना जंगी का इमकान भी न रहने दिया। उस ने आला कमाण्डरों को बुला लिया और उस फौजी हाकिम को भी बुलाया जो सरहदी दसतो का ज़िम्मेदार था। उस ने ये मालूम करके कि सरहद पर कितने दसते हैं और कहां कहां हैं, इतनी ही नफरी के दसते तैयार करके अलस सुबह मतलुबा जगहों को भेजने का हुक्म दिया। उसे बताया जा चूका था कि सरहदी दसते मुल्क से गल्ला और फौजी ज़रूरयात का दीगर सामान बाहर भेजने में दुशमन की मदद कर रहें हैं। सुलतान अय्यूबी ने उन दस्तों के कमाण्डरों को खुसूसी एहकामात दिये और सरहद से वापस आने वाले पुराने दसतों के मुतअल्लिक़ उस ने हुक्म दिया कि उन्हें काहरा में लाने की बजाए बाहर से ही मुहाज़ पर भेज दिया जाए।

❖

सादिया दोनों वक़्त मस्जिद में इमाम को खाना देने जाती थी। महमूद बिन अहमद शागिर्द की हैसियत से मज़हब की तालीम हासिल कर रहाथा। अब उस चरागाह में भी चला जाया करता था जहां सादिया बकरीयां चराया करती थी। वहां टीले भी थे। जगह सरसब्ज़ थी क्योंकि वहां पानी था। जगह गावं से ज़रा दूर थी। सादिया अब महमूद को अपना मुहाफिज़ समझने लगी थी और उसे यक़ीन हो गया था कि महमूद उसे काफिरों के कब्ज़े में जाने से बचा लेगा। मगर महमूद उस की ये बात नही मानता था कि उसे फ़ौरन गांव से ले जाए। सादिया ने उसे ये भी कहा था कि वह उसे अपने गांव छोड़ आए और यहां आकर तालीम मुकम्मल कर ले। महमूद उसे बता नही सकता था कि उसका गांव मिस्र के दूसरे सिरे पर है जहां वह इतनी जल्दी नहीं जा सकता। उस ने अपने जासूसी के फ़न के मुताबिक़ ये यक़ीम कर लिया था कि सादिया दुशमन की आला कार नहीं। अगर महमूद के रास्ते में फ़र्ज़ हाएल न होता तो वह कभी का सादिया को वहां से ले जा चूका होता। फ़र्ज़ के इलावा इमाम मस्जिद इसी के मोहकमे का अफ़सर था। जिस की मौजूदगी में वह अपने फ़र्ज़ में

कोताही नहीं कर सकता था। इमाम ने उसे ये भी कहा था कि वह उस के साथ रहे। उस का कहना हुक्म की हैसियत रखता था।

एक रोज़ अचानक गांव में रौनक आगई । कुछ अजनबी सूरतें नज़र आने लगें। हर किसी की ज़बान पर एक ही कलमा था......" वह आ रहा है वह आसमान से आया है........ मरे हुओं को जिन्दा करने वाला आ रहा है"...... गावं का हर एक फ़र्द बहुत ही ख़ुश था। वह कहते थे कि उनकी मूरादें पूरी करने वाला आ रहा है। सादिया दौड़ती हुई आई और महमुद बिन अहमद से कहा ....." तुम ने भी सुना है कि वह आ रहा है ? तुम जानते हो कि मैं उन से किया मागुंगी ? मैं उसे कहुंगी कि महमूद मुझे फ़ौरन यहां से ले जाए। फिर तुम मुझे यहां से ले जाओगे।"

महमूद कुछ भी जवाब न दे सका । उस ने अभी तक उस पुर असरार आदमी को नहीं देखा था जिसे लोग पैग़म्बर तक कहते थे........ महमूद की डयूटी के इलाके में वह पहली बार आ रहा था। उस की करामात और मोअज्ज़ों की कहानियां इसइलाके में कभी की पहूंच चुकी थीं...... महमूद बाहर निकल गया तो अजनबी लोगों में से उसे अपने दो साथी जासूस नज़र आए । उनका इलाका कोई और था। महमूद ने उन से पूछा कि वह उस के इलाके में क्यों आगए हैं। उन्हों ने बताया कि वह उस ग़ैब दान को देखने आए हैं मगर वह जासूसों की हैसियत से नही आऐ थे बल्कि उस से पूरी तरह मुतअस्सिर थे। उन्होंने उस की करामात किसी जगह देखी थीं, जो उन्हों ने महमूद को एसे अन्दाज़ से सुनाई कि वह मरऊब हो गया। ये दोनो उस ग़ैब दान को बरहक समझने लगे थे। महमूद ने सोंचा कि अली बिन सुफयान के तरबियत याफ़्ता जासूस जिस से मुतअस्सिर हो जाऐं वह बरहक हो सकता है।

महमूद उस सर सब्ज़ जगह की तरफ चला गया जहां सादिया बकरियां और ऊंटनी चराने के बहाने उसे मिला करती थी मगर वहां कुछ और ही गहमा गहमी थी। उसे दूर ही दो आदमियों ने रोक दिया और कहा कि ख़ुदा का भेजा हुआ पैग़म्बर आ रहा है। ये जगह उस के लिये साफ़ की जा रही है। वह यहीं क़ियाम करेगा उस ने दूर से देखा कि एक टीले में ग़ार सा बनाया जा रहा था और जगह हमवार की जा रही थी। अब वहां किसी को जाने की इजाज़त नहीं थी। गावं के लोग काम धंधा छोड़ कर वहां जमा हो रहे थे। अजनबी आदमी जो उस जगह सफाई वग़ैरह का काम करते थे। बारी बारी आकर लोगों को उस के मोअजज़े सुनाते थे । लोग मसरूर हुए जा रहे थे। रात को भी लोग वहां खड़े रहे। उन की अकीदत मन्दी का ये आलम था कि मस्जिद में कोई भी न गया। दूसरे दिन की अभी सुबह तुलूअ हुई थी कि लोग फिर वहीं पहुंच गये। उन्हें दूर ही रोक लिया गया। रात के दैरान अजनबी चेहरों में इज़ाफ़ा हो गया था। ये लोग वहां गढ़े भी खोद रहे थे। उन के साथ चन्द ऊंट थे जिन पर बहुत सारा सामान लदा हुआ था। ये सामान खोला जाने लगा तो उन्हें बहुत से खीमे नज़र आए जो खोल कर नसब किये जा रहे थे।

शाम गहरी होने लगी थी। रातें तारीक हुआ करती थीं। चान्द रात के पिछले पहर उभरा था । उस ग़ैब दान के मुतअल्लिक बताया जा रहा था कि सिर्फ़ तारिक रातों में लोगों को

अपना आप दिखाता हैं। शाम के बाद भी गावं के लोग वहां मौजूद रहे। एक तरफ़ गांव की औरतें भी खड़ी थीं जिन में सादिया भी थी। जो जगह आने वाले के लिये साफ़ की जा रही थी। वहां मशअलें जल रही थीं। दो आदमी उन चन्द लड़कियों के पीछे से आए जिन में सादिया थी लड़कियां उन्हें देख न सकीं। सामने से तनी चार आदमी आए। ये अजनबी लोगों में से थे। लड़कियों के करीब आकर उन्हों ने लड़कियों से कहा। ...."तुम यहां से जाती क्यों नहीं?" ...... और वह लड़कियों को डराने के लिये उन की तरफ़ दौड़े लड़कियां भाग उठीं और बिखर गईं। किसी ने पीछे से सादिया के ऊपर कम्बल फैंका। दो मज़बूत बाज़ूओं ने उसे कमर से दबोच लिया। एक हाथ से किसी ने उस का मुंह बन्द कर दिया था। उसे कन्धे पर उठा कर कोई दौड़ पड़ा। एक तो तारीकी थी और दूसरे लड़कियां भाग गईं थीं। इस लिये कोई भी न देख सका कि सादिया को कोई उठा ले गया है।

दूसरी सुबह जैसे तूफान आ गया हो। गांव के लोग चरागाह की तरफ़ दौड़ पड़े। एक हुजूम चला आ रहा था। उस के आगे आगे सोला सतरह ऊंट थे। हर ऊंट पर निहायत ख़ूबसूरत पालकी थी। हर पालकी के परदे गिरे हुए थे। "वह" उन मे से किसी पालकी मे था। आगे आगे दफ़ और शहनाईयां बज रही थीं। बाज़ लोग वजद आफ़रीं गोंज में कुछ गुनगुनाते आ रहे थे। ऊंटों की गरदनों से लटकती हुई बड़ी बड़ी घंटीयों का तरन्नुम उसी मौसीकी का हिस्सा मलूम होता था। हुजूम में कोई शोर शराबा नहीं था। हर किसी पर तक़द्दुस का रोब तारी था। ये मुरीदो और अक़ीदत मन्दों का जुलूस था जो मालूम नहीं कहां कहां से उस के साथ चले आ रहे थे। एसी फ़िज़ा पैदा हो गई थी जैसे पालकियों वाले ऊंट आसमान से उतर रहे हों। ये क़ाफ़ला सर सब्ज़ जगह चला गया। वहां टीले ज़्यादा थे। एक जगह बहुत से ख़ीमें नसब कर दिये गये थे। उन में एक ख़ीमा ख़ास बड़ा था। तमाम लोगों को दूर हटा दिया गया। फिर कोई न देख सका कि पालकियों में से कौन कौन निकला और कहां ग़ाएब हो गया। अक़ीदत मन्दों का हूजूम दूर हट कर बैठ गया। सादिया के गावं के लोग उन से उस मुक़द्दस इनसान की बातें सुन्ने लगे। इनसानी फ़ितरत की ये ख़ासियत है कि इनसान जिस क़दर गंवार और पसमान्दा होता है। वह उतना ही सनसनी पसन्द होता है। वह बातों में सनसनी पैदा करने की कोशिश करता है। यही कैफ़ियत वहां पैदा हो गई थी।

इमाम भी उस हुजूम को देख रहा था और महमूद भी। वह अभी कोई राये क़ाएम नही कर सकते थे। उन्हें क़ाहिरा से ये हिदायत मिली थी कि सरहदी इलाक़े में कोई नया अक़ीदा फ़ैलाया जा रहा है उस के मुतअल्लिक़ तफ़सीलात मालूम करके बताओ कि ये किया है और उस की पुश्त पनाही में कौन लोग हैं। क़ाहिरा को अभी कोई तफ़सीली इत्तेला नहीं मिली थी। उस की सब से बड़ी वजा ये कि जिन इलाक़ों में ये पुर असरार आदमी जा चुका था वहां के जासूस भी उस के मोअज्ज़ा से मरऊब हो गए थे। वह उस के ख़िलाफ़ कोई बात मुंह से निकालने से डरते थे। सरहदी दसतों ने भी एसा ही असर क़ुबूल किया था। अब इस इमाम की बारी थी। उसे देखना था कि ये सब कोई ढोंग है, शोबदा बाज़ी है या किया है। उस ने देख लिया था कि लोग उस की बातें सुन सुन कर इतने मुतअस्सिर और मरउब हो गए थे कि

उन्होने मस्जिद में जाना छोड़ दिया था। वह उस की झलक देखने को उस जगह के गिर्द बैठे थे जहां से वह ऊंट से उतर कर किसी ख़ीमें में ग़ाएब हो गया था।

इमाम और महमूद वहां खड़े थे। सादिया का बाप उनके पास आन रुका। उस ने परीशानी के आलम में बताया कि सादिया रात से ग़ाएब है। लड़कियों ने उसे बताया कि उन्हें चन्द आदमियों ने सामने से आकर डराया और वहां से भगा दिया था। एक लड़की ने बताया कि उस ने वहां से पीछे दो आदमी देखे थे। उस से आगे किसी को कुछ इल्म न था। बाप सादिया की तलाश में चल पड़ा । महमूद भी उस के साथ हो लिया। वहां उसे सादिया कहां मिल सकती थी ! मगर वह बाप था । बेचैनी से इधर उधर घूमने फिरने लगा। महमूद उस के साथ रहा। उन्हें एक अजनबी ने रोक लिय और पूछा ...."क्या तुम लोग किसी को ढूंढ रहे हो ?". ..... सादिया के बाप ने उसे बताया कि गुज़शता रात से उस की लड़की ला पता हो गई है।

" मुझे अभी अभी किसी ने बताया है कि तुम उस लड़की के बाप हो।"......... अजनबी ने सादिया का हुलया बता कर कहा। ...." अगर तुम उस लड़की को ढूंढ रहे हो तो वह तुम्हें यहां नहीं मिलेगी । अब तक वह मिस्र की सरहद से बाहर और बहुत दूर जा चूकी होगी। गुज़शता शाम मैं ने एक घोड़ा देखा था। एक जवान और खूबसूरत लड़की दूसरी लड़कीयों से हट कर घोड़े के पास गई। सवार घोड़े के करीब खड़ा था। लड़की ने उस के साथ कुछ बातें कीं । सवार घोड़े पर सवार होकर चन्द कदम परे चला गया । लड़की इधर उधर देखती उसके पीछे गई । आगे जाकर वह ख़ुद ही सवार के आगे घोड़े पर बैठ गई । सवार घोड़ा दौड़ा ले गया। मैं देख रहा था और सोंच रहा था कि ये लड़की कौन हो सकती है जो एक सवार के साथ अपनी मर्जी से चली गई है। आज किसी ने बताया कि वह तुम्हारी बेटी थी। उसे अब ढूंढने की कोशिश न करो।"

वह आदमी चला गया और सादिया के बाप के आंसू निकल आए। महमूद का रद्दे अमल कुछ न था। वह जासूस था उस ने ये सोंचा कि ये सुफेद झूट बोल गया है। उस की इत्तेला और तमाम तर बियान झूट था। कोई उसे कैसे बता सकता था कि उस शख़्स की बेटी एक सवार के साथ भाग गई है जब उसे देखने वाला ये अकेला शख़्स था। जासूसों को ये खास तौर पर टरेनिंग दी जाती थी कि किसी बात पर फ़ौरन एतबार न करो और हर किसी को शक की निगाह से देखो। महमूद ने उस अजनबी का पीछा किया । वह हुजूम में से होता हुआ टीलों के पीछे चला गया और ख़ीमों में कहीं ग़ाएब हो गाया। महमूद को यक़ीन हो गया कि सादिया इन्हीं खीमों में है और उस इग़वा में उस आदमी का हाथ है। ये सादिया के ख़रीदारों में से हो सकता है जिन्होंने सौदा न होने पर सादिया के बाप को लड़की के अग़वा की धमकी दी थी। सादिया के बाप ने उन्हें नहीं पहचाना था। ये अजनबी सादिया के बाप को झूटा ब्यान देकर गुमराह कर ने अया था ताकि बाप अपनी बेटी को यहां तलाश न करे।

महमूद बिन अहमद के दिल में सादिया की इतनी शदीद मुहब्बत थी कि उस ने सादिया को वहां से निकालने का तहय्या कर लिया। उस ने इमाम को जाकर ये सारी बातें सुनाईं। इमाम सुरागरसानी कि शोबे का ज़हीन हाकिम था उस ने भी यही राय दी कि उस ग़रीब बाप

को धोका दिया जा रहा है कि उस की बेटी किसी के साथ भाग गई है। महमूद ने इमाम के उन दोनो जासूसों से जो गावं में मौजूद रहते थे ज़िक्र किया और कहा कि वह सादिया को वहां से निकालेगा और उसे उन की मदद की ज़रूरत है। मगर ये काम आसान नहीं था। टीलों के अन्दर अब कोई नही जा सकता था।

❖

नूरुद्दीन ज़ंगी ने करक के मुहासरे में अपनी फ़ौज लगा दी थी और किला तोड़ने के तरीक़े सोंच रहा था। उस ने पहले रोज़ ही अपने कमाण्डर से कह दिया था कि जो क़िला सलाहुद्दीन अय्यूबी सर नहीं कर सका, वह तुम भी आसानी से सर नहीं कर सको गे। सलाहुद्दीन तो ना मुमकिन को मुमकिन कर दिखाने वाला आदमी है। सुलतान अय्यूबी ने उसे तफ़्सील से बता दिया था कि यहां कौन कौन से तरीक़े आज़मा चुका है। ये भी बताया कि क़िले के अन्दर किया है। रसद और जानवर कहां हैं और आबादी किस तरफ़ है । उसे ये मालूमात जासूसों ने दी थीं। वह अन्दर आग फेंकना चाहता था मगर उस की मुनजनीकें छोटी थीं। उस के इलावा सलीबीयों के पास बड़ी कमाने थीं जिन के तीर बहुत दूर तक चले जाते थे। ये तीर मुनजनीकों को क़रीब नहीं आने देते थे। इसी लिये क़िले के दरवाज़े पर भी आग नहीं फेंकी जा सकती थी। मुजाहिदीन कहीं से क़िले की दीवार तोड़ने की कोशिश करते थे तो ऊपर से सलीबी जलती हुई लकड़ियों और दहकते कोइलों के ड्राम उन्डेल देते थे।

नूरुद्दीन ज़ंगी ने अपने नाइबीन का इजलास बुलाकर उन्हें कहा......... "सलाहुद्दीन अय्यूबी ने मुझको कहा था कि वह बड़ी मुनजनीकें बनवाकर अन्दर आग फेंक सकता है लेकिन अन्दर मुसलमानों की आबादी भी हैं अगर एक भी मुसलमान जल गया तो ये सारी उमर का पछतावा रहेगा। मैं अब अय्यूबी की सोंच के ख़िलाफ़ फ़ैसला कर रहा हूँ। मैं ने इतनी बड़ी मुनजनीकें बनाने का इन्तेज़ाम कर लिया है जिन की फेंकी हुई आग और वज़नी पत्थर दूर तक जा सकेंगे। आप को ये हकीकत कुबूल करनी पड़ेगी कि आप की फेंकी हुई आग से अन्दर चन्द एक मुसलमान को भी नुकसान पहुंचेगा। मेरे दोसतो ! अगर तुम अन्दर के मुसलमान के हालात जानते हो तो कहोगे कि वह मर ही जाऐं तो अच्छा है। वहां किसी मुसलमान की इज्ज़त महफ़ूज़ नहीं। मुसलमान बच्चियां सलीबीयों के पास हैं और मर्द खुले कैद ख़ाने में पड़े बेगार कर रहे हैं। वह तो दुआऐं मांग रहे होगें कि ख़ुदा उन्हें मौत दे दे । आप का मुहासरा जिस कदर लम्बा होता जाएगा अन्दर का मुसलमान जल मरेगा । अगर चन्द एक मर गए तो हमें ये कुरबानी देनी ही पड़ेगी । आप भी तो मरने के लिये आऐ हैं। इसलाम को ज़िन्दा रखना है तो हम में से कई एक को जानें कुरबान करनी होगी । मैं आपको ये इत्तेला इस लिये दे रहा हूँ कि आप में से मुझ पर कोई ये इलजाम आएद न करे कि मैं ने एक क़िला सर करने के लिये बे गुनाह मुसलमानों को जला दिया है"।

"हम मे से कोई भी एसा नहीं सोंचेगा "......... एक सालार ने कहा......." हम यहां अपनी बादशाही काएम करने नही आए। फलसतीन मुसलमानों का है। हम यहां अपने रसूल (स0) की बादशाही बहाल करने आए हैं। क़िबला अव्वल हमारा है सलीबीयों और यहूदियों का

नहीं।"

"हम यहुदीयों के इस दावे को कभी तसलीम नहीं कर सकते कि फ़लसतीन यहुदीयों का वतन है।"....एक और ने कहा....."हम सब जल मरने के लिये तैयार हैं। हम अपने बच्चों को भी कुरबान करने के लिये तैयार हैं।"

नूरूद्दीन ज़ंगी के होंटों पर एसी मुसकुराहट आ गई जिस में मुसर्रत नहीं थी। उस ने कहा. ...."तुम जानते ही होगे कि फ़लसतीन को अपना वतन बनाने के लिये यहुदी किस मैदान में लड़ रहें हैं। उन्हों ने अपनी दौलत और बेटियों की इसमत सलीबीयो के हवाले कर दी है और उन्हें हमारे ख़िलाफ़ लड़ा रहें हैं। अपनी दौलत और अपनी लड़कियों के ही ज़रिये हमारी सफों में ग़द्दार पैदा कर रहे हैं। उनका सब से बड़ा निशाना सलाहुद्दीन और मिस्र है। मिस्र के बड़े बड़े शहरों में फ़ाहिशा औरतों की तादाद बढ़ती जा रही है। ये सब यहूदी औरतें हैं। अफसोसनाक हकीकत ये है कि हमारे मुसलमान उमरा और दौलत मन्द ताजिर यहूदीयों के जाल में फंस गए हैं। उन में निफ़ाक और तफररका भी पैदा होगया है। अब कुफ़्फ़ार उन्हें आपस में लड़ाएगें। अगर हम होश में न आए तो यहूदी एक न एक दिन फ़लसतीन को अपना वतन बना कर किबला अव्वल को अपनी इबादत गाह बना लेंगें और मुसलमान ममलिकतें आपस में लड़ती रहेंगीं उन्हें महसूस तक नहीं होगा कि उनकी आपस कि चपकलिश के पीछे यहूदीयों और सलीबीयों का हाथ है। ये होगा दौलत, औरत और शराब का करिशमा जो शुरूअ हो चूका है। अगर हमें आने वाली नसलों को बाकाइदा ज़िन्दगी देनी है तो हमं आज की नस्ल के कुछ बच्चे कुरबान करने पड़ेंगे। मैं नया चान्द निकलते तक करक ले लेना चाहता हूँ ख्वाह मुझे उस के खण्डर मिलें और अन्दर मुसलमान की जली हुई लाशें मिलें। हम इन्तेज़ार नहीं कर सकते। हम सलीबीयों और यहुदीयों को बहिराए रूम में डुबोना है। ये काम हमें अपनी ज़िन्दगी में करना है। मुझे नज़र आ रहा है कि हमारे बाद इसलाम का परचम गद्दारों और सलीब नवाज़ों के हाथों मे आजाए गा।"

नूरूद्दीन ज़ंगी ने कारीगरों की भी एक फ़ौज साथ रखी हुई थी। उस ने मुतअल्लिका कारिगरों को बताया था कि खजूर के बहुत लम्बे लम्बे दरख़त काट कर मुनजनीकें तैयार करें उस ने कारीगरों के मशवरों से कुछ और किसम के दरख़त कटवा लिये थे और हुक्म दिया कि उन की तने और टहनी खुशक होने से पहले काम में लाये जाऐं ताकि उन मे लोहे वाली सख़्ती पैदा न हो जाए। कारीगर दिन रात मसरूफ़ रहते थे उस के साथ ही ज़ंगी ने वज़नी पत्थरों के ढेर लगवा दिये थे। उस के पास सलाहुद्दीन अय्यूबी का छोड़ा हुआ आतिश गीर मादे का ज़ख़ीरा भी था। बहुत सा सय्याल मादह ज़ंगी अपने साथ ले आया था। उस ने आग के गोले तैयार करलिये थे। उसी दौरान मिस्र से सुलतान अय्यूबी की भेजी हुई फ़ौज भी पहुंच गई। नुरूद्दीन ज़ंगी को उस फ़ौज के मुतअल्लिक बताया गया था कि बगावत के लिये तैयार है लेकिन ज़ंगी ने जब उस का मुआईना किया तो उसे बग़ावत का शाएबा तक नज़र न आया। ज़ंगी सुलतान अय्यूबी की तरह दानिशमन्द और दूर अन्देश इनसान था। उस ने इस फ़ौज को चन्द एक पुर जोश अलफाज़ से उस से ज़ियादा भड़का दिया जितना सुलतान अय्यूबी ने

भड़का कर भेजा था।

एक रोज़ सूरज गुरूब हो चूका था। सलीबी हुकमरान और आला फौजी कमाण्डर किले के अन्दर एक कान्फ्रेंस में बैठे थे। उनकी बातों से मालूम होता था कि उन्हें मुहासरे के मुतअल्लिक कोई परेशानी नहीं। उन्हें ये भी पता चल चुका था कि सुलतान अय्यूबी मिस्र जा चुका है और नुरूद्दीन ज़ंगी आ गया है। कान्फ्रेंस वाले दिन को ये इत्तेला मिली थी कि मिस्र से ताज़ह दम फौज आगई है। उस सूरते हाल पर गौर करने के लिये ये सब इकट्ठे हुए थे। उन्हों ने बात अभी शुरूअ ही की थी कि धमाके की तरह आवाज़ सुनाई दी और मलबा गिरने का शोर भी उठा। सलीबी कमाण्डर और हुक्मरान दौड़ते बाहर निकले। साथ वाले कमरे की मुण्डीर फट गई थी और वहां एक वज़नी पत्थर पड़ा था। दीवार में शिगाफ नही हुआ था। ज़न्नाटा सा सुनाई दिया जो करीब आकर धमाका बन कर ख़ामोश हो गया। उसी जगह के करीब एक और पत्थर गिरा। सलीबी वहां से भागे। वह समझ गए कि मुसलमान मुनजनीकों से पत्थर फैंक रहे हैं वह किले के दीवार पर गए मगर शाम अन्धेरी हो चूकी थी। कुछ नज़र नही आता था।

ये नुरूद्दीन ज़ंगी की तैयार कराई हुई एक मुनजनीक थी जिसे तजुरबाती तौर पर इसतेमाल किया जा रहा था। ये ज़रूरत के एन मुताबिक दूर मार थी मगर उसे चलाना बहुत मुशकिल था। एक लम्बे टहन के वस्त में मज़बूत रस्से बान्धे गए थे जिन्हें घोड़ों के ज़ोर से खींच कर ख़म दिया जाता, ख़म की जगह पत्थर रखा जाता था। इन्तेहाई ख़म में ले जाकर रस्सा तलवारों से काट दिया जाता था। इस तरीके से नुकसान ये होता था कि रस्सा कट जाता था और उसे गान्ठ देकर दोबारा इसतेमाल के लिये तैयार किया जाता था। दुसरी तकलीफ़ ये होती थी कि जब आठ घोड़ों का खींचा तना हुआ रस्सा कटता तो घोड़े दूर आगे जाकर इस तरह चले जाते थे जैसे किसी बे पनाह कुव्वत ने धक्का दिया हो। दो तीन बार यूं हुआ कि दो घोड़े आगे जाकर घुटनों के बल गिर पड़े और पीछले घोड़े उन के उपर गिरे। दो सवार एसे ज़ख़मी हुए कि मुहाज़ के काबिल न रहे। ज़ंगी ने फिर भी आधी रात तक ये अमल जारी रखा जिस से ये नुकसान हुआ कि सलीबीयों के हेड कुआर्टर की दो छतें गिर पड़ीं और चन्द एक कमरों की दीवारों में लम्बे चौड़े शिगाफ़ पड़ गए। ये नुकसान कुछ जियादा तो नही था लेकिन सलीबीयों की हौसला शिकनी की सूरत पैदा हो गई थी। चन्द एक दीवारो में शिगाफों ने हेड कुर्वाटर के मुहाफिज़ों और दीगर अमलों को वहां से भगा दिया था और सुबह तक उस दौर की पहली "बमबारी" की दहशत नाक ख़बर सारे शहर में फैल गई थी।

मगर आधी रात के बाद नुरूद्दीन ज़ंगी की पहली दूर मार मुनजनीक बेकार हो गई थी। पत्थर फैंकने वाला हिस्सा जिसे ख़म दिया जाता था जियादा इसतेमाल से या जियादा ज़ोर देने से टूट गया था। आख़री पत्थर किले के अन्दर जाने के बजाए दीवार के बाहर लगी। ज़ंगी ने अगला पत्थर फैंकने से रोक दिया। ताहम ये तजुरबा नाकाम नहीं था। कारिगरों में दो ख़ास तौर पर दानिशमन्द थे। उन्हों ने बुनयादी उसूल देख लिया था। उस उसूल पर उन्हें कामयाब दूर मार मुनजनीक तैयार करनी थी। उन्होंने उस पर गौर करना शुरू कर

दिया कि रस्से काटे बेगेर पत्थर निकलें और रस्से काटने ही पड़े तो थोड़े उस से पहले तने हुए रस्सों से आज़ाद कर दिये जाया करें। नुरुद्दीन ज़ंगी ने उन्हें कहा कि वह जो कुछ भी करें वक़्त जाए किये बग़ैर करें। दिन रात सोचें और काम करें। उन्होंने काम शुरू कर दिया। उस के साथ ही ज़ंगी ने तीर व कमान बनाने वाले कारीगरों से कहा कि वह दूर मार कमानें तैयार करें। उस ने अपने कमादारों से कहा कि अपने दसतो में से ग़ैर मामूली तौर पर ताक़तवर सीपाही अलग कर लें जो बड़ी कमानों से तीर फेंक सकें।

❖

सादिया गावं के बाहर जहां बकरियां चराती और महमूद बिन अहमद से मिला करती थी एक एसी दुनया आबाद हो गई। जिस की रौनक वहां के लोगों के लिये रूए ज़मीन से नही आसमान से उतरी हुई मालूम होती थी। बहुत देर गुज़री सूरज ग़ुरूब हो चूका था। रात तारीक थी। लोंगों को टीले के अन्दर जाने की इजाज़त दे दी गई थी लेकिन उन्हें एक तरफ़ बिठा दिया गया था। किसी को किसी टीले के उपर जाने की इजाज़त नही थी। लोगों को जहां बिठाया गया। वहां से किसी को उठने की इजाज़त नहीं थी। उन्हें कोई हुक्म नहीं दिया जा रहा था बल्कि "उस "से डराया जा रहा था। कहते थे कि वह किसी की ज़रा सी हरकत से नाराज़ हो गया तो सब पर मुसीबत नाज़िल हो गी। लोग दम बखुद बैठे देख रहे थे। उन से कुछ दूर बड़ी ख़ूबसूरत दरयां और उन पर दो कालीन बिछे हुए थे। पीछे लम्बे लम्बे परदे लटके हुए थे जिन पर सितारे से चमकते थे। ये चमक उस मशअलों और कन्दीलों से पैदा होती थी जो एक ख़ास तरकीब से रखी जल रही थीं। परदों के पीछे उमूदी टीला था जिस के दामन में अजनबी लोग ग़ार खोद रहे थे। उस टीले के पीछे कुछ जगह हमवार थी। वहां रंगा रंग ख़ीमें नस्ब थे। तमाशाईयों पर एसा रोब तारी था कि वह एक दूसरे के साथ सरगोशी में भी बात नहीं करते थे। ये रात उस से अगली थी जिस रात सादिया अग़वा हूई थी। सामने लटके हुए परदे आहिसता आहिसता हिलने लगे। सितारे आसमान के सितारों की तरह टिमटिमाने लगे और एसे साज़ों का तरन्नुम सुनाई देने लगा जिन के नाम से भी कोई वाकिफ़ नहीं था। ये एक गोंज सी थी जिस में तिलिसमाती सा तास्सुर था। सेहरा की ख़ामूश रात में ये तास्सुर रूहों तक उतरता महसूस होता था। ये एहसास भी होता था जैसे इस तरन्नुम की लहरें लोंगों के उपर से गुज़र रही हों जिन्हें वह देख सकेगें। छू भी सकेंगें। यही वजा थी कि लोग बार बार उपर और इधर उधर देखते थे लेकिन उन्हें नज़र कुछ भी नहीं आता था। साज़ों के तरन्नुम में एक और गोंज शामिल हो गई। साफ़ पता चलता था कि बहुत से आदमी मिल कर एक ही नग़मा गुनगुना रहें हैं। इस में लड़कियों की आवाज़ भी थी। उस के साथ जब टीले के सामने इतने लम्बे लम्बे परदे हिलते थे तो यूं लगता था जैसे रात की फ़िज़ा और माहोल पर वजद तारी हो गया हो।

❖

लोग पूरी तरह मसहूर हो गए तो कहीं से गोंज दार आवाज़ उठी......" वह आ गया है जिसे ख़ुदा ने असमान से उतारा है। अपने दिल और दिमाग़ ख़ियालों से ख़ाली कर दो। वह

तुम्हारे दिलों और दिमाग़ों में ख़ुदा की सच्ची बातें उतारेगा।"

परदों में जुम्बिश हुई। परदों में से एक इनसान नमूदार हुआ। वह था तो इनसानही लेकिन उस मुतरन्नम और मरउब माहोल में और उन रोशनियों में वह किसी बुलन्द व बाला जहान की मख़लूक़ लगता था। उस के सर के बाल भूरे रेशमी और लम्बे थे जो उस के शानों पर पड़ते थे। बालों में चमक थी। चेहरा भरा भरा और सुर्ख़ व सुपेद दाढ़ी सलीक़े से तराशी हुई थी। ये भी भूरे रगं की थी। जिस्म घटा हुआ और उस पर सबज़ चूग़ेपर परदों की तरह सितारे थे जो रोशनियों में चमकते थे। एसी ही चमक उस की आंखों में थी। उस के सरापा में एसा तास्सुर था जिस ने लोगों को मबहूत कर दिया। उस के साथ साज़ों का गोंजदार तरन्नुम और बहुत सी आवाज़ों के गुनगुनाने की गोंज। मगर जिस ने लोगों को दम बख़ुद किया था वह उन कहानियों का असर था जो वह कभी से सुन रहे थे। उन मोअज्ज़ाती कहानियों की सनसनी खेज़ी ने उन के सोंचों पर ग़लबा पा रखा था उस रात उसे अपने सामने देख कर उन्हों ने पहले तो सर झुकाए फिर हाथ इस तरह पेट पर बांध लिये जिस तरह नमाज़ में बांधतें हैं।

उस ने परदों के सामने खड़े होकर बाज़ु उपर को फैलाए और कहा......... "तुम पर उस ख़ुदा की रहमत नाज़िल हो जिस ने तुम्हें दुनया मे उतारा जिस ने तुम्हें आंखे दीं कि देख सको, जिस ने तुम्हें कान दिये कि सुन सको, जिस ने तुम्हें दिमाग़ दिया कि सोंच सको, जिस ने तुम्हें ज़बान दी कि बोल सको मगर तुम ही जैसे इनसानो ने जिन की आखें तुम्हारी तरह हैं, ज़बानें तुम्हारी तरह हैं तुम्हें ग़ुलाम बनाकर ख़ुदा की नेमतों से और दुनिया की आसाइशों से महरूम कर दिया हैं। अब तुम्हारा ये हाल हैं कि तुम्हारी आंखें देख सकती हैं मगर तुम्हें कुछ नज़र नहीं आता। तुम्हारे कान सुन सकतें हैं मगर ये सच बात नहीं सुनते। तुम्हारा दिमाग़ सोंच सकता हैं मगर उस में वहम और झूटे किस्से भरे हुए हैं, तुमहारी ज़बानें बोल सकती हैं मगर उन के ख़िलाफ़ एक कलमा नहीं कह सकतीं जिन्हों ने तुम्हें ग़ुलाम बना लिया है। उन्हों ने तुम्हें, तुम्हारे घोड़े और ऊंटों को और तुम्हारें जवान बेटों को ख़रीद लिया है। वह तुम्हारे बेटों को इस तरह लड़ाते हैं जिस तरह कुत्तों को लड़ाया जाता है। वह तुम्हारे घोड़ों और ऊंटों को तीरों और बरछियों से छलनी करवा के मर वा देते हैं तुम्हारे बेटों को मरवा कर रेगिसतानों में फैंक देते हैं जहां उन्हें मुरदे खाने वाले परिन्दे और दरिन्दे खा जाते हैं......... मैं वह आंख हूँ जो आने वाले वक़्त को देख सकती है कि इनसानों के दिलों में किया है। मैं वह कान हूँ जो ख़ुदा की आवाज़ सुन सकता है। मैं वह दिमाग़ हूँ जो बनी नोअ इनसान की भलाई की सोंचता है और मैं वह ज़ुबान हूँ जो ख़ुदा का पैग़ाम सुनाती है। मैं ख़ुदा की ज़बान हूँ।"

"किया तू लाफ़ानी भी है जिसे मौत नही आएगी?"...... मजमे में से एक आवाज़ उठी। लोग दम बख़ुद हो गए। बाज़ डर भी गए कि उस शख़स ने इस मुक़द्दस इनसान की बात काट कर उस मुसीबत को आवाज़ दी है जो गावं पर नाज़िल होगी।

"तुम आज़मा लो"...... उस ने कहा......."मेरे सीने में तीर मारो।"

उस की आवाज़ में और अन्दाज़ में जादू का असर था । उस ने फिर कहा ।....." यहां कोई तीर अन्दाज़ है जो मेरे सीने पर तीर चलाए।" हुजूम पर सन्नाटा तारी हो चूका था। उस ने गुसेली और बुलन्द आवाज़ से कहा। ...." मैं हुक्म देता हूँ कि यहां जिस किसी के पास तीर व कमान है वह सामने आ जाए।"

चार तीर अन्दाज़ जो सादिया के गावं के रहने वाले नहीं थे आहिसता आहिसता आगे आए। वह डर से सहमें हुए थे। ...." उस " ने कहा........ " तीस कदम गिन कर चारों मेरे सामने खड़े हो जाओ"........ उन्हों‌ने तीस कदम गिने और उस की तरफ़ मुहं करके खड़े हो गए।

" कमानों में तीर डालो।"

चारों ने तरकशों में से एक एक तीर निकाल कर कमान में डाल लिया।

" मेरे दिल का निशाना ले लो।"

उन्हों ने कमानें सीधी करके निशाना ले लिया।

" ये सोंचे बग़ैर कि मैं मर जाऊंगा पूरी ताकत से कमानें खींचो और तीर चला दो ।"

उन्होने कमानें झुकालीं। उन्हों ने यही सोंचा था कि वह मर जाएगा।

" मेरे दिल का निशाना ले कर तीर चलाओ" ..... उस ने गरज कर कहा। ...." वरना जहां खड़े हो वहीं शोले बन कर भस्म हो जाओगे।"

तीर अन्दाजों ने अपनी मौत के डर से फ़ौरन कमानें उपर कर लीं और उस के दिल का निशाना लिया। देखने वाला हुजूम इस तरह ख़ामोश था जैसे वहां कोई भी ज़िन्दा नहीं था साजों का तरन्नुम इस सकुत में कुछ ज़्यादा ही सेहर आगीं और पुर सूज़ हो गया था। उस के साथ एसे इनसानों की मुतरन्नुम गोंज फिर उभरी जो नज़र नहीं आ रहे थे। .... उस सेहर आगीं मोसीकीयत में चार कमानों की "पंग, पंग" की आवाजें बड़ी साफ सुनाई दीं। चार तीर उस मुकद्दस इनसान के दिल के मुकाम में पेवस्त हो गए। वह खड़ा रहा । उस के बाजू उपर और कुछ फैले हुए थे उस के होंटोंपर मुसकुराहट आगई।

" चार ख़ंजर वाले आगे आजाऐं।" ......उस ने कहा..... " तीर अन्दाज़ चले जाऐं।"

तीर अन्दाज़ हैरान व परीशान चले गए। और चार आदमी एक तरफ़ से सामने आए। उस हुक्म पर कि ख़ंजर हाथ में ले लो और मुझ से पन्द्रह कदम गिन कर मेरे सामने खड़े हो जाओ। वह उस से पन्द्रह कदम दूर जा खड़े हुए उस ने पूछा...... " तुम निशाने पर ख़ंजर फैंकना जानते हो ?" ..... चारों ने जवाब दिया कि वह जानते हैं ।उस ने कहा ....." चारो इकट्ठे मेरे सीने पर ख़ंजर मारो।"

चारों ने पुरी ताकत से खंजर उस पर फेंके। चारों खंजर उस के सीने में लगे और वहीं रहे। खंजरों की नोकें उस के सीने में उतरी हुई थीं और वह खड़ा मुसकुरा रहा था । हुजूम से आवाज़े सुनाई देने लगीं....." आफरीं...... उस के कबज़े में मौत के फरिशते हैं।"

" क्या उसे जवाब मिल गया है जिस ने पूछा था कि मै लाफ़ानी हूँ ?".... उस ने पूछा।

एक आदमी जो सेहराई लिबास मे था दौड़ता हुआ गया और उस के कदमों में सजदा रेज़ हो गया । " उस " ने झुक कर उसे उठाया और कहा....... " जा तुझ पर ख़ुदा की रहमत हो।"

" तो फिर तू मुरदे में भी जान डाल सकता है"..... एक बूढ़े देहातीने आगे आकर कहा.... ." खुदा ने मुझे एक ही बेटा दिया था वह जवानी में मर गया है। मुझे किसी ने बताया था कि तू मरे हुओं को ज़िन्दा कर देता है। मैं अपने बेटे की लाश उठा कर बहुत दूर से आया हूँ। मेरे बुढ़ापे पर रहम कर, उसे जिन्दा करदे"..... बूढ़ा धाड़ें मार कर रोने लगा।

चार आदमी कफ़न में लिपटी हुई एक लाश आगे लाए। लाश दरख़्त की टेढ़ी टेढ़ी टहनियों के बने हुए स्टरेचर पर पड़ी हुई थी। उन्होंने लाश उस के आगे रख दी। उस ने कहा...... " एक मशअल लो। लाश को उठाओं और तमाम लोगों को दियखाओ। कोई यह न कहे कि ये पहले ही जिन्दा था।"

लाश सब के सामने से गुज़ारी गई। उस के मुहं से कफ़न हटा दिया गया था। एक आदमी हाथ में मशाल लिये साथ साथ था। सब ने देखा कि उस का चेहरा लाश की तरह सफ़ेद था। आंखें आधी खुली हुईं और मुंह भी आधा खुला हुआ था। सब ने लाश देख ली तो उसे उस मुक़द्दस इनसान के सामने रख दिया गया। मोसीकी की ले बदल गई और पहले से ज़्यादा पुर सूज़ हो गई "उस" ने बाजू आसमान की तरफ़ किये और बुलन्द आवाज़ से पुकारा।........ " जिन्दगी और मौत तेरे हाथ में है मैं तेरे बेटे का बेटा हूँ। तू ने अपने बेटे को सूली से उतारा और मुझे सलीब का तक़द्दुस अता किया था। अगर तेरा बेटा और उसकी सलीब सच्ची है तो मुझे कुव्वत दे कि मैं इस बदनसीब बूढ़े के बेटे को जिन्दगी दे सकूं।".. .. उस ने झुक कर लाश के कफ़न पर हाथ फेरा, मुहं से कुछ बड़बड़या। फिर लाश के उपर हवा में इस तरह दोनो हाथ फेरे कि उस के हाथ कांप रहे थे। कफन फड़फड़ाने लगा। मुक़द्दस इनसान हवा में उस पर हाथ फेरता रहा। कफ़न और ज़ोर से फड़फड़ाया। बाज़ लोग इस कदर डर गए कि एक दूसरे के क़रीब हो गए। औरतों में से किसी औरत की चीख़ भी सुनाई दी। ये मन्ज़र इस लिये भी भयानक बन गया था कि मुरदे को जिन्दा करने वाले के सीने में चार तरी और चार खंजर उतरे हुए थे।

कफ़न में कुछ और हरकत हुई। लाश बैठ गई। उस ने हाथ कफ़न से बाहर निकाले। हाथों से कफ़न में से चेहरा नंगा किया और आंखें मल कर कहा। ......" क्या में आलमें पाक में पहुचं गया हू ?"

" नहीं!" उसे ज़िन्दा करने वाले ने सहारा देकर उठाया और कहा।....... "अब तुम इसी दुनया में हों जहां पैदा हुए थे। जाओ अपने बाप के सीने से लग जाओ।"

बाप ने दौड़ कर अपने बेटे को बाजूओं में ले लिया। बेताबी से उस का मुहं चूम चूम कर उस ने ज़िन्दा करने वाले के आगे सजदा किया। लोग जो बैठे हुए थे उठ कर खड़े हुए। वह आपस में खुसर फुसर कर रहे थे। उन के सामने कफ़न में लिपटी हुई लाश अपने पावं पर चल रही थी। मुरदा ज़िन्दा हो गया था। बाप ने उसे सारे हुजूम के सामने से गुज़ारा ताकि सब देख लें कि वह ज़िन्दा हो गया है।

" लेकिन मैं और किसी मुरदे को ज़िन्दा नहीं करुगां।" उस ने कहा।......... " ज़िन्दगी और मौत अल्लाह के हाथ में है तुम लोगों को सिर्फ़ ये दिखाने के लिये मैं खुदा का एलची बन

कर आया हूं अभी अभी खुदा से इजाज़त ली है कि थोड़ी सी देर के लिये मुझे ताक़त दे दे कि मैं मरे हुए इनसान में जान डाल सकूं। खुदा ने मुझे ताकत दे दी।

" क्या तुम जंग में मरे हुए सिपाहियों को ज़िन्दा कर सकते हो ?" ..... मजमे में से किसी ने पूछा।

" नहीं " उस ने जवाब दिया ...." जंग में मरने वालों से खुदा इतना ज़्यादा नाराज़ होता हैं कि उन्हें दूसरी जिन्दगी नहीं देता । अगले जहान वह उन्हें दोज़ख की आग में फेंक देता है। मर्द किसी को कत्ल करने के लिये पैदा नहीं किया गया बल्कि इस लिये पैदा किया गया है कि जिस तरह उसे एक बाप ने पैदा किया है उसी तरह वह भी किसी का बाप बने। इसी लिये तुम्हें कहा गया हैं कि चार चार बीबीयां रखो। मर्द और औरत का यही काम है कि बच्चे पैदा करें और जब बच्चे बडे हो जाएं तो उन से बच्चे पैदा कराएं । यही इबादत है।"

❖

जिस वक़्त वह मोअज्ज़े दिखा रहा था उस वक़्त दो आदमी टीले के पीछे उस जगह छिपे हुए थे जहां रंग बिरंग के ख़ीमें नसब थे। किसी ख़ीमें में से लड़कियों की बातें और हंसी सुनाई दे रहीथी । ये दो आदमी इमाम और महमूद बिन अहमद थे। महमूद को यकीन था कि सादिया यहीं कहीं है। महमूद में इतनी मज़हबी सूझ बूझ नही थी । वह खुदा के इस एलची के मुतअल्लिक कोई राय काएम करने के काबिल नहीं था। इमाम ने कहा था कि कोई इनसान मरे हुऐ को जिन्दा नहीं कर सकता । उस ने तवज्जोह ही नहीं दी थी कि ये पुर असरार आदमी लोगों को किया दिखा रहा हैं उस ने उस से ये फ़ाईदा उठाया था कि लोग उस की करामात देखने में मगन हैं इस लिये पीछे जाकर ये देखा जाए कि उस में राज़ किया है। उस की तवज्जोह सिर्फ़ सादिया पर थी। महमूद सिर्फ़ सादिया को ढुंढ रहा था । खीमों की जगह अन्धेरा था सिर्फ़ तीन ख़ीमों में रोशनी थी । तीनों के परदे दोनो तरफ़ से बन्द थे। वहां पहरे का कोई ख़ास इन्तेज़ाम नहीं था । दो तीन मर्द बातें कर रहे थे। ये ख़तरा साफ़ नज़र आ रहा था कि वह दोनो किसी को नज़र आगए तो वह ज़िन्दा नही रहेंगें टीले की दूसरी तरफ़ से " उस" की आवाज़ सुनाई दे रही थी और साज़ों का तरन्नुम भी सुनाई दे रहा था। लेकिन ये पता नही था कि साज़िन्दे कहां हैं।

इमाम और महमूद ने रोशनी वाले एक ख़ीमें के करीब जाकर लड़कियों की बातें सुनने की कोशिश की। उन की बातों ने उन का हौसला बढ़ा दिया । एक निसवानी आवाज़ कह रही थी ...." यहां भी तमाशा कामयाब रहा है"..........एक और लड़कि ने कहा। .... "बड़ी ही जाहिल कौम है।"

" मुसलमान को तबाह करने का तरीका यही है कि उसे शोबदे दिखा कर तौहुम परस्त बना दो"......... ये एक और औरत की आवाज़ थी।

" मालूम नहीं वह किस हाल में है ?"

" कौन ?"

" नई चिड़या !" ....एक लड़की ने कहा........ " तुम सब को मानना पड़ेगा कि वह हम

सब से ज़्यादा ख़ूबसूरत है।"

" वह आज दिन को भी रोती रही थी ।" किसी लड़की ने कहा।

" आजरात उस का रोना बन्द हो जाऐगा। "...... एक लड़की ने कहा ...." उसे ख़ुदा के बेटे के लिये तैयार क़िया जा रहा है"

लड़कियों का क़हक़हा सुनाई दिया। एक ने कहा...... ख़ुदा भी किया याद करे गा कि हम ने उसे कैसा बेटा दिया है। कमाल इनसान है।"

उस के बाद लड़कियों ने आपस में फहश बातें शुरू कर दीं। इमाम और महमूद समझ गये कि नई चिड़या सादिया ही हो सकती है। उन्हें बहर हाल यक़ीन हो गया कि ये सब शोबदा बाज़ी है और ये ढोंग पसमान्दा मुसलमानों को गुमराह करने के लिये रचाया जा रहा है। इमाम ने महमूद के कान में कहा........" इन लड़कियों की उरयां बातें और शराब की बू बता रही है कि ये कौन लोग हैं और किया हो रहा है...... हम वेसे ही नहीं भटक रहें हैं।"

वह दोनो बड़े ख़ीमे के क़रीब चले गए। ये ख़ीमा एक टीले के साथ था और ये टीला तक़रीबन उमूद था। टीले और ख़ीमें के पिछले दरवाज़े के दरमियान एक आध गज़ का फ़ासला था। उन्हों ने इस जगह जाकर देखा। ख़ीमें के परदे दरमियान में रस्सीयों से बंधे हुए थे। एक आंख से झाकंने की जगह थी। उन्हों ने झांका तो उन के शुकूक रफ़ा हो गए। अन्दर एक एसी मसनद थी जिस पर ख़ुशनुमा मसनद पोश बिछा हुआ था। फ़र्श पर क़ालीन बिछा हुआ था। और दो क़न्दीलें जल रही थीं। एक तरफ़ शराब की सुराही और पियाले रखे हुए थे अन्दर की सजावट और शान व शौकत से पता चलता था कि इस मुशतब्बा काफ़ले के सरदार का ख़ीमा है। सादिया के पास एक औरत और एक मर्द था। सादिया को दुलहन की तरह सजाया जा रहा था।

" आज दिन भर तुम रोती रही हो।" औरत उसे कह रही थी......... " थोड़ी देर बाद तुम हंसोगी और अपने आप को पहचान भी नहीं सकोगी। तुम ख़ुश नसीब हो कि उस ने जो ख़ुदा की तरफ़ से ज़मीन पर उतरा है तुम्हें पसन्द किया है। वह सिर्फ़ तुम्हारे लिये यहां आया है। उस ने तुम्हें बीस रोज़ की जितनी दूर से ग़ैब की आंखों से देखा था। तुमहारे गावं में उसे ख़ुदा लाया है। अगर ये न आता तो तुम किसी सेहराई गडेरीये के साथ बियाह दी जातीं या तुम्हें बुरदह फ़रोशों के हाथ बेच दिया जाता।"

सादिया पर उन बातों का जादू सवार होता जा रहा था। वह ख़ामुशी से सु न रही थी। महमूद जोश में आ चला था। इमाम नेउसे रोक लिया। वह देखना चाहता था कि सादिया को किस के लिये तैयार किया जा रहा है। ज़्यादा देर नहीं गुज़री थी कि टीले की दूसरी तरफ़ से किसी ने एलान किया ......" वह जो ख़ुदा का भेजा हुआ पैग़म्बर है और जिस के हाथ में हम सब की जिन्दगी और मौत है और जिस की आँख ग़ैब के भेद देख सकती है, तारीक रात में आसमान पर जारहा है, जिस के सितारे ख़ुदा की आँख की तरह रौशन हैं। तुम में से कोई आदमी उस तरफ़ न देखे जहां ख़ीमें लगे हुएं हैं। टीलों के उपर कोई न जाए। जिस किसी ने उस तरफ़ जाने या देखने की कोशिश की वह हमेशा के लिये अंधा हो जाएगा। कल

रात वह तुम सब की मूरादें सुनेगा।"

इमाम और महमूद वहीं खड़े रहे। खीमें के अन्दर जो मर्द औरत थे उन्हों ने सादिया को एक बार फिर नसीहत की कि वह आ रहा है। उस के सामने कोई बद तमीजी न करना...... वह आगया । वह सामने की तरफ़ से खीमें में दाख़िल हुआ। इमाम और महमूद ये देख कर हैरान रह गए कि उस के सीने में चार तीर और चार खंजर उतरे हुए थे। सादिया ने तीर और खंजर देखे तो उस ने ख़ोफ से कानों पर हाथ रख लिये। उस की हलकी सी चीख़ सुनाई दी । मुकद्दस इनसान मुसकूराया और बोला। .... "डरो मत लड़की! ये मौअज्ज़े मुझे खुदा ने दी है कि मैं तीरों और खंजर से मर नही सकता ।"...... वह सादिया के साथ लग कर बैठ गया।

" मैं ने ये शोबदा एक बार काहिरा में देखा था।" इमाम ने महमूद के कान में कहा......" तुम भी डर न जाना। मैं जानता हूँ तीर और खंजर कहां फंसे हुऐ हैं।"

" वह उठा और ख़ीमें का परदा रस्सीयों से बांध दिया ।इधर महमूद और इमाम ने अपनी तरफ़ से खीमे का परदा खोल दिया उन्हों ने नताएज की परवा न की दबे पावं अन्दर आ गए। जूंही वह शख़्स पीछे मुड़ा वह इमाम और महमूद के शिकन्जे में आ चूका था। महमूद ने दबी आवाज़ में सादिया से कहा........" जिस पर तुम बैठी हो उस का कपड़ा इस के उपर डाल दो। "सादिया तो जैसे सुन हो गई थी । उस ने मसनद पोश उतार कर उसी आदमी पर डालदिया । उस का जिस्म ताक़तवर नज़र आता था। मगर इमाम और महमूद ने उसे बुरी तरह जकड़ लिया था। फिर उस के उपर कपड़ा डाल कर बांध दिय गया। कंदीलें बुझा दी गई। इमाम के कहने पर पहले सादिया बाहर निकली ।अपने कैदी को महमूद ने अपने कंधों पर फेंक लिया। इमाम हाथ में खंजर लिये आगे आगे चला। वह सब जिस तरफ़ से ख़ीमें में दाख़िल हुए थे उसी तरफ़ से बाहर निकल गए। पकड़े जाने का ख़तरा हर क़दम पर था। लेकिन उन्हों ने ऐसा रासता इखतियार किया जो उन्हें फ़ौरन ख़तरे से बाहर ले गया। अंधेरे ने उन की बहुत मदद की।

❖

उन्हें दूर का चक्कर काट कर गावं में दाख़िल होना पड़ा। वह मस्जिद में चले गएं। हुजरे में ले जाकर उस शोबदा बाज़ को खोला गया। अभी तक तीर और खंजर उस के सीने में उतरे हुए थे। उसे उठाने की वजह से वह टेढ़े हो गए थे। सादिया को भी उन्हों ने हुजरे मे ही रखा क्योंकि ख़तरा था कि लड़की की गुमशुदगी का पता चल गया तो वह लोग उस के बाप पर आ हमला करेंगें। दर असल हमला करने वाले अब ये देखने की हालत में भी नहीं थे कि उन के "खुदा" का बेटा कहां है। वह कामयाब जश्न मना कर शराब और बद कारी में बद मस्त हो गए थे। वह सोंच भी नहीं सकते थे कि उन का आका बमआ नई चिड़या के अग़वा भी हो सकता है।

इमाम और महमूद ने उसे चुगा उतारने को कहा। उस ने पहले तीर और खंजर खींच कर निकाले। चुगा उतारा फिर उस से अन्दर वाले कपड़े भी उतरवा लिये गये। उन कपड़ों में

कार्क की तरह नर्म लकड़ी छुपी हुई थी। जिस पर चमड़ा लगा हुआ था। ये लकड़ी कुछ दोहरी हो जाती थी और इतनी लम्बी चोड़ी थी जिस से उस का सीना ढक जाता था। तीर और खंजर उस में उतरे हुए थे उस ने इमाम और महमूद से कहा......" अपनी क़ीमत बताओ। सोने की सूरत में घोड़ों आर ऊंटों की सूरत में , अभी अदा कर दुंगा, मुझे अभी आज़ाद कर दो।"

" तुम अब आज़ाद नही हो सकते।" इमाम ने कहा...... " हम भी लोगों की तरह तुम्हारे इन्तेज़ार में बैठे थे।" .... इमाम ने महमूद से कहा।......" तुम्हें मालूम होगा कि करीबी चौकी कहां है। वहां के पूरे दसते को साथ ले आओ।" उस ने चौकी का फ़ासला और सिम्त बताई और वह खुफ़्या अलफ़ाज भी बताए जिन से इमाम सुरागसां और जासूस की हैसियत से पहचाना जाता था। उसने दो जासूसों के नाम और ठिकाना बता कर महमूद से कहा। .... " उन्हें मेरे पास भेजते जाना।"

महमूद नेइमाम के घोड़े पर ज़ीन डाली और सवार हो कर निकल गय। उसे इमाम के दोनों जासूस मिल गए। उन्हें मस्जिद में जाने को कह कर वह चौकी की सिम्त रवाना हो गया। गांव से कुछ दूर जाकर उस ने घोड़े को एड़ लगाई। कोई ढेढ़ घंटे की मुसाफ़त थी। मगर वह शश व पंज में मुबतला था। वह उस चौकी के कमाण्डर को जानता था। वह लापरवाह आदमी था। सलीबीयों और सूडानीयों नेउसे रिशवत दे दे कर अपने साथ मिला रखा था। महमूद ने काहरा को उस की रिपार्ट भेज दी थी मगर अभी तक उस के ख़िलाफ़ कोई कारवाई नहीं हुई थी। महमूद को यही नज़र आ रहा था कि वह अपने दसते को उस के साथ न भेजेगा या वक़्त ज़ाए करेगा ताकि दुश्मन निकल जाएं महमूद सोंच रहा था कि अगर चौकी से उसे दसता न मिला तो वह किया करेगा। सुबह से पहले दसते का गावं में पहुचना ज़रूरी था। दसता न मिलने की सूरत में इमाम और उनके जासूसों की जानें ख़तरे में आ सकती थीं क्योंकि उस शोबदा बाज़ के साथ बहुत सारे आदमी थे। उस के मुरीदों का हूजूम भी उसी का हामी था।

इमाम के पास खंजर था। उस के जासूस भी उस के पास आगए थे। वह भी खंजरों से मुसल्लह थे। उन्हों ने शोबदे बाज़ को गिरफ़तार किये रखा। वह रिहाई की इतनी ज़्यादा क़ीमत पेश कर रहा था जो इमाम और उस के जासूस ख़ाब में भी नहीं देख सकते थे। इमाम ने उसे कहा।......" मैं मस्जिद में बैठा हूँ। ये उसी खुदा का घर है जिस ने तुम्हें सच्चा दीन दे कर ज़मीन पर उतारा है। किया ये है तुम्हारा सच्चा दीन ?........ देखो दोस्त! मैं काहरा की हुकूमत का अहले कार हूँ। मैं तुम्हें छोड़ नहीं सकता और मैं इमान भी नहीं बेच सकता।"

महमूद बिन अहमद चौकी के ख़ीमों में दाख़िल हुआ तो कमाण्डर के ख़ीमें में उस ने रौशनी देखी घोड़े के कदमों की आवाज़ सुन कर कमाण्डर बाहर अगया। महमूद ने अपना तआरुफ़ कराया और कमाण्डर के साथ ख़ीमें में चला गया। महमूद के लिये ये कमाण्डर अजनबी था। उसे कमाण्डर ने बताया कि गुज़शता शाम पुराने दसते को यहां से भेज दिया गया है और ये दसता नया आया है। ये तबदीली सलाहुद्दीन अय्यूबी के हुक्म से की गई थी।

तमाम पुराने सरहदी दसतों को वहां से हटाकर उस फ़ौज के दसते भेज दिये गये थे। जो सुलतान अय्यूबी के साथ मुहाज़ से आई थी। महमूद ने कमाण्डर को तफ़सील से बताया कि उन्हों ने बहुत बड़ा शिकार पकड़ा है और उस के तमाम गिरोह को पकड़ने के लिये चौकी के पूरे दसते की फ़ौरी तौर पर ज़रूरत है ताकि उन लोगों को रात ही रात में घेरे में ले लिया जाए।

कमाण्डर ने फ़ौरन पूरे दसते को जिस की तादाद पचास से ज्यादा थी घोड़ों पर सवार होने का हुक्म दिया। उन के पास बरछियां और तलवारें थीं। और उन में तीर अन्दाज़ भी थे। आठ दस सीपाहियों को चौकी पर छोड़ दिया गया। ये दसता करक के मुहासरे से आया था। जज़्बा क़ाएम था। कमाण्डर ने सरपट घोड़े दौड़ा दिये। महमूद राहनुमाई कर रहा था। मनज़िल के क़रीब जाकर घोड़ों की रफ्तार सुसत कर दी गई ता कि मुजरिमों को ख़बर न होने पाए। मुजरिम ख़बर होने की हालत में नहीं थे। शराब और नीन्द ने उन्हें बेहोश कर रखा था। कमाण्डर ने महमूद की राहनुमाई में घेरा मुकम्मल कर लिया और कारवाई सुबह तक मुलतवी रखी। महमूद ने इमाम को इत्तेला दे दी कि दसता आगया है। सादिया अभी इमाम के हुजरे में ही थी इमाम ने एक जासूस भेजकर सादिया के बाप को भी बुला लिया।

❖

जो मोतक़िद, मूरीद और ज़ाएरीन बड़ी दूर दूर से "उस" की ज़ियारत को आए थे वह रात के मोअज्ज़े देख कर खुले आसमान तले सो गए थे। उन के मुक़द्दस इनसान ने उन्हें कहा था कि अगली रात वह उन की मुरादें सुनेगा। ये हुजूम सुबह उस वक़्त जाग उठा जब उजाला अभी धुंधला था। उस धुंधलके में उन्हें बहुत से घोड़े नज़र आए। उन पर सवार जो थे वह फ़ौजी लगते थे। लोग कुछ भी न समझ सके। उन्हें मालूम नही था कि जो मरे हुओं को ज़िन्दा करता है वह मस्जिद के हुजरे में हाथ पावं बंधे बैठा है। वह अब मुसलमानों के सच्चे खुदा की गिरफ़्त में आ चुका था दसते का कमाण्डर दमिशक़ का रहने वाला रुश्द बिन मुसलिम जिस का ओहदा मामूली था लेकिन सरहद पर आकर उस ने अपने दसते से कहा था।....." सारी सलतनत सिर्फ़ तुमहारे भरोसे पर होती है। सलाहुद्दीन अय्यूबी हर वक़्त तुम्हारे साथ है। अगर वह तुम्हें नज़र नहीं आता तो उसे मेरी आखों में देख लो। हम सब सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी हैं। अगर किसी ने यहां पुराने दसते के आदमियों के तरह ईमान फ़रोख़्त किया तो मैं उस के पावं बांध कर रेगिसतान में ज़िन्दा फैंक दूंगा। मैं इस सज़ा का हुक्म क़ाहिर से न लुंगा। मैं खुदा से हुक्म लिया करता हूँ।"

रुशद बिन मुसलिम ने सुबह के वक़्त देखा कि ख़ीमों के अन्दर कोई हरकत नही थी। अन्दर वाले इतनी जलदी उठने वाले नही थे। रुशद ने लोगों से कहा कि वह दूर पीछे हट जाएं और वहीं मौजूद रहें। उन्हें मुक़द्दस इनसान क़रीब से दिखाया जाएगा। लोगों को दूर हटाकर रुशद ने तीन चार सवार मुख़तलिफ़ टीलों के ऊपर खड़े कर दिये। ताकि मुजरिमों में से कोई भागने की कोशिश न करे। बाकी सवारों को उस ने घोड़ों से उतार कर चारों तरफ़ से पैदल अन्दर जाने को कहा और हुक्म दिया कि कोई मज़ाहिमत करे तो उसे फ़ौरन

हलाक कर दो। कोई भागे तो उसे तीर मार दो। ....वहां भागने का सवाल ही पैदा नही होता था। रुशद नंगी तलवार हाथ में लिये पहले ख़ीमें में दाख़िल हुआ तो अन्दर उसे एक नीम बरहना लड़की और दो आदमी गहरी नीन्द में सोए हुए नज़र आए। उसने तलवार की नोक चुभोकर तीनों को जगाया। जागने की बजाए उन्हों ने जगाने वाले को गालियां दीं। और करवट बदल कर सो रहे। ।तलवार की नोक अब के उन के खाल में उतर गई ।तीनों हड़ बड़ा कर उठे। उन्हें बाहर निकाल लिया गया। दूसरे ख़ीमों में भी जो लड़कियां और मर्द मिले वह उसी हालत में थे ।ख़ीमों में बे शुमार सामान था। एक ख़ीमें में बहुत से साज़ पड़े थे।

सब को बाहर ले जाकर उन पर पहरा खड़ा कर दिया गया। उन के ऊंटों और तमाम तर सामान पर कबजा कर लिया गया। इमाम रुशद बिन मुसलिम के साथ था। वह उस आदमी को अपने हुजरे में से ले आया जो अपने आप को खुदा के बेटे का बेटा कहता था उस के हाथ पीठ पीछे बंधे थे ।उसे उसी जगह खड़ा किया गया जहां रात उस ने मोअज्ज़े दिखाए थे । पीछे परदे लगे हुए थे। उस के गिरोह को उस के सामने बिठा दिया गया। उन सब के हाथ पीछे बांध दिये गये थे। वह साज़ उन के करीब रख दिये गये जो एक ख़ीमे से बरआमद हुए थे इमाम ने लोगों को आगे आने को कहा। हुजूम आगे आया तो इमाम ने कहा......" उसे कहो ये खुदा का एलची है या उस का बेटा है तो अपने हाथ रस्सियों से आज़ाद कर ले ये मरे हुओं को ज़िन्दा करता हैं मै उस के गिरोह के एक आदमी को हलाक करुंगा ।तुम उसे कहो कि उसे मेरे हाथ से छुड़ा ले या वह मर जाए तो उसे ज़िन्दा करदे।"...... इमाम ने उस के गिरोह के एक आदमी को उठाया और रुशद की तलवार ले कर उस की तरफ़ बढ़ा तो वह आदमी चिल्ला उठा......" मुझे बख़्श दो। ये आदमी मुझे जिन्दा नही कर सकेगा। ये बहुत बड़ा पापी है खुदा के लिये मुझे कत्ल न करना।"

लोगों ने ये तमाशा देखा मगर उन के वहम अभी दूर नही हुए थे। इमाम उस आदमी का चूग़ा और कपड़े भी साथ ले आया था। नर्म लकड़ी भी साथ थी। इमाम ने ये कपड़े पहन लिये। किसी को दिखाए बेगैर लकड़ी अन्दर रख ली। ऊपर चूग़ा पहन लिया। उस ने रुशद से कहा कि अपने चार तीर अन्दाज़ मेरे सामने लाओ। तीर अन्दाज़ आए तो उस ने उन्हें कहा। ...." तीस कदम दूर खड़े होकर मेर दिल का निशाना लो और तीर चलाओ।"......... तीर अन्दाजों ने रुशद बिन मुसलिम की तरफ़ सवालया निगाहों से देखा। रात को महमूद ने रुशद को तीरों और खंजरों के सीने में उतरने की हकीक़त बता दी थी। रुशद ने अपने तीर अन्दाजों को हुक्म दिया कि वह तीर चला दें। उन्हों ने निशाना लेकर तीर चला दिये। चारों तीर इमाम के दिल के मुक़ाम में पैवस्त हो गए। इमाम ने कहा ......' अब आगे आकर मेरे सीने पर चार खंजर पूरी ताक़त से फैंको।"..... खंजर फैंके गए जो इमाम के सीने में जाकर अटक गये।

इमाम ने तीर अन्दाजों से कहा " एक एक तीर और कमान में डालो'..... उस ने मुकद्दस इनसान, को ज़रा आगे किया और लोगों से मुख़ातिब होकर बुलन्द आवाज़ से कहा ......" ये

शख़्स अपने आप को लाफानी कहता है। मैं तुम्हें दिखता हूँ कि ये असल में किया है"....... उस ने तीर अन्दाजो से कहा। .... " इसके दिल का निशाना लेकर तीर चलाओ !"

जूंही कमानें ऊपर उठीं वह आदमी दौड़ कर इमाम के पीछे हो गया। वह मौत के डर से थर थर कांप रहा था और भिकारियों की तरह जान की बखशिश मांग रहा था। इमाम ने उसे कहा........." आगे आओ और लोगों को बताओ, कि तुम सलीबीयों के भेजे हुये तख़रीबकार हो और तुम शोबदा बाज़ हो।" ......इमाम ने तलवार की नोक उस के पहलू से लगादी।

" लोगो !".. उस आदमी ने आगे जाकर बुलन्द अवाज़ से कहा। ......" मैं लाफानी नहीं हूं। मैं तुम्हारी तरह इनसान हूं। मुझे सलीबीयों ने भेजा है कि तुम्हारा ईमान ख़राब करूं। उस की मुझे उजरत मिलती है।"

" और शमउन की बेटी सादिया को इसी ने अग़वा कराया था।" इमाम ने कहा। " हम ने लड़की को रिहा करा लिया है।"

इमाम ने चुग़ा उतारा। अन्दर के कपड़े उतारे। लकड़ी अलग की और रुशद के एक सीपाही के हाथ में दे कर कहा कि ये तमाम मजमे में घुमा लाओ। इमाम ने लोगों से कहा कि तीर और ख़ंजर उस लकड़ी में लगते हैं। ..... तमाम लोगों ने ये भेद देख लिया तो उन्हें आगे बुला कर कहा गया कि हर जगह घूमो और हर एक चीज़ देखो। लोग डरते हुए हर जगह फैल गए। परदों के पीछे एक ग़ार बनाया गया था। वहां रात को साज़िन्दे बैठ कर साज़ बजाते हैं. ...... लोग खीमों में गए तो वहां शराब की बदबू फैली हुई थी। लोग हर जगह घूम फिर चुके तो उन्हें एक जगह बैठाकर बताया गया कि ये सब ढोंग किया था। इमाम ने मालुम कर लिया था कि जिसे उस ने रात को ज़िन्दा किया था वह कौन है वह उसी के गिरोह का एक आदमी था जो रस्सियों में बंधा हुआ कैदियों में बैठा था। उसे लोगों के सामने खड़ा किया गया। एक और आदमी लोगों को दिखाया गया, जो रात को बूढ़े का बहरूप धारकर उस आदमी का बाप बना था। चार तीर अन्दाज़ भी सामने आगए जिन्होंने रात तीर चलाए थे। वह भी उसी के गिरोह कि आदमी थे। ग़र्ज़ तमाम तर ढोंग लोगों को दिखाया गया।

" इसलाम के बेटो ! ग़ौर से सुनो।" इमाम ने लोगों से कहा...... " ये सब सलीब के पुजारी हैं और तुम्हारा ईमान ख़राब करने आए हैं। तुम जानतें हो कि कोई इनसान किसी इनसान को ज़िन्दा नही कर सकता। ख़ुद ख़ुदा किसी मरे हुऐ को ज़िन्दा नहीं करता कियोंकि ख़ुदाए ज़ुलजलाल अपने बनाऐ हुए क़ानून का पबन्द है। उस की ज़ात वहदहू ला शरीक है। उस का कोई बेटा नहीं। ये सलीबी इसलाम की आवाज़ को दबाने के लिये ये हथकण्डे इसतेमाल कर रहें हैं। ये बातिल के पुजारी तुम्हारे ईमान और जज़्बे से और तुम्हारी तलवार से डरते हैं। तुम्हारा मुक़ाबला मैदान में नही कर सकते, इस लिये ये दिलकश तरीक़े इख़तियार करके तुम्हारे दिलों में वहम और वसवसे डाल रहे हैं ताकि तुम इसलाम के तहफ्फ़ुज़ के लिये सलीब के ख़िलाफ़ तलवार न उठा सको। इसी मिस्र में फ़िरऔन ने अपने आप को ख़ुदा कहा था। हज़रत मुसा अलैहिरसलाम ने उस की ख़ुदाई को दरया नील में डुबो दिया था। अपनी अज़मत को पहचानों मेरे दोसतो ! अपने दुशमन को भी अच्छी तरह पहचान लो।"

लोग जो सब के सब मुसलमान थे मुशतअिल हो गए। वह चूंकि पसमान्दह और इल्म से बे बहरा थे इस लिये इन्तेहा पसन्द थे उन्हों ने गुनाहगर इनसान की शोबदा बाज़ी देख कर उसे "खुदा का बेटा" तसलीम कर लिया और जब उस के ख़िलाफ़ बातें सुनीं तो ऐसे मुशतअिल हुए कि ग़ैज़ व गज़ब से नारे लगाते उस आदमी पर और उस के गिरोह पर टूट पड़े इमाम उन मुजरिमों को ज़िन्दा काहिरा ले जाना चाहता था लेकिन इतने बड़े हुजूम से उन्हें ज़िन्दा निकालना ना मुमकिन होगया। रुशद नेतशद्दुद से हुजुम पर काबू पाने का मशवरा दिया जो इमाम ने तसलीम नही किया। उस ने कहा कि तुम्हारी तलवारों से ये सीधे साधे मुसलमान कट जाऐंगे। उन्हें अपने हाथों उन लोगों को हलाक करने दो ताकि उन्हें यकीन हो जाए कि जिस ने खुदा का ऐलची और बेटा होने का दावा किया है वह एक गुनाहगार इनसान है जिसे कोई भी इनसान कत्ल कर सकता है।

इमाम रुशद बिन मुसलिम और महमूद एक तरफ़ हट गये। रुशद ने एक टीले पर जाकर अपने सीपाहियों को ललकारा और कहा। ...... "तुम जहां हो वहीं रहो। उन लोगों को मत रोको।"

थोड़ी ही देर बाद इमाम, महमूद, रुशद बिन मुसलिम और उस के दसते के सीपाही रह गये। तमाम हुजूम ग़ाएब हो चूका था। रात जहां शोबदे दिखाए गये थे वहां शोबदे बाज़ और उसके गिरोह की लाशें पड़ी थीं। लड़कियों को भी कत्ल कर दिया गया था। कोई लाश पहचानी नहीं जाती थीं सब कीमा हो चूकी थीं। लोग ख़ीमें परदे और तमाम तर सामान लूट ले गऐ थे मुजरिम गिरोह के ऊंट भी लोग खोल ले गऐ। और रुशद के दसते के नौ घोड़े भी ला पता होगऐ। उन के सवार पियादह थे और घोड़ों से दूर। लोगों को मालूम नही था कि ये अपनी फ़ौज के घोड़े हैं। यूं लगता था जैसे आंधी आई हो और सब को अपने साथ उड़ा ले गई है।

"हमें अब काहरा चलना पड़ेगा।" इमाम ने रुशद और महमूद से कहा। "ये वाक़िया हुकूमत के सामने रखना होगा।"

❖

इन चन्द ही दिनो में सलाहुद्दीन अय्यूबी ने जो इहकाम नाफ़िज़ किये और जो इक़दाम किये वह इनक़लाबी थे। इतने इनक़लाबी के उस के क़रीबी दोस्त और मुरीद भी चौंक उठे। उस ने सब से पहले उन अफ़सरों के घरों पर छापे मरवाए। और तलाशी ली जो अली बिन सुफ़यान और ग़ियास बिलबिस की मुशतबहा फ़हरिस्त मे थे। उन में दो तीन मरकज़ी कमान के आला हाकिम थे। उन के घरों से ज़रो जवाहरात, दौलत और बड़ी ख़ूबसूरत ग़ैर मुजकी लड़कियाँ बर आमद हुईं। बाज के घरों में एसे मुलाज़िम थे जो सूडान के तजरबा कार जासूस थे और भी कई एक सूबूत मिल गए। उन सब को सुलतान अय्यूबी ने ओहदे और रुतबे का लिहाज़ किये बग़ैर ग़ैर मुअय्यना मुद्दत के लिये कैद ख़ाने में डाल दिया और हुक्म दिया कि उन के साथ अख़लाकी मुजरिमों जैसा सुलूक किया जाए। इस इक़दाम से उस की मर्कज़ी कमान और मजलिसे मुशावरत की चन्द एक अहम आसामियां ख़ाली हो गईं। उन ने ज़र्रह

भर परवाह न की ।

सुलतान अय्यूबी ने दूसरा हमला उस गिरोह पर किया जो अपने आप को मज़हब का इजारह दार बनाए हुए था। सुलतान अय्यूबी को मुशीरों ने खुलूसे निय्यत से मशवरा दिया कि मज़हब एक नाज़ुक मामला है। लोग मस्जिदों के इमामों के मुरीद है। राए आमा ख़िलाफ़ हो जाएगी । सुलतान अय्यूबी ने पूछा........" उन में कितने हैं जो मज़हब के रूह को समझते हैं। लोग उन के मुरीद सिर्फ़ इस लिये बन गये हैं कि उन की सारी कोशिशें उन पर मरकूज़ हैं कि लोग उनके मुरीद बन जाऐं। मैं जानता हूं ये इमाम अपनी अज़मत क़ाएम करने के लिये लोगों को असल मजहब से बे बहरा रखतें हैं। क़ौम की बेहतरीन दरसगाह मस्जिद है। मस्जिद की चहारदीवारी में बिठा कर किसी के कान में डाली हुई कोई बात रूह तक उत्तर जाती है। ये मस्जिद का तकद्दुस का असर है । मगर यहां मस्जिद का इसतेमाल ग़लत हो रहा है। मस्जिदों में इमाम पीर और मुरशिद बनते जा रहे हैं। अगर मैं ने मस्जिदों में बाअमल आलिम न रखे तो कुछ अर्से बाद लोग इमामों पीरों और मुरशिदों की परसतिश करने लगेगें। ये बे इल्म और बे अमल आलिम अपने आप को खुदा और उस के बन्दों के दरमियान राब्ते का ज़रया बना लेगें और इसलाम के ज़वाल का बाअस बनेगें।"

सुलतान अय्युबी ने अपने एक मुफक्किर और बा अमल आलिम ज़ेनुद्दीन अली बिन नजाउल वाइज़ को मशवरा के लिये बुलाया। उस आलिम ने अपना जासूसी का एक ज़ाती नीज़ाम क़ाएम कर रखा था और एक बार उस ने सलीबीयों के एक बड़ी ही ख़तरनाक साज़िश बे निक़ाब करके बहुत से आदमी गिरफ्तार कराए थे। वह मज़हब को और मज़हब में जो तख़रीब कारी हो रही है उसे बहुत अच्छी तरह समझता था। उस ने ये कह कर सुलतान अय्यूबी का होसला बढ़ा दिया कि अगर आज मज़हब को तख़रीब कारी से आज़ाद नही करेगें तो कल आपको ये हकीक़त कुबूल करनी पड़ेगी कि क़ौम आप की राहनुमाई और हुक्म को क़ुबूल करने से पहले नाम निहाद मज़हबी पेशवाओं से इजाज़त लिया करेगी। इस वक़्त सलीबी मुसलमानों के मज़हबी नज़रयात में तौहुम परसती और रस्म व रिवाज की मिलावट कर चुके हैं ..... सुलतान अय्यूबी ने फ़ौरी तौर पर तहरीरी हुक्म नाफिज़ कर दिया कि ज़ैनुद्दीन अली बिन नजाउल वाईज़ की ज़ेरे निगरानी मुलक की तमाम मस्जिदों के इलमी और मुआशरती जांच पड़ताल होगी और नए इमाम मुकर्र किये जाऐंगे। नए इमामों की तकर्रुरी के लिये सुलतान अय्यूबी ने जो शराएत लिखीं उन में इमाम का आलिम होने के इलावह फ़ौजी या साबिक फ़ौजी या असकरी तरबियत याफ्ता होना ज़रूरी क़रार दिया। सुलतान अय्यूबी फ़लसफ़ा और असकरी जज़बे को मज़हब और मस्जिद से अलग नहीं करना चाहता था।

उसने मुलक में एसे तमाम खेल तमाशे और तफरीह के ज़राए और तरीके जूर्म क़रार दे दिये जिन में जूए बाज़ी और तख़रीबी सुकून का पहलू निकलता था। उस के हुकम से अली बिन सुफ़यान के मोहकमे ने तफ़रीह गाहों और उन के ज़ेरे ज़मीन हिस्सों पर छापे मारे जहां से इटली के मुसव्विरों की बनाई हुई नन्गी तसवीरें बर आमद हुई। बहुत से लोग गिरफ्तार किये गये जिन्हें मुल्क दुशमनी और दुशमन का आला कार बनने के इलज़ाम में तमाम उमर

के लिये तह खानों में डाल दिया गया। उस की बजाए सुलतान अय्यूबी ने तेग़ ज़नी, तीर अन्दाजी, घुड़ सवारी, बग़ैर हथयार लड़ाई, कुशती जिसे पन्जा आजाई कहते थे और एसे ही चन्द एक खेलों के मुकाबलों का सरकारी इन्तेज़ाम करदिया। पहले मुकाबले में खुद गया और अव्वल आने वाले को आला नस्ल के घोड़े तक इनाम में दिये। उस ने दरस गाहों और मस्जिदों में तालीमी मुक़ाबलों का इहतमाम किया।

सरहदी दसतों पर उस ने ज़यादा तवज्जह दी थी। उसे मालूम हो चूका था कि शहरों और दारुल हुकुमत से दूर रहने वाले लोग नज़रयाती तख़रीब कारी का शिकार जल्द होते हैं और वही सब से पहले दुशमन के हमले या सरहदी झड़पों की ज़द में आते हैं। उन लोगों के नज़रयाती और जिसमानी तहफ्फुज़ के लिये उस ने खुसूसी इन्तेज़ाम किये उस ने सरहदों पर जो दसते भेजे थे, उन के कमाण्डरों को उस ने खुद हिदायात दीं और बड़े ही सख़्त इहकाम दिये थे। ये तमाम कमाण्डर जज़बे और ज़ेहानत के लिहाज़ से सारी फौज में मुनतख़ब किये गये थे। रुश्द बिन मुसलिम उन्हीं में से था जिसे महमूद का इशारा मिला कि एक तख़रीब कार पकड़ा है तो वह पूरे का पूरा दसता ले कर उठ दौड़ा था। अगर पुराना कमाण्डर होता तो उस वक़्त सलीबीयों या सूडानियों की दी हुई शराब में बदमस्त होता और तख़रीब कार अपने सरग़ना की रिहाई के लिये गावं में तबाही फैलाकर ग़ाएब हो चुके होते।

अब रुश्द बिन मुसलिम, महमूद बिन अहमद और इमाम जिसका नाम युसूफ बिन आज़र था उस के कमरे में बैठे उस शोबदा बाजी की कहानी सुना रहे थे जिसे लोग क़त्ल कर चुके थे। अली बिन सुफ़यान भी मौजूद था। उस ने तीनों से सारी वारदात सुन ली थी और सुलतान अय्यूबी के पास ले गया था। सुलतान अय्यूबी खुश था कि इतनी ख़तरनाक नज़रयाती यलग़ार को हमेशा के लिये ख़त्म कर दिया गया है। मगर अली बिन सुफ़यान ने कहा....... "सिर्फ़ यलग़ार ख़त्म हुई है। उस के असरात ख़त्म करने के लिये अर्सा दरकार है। मुझे जो तफ़सील मालूम हुई है। वह ये है कि सरहदी देहात से हमें फौजी भरती नहीं मिल रही है। सरहद के साथ साथ रहने वाले लोग सूडानियों के दोस्त बन गए हैं। वह दस्ते मिस्र के ख़िलाफ़ हो गए हैं। जिहाद का जज़्बा ख़त्म हो चूका है। वह लोग ग़ल्ला और मवेशी हमें नहीं देते सुडानियों को बखुशी देते है। मस्जिदें वीरान हो गई हैं। लोग तौहुम परस्त होकर शोबदा बाज़ पीरों वग़ैरह की परसतिश करने लगे हैं हमें उन लोगों के ज़ेहनों को अपने सही रास्ते पर वापस लाने के लिये बाकाइदा मोहिम शुरूअ करनी पड़ेगी। अगर सलीबी शोबदा बाज़ और उस के गिरोह को लोग क़त्ल न कर देते तो हम उसे सारे इलाके में घुमाते फिराते।"

सूलतान अय्यूबी ने अपने इनक़लाबी इहकामात में सरहदी इलाक़ों को ख़ास तौर पर शामिल कर रखा था। अब उस ने उस तरफ़ और ज़्यादा तवज्जह देने का फ़ैसला किया। उस के लिये सब से ज़्यादा

शदीद सरदरदी ये थी कि तक़ीयुद्दीन और उस की फ़ौज को सूडान से निकालना था। क़ाहिरा पहुंचते ही वह मनसूबा बन्दी में मसरूफ़ हो गया था। रातों को सोता भी नहीं था। वह खुद सूडान के महाज़ पर नहीं जा सकता था क्योंकि मिस्र के अनदुरूनी हालात उस की

तवज्जह के मोहताज थे। उस ने क़ाहिरा में आकर तक़ीउद्दीन को ये इत्तेला देने के लिये वह क़ाहिरा आ गया है। एक क़ासिद भेज दिया था। क़ासिद वापस आ चुका था। उस ने बताया था कि तक़ीउद्दीन का जानी नुकसान ख़ासा हो चुका है और कुछ नफ़री दुशमन के झांसे में आकर या जंग की सूरते हाल से घबरा कर इधर उधर भाग गई है। क़ासिद ने बताया कि तक़ियुद्दीन अपनी बाक़ी मानदा फ़ौज को यकजा करने में कामयाब हो गया है मगर दुशमन पर हमले करने के लिये चन्द दसते मिल जाऐं ताकि वह अपनी फ़ौज को वापस ला सके।

सुलतान अय्यूबी ने उसी वक़्त अपने तीन चार छापा मार दसते और चन्द वह दसते जिन्हें जवाबी हमला करने और घूम फिर कर लड़ने के खुसुसी मश्क काराई गई थी सूडान भेज दिये थे। वह हर हमले दुशमन के अकब में जाकर करते और दुशमन का नुकसान करके और उसे बिखेर कर इधर उधर हो जाते थे। छपा मारों ने दुशमन को ज़्यादा परीशान किया। उन का मक़सद यही था कि दुशमन को तक़ीयुद्दीन के तआक़ुब से हटाया जाऐ। वह ख़िलाफ़े तवक़्क़ो बहुत जलदी कामयाब हो गऐ। उन की अहलीयत और शुजाअत के अलावह उन की कामयाबी की वजह ये भी थी कि दुशमन की फौज थकी हुई थी और सेहरा बड़ा ही दुशवार और गर्म था। घोड़े और ऊंट जवाब दे रहे थे।

सुडान का हमला बुरी तरह नाकाम हुआ। कामयाबी सिर्फ़ यं हुई कि तक़ीयुद्दीन को, उस की मरकज़ी कमान के सालारों वग़ैरह और दसतों को और बची खुची फ़ौज को एसी तबाही से बचा लिया गया जो उन के क़िसमत में लिख दी गई थी। तक़ीयुद्दीन जब मिस्र की सरहद में दाख़िल हुआ तो उसे पता चला कि वह सूडान में आधी फ़ौज ज़ाऐ कर आया है।

❖

उधर करक जल रहा था। नुरूद्दीन ज़ंगी के कारिगरों ने जरूरत के मुताबिक़ दूर मार मुनजनीकें बना ली थीं। जिन से क़िले के अन्दर पत्थर कम और आग ज़यादा फैंकी जा रही थी। सलाहुद्दीन अय्यूबी अन्दर के चन्द एक हदफ बता आया था। उन मे रसद का ज़ख़ीरा भी था। आग के पहले गोले क़िले की उस तरफ़ फैंके गए जिस तरफ़ से रसद का ज़ख़ीरा ज़रा क़रीब था। खूश क़िसमती से गोले ठिकाने पर गए। अन्दर से शोले जो उठे उन्होंने ज़ंगी की फ़ौज का होसला बढ़ा दिया। मुसलमानों ने दूर मार तीर व कमान भी तय्यार कर लिये थे। उन्हें इसतेमाल करने के लिये ग़ैर मामूली तौर पर ताक़तवर सिपाही इसतेमाल किये जा रहे थे लेकिन आठ दस तीर फैंक कर सिपाही बे हाल हो जाता था। ज़ंगी ने एक और दिलेराना कारवाई की। उस ने निहायत दिलेर सिपाही चुन लिये और उन्हें हुक्म दिया कि क़िले के दरवाज़े पर टूट पड़ें। उन्हें दरवाज़ा तोड़ने की मोज़ूं औवज़ार दिये गये।

जांबाज़ों का ये दसता दरवाज़े की तरफ़ दौड़ा तो उपर से सलीबीयों ने तीरों का मेंह बर सा दिया। कई जांबाज़ शहीद औ ज़ख़मी हो गए। ज़ंगी ने दूर मार तीर अन्दाज़ों को वहां इकट्ठा कर लिया और आम तीर अंदाज़ों का भी एक हुजूम बुला लिया। उन सब को मुख़तलिफ़ ज़ावयों पर मोरचा बन्दी करके दरवाज़े के उपर दीवार के हिस्से पर मुसलसल तीर फैंकने का हुक्म दिया। हुक्म की तामील शुरू हुई तो इतने तीर बरसने लगे जिन के पीछे दीवार का

बालाई हिस्सा नज़र नहीं आता था। जांबाजों की एक और जमाअत दरवाज़े की तरफ़ दौड़ी। ज़ंगी ने तीरों की बारिश और तेज़ कर दी। दीवार पर ललकार सुनाई दी। ज़रा देर बाद दीवार पर लकड़ियों से बंधे हुए डरम नज़र आए। ये जलती लकड़ियों और कोएलों से भरे हुऐ थे। जूंही उन्हें बाहर को उंडेलने वालों के सर नज़र आए वह सर तीरों का निशाना बन गये। एक दो डरम बाहर को गिरे बाकी दीवार पर ही उलटे हो गए। वहां से शोले उठे जिन से पता चलता था कि आग फैंकने वाले अपनी आग में जल रहें हैं।

ज़ंगी के किसी कमाण्डर ने ज़ंगी के हमले का ये तरीका देख लिया। वह वहां से घोड़ा सरपट दौड़ाकर किले के पिछले दरवाज़े की तरफ़ चला गया और वहां के कमाण्डरों को बताया कि सामने वाले दरवाज़े पर क्या हो रहा है। उन दोनो कमाण्डरों ने वही तरीका पीछले दरवाज़े पर आज़माना शुरूअ कर दिया। पहले हल्ले में मुजाहिदीन का जानी नुकसान ज़यादा हुआ। लेकिन जूं जूं मुजाहिदीन गिरते थे उन के साथी कहर बन कर दरवाज़े की तरफ़ दौड़ते थे। तीर अंदाजो ने सलीबीयों को उपर से आग न फैंकने दी। ज़ंगी ने हुक्म दिया कि मुनजनीकें किले के अन्दर आग फैंकें। ज़ंगी की फ़ौज ने दोनों दरवाजों पर दिलेराना हमले देखे तो फ़ौज किसी के हुक्म के बग़ैर दो हिस्सों में बट गई। एक हिस्सा किले के सामने चला गया और दूसरा अकबी दरवाज़े की तरफ़। दोनों तरफ़ दीवारों पर तीरों की ऐसी बारिश बरसाई गई कि उपर की मज़हिमत ख़त्म हो गई। दोनों दरवाज़े तोड़ दिये गये। ज़ंगी की फ़ौज अन्दर चली गई। शहर में खून रेज़ जंग हुई। वहां के बाशिनदों में भगदड़ मच गई।

उस भगदड़ से फ़ाईदा उठाते हुए सलीबी हुकमरान और कमाण्डर किले से निकल गए। शाम तक सलीबी फ़ौज ने हथ्यार डाल दिये। ज़ंगी ने कैदी मुसलमानों को खोले और कैद खानों से निकाला फिर सलीबी हुकमरानों को सारे शहर में तलाश किया मगर कोई भी न मिला।

ये1173 की आखरी सेह माही थी जब करक का मज़बूत किला सर कर लिया गया और मुसलमानों को बैतुल मुकद्दस नज़र आने लगा।

❖❖

जब ख़ज़ाना मिल गया

सलीबयों की ये कानफ्रेंस अपनी नौइयत की पहली हंगामा खेज़ कांफ्रेंस थी। वह हर शिकस्त के बाद हर फ़तह के बाद, हर पसपाई और हर कामयाब पेश कदमी के बाद मिल बैठते थे। तबादल .ए. ख़ियालाात करते और शराब पीते थे। औरत और शराब के बग़ैर वह समझते थे कि जंग जीती ही नहीं जा सकती । अपनी बेटियों को मुसलमानों के इलाको में जासूसी , तख़रीब कारी और मुसलमान हुक्काम की किरदार कुशी के लिये भेज देते थे और ख़ुद अपने कबज़े में लिये हुए इलाकों से मुसलमान लड़कियां अग़वा करके उन्हें तफ़रीह का ज़रया बनाते थे। जासूसों ने जब उन्हें ये बताया था कि सलाहुद्दीन अय्युबी कहता है कि सलीबी इसमतों के वैपारी और मुसलमान इसमतों के मुहाफ़िज़ हैं तो सलीबी हुक्मरान और कमाण्डर बहुत हंसे थे। उन में से किसी ने सुलतान अय्यूबी का मज़ाक उड़ाते हुए कहा था कि ये शख़्स इतनी सी बात नहीं समझ सकता कि जिस तरह सलीब के बेटे सिपाही बन कर अपना जिस्म इसतेमाल करते हैं उसी तरह सलीबी बेटियां भी मुसलमानों को बेकार करने के लिये अपना जिस्म इसतेमाल करती हैं। किसी और ने कहा था कि सलाहुद्दीन अय्यूबी को अभी तक एहसास नहीं हुआ कि उस की कौम के बे शुमार छोटे छोटे हुकमरानों , किला दारों और सालारों को हमारी एक एक लड़की और सोने के सिक्कों की एक एक थैली एसी शिकस्त दे चुकी है जिस पर वह लोग फ़ख्र कर रहें हैं और उस शिकस्त से लुतफ उठा रहें हैं। सलाहुद्दीन अय्युबी हम से इसलाम की इसमत किस तरह बचाएगा ?

ये सलीबीयों की पहली कांफ्रंसों की बातें हैं मगर 1173 के आख़िर में बैतुल मक़दिस में सलीबी सर बराह इकट्ठे हुए तो उन पर कुछ और ही मूड तारी था। उन्हों ने सुलतान अय्यूबी का मज़ाक न उड़ाया । किसी के होंटों पर भूले से भी मुसकुराहट न आई और किसी को ये भी याद न रहा कि वह जब मिल बैठते हैं तो शराब का दौर भी चला करता है। करक से वह बड़े ही शरमनाक तरीके से पसपा हुए थे उन में रिनाल्ड भी था। जो करक का किला दार बल्कि मालिक था। वह जंगजू था, फ़न्ने हरब व ज़रब का माहिर था, सुलतान अय्युबी की फ़ौज के साथ उस ने अपने ज़िरह पोश लशकर से मुतअद्द बार लड़ाइयां लड़ीं थीं। उस महफ़िल में रिमाण्ड भी था। जिस ने करक के मुहासरे के दौरान सुलतान अय्युबी की फ़ौज को मुहासरे में ले लिया था। उन दोनों ने एसा पलान बनाया था जिस के मुतअल्लिक वह बजा तौर पर ख़ुश फहमियों में मुबतला थे, मगर सुलतान अय्युबी ने करक का मुहासरा काएम रखा। रीमाण्ड का मुहासरा एसे अन्दाज़ से तोड़ा कि रिमाण्ड का लशकर मुहासरे में आ गया । उस की रसद तबाह हो गई और उस की फ़ौज अपने ज़खमी घोड़ों और ऊंटों को मार मार कर

खाती रही। आख़िर उस की आधी से ज़यादा फौज कट गई थी। कुछ गिरिफ़तार हुई और बाकी पसपा हो गई।

रिजनाल्ड खुश नसीब था कि नुरूददीन जंगी के सर फरोशों ने क़िला सर कर लिया तो अन्दर की भगदड़ में रिजनाल्ड बच कर निकल गया। वरना वह उस कांफ्रंस में शमुलियत के लिये ज़िन्दा न होता। उस महफ़िल में सलीबीयों की उन जंगजू सरदारों की तादाद भी ख़ासी थी। जिन्हें " नाईट " कहा जाता था ये एक ख़िताब था जो बादशाह की तरफ़ से अता किया जाता और उस के साथ सर से पावों तक ज़िरह बकतर दी जाती थी। उस कांफ्रंस में अकरह का पादरी भी था जिसे मुहाफ़िज़ सलीबे आज़म का रुतबा दिया गया था। उन के अलावह गै आफ लोज़िनान और उस का भाई अमारलुक भी था और उन में मुसलमानों का सब से बड़ा दुशमन फलप आगसिटस भी था नाईटों और दीगर कमाण्डरों के साथ साथ उस कांफ्रेंस में सलीबियों के मफ़्तहहिदा इनटेली जेन्स का सर बराह हरमन और उस के दो तीन मुआविन भी थे। इबतदा में उस हुजूम पर ख़ामोशी छाई रही जैसे वह एक दुसरे के सामने बात करते घबराते हों। आख़िर फलप आगटिस ने ज़बान खोली जिस से महफ़िल में ज़िन्दगी के आसार नज़र आने लगे उस ने " मुहाफ़िज़े सलीबे आज़म" को कोंफरंस की सदारत पेश करके उसी से दरख़ासत की के वह ख़िताब करे।

" उन लोगों से मुख़ातिब होते हुए मुझे शरम महसूस हो रही है जिन्हों ने अपनी क़समें तोड़ीं। अहद तोड़े और बेतुल मक़दिस में ज़िंदा और तन्दुरस्त आ बैठे।" अकरह के पादरी ने कहा– " मैं यसुह मसीह के आगे शरमसार हूं और मैं सलीब को देखता हूं तो मेरी नज़रें झुक जाती हैं। किया तुम सब ने सलीब पर हाथ रख कर हलफिया अहद नही किया था कि उस के दुशनों का ख़ातमा करोगे ख़ाह उस में तुम्हें जाने भी क़ुरबान करनी पड़े? किया तुम ने हलफ़ नहीं उठाया था कि इसलाम का नाम व निशान मिटाने के लिये जान और माल की और अपने जिसमों के आज़ा की क़ुरबानी से गुरेज़ नहीं करोगे। तुम में कितने हैं जिन के जिसमों पर हलकी सी ख़राशें भी आई हों ? कोई एक भी नहीं। तुम शोबक मुसलमानों को दे कर भागे। अब तुम करक दे कर भाग आए हो। मैं उस हक़ीकत से भी बे ख़बर नहीं कि जो मैदान में उतरते हैं, वह शिकस्त भी खा सकते हैं। दो फतूहात के बाद ऐक शिकस्त कोई माना नहीं रखती मगर यके बाद दिगरे दो शिकस्तें और दो पसपाईयां मुझे यक़ीन दिला रही हैं कि सलीब युरप में क़ैद हो गई है और वह वक़्त भी आने वाला है जब युरप के कलीसाओं में मुसलमानों की अज़ानें गूंजेगी।"

" एसा कभी न होगा"–फलप आगसटिस ने कहा–" सलीबे आज़म के मुहाफ़िज़! एसा कभी न होगा। शिकस्त के कुछ असबाब थे जिन पर हम ग़ौर कर चुके हैं और अब आप की मौजूदगी में मज़ीद ग़ौर करेंगे।"

" और शायद तुम इस पर ग़ौर न करो कि अब मुसलमानों की मनज़िल बैतुल मक़दिस होगी"–सलीबे आज़म के मुहाफ़िज़ ने कहा। " क्या तुम इस हक़ीक़त से बे ख़बर हो कि सलाहुद्दीन अय्यूबी बैतुल मक़दिस लेने की क़सम खा चुका है ? क्या तुम नही जानते कि

बैतुल मकदिस मुसलमानों का किबला अव्वल है जिस की खातिर वह अपने बच्चों तक को ज़बह कर डालेंगे ?"

" हम ने मुसलमानों में गद्दारी का बिज डाल दिया है"— फलप आगसटिस ने कहा—" हम ने मुसलमानों में इतने गद्दार पैदा कर लिये हैं जो सलाहुद्दीन अय्यूबी और नुरूद्दीन ज़ंगी को बैतुल मकदिस के रासते पर डाल कर उन्हें रासते मे ही पियासा मार डालेंगे।"

" फिर ये कौन से मुसलमान हैं जिन्होंने तुम से दो इतने मज़बूत किले ले लिये हैं?" —सलीबे आज़म के मुहाफिज़ ने कहा— " इस हकीकत को मत भूलो के मुसलमान इन्तेहा पसन्द कौम है। मुसलमान गद्दारी पर आता है तो अपने भाईयों की गरदन पर छुरी चला देता है मगर उस में जब कौमी जज़बा बेदार हो जाता है तो अपनी गरदन काट कर गुनाहों का कफ़्फ़ारा अदा कर दिया करता है। मुसलमान अगर गद्दार भी हो जाए तो उस पर एतमाद न करो। दूर न जाओ। गुज़रे हुए सिर्फ दस सालों के वाकआत पर नज़र डालो। इसलाम के गद्दारों ने तुम्हें कितने इलाके दिलवाए हैं? क्या तुम में हिम्मत है के मिस्र में कदम रखो ? आज मुसलमान फ़िलसतीन में बैठे हैं, कल तुम्हारे सीने पर बैठे होंगे। याद रखो मेरे दोसतो! अगर सलाहुद्दीन अय्यूबी और नुरूद्दीन ज़ंगी ने तुम से बैतुल मकदिस ले लिया तो वह तुम से युरप भी ले लेगा लेकिन सवाल फ़िलसतीन और युरप का नहीं , सवाल ज़मीन के टुकड़ों का नहीं, असल मसला सलीब और इसलाम का है । ये दो मज़हबों और नज़रयों की जंग है। दो में से एक को ख़त्म होना है। किया तुम सलीब का ख़ातमा पसन्द करोगे ?"

नहीं मुकद्दस बाप, ऐसा कभी नहीं होगा"—महफ़िल में जोश व ख़रोश पैदा हो गया— " इतनी ज़यादा मायूसी की कोई वजा नहीं।"

" फिर तुम उन वुजूहात पर गौर करो जो तुम्हारी पसपाई का बाइस बनी हैं"— मुहाफ़िज़ सलीबे आज़म ने कहा—" मैं तुम्हें जंग के मुतअल्लिक कोई सबक नहीं दे सकता। मैं नज़रयात के मुहाज़ का सिपाही हूं। मैं कलीसा का मुहाफिज़ हूं। मुझे कलीसा की कुंवारीयों की कसम दस कट्टर मुसलमान मेरे सामने ले आओ उन्हें सलीब का पुजारी बना लुगां। ज़रा इस पर गौर करो कि तुम्हारे इतने बड़े बड़े लशकर जो ज़िरह पोश भी हैं मुसलमानों की मुख़तसर सी फौज का मुकाबला क्यों नही कर सकते? तुम्हारे पांच सौ सवारों को एक सौ पैयादा मुसलमान क्यों शिकस्त दे देते हैं ? सिर्फ इस लिये कि मुसलमान मज़हब के जुनून से लड़ते हैं । वह तुम्हारे मुकाबले में आते हैं तो कसम खा लेते हैं कि फ़तह या मौत । मैं ने सुना है कि उन के छापे मार तुम्हारे अकब में चले जातें हैं और तुम्हारी कमर तोड़ कर तुम्हारे तीरों से छलनी हो जाते हैं। या निकल जाते हैं। ज़रा सोंचो कि दस दस बारह बारह आदमी तुम्हारे हज़ारों के लशकर में किस तरह घुस आते हैं ? ये महज़ मज़हबी जुनून है। वह समझते हैं कि खुदा भी उन के साथ है और खुदा का रसूल भी उनके साथ है। एसी दिलेराना कारवाईयों में वह अपने कमाण्डरों से नहीं कुरआन से हुक्म लेते हैं। मैं ने कुरआन का मुताला बहुत गौर से किया है। हमारे ख़िलाफ जंग को कुरआन जिहाद कहता है और मुसलमान पर जिहाद फर्ज़ कर दिया गया है। हत्ता कि जिहाद को नमाज़ यानी इबादत पर फौकियत हासिल है..... तुम भी जब तक

अपने आप में यही जुनून पैदा नहीं करोगे इसलाम का तुम कुछ नहीं बिगाड़ सकते।"

❖

कुछ ऐसे ही जज़्बाती और हक़ीक़ी अलफ़ाज़ थे जिन से अकरह के पादरी ने अपने शिकस्त खुरदह हुकमरानों और कमाण्डरों को भड़काने और उन में नई रूह फूंकने की कोशिश की और वह ये कह कर चला गया कि अब आपस में बहस मुबाहसा करो कि तुम्हारी शिकस्त के असबाब किया थे और उस की ज़िम्मेदारी किस किस पर आएद होती है और इस शिकस्त को फ़तह में किस तरह बदलना है। बैतुल मकदिस को ज़िंदगी और मौत का मसला बनालो। सलाहुद्दीन अय्युबी फ़रिशता नहीं। तुम्हारी तरह एक इनसान है। उस की ताक़त सिर्फ़ इस में है के ईमान का पक्का है।

पादरी के जाने के बाद कांफरंस मे जो गर्मा गर्मी पैदा हुई वह इस लिहाज़ से तारिख़ी नौईयत की थी कि उस में कुछ फ़ैसले किये गये। उन में एक फ़ैसला यह था कि जवाबी हमला न किया जाये बल्कि अय्युबी और ज़ंगी के लिये अंगेख़्त पैदा की जाए कि वह पेश क़दमी करें और हमले जारी रखें। उन्हें मुसतकर से दूर लाया जाये और बिखेर कर लड़ाया जाए। इस तरह उन की रसद के रासते लमबे और ग़ैर महफ़ूज़ हो जाएगें। उस के साथ ये फ़ैसला हुआ कि युनानियों, बाज़नतिनयों और फरेंकों को फ़ौरी तौर पर तैयार किया जाए कि समुन्दर की तरफ़ से मिस्र पर बहरी हमला करें, और साहिल पर फ़ौज उतार कर मिस्र के शुमाल मशरिक़ के इतने से इलाक़े पर क़बज़ा कर लें जिसे मज़बूत मुसतक़र (अड्डा) बना लिया जाए। उसे फ़िलसतिन के दिफ़ा और मिस्र पर जारहियत के लिये इसतेमाल किया जाएगा। अहम फ़ैसला ये हुआ कि इसलमी इलाको में अख़लाक़ी तख़रीब कारी तेज़ करदी जाए और नज़रयाती हमले और शदीद कर दिये जाऐं।

जैसा कि पिछले बाब में बियान किया जा चुका है कि मिस्र में सलीबीयों की एक मुहिम तबाह कर दी गई थी जो सरहदी इलाके में तौहुमात पैदा करने के लिये उरूज पर पहूंच गई थी। सलीबी जासूसों ने वहां से आकर इत्तेला दे दी थी कि वह मुहिम नाकाम हो चुकी है और जिन मुसलमानों को ज़ेरे असर ले लिया गया था उन्होंने ही मुहिम के अफ़राद को हलाक करदिया है......... उस कांफरंस में ये इनकेशाफ पेश किया गया कि मक़बूज़ा इलाकों में मुसलमानों की ज़िंदगी अजीरन कर दी गई है। वह मजबूर होकर काफ़लों की सूरत में तरके वतन करते हैं तो रासते में उन के काफ़ले लूट लिये जाते हैं। माल और मवेशी छीन लिये जाते है। और लड़कियों को अग़वा कर लिया जाता है। कानफरंस में उस इक़दाम को ज़रूरी समझा गया। मुसलमानो को ख़त्म करने का ये भी एक अच्छा तरीक़ा था। ये नस्ल कुशी की मुहिम थी जो सलीबीयों ने बहुत अरसे से जारी कर रखी थी। पहले भी बियान किया जा चूका है कि मुसलमानों की कमसिन और ख़ूबसूरत बच्चियों को अग़वा करके सलीबी उन्हें बे हयाई और चरब ज़बानी की तरबियत दे कर उन्हें पालते पोसते और जब वह जवान होजातीं उन्हें मुसलमानों में ग़द्दारी के जरासीम पैदा करने के लिये इसतेमाल करते थे।

कानफरंस में ये भी तै हुआ था कि मुसलमानों में इसाईयत की तबलीग़ की जाए। इस के

लिये बे शुमार दौलत की ज़रूरत थी जो ख़र्च तो की जा रही थी लेकिन कुछ दुशवारियां पैदा हो गई थीं। एक ये थां कि रक़म ऊंटों के ज़रिये भेजी जाती थी। कई बार ऐसे हुआ कि मिस्र के किसी सरहदी दसते ने पकड़ लिया या ऊंट लूट लिये गये। ज़रूरत ये महसूस की गई थी कि कोई एसा ज़रिया मिल जाए जिस से रक़म और इनामात की दीगर कि़मती अशया उसी मुल्क से दसतियाब हो जाऐं जहां इसतेमाल करनी हों । ख़ासे अरसे से इस मसले पर सोंच व विचार हो रहा था। सलीबीयों की इंटली जिंस का कमाण्डर हरमन, अली बिन सुफ़यान की तरह ग़ैर मामूली ज़िहानत का मलिक था। उस ने कभी का सोंच रखा था कि मिस्र की ज़मीन अपने अन्दर इस क़दर खज़ाने छुपाए हुए है जिस से सारी दुनया को ख़रीदा जा सकता है मगर उन ख़ज़ानों तक पहुचंना आसमान से सितारे तोड़लाने के बराबर था । ये ख़ज़ाने फ़िरऔनों के मदफ़ून में महफ़ूज़ थे। तारिख़ फ़िरऔन की इस रसम से कभी भी बे ख़बर नही रही कि जब कोई फ़िरऔन मरता था तो उस के साथ शाहाना ज़रूरयात का तमाम सामान उस के साथ दफ़न कर दिया जाता था।

मरे हुए फ़िरऔन की क़बर चन्द गज़ चौड़ी नहीं हुआ करती थी बल्कि ज़मीन के नीचे एक महल तामीर हो जाता था। फ़िरऔन अपनी ज़िन्दगी में अपना मदफ़न तैयार करा लिया करते थे और जगह एसी मुन्तख़ब करते थे जिस तक उस की मौत के बाद कोई रसाई हासिल न कर सके। मरने के बाद मदफ़न को इस तरह बन्द करदिया जाता था कि मेमारों के सिवा किसी को मालूम नहीं होता था कि उसे खोला किस तरह जा सकता है। मरने वाले के लवाहक़ीन मेमारों को क़तल कर दिया करते थे । फ़िरऔन का एक अक़ीदा तो ये था कि वह ख़ुदा है और दूसरा ये कि मरने के बाद उन्हें यही जाह व जलाल हासिल होगा। चुनान्चे पहाड़ों को काट काट कर और फिर पहाड़ के नीचे ज़मीन की खुदाई करके महल जैसे हाल और दिगर कमरे बनवा कर उस महल में ज़यादा से ज़यादा हीरे जवाहरात रखवा दिये जाते थे इस के इलावह बधियां बमआ घोड़ों और बघ्घी बानो के और कशतीयां बमआ मल्लाहों के अन्दर रख दी जाती थीं। ख़िदमत के लिये कनीज़ें और ग़ुलाम और बिवियां भी साथ होती थीं। इस तरह सुरते हाल ये बन जाती थी कि एक इनसान की लाश के साथ जहां बे अन्दाज़ माल व दौलत दफ़न हो जाता था वहां बहुत से इनसान ज़िन्दा भेज कर बाहर से मदफ़न का मूंह बन्द कर दिया जाता था । तसुव्वर किया जा सकता है कि वह दम घुटने से किस तरह मरते होंगे। फ़िरऔनों की लाशों को मसाला वग़ैरह लगा कर महफ़ूज़ किया ताजा था। हज़ारों साल गुज़र जाने के बाद आज भी उन की लाश्शें महफ़ूज़ हैं जिन में कुछ लन्दन के अजएब ख़ाने में पड़ी है।

फ़िरऔनो का दौर ख़त्म हुआ तो मिस्र की हुकूमत जिस के भी हाथ में आई उस ने फ़िरऔनों के मदफ़न की तलाश करने की कोशिश की । ये मुहिम ना मुमकिन की हद तक मुशकिल साबित हुई । मदफ़नों को तलाश करना ही एक मसला था। उस के बाद आज तक ये मुहिम जारी है मिस्र ने तारिख़ में बहुत सी बादशहियां देखीं। हर बादशाह ने मदफ़न तलाश किये जिसे जो हाथ लगा ले उड़ा। सब से ज़ियादा हिस्सा अंग्रेजों के हाथ आया कियोंकि

अंग्रेज़ों ने वहां मौजूदा दौर में अपना असर क़ाएम किया था जब साईंस तरक़्क़ी कर चुकी थी। साईंस ने और खुदाई के मशीनी तरीक़ों ने अंग्रेज़ों की बहुत मदद की। फिर भी कहते हैं कि मिस्र की ज़मीन फ़िरऔनों के खज़ानों से अभी तक माला माल है और मिस्र की तारीख़ में अगर ग़ौर से झाकें तो उस में ऐसे पुर असरार और ख़ौफ़नाक वाक़आत मिलते है। कि रोंगटे खड़े करदेते हैं। कुछ ज़ाती तौर पर किसी फ़िरऔन के मदफ़न की तलाश में निकले। उन में से बाज़ मदफ़न में दाख़िल हो भी गए। मगर मालूम न हो सका कि कहां ग़ाएब हो गए। उन में से जो बच कर निकले वह दूसरों के लिये सरापा ईबरत बन गए। इसी लिये ये अक़ीदा आज भी क़ाएम है कि फ़िरऔन खुदा तो नहीं थे लेकिन उन के पास मर कर भी कोई ऐसी ताक़त मौजूद है जो उन के मदफ़नों में जाने वालों को इबरत नाक सज़ा देती है। लोगों ने इस अक़ीदे को इस लिये तसलीम किया है कि जिस बादशाह नें भी किसी फ़िरऔन के मदफ़न में हाथ डाला उस की बादशाही को ज़वाल आया बाज़ ने फ़िरऔन को नहुसत का हामिल काहा है।

सलाहुद्दीन अय्युबी के दौर से पहले ही सलीबीयों को मालूम था कि मिस्र ख़ज़ानों की सर ज़मीन है ये वजह भी थी कि वह मिस्र पर क़ाबिज़ होना चाहते थे। सुलतान अय्युबी को शिकस्त देना आसान नज़र नही आया तो उन्हों ने ये सोंचना शुररूअ कर दिया कि उन मदफ़नों की तलाश मिस्रियों से कराई जाए और ख़ज़ाने निकलवाकर इसतेमाल किये जाऐं। उन्हें किसी तरह य पता चल गया था कि मिस्री हुकूमत के पुराने काग़ज़ात में एसी तहरीरें और नक़शें मौजूद हैं जिन में बाज़ मदफ़नों के मुतअल्लिक़ मालुमात दरज हैं। उन काग़ज़ात तक पहुंचना आसान नहीं था। सलीबीयों ने मिस्र में बड़े ज़हीन जासूस भेजे थे जो सिर्फ़ यह मालूम कर सके थे कि ये काग़ज़ात कहां है और किस तरह उड़ाये जा सकते हैं। मगर उस शोबे के सरबराह को अपनी गिरफ़्त में लेना मुमकिन नहीं था। उन दिनों जब सुलतान अय्युबी शोबक और करक के जंगों में उलझा हुआ था और उस की ग़ैर हाज़री में मिस्र साज़िशों की ज़रख़ेज़ ज़मीन और बग़ावत का आतिश फ़िशां बन चुका था। सलीबीयों के माहिर सुराग़रसां हरमन ने कामयाबी हासिल कर ली थी कि सुलतान अय्युबी की फ़ौज के एक आला कमाण्डर अहमर दुरवेश को अपने हाथ में ले लिया था अहमर सूडानी था उस के ख़िलाफ़ कोई एसी शिकायात नही थी कि वह ग़द्दार हैं। सुलतान अय्युबी को उस पर एतमाद था। उस ने सुलतान अय्युबी की ज़ेरे कमान लड़ाईयां लड़ी थीं और कमाण्डरों की सफ़ में नाम पैदा किया था।

बाद के इनकिशाफ़ात से मालूम हुआ कि ये कमाल मीर या ऐसथीना नाम की एक सलीबी लड़की का था कि उस ने अहमर के दिमाग़ में सूडान की मुहब्बत, सुलतान अय्यूबी की मुख़ालिफ़त और सूडान और मिस्र के सरहदी इलाके में से कुछ हिस्से की खुद मुख़तार रियासत का लालच पैदा किया था। वह था तो मुसलमान लेकिन सलीबीयों ने उस के दिमाग़ में डाल दिया था कि वह पहले सूडानी और बाद में मुसलमान है। अब जबकि नूरुद्दीन ज़ंगी ने करक का क़िला तोड़ लिया था और सुलतान अय्यूबी मिस्र में ग़द्दारों का क़ला क़ुमा कर

रहा था, अहमर दुरवेश ने सलीबी जासूसों के साथ कई एक मुलाकातें कर ली थीं। उस ने किसी को शक तक नहीं होने दिया था कि वह दुशमन के साथ साज़ बाज़ कर रहा है। उस ने मरकज़ी दफ्तर में इतना असर व रसूख़ पैदा कर रखा था कि वह पुरानी दसतावीज़ात तक पहूंच गया। वहां से उस ने जो कागज़ात चोरी कराए उन में बज़ाहिर उट पटांग सी लकीरों का एक नकशा था। दर असल ये कागज़ात नहीं कपड़े और कागज़ात के दरमियान की कोई चीज़ थी। ऐसे ही चन्द एक और कपड़े या कागज़ थे जिन पर फ़िरऔनों के वक्तों की अजिब व ग़रीब तहरीरें थीं जिन्हें पढ़ना और समझना मुमकिन नज़र नहीं आता था। ये किसी को दिखाई भी नहीं जा सकती थीं। बहर हाल किसी तरह उन तहरीरों के मानी वाज़ेह कर लिये गये। इनकिशाफ ये हुआ कि काहरा से तकरीबन अठारह कोस दूर एक पहाड़ी इलाका है जो ख़ौफ़नाक है, बेकार है और जिस के अन्दर शायद दरिन्दे भी नहीं जाते होंगें। उस के अन्दर कहीं एक फ़िरऔन का मदफ़न है।

ये नहीं कहा जा सकता था कि ये तहरीर कहां तक सही और बा माना है। इस में लकीरों में हाथ से बनी हुई चन्द एक तसवीरे भी थीं। कहानी का कुछ हिस्सा उन तसवीरों में छुपा हुआ था। अहमर ने किसमत आज़माई का फ़ैसला कर लिया था। इस फ़िरऔन का नाम रिमेंस दोम था। उस के मदफ़न की तलाश और खुदाई के लिये सलीबीयों ने काहरा में चन्द एक होशियार, दानिशमन्द और जफा कश जासूस भेज दिये थे। उन का सर बराह मारकोनी अतालवी था जिसे सियाहत और कोह पैमाई का तजरबा था। अहमर ने उन आदमियों को कामयाबी से बहरूप चढ़ा दिये थे कि काहरा में उन्हें कोई पहचान नहीं सकता था। दोको तो उस ने अपने घर मे मुलाज़िम रख लिया था। उस के ऐवज़ अहमर दुरवेश से ये सौदा हुआ था। कि वह मदफ़न से ज़र व जवाहरात निकाले, उन्हें अपने पास रखे। सुलतान अय्यूबी के ख़िलाफ़ तख़रीब कारी में इसतेमाल करे। फ़िदाईयों को मूहं मांगी उजरत दे। सुलतान अय्यूबी को कतल कराऐ और जब मिस्र सलीबीयों या सूडानियों के कबज़े में आ जाएगा तो उसे एक ख़ुद मुख़तार रियासत बना कर दी जाऐ गी जिसमें कुछ हिस्सा सुडान का और कुछ मिस्र का शामिल होगा। उसे ये भी कहा गया था कि उस तलाश के दौरान अगर सुलतान अय्यूबी सलीबीयों पर या सूडानियों पर हमला करे तो अहमर अपने ज़ेरे कमान दसतो को सुलतान अय्यूबी की जंगी चालों के उलटा इसतेमाल करे।

अहमर दुरवेश का दिमाग़ इतने बड़े लालच के जादू की गिरफ़्त में आ चूका था और उस ने मारकोनी को उन दो सलीबीयों के साथ जो उसके नौकरों के बहरूप में उस के घर में थे नकशा दे कर मदफ़न की तलाश की मुहिम पर रवाना कर दिया था एक जासूस की वसातत से उस मे हरमन को इत्तेला भेज दी थी कि तलाश शुरूअ हो चूकी है। हरमन ने उस कांफरंस में सलीबी हुकमरानों वग़ैरह को बता दिया कि अगर ये मदफ़न बे नकाब हो गया तो उस से बर आमद होने वाली दौलत से मिस्र की जड़ें मिस्रीयों की ही हाथों खोखली की जा सकेंगी।

1174 की पहली सेहमाही के आख़री दिन थे। काहरा से अठारह कोस दूर एक जगह

तीन ऊंट खड़े थे। हर ऊंट पर एक आदमी सवार था। उन के चेहरे ढके हूए थे। एक सवार ने चुगे के अन्दर से एक गोल किया हुआ चौड़ा काग़ज़ निकाला । उसे खोल कर गौर से देखा और अपने साथियों से कहा–" जगह यही है" उस के इशारे पर तीनों ऊंट आगे चल पड़े । दो टिले आमने सामने दीवारों की तरह खड़े थे। उन के दरमियान एक ऊंट गुज़रने का रासता था। तीनों एक कतार में अन्दर चले गए। अन्दर की पहाड़ीयों की शकल व सूरत ऐसी थी जैसे कोई बहुत ही वसी इमारत हो जिस की छतें गाएब हों । रेत के ला महदूद समुन्दर में ये पहाड़ी इलाक़ा तीन चार मीलों में फैला हुआ था। बाहर टिले और चट्टानें थीं। उन के पीछे सख़्त मिट्टी की पहाड़ियां और उन के पीछे टूटी फूटी दीवारों की तहर पहाड़ियां थीं जिन में बाज़ बहुत चौड़े और गोल सुतूनों की तरह एक हज़ार फ़िट बलंदी तक गई हुई थीं। सूरज गूरूब होने के बाद जब शाम अभी गहरी नही हुई थी ये इलाक़ा बहुत से भूतों की तरह नज़र आया करता था। उस के अन्दर जाने की किसी ने कभी जुरअत नहीं की थी। कोई जुरअत करता भी तो क्यों करता। अन्दर जाने की किसी को कभी ज़रूरत ही नहीं पड़ी थी । सेहरा के मुसाफिरों की ज़रूरत सिर्फ़ पानी हुआ करती थी। ऐसे खुश्क पहाड़ों और चट्टानों के अन्दर जहां दिन के वक़्त दूर से शोलों की तरह नज़र आते थे पानी का ज़रा सा घोका भी नही हो सकता था।

ये जगह किसी रासते में भी नहीं पड़ती थी । मीलों दूर से नज़र आने लगती थीं लोग उस के मुतअल्लिक़ कुछ डराउनी सी कहानीयां सुनाया करते थे जिन में एक ये भी थी कि ये शैतान बद रूहों का मसकन है। ख़ुदा ने जब आसमान से शैतान को धुतकरा था तो शैतान यहीं उतरा था। इस इलाके की चुंकी फ़ौजी अहमियत भी नहीं थी। इस लिये फ़ौजों ने भी कभी उस के अन्दर जाने की ज़रूरत महसूस नही की थी। एसे इलाक़े के अन्दर रेत, मौत और सेहराई दरिन्दों के सिवा और हो ही किया सकता था। इस हौलनाक ख़ित्तते की तारीख़ में ग़ालिबन ये पहले तीन इनसान थे जो उस के अन्दर चले गऐ थे। उन्हें वहीं जाना था क्योंकी हज़ार साल पुराना नकशा उसी जगह की निशान देही कर रहा था। सिर्फ़ एक लकीर शक पैदा करती थी । ये एक नदी की लकीर थी मगर वहां कोई नदी नहीं थी । उस की जगह अब एक बड़ा ही लम्बा नशीब नज़र आता था। जिस की चौड़ाई बारह चौदह गज़ थी । उस के अन्दर की रेत की शकल व सूरत बताती थी। कि सदयों पहले यहां से पानी गुज़रता रहा है। उसी नशीब ने जो करीब ही कहीं ख़त्म होने की बजाए दरयाए नील की तरफ़ चला गया था, शुतर सवारों को यक़ीन दिलाया था कि वह जिस जगह की तलाश में हैं वह यही है।

उन सवारों में एक मारकोनी अतालवी था और दो उस के साथी तीनो सलीबी थे। उन्हें सुलतान अय्यूबी के एक कमाण्डर अहमर दुरवेश ने फ़िरऔन रिमेन्स दोम के मदफ़न की तलाश के लिये भेजा था। नकशे के मुताबिक़ वह सही जगह पर आ गऐ थे। अब अन्दर जाकर ये देखना था कि ये जगह किस हद तक सही है। मारकोनी ने अपने साथियों से कहा कि अपने को ख़ुदा समझने वाले फ़िरऔन अपनी आख़री आराम गाह ऐसे जहन्नम में बनाने की सोंच भी नहीं सकते थे। अहमर और हरमन ने हेमें एक बेकार आज़माईश में डाल दिया है। उस के

साथियों ने उसे अपना कमाण्डर समझते हुए कोई मशवरह न दिया। वह हुक्म के पाबन्द थे। मारकोनी सख़्त जान सलीबी था। हिम्मत हारने का क़ाएल न था। वह आगे आगे चलता रहा। वह जूं जूं अन्दर जा रहे थे चट्टनों की शकलें बदलती जा रही थीं। उन का रंग गहरा बादामी भी था कथई भी और कहीं कहीं उन का रंग मटयाला लाल भी था। उन में रेतीली सिलों की चट्टानें थीं और मिट्टी के सिधे खड़े टिले भी। ढलानों से रेत बहती नज़र आती थी।

बहुत आगे जाकर ये वादी बन्द हो गई। मारकोनी ने दाऐं तरफ़ देखा। एक टिला दरमियान से इस तरह फटा हुआ था जैसे ज़लज़ले ने दीवार मे शिगाफ़ कर दिया हो। शिगाफ़ में से झांका। ये एक ग़ली थी, जो दूर तक चली गई थी। ऊंट का गुज़रना मुशकिल नज़र आता था। मारकोनी ने अपना ऊंट शिगाफ़ की गली में दाख़िल कर दिया। उस के घुटने दोनो तरफ़ टीलों की दीवारो से लगने लगे। उस ने टांगें समेट कर ऊंट की कोहान पर रख दीं। पीछले सवारों ने भी ऐसा ही किया। ऊंटों के पहलू दाऐं बाऐं लगते थे तो मिट्टी नीचे गिरती थी। टीला दो हिस्सों में कट कर दूर उपर तक चला गया था। ऊंटों के हिचकोलों से यूं लगता था। जैसे टीले के दोनो हिस्से हिल रहे हों और दोनों मिल कर ऊंटों को सवारों समेत पीस डालेंगें। आगे जाकर उपर देखा तो दूर उपर टीले के दोनो हिस्सों की चोटियां आपस मे मिल गई थीं। आगे अन्धेरा सा था लेकिन दूर आगे रोशनी सी नज़र आती थी जिस से उम्मीद बन्ध गई कि गली वहां ख़त्म हो जाए गी और आगे जगह फ़राख़ है।

गली ने अब सुरंग की सूरत इख़तियार कर ली थी जिस में ऊंटों के पावों की आवाजें डरावनी सी गोंज पैदा करती थीं मारकोनी बढता गया। वहां यही एक रासता था इस लिये गलती का इमकान कम था। सामने रोशनी का जो धब्बा था वह फैल रहा था। सुरंग ख़त्म हो रही थी....... और जब वह सुरंग के दहाने पर पहुचे तो मालूम हुआ कि ऊंट सवारों समेत नहीं गुजर सकेंगें। सवार ऊंटों की गरदनों पर आकर नीचे उतरे क्योंकी पहलूओं से नहीं उतरा जा सकता था ऊंटों को बड़ी मुशकिल से बाहर निकाला गया। आगे देखा तो चारों तरफ़ किसी पुराने किले की बड़ी ही बुलन्द दीवारें नज़र आईं। मगर ये किला कुदरती था पहाड़ियों की शकल एसी थी कि तीन चार सौ गज़ तक ढलान थी और वहां से पहाड़ियां सीधी ऊपर को उठ गई थीं बाज़ ऊंची थीं। बाज़ कम बुलन्द मालुम होता था जैसे ये जगह हर तरफ़ से बन्द हो। घूम फिर कर देखा तो एक पहाड़ी के साथ इतनी जगह थी जिस पर पैदल चला जा सकता था।

मारकोनी ने ऊंटों को वहीं बिठा दिया और पैदल चल पड़े। पहाड़ी गोलाई में हो गई थी। पावं जमाकर रखना पड़ता था क्योंकि रेत और मिट्टी थी जिस से पावं ढलान की तरफ़ होकर गिर सकता था। ये दर असल कोई बाक़ाइदा रासता नही था। चलने की सिर्फ़ जगह थी। ज़मीन और टीले बता रहे थे कि सदयों से यहां किसी इनसान ने क़दम नहीं रखा। ये चलने की जगह या राह आगे गई तो मारकोनी और उस के साथीयों के दिल उछल कर हलक़ तक आगए। ढलान सख़्त हो गई थी और नीचे जाकर किसी बड़ी ही ऊंची दीवार की मुंडीर बन गई थी। दाऐं तरफ़ पहाड़ी थी जिस के पहलु में वह क़दम जमा जमा कर चल रहे

थे मगर बाऐं तरफ ज़मीन दूर नीचे चली गई थी। ये एक बड़ी वसीअ और बहुत ही गहरी खाई थी। वहां से गिरने का नतीजा सिर्फ मौत ही हो सकता है। खाई के दुसरे किनारों पर इसी तरह के पहाड़ थे जिस के साथ साथ चल रहे थे।

ऐसे खतरनाक मक़ाम पर आकर मारकोनी के एक साथी ने उस से पूछा..... "किया तुम्हें यकीन है कि रिमेन्स फ़िरऔन का जनाज़ह इस जगह से गुज़ारा गया होगा?"

" अहमर दुरवेश ने यही रासता बताया है"..... मारकोनी ने कहा।....... " जहां तक मैं नकशे को समझ चुका हूं। हमारे गुज़रने का रासता यही हैं रिमेन्स का ताबूत किसी और तरफ़ से गुज़ारा गया था। हमें वह रासता मालूम करना है। वह कोई खुफ़या रासता था जो सदयों की आंधियों और ज़मीन की तबदिलयों ने बन्द कर दिया होगा। अगर वह रासता मिल गया तो हम मदफ़न तक पहुंच जाऐंगें।"

" अगर ज़िन्दा रहे तो!"

" मैं इस के मुतअल्लिक यकीन तो नहीं दिला सकता "......... मारकोनी ने कहा।...... " ये यकीन दिला सकता हूं कि मदफ़न मिल गया तो तुम दोनों को माला माला कर दुंगा।"

रासता चौड़ा हो गया और खाई ख़त्म हो गई। अब वह दो एसी पहाड़ियों के दरमियान जा रहे थे जिन के दामन मिले हुए थे। मगर कुछ ही दूर आगे पहाड़ियां मिल गई थीं। वह वहां तक पहुंचे तो उन्हें बाऐं तरफ और चढ़ना पड़ा। कोई एक सौ गज़ और उपर जाकर उन्हें एक गली सी नज़र आई जो नीचे को जा रही थी। वहां से इर्द गिर्द देखा तो दूर दूर तक पहाड़ियों के सुतून उपर को गए हुए थे। मनज़र हैबतनाक था। वह नीचे उतरते गए। ये गली कई एक मोड़ मुड़ कर उन्हें एक फ़राख़ जगह ले गई जो गोलाई में थी। यहां की गरमी नाक़ाबिले बरदाश्त थी चोटियों के करीब पहाड़ियों में चमक सी थी। वहां की मिट्टी में क़िसी धात की आमिज़श थी। इसी की तपिश से गरमी ज़्यादा थी। हर तरफ पहाड़ियां थी सिवाए चन्द गज़ जगह के। वहां गए तो ख़ौफ़ से तीनों पीछे हट आए। वह बहुत गहरा नशीब था वुसअत भी ज़्यादा थी। उस की तह पर रेत चमक रही थी और सूरज की तपिश इतनी ज़्यादा थी कि रेत से धुवां सा उठता और लरज़ता नज़र आता था। उस से उस की गहराई का अन्दाज़ा नही होता था।

उस इतने गहरे नशीब के आमने सामने के किनारों से ऐक कुदरती दीवार मिलाती थी। ये नीचे से उपर तक थी। ये दर असल मिट्टी और रेत का दीवार नुमा टीला था जो नीचे से भी इतना ही चौड़ा था जितना उपर से। उस की चौड़ाई एक गज़ से कम थी। कहीं से गोलाई में थी जिस पर चलना खतरनाक था। अगर मारकोनी को पार जाना ही था तो यही एक रासता था जो पुल सिरात की मानिन्द था। उस की लम्बाई पचास गज़ से ज़यादा ही थी। मारकोनी के एक साथी ने उसे कहा......." मेरा ख़याल है इस दीवार पर चलने की बजाए तुम खुद कुशी का बेहतर तरीका इख़तीयार करोगे।"

" खज़ाना रासते में पड़े नहीं मिला करते — मारकोनी ने कहा।......" हमें इसी रासते से पार जाना है।"

" और फिसल कर नीचे जहन्नुम की आग में गिरना है।"........ दूसरे साथी ने कहा।

" क्या हम ने सलीब पर हाथ रख कर हलफ़ नहीं उठाया कि सलीब की अज़मत और इसलाम की बेख़कनी के लिये जानें कुरबान कर देगें?"......... मारकोनी ने कहा...... " क्या मैदाने जंग में हमारे साथी सलीब पर जानें कुरबान नही कर रहें ? मैं बुज़दिलों की तरह यहीं से वापस होकर अहमर दुरवेश को यकीन दिला सकता हूं कि इतनी सदियां गुज़र जाने के बाद अब तमाम रासते बन्द हो चुके हैं। जहां नदी थी वहां चट्टानें हैं और जहां नकशा चट्टानें दिखाता है वहां कुछ भी नही है मगर मैं बुज़दिल नहीं बनुंगा। झूट नहीं बोलूंगा। मेरे दिल पर ख़ौफ़ तारी हो चुका है मैं उस के ख़िलाफ़ लड़ रहा हूं। मेरे ख़ौफ़ में इजाफ़ा न करो दोसतो ! अगर तुम मेरा साथ नही दोगे तो सलीब से धोका करोगे और उस की सज़ा बड़ी अज़ियत नाक होगी। मैं तुम्हारे आगे आगे चलता हूं जहां फिसलने का ख़तरा महसूस करो वहां उस तरह बैठ जाना जिस तरह घोड़ें पर बैठतें है। फिर आगे सरकते रहना।"

अंचानक गर्म हवा के झोंके तेज़ होने लगे। रेत उड़ने लगी और उस के साथ औरतों की रोने की आवाज़ें सुनाई देने लगीं। दो या तीन औरतें ऊंची आवाज़ में रो रही थीं। मारकोनी के साथी घबरा गए। मारकोनी ने कान खड़े किये। एक साथी ने क...।......" इस दोज़ख़ में कोई ज़िन्दा औरत नही हो सकती। ये कोई बद रूहें है।"

"ये कुछ भी नहीं है।" — मारकोनी ने कहा........ " बदरूहें भी नहीं। ज़िन्दा औरतें भी नहीं। ये हवा की पैदा की हुई आवाज़ें हैं। इस इलाके में बाज़ लम्बे लम्बे सुराख़ हैं जो दोनो तरफ़ खुलते हैं। और चट्टानों की शकल एसी है कि उन से तेज़ हवा के झोंके गुज़रते हैं। तो इस किसम की आवाज़ें पैदा होती हैं जो तुम सुन रहे हो। नीचे इतनी गहरी और वसीअ खाई है। उस पर ये नन्में पहाड़ खड़ें हैं ये आवाज़ों में गोंज पैदा करते हैं। ये गोंज हर तरफ़ भटकती रहती है डरो नहीं।"

मगर उस के सथियों पर एसा ख़ौफ़ तारी हो गया था जिस पर वह काबू नही पा सकतें थे। ये आवाज़ें हवा की नहीं थी। करीब ही कहीं औरतें या बद रूहें रो रही थीं। उन्होंने मारकोनी का पेश किया फ़लसफ़ा तसलीम नही किया। आवाज़ें ही ऐसी थीं। हवा तेज़ होती जा रही थी। टिलों से और ज़मीन से रेत के हलके हलके बादल उड़ाने लगे थे। जिन से अब ज़्यादा दूर तक नज़र नही आ सकता था। मारकोनी ने इस कुदरती दीवार पर पहला कदम रखा जो उस भियानक नशीब में खड़ी थी। वहां जगह इतनी कच्ची थी कि रेत और मिट्टी में पाव धंस गया। उस ने दूसरा पावं आगे रखा और नीचे देखा। गहराई देख कर वह सर से पाव तक कांप गया। अब उस गहराई की तह बिलकुल ही नज़र में आती थी। क्योंकि रेत उड़ रही थी। यूं लगता था जैसे उस की तह है ही नहीं। मारकोनी चन्द कदम आगे चला गया। वहां उस के दाऐं या बाऐं कोई टीला नहीं था। वह तो जैसे हवा में खड़ा था वहा के तेज़ झोंकों ने उस के जिस्म को धकेल धकेल कर उस का तवाज़ुन बिगाड़ दिया। रोने की अवाज़ें और बुलन्द हो गई।

उस ने अपने साथियों से काह। —" आराम से पावं जमाते आओ। नीचे बिलकुल न

देखना । ये तसव्वुर करते आना कि तुम ज़मीन पर चल रहे हो।"

उस के दोनो साथियों पर पहले ही ख़ौफ़ तारी था। दीवार पर तीन चार क़दम आगे गए तो हवा की तुन्द ने उन के पावं उखाड़ दिये । उन के जिस्म डोलने लगे। मारकोनी उन की हौसला अफ़ज़ाई कर रहा था और आहिसता आहिसता आगे बढ़ रहा था। वह वस्त में पहुंच गऐ। और वहां मारकोनी ने देखा कि दीवार टूटी हुई है। और ज़रा नीचे चली गई है। वहां चौड़ाई इतनी कम थी कि खड़े होकर चला नही जा सकता था। मारकोनी बैठ गया । और घोड़े की सवारी की पोज़िशन में टांगें इधर उधर करके आगे को सरकने लगा। दीवार की चौड़ाई कम और गोल होती जा रही थी। मारकोनी नीचे को सरक गया । उस के पीछे उस का एक साथी भी आगे चला गया । अचानक तीसरे साथी की बेहद घबराई हुई आवाज़ सुनाई दी ...... " मारकोनी मुझे पकड़ना "...... मगर उस तक कोई न पहुंच सका । वह एक तरफ़ लुढ़क गया था। कोई सहारा न होने की वजह से वह गिर पड़ा । उस की चीखें सुनाई देती रहीं जो दूर ही दूर होती गईं फिर धमक की आवाज़ आई चीखें बन्द हो गईं अन्जाम ज़ाहिर था । मारकेनी ने नीचे देखा कुछ भी नज़र नहीं आता था । गिर कर मरने वाले की चीखें अभी तक उस दहशत नाक वीराने में भटक रही थीं।

" मुझे अपने साथ रखो मारकोनी!" ...... दूसरे साथी ने कहा। उस की आवाज़ कांप रही थी। " मैं एसी मौत नहीं मरना चहता ।"

मारकोनी ने उस का हौसला बढ़ाया और आगे बढ़ने लगा। दीवार उपर उठ रही थी। मारकोनी बैठे बैठे आगे सरकता गया। रोने की आवाज़ें बदसतूर आ रही थीं। और उन के तीसरे साथी की चीखों की गोंज इस तरह भटक रही थी जैसे ऊपर जाकर उन के ऊपर मंडला रही हो.......दीवार कुछ चौड़ी होगई । मारकोनी ने घूम कर अपने साथी का हाथ पकड़ा और उसे उपर कर लिया। आगे वह ज़रा इतमिनान से चल सकते थे। लेकिन हवा के झोंके इतने तेज़ थे कि उन के लिये तवाज़ुन क़ाएम रखना ज़रा मुशकिल था। वह आहिसता आहिसता बढ़ गए और दीवार ख़त्म हो गई आगे ज़मीन और पहाड़ीयां कुछ सख़्त थीं। दो चट्टानों के दरमियान तंग सा रासता था। वह उस में दाख़िल हो गए। मारकोनी के साथी ने उस से पूछा – जेफरे मर चूका होगा? उसे बचाया या देखा नही जा सकता ?"

मारकोनी ने उस की तरफ़ देखा। आह भरी और नफी में सर हिलाया। उस की आखों में आंसू आ गए। उस ने कुछ कहे बग़ैर अपने साथी के कंधे पर थपकी दी और आगे चल पड़ा। ये भी एक गली सी थी जो फ़राख़ होती जारही थी। मारकोनी ने अपने साथी से कहा। .... " हम खुशक़िसमत हैं हम जहां जाते हैं वहां ऐक ही रासता मिलता है। एक से ज़्यादा रासते हों तो भटक जाने का ख़तरा होता है।"

ये गली ख़त्म हो गई । आगे जगह कुशादा होते होते बहुत ही खुल गई थी। और ज़मीन उपर को उठती गई । हवा अभी तक तेज़ थी । मारकोनी को बिलकुल अन्दाज़ा नही था कि वह उस हैबत नाक इलाक़े में कितनी दूर अन्दर पहुंच गया है। उसे सिर्फ़ ये एहसास रह गया था कि दुनया से उस का रिशता मुनकता हो चुका है। वह सलीब के नाम पर दीवाना हुआ जा

रहा था। फ़िरऔन का मदफ़न तलाश करने का मक़सद उस के सामने यही था कि उस से निकले हुए ख़ज़ाने से मुसलमानों को ख़रीद कर उन्हें सलतनते इसलामिया के ही ख़िलाफ़ इसतेमाल किया जाएगा और दुनया में सलीब की हुकमरानी होगी। वह अपने डरे हुए साथी के साथ आगे बढ़ता गया। हवा उसी तरफ़ से आ रही थी। पहाड़ों की चोटियां दाएं और बाएं को हट गई थीं और सामने आसमान नज़र आरहा था। मारकोनी चढ़ाई चढ़ रहा था। वह रुक गया और हवा को सूंघ कर बोला ..... "तुम भी सूंघों हवा में जो बू है वह सेहरा की नहीं"

"तुम्हारा दिमाग़ जवाब दे रहा है।" उस के साथी ने कहा।........ "सेहरा में सेहरा की बू नहीं हैं तो और किस की है? तुम अतालवी हो शायद? शायद तुम्हें अपने घर की बू आ रही है।"

मारकोनी के चेहरे पर कुछ तअस्सुर था। वह हवा को सूंघ रहा था। उसने अपने साथी से कहा......."तुम शायद ठीक कहते हो। मेरे दिमाग़ पर सेहरा की सउबत का असर हो गया है। यहां पानी नही हो सकता। मैं शायद ख़ियालों में खजूरों सबज़े और पानी का बू सूंघ रहा हूं। मैं इस बू से अच्छी तरह वाक़िफ़ हूं। ये मेरा तजरबा है मगर मुझे सूंघने की हिस मुझे धोका दे रही है। इस जहन्नम में पानी की बूंद भी नही हो सकती।"

"मारकोनी!" उस के साथी ने उस का बाज़ू पकड़ कर उसे रोक लिया और कहा...... ."मैं भी एक बू सूंघ रहा हूं। मौत की बू, मुझे मौत अपनी तरफ़ बढ़ती हूई महसूस हो रही है। आओ दोस्त जिधर से आऐं हैं उधर ही लौट चलें। अगर तुम समझते हो कि मैं बुज़दिल हूं तो मुझे मैदाने जंग में भेज दो। ऐक सौ मुसलमानों को काटने से पहले नही मरुंगा।"

मारकोनी ज़यादा बातें करने वाला नही था। उस ने अपने साथी के कंधे पर हाथ रखा और मुसकुरा कर कहा ...."हम ऐक सौ नही ऐक हज़ार मुसलमानों को काटेंगे। और मरेंगे नहीं मेरे साथ आओ।"

वह साथी को लेकर चढ़ाई चढ़ने लगा। चढाई ज़्यदा ऊंची नही थी। ज़मीन आहिसता आहिसता उपर उठ रही थी। सूरज आगे निकल गया था। साये लम्बे होते जा रहे थे। उन दोनों को थकन ने चूर कर दिया था। ..... वह आगे को झुके हुए बढ़ते गए। और उपर उठती हुई इन्तेहाई बुलन्दी पर पहुंच गए। रेत ने उनकी आंखें भर दी थीं। मारकोनी ने आंखें मल कर देखा। आगे ढलान थी और छोटी छोटी टेकरियां। वह एक टेकरी पर चढ़ गया। उस ने अपने साथी को अवाज़ दी और बैठ गया उस ने कहा......"तुम अगर रेगिसतान से अच्छी तरह वाक़िफ़ हो तो तुम्हें मालूम होगा कि सराब नज़र आया करते हैं। सामने देखो और बताओ की ये सराब तो नही?"

उस के साथी ने देखा। आंखें बन्द कीं। खोलीं और गौर से देखा। उस ने कहा।....."ये सराब नही हो सकता।" वह वाक़ई सराब नही था। उन्हें खजूरों के कई एक दरख़तों की चोटियां नज़र आ रही थीं। पत्ते हरे थे। दरख़त नशीबी जगह मालूम होते थे और कुछ दूर भी थे। मारकोनी टेकरी से आगे चला गया। वह अब दौड़ रहा था। उस का साथी उस के पीछे पीछे जा रहा था। वहां अजीब व ग़रीब शकलों की टेकरियां थीं। बाज़ ऐसी जैसे कोई इनसान

घुटनों में सर देकर बैठा हो। कुछ बड़ी थीं कुछ छोटी। मारकोनी उन में से रासता तालाश करता दौड़ता जा रहा था। सूरज पहाड़ियों की चोटियों के करीब चला गया। मारकोनी का सांस फूलने लगा। उस का साथी कदम घसीटता जा रहा था। मारकोनी अचानक रुक गया। और आहिसता आहिसता यूं पीछे हटने लगा जैसे उस ने कोई डरावनी चीज़ देख ली हो उस का साथी उस से जामिला और हैरत से उसे देखने लगा।

❖

उन दोनों को अपनी आखों पर यक़ीन नही आ रहा था। उन्हें एक नशीब नज़र आ रहा था। ये कम व बेश एक मील वसी और अरीज़ था। उस के इर्द गिर्द मिट्टी और रेत की ऊंची ऊंची कुदरती दीवारें थीं। गहराई का ये इलका सर सबज़ था। कुछ ऊंचा नीचा भी था। वहां खजूरों के बहुत से दरख़्त थे। साफ़ ज़ाहिर था कि वहां पानी की बोहतात थी। ऐसे जहन्नम में ऐसा सबज़ गोशा फरीबे निगाह नही था। वह इसी ख़ित्ते की बू थी जो मारकोनी ने सूंघी थी। मारकोनी को उस जगह से कुछ ऐसी पहाड़ियां नज़र आ रही थीं। जो रेत और मिट्टी की नही बल्कि पत्थरों और पत्थरीली सिलों की थीं। उन का रंग सियाही माएल था। उस जहन्नमी ख़ित्ते के बाहर से ये पहाड़ियां नज़र नहीं आती थी। और उस सर सब्ज़ जगह का तो कोई तसव्वुर भी नही कर सकता था।

मारकोनी ने तेज़ी से बैठ कर अपने साथी को भी बाज़ू से पकड़ कर बैठा दिया। उन्हें एक और अजीब चीज़ नज़र आ गई थी। ये दो इनसान थे जो नशीब में इसी तरफ़ आ रहे थे। वह सर से पावं तक नन्गें थे। उन के रंग गहरे बादामी और उनके चेहरे अच्छे ख़ासे थे। कहीं से एक औरत निकली। वह किसी और तरफ़ जा रही थी। वह भी सर से पावं तक नंगी थी। उस के बाल बिखरे हुए और कमर तक लम्बे थे। शकल व सूरत से ये लोग हबशी या जंगली नहीं लगते थे।

"ये बद रूहें हैं।" मारकोनी के साथी ने कहा। ......ये इंसान नही हो सकते। मारकोनी! सूरज ग़ुरूब होने वाला है उठो पीछे को भाग चलें। रात को ये हमें जिन्दा नहीं छोड़ेगें।"

मारकोनी उन्हें बदरूहें समझते हुए भी कह रहा था कि ये इंसान हो सकते हैं वह यक़ीन करना चाहता था कि ये कौन लोग हैं। वह हवा में उड़ नही रहे थे। ज़मीन पर चल रहे थे। दूर उन्हें तीन बच्चे एक दूसरे के पीछे भगते दौड़ते नज़र आए। उन सब की हरकतें एसी थीं जिन से यक़ीन होता था कि ये इनसान हैं। मारकोनी पेट के बल सरकता आगे चला गया। उस का साथी भी उस के पहलू में जा लेटा। वह जहां लेट कर देख रहे थे वहां की दीवार उमूदी नही थी। कुछ ढलानी थी और रेत ज़्यादा थी मारकोनी के साथी ने ग़ालिबन और आगे होने की कोशिश की या जाने किया हुआ वह नीचे को सरक गया और लुढ़कता हुआ नीचे जा पड़ा। वहां से उपर आना मुमकिन नही था। मारकोनी पीछे को सरक कर एक ऐसी टेकरी की ओट में हो गया जहां से वह नीचे देख सकता था ये ढलान जहां से सलीबी गिरा था तीस चालीस गज़ ऊंची होगी। मारकोनी ने अपने साथी को उठते हुए देखा। वह ढलान पर चढ़ने की कोशिश करने लगा। मारकोनी उसकी कोई मदद नही कर सकता था।

वह दो नंगे आदमी जो उसी तरफ़ आ रहे थे दौड़ पड़े । मारकोनी ने उन्हें उपर से देख लिया । उस के साथी ने देखा । मारकोनी उसे आवाज़ नही दे सकता था। कियोंकि वह ज़ाहिर नही कर ना चाहता था कि वहां कोई और इंसान भी है। उन दो आदमियों ने मारकोनी के साथी को पीछे से दबोच लिया। उस के पास खंजर था और एक छोटी तलवार भी, मगर हथयार निकालने का मौका न मिला । उन दोनों ने उसे नीचे गिरा लिया। वह औरत जो कहीं जा रही थी। दौड़ती आई उधर से बच्चे भी आगए। उन्होने अपनी ज़बान में किसी को पुकारा। मालूम नही कहां से दस बारह आदमी जो सब नंगे थे दौड़ते आऐ। एक ने मारकोनी के साथी की कमर से तलवार निकाल ली। उसे गिरा लिया गया और मारकोनी ने देखा कि तलवार से उस के साथी की शहे रग काट दी । सब आदमी नाचने लगे। वह कुछ गा भी रहे थे । और हंस भी रहें थे। इतने में एक ज़ईफुल उमर इनसान आगया। उस के हाथ मे अपने कद जितना असा था। उसे देख कर सब एक तरफ़ हट गए।

ये बुढ़ा भी नंगा था। उस के असा के उपर वाले सिरे पर दो सांपों के फन बने हुए थे। ये फ़िरऔनों का इमतियाज़ी निशान हुआ करता था। बूढ़े ने मारकोनी के साथी के जिसम को हाथ लगाया। वह अब तड़प नही रही था। मर चुका था। बूढ़े ने एक हाथ हवा में बूलन्द किया और आसमान की तरफ़ देख कर कुछ कहा। तमाम नंगे इनसान जिन में चन्द एक औरतें भी थीं। और बच्चे भी सजदे में गिर पड़े । बूढ़ा अभी तक कुछ बोल रहा था। उस ने हाथ फिर उपर किया और सब सजदे से सर उठा कर खड़े हुए। बूढ़े को ढलान की तरफ़ इशारा करके बताया जा रहा था। कि ये आदमी उधर से नीचे आया है। बूढ़े के इशारे पर वह लोग मारकोनी के साथी की लाश को उठा ले गए। मारकोनी को ये ख़तरा नज़र आने लगा कि ये पुर असरार इनसान उपर आकर हर तरफ़ देखेंगे। कि नीचे गिरने वाले के साथी भी उपर होंगे। वह कुछ देर वहीं से नीचे देखता रहा ।

फिर सूरज गुरूब हो गया। मारकोनी ने मौत को कबूल कर लिया था। कि वह इस जगह और उन लोगों के भेद को पा लेने की कोशिश करे गा। उस ने ऐक हाथ में खंजर और दुसरे हाथ में छोटी तलवार ले ली और इधर उधर देखता एक और सिम्त चल पड़ा शाम अंधेरी होती जा रही थी वह उपर ही उपर से उस तरफ़ जा रहा था। उसे धीमे धीमे आवाज़ सुनाई देने लगीं। जब ये आवाज़ें बुलन्द हुई। तो ये नाचने गाने का तरन्नुम और हंगामा था। वह उन आवाज़ो की सिम्त गया। तो उसे एक और मंज़र नज़र आया। बाऐं तरफ़ ऐक और नशीबी जगह थी कई मशअलें जल रहीं थीं। वहां भी सबज़ा था जहां कम व बेश पचीस मर्द व औरतें और बच्चें आहिसता अहिसता नाच और गा रहे थे। उन के दरमियान बहुत सी आग जल रही थी । उस के ज़रा उपर एक इंसानी लाश सर और पावं से बांध कर ज़मीन के मुतवाज़ी लटकाई हुई थी। उसे घुमाया जा रहा था। ये मारकोनी का साथी था। जिसे भूना जा रहा था। मारकोनी ये होलनाक मंज़र देखता रहा।........ और उस ने ये मंज़र भी देखा कि बूढ़े ने उस के साथी कि जिस्म से गोश्त काट कर सब में तकसीम करना शुरूअ कर दिया।

मारकोनी के दिल पर ऐसा गहरा असर हुआ कि वहां से उधर को चल पड़ा जिधर से

आया था। उसे रासते याद थे। वह चौकन्ना होकर चला जा रहा था। वह उस दीवार पर पहुंचा जो तसव्वुरों से ज़्यादा गहरी नशीब में खड़ी थी। यहीं उस का एक साथी गिरा था। वह जब दीवार के दरमियान उस जगह पहुंचा जहां से उस का साथी गिरा था उसे दूर नीचे गुराने और भोंकने की आवाज़ें सुनाई दे रही थी। वह समझ गया कि सेहराई लोमड़ियां उस के साथी को खा रही हैं। उस के दूसरे साथी को तो इनसान खा गये थे। अब हवा तेज़ नहीं थी। वह तारीकी में समभल समभल कर चलता और सरकता दीवार से गुज़र गया।...... रात के पीछले पहर वह उस जगह पहुंचा जहां तीन ऊंट बैठे थे। उस ने इतना भी इन्तेजार न किया कि ऊंटों केसाथ बन्धा हुआ पानी पी लेता। वह एक ऊंट पर बैठा और दो ऊंटों को साथ लिया और चल पड़ा।

वह अगले दिन की शाम थी जब मारकोनी एक मोअज़्ज़ज़ सौदागर के रूप में अहमर दुरवेश के घर में दाख़िल हुआ। अहमर ने उसे देखते ही पूछा......" तुम अकेले हो वह दोनों कहां हैं।"

मारकोनी जवाब देने की बजाए बैठ गया। उस के तो होश ही ठिकाने नहीं मालूम हो रहे थे। उस ने अहमर को अपने सामने बिठा लिया और उसे एक एक लम्हे लम्हे और एक एक क़दम की रुदाद सुनाई। अहमर को मारकोनी के दो साथियों के मरने का ज़र्रह भर अफ़सोस नही हुआ। उस ने सुना कि उस के साथी को नंगे आदम खोरो ने खा लिया है। तो उस ने ख़ुशी से उछल कर पूछा। ....." क्या तुम ने अपनी आंखो से देखा था कि उन में से किसी कि भी जिस्म पर कपड़ा नही था।......... बूढ़े के असा पर दो सांपों के फन तुम ने देखे थे। ...... तुम ने अच्छी तरह देखा था कि उन लोगों ने हमारे आदमी का गोश्त खा लिया था ?"

" मैं ख़्वाब की बातें नही सुना रहा।" मारकोनी ने झंझला कर कहा। ....." मुझ पर जो बीती है वह मैं सुना रहा हूं। मैंने ये अपनी आखों देखा सुना रहा हूं।"

" फ़िरओन भी यही सुना रहें हैं। जो तुम ने सुनाया है।" अहमर दुरवेश ने उठ कर मारकोनी के कंधों पर हाथ रखा और उसे मुसर्रत की शिद्दत से झंझोड़ते हुए कहा......." तुम ने भेद पा लिया है। मारकोनी ! यही हैं वह लोग जिन की मुझे तलाश थी। ये क़बीला सोला सदियों से वहां आबाद हैं ये लोग सोंच भी नहीं सकते थे कि ज़माना उन्हें इनसान का गोश्त खाने पर मजबूर करदेगा तुम ये तहरीरें नहीं पढ़ सकते। मैं ने पढ़ ली है। लिख्खा है कि खज़ानों की हिफ़ाज़त सौंप किया करते है। लेकिन मेरे मदफ़न की हिफाज़त इनासान करें गे। जो सदियों बाद सांप और दरिन्दे बन जाएंगे। मेरे मदफ़न की हुदूद में कोई इनसान दाख़िल होगा उसे मेरे मुहाफ़िज़ खा जाया करेंगे। वक़्त और ज़माना उन्हें नंगा करदेगा लेकिन मैं ने जहां अपनी दुसरी दुनया का घर बनाया है वह जगह उनकी सतर पोशी करेगी। बाहर का कोई मर्द उन की औरत पर नज़र नहीं डाल सकेगा। जो नज़र डालेगा वह वहां से जिंदा नहीं जा सके गा।

" मैं जिंदा वापस आगया हूं।" मारकोनी ने कहा।

" इस लिये कि तुम नीचे नहीं गये।" अहमर ने कहा......" तुम ने जिन सियाह रंग के

पथरीले पहाड़ों का ज़िक किया है वह पहाड़ अपने दामन में कहीं रिमेंस की हुनूत की हुई लाश और खज़ाने छुपाए हुए हैं।...... और ये नंगे लोग ?..... उनके आबा व अजदाद रिमेनस के वक़्त से वहां पहरे दे रहे है। वह मरते रहे। उनकी नसल आगे बढ़ती रही और पंद्रह सोला सदियां गुज़र गई। मैं बता नहीं सकता कि वह किस तरह जिंदा रहते हैं शायद दरिन्दों की तरह सेहरा के मुसाफिरों के शिकार में रहते हैं। औरउन्हें भून कर खा लेते हैं। वहां पानी की अफ़रात है। खजूरों की कमी नहीं। उन का ज़िंदा रहना हैरान कुन नहीं वह आज भी फ़िरऔन को खुदा समझते है। अगर उन के अक़ीदे टूट चुके होते तो वहां न होते....... तुम ने उन के पास कोई हथ्यार देखे थे ?"

"नहीं!"

" उनकी तादाद का कुछ अन्दाज़ा।"

" रात को जब वह इक्ट्ठे थे तो वह पचीस थे।"

" वह इस से ज़्यादा हो भी नहीं सकते।" अहमर दुरवेश ने कहा।

" हां ।"मारकोनी ने कहा। " मैं ने उन के पास दो ऊंट भी देखे थे। ऊंट ज़्यादा भी हो सकते हैं मगर मैं ने सिर्फ़ दो देखे थे।"

" फिर वह बाहर आते होगें।" अहमर दुरवेश ने कहा। " वह बाहर ज़रूर आते होंगे। मुसाफ़िरों को पकड़ने के लिये उन्हें बाहर आना ही पड़ता होगा......... सुनो मारकोनी! ग़ौर से सुनो।'वहां कोई सीधा रासता जरूर हैं जिस से वह बाहर आते और अन्दर जाते हैं। ये पहाड़ों का कोई ख़ुफ़िया रासता होगा। मैं ने तुम्हें जो रासता बताया था। वह आने जाने का एसा रासता नहीं। जिस से बार बार आया जा सके। वहां कोई और रासता है जो इन नंगे आदम खोरों से मालूम किया जा सकता है। मैं उस की तरकीब सोंच चुका हूं। तरकीब ये है कि वहां बाक़ाइदा हमला किया जाए। हो सकता है हमें उस दीवार नुमा टीले से जिस से गिर का तुम्हारा साथी मरा है। कुछ और आदमी गिर कर मारने पड़ें लेकिन ये क़ुरबानी ज़रूरी है। बताओ पचीस तीस निहत्ते आदमियों को जिन में बच्चे और औरतें भी हैं मारने के लिये और उन में दो तीन को ज़िंदा पकड़ने के लिये तुम्हें कितने आदमी दरकार हैं। कम से कम तादाद बताओ तुम इन आदमियों के राहनुमा और सर बराह होगे।"

" मै तरकीब समझ गया हूं। "मारकोनी ने कहा। .... " एक तरकीब मेरे दिमाग में भी आई है हम उन्हें क़त्ल कर सकते हैं। दो तीन को जिंदा पकड़ सकते हैं लेकिन मै आप को यक़ीन नहीं दिला सकता कि वह उस जगह के तमाम भेद हमें बता देंगे। अपने कबीले को मरता देख कर वह भी मरने के लिये तैयार हो जाएँगे। मैं ऐसी तरकीब करूंगा कि उन मे से ऐक दो आदमी भाग उठें और उनका तआक़ुब किया जाऐ। रासता मालूम हो जाऐगा।

" तुम दानिशमन्द हो मारकोनी ।" अहमर दुरवेश ने कहा...... " बताओ कितने आदमी दूं?"

" पचास ।" मारकोनी ने जवाब दिया और कहा...... " ज़्यादा तर आदमी मेरे मुंतख़ब किये होंगें मैं उन्हें तलाश कर लूंगा। मगर मोहिम की आग़ाज़ से पहले मैं अपनी शरतें पेश

करना चाहता हूं।"

"तुम्हें मुहं मांगा इनाम मिलेगा।" अहमर ने कहा।

"मुझे खज़ाने से हिस्सा मिलना चाहिये" मारकोनी ने कहा।....... "इतनी खतर नाक मुहिम मेरे फ़राएज़ में शामिल नहीं। मैं जासूस और तखरीब कार हूं। मुझे खज़ाने की तलाश के लिये नहीं भेजा गया। ये आप की ज़ाती मुहिम है मैं इनाम नहीं मुहं मांगा हिस्सा लूंगा। अगर आप का मनसूबा कामयाब हो गया। तो आप को एक रियासत की हुकमरानी मिल जाएगी। मैं जासूस का जासूस ही रहुंगा।"

"ये मुहिम और मनसूबा ज़ाती नहीं।" अहमर ने कहा।...."ये मिस्र ,सलीब और सूडान की हुकमरानी का मनसूबा है।"

मारकोनी अपने मुतालबे पर क़ाएम रहा। अहमर मजबूर हो गया। उसे एहसास था कि मारकोनी के सिवा रिमेन्स के मदफ़न तक कोई और नहीं पहुचं सकता। उस के मुतालबे मानने के सिवा कोई चारह कार नहीं था। मारकोनी ने कहा। "मालूम नहीं मुझे कितने दिन सेंहरा में रहना पड़े। मैं एसी सख्त और खुश्क खुराक पसन्द नहीं करुगां। मुझे दो तीन ऊंट फालतू दिये जाऐं। जो मैं और मेरे साथी भून कर खा सकें और मुझे कुदूमी दी जाए।"

"कुदूमी ?" अहमर दुरवेश ने हैरत से कहा। "इतनी नाज़ुक लड़की और इतनी आला दरजे की रक़ासा को तुम्हारे साथ ऐसी ख़तरनाक मुहिम में रवाना कर दूं। वह जाने पर भी राज़ी न होगी।"

"उसे ज़्यादा मुआवज़ा पेश करें वह राज़ी हो जाऐगी।" मारकोनी ने कहा।...."मैं उस के लिय एसा इन्तेज़ाम करुंगा कि वह महसूस ही नही कर सकेगी कि वह सेहरा में है और किसी ख़तरनाक मुहिम मैं शरीक है मैं उसकी क़द्र व क़ीमत से वाक़िफ़ हूं।

ये उस दौर का वाक़या है जब दौलत मन्द ताजिर अपनी चहेती बिवयों को सफ़र में अपने साथ साथ ले जाते थे। अपनी बिवयों में से कोई पसन्द न हो तो किसी मन पसन्द तवाएफ़ या रक़ासा को मुहं मांगा मुआवज़ा देकर हम सफ़र बना लेते थे। फ़ौजों के कमाण्डर भी जंग के दौरान अपनी बिवयों या किराया कि खूबसूरत औरतों को साथ रखा करते थे। उस दौर में खूबसूरत और नौजवान औरत को सोने से ज़यादा क़ीमती समझा जाता था। यही वजा थी। कि सलीबीयों और यहूदयों ने सलतने इसलामिया की जड़ें खोखली करने के लिये औरत का इसतेमाल किया था। मारकोनी जैसे मुहिम जू और ख़तरा पसन्द आदमी का ये मुतालबा कि वह ऐक रक़ासा को अपने साथ रखेगा कोई अजिब या ग़ैर मामुली मुतालबा नहीं था। अलबत्ता कुदूमी को अपने साथ ले जाना कुछ अजीब सा था। कुदूमी एक जवां साल रक़ासा थी जो सिर्फ़ उमरा और दौलत मन्द अफ़राद के हां जाती थी। वह सूडान की रहने वाली थी और मुसलमान वह खूबसूरत तो थी ही मगर उस के नाज़ व अदा मे जो जादू था उस ने बड़े बड़े लोगों के दिमाग़ ख़राब कर के रखे थे। सोंचा भी नहीं जा सकता था कि कुदूमी मारकोनी के साथ सेहरा में चली जाएगी। मारकोनी उस के बग़ैर जाने पर राज़ी नहीं हो रहा था। अहमर दुरवेश को आख़िर ये वादा करना पड़ा कि वह कुदूमी को उस के साथ भेज देगा।

उसी रोज़ पचास आदमियों की तलाश शुरू हो गई काहरा में सलीबी जासूसों और तख़रीब कारों की कमी न थी। मारकोनी ज़्यादा तर आदमी उन्ही में से अपने साथ ले जाना चाहता था। कियों कि वह उस के एअतमाद के आदमी थे। अहमर भी उसी गिरोह से आदमियों का इंतेखाब करना चाहता था। सुलतान अय्यूबी के उस जरनेल ने अपना ऐक तख़रीब कार गिरोह तैयार कर रखा था। ये सब मुसलमान थे। उन के इग़राज़ व माकसिद सलीबीयों वाले थे। अहमर दुरवेश ने अपना इमान नीलाम करके इन चन्द एक मुसलमानो को भी इमान फरोश बना दिया था। ये सब सुलतान अय्यूबी के दुशमन बन गए थे। और उन का उठना बैठना हसन बिन सबाह के फिदाइयों के साथ शुरू हो गया था।

कुदूमी के पास मारकोनी ख़ुद अहमर दुरवेश का पैग़ाम ले कर गया। अहमर मामुली हैसियत का आदमी नही था। वह फ़ौजी हाकिम था। और मिस्र पर अमलन फ़ौज की हुकूमत थी वेसे भी कुदूमी अहमर के ज़ेरे असर थी। उस ने बादिले नाख़ासता हां कर दी लेकिन मारकोनी ने उसे ये बताकर कि वह फ़िरऔन के मदफ़न मे से हीरे जवाहरात निकालने जा रहा है कुदूमी पर ऐसा नशा तारी कर दिया कि वह फ़ौरन तैयार होगई मारकोनी मंझा हुआ चालाक और होशियार आदमी था। उस ने कुदूमी को मलका कुलो पुतरह बना दिया। कुदूमी एक रक़ासा थी जिस के कोई जज़बात नहीं थे उसके अपने जिसम अपने हुसन अपने फन और ज़र व जवाहरात से प्यार था वह उन औरतों में से थी जो इस खुश फ़हमी में मुबतला होती हैं कि उन के हुस्न व जवानी को कभी ज़वाल नही आएगा। मारकोनी ने उसे ये नहीं बताया था कि फ़िरऔन के मदफ़न से बर आमद होने वाला खज़ाना कहां और क्यों सर्फ़ किया जाएगा।

पचास आदमीयों की तलाश में पंद्रह बीस दिन लग गए। उन में ज़यादा तादाद सलीबी तख़रीब कारों की थीं। बाकी मुसलमान थे। वह भी सलीबीयों के ही तख़रीब कार थे। सब ऊंटों पर सवार होकर क़ाहरा से निकल गए थे। लेकिन वह इकट्ठे रवाना न हुए थे। तीन तीन चार चार की टोलियों में मुसाफिरों और ताजिरों के रूप में निकले। कुदूमी को एक पर्दा दार बीवी के बह रूप में ले जाया गया। मारकोनी उस का खाविंद बना। उन दोनो के साथ दो आदमी थे। एक सलीबी था और दुसरा मुसलमान जिस का नाम इसमाईल था। ये अहमर के ख़ास आदमियों में से था अपनी ज़रूरत पर और किराए पर भी हर जुर्म कर गुज़रता था किराए के कातिलों मे से भी था। मुआशरे मे उस की कोई हैसियत और इज़्ज़त नहीं थी। लेकिन हैसियत वाले लोग उसे सलाम करते थे। मारकोनी भी उसे अच्छी तरह जानता था और उस मुहिम में उसे क़ाबिले एअतमाद समझता था। ये सब अलग अलग रासतों से रवाना हुए थे। उन्हें अठारह कोस दूर वह जगह बता दी गई जहां उन्हें इकट्ठा होना था। उन के पास तीर कमान और तलवार थीं। रस्से और खुदाई का सामान था।

सब से पहले मारकोनी, इसमाईल, कुदूमी और उन का एक सलीबी साथी वहां पहुचें थें मारकोनी उन्हें इस पहाड़ी इलाके के अन्दर ले गया था। सुरज ग़ुरूब हो चुका था और उन्हों ने खीमें लगा लिये थे। उसी रात उन के साथियों को पहुंच जाना था। इसमाईल कुदूमी को

जानता था। कुदूमी उस से वाकिफ नहीं थी।

❖

एक वह मुहाज़ था जिस पर नुरूद्दीन ज़ंगी लड़ रहा था। उस ने करक का किला फतह करके वहां के और मज़ाफात के इलाकों के इनतेज़ामात मुकम्मल कर लिये थे। उस के गशती दसते दूर दूर तक गश्त करते थे। ताकि सलीबी किसीतरफ़ से जवाबी हमले के लिये आएं तो कबल अज़ वक़्त इत्तेला मिल जाए उन दसतों का तसादुम सलीबी दसतों से होता रहता था ज़ंगी तमाम इंतजामात सुलतान अय्यूबी की फ़ौज के हवाले करके बग़दाद वापस जाने की तय्यारियां करना चाहता था। वह सुलतान अय्यूबी के इंतेज़ार मे था मगर सुलतान अय्यूबी दुसरे महाज़ पर लड़ रहा था। जो सलबीयों और उन के पैदा करदह ग़द्दारों ने मिस्र मे खोल रखा था। ये महाज़ ज़यादा ख़तरनाक था । सुलतान अय्यूबी उस ज़मीन पर लड़ने की अहलियत रखता था। वह खूब मुक़ाबला कर रहा था। मगर उसे अभी पता नहीं चला था के एक महाज़ और भी खुल गया है ये था फ़िरऔनों के मदफ़नों की तलाश्स।

शाम के खानेके बाद सुलतान अय्यूबी उस कमरे में गया। जहां वह अपने सालारों और दीगर हुक्काम को इकट्ठा करके इहकामात और हिदायात दिया करता था वहां फ़ौज के आला कमाण्डरों के इलावा अली बिन सुफ़यान व गियास बिलबीस भी थे सुलतान अय्यूबी को उसी रोज़ नूरूद्दीन ज़ंगी का एक तवील तहरीरी पैग़ाम मिला। उस नेउस पैग़ाम के ज़रूरी हिस्से कमाण्डर को सुनाए ज़ंगी ने लिखा था। ...... " अज़ीज़ सलाहुद्दीन ! अल्लाह तुम्हें जिन्दा व सलामत रखे। इसलाम को तुम्हारी बहुत जरूरत है करक और गिर्द व पेश के इलाक़े दुशमन से साफ़ हो चूके हैं। गशती दसते जाते हैं तो सलीबीयों का कोई दसता कभी कभी हमारे दसते से उलझ पड़ता है सलीबी मुझ पर रोब डालने की कोशिश कर रहें हैं कि वह अभी यहीं हैं तुम्हारे तैयार किये हुए छापा मार दसते तारीफ़ के क़ाबिल हैं । बहुत दूर तक पीछे जाते हैं। तु म ने उन पर जो मेहनत की है वह उस का सिला दे रहे है। तुम्हारे जासूस उन से भी दिलेर और अकल मन्द है। उन की नज़रों से मै इतनी दूर बैठा हुआ दुशमन कीहर एक हरकत देख रहा हूं.......

" ताज़ह इत्तेला ये है कि सलीबी शायद जावाबी हमले न करें। वह हमें अंगेख़्त कर रहें हैं। कि हम आगे जाकर उन पर हमला करें। तुम जानते हों कि बैतुल मक़दिस जो हमारी मंज़िल है और क़िबला अव्वल जो हमारा मकसूद है कितनी दूर है मै जानता हूं कि तुम उन फ़ासलों से और उन मसाफतों से घबराने वाले इनसान नहीं लेकिन फ़ासले ज़्यादा नहीं दुशवारियां और रुकावटें ज़्यादा हैं। बैतुल मक़दिस तक हमें बहुत से किले सर करने होंगे। उन में चन्द एक किले तो बहुत मज़बूत हैं। सलीबियों ने क़िबला अव्वल का दिफ़ा दूर दूर की क़िला बंदियों की सूरत में बहुत मज़बूत कर रखा हैं जासूसों ने ये भी बताया हे कि सलीबी इस कोशिश में हैं कि युनानीयों बाज़ नतीनयों और अतालवीयों का बहरी बेड़ा मुत्तहिद हो जाए और मिस्र पर हमला आवर होकर शुमाली इलाके में फ़ौजें उतार दे। तुम्हें उस सूरते हाल के लिये तैयार रहना चाहिये। पेश बन्दी कर लो। तुम्हारे पास दूर मार आतिशीं गोले फैंकने

वाली मुनजनीकें ज़्यादा होनी चाहिये मैं ये मशवरा दूंगा कि शूमाली इलाके की ज़मीन इजाज़त दे तो दुश्मन के बहरी बेड़े को साहिल तक आने दो । वहां मज़ाहिमत न करो। दुशमन को इस खुश फहमी में मुबतला कर दो कि उस ने तुम्हें बे ख़बरी में आन दबोचा है। फौजें उतर आएं तो जहाजों पर आग बरसाओ। और सलीबी फौज को अपनी पसन्द के मैदान में घसीट लाओ...

" मैं तुम्हारी मजबूरीयों से बेख़बर नही हूं। तुम्हारे क़ासिद ने तमाम हालात बताऐ हैं। रब्बे काबा की कसम सलीबीयों की सारी बादशाहीयां तूफ़ान की तरह आजाएं तो भी उम्मते रसूल अल्लाह का कुछ नही बिगाड़ सकतीं। उम्मत लहू देना जानती है। ये सरफ़रोशों की उम्मत हे मगर इमान फरोशों ने हमें ज़ंजीरे डाल दी हैं तुम क़ाहिरा में कैद हो गए हो मैं बग़दाद से नहीं निकल सकता। औरत, शराब और ज़र व दौलत ने हमारी सफों में शिगाफ़ कर डाले हैं। अगर हमारे घर में सकून और एअतमाद होता तो हम दोनों सलीब का मुक़ाबला करते मगर कुफ्फ़ार ने ऐसा तिलिस्म पैदा किया है कि मुसलमान भी काफ़िर हो गऐ हैं। यह काफ़िर मुसलमान इतने मुरदा हो चुके हैं कि यह एहसास भी नहीं रखते कि उन का दुशमन उन की बेटियों की इसमत से खेल रहा है। कर्क के मुसलमान बहुत बुरी हालत में थे। सलीबियों ने उन पर जो मज़ालिम ढाए वह सुनो तो लहू के आंसू रोओ। मैं अपनी क़ौम के ग़द्दारों को कैसे समझाऊं कि दुश्मन की दोसती दुशमनी से ज़्यादा ख़तरनाक है..........

" तुम ने अफ़सोस का इज़हार किया है कि तुम्हारे अपने भाई और अच्छे अच्छे हाकिम और कमाण्डर तुम्हारे हाथों कत्ल हो रहे हैं। सुलतान अय्यूबी! अफ़सोस इस पर नहीं कि वह तुम्हारे हाथों कत्ल हुए अफ़सोसनाक अमर ये है कि वह ग़द्दार हुए और ये भी अफ़सोस नाक है कि सलीबी ख़ूश हो रहे होंगे। कि वह मुसलमानों को मुसलमान के हाथों कत्ल करा रहें हैं। तुम ग़द्दारों को बख़्श नहीं सकते। ग़द्दार की सज़ा कत्ल है।......... मैं तुम्हारा इनतेज़ार कर रहा हूं। तुम जब आओ तो तुम्हारे साथ फ़ौज ज़्यादा होनी चाहिये। सलीबी तुम्हें किला बन्दीयों में लड़ा कर तुम्हारी ताक़त ज़ाएल करना चाहते हैं। कहीं एसा न हो कि बैतुल मक़दिस के रासते में ही तुम बे दसतो पा होजाओ तुम जब आओ तो मिस्र के अन्दरूनी हालात को पूरी तरह क़ाबू में करके आना। सूडानीयों की तरफ से चौक़न्ना रहना। मुझे मालूम हुआ है कि तुम्हारे सामने कुछ माली मसाएल भी हैं। मैं तुम्हारी मदद करने की कोशिश करूंगा। बेहतर ये है कि अपने मसाएल ख़ुद ही हल करने की कोशिश करो। और ये कोशिश भी करो कि क़ाहिरा से जलदी निकल आओ लेकिन अनदर और बाहर के हालात देख कर वहां से निकलना। अल्लाह तुम्हारा हामी है।

❖

सुलतान अय्यूबी ने मजलिस के हाज़ेरीन को ये पैग़ाम पढ़कर सुनाया था और उन्हें ये उम्मीद अफज़ा ख़बरें सुनाई कि फ़ौज में शामिल होने के लिये देहाती इलाके से लोग आने लगे हैं। तौहुम परसती की जो मुहिम दूशमन ने शुरूअ की थी। वह ख़त्म कर दी गई है लेकिन कहीं कहीं उस के असरात बाकी हैं। एक फ़तूर मस्जिदों से भी उठा था। उसे भी दबा

लिया गया। तीन चार इमामों ने उन्हीं तौहुमात को जो सलीबीयों ने हमारे मज़हब में शामिल करने की कोशिश की थी लोगों के ज़ेहनों में डालना शुरूअ कर दिया था। उन्हों ने अपने आप को खुदा का एलची बना लिया था। हमारे सामने ऐसे लोग आऐ हैं। जो किसी मुसीबत के वक़्त बराहे रासत खुदा से दुआ मांगने के बजाऐ इमामों को नज़राने देते रहे कि वह उन के लिये दुआ करें। ये वहम फैला दिया गया था कि आम आदमी ख़ुदा से कुछ नहीं मागं सकता। न खुदा उस की सुनता है। सुलतान अय्यूबी ने कहा।......" मैं ने उन इमामों को मस्जिदों से निकाल दिया है। और मस्जिदें ऐसे इमामों के हवाले कर दी हैं जिन के नज़रयात और अक़ीदे कुरआन के ऐन मुताबिक़ है। वह अब लोगों को ये सबक़ दे रहे हैं कि मुसलमानों का खुदा आलिम और बे इलम के लिये अमीर और ग़रीब के लिये हाकिम और रिआया के लिये एक जैसा है वह हर किसी की दुआ सुनता है। अच्छे अमल की जज़ा और बूरे अमल की सज़ा देता है। मैं अपनी कौम में यही कुव्वत और यही जज़्बा पैदा करने की कोशिश कर रहा हूं। कि वह अपने आप को और खुदा को समझने की कोशिश करें। मेरे दोस्तों! तुम ने देख लिया है कि तुम्हारा दुशमन सिर्फ़ मैदाने जंग में नहीं लड़ रहा है। वह तुम्हारे दिलों मे नए अक़ीदे डाल रहा है। यहूदी इस मुहिम में पेश पेश हैं यहुदी अब कभी तुम्हारे आमने सामने आकर नहीं लड़ेगा। वह तुम्हारे ईमान को कमज़ोर करने की कोशिश कर रहा है। इस अमल में वह इतनी जलदी कामयाब नही हो सकता। लेकिन वह नाकाम भी नहीं होगा। वह वक़्त आऐगा। जब खुदा की धुतकारी हुई क़ौम मुसलमानों को कमज़ोर देख कर ऐसी चाल चलेगी। कि अपने मक़सद को पा लेगी। उस का खंजर सलतनते इसलमिया के सीने में उतर जाएगा। अगर अपनी तारीख़ को उस ज़िल्लत से बचाना चाहते हो तो आज ही पेश बन्दी कर लो। अपनी क़ौम के क़रीब जाओ अपने आप को हाकिम और क़ौम को महकूम समझना छोड़ दो। उन में इतना वक़ार पैदा करो कि क़ौमी वक़ार पर जानें क़ुरबान करदें।"

सुलतान अय्यूबी ने बताया कि सलीबीयों के पास औरत और दौलत है और हमारे हां उन दोनों के लालची मौजूद है। हमारे सामने एक मुहिम ये भी है कि क़ौम के दिल से औरत का लालच निकाल दें। उस के लिये ईमान की मज़बूती की जरूरत है।

"अमीरे मोहतरम!" एक आला कमाण्डर ने कहा।..........." हमें दौलत की जरूरत भी है। इख़राजात पूरे करने मुशकिल हो रहे हैं। हमें बाज़ कामों में मुशकिल पेश आ रही हैं।"

"मैं मुशकिल आसान कर दुंगा।" सुलतान अय्यूबी ने कहा।........"तुमहें ये हक़ीकत हमेशा के लिये क़ुबूल करनी पड़ेगी कि मुसलमानों के पास दौलत की और फ़ौज की कमी रही है और रहेगी। हमारे रसूल स0 ने पहली जंग तीन सौ तेरह मुजाहिदीन के ताक़त से लड़ी थी। उस के बाद मुसलमान जहां भी लड़े उसी तनासुब से लड़े। मुसलमानों के पास दौलत की कमी कभी नही रही। दौलत चन्द एक अफ़राद के घरों में चली गई है। अब भी हमारी क़ौम का यही हाल है छोटी छोटी रियासतों के जो मालिक मुसमलामन हैं। उन के पास दौतलत के ढ़ेर पड़े है।"

"दौलत के ढ़ेर यहां भी पड़े है सालारे आज़म!" ग़ियास बिलबीस ने कहा।....." अगर

आप इजाज़त दें तो हम एक नई मुहिम शुरूअ कर सकते हैं।...... आप को मालूम है कि मिस्र खज़ानों की सर ज़मीन है यहां जो फ़िरऔन भी मरा वह अपना तमाम तर खज़ाना अपने साथ ज़मीन के नीचे ले गया। वह खज़ाने किस के थे ये उस ग़रीब मख़्लूक़ की दौलत थी जिसे भूका रख कर उस से सजदे कराए गए। उस दौर के इनसान ने फ़िरऔनो को खुदा सिर्फ़ इस लिये कहा था कि वह इनसान भूका था। उस की किसमत फ़िरऔनों के हाथ में थीं उस की ज़िनदगी और मौत भी फ़िरऔनों ने अपने हाथ में ले ली थी। इनसानों से ज़मीन खुदवा कर और पहाड़ कटवाकर कर फ़िरऔनों ने अपने ज़मीन दूज़ मक़बरे बनाए तो वह ऐसे जैसे उन के महल थे। उन में उन्हों ने वह दौलत ढेर कर ली जो लोगों की थी। अगर आप इजाज़त दें तो हमें फ़िरऔन के ज़मीन दोज़ मक़बरों और मदफ़नों की तलाश शुरूअ कर दें और ख़ज़ाने मुलक और क़ौम की ख़ातिर इसतेमाल करें।"

ग़यास बिलबीस की ताइद मे कई आवाज़े उठीं।...... "ये सही है अमीरे मोहतरम! हम ने इस से पहले कभी ग़ौर नही किया था।" ——" हम इस मुहिम में फ़ौज को इसतेमाल कर सकते हैं।"—— " शहरी आबादी से एक लशकर जमा किया जा सकता है।" —— "हां —हां। ग़ैर फ़ौजियों को इसतेमाल किया जाए और उन्हें उजरत दी जाए।"

मजलिस में हंगामा सा बपा हो गया। हर कोई कुछ न कुछ कह रहा था। अगर कोई ख़ामोश था तो वह सुलतान अय्यूबी था। मजलिस में बहुत देर बाद ये एहसास पैदा हुआ कि उन का अमीर और सालारे आज़म ख़ामूश है। मजलिस पर भी ख़ामूशी तरी हो गई। सुलतान अय्यूबी ने सब पर निगाह डाली और कहा।......" मैं इस मुहिम की इजाज़त नहीं दे सकता। जिस की तजवीज़ ग़ियास बिलबिस ने पेश की है।"—— मजलिस पर सन्नटा सा तारी हो गया। किसी को तवक्को नही थी कि सुलतान अय्यूबी इस तजवीज़ को ठुकरा देगा। उस ने कहा।" मैं नहीं चाहता कि मरने के बाद तारीख़ मुझे कबर चोर और मकबरों का डाकू कहे। तारीख़ ने मुझे ज़लील किया तो उस मे तुमहारी भी ज़िल्लत होगी। आने वाली नसलें कहेंगी कि सुलतान अय्यूबी के मुशीर और वज़ीर भी कबर चोर थे। सलीबी इस इलज़ाम को ख़ूब उछालेंगे। और तुम्हारी कुरबानीयों और जज़बाए इसलाम को डकेती और रहज़नी का नाम देकर तुम्हें तुम्हारी ही नसलों में रुसवा कर देंगे। और तुम ही नहीं हमारी तारीख़ ज़लील और रुसवा हो जाएगी।"

" गुसताख़ी माफ़ अमीरे मोहतरम!" — अली बिन सुफ़यान ने कहा।........" थोड़े से अरसे के लिये मिस्र सलीबीयों के कबजे में आया था। उन्हों ने सब से पहलेयहां के ख़ज़ानों की तलाश शूरूअ की थी। काहिरा के मज़ाफात में हम ने जिन खंडरों से सलीबियों, तख़रीबकारों और फ़िदाईयों का एक गिरोह पकड़ा था वह किसी फ़िरऔन का मदफ़न था वहां से वह सब कुछ ले गए थे सलीबियों की हुकूमत ज़्यादा देर क़ाएम न रही वरना वह यहां के तमाम खज़ाने निकाल कर ले जाते। मोहतरम ग़यास बिलबीस ने ठीक कहा कि यह खज़ाने अगर किसी की मिलकियत है तो वह फ़िरऔन नहीं थे उन के मालिक उस के वक़्त के इनसान थे। मैं ये मशवरा पेश करने की जुरअत ज़रूर करूंगा कि ये खज़ाने निकाल कर

आज के इनसान की फलाह व बहबूद और वकार के लिये इसतेमाल किये जाएँ।"

"और मैं तुम्हें ये भी बतादूं"..... सुलतान अय्यूबी ने कहा —" कि ये खज़ाने तुम्हारे सामने आऐ तो तुम भी फ़िरऔन बन जाओगे। इनसान को ये जुरअत किस ने दी थी कि वह अपने आप को खुदा समझे ? —— दौलत और दौलत की हवस ने इनसान को इनसान के आगे सजदा किसने कराया था? मुफलिसी और भूक ने । तुम सलीबियों की बात करते हो कि उन्हों ने फ़िरऔनों के एक मदफन को लूटा । मै तुम्हें बताता हूं कि जब पहले फ़िरऔन की लाश तमाम तर खज़ाने के साथ ज़मीन में दबाई गई थी। कबर चोरी उसी वक़्त शुरूअ हो गई थी। इनसान वहशियों और दरिन्दों की तरह पहले फ़िरऔन के मदफ़न पर टूट पड़े थे। उन का दीन और ईमान सिर्फ़ दौलत बन गया था। फिर फ़िरऔन मर कर अपने ख़ज़ानें ज़मीन में ले जाते रहे और कबर चोरी बाकाईदा पेशा बन गई। उस के बाद फ़िरऔन ने अपनी ज़िन्दगी में ही अपना मदफ़न किसी ऐसी जगह तैयार कराया जंहां तक कोई पहुंच न पाए। और मर ने के बाद उस के पसमानदगान और जानशीन ने ऐसे तरीके से बन्द कराया कि कोई उसे खोल न सके। और जब फ़िरऔन का दौर खत्म होगया तो मिस्र जिस के कबज़े में भी आया उस ने उन छुपे हुऐ खज़ानों की तलाश शुरूअ कर दी। मैं जानता हूं कि फ़िरऔन के बहुत से मदफ़न एसे हैं जिन के मुतअल्लिक कोई जानता ही नहीं कि कहां हैं। वह ज़मीन दूज़ महल हैं। कयामत तक मिस्र के हुकमरान और हमला आवर इन मदफ़नों को ढूंढते रहेंगे.
....

" इन तमाम हुकूमतों को ज़वाल क्यों आया। सिर्फ़ इस लिये कि उन की तवज्जो खज़ानों पर मरकूज़ हो गई थी। रिआया को ये तास्सुर दिया गया कि दौलत है तो इज्ज़त है। हाथ ख़ाली है तो तुम भी और तुम्हारी बेटियां भी उनकी हैं। जिन के पास दौलत है.... मेरे रफीको! सलाहुद्दीन अय्यूबी को उस कतार में खड़ा न करो। मैं अपनी कौम को ये तास्सुर देना चाहता हूं कि असल दौलत कौमी वकार और ईमान है लेकिन ये तास्सुर सिर्फ़ उस सूरत में पैदा किया जा सकता है कि मैं खुद और तुम सब जो हुकूमत के सुतून हो दिल से दौलत का लालच निकाल दो।"

" हम इन ख़ज़ानों की तलाश ज़ाती लालच के लिये नहीं करना चाहते।" एक कमाण्डर ने कहा। —" हम कौमी ज़रूरयात के पेशे नज़र मुहिम शूरूअ करना चाहते हैं।"

" मैं जानता हूं कि मेरा इनकार तुम मे से किसी को पसन्द नहीं।" सुलतान अय्यूबी ने कहा......... " मेरी बात समझने के लिये तुम्हें अपने ज़ेहन बिलकुल ख़ाली करने होंगे। मेरी अकल मुझे बता रही है कि बाहर से आई हुई दौलत जो कौमी ज़रूरयात के लिये ही आई हो हाकिमों के ईमान मुतज़लज़ल कर दिया करती है ये दौलत की लानत है अगर मेरे पास घोड़ा ख़रीदने के लिये रकम नहीं होगी तो मैं फ़ौजा के साथ पैदल बैतुल मकदिस जाउंगा। घोड़े ख़रीदने के लिये मुरदों के कफ़न उतार कर नहीं बेचुंगा। मेरा मकसद बैतुल मकदिस को सलीबीयों से आज़ाद कराना है। घोड़ा ख़रीदने के लिये रकम का हुसूल मेरा मकसद नहीं। तुम जब खज़ानों की तलाश करने लगोगे तो कौम में एसे लोग मौजूद हैं जो अपने तौर

पर चोरी छुपे मकबरों को उखाड़ने लगेंगे। मिस्र में एसा होता आया है। और जब ये ख़ज़ाने तुम्हारे सामने आऐंगे तो तुम एक दूसरे के दुशमन न हुए तो एक दूसरे को शक की निगाहों से देखोगे। जहां ख़ज़ाने आजाते हैं। वहां इनसानी मुहब्बत ख़त्म हो जाती है। हुकूकुल इबाद का जज़बा ख़त्म हो जाता है। उन ज़रो व जवाहरात ने इनसान को ख़ुदा बनाया था। वह ख़ुदा अब कहां हैं? आसमानों पर नहीं ज़मीन के नीचे। मेरे रफ़ीको ! मैं एक नए जुर्म की बुनयाद नहीं डालना चाहता। उन खज़ानों से बचो ।ये ख़ज़ानों के लालच का ही करिश्मा है कि तुम्हारी सफ़ों में ग़द्दार भी मौजूद हैं। तुम दो ग़द्दारों को कत्ल करते हो तो चार और पैदा हो जाते हैं। अपनी तक़दीर अपनी तदबीर से बनाओ तुम मुसलमान हो। अपनी किसमत कुफ़्फ़ार के हाथों में न दो, वरना सब ग़द्दार हो जाऐंगे। फ़िरऔन मर चुके हैं। उन्हें ज़मीन की तहों में दबा रहने दो।"

" आप के हुक्म के बग़ैर हम ऐसी कोई मुहिम शुरूअ नहीं करेंगे।" किसी ने कहा।

" गयास !" सुलतान अय्यूबी ने ग़यास बिलबीस से मुसकुराकर पूछा। आज तुम्हें इन पोशीदा ख़ज़ानों का ख़्याल कैसे आगया है? मुझे यहां आए चार साल हो गये हैं। इस से पहले यह तजवीज़ क्यों पेश नहीं की। मैं ने ऐसा कभी सोंचा भी नहीं था अमीरे मोहतरम। ग़यास बिलबीस ने काह। " तक़रीबन दो महीने हुए कुतब ख़ाने के मुहर्रिर ने मुझे बताया था कि पुराने काग़ज़ात में से कुछ काग़ज़ात गुम हो गए हैं। मैं ने इन काग़ज़ात की नौइयत और अहमियत पूछी तो उस ने बताया कि वह इतने अहम नहीं थे कि तलाश ज़रूरी समझी जाए। ये कुछ नक्शे से थे। और फ़िरऔनों के वक़्तों की तहरीरें थीं। बहुत ही बोसीदा और किरम खुरदा काग़ज़ात और कपड़े थे। मुहरर ने जब फ़िरऔनों का नाम लिया तो मुझे ख़याल आया कि उन तहरीरों और नकशों में फ़िरऔन के ख़ुफ़या मक़बरों के मुतअल्लिक़ मालूमात हो सकती है मैं ने वह पलन्दे देखे जिन में से काग़ज़ात गुम हुए थे। मैं ने ये सोंच कर ज़्यादा तवज्जो न दी कि इन तहरीरों को आज कौन पढ़ और समझ सकता है।"

" तुम ने सही नहीं सोंचा ग़यास!" सुलतान अय्यूबी ने कहा।—" मिस्र में एसे लोग मौजूद हैं जो इन तहरीरों और इशारों को समझ सकते हैं उन काग़ज़ों और नकशों की चोरी हैरान कुन नहीं। ये चोरी खज़ाने के किसी लालची ने की होगी । उन काग़ज़ों के साथ मुझे कोई दिलचसपी नहीं मुझे चोरी के साथ दिलचसपी है वह कोई तुम्हारा ही रफ़ीक़ न हो उस चोर का सुराग़ लगाओ।"

" मुझे शुबहा होने लगा कि इन कागज़ों की कुछ न कुछ अहमीयत ज़रूर है –" अली बिन सुफ़यान ने कहा— " मैं मोहतरम ग़यास बिलबीस के साथ बात कर चुका हूं। बहुत दिनों से हमारे मुख़बिर और शहर के अन्दर के जासूस हमें किसी पुर असरार सर गरमी की इत्तेलाऐं दे रहें हैं। कुदूमी यहां एक मशहूर रक़ासा है जिसे अमीरो की महफिलों की शमा कहा जाता है पांच छ दिनों से ग़ाएब है एक रक़ासा का शहर से ग़ैर हाज़िर होना कोई अहम वाक़िया नही हुआ करता । लेकिन कुदूमी को मै ने ख़ास तौर पर नज़र में रखा हुआ है। मेरे मुख़बिरों ने बताया है कि उस के हां अजनबी और मशकूक से दो आदमी आते रहे हैं । फिर कुदूमी के घर

से एक रोज़ एक परदा पोश औरत को निकलते देखा गया। वह एक अजनबी ताजिर मुसाफ़िर के साथ जा रही थी। मुझे शक है कि कुदूमी भेस बदल कर निकल गई है। दूसरे मुख़बिरों की इत्तेलाओ से पता चलता है कि कुछ आदमी जुनूब की तरफ़ मशकूक हालत में जाते देखे गये हैं। उन सर गरमियों से मुझे शक होता है। कि उन का तअल्लुक उन गुम शुदा कागज़ात के साथ भी हो सकता है और ये शुबहा भी है कि ये सलीबी तख़रीब कार होंगे। जो कुछ भी है हम उन सरगरमियों की खोज लगा रहे हैं।"

" ज़रूर खोज लगाओ" सुलतान अय्यूबी ने कहा।—" और उन खज़ानों को अपने ज़ेहनो से उतार दो मैं जानता हूं कि कौम की फ़लाह बहबूदी के लिये और सलीबीयों से फ़ैसला कुन जंग लड़ने के लिये हमें माली इसतेहकाम की ज़रूरत है मगर मैं किसी से मदद नहीं मागुंगा। मुहतरम नूरुद्दीन ज़ंगी ने माली इमदाद का वादा किया है मैं ये इमदाद कुबूल नही करुगां। माली इमदाद सगे भाई से मिले तो भी इनसानी सलाहियतों के लिये मेहनत और दियानतदारी के लिये नुकसान देह होती है। फिर इनसान खज़ानों की तलाश में मारा मारा फिरने लगता है। मिस्र की ज़मीन बानझ नहीं हो गई मेहनत करो कि ये ज़मीन तुम्हें समर दे कौम को बताओ कि हुकुमत पर उस के हुकूक किया हैं ताकि वह अपने आप को रिआया समझना छोड़ दें और कौम को ये भी बताओ कि उस के फ़राएज़ किया हैं अगर कौम ने फ़राएज़ से निगाहें फेर लीं तो हुकूक पामाल हो जाऐगें तुम जिस ज़मीन की पासबानी में ख़ून नहीं बहाओगे और जिस के वकार के लिये पसीना नहीं बहाओगे वह तुम्हारा हक कभी अदा नही करेगी। फिर उस मुल्क के हुक्मारन बाहर के खज़ानों की तलाश में निकल खड़े होंगे। और कौम अफ़राद में मुनतशिर हो कर कुफ्फार की गुलाम हो जाऐगी।"

❖

जिन खज़ानों को सुलतान अय्यूबी हाथ लगाने से भी गुरेज़ करता था उन तक उस के अपने ही ऐक जरनेल के भेजे हुए पचास आदमी पहुंच गए थे मारकोनी इसमाईल कुदूमी और एक और सलीबी शाम को पहुंचे। उन के बाकी साथी जो अलग अलग टोलियों में रवाना हुए थे उसी रात पहुंचना शुरू हुए और आधी रात के बाद पूरे पचास आदमी पहुंच गए। जैसा कि बयान किया जा चुका है ये जगह ऐसी थी जिस के करीब से कभी कोई मुसाफ़िर नहीं गुज़रा था। जगह डरावनी होने के इलावह किसी रासते पर पड़ती ही नहीं थी। ये चुंकी सरहद से दूर थी इस लिये सरहदी दसतों कि नज़र भी नहीं थी। मारकोनी ने रात को ही सब को इस खित्तें के अन्दर पहुचा दिया ताकी बाहर से कोई देख ही न सके और उन्हें मुकम्मल आराम देने के लिये कहा कि वह जितनी देर सो सकते हैं सो जाऐं यहां से आगे पैदल जाना होगा। और ये सफ़र जिसम की बजाऐ असाब को ज़यदा थकाएगा। मारकोनी खुद कुदूमी के साथ अपने खीमें में चला गया।

वह सब उस वक्त जागे जब सूरज उन टीलों पर आगया जिस के दामन में सब सोए हुए थे। मारकोनी ने उन्हें बताया कि वह कौन कौन सा सामान, औज़ार और हथ्यार वग़ैरह अपने साथ लें। उन में मज़बूत रस्से कुदालें और मोटी मोटी सलाखें थीं और हथ्यारों में तीर

कमान और तलवारें। रासते की मुशकिलात के मुतअल्लिक भी उस ने सब को बता दिया। उस दीवार के मुतअल्लिक उन्हें ज़ेहनी तौर पर तैयार करदिया जिस से उस का एक साथी गिर कर हमेशा के लिये ला पता हो गया था। उस ने उन्हे रोने की आवाजों से भी ख़बर दार करा दिया जो उस ने सिर्फ़ एक आदमी पीछे रहने दिया। कुदूमी को भी वह साथ नही ले जा सकता था। उसे तवक्को थी कि कहीं कोई रासता अन्दर जाने के लिये मिल ही जाऐगा। और वह कुदूमी को उस रासते से ले जाऐगा। कुदूमी की हिफाज़त के लिये भी एक आदमी की ज़रूरत थी। उस के लिय सिर्फ़ इसमाईल मोजूं आदमी था।

मारकोनी ने इसमाईल से कहा---" तुम कुदूमी के लिये यहीं रहोगे लेकिन ये ख़याल रखना कि तुमहारी हैसियत उस लड़की के मुकाबले में कुछ भी नहीं। उस के आराम और हिफाज़त के तुम ज़िम्मादार होगे। मै बहुत जलदी वापस आ रहा हूं। तुम दोनों को साथ ले जाउंगा।"

वह अपनी पारटी को साथ ले कर चल पड़ा इस रासते से वह वाकिफ़ हो चुका था। बे ख़ौफ़ व ख़तर चलता गया। जूं जूं ये आदमी आगे बढ़ते जा रहे थे उन पर ख़ौफ मुसल्लत होता जा रहा था। वह सेहराओं से पूरी तरह वाकिफ़ थे मगर एसा खित्ता और इस किसम के पहाड़ उन्होंने कभी नही देखे थे और वह तब उस जगह पहुंचे जहां रोने की आवाज़ें आती थीं। तो सब बिदक कर ख़लाओं में देखने लगे। बिला शक व शुबहा औरतें रो रहीं थीं। उन आदमीयों में दो तीन ऐसे भी थे जिन्होंने इस इलाके के मुतअल्लिक वह तमाम डरावनी कहानियां सुन रखी थीं जो बहुत मुद्दत से मशहूर थीं। उन्हो ने अपने सलीबी साथियों को भी ये कहानियां सुना कर डरा दिया। वह सब डर की गिरफ़्त में पहले ही थे लेकिन जो इनआम बताया गया था उस में इतनी ताकत थी जो उन के ख़ौफ़ को दबा रही थी उस के इलावह वह सलीबी के तन्ख़ाह दार मुलाज़िम भी थे और मारकोनी उन का अफ़सर था। वह इनाम और हुक्म की पाबन्दी के तेहत चले जा रहे थे रोने की आवाजों पर वह बिदके तो मारकोनी ने उन्हें बतया कि ये औरतें यो औरतों की बद रूहें नहीं यह हवा की आवाज़ें हैं मगर वह डरते रहे और एक दूसरे को देख देख कर आगे ही आगे बढ़ते गए।

उस वक़्त सूरज गुरूब हो रहा था। जब वह उस वसीअ और बे इनतहा गहरे नशीब तक पहुंचे जो उन्हें कुदरती दीवार पर चल कर पार करना था। मारकोनी को वहां कुछ मुशकिल पेश आई दीवार पर पावं रखने से सब घबराते थे। मारकोनी आगे आगे चला। वह एक बार उस ख़तरे से गुज़र चुका था उस के पीछे दुसरे आदमी ने दीवार पर कदम रखा और फिर बाकी भी चल पड़े सूरज उस जहन्नुम में ही रूपोश हो गया था। उस से ये फ़ाइदा हुआ कि खाई की गहराई नज़र नहीं आती थी। मारकोनी दीवार उबूर कर गया। उसे एसी चीख़ सुनाई दी जो तह की तरफ़ जा रही थी। ज़रा देर बाद एक और हैबत नाक चीख़ सुनाई दी। ये भी दूर नीचे जाकर एक धीमी सी धमक में ख़ामोश हो गई। एसी पांच चीख़ें सुनाई दीं.... ..... ये गिरोह जब दीवार से गुज़र कर कुछ आगे जा जमा हुआ तो उस में पाचं आदमी नहीं थे। मारकोनी ने उन्हें बतया कि उस से आगे कोई एसा ख़तरा नहीं है और वह मंज़िल के करीब

आगए हैं। उस ने इस उमीद का इज़हार भी किया कि उन की वापसी उस रासते से नही होगी बल्कि सीधा और आसान रासता मिल जाऐगा।

रात गहरी हो चुकी थी जब वह उस जगह पहूंचे जिस के नीचे सर सबज़ ख़ित्ता था। मारकोनी ने तमाम आदमीयों को वहां से थोड़ी दूर छुपा दिया। दो आदमी अपने साथ लिये और बाक़ी सब से कहा कि उन के पास जो कुछ है वह खाकर सोजाऐं। उन्हें ज़रूरत के वक़्त जगाया जाएगा। मारकोनी दो आदमियों को साथ लेकर उस जगह की देख भील के लिये चला गया। नीचे मौत का सकूत था। कहीं हलकी सी रौशनी नज़र नहीं आती थी। वह और ज़यादा क़रीब जाने से डरता था उस ने हमला सुबह के लिये मुलतवी कर दिया और अपने आदमियों के पास वापस चला गया।

कुदूमी और इसमाईल अकेले रह गये थे। कुदूमी उन हंगामा खेज़ महफिलों की आदी थी जिन में शराब और दौलत पानी की तरह बहती थी। मारकोनी उसे उस होलनाक वीराने में ले आया था और उसे एक आदमी के साथ तन्हा छोड़ गया था। इसमाईल उसे जानता था। वह इसमाईल से वाक़िफ़ नहीं थी। इसमाईल जुर्म व गुनाह की दुनया का इनसान था। उस की शकल व सूरत इतनी अच्छी और तबिअत इतनी शिगुफता थी कि कुदूमी ने उसे कोई आम आदमी न समझा। लेकिन इसमाईल उस के साथ बात करने से गुरेज़ कर रहा था। शाम के वक़्त उस ने कुदूमी को भूना हुआ गौश्त गरम करके दिया और शराब भी उस के आगे रख कर कहा कि खाना खा कर सो जाना। कोई जरूरत हो तो ख़ीमें से बुला लेना। वह बाहर निकल गया कुदूमी ने खाना खा लिया शराब भी हसबे आदत पी ली लेकिन तनहाई उसे परेशान करने लगी। उसे अपने हुस्नऔर नाज़ व अदा पर चूंकी फ़ख़्र था इस लिये उसे तवक़्क़ो थी कि इसमाइल उस के क़रीब होने की कोशिश करकेगा। इस फ़ख़्र में तकब्बुर और गूरूर ज़्यादा था मगर इसमाईल ने उस की तरफ़ एसी कोई तवज्जो न दी जिस की कुदूमी को तवक़्क़ो थी।

कुदूमी को नींद नहीं आ रही थी। वह अपने ख़ीमें से निकली और इसमाईल के ख़ीमें में चली गई। वह अभी जाग रहा था। कुदूमी के लिये उस ने दिया जला दिया और पूछा कि वह क्यो आई है कुदूमी ने कहा कि उस की तबिअत घबरा रही थी। वह उस के पास बैठ गई और पूछा —— तुम शायद मुसलमान हो।"

"तुम्हें मज़हब से क्या दिलचसपी हो सकती है।" इसमाईल ने जवाब दिया——" तुम्हारी दिलचसपी इनसानों के साथ है किसी की मज़हब के साथ नहीं। मेरा नाम इसमाईल है और मेरा कोई मज़हब नही है।"

"ओह!"—— कुदूमी ने मुसकुराहट और हैरत से कहा—— " तुम हो इसमाईल। अहमर दुरवेश के ख़ास आदमी।" उस ने पूछा ——" ये आदमी कौन है? कहां से आया है?" वह मारकोनी के मुतअल्लिक पूछ रही थी। कहने लगी। " उस ने अपना नाम सुलेमान सिकन्दर बताया है लेकिन ये मुसलमान मालूम नही होता।"

" ये मिस्री भी नही।"— इसमाईल ने कहा।— "और ये सूडानी भी नहीं ।और सुलेमान सिकन्दर उस का नाम नहीं। "

"फिर ये कौन है?" कुदूमी ने पूछा — " उस का असली नाम किया है।"

" मैं उस का नाम नहीं बता सकता ।"— इसमाईल ने कहा।—" ये राज़ छुपाए रखने के लिये मुझे मुआवज़ा मिलता है .....तुम्हें उस से कोई दिलचसपी नहीं होनी चाहिये कि ये कौन हैं। तुम मुहं मांगी उजरत पर आई हो ये तुम्हारा पेशा है। उस ने तुम्हें खज़ाने में से कुछ हिस्सा देने का वादा दिया होगा।

"वह तो मेरा हक़ है।" कुदूमी ने कहा।— " उस ने मुझे जो उजरत दी है। वह इस ख़तरनाक बयाबान में साथ आने के लिये बहुत ही थोड़ी है। मैं तो खज़ाने में से हिस्सा लेने के वादे पर आई हूं। "

" किया तुम्हें यक़ीन है कि वह तुमहें वह हिस्सा दे देगा ?"— इसमाईल ने पूछा —" और किया तुम्हें यकीन है कि उसे वह ख़ज़ाना मिल जाऐगा। जिस का हिस्सा वसूल करने के लिये तुम आई हो ?"

" मैं इतनी क़ीमती लड़की हूं कि लोग मुझे ख़ज़ानों के एवज ख़री ना चाहते हैं।" — कुदूमी ने ग़रूर के लहजे में कहा।—" ये शख़्स तो मेरी कीमत अदा ह। नहीं कर सकता। मैं ऐसे अमीर ज़ादों और शहज़ादों को अपना ग़ुलाम बना के रखा करती हूं"

" कब तक।" – इसमाइल ने मुसकुरा कर कहा " ज़्यादा से ज़्यादा दो साल। उस के बाद तुम्हारी क़ीमत इतनी गिर जाऐगी कि तुम गलियों में पागलों की तरह दौड़ती फिरोगी । तुम्हें पूछे गा कोई नहीं। जिन के पास ख़ज़ाने हैं उन्हें एक और कुदूमी मिल जाएगी । तुम जैसी कई मिल जाएंगी।...... सुनो कुदूमी! इतना ग़ुरूर न करो।"

" क्यों न करूं?' — कुदूमी ने कहा— " ये शख़्स जो अपना नाम सुलेमान सिकन्दर बताता है मेरे तिलिस्म में ऐसा गिरफ़तार है कि उस ने मुझे कस्में खा कर कहा था कि वह सिर्फ़ मेरे लिये खज़ाने की तलाश में जा रहा है। वह मुझे सिकन्दरया ले जाएगा जहां हम समुन्दर के किनारे महल बनाएगें ।फिर रकासा नही रहूंगी मैं। किया तुम्हें इसमें कुछ शक है।

" शक नहीं मुझे यकीन है कि उस ने बहुत बड़ा झूट बोला है।" इसमाईल ने कहा—" मै अपनी उजरत के लिये उस के साथ आया हूं अहमर दुरवेश का कहना मेरे लिये हुक्म का दरजा रखता है उस ने कहा कि उस के साथ जाओ मैं आगया। ये मेरा पेशा है मैं किराए का गुनहगार हूं। मैं उजरत पर कत्ल भी किया करता हूं। मगर मैं झूट नहीं बोला करता मैं कभी पकड़ा ही नहीं गया। अहमर दुरवेश मुझे बचा लेता है मुझ में दुसरी खूबी या ख़राबी ये है की मैं औरत का एहतराम करता हूं मुझे मालूम नहीं मैं एसा क्यों करता हूं। औरत परदा दार हों या इसमत फरोश, मैं उसकी इज्ज़त करता हूं। मैं औरत को धोका नहीं दे सकता। मैं तुम्हें भी धोका में नहीं रखुगां। मैं तुम्हें ये बता देना अपना अख़लाकी फर्ज. समझता हूं। कि ये खज़ाना तुम्हारे लिये महल तामीर करने के लिये नहीं निकाला जा रहा है। ये मिस्र की जड़ें काटने के लिये इसतेमाल होगा। यहां सलीबी हुकूमत क़ाएम की जाएगी। मस्जिदों को गिरजे बनाया

जाऐगा। और अगर एसा न हुआ तो ये खज़ाना मिस्र से बाहर चला जाएगा। मुझे मालूम है तुम्हें मिस्र के साथ कोई दिलचसपी नहीं। मुझे भी नहीं। हम दोनों पेशेवर हैं। गुनाह हमारा पेशा है। मैं तुम्हें सिर्फ़ दो बातें बताना चाहता था जो बता चुका हूं। एक बार फिर सुन लो। तुम्हारे हुस्न और जवानी की उमर बहुत थोड़ी रह गई है। दुसरी बात ये कि तुम्हें ये शख़्स अपने साथ तफ़रीह और एय्याशी के लिये लाया है। उस की नज़र में तुम एक तवाएफ़ हो अगर उस ने तुम पर करम किया तो एक दो हीरे तुम्हारे हाथ में दे देगा। और उस ने किसी के लिय महल तामीर किया तो वह कोई नौख़ेज़ लड़की होगी। वह तुम नहीं होगी। तुम्हारे चेहरे पर मुझे बाल जैसी बारीक दो लकीरें नज़र आ रहीं हैं जो आज अच्छी लगती हैं। थोड़े ही दिनों बाद ये गहरी होकर तुम्हारी कद्र व कीमत ख़त्म कर देंगी"

इसमाईल के होंटों पर मुसकुराहाट थी और उस के बोलने का अनदाज़ ऐसा था जिस में तन्ज़ नहीं थी धोका और फ़रेब नहीं था। एक गुना अपनाईयत थी और ऐसी हकीकत जो कुदूमी ने पहले कभी नही सुनी थी। उसे तवक्को थी कि इसमाईल उस पर डोरे डालेगा मगर इसमाईल ने उसे ज़रा भी अहमियत न दी। उस के बजाए उसे ये तास्सुर दे दिया कि उसकी अहमियत दो रोज़ की मेहमान की है कुदूमी तो उपने हुस्न की तारीफें सुन्ने की आदी थी अपने आप को कलूपुतरह सानी समझती थी। इसमाईल ने ऐसा तास्सुर पैदा किया जिसे कुदूमी धुतकार न सकी। इसमाईल का अन्दाज ही एसा था कि उस का पैदा किया हुआ तास्सुर उस के दिल की गहराईयों में उतर गया। रात गुज़रती जा रही थी और कुदूमी की आंखों से नीन्द ग़ाएब होती जा रही थी। वह इसमाईल के साथ बातों में रात गुज़ारना चाहती थी। उस ख़्वाहिश को वह दबा न सकी। इसमाईल ने उसे मायूस न किया। रात का आख़री पहर था जब कुदूमी की आख लग गई।

उस की आंख खुली तो वह इसमाईल के ख़ीमें में थी और इसमाईल ख़ीमे से बाहर कम्बल में लिपटा सोया हुआ था। कुदूमी न उसे जगाया और कहा......" मैने ख़्वाब देखा है। अजीब सा ख़्वाब था। पूरी तरह याद नही रहा। कोई मुझे कह रहा था कि सुलेमान सिकन्दर के ख़ज़ाने की निस्बत इसमाईल की बातें ज़यादा कीमती हैं।" वह हंस पड़ी। उस की हंसी में रक़्क़ासा का तसन्नो नहीं एक मासूम लड़की की सादगी थी।

❖

सुरज निकलने में अभी कुछ देर बाकी थी। मारकोनी अपने आदमियों को उस सर सबज़ नशीब के उपर सकीम के मुताबिक मौजूं जगहों पर छुपा चुका था। सुबह रौशन हुई तो नीचे नंगे आदमी और औरतें नज़र आने लगीं। मारकोनी ने अपने एक दिलेर और निडर आदमी को नीचे जाने के लिये तैयार कर रखा था। उसी ढलान से जिस से उसका साथी लुढ़क कए नीचे गिरा और उस पुर असरार कबीले की ज़ियाफ़त बन गया था। मारकोनी ने अपने उस आदमी को नीचे लुढ़क जाने को कहा। वह ढलान के उपर बैठा और नीचे सरक गया। कुछ आगे जाकर वह कला बाज़ियां खाने लगा। और ज़मीन पर गिर पड़ा वह उठ कर चल पड़ा तीन चार नंगे आदम ख़ोरो ने उसे देख लिया और उसे पकड़ने के लिये दौड़े। वह खुशी से

चिल्ला रहे थे। वह जब उस आदमी के करीब आये तो उपर से चार तीर निकले और उनके सीनों में उतर गये। उधर से दो और नंगे मर्द दौड़े आए। वह भी तीरों का निशाना बन गए। मारकोनी ने उपर एक चट्टान के साथ एक रस्सा बन्धवा दिया था। जिसे उस ने ढलान से फैंक कर अपने आदमियों से कहा कि इसे पकड़ो और सब एक दुसरे के पीछे उतर जाएं।

सब नीचे चले गए मारकोनी ने उपर से रस्सा खोल कर नीचें फैंक दिया और ढलान से लुढ़कता हुआ नीचे चला गया। ये सारा गिरोह तलवारें निकाल कर आगे को दौड़ पड़ा। चन्द और नंगे मर्द सामने आऐ उन्हें भी काट दिया गया। जो ज़रा दूर थे वह उलटे पावं भागे। नीचे से सर सबज़ इलाके के कई हिस्से थे। मारकोनी ने देखा कि भागने वाले ऐक हिस्से में चले गए थे। वह उनके पीछे गया। उसे उन आदमियों का वावेला सुनाई दे रहा था। उन की चीख़ व पुकार पर वह उनके तआकुब में गया। उस के बाकी आदमी ख़ून ख़राबा कर रहे थे। वह खुद उन दो आदमियों के तआकुब में रहा....थोड़ी ही दूर उसे आदमी नज़र आगऐ। वह अब दो नहीं तीन थे। वह तीनों एक चट्टान पर चढ़ रहे थे। मारकोनी ने उन के पीछे दौड़ते कुछ फ़ासला रखा। वह तीनों चट्टान की दूसरी तरफ़ उतर गए। वह भी चट्टान पर चढ़ गया। दुसरी तरफ़ उसे सियाह पहाड़ी का दामन नज़र आया। वहां एक ग़ार का दहाना था जिस में से झुक कर गुज़रा जा सकता था। मारकोनी उस ग़ार में चला गया। उस ने तलवार हाथ में ले रखी थी।

अन्दर से ग़ार खुलता जा रहा था। उसे उस में किसी के दौड़ने की हलकी हलकी आहट सुनाई दे रही थी। वह दौड़ता गया। ये ग़ार नहीं सुरंग थी जो मालूम नहीं कुदरती थी। या फ़िरऔन रिमेनस ने मरने से पहले बनवाई थी। सुरंग के कई मोड़ थे और अन्दर घुप अन्धेरा। उसे बोलने की आवाज़ें भी सुनाई दीं। वह दौड़ता गया और उसे दूर सामने एक रौशनी का एक गोला दिखाई दिया। उस में उसे तीन आदमी दौड़ते दिखाई दिये। वह ग़ार का दूसरा दहाना था। वह उन्हें क़त्ल नहीं करना चाहता था। उस की इसकीम कामयाब हो रही थी। वह तीनों ग़ार से निकल गये। वह भी ग़ार से निकल गया। तीनों में एक आदमी गिर पड़ा मारकोनी ने जाकर देखा। ये वही बूढ़ा आदमी था। जिसने उसे उस रोज़ देखा था। जिस रोज़ उस का साथी नीचे गिर पड़ा और आदम ख़ोरों के हाथों मारा गया था। वह बहुत ही बूढ़ा था। ज़्यादा दौड़ नहीं सकता था। ग़ार से बाहर रेतीले और पथरीले टीले और चट्टानें थीं। एक तरफ़ सियाह पहाड़ दूर उपर तक चला गया था। मारकोनी ने बूढ़े को सहारा देकर उठाया और उसके भागते हुए दो आदमियों की तरफ़ इशारा करके इशारों में उसे समझाया कि उन आदमियों को वापस बुलाओ।

बूढ़े ने उन्हें पूकारा वह रुके तो उन्हें अपनी तरफ़ बुलाया। उस ने मारकोनी के साथ मिस्री ज़बान में बात करते हुए कहा। "मैं तुम्हारी ज़बान बोलता और समझता हूं। मुझे कत्ल करके तुम्हें कुछ हासिल न होगा।"

मारकोनी भी मिस्री ज़बान बोलता और समझता था उस ने बूढ़े से कहा......"मैं तुम्हें कत्ल नही करना चाहता। तुम्हारे उन आदमियों को भी कत्ल नही करुगां। मुझे बाहर जाने

का रासता बता दो।"

"क्या तुम यहां से निकलना चाहते हो?" बूढ़े ने पूछा।

"हाँ!" मारकोनी ने जवाब दिया।..."मैं तुम्हारी बादशाही से निकल जाना चाहता हूं।"

बूढ़े ने अपने आदमियों से कुछ कहा। वह दोनों बहुत ही डरे हुए थे। बूढ़े ने मारकोनी से कहा। "इन के साथ जाओ। ये तुम्हें सीधे रासते पर डाल देंगें।"

"तुम भी साथ चलो"— मारकोनी ने कहा। "ये दोनों मुझे गलत रासते पर डाल देंगें।"

बूढ़ा साथ चल पड़ा। वह दो टीलों के दरमियान से गुज़रे एक टीले के उपर गए और एसी ही कुछ भूल भूलय्यों में से गुज़र कर वह खुले सेहरा में पहूंच गए। मारकोनी ने देखा कि किसी के वहम व गुमान में भी न आ सकता था कि यहां कोई रासता है जो अन्दर की पुर असरार दुनया मे ले जाता है। बूढ़े ने उसे कहा।..."तुम अब चले जाओ वरना खुदा का कहर तुम्हें भसम कर देगा।"...... मारकोनी ने तीनों को अपने साथ लिया और ये कह कर अपने साथ वापस ले गया कि वह अपने आदमियों को भी बाहर लाएगा। मारकोनी के हाथ में नंगी तलवार थी जिस से वह तीनों डर रहें थे। वह उस के साथ चल पड़े। मारकोनी ने रासता और उस के मोड़ अच्छी तरह देख लिये वह फिर गार के दहाने में दाख़िल हुए और उस मे गुज़रते सर सबज़ दुनया में पहूंच गये। बुढ़ा उसे उस जगह ले गया जहां मारकोनी के साथी को भून कर खाया गया था। मारकोनी के साथी उसे ढूढ़ रहे थे। कई एक नंगी लाशें पड़ी थीं। बच्चों को भी क़त्ल कर दिया गया था। बूढ़े ने ये क़त्ल शायद पहले कभी न देखा था। वह रुक गया और बड़े तहम्मुल से मारकोनी से पूछा। "इन बेगुनाहों को काट कर तुम ने किया पाया।"

"और तुम हमारे आदमियों को भून कर खा गए थे"..... मारकोनी ने पूछा।....... "उस ने तुम्हारा किया बिगाड़ा था?"

"वह गुनाहगार दुनया का इनसान था।".... बूढ़े ने कहा।.... "उस ने हमारे मुकद्दस सलतनत में आकर उसे नापाक कर दिया था।"

"तुम लोग यहां क्यों रहते हो?"... मारकोनी ने पूछा।..." फ़िरऔन रिमेंस दूम का मदफ़न कहां है।"

"मैं इन दोनों सवालो का जवाब नही दूगां।" बूढ़े ने जवाब दिया।

मारकोनी ने अपने आदमियों से कहा कि इन की औरतों को ले आओ। उसने हमले से पहले अपने आदमियों से कह दिया था कि वह किसी औरत को क़त्ल न करें, और न छेड़ें, उन्हें यरग़माल के तौर पर पकड़ लें। मारकोनी के साथी दस गयारह औरतों को सामने ले आए। उन में दो तीन बूढ़ी बाक़ी सब जवान, नौजवान और दो तीन कमसिन बच्चियां थीं। वह मादर ज़ाद नंगी थीं। उनके रंग गनदुमी और साफ़ थे। शकल व सूरत भी सब की अच्छी थी। उन के बाल कमर तक गए हुए थे और उन में चमक थी।

"किया तुम पसंद करोगे कि तुम्हारी औरतों को तुम्हारे सामने बे इज़्ज़त करके उन्हें

क़त्ल कर दिया जाए।" मारकोनी ने बूढ़े से पूछा।

" किया तुम इस से पहले मुझे क़त्ल नही करोगे।?" बूढ़े ने पूछा।

" नहीं"......... मारकोनी ने जवाब दिया।

" सुनो गुनहगार दुनया के इनसान !"...... बूढ़े ने कहा। ...." तुम्हारी औरतें कपड़े में ढकी रहती हैं तुम उन्हें परदों में छुपा छुपा कर रखते हो मगर वह बेहयाई से बाज़ नहीं आतीं। तुम औरत की ख़ातिर सलनत कुरबान कर देते हो। औरत को नचाते हो और उन्हें गुनाहों का ज़रिया बनाते हो। हमारी औरतें नंगी रहती हैं मगर बेहयाई नहीं करतीं। कोई मर्द किसी दुसरे मर्द की औरत को इस नज़र से नहीं देखता जिस नज़र से तुम ने मेरी दुनया की औरतों को देखा है। मैं तो तुम्हारी नज़र भी बरदाश्त नही कर सकता। तुम खुदाए मुकद्दस रिमेंस के ख़ज़ाने लूट लो मेरी बेटियों की इज्ज़त पर हाथ न डालना।"

" मैं वादा करता हूं। कि तुम मुझे इन पहाड़ों का भेद बतादो।" मारकोनी ने कहा।...." मैं तुम्हारी इज्ज़त तुम्हारे हवाले कर दूंगा।

" डाकू के वादे पर एतबार नहीं किया जा सकता "........ बूढ़े के होंटों पर तन्ज़ की मुसकुराहट आगई उस ने कहा" जिस आदमी के दिल में दौलत का लालच होता है उस की आंख में गैरत नहीं होती इस ज़बान पर वादे आते हैं और इसी ज़बान से वादे टूट जाते हैं। तुम उस दुनया के इनसान हो जहां दौलत पर आपनी बेटियां कुरबान की जाती हैं। तुम्हारे जिस्म से मुझे समुन्द्र पार की बू आती है।"

" मैं रिमेंस की मदफ़न की तलाश में आया हूं।" मारकोनी ने उसे गुस्से से कहा। " मुझे वह मदफ़न बतादो।"

" मैं बता दुंगा। " ......बूढ़े ने कहा। ....." इस से पहले मैं तुम्हें ये बता देना चाहता हूं कि मदफ़न के अन्दर जाकर तुम बाहर न आ सकोगे।"

" किया तुम्हारे आदमी अन्दर छुपे हुए हैं कि मुझे मार देंगे।"

" नहीं।" ...... बूढ़े ने कहा।..." तुम्हें कत्ल करने के लिये मेरे पास कोई आदमी नहीं रहा। तुम्हारे अपने आदमी तुमहें क़त्ल करेंगे। तुम्हारी लाश यहां से कोई नहीं ले जाऐगा।"

" तुम ग़ैबदां हो।?" मारकोनी ने पूछा।" आने वाले वक़्त की ख़बर दे सकते हो।"

" नहीं।" बूढ़े ने जवाब दिया।...." मैंने गुज़रा हुआ कल देखा है जिस ने गुज़रे हुऐ वक़्त को अक़ल और दिल की नज़रों से देखा हो वह आने वाले वक़्त की ख़बर दे सकता है। मौत तुम्हारी आंखों में आकर बैठ गई है।"

मारकोनी ने क़हक़हा लगाया।...." तुम जंगली हो बूढ़े। मुझे बताओ वह मदफ़न कहां हैं जिस की तलाश में मैं इनती दूर से आया हूं।"

" तुम्हारे सामने है।" बूढ़े ने कहा...... " वह उपर, आओ।"

मारकोनी ने कुछ सोंचा और अपने आदमियों से कहा...." इन औरतों को इज्ज़त से रखो उस बूढ़े के साथ गप शप लगाते रहो। और उस के उन दोनो आदमियों को भी कुछ न कहना। उन के साथ दोसती पैदा कर लो। मैं कुदूमी और इसमाईल को लेने जा रहा हूं।"

वह उसी रासते पर चल पड़ा जो सुरंग में से गुज़र कर बाहर जाता था।

❖

मारकोनी उस रासते से बाहर निकल गया जो उसे बूढ़े ने दिखाया था। उसे सिम्त का अन्दाज़ा था। जिधर से वह उस होलनाक इलाके में दाख़िल हुआ था। वह उस तरफ़ चल पड़ा। उस ने कम व बेश दो मील सफ़र तै किया तो ये देख कर हैरान रह गया कि वह उस मुक़ाम पर पहूंच गया। उस ने इसमाईल और कुदूमी को ऐक ही ख़ीमें में इकठ्ठे बैठे देखा। उस के चेहरे का रंग बदल गया। हुक्म के लहजे में इसमाईल से कहा..." मैं ने तुम्हें कहा था कि तुम अपनी हैसियत में रहना। इसके पास बैठे तुम क्या कर रहे हो ?"

" क्या मैं इस विराने में अकेले बैठी रहती।"........ कुदूमी ने कहा।....." मैं ने ख़ुद इसे अपने पास बूलाया है।"

" तुम्हें मैं अपने साथ सिर्फ़ और सिर्फ़ अपने लिये लाया हूं।" मारकोनी ने गुस्से से कहा। " मैं तुम्हें अपनी उजरत दे रहा हूं। मैं तुम्हें किसी और के साथ नही देख सकता। अपने घर में अपने पास सौ आदमी को बूलाओ। यहां तुम मेरी लौंडी हो।"

गुज़शता रात इसमाईल ने इस पुरखुलूस दिल से ऐसा तास्सुर तारी कर दिया था कि उस के दिल में मारकोनी के ख़िलाफ़ शक और नापसंदीदगी पैदा हो गई थीं। उसे अब अपना एक गाहक समझने लगी थी। अब मारकोनी ने उसे अपना लौंडी कह दिया तो उस के दिल में मारकोनी के ख़िलाफ़ नफ़रत पैदा हो गई उस ने अच्छे और बूरे इनसान में फ़र्क़ देख लिया था। हालांकी इसमाईल ने उसे बिलकुल नहीं कहा था कि वह अच्छा आदमी है बल्कि ये कहा था कि वह किराए का गूनाहगार और उजरत लेकर क़त्ल करने वाला आदमी है। कुदूमी मारकोनी को धुतकार नही सकती थी क्यों की वह अपनी तै की हूई उजरत पर आई थी। जो वह वसूल कर के घर रख आई थी। आगे ख़ज़ाने का कुछ हिस्से का वादा था जो मशकूक नज़र आता था। उस ने बरदाश्त न किया कि मारकोनी इसमाईल के साथ बदतमीज़ी से बात करे।

इसमाईल मारकोनी को ख़ामूशी से देख रहा था। उस ने मारकोनी को बाज़ू से पकड़ा और ज़रा परे ले जाकर धीमी आवाज़ में कहा।" अहमर दुरवेश ने तुम्हें शायद मेरे बारे में कुछ भी नहीं बताया। मेरे मुतअल्लिक़ तुम कुछ भी नहीं जानते मैं तुम्हें अच्छी तरह जानता हूं। तुम मेरे मुल्क और मेरी क़ौम की जड़ें काटने आए हो मैं इतना बड़ा गुनाहगार हूं कि किराए पर तुम्हारा साथ दे रहा हूं। मैं तुम्हें अपना बादशाह तसलीम नहीं कर सकता। अपनी पूरी उजरत लूंगा और अगर ख़ज़ाना बर आमद हो गया तो अपना हिस्सा अलग वसूल करुंगा।"

" तुम ऐसी बातें अहमर दुरवेश के साथ करना।"...... मारकोनी ने उसे कमाण्डरों की तरह कहा।...." यहां तुम मेरे मातेहत हो ख़ज़ाना जो निकलेगा वह मेरी तहवील में होगा। मैं उसे जहां चाहूं ले जाऊं।"

" सूनो सुलेमान सिकन्दर !" इसमाईल ने पहले की तरह धीमी आवाज़ और हलके से तबस्सुम से कहा।......." मैं जानता हूं तुम मारकोनी हो सुलेमान सिकन्दर नहीं हो मैं एक

आदी मुजरिम हूं। मैं तुम्हें ख़बर दार करता हूं के तुम्हारी बातें मुझे मुजरिम से मिस्री मुसलमान बना देगी। और मैं तुम्हें ख़बरदार करता हूं कि मुसलमान क़ौमी जज़्बे का इतना अन्धा होता है कि अगर मुसलमान की लाश में ये जज़्बा पैदा हो जाऐ तो लाश भी उठ खड़ी होती हैं। तुम्हारा फ़ाईदा इसी में है कि तुम मुझे मुजरिम ही रहने दो।"

मारकोनी ने महसूस कर लिया कि ये शख़्स बहुत गहरा है और पेचीदा भी। इस लिये उस से दुशमनी मोल लेनी अच्छी नहीं। उस ने इसमाईल के कन्धे पर हाथ रखकर और दोसतों की तरह मुसकुराकर कहा। "तुम बिला वजह किसी ग़लत फ़हमी में पड़ गए हो। मैं दर असल ये नहीं चाहता कि ये तवाएफ़ तुम्हारे या मेरे दिमाग़ पर सवार हो जाऐ। ये बहुत चालाक औरत है ये हम दोनों में ग़लत फ़हमी पैदा करके ख़ज़ाने पर हाथ मारना चाहती है। मुझे अपना दुशमन न समझो। अहमर दुरवेश ने तुम्हें बताया नही कि उस ने तुम्हारे मुतअल्लिक़ क्या सोंच रखा है।"

" क्या तुम्हें उम्मीद है कि ख़ज़ाना मिल जाऐगा।?"

" मिल गया है।" मारकोनी ने जवाब दिया। " मैं तुम दोनों को लेने आया हूं।"

इसमाईल उसे बड़ी गहरी नज़रों से देखता रहा। कुदूमी उसे देखती रही। उस के चेहरे पर ना पसंदीदगी के आसार बड़े नुमाया थे। मारकोनी ने उस आदमी को आवाज़ दी जिसे वह ऊंटों के लिये देख भाल पर छोड़ा गया था। उसे कहा कि वह ऊंटों को एक दूसरे के पीछे बांध कर ले आऐ। खीमें भी लपेट लिये गये।

मारकोनी उन्हें वहां ले गया। जहां उसके दुसरे आदमी थे। और जहां फ़िरऔन रिमेंस का खुफ़या मदफ़न था। कुदूमी ने ऐसी सरसबज़ जगह देखी तो बहुत हैरान हुई एक ऊंची पहाड़ी के दामन में नन्ही सी झील थी। पहाड़ी के नीचे से पानी फूटता था। ये कुदरत का करिशमा था। मारकोनी नंगे क़बीले के बूढ़े सरदार के पास चला गया। उसे मदफ़न का सुराग लगाना था। कुदूमी इसमाईल के साथ इधर उधर टहलने लगी। उसे एक छोटे से बच्चे की लाश दिखाई दी। बच्चा नंगा था और उस का जिस्म ख़ून में नहायाा हुआ था। कुदूमी ख़ौफ़ से कांपने लगी। कुछ और आगे गए तो दो लाशें इकट्ठे पड़ी थीं। ये बड़ी उमर के आदमियों की थीं। दोनो में तीर पेवस्त थे और जब वह इसमाईल के साथ फ़राख़ जगह गई जहां मारकोनी के आदमी उपर से उतरे थे। वहां उसे कई और लाशें दिखाई दीं। उन में पांच छे लाशें बच्चों की थीं। तमाम लाशों की मुहं और आंख खुली हुई और चेहरे पर अज़ियत और करब के भियानक तासुरात थे। कुदूमी किसी बड़े ही दुनया की हसीन थी। उस ने ऐसे हैबत नाक मनज़र कभी ख़्वाब में भी न देखा था। एक बहुत ही छोटे से बच्चे की लाश देख कर उसकी चीख़ निकल गई।

मारकोनी के तीन चार आदमी चीख़ सुन कर दौड़े आऐ। कुदूमी को चक्कर आ गया था। और इसमाईल ने उसे थाम लिया था। मारकोनी के आदमियो को बताया गया कि वह लाशें देखकर डर गई है। एक आदमी उसके लिये पानी लेने को दौड़ा। कुदूमी जल्दी सम्भल गई। उस ने पूछा कि ये मरने वाले कौन थे और क्यों हलाक किया गया है। इसमाईल को मालूम

नहीं थां......... मारकोनी के ऐक आदमी ने उसे बताया कि वह कौन थे और उन्हें क्यों कत्ल किया गया है। कुदूमी ने इसमाईल की तरफ देखा। उस का रंग पीला पड़ गया था। इसमाईल ने कहा। .... " हम से ये लोग अच्छे थे जो इस ख़ज़ाने की रखवाली कर रहे थे। ये नंगे आदम खोर दियानत दार थे। जिन्हों ने जान दे दी ख़ज़ाने का भेद न बताया। अगर ये फ़िरऔन का मदफ़न उखाड़ कर माल व दौलत निकाल ले जाते तो उन्हें कौन पकड़ सकता था। मगर ये दियानत दार थे। हम डाकू और क़ातिल हैं जो अपने आप को मुहज़्ज़ब समझते हैं। ये मारकोनी की कारिसतानी है।"

" मैं इस खज़ाने में से कुछ भी नहीं लुंगी जिस की ख़ातिर इन मासूम बच्चों और बेगुनाह आदमियों को इस बेदरदी से कत्ल किया गया है। " .....कुदूमी ने कहा।....." इनके पास कोई हथ्यार नज़र नही आता। ये निहत्ते थे। "

उस वक़्त मारकोनी बूढ़े के साथ चट्टान के पिछे गया हुआ था। बूढ़े ने उस से कहा। .. .." उपर चले जाओ वहां तुम्हें एक बहुत बड़ा पत्थर जो यहीं से नज़र आ रहा है। उसे तुम चट्टान ही समझ रहे हो।अगर उसे तुम वहां से हटा सको तो तुम्हें उस दुनया का दरवाज़ा नज़र आएगा। जिस मे रिमेंस दूम का ताबूत और उसका ख़ज़ाना रखा है। उस चट्टान को उस वक़्त से किसी ने नहीं हिलाया । जब से ये यहां रखी गई है। पन्द्रह सदियों से इस चट्टान को किसी ने छुआ भी नहीं । हम पन्द्रह सदियों से इसकी रखवाली कर रहें हैं। मैं तुम्हें रिमेंस की मौत के वाकिआत इस तरह सुना सकता हूं जैसे वह कल मेरे सामने मरा हो। ये मुझे मेरे बाप और दादा ने सुनाया था। दादा को उस के बाप और दादा ने सुनाये थे और इस तरह पन्द्रह सदियों की बातें मेरे सीने में आई जो मैं ने अपने कबीले को सुनादी हैं।"

" मैं ये बातें बाद में सुनुंगा। " मारकोनी ने बेताब होकर कहा और वह चट्टान पर चढ़ गया । उसे यकीन नहीं आ रहा था कि उपर की मख़रुती चट्टान अलग हैं या अलग की जा सकती है। उस ने इधर उधर से देखने की कोशिश की मगर उसे कोई ऐसी जगह नज़र न आई जिस से ये चट्टान अलग मालूम होती । वह नीचे उतर आया।

" मैं जानता हूं कि तुम यकीन नहीं करोगे कि इस चट्टान के दो हिस्से हैं। " बूढ़े ने कहा।......" उपर का हिस्सा जो पीछे पहाड़ के साथ मिला हुआ है पहाड़ और चट्टान का हिस्सास मालूम होता है लेकिन एसा नहीं ये इनसानी हाथों का कमाल है। उस की साख़्त कुदरती लगती है। लेकिन ये इनसानों की कारिगरी है। रिमेंसे ने ये अपनी निगरानी में बनवाया था। उस के नीचे और पहाड़ के सीने मे जो दुनया आबाद है वह रिमेंस ने अपनी ज़िन्दगी में तैयार कराई थी। और उसे बाहर की दुनया के इनसानों से ताकियामत छूपाए रखने के लिये उस ने ये चट्टान बनवाई, रखवाकर देखी और उन आदमियों को कैद में डाल दियाथा। जिन्हों ने उस का मदफ़न और चट्टान तैयार की थी । वह मर गया तो उस का ताबूत यहां लाया गया ।उस का ज़रुरत का सामान अन्दर रखा गया । कारिगरों को कैद से निकाल कर उपर चट्टान रखवाई गई और उन तमाम अदमियों को कत्ल कर दिया गया। बारह आदमियों को यहां ग़ारों में आबाद किया गया। उन्हें मिस्र की बारह ख़ूबसूरत औरतें दी

गईं। उन्हें ग़ारों में रहने को कहा गया। उन के ज़िम्मे उस जगह की रखवाली थी। आज तुमने जिन्हें कत्ल कर दिया है और मैं जो ज़िन्दा हूं उन्ही बारह आदमियों और बारह औरतों की नसल से हैं।"

"उस चट्टान को हम हटा किस तरह सकते हैं। ?" मारकोनी ने पूछा।

" तुम्हारी आंखे कहां हैं।? " बूढ़े ने पूछा......" तुम्हारी अकल कहां हैं?..........और उस ने कहा...." चट्टान की चोटी देखो। किया तुम उस के साथ रस्से नहीं बांध सकते? अगर तुमहारे आदमियों में ताकत है तो मिल कर रस्से को खींचें तो चट्टान नीचे आ सकती है।"

मारकोनी मदफ़न को बहुत जल्द बेनक़ाब करने के लिये बेताब था। उस ने अपने आदमियों को बुलाया। रस्से मंगवाऐ और दो रस्से उपर वाली चट्टान के उभरी हुई चोटी के साथ बंधवा दिये। उस ने तमाम आदमियों से कहा कि नीचे से रस्सा को पूरी ताकत से खींचे। वह खुद उपर चला गया। नीचे से जब सब ने ज़ोर लगाया तो उस ने देखा कि बड़ी चट्टान हिल रही थी। एक बार ये इतनी ज़यादा हिल गई कि उसे उस के नीचे ख़ला नज़र आगया। उस का हौसला बढ़ गया। उस ने नारे लगाने शुरूअ कर दिये। उस के आदमियों ने और ज़ोर लगाया चट्टान सरक गई मारकोनी ने अपने आदमियों को ज़रा आराम करने को कहा। सुरज सियाह पहाड़ के पीछे चला गया था। मारकोनी के पास शराब का ज़खीरा था। उस ने शराब का मशकीज़ा मंगवा कर कहा पीओ और उस चट्टान को कंकर की तरह नीचे फेंक दो।

सब शराब पर टूट पड़े मारकोनी ने पुर जोश लहजे में कहा।........" मैं आज रात तुम्हें दो ऊंट भून कर खिलाऊंगा।"....... थोड़ी देर बाद शराब ने सब की थकन दूर करदी और उन में नई ताज़गी आगई। इतने में सूरज उफ़क से भी नीचे चला गया था। मशअलें जला कर रखा ली गई थीं। और सब ने एक बार फिर ज़ोर लगाना शुरूअ किया मारकोनी उपर खड़ा था उसे मशअलों की नाचती रौशनी में चट्टान का बालाई हिस्सा आगे को झुकता और कुछ सरकता नज़र आया। उस ने और ज़यादा ज़ोर से नारे लगाने शुरूअ कर दिये अचानक चट्टान मुहीब आवाज़ के साथ सरक गई और उलट कर नीचे को लुढ़क गई जहां मारकोनी के आदमी थे। वह जगह तंग थी उन के पीछे भी एक पथरीली टेकरी थी। उपर से चट्टान इतनी तेज़ी से आई कि नीचे से अदमी भाग न सके। रौशनी भी कम थी। पहाड़ों और चट्टानों में घिरी हुई ये दुनया बयक वक़्त कई चीखों से लरज़ उठी और सूकूत तारी हो गया। मारकोनी दौड़ता नीचे आया। एक मशअल उठा कर देखा। गिरी हुई चट्टान के नीचे से ख़ून बह रहा था। किसी का हाथ नज़र आ रहा था। किसी की टांग और किसी का सर। और कुछ ऐसे भी थे जो दरमियान में नीचे आगए थे।

मारकोनी को किसी के दौड़ने की आहटें सुनाई दीं। शायद कोई बचभी गए थे वह भाग गए थे। उस ने टेकरी पर देखा। वहां चार इनसान खड़े थे। एक बूढ़ा था। दूसरा इसमाईल. तीसरा मारकोनी का एक साथी जो हांप रहा था। वह भागा नहीं था। और चौथा इनसान कुदूमी थी। जो सरापा ख़ौफ़ बनी खड़ी थी। मारकोनी आहिसता आहिसता टेकरी पर आया। उस ने चारों को बारी बारी देखा। सब ख़ामूश थे सब से पहले बूढ़ा बोला। उस ने कहा......"

मैं ने तुम्हें ख़बर दार किया था मुझे तुम्हारी आखों में मौत नज़र आ रही है। मै ने अपने फ़र्ज़ को नज़र अन्दाज़ करके तुम्हें ये भेद बता दिया था। मैं जानता था कि ये मौत का भेद है। और मौत मेरा फ़र्ज़ पूरा कर देगी। ...... किया तुम वापस चले जाओगे।"

" नहीं " मारकोनी ने आहिसता से कहा....... " मेरे ये साथी मेरे साथ हैं। ये मेरा साथ देंगें।" उस ने उन से पूछा......" मालूम होता है कोई जिन्दा निकल गए हैं कौन कौन भागा हैं?"

' मुझ से पूछो"......... बूढ़े ने कहा........" तुम्हारे चार आदमी मेरे दो आदमियों के साथ भाग गऐ हैं। मेरे आदमी उन्हें बाहर का रासता नहीं बताएगें। उन्हे अब अन्दर ही भटक भटक कर मरना है। बेहतर होता कि वह चट्टान के नीचे आकर मर जाते । ये मौत आसान थी। आज रात के लिये ये काम बन्द करदो । मैं सुबह तुम्हें अन्दर ले जाउगां।"

❖

मारकोनी पर उस हादसे का कोई असर मालूम नहीं होता था। उस ने बूढ़े को अपने साथ खाना खिलाया। इसमाईल ने बूढ़े को एक चादर दी जो उस ने अपने उपर डाल ली। कूदूमी पर ख़ामुशी तारी थी। वह उन औरतों को भी देख चुकी थी जिन्हें मारकोनी ने यरग़माल बना कर रखा हुआ था वह अब किसी और जगह थीं।

" तुम मेरे एक आदमी को खागए थे " मारकोनी ने कहा....." इस से पहले तुम ने कितने इनसान खाए हैं।"

" ज़ितने हाथ लग सके।'........ बूढ़े ने जवाब दिया। ...." मैं बता नहीं सकता कि हमारी नसल में इनसानी गोश्त कब दाख़िल हुआ । जो तारीख़ मेरे कानों में डाली गई है उस में पन्द्रह सदियों पूरानी एक् पेशीन गोई शामिल है किसी ने कहा था कि जो लोग खुदाए रिमेंस के मदफ़न की हिफाज़त करेंगें उन्हें रेगुज़ार अपनी ठण्डी आग़ोश में रखे गा। उन्हें पानी और साए से महरूम नही होने देगा । उनहें दुनया के लालच से आज़ाद कर देगा। उन्हें सोने चान्दी औरत और शराब की ख़्वाहिश से आज़ाद कर देगा। उन्हें ये भी ज़रूरत नहीं रहे गी कि वह अपने सतर ढांप सकें उनके दिलों मे एक दूसरे की मुहब्बत होगी उन में कोई लालच नही होगा। लालच ही इनसान को क़ातिल , डाकू और बद दियानत बनाता है। वह कभी दौलत का लालच करता है और कभी औरत का। उस का दीन नहीं रहता। लालच फ़साद की जड़ है। हमें उस लालच से आज़ाद कर दिया गया । और कहा गया था कि एक वक़्त आएगा कि रिमेंस के मुहाफ़िज़ इनसान का गोश्त खाऐगें। यहां से बाहर जाया करेंगे। इनसान का शिकार खेलेंगे और कोई जानवर मिले तो उसे भी खाऐंगे। अगर नहीं खाऐगें तो उनकी नसल ख़त्म हो जाऐगी।"

"किया तुम आज भी फ़िरऔन को ख़ुदा समझते हो?"...... कुदूमी ने बूढ़े से पूछा ।

"इनसान बड़ी कमज़ोर चीज़ है। अपने खुदा बदलता रहता है।" बूढ़े ने कहा।..... " और कभी इसान खुद ही ख़ुदा बन जाता है। इस वक़्त तुम लोग मेरे ख़ुदा हो कियोंकि मेरी जान और मेरी बच्चियों की इज्ज़त जो तुम्हारी क़ैद में हैं तुम्हारे हाथ में है। मैं ने तुम पर ये राज़

तुम्हें खुदा समझ कर फ़ाश कर दिया है। क्योंकि मैं मरने से डरता हूं और अपनी बच्चियों को बे आबरू कराने से डरता हूं फ़िरऔन ने भी तुम्हारी तरह अपने वक़्त की मख़लूक के गरदन पर भूक और बेगार की छुरी रख कर कहा था कि मैं खुदा हूं। इनसान ने मजबूर होकर कहा. .....' हां तुम ही खुदा हो'..... भूक और मुफ़लिसी इनसान को हकीकत से बहूत दूर ले जाकर फैंक देती है। उस के अन्दर का इनसान मर जाता है। जिसे हकीकी खुदा ने अशरफुल मख़लुकात कहा था। उस का सिर्फ़ जिसम रह जाता है जिसे पेट की आग जलाती है तो वह उस इनसान के आगे सजदे करने लगता है जो उस के पेट की आग ठण्डी करता है इनसान की इसी कमज़ोरी ने बादशाह पैदा किया डाकू और रहजन पैदा किये। इनसान को हाकिम और महकूम ज़ालिम और मज़लूम बनाया। लोग कहते हैं कि इनासान को भूक ने बदी से आशना किया। ये ग़लत है । इनसान को बदकार ज़र व जवाहरात ने बनाया है..... तुम कौन हो? किया हो? " उस ने कुदूमी से पूछा....." इन में से किस की बीवी हो ? उन में से किसे अपना आदमी कह सकती हो? बूढ़े को मालूम हो चूका था कि कुदूमी काहरा की रक़्कासा है।

कुदूमी उस के सवाल से परीशान हो गई। वह पहले ही परीशान थी। बूढ़े के सवाल ने उस का पसीना निकाल दिया। बूढ़े ने उसे ख़ामूश देख कर कहा......" तुम अपने हसीन चेहरे और जवानी की बदौलत अपने आप को खुदा समझती हो और तुम्हारी ख्वाहिश करने वाले तुम्हें खुदा कहते हैं। मुझे जंगली वहशी न समझो । मेरे पास कपड़े है जो मैं पहन कर कभी कभी काहरा जाया करता हूं .... तुम्हारी मुहज़्ज़ब दुनया को देखता हूं। फिर वापस आकर कपड़े उतार देता हूं। मै ने तुम्हारी दुनया में बघियों पर शहज़ादे को सैर करते देखे हैं। तुम्हारी तरह की शहज़ादियां देखी हैं नाचने और गाने वाली भी देखी हैं और उन्हें जो नचाते हैं उन्हें भी देखा है। मैं ने फ़िरऔन के वक़्तों की बातें सूनी हैं। और आज के वक़्त के फ़िरऔन भी देखे हैं उन सब का अन्जाम भी देखा है। तुम्हारा अन्जाम भी जो तुमहें अभी नज़र नहीं आरहा देख रहा हूं। तुम ने ख़ज़ाने के लालच में इतने बे गुनाह इनसानों का खून किया । उस गुनाह के सज़ा से बच नही सकोगे। फ़िरऔन भी नहीं बच सके थे। मैं सुबह तुम्हें अन्दर ले जाउगां। उन का अन्जाम देखना । वह खुदा होते तो उन्का अन्जाम ये न होता। खुदा वह होता है जो अन्जाम तक पहुचाया करता है। अन्जाम तक पहुंचा नहीं करते। मैं ने उस इनसान को कभी खुदा नहीं माना जो आज पहाड़ी के नीचे हड्डीयों का ढांचा बना हुआ है। मैं और मेरा क़बीला उस की हिफ़ाज़त नहीं कर रहे। हम ने दुनया के लालच से बचने के लिये एक अकीदा बना लिया है। हम उस अकीदे की हिफाज़त कर रहें हैं ।"

बूढ़ा ठहरी ठहरी अवाज़ में बोलता जा रहाथा। कुदूमी उसे देख रही थी और बूढ़े के बातों में उसे अपना अन्जाम नज़र आ रहा था। मारकोनी के होंटों पर तंज़िया मुसकुरहाट थी। वह शराब पी रहा था। उस ने बूढ़े से कहा।........" तुम अपनी औरतों के पास चले जाओ। सुबह जलदी उठना । हमें अन्दर जाना है।"

बूढ़ा चला गया तो मारकोनी ने कुदूमी से कहा। " आओ हम भी सो जाएं।"

" मैं तुम्हारे साथ नहीं जाऊंगीं।" कुदूमी ने कहा।

मारकोनी उस की तरफ़ लपका। कुदूमी पीछे हट गई। मारकोनी ने उसे धमकी दी। इसमाईल उसके आगे आगया। उस ने कुछ नही कहा। मारकोनी की आखों में आखें डाल कर देखा और मारकोनी पीछे हट गया। वह जब चला गया। तो कुदूमी इसमाईल के सीने पर सर फैंक कर बच्चों की तरह रोने लगी।

❖

सुबह जागे तो मारकोनी ने बूढ़े को ढुंडा। बूढ़ा वहां नहीं था। औरतों को देखा। वह भी ग़ाएब थीं। उन्हें आवाज़ दीं। इधर उधर देखा। उन में से कोई भी नज़र न आया। मारकोनी को अब उन की इतनी ज़रूरत नहीं थीं। मदफ़न का दहाना खुल चूका था। बूढ़ा अगर वहां होता तो उसे मालूम नही था कि अन्दर किया है। मारकोनी ने इसमाईल, अपनें साथी और कुदूमी को अपने साथ लिया और वह सब चट्टान पर चढ़ गए। जहां मदफ़न के अन्दर जाने का दहाना था। मारकोनी नीचे उतरा। ये एक कुशादा गढ़ा था। जो सुरंग बन कर एक तरफ़ चला गया था। वह मशअलें साथ ले गए थे। जो जलाई गई थीं। कुछ दूर आगे जाकर सुरंग बन्द हो गई। मारकोनी ने वहां उलटी कुदाल मारी तो एसी अवाजें आईं जैसे उस के पीछे जगह खोखली हो। ये पत्थर का चौकोर दरवाजा था। उस पर ज़रबें लगाई गईं। तो किनारो से खला नज़र आने लगे। सलाखों और हथौड़ों वगैरह की मदद से उन तराशे हुए पत्थर को हिलाया गया और बहुत सी मेहनत के बाद उस चौकोर पत्थर ने उसे रासता दिया कि पीछे को गिरा। । उस के वज़न का ये आलम था कि उस के गिरने से ज़लज़ले का झटका महसूस हुआ। अन्दर से पन्द्रह सोला सदयों की बदबू झकड़ की तरह बाहर आई। सब पीछे को भागे। और उन्हों ने नाक मुहं पर कपड़े लपेट लिये। ज़रा देर बाद मशअलों के साथ अन्दर गऐ। चन्द कदम आगे सीढीयां नीचे जाती थीं।

सीढ़ीयों पर इनसानी खोपड़ियां और हड्डीयों के पन्जर पड़े थे। उन के साथ बरछियां और ढालें भी थीं। ये पहरा दारों की हड्डीयां थीं। उन्हें अन्दर ज़िन्दा पहरे पर खड़ा करके मदफ़न के मुहं पर इतनी वज़नी सिल जमा दी गई थी। सीढ़ीयां उन्हें दूर नीचे ले गई ये एक वसी कमरा था। ये ज़मीन पत्थरीली थी। कारिगरों ने लम्बी मुद्दत सर्फ़ करके दीवारें और छत इसतरह ताराशी थी कि ये बीसवी सदी की इमारत मालूम होती थी। वहां एक बड़ी ही खुश्नुमा कशती रखी थी। जिस के बादबान लिपटे हुए थे। किशती में भी इनसानी खोपड़ियां और हड्डीयां पड़ी थीं। ये मल्लाहों की थी। एक तारीक रासता जो करिगरी से तराशा गया था एक और कमरे में ले गया। वहां ऐ सजी सजाई घोड़ा गाड़ी खड़ी थी। उस के आगे आठ घोड़ों की खोपड़ियां और हड्डीयां बिखरी हुई थीं। और बधी की अगली सीट पर इनासानों की हड्डीयों का ढेर था। उस कमरे में कई और हड्डियों के पन्जर थे उस से आगे एक कमरा था जो सही मानों में शीश महल था। छत ऊंची और दीवारों पर चितर कारी की गई थी। एक दीवार के साथ सीढ़ीयों और उन पर एक पत्थर की कुरसी पर रिमेंस का बुत बैठा था। ये भी पत्थर का था।

सीढ़ीयों पर हड्डीयों के पन्जर और खोपड़िया पड़ी थीं। कुदूमी ने एक खोपड़ी के साथ

मोतीयों का एक हार देखा जिस के साथ एक नीला हीरा था। कानों में डालने वाले ज़ेवरात थे और अंगुठियां भी चन्द और ढांचों के साथ उस ने हार और ज़ेवरात देखे मारकोनी ने एक हार उठाया ढेड़ हज़ार साल गुज़र जाने के बाद भी उन मोतियों और हीरों की चमक मांद नहीं पड़ी थीं। मशअल की रौशनी से हीरे रंगा रंग शुआऐं देते थे। मारकोनी हार कुदूमी के गले में डालने लगा। तो कुदूमी चीख़ मार कर इसमाईल के पीछे हो गई। मारकोनी ने क़हक़हा लगा कर कहा...." मैं ने कहा था कि तुम्हें मलका कुलू पुतरह बनाउगां। डरो मत कुदूमी ये सब हार तुम्हारे हैं।"

" नहीं !" कुदूमी ने लज़रती कांपती आवाज़ में कहा।.....' नहीं मैं ने इन खोपड़ियों में अपना अंजाम देख लिया है ये भी मुझ जैसी थीं। ये उस खुदा के ' महबूबा ' का हार जो यहीं कहीं मरा पड़ा है मैं ने उन का अन्जाम देख लिया है जिन्हें तकब्बुर ने 'खुदा' बनाया। मैं ने अपना खुदा देख लिया है। "....... वह इस क़दर घबराई हुई थी कि उस ने इसमाईल को घसिटते हुए कहा...." मुझे यहां से ले चलो । मुझे ले चलो यहां से । मैं हड्डियों का पन्जर हूं।"..... उस के गले में अपना हार था। उस ने ये हार उतार कर हड्डियों पर पटख़ दिया। उंगलियों से बेश कीमत अंगूठियां उतार कर फेंक दीं। और चिल्लाने लगीं....." मैं ने अपना अन्जाम देख लिया हैं मैं ने खुदा देख लिया है। मुझे यहां से ले चलो।"

मारकोनी एक और कमरे में जा चुका था। इसमाईल ने कुदूमी से कहा।......" होश में आओ हम चले गए तो ये सारा ख़ज़ाना ये दोनों सलीबी उठा ले जाएंगे।"...... इसमाईल को एक और रासता नज़र आगया। मशअल उस के हाथ में थी । वह कुदूमी को उस तरफ़ ले गया और फ़राख़ कमरे में दाख़िल हुऐ। वस्त में एक चबूतरे पर ताबूत रखा था चेहरा नंगा था। ये था फ़िरऔन रिमेंस दूम जिस के आगे लोग सजदे करते थे। लाश हनूत की हुई थी चेहरा बिलकुल सही था। आखें खुली हुई थीं इसमाईल उस चेहरे को देर तक देखता रहा। कुदूमी ने भी देखा। फिर उन्हों ने एक दूसरे की तरफ़ देखा। उन्हों ने इधर उधर देखा तो वहां भी हड्डीयों के पन्जर नज़र आऐ और वहीं उन्हें बड़े खुशनुमा बकस भी दिखाई दिये। एक बक्स का ढकना खुला था। उन्हों ने देखा कि उस में सोने के ज़ेवरात और हीरे पड़े थे। उन पर एक इनसानी बाज़ू की हड्डी और एक हाथ की हड्डीयां फैली हुई थीं। बक्स के साथ खोपड़ी और बाकी हड्डीयां पड़ी थीं

" आह इनसान !" इसमाईल ने कहा........ " इस शख़्स ने मरने से पहले ये ज़ेवरात और हीरे उठाने की कोशिश की। उसे उम्मीद होगी कि यहां से निकल भागे गा। मगर दम घुटने से खज़ाने के उपर मर गया। बूढ़े ने ठीक कहा था कि इनसान की दुशमन भूक नहीं हवस है।" उस ने बक्स की तरफ़ हाथ बढ़ा कर कहा......." कुदूमी! तुम भी हवस ले कर आई हो मैं तुम्हें कुछ दे दूं।

" नहीं इसमाईल!"....... कुदूमी ने उस का हाथ रोकते हुए कहा। " मेरी हवस मर चुकी हैं, कुदूमी मर चुकी है " इसमाईल ने फिर भी बक्स में हाथ डाला। कुदूमी ने चिल्लाकर कहा " बचो इसमाईल !"

इसमाईल उसताद था। वह एक तरफ़ गिर कर लुढ़क गया और उठा उस ने देखा कि मारकोनी तलवार सुंते उस पर हमला आवर हुआ था। उस की तलवार का वार बक्स पर पड़ा। मारकोनी की अवाज़ सुनाई दी........" ये खज़ाना मेरा है"..... इतने में मारकोनी का साथी भी आ गया। इसमाईल के पास खंजर था। जिस से वह तलवार का मुकाबला नहीं कर सकता था। कुदूमी को करीब ही एक बरछी पड़ी नज़र आगई। मारकोनी इसमाईल पर वार कर रहा था जो वह मशअल पर रोक रहा था। मारकोनी के साथी ने भी इसमाईल पर हमला किया। दोनों सलीबी खज़ाना देख कर पागल हो गए थे। कुदूमी को उन्हों ने न देखा कि किया कर रही है। जूं ही मारकोनी की पीठ कूदूमी की तरफ़ हुई कुदूमी ने पूरी ताकत से बरछी उस के पहलू में उतार दी। बरछी निकाल कर एक और वार किया और उसे लुढ़का दिया। उस का एक ही साथी रह गया था। वह कुदूमी पर तलवार का वार करने को लपका तो इसमाईल ने ख़ंजर से उस के पहलू से पेट चीर डाला।

कुदूमी जो खज़ाने में से हिस्सा लेने गई थी। अपने गले का हार, बेश कीमत दो अंगूठीयां और कानों के ज़ेवरात वहां फैंक कर इसमाईल के साथ बाहर निकल आई।दहाने वाले दरवाज़े से निकलते हुए इसमाईल ने जलती हुई मशअल अन्दर ही फैंक दी। वह दोनो उन अशया के अलावा बहुत कुछ अन्दर ही फैंक आए थे। कुदूमी को जब बाहर की ताज़ह हवा लगी तो उस ने इसमाईल से कहा...." हम कहां से आऐ हैं। किया तुम मुझे पहचान सकते हो? मैं कौन हूं?"

" मैं भी कुछ ऐसा ही महसूस कर रहा हूं।" इसमाईल ने कहा।...." हम शायद सारे गुनाह अन्दर ही फैंक आऐ हैं।"

इस इलाके से बाहर निकलने का रासता उन्हें मालूम था। वह बाहर निकल गऐ। बाहर थोड़े से ऊंट खड़े थे बाकी मालूम नहीं कहां ग़एब हो गए थे। वह दो ऊंटों पर बैठे और काहरा की सिम्त रवाना हो गऐ।

❖

वह अगली रात थी। आधी गुज़र गई थी। जब ग़यास बिलबिस ने कुदूमी और इसमाईल की सारी दासतान हर एक तफ़सील के साथ सुन कर लम्बी आह भरी। और कहा।......" मुझे सलाहुद्दीन अय्यूब की बातें अब सही मालूम हो रही है। उस ने कहा था उन ख़ज़ानों से दूर रहो।"

ग़यास बिलबिस शहरी उमूर का कोतवाल था। इसमाईल और कुदूमी उसे अच्छी तरह जानते थे। वह गूनाहों का कफ़्फ़ारा अदा करना चाहता था वह सेहरा से लौट कर अहमर दुरवेश के पास जाने की बजाए ग़यास बिलबिस के पास चले गए और उसे सारी वारदात सुना कर बताया कि उस का असल सरग़ना अहमर दुरवेश है। गियास बिलबीस ने उसी वक़्त अली बिन सुफ़ियान को अपने पास बुला लिया। उसे ये वारदात सुनाई अहमर मामूली हैसियत का आदमी नहीं था उन दोनों ने सुलतान अय्यूबी को जगाया और इजाज़त मांगी कि वह अहमर दुरवेश को ग्रिफ़तार कर लें। उन्हें इजाज़त मिल गई। उन्हों ने फौज के कुछ

आदमी साथ लिये और अहमर दुरवेश के घर छापा मारा। सारे घर की तलाशी ली। वहां से वह नकशे और काग़ज़ात बरआमद हुऐ जो पूरानी दसतावेज़ात के पुलिन्दे से ग़ाएब थे ।

सुबह अली बिन सुफ़यान और ग़यास बिलबिस के साथ फ़ौज के एक बड़े दसते को उस पुरअसरार इलाके की तरफ़ भेजा गया। जहां रिमेंस का मदफ़न था। सुलतान अय्यूबी ने हुक्म दिया था कि सुबूत वग़ैरह देख कर मदफ़न को उसी तरह बन्द कर दिया जाए जिस तरह पहले था। किसी को अन्दर जाने न दिया जाए। इसमाईल राहनुमाई कर रहा था। वहां गये तो वह जगह खुंचका कहानी बयान कर रही थी। फ़ौज की मदद से मदफ़न के दहाने को उसी वज़नी पत्थर से बन्द कर दिया गया। चट्टान जो नीचे पड़ी थी। उसे फ़ौज की बड़ी जमाअत ने रस्सों और ज़ंजीरों से ऊपर किया और फ़िरऔन एक बार फिर नज़रों से ओझल हो गया मगर अब वह अपने जैसे दो और गुनाहगारों की लाशें अपने मदफ़न में ले गया।

❖❖

इसलाम की पासबानी कब तक करोगे?

सलीबयों का सन 1174 दुनयाए इसलाम के लिये अच्छा साबित न हुआ। ये मुसलमानों का सन 569 हिजरी था। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी को अली बिन सुफ़यान ने साल के आग़ाज़ में ये ख़बर सुनाई कि अकरह में अपना एक जासूस शहीद होगया है और दूसरा पकड़ा गया है। ये इत्तेला एक और जासूस लाया था जो उन दोनों के साथ था ये जासूस कुछ कीमती मालूमात भी लाया था। लेकिन एक जासूस की शहादत और दूसरे की गिरफ़तारी ने सुलतान अय्युबी को परीशान कर दिया। अली बिन सुफ़यान भांप गया क़ि सुलतान अय्युबी ने सैकड़ों फ़ौजियों की शहादत पर भी परीशानी और अफ़सोस का इज़हार नही किया लेकिन एक छापा मार या किसी मुल्क में भेजे हुए एक जासूस की शहादत की ख़बर सुन कर उस का चेहरा बुझ जाया करता है।

अब एक जासूस की शहादत और एक की गिरफ्तारी की इत्तेला पर अली बिन सुफ़यान नेसुलतान अय्युबी के चेहरे पर रंज का तास्सुर देखा। तो उस ने कहा।......" अमीरे मोहतरम! आपका चेहरा उदास होता है तो लगता है सारा आलमे इसलाम मलूल हो गया है इसलाम की आबरू जानों की कूरबानी मांगती है। एक दिन हम दोनो को भी शहीद होना है। हमारे दो जासूस ज़ाए हो गए हैं तो मैं दो और भेज दूंगा। ये सिलसला रुक तो नहीं जाएगा। "

" ये सिलसिला रुक जाने का मुझे खदशा नहीं अली ! " सुलतान अय्युबी ने रंजीदा सी मुसकुरहाट के साथ कहा।......." किसी छापा मार की शहादत मेरे ज़ेहन में ये सोंच पैदा कर देती है कि एक ये सरफ़रोश है जो हमारी नज़रों से ओझल , वतन से दूर , अपने बीवी बच्चो ,भाई बहनों और मां बाप से दूर दूशमन के मुल्क में तने तन्हा अपना फ़र्ज़ अदा करते और जान की कुरबानी देते हैं। और एक ये इमान फ़रोश है जो घरों में बादशाहों की तरह रहते एश व इशरत करते और इसलाम की जड़ें काटने में अपने दुशमन का हाथ बटाते हैं। "

" किया आप पसन्द फ़रमाऐंगे कि सालारों और तमाम कमान्दारों को बाक़ाइदा वाज़ दिये जाया करें?" अली बिन सुफ़यान ने कहा--- " आप उन्हें महीनें में ऐ बार इसलाम की अज़मत और सलीबी के अज़ाएम के मुतअल्लिक़ वाज़ दिया करें। मेरा ख़याल है कि जिन का रुजहान दुशमन परवरी की तरफ़ है उनहें बताया जाये कि उन का दुशमन कौन हैं और कैसा है तो वह अपने ख़यालात में तबदीली पैदा कर लेगें।"

" नहीं ।" सुलतान अय्युबी ने कहा--- " जब इनसान ईमान बेचने पर आता है तो उस के आगे कुरआन रख दो तो वह उस मुक़द्दस किताब को उठा कर एक तरफ़ रख देगा। एक तरफ़ सिर्फ़ अलफ़ाज़ हों और दुसरी तरफ़ दौलत, औरत और शराब तो इनसान अलफाज़ से

मुतास्सिर नहीं होता। अलफाज़ नशा नहीं दे सकते। बादशाही नहीं दे सकती। हमारी कौम के ग़द्दार बच्चे नहीं । वह गंवार और जाहिल नहीं। वह सब हाकिम हैं। फ़ौज और हुकूमत के ऊंचे उहदों के लोग हैं। वह सीपाही नहीं । दुशमन के साथ साज़ बाज़ हाकिम ही किया करते है। सीपाही लड़ते और मरते है। उन्हे झांसे देकर बग़ावत पर आमादा किया जा सकता है। मैं किसी को वाज़ और ख़ुतबा नहीं दूगां। ख़ुतबे देने वाले हुकमरान दर असल कमज़ोर और बद दियानत होते है। वह कौम का दिल अलफ़ाज़ से और जोशीले ख़ुतबों से रिझाया करते हैं। ख़ुतबे और तकरीरें कमज़ोरी की अलामत होती है।। मैं फ़ौज और कौम से ये नहीं कहुगां कि हम फ़ातेह और ख़ुशहाल हैं। मैं हालात को बदलुगां। फिर हालात बताऐगे। हम अमीर हैं या गरीब, फ़ातेह हैं या शिकस्त खुरदा, क़ौम और फौज मुझ से अनाज मागेंगी । तो मैं उन्हें अलफ़ाज़ का ख़ुराक नहीं दुगां। ग़द्दारों को मैं सज़ा दूगां। उन्हें जीने के हक़ से महरूम करदुंगा। अली बिन सुफ़ यान मुझे अलफाज़ में न उलझाओ। अगर मुझे बोलने की आदत पड़ गई तो मैं झूट बोलना भी शुरूअ कर दुंगा।"

मिस्र में बग़ावत का जो ख़तरा पैदा हो गया था वह ख़त्म कर दिया गया था। आला ओहदों के चन्द एक हाकिम पकड़े गए और सज़ा पा चुके थे। दो ने खुद ही सुलतान अय्युबी के पास आकर इकबाले जुर्म किया और माफ़ी ले ली थी। सुलतान अय्युबी का ये कहना बिलकुल सहीह था कि ग़द्दारी और बे इतमिनानी पैदा करने के ज़िम्मेदार मुफ़ाद परसत हाकिम होते हैं फ़ौज और कौम को गुमराह करके सबज़ बाग़ दिखाए जाते और बग़ावत पर आमादा किया जाता है। मिस्र में 1174 के आग़ाज़ तक फौज में बग़ावत का नाम व निशान तक न रहा था। अलबत्ता सलीबी जासूसी और तख़रीब कारी में बदसतूर मसरूफ़ थे। सलीबीयों के जासूस और तख़रीब कार मिस्र में मौजूद और सरगरम थे। ये सिसिला रोका भी नहीं जा सकता था। सुलतान अय्युबी ने भी अपने जासूस उन इलाकों में भेज रखे थे। जो सलीबीयों के कबज़े में थे। सुलतान अय्युबी उस ज़मीन दूज़ जंग का माहिर था।

अकरह फ़िलसतीन की सर ज़मीन का एक मुकाम था। जो इस लिहाज़ से अहम था कि वहां सलीबीयों का सब से बड़ा पादरी जिसे सलीबे आज़म का मुहाफिज़ कहा जाता था रहता था वहीं से सलीबी कमाण्डर हिदायत और हौसला अफज़ाई हासिल करते थे और अकरह उस दौर में सलीबियों की हाई कमाण्ड हेड कुवार्टर बन गया था जब नूरुद्दीन ज़ंगी ने करक का किला फ़तह कर लिया तो सलीबी अकरा को हेड क़ुवार्टर बना कर बैतुल मकदिस को सुलतान अय्युबी और ज़ंगी से बचाने की इसकीमें बना रहे थे वहां के हालात मालूम करने और दुशमन की इसकीम की इत्तेला करक मैं ज़ंगी को या काहिरा में सुलतान अय्यूबी को पहुंचाने के लिये तीन जासूस भेज दिये गऐ थे उन का कमाण्डर इमरान नाम का एक निडर और ज़हीन जासूस था, ये अली बिन सुफ़यान का इन्तेख़ाब था।

ये तीनों निहायत ख़ूबी से अकरह में दाख़िल हो गए थे। जैसा कि पहले सुनाया जा चूका है कि सुलतान अय्युबी ने शोबक का किला और शहर फ़तह किया तो वहां से बेशुमार ईसाई और यहूदी करक की तरफ भाग गए थे । मुसलमानो ने करक पर चढ़ाई करके ये शहर भी

ले लिया तो वहां से भी ग़ैर मुसलिम भागे और मुख़तलिफ़ मक़ामात पर चले गए। उन दोनो मफ़तूहा जगहों के इर्द गिर्द इलाक़ों के भी ईसाई और यहुदी भाग गए थे। सुलतान अय्युबी का ऐंन्टली जिन्स का मुहकमा भी अपनी फ़ौज के साथ था अली बिन सुफ़यान की हिदायात के मुताबिक कई जासूस इसाईयों के बहरूप में इसाईयों के इलाक़ों में भेज दिये गए। उन में तीन को ये मिशन दिया गया कि वह अकरह से जंगी मालूमात हसिल करके काहरा भेंजें। उन्हें वहां सलीबी फ़ौज के नक़्ल व हरकत पर नज़र रखनी थी ग़ैर मुसलिम आबादी में मुसलमान फ़ौज की दहशत भी फैलाई थी और ये इत्तेला भी देती थी कि वहां किस क़िसम की तबाह कारी की जा सकती है।

ये तीनों लूटे पीटे इसाईयों के बहरूप में अकरह में दाख़िल हो गए। उन दिनों वहां ये हालत थी कि इसाईयों और यहुदयों का तांता बंधा रहता था। वह सब हरासां थे और पनाहें ढूंढ रहे थे। पनाह के बाद रोज़गार का मसला था इमरान और उस के दोनो जासूसों को वहां इसाईयों की हैसियत से पनाह मिल गई तीनों ज़हीन और तरबियत याफ़ता थे। इमरान सीधा बड़े पादरी के पास चला गया । अपने आप को किसी ऐसे इलाक़े का पनाह गुर्जी ज़ाहिर किया जिस पर मुसलमानों का कबज़ा हो गया था। उस ने इस तरह बातें कीं जैसे उस पर मज़हब का जुनून तारी है और वह ख़ुदा की तलाश में मारा मारा फिर रहा है उस ने कहा कि उस की बीवी और बच्चे मुसलमानों के हाथों मारे गऐ हैं उसे उन बच्चों का और बीवी का कोई ग़म नहीं। उस ने बेताबी से ये ख़्वाहिश ज़ाहिर की कि वह कलीसा की ख़िदमत करना चातहता है क्योंकि उस ने सुना है कि ख़ुदा और रूहानी सुकून कलीसा में है उस ने अपना नाम जान गैंथर बताया।

"....... और मैंने तो इसलाम कबूल कर ही लिया था " इमरान ने पादरी से कहा—" उनके एक मोलवी ने कहा था कि ख़ुदा मस्जिद में है । मेरे बीवी और बच्चे मुझ से नालां और शाकी थे कि मैं कोई काम काज नहीं करता था। ख़ुदा और रुहानी सुकुन की तलाश में मारा मारा फिरता रहता था। मैं ख़ुदा के वजूद पर यक़ीन रखता हूं। वह ख़ुदा ही था जिस ने मेरी बीवी को मुसलमानों के हाथों मरवा कर अपनी पनाह में ले लिया कियों कि मैं जो उस का ख़ाविन्द था उसे रोटी नही देता था वह ख़ुदा ही था जिस ने मेरे बच्चों को भी संभाल लिया कियोंकि वह मां के बग़ैर रह नहीं सकते थे और मैं जो उन का बाप था उन की तरफ़ से बे परवाह था । मै मुसलमान हो चला था। मगर मुसलमानो ने मेरे मासूम बच्चों को मार डाला। उन्हों ने हम पर बहुत मज़ालिम ढ़ाए । मैं जान गया था कि ख़ुदा मुसलमान के सीने में नहीं है कहीं और है।"

उस ने अचांक पादरी के कंधे थाम कर उसे झंझोड़ डाला और दांत पीस कर पूछा —"मुक़द्दस बाप! मुझे बताओ मैं पागल तो नहीं हो गया? मैं अपनी जान अपने हाथों से ले लूंगा। मैं अगले जहान तुम्हारा गिरेबान पकड़ कर ख़ुदा के सामने ले जाउंगा। और कहुंगा कि ये शख़्स मज़हबी पेशवा नहीं एक ढ़ोंग था। इस ने मज़हब के नाम पर लोगो को धोके दिये हैं।

उस की ज़ेहनी कैफ़ियत एसी हो गई कि सलीबे आज़म का मुहाफ़िज़ चौंक पड़ा। उस ने इमारान के सर पर हाथ रख कर कहा——" तुम मेरे ग़मज़दह बेटे हो। खुदा तुम्हारे अपने सीने में है जो तुम्हें खुदा के बेटे के माबद में नज़र आएगा। तुम इसाई हो जान गैंथर ! तुम इसी मज़हब और इसी रूप में खुदा को पा लोगे। तुम जाओ। हर सुबह मेरे पास आजाया करो। मैं तुम्हें खुदा दिखाउंगा।"

" मैं कहीं नहीं जाउंगा। मुकद्दस बाप !" इमरान ने कहा।——"मेरा कोई घर नहीं। दुनया में मेरा कोई नहीं रहा मुझे अपने पास रखें। मैं आप की और खुदा के बेटे के माबद की इतनी खिदमत करुंगा जितनी आप ने भी न की होगी।"

इमरान ने अली बिन सुफ़यान से तरबियत ली थी। उसे और उस के साथियों को चुंकि सलीबीयों के राज़ मालूम करने के लिये तैयार किया गया था। इस लिये उन्हें ईसाईयत के मुतअल्लिक गिरजों के अन्दर के आदाब और तौर तरीकों के मुतअल्लिक न सिर्फ़ मालूमात दी गई बल्कि रेहरसल भी कराई गई थी। इमरान ने इस रेहरसल को एसी ख़ूबी से अमली शकल दी कि बड़ा पादरी और उस के चेले चांटे उस से बहुत मुतास्सिर हुए और उसे गिरजे में रख लिया। इमरान ने पादरी की खिदमत एसे वालहाना अन्दाज़ से शुरूअ कर दी कि वह पादरी का खुसूसी मुलाज़िम बन गया। चूंकी वह ज़हीन भी था इस लिये उस ने पादरी के दिल पर कबज़ा कर लिया। पादरी ने तसलीम कर लिया के ये शख़्स ग़ैर मामूली तौर पर ज़हीन है लेकिन इस पर मज़हब का जुनून इतनी शिद्दत से तारी हो गया है कि उस की ज़ेहानत बेकार हो रही है। पादरी ने उस की तालीम व तरबीयत शुरूअ कर दी।

❖

इमरान का एक साथी एक ईसाई ताजिर के पास गया और बताया कि वह करक से भागा हुआ ईसाई है जहां उस का सारा खान्दान मुसलमानों के हाथों मारा गया है। उस ने अपनी दासताने ग़म ऐसे जज़बाती अन्दाज़ से सुनाई कि ताजिर ने उसे अपने पास मुलाज़िम रख लिया। वह रहीम अंगोरह नाम का सुडानी मुसलमान था। इमरान की तरह ज़हीन ,दीलेर और ख़ूबरू उस ने उस ताजिर का इन्तेख़ाब सोंच समझ कर किया था। उस ने चन्द दिन सर्फ़ करके देखा था कि वहां सलीबी फ़ौज के अफ़सर आते हैं और फ़ौज के लिये सामान खरिदते हैं टरेनिंग और अपनी अकल की ज़ोर पर वह ताजिर का काबिले इतमाद मुलाज़िम बन गया चन्द दिन बाद ताजिर ने उसे घर के काम भी देने शुरूअ कर दिये। रहीम ने ऐली मोर के ईसाई नाम से ताजिर के घर वालों पर भी अपना असर काएम कर लिया। इस कामयाबी की वजह ये थी कि उस ने ताजिर की बीवी, उस की जवान बेटी और बेटे को ऐसे अन्दाज़ से अपनी तबाही की कहानी सुनाई थी कि उन सब के आंसू निकल आऐ थे। उस ने उन्हें बताया कि उस का मकान उनही के जैसा था। ऐसी ही सजावट थी। ऐसा ही सामान था। आला नसल का एक घोड़ा था ताजिर की बेटी जैसी खुबसूरत जवान बहन थी। उस के घर में हाजत मन्दों को नौकर रखा जाता और भूकों को खाना खिलाया जाता था। अब खुदा ने ये दिन दिखाया है कि मैं नौकरी कर रहा हूं।

ताजिर की बेटी एलस उस से कुछ ज़्यादह ही मुतास्सिर हुई । वह रहीम से उस की बहन के मुतअल्लिक ही पूछती रही । रहीम ने कहा------" वह बिलकुल तुम्हारी तरह थी तुम्हें देख कर मुझे मेरी बहन और ज़्यादा याद आने लगी है। अगर वह मर जाती तो इतना ग़म न होता। ग़म ये है कि मुसलमान उसे उठा ले गए हैं। तुम समझ सकती हो कि उस का किया हाल हो रहा होगा। मुझे अब यही ग़म खाए जा रहा है कि उसे मुसलमानों से किस तरह रिहाई दिलाऊं। कभी दिल में ज़ियादा उबाल उठा तो शायद पागलों की तरह वहीं जा पहुचुं जहां बहन को छोड़ आया हूं। बहन तो नहीं मिलेगी मुझे मौत मिल जाऐगी। मैं ज़िन्दा नहीं रहना चाहता ।"

मां बेटी ने ज़रूर सोंचा होगा कि इतना खूबूरू जवान जवानी की उमर में ही ग़म में घुलने लगा है और उस की जज़बाती हालत बता रही थी कि उस का ग़म हलका नही किया गया तो ये पागल हो जाएगा ये खुदकुशी कर लेगा। ऐल्स जो ताजिर की जवान और ग़ैर शादी शुदा बेटी थी। रहीम के दर्द को अपने दिल में महसूस करने लगी। यहां तक कि रहीम जब बाहर निकला तो ऐल्स ने किसी बहाने बाहर जाकर रहीम को रासते में रोक लिया और कहा कि वह उनके घर आता रहा करे। उस ने रहीम से कुछ जज़बाती बातें करके उस का ग़म हलका करने की कोशिश की । मां बेटी ने ताजिर से भी कहा कि उस आदमी का ख़याल रखे । दर असल रहीम की शकल व सूरत और डील डोल ऐसी थी कि वह किसी ऊंचे और ख़ाते पीते ख़ानदान का बेटा लगता था। उस तास्सुर में अगर कोई कसर थी तो वह उस की ज़बान और अदाकारी से पूरी हो जाती थी जिस की उसे टरेनिंग दी गई थी।

तीन चार रोज़ बाद वह ताजिर के पास बैठा था कि उसे अपना एक साथी जासूस रज़ाउलजादह नज़र आगया। रहीम उस के पीछे पीछे गया और उस के साथ साथ चलते उस से पूछा कि वह किया कर रहा है। मालूम हुआ कि उसे कोई ठिकाना नही मिला । रज़ा तजुरबा कार घोड़ा सवार था और घोड़े पालने और संभालने की महारत रखता था। रहीम उसे ताजिर के पास ले आया। और उस का तआरुफ़ फरांसेस के नाम से कराकर कहा कि ये भी करक का लुटा पिटा ईसाई है इसे कहीं नौकर करादिया जाए। रहीम ने कहा कि ये घोड़ों कि साइसों का इंचार्ज था। यही काम कर सकता है। ताजिर ने कहा कि उस के पास बड़े बड़े अफ़सर आते रहते है। उन की वसातत से वह फरांसेस को मुलाज़िमत दिला देगा। ...... दो तीन रोज़ बाद रज़ा को उस असतबल में मुलाज़िमत मिल गई जहां फ़ौज के बड़े अफ़सरों के घोड़े रहते थे।

ताजिर के पास फ़ौज के अफ़सर आते रहते और वह उन के पास जाता रहता था रहीम ने देखा कि ताजिर उन अफ़सरों को शराब और हशीश के इलावा चोरी छिपे औरतें भी दिया करता था। इस तरह उस ने उन सब को अपने मुट्ठी में ले रखा था। रहीम ताजिर को सुलतान अय्युबी और नुरुद्दीन ज़ंगी के खिलाफ़ भड़काता रहता और इस ख़्वाहिश का इज़हार करता रहता था कि सलीबी फ़ौज पूरे अर्ब और मिस्र पर काबिज़ हो जाए और कोई मुसलमान ज़िन्दा न रहे। इस ख़्वाहिश में वह बाज़ औक़ात इतना बेताब और बेक़ाबू नज़र

आता था जैसे अकरह के मुसलमानों का ख़ून पी लेगा। ताजिर उसे तसल्ली देता रहता था कि सलीबी फौज उस की ख़्वाहिश पूरी करदेगी। वह सलीबी फ़ौज के उन अफ़सरों को भी बूरा भला कहने लगा था जो अकरह में बैठे ऐश कर रहे थे। उन जज़्बाती बातों के साथ साथ रहीम अक्ल मंदी की बातें भी किया करता था और मुसलमानों को शिकस्त देने के लिये ऐसे जंगी नकशे और मनसूबे बनाता था कि ताजिर उसे ग़ैर मामूली तौर पर दानिशमन्द समझता था। ऐसे ही जज़्बात और दानिशमन्दाना बतों का नतीजा था कि ताजिर ने उसे वह फ़ौजी राज़ देने शूरुअ कर दिये जो उसे फ़ौजी अफ़सरों से मिलती थी।

उस के साथ ऐल्स रहीम की गिरवीदह होगई। रहीम ने इबतेदा में उसे भी अपने फ़र्ज़ की एक कड़ी समझा लेकिन ऐल्स के वालिहाना पन ने रहीम के दिल में उस की मुहब्बत पैदा कर दी। रहीम ने दिल में फ़ैसला कर लिया कि अपना फ़र्ज़ पूरा करके वह ऐल्स को अपने साथ क़ाहरा ले जाऐगा। और उसे मुसलमान करके उस के साथ शादी कर लेगा। मगर अभी दोनो को मालुम नहीं था कि सलीबी फ़ौज का एक बड़ा अफ़सर उस लड़की पर नज़र रखे हुए है।

रज़ाउलजादा भी तरबियत याफ़ता जासूस था। असतबल मे उसे फ़ौज के किसी बड़े अफ़सर का घोड़ा मिल गया था उस अफ़सर ने महसूस किया कि रज़ा आम किसिम का साईस नहीं बल्कि अक़्ल व दानिश भी रखता है वह बातें ही एसी करता था। जब कभी ये अफ़सर असतबल में आता तो रज़ा उस से पूछता —" सलाहुद्दीन अय्यूबी को आप कब शिकस्त दे रहे हैं ?" और फिर वह बताता कि सुलतान अय्युबी की फ़ौज मे किया ख़ूबियां और सलीबी फ़ौज में किया खामियां हैं । एक रोज़ उस ने कोई एसी बात कह दी जो अगर कोई जंगी उमूर का महिर न कहे तो कम अज़ कम एक साईस के दिमाग़ मे नहीं आ सकती । उस अफ़सर ने उसे कहा —"तुम कौन हो? तुम्हारा पेशा साइसी नहीं हो सकता।"

" आप को किस ने बताया है कि मेरा पेशा साइसी है?" रज़ा ने कहा।....." मैं करक मे घोड़ों का मालिक था । मैं खुद तो फ़ौज में नहीं था। मेरे दो घोड़े जंग में गए थे। ये तो ज़माना के इनकलाबात हैं कि घोड़ों का मालिक आज असतबल में साईस है। मुझे इस का कोई ग़म नहीं अगर आप सलाहुद्दीन अय्यूबी को शिकस्त दे दें तो मैं बाक़ी उमर आप के जूते साफ़ करते गुज़ारुंगा।"

"सलाहुद्दीन अय्यूबी की किसमत में शिकस्त लिख दी गई है फरांसेस !" उसने रज़ा से कहा।

" लेकिन कैसे? " रज़ा ने कहा ...... " अगर हमारे बादशाहों ने करक और शोबक पर हमला किया और मुसलमानों को इसी तरह मुहासरे में ले कर शिस्त देने की कोशिश की जिस तरह उन्हों ने हमें मुहासरे में लिया था तो आप कामियाब नहीं होंगे। सलाहुद्दीन अय्यूबी और नूरुद्दीन ज़ंगी जंग के उसताद हैं । मैं ने सुना है कि उन्हों ने हामरी फ़ौज को क़िलों से दूर रोकने का इहतमाम कर रखा है। अक़्ल मन्दी इस में होगी कि हमला किसी ऐसी सिम्त से किया जाऐ जो अय्यूबी के वहम व गुमान में भी न हो। अय्यूबी और ज़ंगी क़िलों में बैठे रहें और आप मिस्र पर छा जाऐं।"

" ऐसे ही होगा।" अफ़सर ने माना खेज़ मुसकुराहट से कहा।...." समुन्द्र में कोई किला नहीं होता। मिस्र के साहिल पर कोई किला नहीं। मिस्र पर अब सलीब की हुकमरानी होगी।"

ये इबतेदा थी। उस के बाद रज़ा ने उस अफ़सर से कई एक राज़ की बातें भी मालूम कर लीं। दुशमन अपना जंगी राज़ तफ़सील से बियान नहीं करता। होशियार जासूस इशारों में बातें उगलवा लेता और उन इशारों को अपने फन के मुताबिक जोड़ कर वह कहानी बना लेता हैं जिसे राज़ कहते हैं।

❖

रहीम और रज़ा हर इतवार की सुबह गिरजे में जाते और इमरान से मुलाकात कर लेते और उसे अपनी रिपोर्ट भी दिया करते थे। रहीम ने इमरान को बता दिया था कि ताजिर की बेटी ऐल्स उसे बड़ी शिद्दत से चाहने लगी है। इमरान ने उसे कहा कि वह उस की मुहब्बत को ठुकराए नहीं वरना उसे उस जगह से निकाल दिया जाए गा और ये इहतियात भी करे कि उस की मोहब्बत में ही नं गुम होजोए, मगर रहीम ऐल्स के हुस्न व जवानी में गुम होता चला जा रहा था। लड़की ने ये भी कह दिया था कि उन की शादी सिर्फ़ इस सूरत में हो सकती है। कि वह अकरह से भाग चलें कियोंकि कोई अफ़सर लड़की के बाप के सथ दोसताना गांठ रहा था। रहीम ने इमरान को ये सूरते हाल न बताई।

इमरान ने पादरी का कुर्ब और एअतमाद इस हद तक हासिल कर लिया था कि उस का हमराज़ बन गया था। वह पादरी से ऐसे सवाल पूछता था जिन में ज़िहानत की पुख़तगी और इल्म की तशन्नी होती थी। पादरी अपनी फ़रागत के औकात में उसे मज़हब के सबक दिया करता था। वह इमरान को ये ज़ेहन नशीन करा रहा था कि इसाईयत का ये फ़र्ज़ है कि कुरह अर्ज़ से इसलाम का वजूद ख़त्म किया जाऐ। इस मकसद के लिये जंग की जाए। और जो भी ज़रिया से इसाईयत में लाने की कोशिश कीजाऐ अगर वह इसाईयत कुबूल न करें तो उन के ज़ेहनों से इसलाम भी निकाल दिया जाऐ। उस का तरीका ये हे कि उन में बदी का बिज बो दिया जाऐ। उस का एक तरीका ये है कि अपनी औरतों को इसतेमाल किया जाऐ। ये औरतें मुसलमान औरतों में बदकारी पैदा करें और जवान लड़कियां मुसलमान नौजवान और उन के हुकमरान और हाकिमों का किरदार तबाह करें। चूंकि यहूदी भी मुसलमानों के दुशमन हैं और वह अपनी औरतों का इसतेमाल करतें है। इस लिये मुसलमानों की तबाह कारी के लिये यहूदी औरतों को इसतेमाल किया जा सकता है। मकसद ये सामने रखा जाऐ कि मुसलमानों का नाम व निशान मिटाना है। फिर हर तरीका इख़तियार किया जाए। वह ख़्वाह दूसरों की नज़र में नाजाएज़ ज़ालिमाना और शरम नाक हीं कियों न हो।

इमरान पादरी से एसी बातें सुनता और इतमिनान का इज़हार करता रहता था। वहां फौजी अफ़सर और हुकूमत के अफ़सर भी आते रहते थे उन दिनों चूंकि सलीबीयों को यके बाद दीगरे दो मैदानों से शिकस्त खाकर भागना पड़ा था। इस लिये अकरह में हर किसी कि ज़बान पर यही सवाल था कि जवाबी हमला कब किया जाऐगा। पादरी की ज़ाती महफ़िल में तो और कोई बात होती ही नहीं थी। इमरान वहां से कीमती राज़ हासिल करने में कामियाब

होता जा रहा था। उस ने ये भी मालूम कर लिया कि सलीबी हुक्मरानों में इत्तेफ़ाक और इत्तेहाद नहीं हैं उन की अपनी बादशाहीयां और सलतनतें थीं। वह चूंकि हम मज़हब थे इस लिये सलीब पर हाथ रख कर उन्हो ने इसलाम के ख़ातमें की जंग शुरूअ कर दी। मगर अन्दर से वह फटे हुऐ थे। उन में ऐसे भी थे जो दर परदा मुसलमानों के साथ सुलह और मुआहिदे करके अपने सलीबी भाईयों के साथ मिल कर जंग की तैयारियां भी कर रहे थे। उन में काबिले ज़िक सीरज़र मिनोइल था। जिस ने एक मैदान में नूरुद्दीन ज़ंगी के साथ सुलह करके तावान आदा किया और मुसलमानों के जंगी कैदी रिहा कर दिये थे। अब सीरज़र मिनोइल दूसरे हुक्मरानों को भड़का रहा था। कि वह सब मिल कर ज़ंगी पर हमला करें। हमले को दो हिस्सों में तकसीम किया जाए। एक ज़ंगी पर और दूसरा मिस्र पर । उस वक़्त ज़ंगी करक में था।

बहर हाल पादरी उन के निफ़ाक पर परीशान रहता था इमरान ने उसे ये न कहा था कि जो कौम अपनी लड़कियों को भी अपने मकासिद के लिये इसतेमाल करने से गुरेज़ नहीं करती। उस के अफ़राद एक दुसरे को धोका देने से कियों गुरेज़ करेंगे। मैदान में हार कर ज़मीन दूज़ जंग लड़ने वाली कौम की अख़लाकी हालत यही हो सकती है कि अपने भईयों से भी दगा और फ़रेब करें । इमरान ने अपने ज़ेहन में ये बात सुलतान अय्यूबी को बताने के लिये महफ़ूज़ कर ली कि अगर इसलाम की सफों में ग़द्दार न हों तो सलीबीयों को फ़ैसला कुन शिकस्त दे कर उन से यूरप भी लिया जा सकता है। ग़द्दार मुसलमानों की सब से बड़ी कमज़ोरी बन गऐ थे। अकरह का पादरी और सलीबी हुक्मरान मुसलमानो की इस कमज़ोरी पर बहुत खूश थे। इमरान को वहां पता चला कि सलीबीयों ने मुसलमानों के किरदार में तख़रीब कारी की मुहिम और तेज़ कर दी है। उसे मुसलमानो की छोटी छोटी रियासतों के हुक्मरानो के नाम भी मालूम होगए। जो दरपरदा सलीबीयों के इत्तेहादी बन चूके थे। उन्हें सलीबी बे दरेग़ यूरप की शराब, दौलत और जवान लड़कियां सपलाई कर रहें थे।

इमरान और रज़ा तो अपने फ़राईज़ में मगन थे मगर रहीम फ़र्ज़ के रासते से हटता जा रहा था। उस की कोशिश ये होती थी कि उस ताजिर के घर का ही कोई काम दिया जाऐ। ऐल्स की मुहब्बत ने उसे अन्धा करना शुरूअ कर दिया था। चन्द दिनों बाद ऐल्स ने उसे बताया कि उस की शादी एक ऐसे फ़ौजी अफ़सर के साथ की जारही है। जो उमर में उस से बहुत बड़ा है। बड़ा न भी होता तो ऐल्स रहीम के सिवा किसी और के साथ शादी नही करना चाहती थी। वह अपनी मां से मनवा चूकी थी। कि उस की अफ़सर के साथ शादी नही कराऐगी। उस का बाप नही मानता था वह इन फ़ौजी अफ़सरों से ही दौलत कमा रहा था अपनी लड़की देने से इनकार नहीं कर सकता था। ऐल्स ने एक रोज़ अपने गले में डाली हूीई सलीब रहीम के हाथ पर रख कर उस पर अपना हाथ रखा और सलीब की कसम खाई थी कि वह रहीम के सिवा किसी और को कुबूल नहीं करेगी । रहीम ने भी सलीब पर ऐसी ही कसम खाई थी।

❖

एक रोज़ पादरी के पास चार पांच फ़ौजी अफ़सर आए और उस के ख़ास कमरे में जा बैठे। इमरान ने उन के चेहरों के तास्सुरात से महसूस कर लिया कि कोई बात है। इमरान पादरी के कमरे में चला गया। एक फ़ौजी अफ़सर बात करते चुप हो गया। पादरी ने इमरान से कहा......." जान गैनथर! तुम कुछ देर बाहर ही रहो। हम कोई ज़रूरी बातें कर रहें हैं।"

इमरान दूसरे कमरे में चला गया। और दरवाज़े के साथ कान लगा दिये। वह लोग आहिसता आहिसता बोल रहे थे। फिर भी काम की बातें इमरान ने समझ लीं। जब फ़ौजी अफ़सर चले गए। तो इमरान वहां से इधर उधर हो गया। ताकी पादरी को शक न हो। उस ने ये इरादा भी किया कि उसी वक़्त भाग जाए और कहीं रुके बग़ैर क़ाहिरा पहूंच जाए। और सुलतान अय्युबी को इत्तेला करदे कि हमला रोकने की तैयारी कर लें। मगर पादरी ने उसे बुला कर ऐसे काम पर लगा दिया कि वह फ़ौरी तौर पर भाग न सका। इस के अलावह उसे रहीम और रज़ा से भी रिपोर्ट लेनी थीं। मुमकिन था कि उन के कानों में भी ये ख़बर पहुंची हो जो उस ने सुनी है। उस ने सोंचा कि उन से तसदीक़ हो जाए तो तीनों इकट्ठे अकरह से निकल जाऐं। इस काम के लिय वह तिन चार दिन इनतेज़ार कर सकता था। लेकिन उसकी बेताबी उसे टिकने नही दे रही थीं।

दूसरे दिन वह रज़ा के पास गया। रज़ा उसे असतबल में मिला। उस से पूछा कि उसे कोई नई ख़बर मिली है। रज़ा ने बताया कि कुछ ग़ैर मामूली सी सरगरमी नज़र आ रही है। औ उस ने उड़ते उड़ते सुनी हैं कि सलीबी जवाबी हमला ख़ुशकी के रासते नहीं करगे। मालूम होता है कि वह समुन्द्र की तरफ़ से आऐंगें अब ये मालूम करना है कि उन के हमले की तफ़सील किया है इमरान ने उसे बताया कि उस हमले को सलीबी फ़ैसला कुन बनाना चाहते है। उसने जो कुछ सुना था वह रज़ा को सुना दिया और उसे ये मिशन दिया कि वह उस हमले की तफ़सीलात मालूम करे। इमरान सिर्फ़ तसदीक़ करना चाहता था। वरना वह तफ़सील से तो आगाह हो ही चुका था। उस ने रज़ा से कहा कि अब वह एक आध दिन में यहां से रवांगी की तैयारी करे। उन का फ़र्ज़ पूरा हो चुका है वापसी के लिये उन्हें तीन घोड़ों या ऊंटों की भी ज़रूरत थी जो उन्हें कहीं से चोरी करने थे।

इमरान रहीम से मिलना चाहता था ताकि उसे भी चौकन्ना करके वापसी की तैयारी के लिये कह दे लेकिन रात हो चुकी थी। और वह उस के ठिकाने पर जाना नहीं चाहता था कियोंकि ताजिर ने उसे रहने के लिये जो जगह दे रखी थी वहां जाना ठीक नहीं था इमरान गिरजे चला गया।

वह अगर रहीम के पास जाता भी तो वह उसे न मिलता। वह अपने ठिकाने में भी नहीं था। और वह अकरह में भी नहीं था। जब इमरान अपने फ़र्ज़ की अदाएगी के लिये परीशान हो रहा था। उस वक़्त ऐल्स ने रहीम को किसी और ही परीशानी में डाल रखी थी। हुआ यूं कि सलीबीयों ने रक़्स और खाने की महफ़िल मुनअक़िद की थी। ऐल्स के उम्मीदवार ने उसे अपने साथ रक़्स के लिये कहा तो ऐल्स ने उसे ठुकरा दिया और वह उस से कम उमर अफ़सर के साथ नाचती रहीं उस के उम्मीदवार नेउस के बाप से शिकायत की। उस का बाप

भी उस महफ़िल में मौजूद था जहां शराब की सूराहियां ख़ाली हो रही थीं। बाप ने ऐल्स को डांट कर कहा कि वह अपने मंगेतर की तौहीन न करे और उस के साथ नाचे । ऐल्स नाराज़ होकर घर चली गई । और बाप को ये फ़ैसला सुना आई कि वह इस बूढ़े के साथ शादी नही करेगी।

उस का बाप और उम्मीदवार उस के पीछे गऐ। वह दूर जा चुकी थी। घर जाकर देखा वह वहां नहीं थी। तलाश करते करते वह रहीम के कमरे से बरआमद हुई बाप ने उस से पूछा कि वह यहां किया कर रही है उस ने तिनक कर जवाब दिया कि वह जहां चाहे रह सकती है जा सकती है और जहां चाहे बैठ सकती है। उस के उम्मीदवार को शक हुआ कि यहां मामला गड़बड़ है। ऐल्स को बाप घर ले गया। उम्मीदवार ने रहीम से पूछा कि ये लड़की यहां कियों आई थी। ..... रहीम ने जवाब दिया कि वह पहले भी यहां आया करती है और आईन्दा भी आया करेगी। उम्मीदवार बड़ा अफ़सर था। उस ने रहीम को धमकी दी। कि वह यहां से चला जाऐ वरना उसे जिन्दा नहीं रहने दिया जाऐ गा। रहीम के जिसम में जवानी का ख़ून था उस ने तूरकी ब तुरकी जवब दिया । मामला बिगरड़ गया। ताजिर ने आकर बीच बचाव करा दिया । ऐल्स के उम्मीदवार ने कहा कि वह इस आदमी को यहां देखना नहीं चाहता ।

दूसरे दिन ताजिर ने रहीम से कहा कि वह उसे मुलाज़िमत में नहीं रख सकता कियोंकि फ़ौज के इतने बड़े अफ़सर को नाराज़ करके वह अपना कारोबार तबाह नहीं करना चाहता। उस ने रहीम को ये नसीहत की कि वह वहां से चला जाए कियों कि फ़ौजी अफ़सर उसे किसी जुर्म के बग़ैर क़ैद ख़ाने में डाल सकता है रहीम भूल चुका था कि वह किस मक़सद के लिये यहां अया था। उस ने ऐल्स को अपने ज़ाती वक़ार का मसला बना लिया। उस के उम्मीदवार की धमकी को वह अमली जवाब देना चाहता था। ताजिर आपनी दुकान में था । रहीम उस के घर गया। ऐल्स से मिला और उसे बताया कि उस के बाप ने उसे नौकरी से निकाल दिया है ऐल्स उस के साथ भाग जाने को तैयार होगई । भागने का वक़्त शाम के बाद का मुकरर किया गया । जब उस का बाप घर में नहीं होता था।

रात को उस वक़्त जब इमरान रज़ा के पास बैठा उस राज़ के मुतअल्लिक बातें कर रहा था। जिस के लिये उन्हों ने जान का ख़तरह मोल ले रखा था। रहीम ऐल्स के इन्तेज़ार में शहर से बाहर उस जगह खड़ा था जो उसे ऐल्स ने बताई थी। ऐल्स ने उसे कहा था कि वह बाप के घोड़े पर आएगी । और वह दोनों एक ही घोड़े पर भागेंगे। वह बे सबरी से ऐल्स का इन्तेज़ार कर रहा था। और डर रहा था कि वह बाप का घोड़ा किस तरह चुरा कर लाऐगी। .....लड़की ने घोड़ा चुरा लिया था। उस पर ज़ीन डाल कर कस ली थी। और वह घोड़े पर सवार हो कर निकल भी आई थी। रहीम ने जब उसे देखा तो उसे यक़ीन न आया कि ऐल्स है । उस की आवाज़ पर वह घोड़े पर उस के पीछे सवार हो गया। कुछ दूर तक उन्हों ने घोड़े की रफ़तार आहिस्ता रखी। शहर से दूर जाकर रहीम ने घोड़े को ऐड़ लगादी। कुछ देर बाद वह अकरह से काफी दूर जा चुके थे।

❖

आधी रात के वक़्त वह ऐसी जगह पहुंच गए। जहां पानी था। रहीम ने इस ख़याल से घोड़ा रोक लिया कि उसे पानी पिलाया जाए। और आराम भी कर ले । उसे मालूम था कि आगे बहुत दूर तक पानी नही मिलेगा। उसे ये यक़ीन हो गया था कि वह पकड़े नहीं जाऐंगे। किसी को किया ख़बर कि वह किस तरफ़ गऐ हैं । उस ने ऐल्स से कहा कि आराम करलें । सेहर की तारीकी में रवाना हो जाऐंगे।

" तुम बैतुल मकदिस का रासता जानते हो? " ऐल्स ने पूछा।

उन्हों ने अकरह से भागते वक़्त ये तै किया ही नहीं था कि उन्हे कहां जाना है । अब लड़की ने बैतुल मकदिस का नाम लिया तो रहीम ने कहा।...." बैतुल मकदिस क्यों? मैं तुम्हें वहां ले जाउगां जहां तुम्हारे तआकुब में कोई आने की जुरअत नहीं करेगा।"

" कहां ?"ऐल्स ने पूछा।

" मिस्र ।" रहीम ने जवाब दिया।

" मिस्र ? ऐल्स ने हैरत ज़दह होकर पूछा....... " वह तो मुसलमानों का मुल्क है। वह हमें जिन्दा नही छोड़ेंगे।"

" मुसलमानों को तुम नहीं जानती ऐल्स ।" रहीम ने कहा।---- " मुसलमान बड़ी रहम दिल कौम है।"

"नहीं !" ऐल्स ने बिदक कर कहा---- " मुझे मुसलमानों से डर आता है। बचपन से मुझे मुसलमाने के मुतअल्लिक बड़ी गलीज़ बातें बताई गई हैं। हमारे हां माऐं अपने बच्चों को मुसलमानों से डराया करती हैं। मुझे मुसलमानों से नफ़रत है।"वह डर रही थी और रहीम के साथ लग गई थी उस ने कहा---- " मुझे बैतुल मकदिस ले चलो। वहां हम शादी कर लेंगे। बैतुल मकदिस किघर है मैं सिम्त भूल गई हूं। "

" मैं मिस्र की तरफ़ जा रहा हूं। " रहीम ने कहा।

ऐल्स बिगड़ गई और फिर रोने लगी।

" तुम मुसलमान से नफरत करती हो।? "

" बहुत ज़यादा!"

" और मुझ से तुम्हें मुहब्बत है ?"

" बहुत ज़्यादा!"

" अगर मैं तुम्हें बतादूं कि मैं मुसलमान हूं , तो तुम किया करोगी।"

" मैं हसुंगी। " ऐल्स ने कहा।........" मुझे तुम्हारे लतीफ़े और मज़ाक़ बहुत अच्छे लगते हैं। "

" मैं मज़ाक़ नहीं कर रहा ऐल्स !" रहीम ने संजीदा लेहजे में कहा। "मैं मुसलमान हूं और तुम ज़रा इस कुरबानी पर गौर करो जो मुझ से तुम्हारी मुहब्बत ने कराई है मै ये कुरबानी बखुशी दे रहा हूं"

"कैसी कुरबानी ? " ऐल्स ने कहा ......" तुम तो पहले ही बे घर थे अब हम अपना घर बनाऐगें। "

"नहीं ऐल्स!" रहीम ने कहा।—" मैं अब बे घर हुआ हूं। तुम अपने घर से भागी हो। मेरे साथ शादी कर के तुम अपना घर बसा लोगी। लेकिन मेरा कोई ठिकाना नही होगा। मैं अपने फ़र्ज़ का भगोड़ा हूं। मैं अपनी फौज का भगोड़ा हूं। ..... मैं जासूस हूं अकरह में जासूसी करने आया था मगर तुम्हारी मुहब्बत पर मैं ने अपना फ़र्ज़ कुरबान कर दिया है।"

" तुम मुझे डरा रहे हो।" ऐल्स ने हंसते हुऐ कहा। " चलो सो जाओ मैं तुम्हें जलदी जगा दूंगी।"

"मैं तुम्हें डरा नही रहा ऐल्स!" रहीम ने कहा........" मेरा नाम रहीम अंगोरा है ऐली मोर नहीं। मैं तुम्हें धोके में नहीं रखना चाहता। मैं तुम्हें यकीन दिला सकता हूं कि तुम्हें जहां रखुंगा पूरे आराम में रखुंगा। तुम्हें तुम्हारे बाप के घर वाली बादशाही नहीं दे सकुंगा लेकिन तकलीफ़ भी नहीं होने दुंगा। तुम्हारी ज़िन्दगी आराम से गुज़रेगी।"

" मुझे इसलाम कुबूल करना पड़ेगा?" ऐल्स ने पूछा।

" तो इस में किया हर्ज है?" रहीम ने कहा...." तुम ऐसी बातें न सोंचो. वक़्त ज़ाऐ हो रहा है। सो जाओ। हमारा सफ़र बड़ा लम्बा है बातों के लिये वक़्त बहुत है।"

वह लेट गया। ऐल्स भी लेट गई। ज़रा सी देर बाद ऐल्स को रहीम के ख़र्राटे सुनाई देने लगे। उसे नीन्द नही आ रही थी। वह गहरी सोंचों में खो गई थी।

❖

रहीम की आंख खुली तो सुबह का उजाला सुफ़ैद हो चुका था। वह घबरा कर उठा। उसे इतनी देर नहीं सोना चाहिये था। आंखें मल कर इधर उधर देखा। वहां घोड़ा भी नहीं था। ऐल्स भी नहीं थीं उस ने इधर उधर देखा। एक टिले पर चढ़ कर देखा। सेहरा की वीरानी के सिवा उसे कुछ नज़र न आया। उस ने ऐल्स को आवाज़ें दीं। कोई जवाब न मिला। वह सोंचों मे खो गया। एक ख़्याल ये आया कि उन के तआकुब में कोई आ गया होगा। और वह ऐल्स को सोते में उठा कर ले गया है। उस सूरत में रहीम को ज़िन्दा नही होना चाहिये था। उसे वह लोग कतल कर जाते या उसे अग़वा के जुर्म में पकड़ ले जाते। हैरत इस पर थी कि वह ऐल्स को ऐसी ख़ामोशी से उठा कर ले गये कि रहीम की आंख ही न खुली। दूसरी सूरत यह होसकती थी कि ऐल्स ख़ूद भाग गई है उस ने रहीम को सिर्फ़ इस लिये ठुकरा दिया है कि वह मुसलमान है

ऐल्स जाहां कहीं भी गई और उसे जो कोई भी ले गया। रहीम को अब ये सवाल परेशान करने लगा कि वह कहां जाए? अकरह वापस जाना ख़तरे से ख़ाली नही था काहिरा जाने से भी डरता था। उस ने अपना फ़र्ज़ पूरा नही किया था। उस ने अपने कमाण्डर इमरान को नहीं बताया था कि वह जा रहा है सोंच सोंच कर उसने ऐक बहाना घड़ लिया। उस ने फ़ैसला कर लिय कि वह अब क़ाहिरा की बजाऐ करक चला जाए। और वहां बताए कि उसे पहचान लिया गया था कि वह मुसलमान है और जासूस है। वह बड़ी मुशकिल से भाग कर वहां से निकला है उसे मोहलत नही मिली कि इमरान या रज़ा को इत्तेला दे सकता कि उस की गिरफ़तारी का ख़तरा पैदा हो गया है........ ये अच्छा बहाना था। उसे मालूम था कि उस से

कोई ये तो नहीं कहे गा कि कोई सबूत और शहादत लाओ।

वह पानी पी कर क़रक की सिम्त चल पड़ा। उसे ऐल्स की गुमशुदगी परीशान कर रही थी। और उसे अफ़सोस भी हो रहा थ कि उसे कभी पता नहीं चल सकेगा कि ऐल्स कहां ग़ाईब हो गई है।

वह बमुशकिल तीन मील चला होगा कि उसे दौड़ते घोड़ों की हलकी हलकी आवाज़ें सुनाई दीं। उस ने पीछे मुड़ कर देखा। गर्द का बादल उड़ रहा था। उस ने इधर उधर देखा छिपने की कोई जगह नही थी। उसे मालूम नही था कि सवार कौन था। उसे यही मालूम था कि वह ख़ुद कौन है यही ख़तरनाक पहलू था। वह घोड़ों के रासते से हट कर चलता गया। घोड़े क़रीब अगऐ। तब उस ने देखा कि वह सलीबी थे। और उन्हों ने घोड़े उस की तरफ़ मोड़ लिये थे। वह निहत्ता था भगने की भी सूरत नही थी। सवारों ने उसे घेर लिया उस ने उन में ऐक को पहचान लिया। वह ऐल्स का उम्मीदवार था। उस ने रहीम से कहा। ....." मुझे पहले ही शक था कि तुम ईसाई नहीं हो।

उसे पकड़ लिया गया। और उस के हाथ पीठ पीछे बांध कर उसे एक सवार ने लाश की तरह घोड़े पर डाल लिया। घोड़े अकरह की सिम्त रवाना हो गऐ। ये वह वक़्त था जब इमरान रहीम से मिलने गया तो वह उसे न मिला। ताजिर के एक नौकर ने कहा कि उसे नौकरी से निकाल दिया है इमरान शश पंज में पड़ गया। रहीम जा कहां सकता था उसके पास क्यों नहीं आया? ..... इमरान गिरजे में वापस चला गया। रज़ा से वह शाम के बाद मिल सकता था उन्हें रहीम को ढुंढना था। ये ख़तरा भी महसूस किया कि वह गिरफ़तार न हो गया हो। इस सूरत में ये ख़तरा था कि उस ने अपने दोनों साथियों की निशान देही न कर दी हो। इमरान को ये सोंच परीशान कर रही थी कि रहीम अगर पकड़ा गया है। तो कहीं ऐसा न हो कि वह और रज़ा भी पकड़े जाऐं। पकड़े जाने और मारे जाने का उन्हें फ़िक नहीं था फ़िक ये था कि उन्हों ने वह राज़ हासिल कर लिया था जिस के लिये वह यहां आऐ थे और अब उन्हें यहां से निकलना था।

सूरज गुरूब होने में अभी बहुत देर थी। रज़ा असतबल से बाहर कहीं खड़ा था। चार घोड़े असतबल के दरवाज़े पर रुके। एक सवार ने अपने आगे किसी को लाश की तरह डाल रखा था। उसे उतारा गया। ये देख कर रज़ा का ख़ून ख़ुश्क हो गया कि वह रहीम था। उस के हाथ पीठ पीछे बंधे हुऐ थे। सवारों में एक बड़ा अफ़सर था। रज़ा उसे अच्छी तरह जानता पहचाता था। दूसरों से भी वह वाक़िफ़ था। रहीम को वह लेजाने लगे तो बड़े अफ़सर ने रज़ा को देख लिया। उसे 'फ़रांसेस' के नाम से बुलाया। रज़ा दौड़ा गया। लेकिन उसके पावं नहीं उठ रहे थे। वह समझ गया कि उसे भी गिरफ़तार किया जाऐगा।

" चारों घोड़े अन्दर ले जाओ। " उस अफ़सर ने रज़ा से कहा।...." हमारे साईसो के हवाले कर देना।....." उस ने रहीम के मुतअल्लिक़ हुक्म दिया। .... " उसे उस कमरे में ले चलो।"

रज़ा को चूंकी फ़रांसेस के नाम से बुलाया गया था इस लिये वह जान गया था कि रहीम

ने उसकी निशन देही नहीं की है। ये सलीबी अफ़सर उसे अभी तक साईस फरांसेस समझ रहे थे। उसने एक अफ़सर से पूछा......." ये कौन है ? इस ने चोरी की होगी।"

" ये सलाहुद्दीन अय्यूबी का जासूस है " एक फौजी ने जवाब दिया और तनज़िया लहजे मे कहा। " अब ये तह खाने में जासूसी करेगा। जाओ घोड़े ले जाओ।"

इस दौरान रज़ा और रहीम ने एक दूसरे को गहरी नज़रों से आंखों में आखें डाल कर देखा था। उन्हों ने आखों के कुछ इशारे मुकर्र कर रखे थे। अगर ऐसी सूरते हाल में दो जासूसों का सामना हो जाऐ तो वह एक इशारा तो यह करते थे कि भाग जाओ दूसरा ये कि कोई खतरा नहीं रहीम ने रजा को एसा ही एक इशारा किया जिस से उसे तसल्ली हो गई कि उस ने किसी की निशान देही नहीं की। ताहम उन के लिये ये खुशी की बात नहीं थी। उस का साथी पकड़ा गया था और अब जानता था कि तहख़ाने में उस का क्या हशर किया जाऐ गा रहीम को अब मरना थ मगर बड़ी ही अज़िय्यत नाक मौत मरना था। रज़ा को मालूम हो चुका था कि रहीम कौन से कमरे में ले जाया जा रहा है और उस के बाद उसे कहां ले जाऐंगे।

❖

इमरान गिरजे के साथ अपने कमरे में परीशानी की हालत में बैठा सोंच रहा था कि रहीम कहां ग़ाईब हो गया है उस के कमरे का दरवाज़ा खुला। वह रज़ा था अन्दर आकर उस ने दरवाज़ा बन्द कर दिया। और घबराई हुई सरगोशी में कहा। " रहीम पकड़ा गया है " — उस ने जो देखा था इमरान को सुना दिया। रज़ा ने उसे ये भी बता दिया कि रहीम ने इशारे से उसे बता दिया है कि उसने हमारी निशान देही नही की।

"अगर नही की तो तह ख़ाने में जाकर कर देगा। " इमरान ने कहा—" उस दोज़ख में ज़बान बन्द रखना आसान नही होता।"

उन दोनो को यह फ़ैसला करना मुहाल हो गया था कि वह फ़ौरन निकल जाऐं या एक आध दिन इन्तेज़ार कर लें। ऐसे नाज़ुक वक़्त मे उन से एक ग़लती सरज़द हो गई वह ये थी कि वह जज़बात से मग़लूब होगऐ। छापा मारों(कमाण्डो) और जासूसों के लिये ये हिदायत थी कि वह तहम्मुल, बूरदबारी और सब्र से काम लें। उजलत और जज़बात से बचें। अगर उनका कोई साथी ऐसे तरीके से कहीं फसं जाऐ कि उस की मदद करने मे दूसरों के फंसने का भी ख़तरा हो तो उस की मदद न की जाए। रज़ा जज़बात में आगया। उस ने कहा। " मैं रहीम जैसे ख़ूबसूरत और दिलेर दोस्त को कैद से निकालने की कोशिश करुंगा।"

" ना मुमकिन है।" इमरान ने कहा और उसे ऐसे ख़तरनाक इरादे से बाज़ रखने की कोशिश करने लगा।

" मैं चुंकी वहीं रहता हूं जहां रहीम को ले गये हैं। इस लिये देखुंगा कि उसे वहां से निकालना मुमकिन हो सकता है या नहीं।" रज़ा ने कहा ...." मैं ने वहां इतनी दोसती पैदा कर रखी है कि मुझे मालूम हो जाऐगा कि रहीम कहां है अगर मैं उस तक पहुंच गया तो रहीम आज़ाद हो जाएगा या मैं भी उस के साथ ही जाउगां और अगर मैं भी पकड़ा गया तो तुम निकल जाना। राज़ तुम्हारे पास है मैं रहीम के बगैर वापिस नहीं जाउंगा।"

नामुमकिन था कि रज़ा रहीम को वहां से आज़ाद करा लेता। लेकिन उस के जज़बात इतने शदीद थे कि इमरान भी उस का हमनवा हो गया। और वह हक़ाएक़ को भूल गया। रज़ा उसे ये कह कर चला गया कि आधी रात को किसी वक़्त आकर उसे बताएगा कि रहीम की रिहाई की सूरत है या नहीं। अगर कोई सूरत न हुई तो वह रात को निकल जाऐंगे। इमरान के ज़िम्मे ये काम था कि वह घोड़ों का इन्तेज़ाम करले। घोड़ों का इन्तेजाम असान नही था। पादरी के बाडीगार्डों के घोड़े वहां मौजूद रहते थे। उन्ही मे से दो या तीन घोड़े चोरी करने थे।

जिस वक़्त रहीम को क़ैद ख़ाने में डाला गया था। उसे ऐन्टली जिंस के दो वहशी क़िसम के अफ़सरों के हवाले कर दिया गया था जासूस पकड़ा जाता है तो सज़ा का मरहला सब से आख़िर में होता है। पहले उस से मालुमात ली जाती हैं। जासूस अकेला नहीं होता पूरा गिरोह होता है। गिरफ़्तार किये हुए जासूस से यही एक सवाल पूछा जाता है कि उस के साथी कहां हैं और दूसरा सवाल ये कि उस ने किया किया मालूमात हासिल की हैं। रहीम से भी यही सवाल पूछा गया। उस ने जवाब दिया कि वह अकेला है। दूसरा सवाल पूछा गया कि उस ने यहां से कोई ख़ुफ़या बात मालूम की है तो वह बता दे। रहीम ने जवाब दिया कि उस के पास कोई राज़ नहीं। ताजिर की बेटी ऐल्स के साथ तअल्लुक़ात के बारे में पूछा गया। तो उस ने बताया कि वह ऐक दूसरे को चाहते हें ऐल्स की शादी एक बूढ़े अफ़सर के साथ की जा रही थी इस लिये वह घर से भागने पर मजबूर हो गई।

" किया तुम्हें मालूम है कि तुम किस तरह पकड़े गये हो।?"

" नहीं"—रहीम ने जवाब दिया — " मैं इतना ही जानता हूं कि मैं पकडा गया हूं।"

" तुम और भी बहुत कुछ जानते हो।"— एक अफ़सर ने कहा—" वह सब कुछ तुम बतादो जो तुम जानते हो तुम्हें कोई तकलीफ़ नहीं दी जाऐगी।"

" मै ये जानता हूं कि मैं अपना फ़र्ज़ भूल गया था।"—रहीम ने कहा—" मै इस की सज़ा ख़ुशी से क़ुबूल करूंगा। मुझे जिस क़दर तकलीफ़ और जितनी अज़िय्यत दे सकते हो दो। मैं उसे अपने गूनाह की सज़ा समझ कर क़ुबूल कर लूंगा।"

" किया तुम्हारे दिल में अभी तक ऐल्स की मुहब्बत है।"

" अभी तक है।"— रहीम ने कहा— " और हमेशा रहेगी मैं उसे अपने साथ क़ाहरा ले जा रहा था। उसे मुसलमान करके उस के साथ शादी करनी थी।"

" अगर हम ये कहें कि उस ने तुम्हारे साथ धोका किया है तो तुम मान लोगे?"

" नहीं "— रहीम ने कहा—" जिस ने मेरे लिये अपना घर और अपने अज़ीज़ छोड़ दिये थे। वह धोका नहीं दे सकती। उस के साथ किसी ने धोका किया है।"

" अगर हम ऐल्स तुम्हारे हवाले कर दें तो किया तुम हमें बता दोगे कि अकरह में तुमहारे कितने साथी हैं और वह कहां हैं।" —उस से पूछा गया।—" और ये भी बता दोगे कि तुम ने यहां से कौन से राज़ हासिल किया है।"

रहीम का सर झुक गया। एक अफ़सर ने उस का सर उपर उठाया। तो रहीम की आखों

में आंसू थे। अफ़सरों के बारहा पूछने पर भी वह ख़ामूश रहा जिस से ज़ाहिर होता था कि उस के अन्दर ऐसी कशमकश पैदा हो गई हे जिस में वह फ़ैसला नहीं कर सकता कि उस का रवय्या और रद्दे अमल किया होना चाहिये । उस की ये कैफ़ियत ज़ाहिर करती थी कि उस के दिल में ऐल्स की मोहब्बत बहुत गहरी उतरी हुई थी।

" तुम्हें आख़िर कार हमारे सवालों का जवाब देना होगा।"-- एक अफ़सर ने उसे कहा-" उस वक़्त तक तुम हड्डीयों का ढांचा बन चुके होगे। तुम जिओगे न मरोगे।। अगर पहले ही जवाब दे दो तो ऐल्स तुम्हारे पास होगी और तुम आज़ाद होगे। इस वक़्त तुम कैद ख़ाने में नहीं। ये ऐक अफ़सर का कमरा हैं अगर तुम सोंचने की मोहलत चाहते हो तो आज रात तुम्हें इसी कमरे में रखा जोएगा।"

रहीम ख़ामूश रहा और ख़ाली ख़ाली नज़रों से अफ़सरों को देखता रहा। अफ़सरों को ऐसा कोई ख़तरा नहीं था कि वह इस कमरे से भाग जाएगा। बर आमदे में पहरा था। ये इलाक़ा फ़ौज का था। गशती पहरा भी था। रहीम भाग कर जा भी कहां सकता था। एक अफ़सर ने बाहर आकर अपने साथी अफ़सर से कहा-" तुम वक़्त ज़ाऐ कर रहे हो। इसे तह ख़ाने में ले चलो लोहे की लाल गर्म सलाख़ जिसम के साथ लगाओ। सारी बातें उगल देगा। नही बोलेगा तो भूका पयासा रहने दो।"

" मेरा तजुरबा मुख़तलिफ़ है मेरे दोस्त !"- दुसरे अफ़सर ने कहा-" ये न भूलो ये मुसलमान है। तु ने अब तक कितने मुसलमान जासूस से राज़ उगलवाऐ हैं। किया तुम नहीं जानते कि ये कमबख़्त एक बार डट जाऐं तो मर जाते है। ज़बान नहीं खोलते । ये शख़्स कह चुका हे कि हमारी अज़ियत अपने गुनाह की सज़ा समझ कर क़ूबूल कर लेगा। ये कट्टर मुसलमान मालूम होता है। ये तह ख़ाने में जाकर भी कह देगा कि वह कुछ भी नहीं बताऐगा। हमारा मक़सद उसे जान से मारना नहीं ये मालूम करना है कि उस के साथी कहां हैं और ये मालूम करना है कि उन्हें इस हमले का पता तो नहीं चल गया जो हम मिस्र पर करने वाले हैं।"

" उन के बाप को भी पता नहीं चल सकता"- दूसरे अफ़सर ने कहा।-" हाई कमाण्ड के अफ़सरों के सिवा किसी को हमले के मुतअल्लिक़ इल्म ही नहीं । ये जासूस ताजिर की बेटी के इश्क़ में उल्झा हुआ था। उसे तो दुनया की होश ही नहीं थी उसे तो ये भी मालूम नहीं कि उसे ऐल्स ने गिरफ़तार कराया है। ये अभी तक उस की मुहब्बत में मर रहा है।"

" मैं ऐल्स को ही इसतेमाल करना चाहता हूं"- एक अफ़सर ने कहा-" उसे आज रात इसी कमरे में रहने देते हैं मुझे उम्मीद है कि जो राज़ हम कई दिनों बाद भी नहीं उगलवा सकेगें। वह ऐल्स जैसी दिलकश लड़की चन्द मिन्टों में उगलवा लेगी।"

" किया उस लड़की पर भारोसा किया जा सकता है।"

"किया तुमहें अभी तक शक है ?"-" दूसरे ने कहा-" तुम ने शायद पूरी बात नहीं सुनी। ऐल्स ने वापस आकर जो बियान दिया है वह तुम ने पूरा नहीं सूना अब चूंकी तफ़तीश हम दोनों के सुपुर्द की गई हैं इस लिये तुम्हारे ज़ेहन में हर एक बात वाज़ेह होनी चाहिये। ऐल्स इस शख़्स को बुरी तरह चाहती थी। वह उसे ऐली मोर नाम का इसाई समझती रही। ऐल्स

का बाप उस की शादी कमाण्डर वेसट मेकाट के साथ करना चाहता था। वह दर असल अपनी बेटी रिशवत के तौर पर दे रहा था। ऐलस इस जासूस के साथ भाग गई रासतें में उसने ऐलस को बता दिया कि वह ऐली मोर नहीं रहीम है और वह मुसलमान है और वह जासूस है ऐलस ने उसे मज़ाक समझा मगर रहीम ने उसे यकीन दिला दिया कि वह मज़ाक नही कर रहा। रहीम नहीं जानता था कि ऐल्स के दिल में मुसलमान से कितनी वहशत और हिकारत बचपन से बैठी हूई है। और रहीम को यह भी मालूम नहीं था कि ऐलस मज़हब की पक्की है हर वक़्त सलीब गले में डाले रखती है। उस ने जान लिया कि इस मुसलमान ने उस के साथ धोका किया है और वह काहरा ले जाकर न सिर्फ़ खुद ख़राब करेगा बल्कि दूसरों से भी ख़राब कराएगा। और आख़िर में किसी के हाथ फ़रोख़्त करदेगा। हम ने अपने बच्चों के ज़ेहनों में मुसलमानों का जो घिनावना तसव्वुर पैदा कर रखा है। वह ऐल्स के सामने आगया।

"ऐल्स के दिल में मज़हब की मुहब्बत पैदा हो गई। और ये मुहब्बत मुसलमान की मुहब्बत पर ग़ालिब आई कि उसे हिकारत में बदल दिया। वह सब कुछ भूल गई वह ये भी भूल गई कि अकरह वापस आकर उसे बूढ़े कमाण्डर के साथ बियाह दिया जाएगा। उसे सलीब का ये फर्ज़ याद आगया कि मुसलमान कोहर हाल में दुशमन समझना और इसलाम के ख़ातमें के लिये काम्र करना है। लड़की चूंकी होशियार और दिलेर है इस लिये उस ने भागने का निहायत अच्छा तरीका सोचा रहीम पर जाहिर न होने दिया और लेट गई रहीम इतमिनान से सो गया तो ऐल्स घोड़े पर सवार हुई और ऐसी ख़ामोशी से निकल आई कि रहीम को ख़बर तक न हुई रासते से वाकिफ़ थी अकरह पहूचं गई और अपने बाप के सामने इकबाले जुर्म करके उसे रहीम के मुतअल्लिक बताया। बाप ने उसी वक़्त कमाण्डर वेस्ट मेकाट को जगाया और उसे ये वाकिया सूनाया और कमाण्डर ने तीन सीपाही साथ लिये और रहीम के तआकुब मे गया। रहीम पैदल कहां जा सकता था। पकड़ा गया और अब ये हमारे हाथ में है।"

"रहीम को मालूम नहीं कि ऐल्स ने धोका दिया है।"

"नहीं"–दूसरे ने कहा–" मैं अब ऐल्स को इसतेमाल करना चाहता हूं रहीम को हम निहायत अच्छा खाना खिलवाऐंगे।"

❖

वहां के मुलाज़िमों और दूसरे लोगों की ज़बान पर यही मौजू था कि एक मुसलमान जासूस पकड़ा गया है। रज़ा भी फरांसेस के रूप में इन मुलाज़िमों मे शमिल था। वह भी मुसलमान जासूस को बूरा भला कह रहा था। और दूसरों की तरह ख़्वाहिश ज़ाहिर कर रहा था। जासूस को सरे आम फांसी दी जाऐ या उसे घोड़े के पीछे बांध कर घोड़ भगा दिया जाए। रज़ा को मालूम हो चुका था कि रहीम अभी तक इसी कमरे में है। सब हैरान थे कि उसे कैद ख़ाने में क्यो नहीं ले गए। और जब बावरची ख़ाने के एक मुलाज़िम ने बताया कि कैदी के लिऐ अफ़सरों सा खाना गया है और वह ख़ुद खाना दे आया है तो सब हैरत से एक दूसरे को देखने लगे। रज़ा बातों बातें में बावर्ची ख़ाने के उस आदमी को अलग ले गया और पूछा –" किया तुम मज़ाक कर रहे हो कि मुसलमान जासूस को इतना अच्छा खाना दिया गया है जो

अफ़सर खाते हैं फिर वह जासूस नहीं होगा।"

"बड़ा ख़तर नाक जासूस है"– मुलाज़िम ने कहा–" जो अफ़सर तफ़तीश कर रहें हैं मै ने उन की बातें सुनी हैं। वह अभी उसे खिला पिला कर उस से बातें पूछेंगें फिर वह किसी लड़की की बातें कर रहे थे। जो इस क़ैदी को फांस कर उस से राज़ उगलवाएगी।"

रहीम खाना खा चुका तो उस के कमरे में ऐल्स दाख़िल हुई दोनो अफ़सर चले गए थे। उन्हों ने ऐल्स को बुलाकर अच्छी तरह समझा दिया था कि उसे किया करना है और क़ैदी से किया पूछना है। ऐल्स को देख कर रहीम बहुत हैरान हुआ। उसे ख़्वाब का घोका हुआ होगा।

"तुम ?" – उस नें ऐल्स से पूछा –" किया तुम्हे भी गिरफ्तार करके यहां लाया गया है।"

" हां!" – ऐल्स ने कहा–" मै कल रात से क़ैद में हूं।"

" तुम वहां से ग़ाइब किस तरह हुई थी।"–रहीम ने कहा–" मैं मान नहीं सकता कि तुम ख़ुद भाग कर आई थी?"

" मैं कियों भाग सकती थी"–ऐल्स ने कहा–" मेरा तो जीना मरना तो तुम्हारे साथ है तुम सोगए थे मगर मुझे नीन्द नही आ रही थीं मै उठ कर टहलने लगी और कुछ दूर निकल गई किसी ने पीछे से मेरा मुहं हाथ से बन्द कर दिया और उठा कर घोड़े पर डाल लिया। वह दो आदमी थे। एक ने हमारा घोड़ा भी ले लिया। मेरा मुहं भी बन्द करदिया। तुम्हें पूकार नहीं सकती थीं। वह मुझे यंहा ले आए।"

" उन्हें किस ने बताया कि मैं ऐली मोर नहीं रहीम हूं।" – रहीम ने पूछा –" और जिन्होंने तुम्हें वहां जा पकड़ा था वह मुझे भी कियों न पकड़ लाए। उन्हों ने मुझे क़त्ल कियों न कर दिया।"

" मैं इन सवालों का जवाब नहीं दे सकती।"–ऐल्स ने कहा–" मैं ख़ुद मुजरिम हूं।"

" तुम झूट बोल रही हो ऐल्स।"– रहीम ने कहा–" तुम्हें धमका कर मेरे मुतअल्लिक़ पूछा गया है और तुम ने डर के मारे बता दिया है कि मैं कौन हूं मुझे तुम से कोई शिकवा नहीं। मै कभी बरदाशत नही कर सकता। कि तुम्हें कोई तकलीफ़ हो।"

" अगर तुम्हें मेरी तकलीफ़ का ख़याल है तो ये लोग तुम से जो पूछते है वह उन्हें बता दो।'–ऐल्स ने कहा–" उन्हों ने मेरे साथा वादा किया है कि वह तुम्हें रिहा कर देंगे।"

" बात पूरी करो ऐल्स "–रहीम ने तनज़िया लहजे में कहा–" ये भी कहो कि मै सब कुछ बतादूं तो मुझे रिहा कर देंगे और तुम मेरे साथ शादी कर लोगी।"

"शादी भी हो सकती है"–ऐल्स ने कहा।–" बशतरे तुम ईसाई हो जाओ।"

"किया तुम ये उम्मीद लेकर आई हो कि मैं रिहाई की ख़ातिर अपना मज़हब छोड़ दूंगा।"–रहीम ने कहा।–" ऐल्स ! मैं फर्ज़ का मामुली सा सिपाही नहीं। जासूस हूं। अक्ल रखता हूं। मैं इसी गूनाह की सजा भूगत रहा हूं कि अक्ल पर तुम्हारी मुहब्बत को सवार कर लिया था। तुम झूट बोल रही हो जिस सलीब कि तुम कसमें खारही हो वह गले में डाल कर झूट बोल रही हो किया ये ग़लत है कि तुम वहां से ख़ुद भागी हो। कियोंकि तुम्हारे दिल में मुसलमानों के ख़िलाफ़ नफ़रत भरी हुई है। तुम्हें मुझ पर एअतमाद न रहा। और मुझे सोता

छोड़कर भाग आई। यहां आकर तुम ने अपने बूढ़े मंगेतर को मेरे पीछे भेज दिया। मेरे दिल में भी तुम्हारी कौम के ख़िलाफ़ नफ़रत है मैं तुम्हारी कौम को अपना दुशमन समझता हूं। मैं ने अपनी जान तुम्हारी कौम को तबाह करने के लिये दाव पर लगाई है। लेकिन तुम्हारी मुहब्बत, मुहब्बत ही रहेगी। उस पर नफ़रत ग़ालिब नहीं आ सकेगी। मै ने तुम्हारी ख़ातिर अपना फ़र्ज़ फ़रामूश किया । अपना मुसतकबिल तबाह किया मगर तुम ने नागन की तरह डंक मारा।"

वह ऐसे अन्दाज़ से बोल रहा था कि ऐलस की ज़बान बन्द हो गई । उस के दिल में रहीम की मुहब्बत मौजूद थी। रहीम ने जब उस की आंखो में ओखें डाल कर धीमें और पुर असरार अन्दाज़ में बातें कीं तो ये जवान लड़की अपने सीने से उठे हुऐ जज़बात के बगोले की लपेट में आगई । पहले तो उस के आसूं फूटे। फिर उस ने बेताबी से रहीम के दोनो हाथ थाम लिये और रोते हुऐ कहा–" मुझे तुम से नफ़रत नहीं । तुम अपना फर्ज़ भूल गए थे मै न भूल सकी। मैं मुजरिम हूं । मै ने तुम्हें पकड़वाया है । इस जुर्म की सज़ा मुझे सख़्त मिलेगी। मुझे चन्द दिनों में उस बूढ़े कमाण्डर की बीवी बना दिया जाएगा। जो वहशी है और शराब पीकर दरिन्दा बन जाता है। मुझे कुछ न बताओ ऐली मोर "

" मैं ऐली मोर नहीं हूं "–रहीम ने कहा–" मैं रहीम हूं।"

❖

तफ़तीश करने वाले दोनो अफ़सर कहीं और बैठे शराब पी रहे थे। वह मुतमईन थे कि ये ख़ूबसूरत लड़की रहीम को मोम कर लेगी और सुबह से पहले पहले हमारा काम पूरा कर देगी। वहां सिर्फ़ एक पहरेदार था। जो बरआमदे में बैठ गया था। कमरे के पिछवाड़े अन्धेरा था और उस अंधेरे में एक साया इतना आहिसता आहिसता आगे को सरक रहा था जैसे हवा का एक झोंका रुक रुक कर आगे बढ़ रहा हो। उधर इमरान गिरजे से मुलहिक़ अपने कमरे में जाग रहा था । ज़रा सी आहट सुनाई देती थी तो वह उठ कर दरवाज़े मैं आ जाता था। उसे हर आहट रज़ा की आहट लगती थी। उसने कमाल होशियारी से तीन घोड़े मुनतख़ब कर लिये थे। जो आठ घोड़ों के साथ बंधे थे उनकी ज़ीने भी चोरी छिपे अलग कर ली थीं। उसे उम्मीद थी कि रज़ा और रहीम आजाऐगें। मगर जूं जूं रात गुज़रती जा रही थी। उम्मीद भी तारीक होती जा रही थी। ये हक़ीक़त निख़रती आ रही थी कि उसने रज़ा को ये इजाज़त देकर कि रहीम को आज़ाद कराये सख़्त ग़लती की थी। ये ना मुमकिन था । वह अब सोंच रहा था कि एक घोड़ा खोले और निकल जाऐ मगर उसे रज़ा का ख़ियाल आजाता था। रज़ा ने उसे कहा था कि वह रात को आऐगा ज़रूर ख़्वाह वह अकेला आऐ।

उस वक़्त मौत के मुहं में जा चुका था। वह एक सियाह साया बन कर उस कमरे के एक दरीचे के पास पहुचं गया था। जिस में रहीम बन्द था। उस ने कान लगा कर अन्दर की बातें सुनीं उसे उसके ये अल्फ़ाज़ सुनाई दिये। " मैं तुम्हें रिहा नहीं करा सकती ।ये लोग जो पूछते हैं बता दो फिर मैं अपने बाप से कह कर तुम्हारे लिये कुछ कर सकती हूं। मुझे इसी मक़सद के लिये तुम्हारे पास लाया गया है। कि मेरी मुहब्बत तुम से राज़ उगल वा लेगी।"

दरीचे के कवाड़ पर निहायत आहिसता से किसी ने तीन बार दसतक दी। रहीम इशारे

को समझता था । वह हैरान हुआ कि उस का कौन सा साथी हो सकता है ऐल्स कुछ न समझ सकी। रहीम टहलते टहलते दरीचे तक गया और कवाड़ खोल दिया। रजा बाहर खड़ा था। कूद कर अन्दर आ गया। उस के हाथ में खंजर था। उस ने एक लमहा ज़ाऐ किये बग़ैर ऐल्स के मुहं पर हाथ रखा और खंजर उस के दिल में उतार दिया । उसे क़त्ल करना जरूरी था वरना शोर मचा कर उन्हें पकड़वा सकती थी। रजा रहीम दीरचे से कूद कर बाहर गए और अंधेरे में भाग उठे। रजा उस जगह से वाकिफ था उस ने रासता तो अच्छा इख़तियार किया था। लेकिन बरआमदे मे जो पहरा दार था उस ने किसी तरफ़ से दो साऐ भागते देख लिये। उस के शोर पर दूसरे संतरी होशियार होगए। जाने कहां से तीर आया जो रहीम के पहलू में उतर गया। वह जवान और तवाना आदमी था गिरा नहीं रजा के साथ भागता चला गया। मगर ज़ियादा दूर तक नही जा सका। उस के कदम डगमगाने लगे। तो रजा ने उसे अपनी पीठ पर डाल लिया । तीर पहलू से निकालना मुमकिन नही था।

रहीम रजा से कहने लगा वह उसे वहीं फैंक कर भाग जाए। वह अब जिंदा नहीं रह सकता था लेकिन रज़ा अपने दोस्त को उस वक़्त तक अपनेआप से जुदा नही करना चाहता था। जब तक वह ज़िन्दा था। उस ने रहीम की एक न सुनी और तारीक रासतों में छिपता छिपाता चलता गया। उसे ख़ियाल आगया कि वह उस जगह से गुज़र रहा है जहां तमाम मकान मुसलमानों के हैं। उसे दूर दूर भाग दौड़ और शोर शराबा सुनाई दे रहा था। उन का तआकुब करने वाले कही और थे रजा को मालूम था कि मुसलमान कीड़ो मकोड़ो की सी जिन्दगी गुज़ार रहे है। और सलीबी की निगाह में हर मुसलमान जासूस और मुशतबहा है ज़रा से शक पर किसी भी मुसलमान को कैद ख़ाने में डाल दिया जाता था और उस के घर की तलाशी तौहीन आमीज़ तरीके से ली जाती थी। रजा किसी मुसलमान को मुसीबत में नहीं डालना चाहता था मगर रहीम के बोझ तले शल हो चुका था। और उसे ये उम्मीद भी थी कि शायद रहीम की ज़िन्दगी बचाने का कोई बन्दोबस्त हो जाए।

उस ने एक दरवाज़े पर दसतक दी । कुछ देर बाद दरवाजा खुला । रजा तेज़ी से अन्दर चला गया। जिस ने दरवाजा खोला घबरा गया। रजा ने मुख़तसर अलफ़ाज़ में अपना तआरुफ़ कराया । वहां तो सिर्फ़ ये कह देना ही काफी था कि वह मुसलमान हैं। रजा को पनाह मिल गई मगर रहीम शहीद हो चूका था । रजा के कपड़े ख़ून से लिथड़ गए थे। उस ने घर वालों को सारा वाकया सुनाया और इमरान के मुतअल्लिक भी बतया । घर में तीन मर्द थे। वह जोश में आगए। उन्हों ने रजा के कपड़े तबदील कर दिये। रहीम की लाश के मुतअल्लिक़ फ़ैसला हुआ कि इस घर के किसी कमरे में दफ़न कर दिया जाएगा। रजा इमरान को बूलाने के लिये चला गया।

❖

रात के इस वक़्त जब दूनयाए इसलाम गहरी नीन्द में सोई हुई थी। कौम के ग़द्दार दुशमन की भेजी हुई औरतों और शराब में बदमस्त पड़े थे । उन से दूर बहुत दूर ऐ मुसलमान इसलाम की नामूस पर अपनी जान पर खेल गया था और दो जान की बाज़ी लगा करउस

राज़ के साथ अकरह से निकल कर काहरा पहुंचने की कोशिश कर रहे थे। जिस पर मिस्र की इज़्ज़त और इसलाम की आबरू का दारोमदार था उस राज़ को वह ख़ुदा की अमानत समझते थे। वहां उन्हें देखने वाला कोई न था कि वह अपना फ़र्ज़ अदा करते हैं या ऐश कर रहें हैं लेकिन उन्हें ये एहसास था कि उन्हें ख़ुदा देख रहा है और वह ख़ुदा के हुक्म की तकमील कर रहे थे।

इमरान का सर इस तज़बज़ुब और इज़तराब में दुखने लगा था कि रहीम आजाएगा या नहीं। रज़ा आजाएगा या नहीं क़ाहरा तक ये ख़बर पहुंच सकेगी या नहीं। कि मिस्र पर हमले के लिये बहीराए रूम में सलीबीयों का बहुत बड़ा बेड़ा आ रहा है। इमरान इस लिये भी क़ाहरा या कम अज़ कम करक जलदी पहूंचना चाहता था। कि नूरुद्दीन ज़ंगी या सुलतान अय्यूबी या दोनों किसी और तरफ़ हमले या पेश क़दमी की इसकीम न बना लें। ऐसी सूरत में उन्हें रोकना था। अगर उन की फ़ौज किसी और तरफ़ निकल गई तो मिस्र का ख़ुदा ही हाफ़िज़ था। इमरान को इन सोंचो ने इस क़दर परीशान किया कि उस ने दरवाज़ा अन्दर से बन्द करके नफ़िल पढ़ने शूरूअ कर दिये। उसे शहर की ख़ामूशी में कोई सरगरमी सुनाई दे रही थी। कुछ भाग दौड़ सी थीं ये उस की परीशानी में इज़ाफ़ा कर रही थी। उस ने दो चार नफ़िल पढ़ कर हाथ ख़ुदा के हुज़ूर में फैला दिये और गिड़गिड़ाया। –" या ख़ुदा ! मुझे अपने फ़र्ज़ की तकमील तक जिन्दगी अता कर। मै ये अमानत ठिकाने पर पहुचा दूं। तो मुझे मेरे ख़ान्दान समेत ख़त्म कर देना।"

उस के दरवाज़े पर वेसी ही दसतक हुई। जैसी रहीम के दरीचे पर हुई थी। इमरान ने दरवाज़ा खोला। रज़ा खड़ा था। उसे अन्दर बुलाकर इमरान ने दरवाज़ा बन्द करदिया। रज़ा हांप रहा था उस ने इमरान को बताया कि उस पर किया गुज़री है। और रहीम शहीद हो चूका है। इमरान ने जब ये सुना कि रहीम की लाश एक मुसलमान घराने में है जो उसे घर में दफ़न कर देंगें तो इमरान परीशान हो गया। वह अकरह के किसी मुसलमान को मुसीबत में नहीं डालना चाहता था। रज़ा ने उसे बताया कि उस घर में तीन मर्द हैं। और बाक़ी औरतें हैं उन्हों ने फ़ौरन एक कमरे के कोने में खुदाई शुरू कर दी थी। इमरान उस घर जाना चाहता था ताकि देख ले कि उन के पकड़े जाने का कोई ख़तरा तो नहीं। रज़ा ने उसे यक़ीन दिलाया कि वह होशियार लोग मालूम होते हैं संभाल लेंगे।

अकरह से निकलना दुशवार हो गया था शहर की नाका बन्दीकर दी गई थी एक लड़की का क़त्ल और एक जासूस का फ़रार मामूली सी वारदात नहीं थी। निकलना रात को हीथा। उन दोनों ने ये तै किया कि इकट्ठे निकलेंगे। और दोनों में से कोई पकड़ा गया। या दोनों पकड़े गये। तो और जो कुछ कहें ये नहीं बताऐंगे कि रहीम की लाश कहां है या वह मारा गया है। अगला मसला घोड़ो का था। इमरान रज़ा को उस जगह ले गया जहां आठ घोड़े बंधे थे। मगर दूर से देखा कि मुहफिज़ों में से एक वहां टहल रहा था। इमरान रज़ा को एक जगह छुपा कर आगे गया और उस संतरी के पास चला गया। उस से पूछा कि आज उसे पहरा देने की ज़रूरत कियों पेश आगई है। संतरी इमरान को जान गैथर के नाम से अच्छी तरह जानता

था। और बड़े पादरी के ख़ुसूसी ख़ादिम की हैसियत से उस का एहतराम भी करता था। उस ने इमरान को बताया कि आज एक मुसलमान जासूस को पकड़ा गया था वह किसी लड़की को क़त्ल करके फ़रार हो गया है इस लिये हुक्म आया है कि होशियार रहा जाए।

इस संतरी की मौजूदगी में घोड़ा खोलना मुमकिन नहीं था इमरान ने उसे बातों मे लगा लिया और पीछे होकर उस की गरदन बाज़ू के घेरे में ले ली। संतरी का दम घुटने लगा। इमरान ने उस के पहले खंजर नुमा तलवार खींच ली और उस के पेट में घोंप दी। मरने तक उस की गरदन शिकन्जें में दबाए रखी। उसे मार कर इमरान ने रज़ा को बुलाया। दो घोड़ों पर ज़ीने डालीं और सवार हो गए। गिरजे के बाक़ी मुहाफ़िज़ कमरे में कहीं सोए हुए थे। इमरान और रज़ा चल पड़े। शहर से निकलने के कई रासते थे वह एक तरफ़ चल पड़े और शहर से निकल गए। अचानक वह घेरे में आगए और उन्हें ललकारा गया।

" हम शहरी हैं दोसतो !'—इमरान ने कहा—" हम भी तुम्हारी तरह ड्यूटी दे रहे हैं।"

तीन चार शोले जल उठीं जिन की रौशनी में उन्हों ने देखा कि वहां घोड़ा सवार का ऐक दसता था जो इधर उधर फैला हुआ था। तब उन्हें इहसास हुआ कि शहर कीनाका बन्दी हो चुकी है। इमरान नेअपने कपड़े नहीं देखे थे उसके कपड़ों पर संतरी का ख़ून था। मशअल की रौशनी में ये ख़ून सलीबी सवारों को नज़र आगया। उस से पूछा गया। कि वह ख़ून किस का है तो इमरान ने लगाम को झटका देकर घोड़े को ऐड़ लगा दी। रज़ा ने भी ऐसा ही किया। मगर उस ने ज़रा देर करदी। इमरान निकल गया। रज़ा घेरे में आ गया इमरान के पीछे भी तीन चार सवार गये। उसे रज़ा की बुलन्द पूकार सुनाई देने लगी। —" इमरान रुकना नहीं। निकल जाओ ख़ुदा हाफ़िज़"— इमरान बहुत दूर तक ये पूकार सुनता रहा। पता चलता था जैसे वह घेरे से निकलने की कोशिश कर रहा है। इमरान का घोड़ा बड़ा अच्छा था। उस के दाऐं बाऐं से तीर गुज़रने लगे लेकिन वह तआकुब करने वाले को पीछे ही पीछे छोड़ता चला गया। वह रासते से वाक़िफ़ था। उस ने करक का रुख़ कर लिया। घोड़ा बदलने की ज़रूरत थी।

जब सूबह की रौशनी सुफ़ैद हो रही थी। उस का घोड़ा दौड़ने के क़ाबिल नहीं रहा था। उस ने पानी की तलाश करने की कोशिश ही न की। आगे रेतीली चट्टानों का इलाक़ा आ गया। वह उस मे दाख़िल हुआ ही था कि उस के सामने चट्टान में दो तीर लगे जिस का मतलब था कि रुक जाओ। वह रुक गया। और ये देख कर उस के जान में जान आई कि उसे रोकने वाले उस के अपने फ़ौज के आदमी थे। उसे अपने कमाण्डर के पास ले गए कमाण्डर ने उस की बात सुन कर उसे ताज़ह दम घोड़ा दिया और दो सिपाही उस के साथ करके उसे करक के रासते पर डाल दिया। उस ने ख़ुद ही कहा था कि वह नूरुद्दीन ज़ंगी से मिल कर क़ाहरा जाएगा। अकरह से जो ख़बर लाया था वह ज़ंगी तक भी पहूंचनी चाहिये थी।

❖

इमरान जब करक के क़िले में नूरुद्दीन ज़ंगी के सामने बैठा अपनी कहानी सुना रहा था। ज़ंगी उसे ऐसी नज़रों से देख रहा था जैसे उस ख़ूबरू जवान को दिल में बिठा लेना चाहता

हो। उस ने उठ कर बेताबी से इमरान को सीने से लगा लिया और उस के दोनों गाल चूम कर पीछे हट गया । उस ने अपनी तलवार नियाम से निकाली और फिर नियाम में डाल कर नियाम को चूमा । उसे दोनों हाथों पर रख कर इमरान से कहा ।–" इस वक़्त जब सलीब एक ख़ौफ़नाक गिध की तरह चांद सितारे पर मंडला रही है एक मुसलमान अपने मुसलमान भाई को तलवार से बढ़ कर और कोई तोहफ़ा नहीं दे सकता । तुम बग़दाद में कहो दमिश्मक में कहो कहीं भी कहो मैं तुम्हें एक महल दे सकता हूं तुम ने जो कारनामा कर दिखाया है उस के सिले में तुम दौलत के अंबार के हक़दार हो लेकिन मेरे अज़ीज़ दोस्त मैं तुम्हारे लिये महल खड़ा नहीं करूंगा।

तुम्हें दौलत की शकल में सिला नही दुंगा कियोंकि यही वह चीज़ें है जिन्हों ने मुसलमानों को अन्धा और अपाहिज कर दिया है ये क़ुबूल करो। मेरी तलवार ! और याद रखो इस तलवार ने बड़े बड़े जाबिर सलीबीयों का ख़ून पिया है इस तलवार ने बहुत से किलों पर इसलाम का झंडा लहराया है और ये तलवार इसलाम की पासबान है।"

इमरान नूरुद्दीन ज़ंगी के आगे दो ज़ानो बैठ गया और उस के हाथों से तलवार ले कर चूमी । आंखों से लगाई और कमर से बांध ली । वह कुछ कह न सका। उस पर रिक़्कत तारी हो गई थी। और उस की आंखों में आंसू आगए थे।

" और अपनी क़दर व क़ीमत जान लो मेरे दोस्त! "– ज़ंगी ने कहा–" एक जासूस दूशमन के लशकर को शिकस्त दे सकता है और एक गद्दार अपनी पूरी क़ौम को शिकस्त की ज़िल्लत में डाल सकता है । तुम ने दुशमन को शिकस्त दे दी है। तुम जो ख़बर लाए हो ये दुशमन की शिकसत की ख़बर है। सलीबी इनशाअल्लाह मिस्र और फ़लसतीन के साहिल से आगे नही आ सकेंगें और उन का बहरी बेड़ा वापस नही जा सकेगा। ये तुम्हारी फ़तह होगी और इस का सिला तुम्हें ख़ुदा देगा।"

" मुझे क़ाहरा के लिये जलदी रवाना हो जाना चाहिये।"– इमरान ने कहा–" दिन थोड़े रह गऐ हैं। अमीरे मिस्र को बहुत दिन पहले इत्तेला मिल जानी चाहिये।"

" तुम अभी रवाना हो जाओ"– नूरुदीन ज़ंगी ने कहा–" मैं तुम्हें बड़ी अच्छी नस्ल का घोड़ा दे रहा हूं।"

उस ने इमरान को क़ाहरा तक का वह रासता बतादिया जिस पर कई चौकियां थीं। उन पर क़ासिदों के घोड़े बदलने का इनतेज़ाम था " और सलाहुद्दीन अय्यूबी से पहली बात ये कहना कि रहीम और रज़ा के ख़ानदानों को अपने खानदान में जज़्ब करलो। उन के ख़ानदानों की किफ़ालत का इंतेज़ाम बैतुल माल से करो"– उस ने इमरान से पूछा –" तुम सिर्फ़ जासूसी कर सकते हो या जंग भी कर सकते हो ?"

" कुछ सूझ बूझ रख सकता हूं।"– इमरान ने कहा–" आप हुक्म दें।

" पैग़ाम लिखने का वक़्त नहीं"– ज़ंगी ने कहा।–" सलाहुद्दीन अय्यूबी से कह देना कि मुझे करक तुम्होर हवाले करके बग़दाद जलदी वापस जाना था। इत्तेलाऐं मिल रहीं हैं कि उन इलाको में सलीबीयों की तख़रीब कारी बढ़ती जा रही है और हमारे छोटे छोटे हुकमरान

उन के हाथों में खेल रहे है। लेकिन इस ताज़ह ख़बर ने मुझे रुकने पर मजबूर कर दिया है। चार पांच साल पहले तुम ने बहीराए रूम में सलीबीयों का बेड़ा ग़र्क़ किया था। वह तुम्हारे फन्दे में आगए थे अब वह मोह्तात होकर आऐंगे। इसी लिये उन्हों ने सिकन्दरिया के शुमाली साहिल को मुनतख़ब किया है। अगर तुम उस समन्दर मे बराहे रास्त टक्कर लेने का फ़ैसला करो तो ये तुम्हारी गलती होगी। तुम्हारे पास सलीबीयों जितनी बहरी ताक़त नहीं है उन के जहाज़ बड़े हैं। और हर ज़हाज़ में बादबानों के अलवह बेशुमार चप्पू है। चप्पू चलाने के लिये उन के पास गुलामों की बे अन्दाज़ा तादाद है तुम इतनी तादाद से महरूम हो तुम्हारे जहाज़ों के चप्पू चलाने वाले मल्लाह है और सिपाही भी। समुन्दरी जंग मेंवह दोनो काम नही कर सकेंगे। सलीबीयों को साहिल पर आने दो। सिकन्दरिया को बहरी गोलो का ख़तरा होगा। आतिशीं गोले शहर को आग लगा देंगे। उस का कोई इन्तेज़ाम करलेना.......

"अगर दूशमन ने इसी अन्दाज़ से हमला किया जैसा कि इमरान ख़बर लाया है तो मै दुशमन के पहलू पर हूंगा। ये उस का बायां पहलू होगा। तुम दायें पहलू को संभलोगे और तुम्हारे ज़िम्मे एक काम ये होगा कि सलीबीयों का कोई जहाज़ वापस न जाऐ। आग लगा देना। अगर तुम्हारे पास समुन्दरी छापा मार हों तो तुम जानते हो कि उन से किया काम लिया जा सकता है। ये कहने की ज़रूरत नहीं कि सूडान की तरफ़ से चौकन्ना रहना है। वह सरहद ख़ाली न रहे। मुझे एहसास है कि तुम्हारे पास फ़ौज कम है। मैं ये कमी पूरी करने की कोशिश करूंगा। सब से बड़ी ज़रूरत राज़दारी की है राज़दारी की ख़ातिर मैं पैग़ाम तहरीरी नहीं भेज रहा। फतह की सूरत में, मैं करक फ़ौज के हवाले करके बग़दाद चला जाऊंगा।"

ये पैग़ाम ज़ेहन नशीन करके इमरान क़ाहरा रवाना हो गया।

सलीबीयों के सन 1174 के इबतेदाई दिन थे जब अली बिन सुफ़यान ने सलाहुद्दीन को इत्तेला दी कि अकरह में एक जासूस शहीद हो गया है और दूसरा पकड़ लिया गया है और उन का कमाण्डर इमरान वापस आगया है तो ये जान लेने के बावजूद के इमरान बड़ा ही क़ीमती राज़ लाया है सुलतान अय्यूबी बुझ सा गया। उस ने अली बिन सुफ़यान के साथ चन्द एक बातें करके इमरान को अन्दर बुलाया और उठ कर उसे गले लगा लिया। फिर कहा।–" पहले मुझे ये बताओ कि तुम्हारा एक साथी शहीद किस तरह हुआ और दूसरा पकड़ा किस तरह गया है?"

इमरान ने पूरी तफसील से सारी कहानी बियान करदी और जब उस ने वह राज़ बयान किया जो वह अकरह से लाया था तो सुलतान अय्यूबी की आखें चमक उठीं। इमारान ने ये भी बताया कि वह नूरुद्दीन ज़ंगी को इत्तेला दे आया है उस ने सुलतान अय्यूबी को ज़ंगी का पैग़ाम सुनाया। उस से सुलतान अय्यूबी का बहुत सा वक़्त बच गया था। उस ने पहला काम ये किया कि रहीम और रज़ा के खान्दानों के लिये वज़ीफे मुकर्रर किया और उन खानदानों के मुतअल्लिक मालूमात पेश करने को कहा ताकि उस के मुताबिक़ उन की मज़ीद मदद की जाए। उस के बाद उस ने इमरान से बहुत सी बातें पूछीं। इमरान ने उसे बताया कि सलीबीयों का बहरी बेड़ा चार पांच साल पहले की निसबत ज़यादा होगा। हमला एक माह के अन्दर

अन्दर होगा यूरप से ताज़ह दम फौज लाई जाएगी जिसे सिकन्दरया के शिमाल में उतारा जाएगा। दूसरी फौज बैतुल मकदिस के इलाके से आऐगी। जो मिस्र की तरफ पेशकदमी करेगी। सिकन्दरया के शिमाल में उतरने वाली फ़ौज सिकन्दरया पर कबज़ा करके उसे अड्डा और रसदगाह बनाएगी। और शिमाल की तरफ से मिस्र पर हमला आवर होगी। इमसन के कहने के मुताबिक सलीबीयों को ये तवक्को है वह सुलतान अय्यूबी को बेख़बरी मे जा लेंगे और नूरुद्दीन ज़ींगी उसे मदद और कुमक नहीं दे सकेगा। कियोंकी रसते में सलीबीयों की बैतुल मकदिस वाली फ़ौज हाएल होगी।

ये ऐसा तूफ़ान था जो बे ख़बरी में आजाता तो मिस्रपर सलीबीयों का कबज़ा यक़ीनी था। सुलतान अय्यूबी ने उसी वक़्त अपने तमाम सीनियर कमाण्डरों को बुला लिया। अली बिन सुफ़यान को उस ने ये हिदायत दी कि वह दुशमन के जासूसों के ख़िलाफ़ अपनी सरगरमियां और तेज़ कर दे। ताकि अपनी फौजों की नकल व हरकत के मुतअल्लिक कोई ख़बर बाहर न जा सके। सिकन्दरया के मुतअल्लिक उस ने खुसूसी हिदायात दीं।

❖

बरतानीया अभी इस जंग में शरीक नही होना चाहता था। अंग्रेज़ों को ग़ालिबन ये तवक्को थी कि किसी वक़्त वह अकेले ही मुसलमानों को शिकस्त दे कर उन के इलाक़ों पर काबिज़ हो जाऐंगे। लेकिन पोप(सब से बड़े पादरी) के कहने पर अंग्रेज़ों ने सलीबीयों को अपने कुछ जंगी जहाज़ दिये थे। इसपीन का तमाम बेड़ा इस हमले में शिरकत के लिये तैयार था। फरांस, जरमनी और बेलजीयम के जहाज़ भी आगए थे और उस मुत्तहिदा बेड़े में यूनान और सिसली की जंगी कशतियां भी शामिल थीं। रसद और असलहा के लिये माही गिरों से बादबानी कशतियां ले ली गई थीं। उन में बाज़ ख़ासी बड़ी थीं। उस बेड़े में उन तमाम मुमालिक से ताज़ा दम फ़ौज आरही थी। जिस से सलीब पर हलफ़ लिया गया था कि फतह हासिल किये बग़ैर वापस नहीं आऐगी।

" अगर सलाहुद्दीन अय्यूबी ने हमारा मुकाबला अपने बहरी बेड़े से किया तो उस की उसे मिस्र जितनी कीमत देनी पड़ेगी।" फरांसेसी बहरया के कमाण्डर ने कहा।–" हम जानते हैं उस के बहरी बेड़ की कितनी कूछ ताकत है "– वह बहीराए रूम के दूसरे किनारे पर एक कांफ्रेंस में बैठा कह रहा था। –" सलाहुद्दीन अय्यूबी और नूरुद्दीन ज़ंगी खुशकी पर लड़ने वाले लोग हैं हमें ये तवक्को रखनी चाहिये कि इस हमले की ख़बर मुसलमानों को कबल अज़ वक़्त नही होगी और सलाहुद्दीन अय्यूबी को उस वक़्त ख़बर होगी जब हम काहरा को मुहासरे में ले चुके होंगे। नूरुद्दीन ज़ंगी उस की मदद के लिये नहीं पहूंच सकेगा। और हमारा ये हमला फ़ैसला कुन होगा।"

" मैं एक बार फिर कहता हूं कि सूडानियों का इसतेमाल करना ज़रूरी है"– रिनालट एक मशहूर सलीबी हुकमरान और जंगजू था। उसे बैतुल मक़दिस की तरफ़ से ख़ुशकी पर आना और हमला करना था। वह शुरूअ से ज़ोर दे रहा था कि वह मिस्र पर शुमाल और मशरिक़ से हमला करें तो जुनूब से सूडानी भी मिस्र पर हमला करदें।

" आप पिछले तजुरबों को भूल जाते हैं"— इसलाम के सब से बड़े दुश्मन फलप आगसिटस ने कहा—" 1169 ई0 में हम ने सूडान को बे दरेग़ मदद दी थी। और इस तवक़्क़ो पर हम ने समन्दर से हमला किया था कि सूडानी जुनूब से हमला करेंगे और सलाहुद्दीन अय्युबी की फ़ौज में जो सूडानी हैं वह बग़ावत कर देगें। मगर उन्हों ने कुछ भी न किया। दो साल बाद फिर उन्हें मदद दी गई । उन्हों ने ये भी ज़ाए कर दी। अब के फिर उन्हों ने हमें मायूस किया। हम कियों उन्हें अपने मनसूबे में शरीक करें। अगर मिस्र हम ने अपनी ताक़त से ले लिया तो सूडानी हम से हिस्सा मागेंगे। आप ये भूल रहें हैं कि सूडानीयों में मुसलमानों की तादाद कम नहीं । मुसलमान पर भरोसा करना ग़लती है अगर आप सच्चे दिल से इसलाम का नाम व निशान मिटाना चाहते हैं तो किसी मुसलमान को अपना दोस्त न समझें। उन्हें ख़रीद कर अपना दोस्त ज़रूर बनाऐं लेकिन दिल में उनकी दुशमनी क़ाएम रखें।"

" आप ठीक कहते हैं"— एक सलीबी बादशाह ने कहा—" आप लोगों ने फ़ातमियों को दोसत बनाया। वह सलाहुद्दीन अय्युबी के दुशमन होते हुए भी उसे अभी तक क़त्ल नहीं कर सके। हम ने उन्हें बड़े बड़े क़ाबिल जासूस और तख़रीब कार दिये जो उन्हों ने अपनी गलतीयों से पकड़वा कर मरवा दिये। अब हम किसी पर भरोसा नहीं करेंगे। हमें अपनी जंगी ताक़त पर भरोसा करना चाहिये और अब हम कामयाब होंगे।"

उन की जंगी ताक़त इतनी ज़ियादा थी कि वह उस से ज़ियादा तकब्बुर करने में हक़ बजानिब थे बहरी बेड़े का तो कोई हिसाब ही न था। बैतुल मक़दिस की तरफ़ से जो फ़ौज आ रही थी वह समुन्दर की तरफ़ से आने वाली नफ़री से दूगुनी थी। यूरोपी मोअर्रिख़ों में तादाद के मुतअल्लिक़ईद इख़तेलाफ़ पाया जाता है। बाज़ ने तो इस हमले को सलीबी जंगों में ज़िक्र ही नहीं किया। जैसे उस की कोई अहमियत ही नहीं थी। इस हमले मे कम व बेश सलीबीयों की छे बादशाहियां शामिल थीं। कुछ छोटे छोटे हुकमरान भी थे जो अपनी फ़ौजें ले आए थे उन मे ख़ामी ये थी कि उनकी कमान मुत्तहिद नही थीं। ताहम ये लशकर नूरुद्दीन ज़ंगी और सलाहुद्दीन अय्युबी को आसानी से शिकस्त दे सकता था। सलाहुद्दीन अय्युबी की कमज़ोरी ये थी कि उस की फ़ौज कम थी। उस के इलावह मिस्र में ग़द्दारों ने बद अमनी फैला रखी थी। और सब से बड़ा ख़तरा ये कि सूडानी भी हमला कर सकते थे नूरुद्दीन ज़ंगी को भी कुछ ऐसी ही दुशवारियों का सामना था । दुनयाऐ इसलाम छोटी छोटी रियासतों में बटी हुई थी। और ये हुकमरान ऐश व इशरत के आदी हो चुके थे। सलीबीयों ने अपने ज़ेरे असर ले रखा था। वह आपस मे भी फटे हुए थे। और उन्हें इसलाम की नामूस का ज़ररह भर इहसास न था।

सुलतान अय्यूबी ने अपने सीनयर कमाण्डरों को बुलाकर अपनी फ़ौज को तीन हिस्सों में तक़सीम कर दिया। एक हिस्से को उस ने सूडान की सरहद पर चले जाने को कहा। उस के कमाण्डर को ये हिदायत दी कि वह सरहद से ख़ासा पीछे ख़ीमा ज़न रहे लेकिन फ़ौज को मुख़तल्फ़ि जगहों पर इस तरह मफ़तहर्रिक रखे कि गर्द उड़ाती रहे और ये ज़ाहिर हो कि फ़ौज की तादाद बेहिसाब है सुलतान अय्यूबी ने ख़ुसूसी हुकम ये दिया कि किसी भी वक़्त

फ़ौज आराम की हालत में न रहे। दूसरे हिस्से को सिकन्दरया की तरफ़ कूच करने का हुक्म दिया गया। लेकिन इस हिदायत के साथ के कूच रात को होगा। और तमाम पड़ाव दिन के वक़्त होंगे। उस के कमाण्डर को बताया गया कि उसे ये हुकम बाद मे मिलेगा कि उस की मनज़िल किया है और आख़री ख़ीमा गाह कहां होगी तीसरे हिस्से को सुलतान अय्यूबी ने अपने हाथ में रखा। उस ने किसी भी कमाण्डर को न बताया कि ये एहकाम कियों दिये जा रहे हैं। ये सब ने देखा कि तमाम तर मुनजनीकें उस फ़ौज को दे दी गई थीं जो सिकन्दरया की तरफ़ जा रही थीं।

उस के सात आठ रोज़ बाद सुलतान अय्यूबी काहरा में नही था और नूरुद्दीन ज़ंगी करक में नहीं था। वह दोनो सिकन्दरया के मशरिक़ में घूम फिर रहे थे मगर कोई नही कह सकता था कि ये दोनो किसी मुल्क के हुकमरान और फ़ौजों के कमाण्डर हैं और वहदो इनसान हैं जो सलीबीयों के लिये सरापा दहशत बने हुए हैं वह ग़रीब से दो शुत्रबान थे जो मालूम नहीं कहां से आएे थे और कहां जा रहे थे। उन्हों ने साहिल पर जाकर बहीराए रूम की वुसअत को नज़रो से भांपा और नापा। वह तीन चार दिन में दूर दूर घूम गए। सुलतान अय्यूबी सिकन्दरया और नूरुद्दीन ज़ंगी करक चला गया। सुलतान अय्यूबी ने अपने अमीरुल बहर को कुछ इहकाम दिये और वह चला गया।

❖

सलीबीयों का बेड़ा मुकम्मल ख़ामूशी और राज़दारी से आया। बैतुल मक़दिस से सलीबीयों की फ़ौज चल पड़ी। दोनों की रवांगी के अवक़ात में मुताबिक़त थी सलीबीयों ने बड़े अच्छे मौसम का इन्तेख़ाब किया था। उस मौसम में समुन्दर ख़ामूश रहता है तलातुम और तूफ़ान का ख़तरा नही होता। सलीबी जहाज़ों के कपतानों को मिस्र का साहिल नज़र आने लगा। लेकिन उन्हे सुलतान अय्यूबी का कोई जहाज़ नज़र नहीं आरहा था। सब से अगले जहाज़ के कपतान ने समुनदर में माही गीरों की एक कशती देखी। उस ने जहाज़ उन के क़रीब करके उपर से झूक कर पूछा।— "जंगी जहाज़ कहां हैं अगर ग़लत बताओगे तो तुम्हें मार डालेंगे।"

माही गीरों ने कहा—" मिस्र के जहाज़ इस तरफ़ नही रखे जाते। यहां से बहुत दूर हैं।"

जहाज़ रोक कर रस्सा फैंका गया। दो माही गीर रस्से के ज़रिये जहाज़ पर चले गए। उन्हों ने कपतान को मिस्र के जंगी जहाज़ों के मुतअल्लिक़ जो मालूमात दीं वह ये थीं कि कई जहाज़ मरम्मत हो रहे हैं। जो जहाज़ अच्छी हालत में हैं वह इतनी दूर हैं कि सिकन्दरिया तक पहुंचते दो दिन लेंगे क्यों कि बादबानों और चप्पुओं के लिहाज़ से वह कमज़ोर और कम रफ़्तार हैं। माही गीर ने जो सब से ज़ियादह क़ीमती बात बताई वह ये थी कि चूंकि सुलतान अय्यूबी बहरिया की तरफ़ तवज्जो नहीं देता इस लिये जंगी मल्लाह ऐश व इशरत में पड़े रहते है। साहिल के साथ जो देहात हैं। वहां चले जाते हैं माही गीरों से मछलियां छीन लेते हैं।

सलीबी बहरिया के राहनुमा के लिये ये मालूमात ख़ुशख़बरी से कम नहीं थीं। उस ने अपना जहाज़ रोक लिया और एक कशती के ज़रिये उस बेड़े के कमाण्डर के जहाज़ तक गया उसे उस ने ये मालूमात दीं जो उस ने उन दो माही गीरों से ली थीं। उन के लिये मैदान साफ़

था। कमाण्डर ने बेड़े को वहीं रोक लिया । वह शाम के बाद अन्धेरे में साहिल तक पहुंचना चाहता था। उसे वह जगह बता दी गई थी जहां साहिल के साथ पानी इतना गहरा था कि जहाज़ रेत में फंसे बग़ैर साहिल तक आ सकते थे वहां फ़ौज को आसानी से उतारा जा सकता था..... सिकन्दरया की बन्दर गाह से एक कशती खुले समुन्दर की तरफ़ चली गई जो बज़ाहिर माही गीरों की थी। अभी सूरज ग़ुरूब नहीं हुआ था। जब ये कशती बेड़े तक पहुंच गई कम व बेश अढ़ाई सौ जंगी जाहज़ समुन्दर में दूर दूर तक बिखरे हुऐ थे। माही गीर अपनी कशती को बेड़े के दरमियान ले गये और पूछ पूछ कर कमाण्डर के जहाज़ तक पहूंच गये। उन्हों ने कमाण्डर को बताया कि सिकन्दरया के अन्दर कोई फ़ौज नहीं है सिर्फ़ शहरी आबादी है और मिस्री बेड़े के जंगी जहाज़ यहां से बहुत दूर हैं। -- ये माही गीर मुसलमानों के जासूस थे।

रात का पहला पहर था। जब अगली सफ़ के जंगी जहाज़ साहिल की तरफ़ बढ़े और किसी दुशवारी के बग़ैर साहिल पर लंगर अन्दाज़ हो गए। पीछली सफ़ के जहाज़ उन के क़रीब अकब में आए और लंगर डाल दिये। तीसरी सफ़ भी क़रीब आगई। फ़ौज उतारने का इन्तेज़ाम ग़ालिबन ये था। कि हर एक जहाज़ को साहिल पर नही आना था बल्कि तमाम जहाज़ों को साथ मिला कर उन में से फ़ौज को गुज़र कर उतरना था। सिकन्दरिया पर ख़ामोशी से हमला करने का फ़ैसला किया गया। इत्तला के मुताबिक़ वहां चूंकि फ़ौज नहीं थी इस लिये कबज़ा मुशकिल न था अगले जहाज़ों से जो फ़ौज उतरी उसे सिकन्दरिया में दाख़िल होने का हुक्म दे दिय गया और सिपाहियों को बताया गया कि शहर उन का अपना है कोई मज़ाहिमत नहीं होगी सिपाही दौड़ पड़े। उन्हें शहर को लूटना था और उन की नज़र औरतों पर भी थी।

जूंही सिपाहियों का ये हूजूम शहार के क़रीब आया शहर के बाहर दाऐं और बाऐं तरफ़ शोले उठे जिन से रात रौशन होगई ये घास, लकड़ियों और कपड़ों के अंबार थे। जिन पर तेल डाला गया था। उन से रौशनी का काम लेना था। शहर की गलयों में भी मशअलें जल उठीं और मकानों की छतों से तीरों का मेंह बरसने लगा। सलीबी पीछे को भागे तो दाऐं और बाऐं से उन पर तीर बरसने लगे। उन के लिये संभलना मुशकिल हो गया । ज़ख़्मियों की चीख़ व पूकार से रात लरज़ने लगी। उन सलीबीयों की तादाद कम व बेश दो हज़ार थी। उन मे शायद ही कोई जिन्दा पीछे गया होगा। सलीबी फ़ौज जो अभी जहाज़ों मे थी उसे आगे आने का हुकम मिला। जहाज़ों मे से सलीबीयों की मुनजनीकें आतिशीं गोले फैंकने लगीं और दूर मार तीर भी आने लगें

सब से पीछे वाले दो तीन जंगी जहाज़ों मे से शोले उठे । सलीबी कपतानों ने पीछे देखा। यूं मालूम होता था जैसे समुन्दर से आग के गोले उठते हैं और उन के जहाज़ों में आकर गिरते हैं। सलीबीयों ने ख़ुश फ़हमीयों में मुबतला होकर जहाज़ों को हुजूम की सूरत में इकट्ठा कर दिया था। और वह सुलतान अय्यूबी के फन्दे में आगऐ थे। दिन के वक़्त अगले जहाज़ों को जो माही गीर मिले थे वह अली बिन सुफ़यान के मोहकमें के आदमी थे। ये क़ुदरती सी बात

थी कि समुन्दर में माही गीर मिले तो सलीबी कपतान ने उन से मालूमात हासिल कीं। माही गीरों ने गुलत मालूमात दीं। उन्हों ने सिर्फ़ ये बात ठीक बताई कि मिस्री बेड़ा यहां से दूर है वह वाकई दूर था। सुलतान अय्यूबी ने अपने अमीरुल बहर को बता दिया था कि वह समुन्दर पर नज़र रखें। किसी भी वक़्त हमला आजाऐगा। अमीरुल बहर ने देख भाल का अच्छा इन्तेज़ाम कर रखा था। उसे कबल अज़ वक़्त पता चल गया था कि सलीबी बेड़ा समुन्दर के वसत तक अगया है चुनान्चे अमीरुल बहर अपने चन्द एक जंगी जहाज़ जिन में आतिशीं गोंले फैंकने वाली मुनजनीकें थीं एक तरफ़ दूर ले गया था उसने बादबान भी उतार लिये थे और मसतूल भी ताकि दूर से जहाज़ नज़र न आसकें । उन के बजाऐ उस ने एक एक चप्पू पर दो दो आदमी लगा दिया ताकि रफ़्तार तेज़ रहे ।

शाम के बाद जब सलीबी बेड़ा साहिल के करीब गया तो अमीरुल बहर ने मसतूल भी चढ़ा दिया और बादबान भी और चप्पूओं की रफ़्तार भी तेज़ रखी और इस तरह वह सलीबी बेड़े के अक़ब में ऐन उस वक़्त पहूंच गया। जब सलीबीयों ने अपने जहाज़ एक दूसरे के साथ मिला दिये थे। सलीबीयों को दूसरा धोका उन "माहीगीरों" ने दिया था। जो सिकन्दरया से रवाना हुऐ थे। उन्हों ने सलीबी कमाण्डर से कहा था कि वह उन के जासूस हैं उन्होने बताया था कि सिकन्दरया में कोई फ़ौज नहीं । हकीकत ये थी कि शहर के उन मकानों में जो समुन्दर की तरफ़ थे वहां सिर्फ़ फ़ौज थी। शहरियों को महफूज़ हिस्से में भेज दिया गया था।

सुलतान अय्यूबी का अमीरुल बहर बहुत थोड़े जहाज़ लेकर गया था। उन्होंने नुकसान तो बहुत किया लेकिन दुशमन के कई एक जहाज़ बच कर निकल गये। दूसरों ने मुकाबला किया । जलते जहाज़ों ने रात को दिन बना दिया था। उस रौशनी में सुलतान अय्यूबी के जहाज़ भी नज़र आने लगे थे। उन में से एक जहाज़ सलीबीयों की मुनजनीकों की ज़द में आगया। अमीरूल बहर ने अपने जहाजों को पीछे हटाना शुरूअ कर दिया। कियों कि दुशमन जहाज़ों की अफ़रात की सहुलत से फ़ाइदा उठाते हुए घेरा डालने की कोशिश कर रहा था। सिकन्दरया में सुलतान अय्यूबी के जांबाज़ों ने जोश में आकर साहिल पर हल्ला बोल दिया और जहाजों पर आतिशीं तीर फैंकने लगे। ये जांबाज़ मिस्र की फ़ौज के उस तीसरे हिस्से के थे जिसेसुलतान अय्यूबी ने अपने हाथों में रखा था। उन्हें ग़ैर फौजी लिबास में सिकन्दरया में मकानों में मोरचा बन्द किया गया था और निहायत ख़ामूशी से शहरियों को दूसरे मकानों में मुन्तकिल कर दिया गया था। सुलतान अय्यूबी अक़्ल और धोके की जंग लड़ रहा था और कम से कम ताकत इसतेमाल कर रहा था। उस ने अभी ख़ासी नफ़री अपने ज़ेरे कमान रिज़र्व में रखी हुई थीं।

रात भर ये जंग जारी रही। समुन्दर में कई जहाज़ जल रहे थे वहां कियामत का मनज़र बना हुआ था। सलीबी बेड़ा चूंकी ज़ियादा था बल्कि सुलतान अय्यूबी के जहाजों की निसबत बहुत ही जियादह जहाज़ तबाही से निकलकर मुसलमानों के जहाज़ों को घेरने की कोशिश कर रहे थे। सूरत घेरे वाली सी बन गई थी। रात को पता नहीं चलता था कि अपने जहाज़ों की कैफ़ियत किया है। सुलतान अय्यूबी वहां मौजूद था। उस ने अपने उन जहाज़ों को जिन्हें उस

ने महफ़ूज़ा के तौर पर रखा हुआ था हुकम भेज दिया कि सलीबी जहाज़ों को दूर का चक्कर काट कर उलझाऐं। रात के पिछले पहर बाकी जहाज़ भी मारके में शरीक हो गऐ। उस में बहादुरी तो उन मल्लाहों की थी जो छोटी छोटी कशतियों में अपने जहाज़ो को तीर आतिश गिर मादह और गोले पहुंचा रहे थे। अपने जहाजों का ढूंढना बहुत ही मुशकिल काम था।

सुबह तुलू हो रही थी। अमीरुल बहर एक कशती में साहिल पर आया। उस के साथ चन्द एक बहरी सिपाही थे। अमीरुल बहर के कपड़े खून से लाल थे और उसकी एक टांग झुलसी हुई थी। उस का जहाज़ नज़रे आतिश हो गया था। और वह चन्द एक जवानों को समुन्दर से निकाल लाया था। उस ने सुलतान अय्यूबी को बड़ी उजलत में मारके की सुरते हाल बताई जो मुख़तसर ये थी कि उस के आधे जहाज़ तबाह हो चुके थे लेकिन सलीबीयों को इतना नुकसान पहुंचाया जा चुका था कि वह ज़ियादा देर लड़ने के काबिल नहीं थे सुलतान अय्यूबी ने उसे बताया कि बाकी जहाजों को भी भेज दिया गया है। ये इक़दाम अमीरुल बहर की ख़्वाहिश और ज़रूरत की ऐन मुताबिक़ था। उस ने सुलतान अय्यूबी से कहा–" सलीबीयों को सब से ज़यादा नुक़सान वह बोझ दे रहा है जो उन्हों ने जहाज़ो में लाद रखा है। रसद के इलावा उन के जहाज़ों में फौज भी है और बाज़ जहाजों में घोड़े हैं। उस बोझ की वजह से उन के जहाज़ रफ़तार में नहीं आते और घूमने में देर लगाते हैं। मेरे जहाज़ ख़ाली हैं।

अमीरुल बहर इतना ज़ियादा ज़ख़मी था कि उस का सरडोल रहा था। सुलतान अय्यूबी ने अपने तबीब और जर्राह को बुलाया मगर अमीरुल बहर ने परवा न की। सुलतान अय्यूबी का हेड कुवारटर सहिल के चट्टानी इलाके में था। वह एक उंची चट्टान पर खड़े थे सूरज की पहली किरनों ने समुन्दर और साहिल का जो मन्ज़र दिखाया वह हैबत नाक था। जहां तक नज़र जाती थी समुन्दर में जहाज़ मस्त सांडों की तरह समुन्दर को चीर रहे थे। बहुत से जहाज़ जल रहे थे। बाज़ मसतूल टूट जाने और बादबान बेकार होजो से एक ही जगह खड़े हिचकोले खा रहे थे। समुन्दर में बहुत से इनसान तैरते नज़र आ रहे थे। और मौजें लाशों को साहिल पर पटख़ रही थीं अपने जहाज़ों का कुछ पता नहीं चल रहा था दूर मग़रिब की तरफ़ समुन्दर से मसतूलोंके बालाई हिस्से उभरे फिर बादबान नज़र आऐ। जहाज़ एक सफ़ में एक दूसरे से दूर मारके की तरफ़ बढ़े आ रहे थे सुलतान अय्यूबी ने कहा–" तुम्हारे जहाज़ आ रहें है।"– उस ने इधर देखा। वहां अमीरुल बहर नहीं था।

अमीरुल बहर अपने जहाजों को आता देख कर सुलतान को बताऐ बग़ैर चट्टान से उतर गया था। सुलतान अय्यूबी को वह उस वक़्त नज़र आया। जब वह एक कशती में बैठ चुका था और कशती का बादबान खुल चुका था। ये दस चप्पुओं की कशती थी। सुलतान अय्यूबी ने चिल्लाकर पूकारा –" सादी! तुम वापस आजाओ। मैं ने तुम्हारी जगह अबु फरीद को भेज दिया है।"

अमीरुल बहर दूर निकल गया था। उस ने बुलन्द आवाज़ से कहा–"ये मेरी जंग है ख़ुदा हाफ़िज़" – और उस की कशती दूर ही दूर हटती गई फिर नज़रों से ओझल होगई।

कासिद ने सुलतान अय्यूबी को इत्तेला दी कि सिकन्दरया से शुमाल मशरिक की तरफ़

तीन मील दूर सलीबीयों की फौज उतर आई हैं और वहां खुनरेज़ मारका लड़ा जारहा है सुलतान अय्यूबी ने वहां जाने की बजाए कुछ एहकाम जारी कर दिये और समुन्दरी जंग को देखता रहा। – और उस ने ये मन्ज़र भी देखा कि सलीबीयों का एक जहाज़ साहिल के ज़रा करीब आगया था। सुलतान अय्यूबी के बेड़े का एक जहाज़ उस के करीब आने की कोशिश कर रहा था। सलीबीयों ने तीरो की बोछाड़ें मारीं लेकिन मुसलमान मल्लाहों ने परवाह ना की। वह अपने जहाज़ को सलीबी जहाज़ के इतना करीब ले आए कि कूद कर उस में चले गए। और दस्त बदस्त लड़ कर जहाज़ पर कबज़ा कर लिया। मगर ये मारका इतना सहल न था मुसलमान बहरया के सरफ़रोशों ने ख़ून और जान की बे दरेग़ कुरबानी दी। व तीन तीन चार चार जहाज़ों के घेर में लड़े। दुशमन के जहाजों में कूद कूद कर लड़े। तीरों से छलनी हुए मगर इस तरह मारके में से निकलने की न सोंची जिस तरह सलीबी अपने जहाज़ निकालने की कोशिश कर रहे थे।

सलीबीयों की कमर रात को ही टूट गई थी। उन के कमाण्डर सलीब का हल्फ़ पूरा कर रहे थे। और उन्हें सुबह तक यह उम्मीद लड़ाती रही कि वह सुलतान अय्यूबी की कलील सी बहरी कुव्वत पर काबू पा लेंगे। लेकिन अगले दिन के पिछले पहर तक उन की कैफ़ियत इतनी बिगड़ चुकी थी। कि जहाज़ बिखर कर उधर को ही जा रहे थे जिधर से आए थे वह अपनी ज़ियादा तर कुव्वत मुसलमानों के हाथों तबाह कर गए थे –और उन की जो थोड़ी सी फ़ौज साहिल पर उतरी थी वह सिकन्दरया से तीन चार मील दूर शुमाल मशरिक में कुछ कट गई थी बाकी ने हथयार डाल दिये थे। सुलतान अय्यूबी की फ़ौज का दूसरा हिस्सा अभी जंग में शरीक ही नही हुआ था। सुलतान अय्यूबी के कासिद आ रहे थे। जा रहे थे। और जब उसे यकीन हो गया कि सलीबी नाकाम हो गए हैं। तो उस ने फ़ौज के दूसरे हिस्से को एक और मुहाज़ दे दिया। इमरान की इत्तेला के मुताबिक बैतुल मकदिस की तरफ़ से भी सलीबी फ़ौज को आना था। उस के लिये जंगी घात में था ता हम पेश बन्दी के तौर पर सुलतान अय्यूबी ने दिफ़ा मजबूत कर लिया। तीसरे हिस्से को जो उस ने अपने ज़ेरे कमान रिज़र्व में रखा हुआ था। उन सलीबीयों को पकड़ने पर लगा दिय जो समुन्दर से निकल रहे थे।

सूरज की आख़री किरनों ने सुलतान अय्यूबी को ये मंज़र दिखाया कि सलीबीयों के वही जहाज़ नज़र आ रहे थे। जो जल चुके थे। और अभी डूबे नहीं थे या वह जिन्हें पकड़ लिया गया था। उन जहाज़ों के बादबान नज़र आ रहे थे। जो वापस जाते हुए दूर ही दूर हटते जा रहे थे। उस की अपनी बहरिया के जहाज़ जो बच गए थे साहिल की तरफ़ आ रहे थे। देखने वालों ने अन्दाज़ह लगाया कि सुलतान की आधी बहरिया मिस्र पर कुरबान हो गई थी। कशतियां साहिल पर आरही थीं। एक कशती उस चट्टान के करीब आके साहिल से लगी जिस पर सुलतान अय्यूबी खड़ा था। उस मे किसी की लाश थी सुलतान अय्यूबी ने बुलन्द आवाज़ से पूछा।–" ये किस की लाश है ?"

अमीरुल बहर सादी बिन साद की " एक मल्लाह ने जवाब दिया।

सुलतान अय्यूबी दौड़ कर नीचे उतरा। लाश से कपड़ा हटाया। उस के अमीरुल बहर की

लाश ख़ून से लाल हो चूकी थी। मल्लाहों ने बताया कि अमीरुल बहर ने एक जहाज़ तक पहूंच कर बहरिया की कमान ले ली थी। और जंग लड़ाते रहे। उन्होंने उस जहाज़ पर अपनी कमान का झण्डा चढ़ा दिया था। ग़ालिबन यही वजह थी कि सलीबीयों के चार जहाजों ने उन्हें घेर लिया। उन में से दो तबाह हुए और अमीरुल बहर का जहाज़ भी तबाह हो गया। उस वक़्त तक मारका ख़त्म हो चुका था– सुलतान अय्यूबी ने अमीरुलबहर की लाश का हाथ चूमा और कहा–" तुम समुन्दर के फातेह हो । मैं कुछ भी नहीं।"

उस ने ये हुक्म दिया कि दुशमन के जो जहाज़ पीछे रह गये हैं उन से सामान निकाला जाऐ वह जज़बती लहजे में कहा–" तमाम कशतियां समुन्दर में डाल दो और किसी शहीद की लाश समुन्दर मे न रहने दो। उन्हें यहीं दफ़न करना जहां बहीराए रूम की हवाऐं उन की क़बरों को ठण्डी रखें।"

बहरी शहीद की तादाद कम नहीं थी।

❖

बैतुल मक़दिस से सलीबीयों की फ़ौज कूच कर चुकी थी और आधा रासता तै कर आई थी। उन्हें कुछ ख़बर नहीं थी कि उन की बहरयिा अपने अन्जाम को पहूंच चुकी है उस के क़ल्ब में सलीबीयों का मशहूर जंगजू हुकम्रान रिजनाल्ट था। उस फ़ौज के भी तीन हिस्से थे। एक आगे थे। दूसरा कुछ दूर पीछें दरमियान में और तीसरा बहुत दाऐं को हट कर आ रहा था। उस की मुत्तहिदह कमान रिजानल्ट के पास थी और उसे ये तवक्को थी कि वह सुलतान अय्यूबी को बेख़बरी में जा लेगा। तसुव्वुरों में उसे क़ाहिरा नज़र आरहा था। घोड़ा गाड़ियों के क़ाफ़ले रसद भी साथ ला रहे थे। सिकन्दरया से बहुत दूर शुमाल मशरिक़ में एक वसीअ ख़ित्ता रेत और मिट्टी के टीलों और नशीब व फ़राज़ का हुआ करता था। आठ सदियों ने उस ख़ित्ते को अब वैसा नहीं रहने दिया । उस के क़रीब बाक़ी इलाक़ा सेहरा था और उस सेहरा में पानी भी था। रिजानल्ट ने एक पड़ाव वहां किया। उस की फ़ौज का अगला हिस्सा आगे निकल गया था। दाऐं तरफ़ वाला हिस्सा दूर था। आधी रात का वक़्त होगा। रिजानल्ट के कैम्प में क़ियामत बपा हो गई । उस के कुछ भी पल्ले न पड़ा कि ये क़ियामत आसमान से टूटी है या उस की अपनी फ़ौज ने बग़ावत कर दी है।

उस के वहम व गुमान में भी नहीं था कि वह नूरुद्दीन ज़ंगी की घात में अगाया है। ज़ंगी ने कई दिनों से अपनी फ़ौज को टीलों और नशीब व फ़राज़ के इस इलाके मे लाके बिठा रखा था। उस ने ये सोंचा था कि यहां पानी क़रीब है इस लिंये सलीबी यहां पड़ाव करेंगे। सलीबी फ़ौज का अगला हिस्सा आगे निकल गया तो ज़ंगी के कमाण्डरों को मायुसी हुई उन्हें हुक्म दिया गया था कि रात को पड़ाव पर हमला करना है। वहां पड़ाव न हुआ बहुत देर बाद उन्हें दूर से गर्द केबादल नज़र आए तो वह समझे कि आंधी आ रही है। सेहराई आंधी बड़ी ख़ौफ़नाक हुआ करती है लेकिन आंधी नही सलीबी फ़ौज का दरमियानी हिस्सा था जो इसी जगह आकर रुक गया । जहां नूरुद्दीन ज़ंगी को तवक्को थी सलीबीयों ने ख़ीमे न लगाए कियों कि उन्हें सुबह कूच करना था जानवरों को अलग बांध दिया गया और फिर सूरज डूब गया ।

आधी रात को ज़ंगी के दसते जो घात में थे बाहर आऐ। ये सब सवार थे उन्हो ने पहले तो अंधेरे में तीरों का मेंह बरसाया और जब सोए हुए सिपाहियों में भगड़ मची तो सवारों ने घोड़े सरपट दौड़ा दिये। वह अंधा दुधं बरछियां और तलवारें चलाते गए। और आगे निकल गए सलीबी संभलने न पाए थे कि सवारो ने फिर हल्ला बोल दिया। सलीबीयों के बंधे हुए घोड़ों की रस्सियां खोल दी गई। ये सब भाग उठे रिजानल्ट वहां से भाग गया। और दाएँ हिस्से वाली फौज में जा पहुंचा। ये हिस्सा कीहं दूर पड़ाव किये हुए था। नूरुद्दीन ज़ंगी उसी तरफ था उस सारी फ़ौज की रसद पीछे आ रही थी। ज़ंगी ने उस के लिये अलग दसते मुकर्र कर रखे थे। उन्हो ने सुबह तक रसद पर कबज़ा कर लिया। दाऐं वाला हिस्सा रात को होशियार हो गया था। रिज़ानल्ट उसे अपने हिस्से की तरफ़ लाने लगा कियों कि वह उसी जगह को मैदान जगं समझता था। सुबह के दुंधलक़े में ये फ़ौज चल पड़ी। नूरुद्दीन ज़ंगी ने अक्ब से उस के पहलू पर हमला कर दिया। उस के बाद उस फ़ौज को मालूम ही न हो सका कि उस पर किस तरफ़ से हमले हो रहें हैं। सुलतान अय्यूबीकी तरह ज़ंगी भी जम कर नही लड़ता था। छोटे छोटे दसतों से हमले कराके सलीबीयों को बिखेरता जा रहा था।

उस ने रात को सुलतान अय्यूबी की तरफ़ क़ासिद भेज दिया था। उन दोनों ने इसकीम पहले ही बना रखी थी। ज़ंगी का हर अमल और इक़दाम और दूशमन का रद्दे अमल उन की इसकीम के ऐन मुताबिक़ था। रिजानल्ट ने अपनी फ़ौज के अगले हिस्से को पीछे आने का पैग़ाम भेजा। चार रोज़ रिजानल्ट और ज़ंगी मे ला महदूद वुसअत में मारके होते रहे। ज़ंगी ने सलीबीयों को बिखेर लिया था। और ज़र्ब लगाओ और भागो के उसूल पर लड़ रहा था। सलीबीयों की फ़ौज का आगे वाला हिस्सा वापस हुआ तो रात को उस के अकब पर हमला हुआ। ये सुलतान अय्यूबी के छापा मार थे उन्हों ने दो तीन शबखून मारे और ग़एब होगए। फिर ये सिलसिला चलता रहा। सलीबी आमने सामने जंग लड़ने की कोशिश कर रहे थे। लेकिन सुलतान अय्यूबी उन्हें कामयाब नहीं होने दे रहा था। ये तरीक़ा आसान नही था। छापा मार अगर एक सौ की तादाद में जाते थे तो बमुश्किल साठ वापस आते थे। उस के लिये ख़ुसूसी महरात दिलेरी और तेज़ी की जरूरत थी जो सुलतान अय्यूबी ने अपने छापा मार दसतों में पैदा कर रखी थी।

जंग बहुत दूर दूर तक फैली हुई थी। सलीबी फ़ौज में न जमीअत रही न मरकज़ियत। उन की रसद ज़ंगी के कबज़े मे आगई थी मैदाने जंग मे न कोई सामनाना अकब। सलीबी इस जंग की सूझ बूझ नही रखते थे जो मुसलमान लड़ रहे थे। फिर कैफ़ियत ये होगई कि जो सलीबी सिपाही भाग सके भाग गऐ। और जिन मे ताब न रही वह हथ्यार डालने लगे। रिजानल्ट हार मानने को तैयार नही था। उस ने किसी और जगह कुछ फ़ौज इकट्ठी कर ली और उसे ये भी पता चल गया। कि ज़ंगी कहां है उस ने निहायत अच्छी इसकीम से वहां हमला कर दिया। ये एक बड़ा ही सख़्त मारका था। सलीबी ज़िन्दगी और मौत की जंग लड़ रहे थे। रिजानल्ट की चालें और अपनी फ़ौज पर कनटरोल बहुत अच्छा था मगर चौथी पांचवीं रात ज़ंगी के शब खून मारने वाले एक दसते के चन्द एक जांबाज़ों ने जान की बाज़ी लगा दी और रिजानल्ट के ज़ाती ख़ीमा गाह पर जा कर शब ख़ून

मारा। ये ज़ंगी की इसकीम के तेहत इक़दाम किया गया था। ज़ंगी ने छापा मारों की ललकार पर हमला कर दिया उस दौर में रात के वक़्त लड़ाई नही लड़ी जाती थी। ये तरह मुसलमानों ने डाली थी कि रात को भी हमले जारी रखते थे।

सुबह तुलू हुई तो सलीबीयों का सुपरीम कमाण्डर रिजानल्ट कैदी की हैसियत से नुरूद्दीन ज़ंगी के सामने खड़ा था और ज़ंगी उसे अपनी शराएत बता रहा था। ये सलीबी कमाण्डर हर शर्त मान्ने पर आमादा था। लेकिन बात जब बैतुल मक़दिस पर आई तो रिजानल्ट ने इनकार कर दिया। ज़ंगी ने उसे कहा था। कि बैतुल मक़दिस हमारे हवाले करदो और आज़ाद हो जाओ ....शाम तक सुलतान अय्यूबी भी आ गया। रिजानल्ट को पूरे एहतराम के साथ रखा गया था। सुलतान अय्यूबी उस से बग़ल गीर होकर मिला।

" आप अजीम सिपाही हैं"—रिजानल्ट ने सुलतान अय्यूबी से कहा।

"यूं कहो इसलाम अजी़म मज़हब है।"—सुलतान अय्यूबी ने कहा।—" सिपाही वही अजी़म होते हैं जिन का मज़हब अजी़म होता है।"

" मोहतरम रिजानल्ट ने मुझ से पूछा था कि उन का बहरी बेड़ा नहीं आया था।" नूरुद्दीन ज़ंगी ने सुलतान अय्यूबी से कहा—" उन्हें सहीह जवाब तुम ही दे सकते हो मैं तो यहां था"

" आप का बहरी बेड़ा पूरे तुमतराक़ से आया था " सुलतान अय्यूबी ने कहा।—" और वापस भी चला गया है आप के बहुत से जहाज़ समुन्दर की तह में होंगे और जो डूबे नहीं उनके जले हुए ढ़ांचे समुन्दर पर तैर रहे हैं जो फ़ौज जहाजों से उतर आई थी वह वापस नहीं जा सकी हम ने आप की तमाम लाशें पूरे इहतराम से दफ़न करदी हैं।"— सुलतान अय्यूबी उसे जंग की सूरते हाल सुना रहा था और रिजानल्ट की आंखे और मुंह खुलता जा रहा था। उसे यक़ीन ही नहीं आ रहा था कि ये रूदाद सच्ची है।

" अगर ये सच है तो किया आप मुझे बता सकते हैं कि यह कियोंकर मुमकिन हुआ।"— रिजानल्ट ने पूछा।

" ये राज़ उस रोज़ आप पर फ़ाश कर दुंगा जिस रोज़ फ़लसतीन से सलीब का आख़री सिपाही भी निकल जाएगा।" नूरुद्दीन ज़ंगी ने कहा।—" आप की ये शिकस्त आख़री नहीं कियोंकि आप इस सर ज़मीन से निकलने परआमादा नज़र नही आते।"

" मैं आप को अपने इलाक़े दे दुगां। " —रिजनाल्ट ने कहा—" मुझे रिहा कर दें। जंग न करने का मुआहिदा भी करूंगा। आप की सलतनत बहुत वसीअ हो जाऐगा।"

" हमें अपनी सलतनल की ज़रूरत नहीं "—सुलतान अय्यूबी ने कहा—" हमें ख़ुदा की सलतनत क़ाएम करनी है। इसलाम की सलतनत जिस की वुसअत का आप तसुव्वुर भी नही कर सकते । आप का मक़सूद इसलाम की बेख़ कनी है जो मुमकिन नहीं। आप ने फ़ौजें इसतेमाल कर देखीं है। बहरी बेड़ा भी आज़मा लिया है। आपनी बेटीयों को भी इसतेमाल कर देखा है। आप ने हमारी क़ौम में गद्दार भी पैदा किये हैं। गुज़शता एक सदी में आप ने कितनी कामयाबी हासिल की हैं।"

" किया मैं आप को याद दिलाऊं कि हम ने इसलाम को कहां कहां से निकला है " —

रिजनाल्ट ने कहा–" इसलाम तो बहीराए रूम के पार पहुंच गया था। इसपेन से इसलाम की पसपाई कियों हुई । रूम आप के हाथ से कियों निकला। सूडान आप का कियों दुशमन हुआ। सिर्फ इस लिये कि हम ने तुम्हारे इसलाम के मुहाफिज़ों को ख़रीद लिया था। आज भी तुम्हारे हुकमरान भाई हमारे ज़र ख़रीद गुलाम हैं। उन की रियासतों में मुसलमान रह गए हैं इसलाम ख़त्म हो गया है।"

" हम वहां इसलाम को ज़िनदा करेगें दोस्त ।"– सुलतान अय्यूबी ने कहा।

"आप ख़वाब देख रहें हैं सलाहुद्दीन !" – रिजानल्ट ने कहा–" आप दोनों कब तक ज़िन्दा रहेंगें कब तक लड़ने के क़ाबिल रहेंगे। इसलाम की पासबानी कब तक करोगे। मैं आप दोनों को खिराजे तहसीन पेश करता हूं किआप सच्चे दिल से अपने मज़हब के पासबान और बही ख़ाह है। लेकिन आप की क़ौम मे मज़हब को नीलाम करने वालों की तादाद ज़यादा है और हम ख़रीदार हैं। अगर आप हमारे साथ जंग व जदल की बजाए अपनी क़ौम को ज़र परसती, लज़्ज़त परसती और तऐयुश पसन्दी से बचाने की मुहिम चलाएं तो हम यहां एक दिन ठहर न सकेंगे। मगर मेरे दोसतों आप उस मुहिम में कामयाब नहीं होगें जिस की वजह ये है कि अय्याशी आप की क़ौम में नही आई बल्कि क़ौम के सरबराह और हुकमरान अय्याश हो गऐ हैं। इस हक़ीक़त से आप चश्म पोशी न करें के जो बुराई हुकमरानों की तरफ़ से शूरू होती है वह क़ौम मे रिवाज की सूरत इख़तियार कर जाती है। इसी लिये हम ने आप के हुकमरानों को अपने जाल में फांसा है और मैं आप को ये भी बता दूं के मुझे क़त्ल कर दें । मुझ जैसे चन्द और सलीबी हाकिमों को क़त्ल करदें। इसलाम को बहर हाल ख़त्म होना है । हम ने जिस मर्ज़ का ज़हर आप की क़ौम की रगों में डाल दिया है वह बढ़ेगा कम नही होगा।"

वह ऐसी हक़ीक़त बयान कर रहा था जिस से नूरुद्दीन ज़ंगी और सुलतान अय्यूबी इनकार नही कर सकते थे ता हम वह सलीबीयों पर बहुत बड़ी फ़तह हासिल कर चुके थे और एक सलीबी बादशाह जो सलीबीयों का सुपरीम कमाण्डर था उन के पास जंगी क़ैदी था। उस के अलावह और भी बहुत से क़ैदी हाथ आऐ थे। ये सिर्फ़ एक जासूस का कारनामा था जो अक़रह से इस हमले की ख़बर बर वक़्त ले आया था।

रिजनाल्ट और दूसरे तमाम जंगी क़ैदियों को नूरुद्दीन ज़ंगी करक ले गया और सुलतान अय्यूबी उस से रुख़सत होकर क़ाहरा चला गया। उस ने सोंचा तक न था कि वह अब नूरुद्दीन ज़ंगी से कभी नहीं मिल सकेगा। वह इस मुसर्रत के साथ क़ाहरा गया कि ज़ंगी रिजनाल्ट जैसे कीमती क़ैदी को बड़ी सख़्त शराएत मनवाऐ बेगैर छोड़ेगा नही। । नूरुद्दीन ज़ंगी ने भी ज़ेहन में कुछ मनसूबे बनाऐ होंगे मगर ख़ुदा को कुछ और ही मनजूर था। मार्च 1174 ई0 के इबतिदाई दिन थे कि बग़दाद के किसी इलाक़े में शदीद ज़लज़ला आया जिस ने छे सात देहात को तबाह कर दिया। बग़दाद में भी नुक़सान हुआ । मुअर्रिखों ने उसे तारीख़ का सब से ज़यादा तबाह कुन ज़लज़ला कहा है। नूरुद्दीन ज़ंगी के दिल में अपने अवाम के साथ इतनी मुहब्बत थी कि उन की इमदाद के इहकाम जारी करने की बजाए ख़ुद करक से चल पड़ा। वह उनकी दसतगीरी अपनी निगरानी में करना चाहता था वैसे भी उसे

करक से जाना था। बगदाद और इर्द गिर्द के हालात अच्छे नहीं थे। वह करक से रिजनाल्ट और दूसरे सलीबी कैदियों को भी साथ लेता गया।

बग़दाद पहुंच कर उस ने सब से पहले ज़लज़ले से शिकार होने वाले लोगों की तरफ़ तवज्जो दी। दारुलख़िलाफ़े से बाहर रहने लगा। वह दिल व जान से अपने लोगों की मदद करता रहा। जहां रात आती वहीं रुक जाता। उस ने खाने की परवाह न की कि कैसा मिलता है और किस के हाथ का पका होता है। उसे तबाह हाल लोगों की खुशहाली का ग़म खाऐ जा रहा था। अपरील के आख़िर तक उस ने तमाम मुतअसरिन को आबाद करदिया। जब ज़रा फुरसत मिली तो उस ने अपने तबीब को बताया कि वह अपने गले के अन्दर दर्द महसूस करता है। तबीब ने दवा दारू किया लेकिन हलक में सोज़िश बढ़ती गई तबीबों ने बहुत इलाज किया लेकिन मर्ज़ का यक आलम हो गया कि वह बात करने से भी माजूर हो गया। और मई 1174 ई0 के पहले हफ़्ते में ख़ामोशी से जान जने आफ़रीन के सुपूर्द करदी।

यूरोपी मोअर्रिखों ने लिखा है कि ज़ंगी को खुन्नाक का आरज़ा लाहिक हो गया था। लेकिन बाज़ मोअर्रिखों ने वसूक से लिखा है कि ज़ंगी को हसन बिन सबाह के फ़िदाईयों ने ज़हर दिया था। उन दिनों जब ज़ंगी ज़लज़ले से तबाह किये हुए देहात में भागता दौड़ता रहता और उस के खाने के औवकात और पकाने के तौर तरीके बेकाईदा हो गए थे। फ़िदिईयों ने उसे खाने में ज़हर देना शुरूअ कर दिया था। जिस का जाईका महसूस नही होता था। ये ज़हर हलक की ऐसी सोज़िश का बाइस बना।जिसे तबीब समझ ही न सके। जनरल मो0 अकबर ख़ान ने अपनी अंग्रेज़ी किताब "गोरिला वार फ़ियर" में कई बड़े बड़े और मुसतनद मोअर्रिखों के हवाले से इसी की तसदीक की है। नूरुद्दीन ज़ंगी फ़िदाईयों का शिकार हुआ था।

ज़ंगी कोई वसीय्यत न कर सका। सुलतान अय्यूबी को कोई पैग़ाम न भेज सका। सुलतान अय्यूबी को उस वक़्त इत्तेला पहुंची जब ज़ंगी दफ़न हो चुका था। दूसरे ही दिन बग़दाद से एक और क़ासिद ये इत्तेला ले के आया कि नूरुद्दीन ज़ंगी की वफ़ात के साथ ही मोसिल, हलब और दमिश्क़ के उमरा ने खुद मुख़तारी का एलान कर दिया है। और सुलतान अय्यूबी को ये इत्तेला भी मिली कि बग़दाद के उमरा, वुज़रा ने नूरुद्दीन ज़ंगी के बेटे अलमलिकुस सालेह को जिस की उमर गयारह साल थी। सलतनते इसलामिया का ख़लीफ़ा मुकर्रर कर दिया है। सुलतान अय्यूबी समझ गया कि ये उमरा नाबालिग़ ख़लीफ़ा को किस रासते पर डालेंगे। और वह किया गुल खिलाऐंगे।

सुलतान अय्यूबी ने अली बिन सुफ़यान को बुलाया और कहा।—" तुम ने पांच छ महीने गुज़रे मुझे इत्तेला दी थी कि अकरह में अपना एक जासूस शहीद हो गया और दूसरा पकड़ा गया है तो मेरा दिल बैठ गया था और मुझे एसे महसूस होने लगा था जैसे सलीबीयों का ये साल दुनयाऐ इस्लाम के लिये अच्छा नही होगा।......... बैठ जाओ। मेरी बात ग़ौर से सुनो। अब हमें अपने भाईयों के ख़िलाफ़ लड़ना पड़ेगा।"

❖❖

इसलाम की बक़ा कच्चे धागे से लटक रही थी

मई 1174 ई0 का दिन दुनयाए इसलाम का एक तारिक दिन था। नूरुद्दीन ज़ंगी की मैय्यत को अभी गुसल भी नहीं दिया गया था कि बहुत से इनसानों के चेहरे मुसर्रत से चमक रहे थे। ये सलीबी नहीं थे। या यूं कहिये सिर्फ़ सलीबी नहीं थे जो ज़ंगी के इन्तेक़ाल पर मसरूर थे। उन मे मुसलमान भी थे। जो सलीबीयों की निसबत कुछ ज़यादा ही ख़ूश नज़र आते थे। ये मुसलमान रियासतों और जागीरों के उमरा और हाकिम थे। वह सब ज़ंगी के घर जमा हो गए थे। वह जनाज़े के लिये आऐ थे। उन मे से बाज़ बेचैन थे जैसे ज़ंगी के इनतेक़ाल से ग़मज़दह हों । मगर बेचैनी ये थी कि वह ज़ंगी को शाम से पहले पहले दफ़न कर देना चाहते थे। वह इकट्ठे तो हो गऐ थे लेकिन उन के दिल फटे हुए थे। वह एक दूसरे को शक्की निगाहों से देख रहे थे। उन लोगों का मज़हब एक, खुदा एक, रसूल (स0) एक, कुरआन एक और दुशमन एक था। मगर हर एक का दिल दुसरे से अलग और जुदा था। उन की मिसाल एक दरख़्त की टहनी की सी थी। जो टूट कर दरख़्त से अलग हो गई हों और अब अलग अलग अपने आपको हरा भरा रखने की तवक्क़ो लिये हों।

वह दौर दर असल जागीर दारी और नवाबी का था। बाज़ मुसलमान रियासतें ज़रा वसीअ थीं और बाक़ी छोटी छोटी....... उन के हुकमरान अमीर कहलाते थे। ये लोग मरकज़ी ख़िलाफ़त के तेहत थे इसलाम के किसी भी दुशमन के ख़िलाफ़ जंग हो तो ये उमरा ख़िलाफ़त को माली और फ़ौजी मदद देते थे। मगर ये मदद सिर्फ़ मदद तक महदूद रहती थी । उस में कोई मिल्ली जज़्बा नही होता था। वह अम्न और सकून से ऐश व इशरत करने की ख़ातिर ख़िलाफ़त का मुतालबा पूरा कर देते थे। ऐश व इशरत की ख़ातिर वह अपने सब से बड़े (बल्कि वाहिद) दुशमन सलीबीयों से दर परदह दोसती करने से भी गुरेज़ नही करते थे। उन में से बाज़ ने सलीबीयों के साथ दर परदा मुआहिदे कर भी रखे थे लेकिन नूरुद्दीन ज़ंगी का वजूद सलीबीयों के रासते में एक चट्टान था। वह मुसलमान उमरा को कई बार शरमसार कर चुका था और उस ने उन्हें ज़ेहन नशीन कराने की सर तोड़ कोशिश की थी कि सलीबी उन्हें इसलामी वहदत से तोड़ कर हड़प करते जाऐंगे मगर सलीबीयों की मोहय्या की हुई यूरोपी शराब, नौजवान लड़कियों और सोने की ईटों में इतनी कुव्वत थी, जिस ने उन के कान बन्द और अकल सर बमुहर कर रखी थी। ज़ंगी की आवाज़ जैसे पत्थरों से टकरा कर

वापस आजाती थी।

वह सब से पहले जागीर दार और नवाब थे, अमीर और हकिम थे और उस के बाद अगर मज़हब की बहुत थल निकले तो वह अपने आप को मुसलमान कहते थे उनका अगर दीन था तो वह उन की रियासतें और जागरीरें थीं। यही उनका ईमान था। वह इसलामी वहदत के काइल नही थे जंग के सख़्त ख़िलाफ़ थे कियों कि उन्हें ख़तरा महसूस होने लगता था कि सलीबी उनके जागीरों पर कबज़ाा कर लेगें। उस के अलाव उनके दिलो में ये डर भी था कि उनकी रिआया ने अपने दुशमन को पहचान लिया तो उस मे रूहानी बेदारी और कौमी वकार बेदार हो जाऐगा। फिर रिआया उन की नवाबी के लिये ख़तरा बन जाऐगी। हकीकत ये थी कि रियाया उनके लिये मुसतकिल ख़तरह थी। लोगों में कौमी वकार मौजूद था। ज़ंगी की फ़ौज उन्हीं लोगों की फौज थी। उसके मुजाहिदों ने दस गुना दूशमन का मुकाबला भी किया था। ये जज़्बे का करिशमा था। उमरा को ये जज़्बा एक आंख नही भाता था। लिहाज़ा वह ज़ंगी को भी पसन्द नही करते थे और सुलतान अय्यूबी को तो वह अपना दुशमन समझते थे अब ज़ंगी फ़ौत होगया तो वह खुश थे उन्हें मालूम था कि इस कौम में अब कोई ज़ंगी नहीं रहा और जिहाद भी ज़ंगी के साथ ही दफ़न होजाऐगा।

ज़ंगी दफ़न हो गया। सलीबीयों पर मुसलमानों की जो दहशत तारी थी वह ख़त्म होगई। उन के दिल में अब सुलतान अय्यूबी का कांटा रह गया था जिस के मुतअल्लिक अब वह इतने फिकर मन्द नही थे जितने ज़ंगी की ज़िन्दगी में थे। अब सुलतान अय्यूबी अकेला रह गया था। उसे मदद और कुमक देने वाला ज़ंगी मर गया था। सलीबीयों को असल ख़ुशी तो इस पर हुई कि ज़ंगी के बाद सरकरदह उमरा वुज़रा ने ज़ंगी के कमसिन बेटे अलमलिकुस्सालेह को गद्दी पर बिठा दिय था जिस की उमर गयारह साल थी। ये इन्तेख़ाब उन उमरा ने किया था। जो दर परदा सलीबीयों के दोस्त थे। इस तरह सुलतान की गद्दी सलीबीयों के हाथ आगई थी। उन उमरा में गुमशतगीन नाम का एक अमीर जो दर असल किला दार था। और दूसरा सैफुद्दीन वालिए मोसिल था। दमिशक का हाकिम शमसुद्दीन बिन अबदुल मालिक था। अलजज़ीरह और नवाही इलाकों पर नूरुद्दीन ज़ंगी के भतीजे का राज था। उन के इलावा कई और जागीरदार थे। उन सब ने ख़ुद मुख़तारी का एलान कर दिया। वह बज़ाहिर ख़िलाफ़त के मातेहत थे लेकिन अमलन आज़ाद हो गऐ थे। वह अपनी अपनी जगह बहुत मसरूर थे मगर महसूस न कर सके कि वह ज़र्रों की तरह बिखर कर सलीबियों का आसान शिकार बन गए है।

ज़ंगी की वफ़ात से आलमें इसलाम को जो नुकसान पहुंचा था उसे ज़ंगी की बीवी ने महसूस किया। सुलतान अय्यूबी ने महसूस किया और उन लोगों ने महसूस किया जिन के दिल में इसलाम की अज़मत ज़िन्दह थी।

❖

इस हादसे को बहुत दिन गुज़र चुके थे। सुलतान अय्यूबी अपने कमरे में टहल रहा था। कमरे में मुसतफ़ा जूदत नाम का एक आला फौजी अफ़सर बैठा बोल रहा था। मुसतफ़ा तुरक

था। वह नूरुद्दीन ज़ंगी की फ़ौज में मुनजनीकों का कमाण्डर था। ज़ंगी की वफ़ात के बाद उस ने आलमे इसलाम में जो तबाह कुन इनकलाब देखा उस ने उसे तड़पा दिया। उस ने ये कह कर लम्बी छुट्टी ले ली कि उसे तुरकी गये कई साल गुज़र गए हैं। लिहाज़ा वह तुरकी अपने घर जाना चाहता है वह दमिश्क से रवाना हुआ। काहरा पहुंच गया और सुलतान अय्यूबी के पास चला गया। । मुसतफ़ा उन फ़ौजी अफ़सरों में से था जो अफ़सर कम और मुसलमान ज़ियादा होते हैं। उसे मालूम था कि ज़ंगी के बाद सिर्फ़ सुलतान अय्यूबी है जो इसलाम की पासबानी कर सकता है और करेगा। उसे डर था कि सुलतान अय्यूबी को उस तरफ़ के हालात का इल्म न होगा। चुनान्चे वह सुलतान अय्यूबी को वहां के हालात सुना रहा था।

"......... और फ़ौज किस हाल में है ?"—सुलतान अय्यूबी ने उस से पूछा।

" मोहतरम ज़ंगी मरहूम ने फ़ौज मे जज़्बा पैदा किया था वह ज़िन्दा है"— मुसतफ़ा ने जवाब दिया —" मगर ये जज़्बा ज़ियादा देर ज़िन्दा नही रह सकेगा। आप जानते है कि सलीबीयों के सैलाब को सिर्फ़ फ़ौज ने रोक रखा है। मोहतरम ज़ंगी मरहूम की ज़िन्दगी में अमलन फ़ौज हुकूमत कर रही थी जंगी मनसूबे और फ़ैसले फ़ौज के हाथ में थे। लेकिन ये इकदाम ख़िलाफ़त के एहकाम के ख़िलाफ़ था। अब हम ख़िलाफ़त के पाबन्द हो गए हैं। हम अपने आप कोई कारवाई नही कर सकते। अगर ख़लीफ़ा कोई जंगी मंसूबा बनाएगा ही नहीं तो फ़ौज किया करेगी। सलीबी जानते हैं कि मुसलमान उमरा में वह ग़ैरत ही नही जो कौमी अज़मत की ख़ातिर लड़ाती और मरवाती है और लोग जाने कुरबान करते हैं। सलीबीयों ने उमरा की ग़ैरत ख़रीद ली है और अब वह सालारों को ख़रीदने की कोशिश कर रहे हैं। उन की तख़रीबी सरगरमियां फ़ौज में भी और कौम में भी शुरू हो गई है। अगर ये अमल जल्दी न रोका गया तो सलीबी फ़ौज हमले के बग़ैर ही सलतनते इसलामिया के मालिक बन जाएंगे। सलतने इसलामिया जागीरों में तकसीम होगई है । उमरा को अब राहे रास्त पर नही लाया जा सकता । वह सलीबीयों की शराब में डूब गए हैं। उन्होंने वहां लड़कियों की फ़ौज उतार दी है। आप सुन कर हैरान होंगे कि ये लड़कियां उमरा के हरमों में रहती हैं। उन के कहने पर जश्न मनाए जाते हैं। जिन में सर करदह फ़ौजी अफ़सरों को मदउ करके ये लड़कियां बेहयाई से अपने जाल में फांस रही हैं"

" और उस के बाद मैं जानता हूं किया होगा।"—सुलतान अंय्यूबी ने कहा—" फ़ौजियों को नशे और बदकारी का आदी बनाया जाऐगा।"

" बनाया जा रहा है"—मुसतफ़ा ने कहा—" हशीशीन भी अपनी कारवाईयों में मसरूफ़ हो गए हैं। अब यूं होगा कि जो सालार या नाएब सालार सलीबीयों की दुशमनी दिल से नही निकालेगा और जिहाद का काएल रहेगा उसे हशीशीन के पेशे वर क़ातिलों के हाथों पुर असरार तरीके से कत्ल करा दिया जाएगा।"

मुसतफ़ा ने सुलतान अय्यूबी को तफ़सील से बताया कि कौन सा अमीर किया कर रहा है। उस तफ़सील का लुब्बे लुबाब ये थी । कि उमरा जहां ख़ुद मुख़तार हो गए थे वहां उन्हों

ने एक दूसरे को दुशमन समझना शुरूअ कर दिया है। सलीबी इस निफ़ाक़ और चपक़लिश को हवा दे रहे थे।

"आप ने अच्छा किया है कि वहां के हालात बताने आगए हैं।"—सुलतान अय्यूबी ने कहा—" अगर आप न आते तो मुझे इन तफ़सीलात का इल्म न होता। अलबत्ता ये अन्दाज़ह करना मुशकिल न था कि गयारह साल के बच्चे को सुलतान बना कर वह लोग किया करना चाहते हैं।"

" और आप किया करना चाहते हैं"—मुसतफ़ा ने पूछा—" अगर आप ने फ़ौरी कारवाई न की तो समझ लें के सलतनते इसलामिया का सूरज डूब गया है। आप की कारवाई सिर्फ़ जंगी होनी चाहिये।"

" ये दिन भी मुझे देखना था कि मैं भाईयों के ख़िलाफ़ जंगी कारवाई की सोंचूंगा।"—सुलतान अय्यूबी ने कहा—' मैं इस से डरता हूं कि मेरे मरने के बाद ग़द्दार तारीख़ में ये न लिख दें कि सलाहुद्दीन अय्यूबी ख़ाना जंगी का मुजरिम था।"

" अगर आप इस डर से काहरा में बैठे रहे तो तारीख़ आप पर ये शरम नाक इलज़ाम आएद कर देगी कि नूरुद्दीन ज़ंगी मर गया था तो सुलतान अय्यूबी का भी दम निकल गया था। उस ने मिस्र पर अपनी गिरफ़्त मज़बूत रखने के लिये सलतनते इसलामिया को कुरबान कर दिया था।"

" हां "—सुलतान अय्यूबी ने कहा—" ये इलज़ाम ज़ियादा शरमनाक होगा। मैं हर पहलू पर गौर कर चुका हूं मुसतफ़ा! अगर मैं जिहाद फी सबीलिल्लाह के लिये निकलता हूं तो मैं ये नही देखुंगा कि मेरे घोड़े तले कौन रोंदा जा रहा है। मेरी निगाह में वह कलमा गो कुफ़्फ़ार से बदतर है जो काफ़िर को दोस्त समझता है......... आप वापस चले जाऐं। मैं ने अली बिन सुफ़यान को वहां भेज रखा है लेकिन याद रखना कि वह जासूस के भेस में गया है। वहां किसी को मालूम नहीं हो सके गा कि अली बिन सुफियान उनके दरमियान घूम फिर रहा है और जायज़ा ले रहा है किस किसम की कारवाई की ज़रूरत है आप जा कर देखें कि कौन कौन सा सालार मशकूक है अली बिन सुफ़यान के साथ बहुत से आदमी गए हैं। वह जानते है कि उन्हें कया करना है उस के साथ ही मैं ने तमाम उमरा की तरफ़ इस पैग़ाम के साथ ऐलची भेजे हैं कि उमरा इन हालात में जब की सलीबी उन के सर पर बैठे हैं एक मुहाज़ पर मोरचा बन्द होजाऐं और आपस के इख़तलाफ़ात मिटाने की कोशिश करें। मुझे उम्मीद नही कि वह पैग़ाम को समझने की कोशिश करेंगे लेकिन मैं उन्हें सिर्फ़ एक बार बता देना चाहता हूं कि सीधा रासता कौन सा है। मैं उन्हें ये नहीं बताउंगा कि उन्हों ने मेरे कहे पर अमल न किया तो मैं किया करुंगा।"

मुसतफ़ा जूदत को रुख़सत करके सुलतान अय्यूबी ने अपने दरबान को चन्द एक सलारों और इन्तेज़ामिया के हुकाम के नाम ले कर उन्हें बहुत जल्दी उस के पास भेजा जाऐं। ये उस की हाई कमाण्ड थी जिसे उस ने बुला या था।

❖

काज़ी बहाउद्दीन शद्दाद जो सुल्तान अय्यूबी का दस्ते रास्त और हमराज़ दोस्त था और जो उस की मजलिस मुशावरत में आला रुतबा और मुक़ाम रखता था। अपनी याद दाशतों में लिखता है –" सलाहुद्दीन अय्यूबी को ख़ुदा ने फ़ौलाद के असाब अता किये थे। उस ने अपनी शख़सियत और किरदार को इस क़दर मज़बूत बना रखा था। कि पहाड़ों जैसे सदमे हंस खेल कर बरदाश्त कर लेता था। अज़्म का ज़िद्दी और मुसतक़िल मिज़ाज था। अमीर हो या गुलाम वह हर किसी का यकसां एहतराम करता था। अलबत्ता किसी को दूसरों से मुमताज़ समझता तो सिर्फ़ बहादूरी और शुजाअत की बिना पर समझता था। उस के क़रीब रहने वाले उस से दो तरह का तास्सुर लेते थे। एक रोब का दूसरा मुहब्बत का । उस के सिपाही जब मैदान .ए. जंग में देखते थे तो दुशमन पर टूट टूट पड़ते थे। एक बार यूं हुआ कि एक ख़ादिम ने दूसरे ख़ादिम पर जूता उतार कर फेंका। सलाहुद्दीन अय्यूबी कमरे से निकल रहा था। जूता उसे जा लगा। दोनों ख़ादिम थर थर कांपने लगे लेकिन सलाहुद्दीन अय्यूबी ने दोनों तरफ़ से मूहं फेर लिया और आगे निकल गया। ये किरदार की अज़मत का मुज़ाहिरा था। दोस्त तो दोस्त, दुशमन भी उसके सामने आते तो उस के मुरीद बन जाते थे.

....

" नूरुद्दीन ज़ंगी की मौत ने सलतनते इसलामिया को तारीख़ के सब से बड़े ख़तरे में डाल दिया था। उस ख़तरे का सब से ज़ियादा ख़तरनाक पहलू ये था कि अपने ही अमीर और वज़ीर सलीबीयों के दोस्त और इसलाम के दुशमन हो गए थे। मिस्र के अन्दरूनी हालात अभी पूरी तरह नहीं संभले थे। सलाहुद्दीन अय्यूबी मिस्र से नहीं निलक सकता था ऐसे हालात में वह यही कर सकता था कि सलतनते इसलामिया के दिफ़ा का इरादा दिल से निकाल दे और सिर्फ़ मिस्र के दिफ़ा को मज़बूत रखे । लेकिन मेरा ये दोस्त ज़र्रह भर न घबराया। इस ज़िम्न में मेरे साथ बात करते हुए उस ने कहा–" अगर में इसलाम की पासबानी से दसतबरदार हो जाऊं तो रोज़े महशर सलीबीयों के साथ उठाया जाऊंगा। – इसलाम की पासबानी और फरोग़ को वह फ़रमाने ख़ुदावंदी समझता था उस ने अपने आप को कभी हाकिम या हुकमरान नही समझा। मुझे सलाहुद्दीन अय्यूबी की नौजवानी भी याद है जब वह पूरी तरह ऐश व इशरत में डूब गया था वह शराब भी पीता था। और रक़्स व सरूद का दिलदादह था। मौसिक़ी और रक़्स की बारिकयों और गहराईयों को समझता और निसवानी हुस्न का दिल खोल कर ख़िराजे तहसीन पेश करता और तअय्युश के लिये हसीन तरीन लड़की का इंतेख़ाब करता था। कभी किसी के वहम व गुमान में भी नही आया था कि ये नौजवान चन्द ही साल बाद इसलाम का सब से बड़ा अलमबरदार और इसलाम के दुशमनों के लिये बर्क़ और तूफ़ान बन जाएगा। अपने चचा के साथ वह सलीबीयों के ख़िलाफ़ पहले ही मारके में गया तो उस ने सब को हैरान कर दिया और जब वह इस मारके से वापस आया तो उस ने पहला काम ये किया कि एश व इशरत पर लानत भेजी और अपनी ज़िन्दगी इसलाम के लिये वक़्फ़ करदी। उस ने क़ौम को और अपनी फ़ौज को ये नारा दिया कि सलतनते इसलामिया की कोई सरहद नहीं.

उसे इस बदली हुई कैफ़ियत में देखने वाले तसलीम नहीं करते थे कि वह कभी अय्याश भी हुआ करता था। किरदार की बुलन्दी और पुख़्तगी इसी को कहते हैं कि अपने नफ़्स और नफ़सानी ख़्वाहिशात को मार दिया जाए। ये पुख़्तगी सलाहुद्दीन अय्यूबी के किरदार में थी। दोसतों के महफ़िलों में वह कहा करता था –" मुझे काफ़िरों ने मुसलमान बना दिया है। अगर हम अपने उन नौजवानों को जो मज़हब से मुनहरिफ़ होगए हैं। काफ़िर की ज़ेहनियत दिखा दें तो वह राहे रास्त पर आ जाएंगे।। दुशमन के साथ उनहें प्यार के जो सबक़ दिये जा रहे हैं। वह उन्हें क़ौमी वक़ार से महरूम कर रहे हैं मै। अपनी क़ौम को अपने रसूल स० की ये हदीस याद कराना चाहता हूं कि अपने आप को जान लो कि तुम कौन हो और किया हो, और अपने दुशमन को अच्छी तरह पहचान लो कि वह कौन है और किया है और तुम्हारे मुतअल्लिक़ वह किया इरादे रखता है।"– उस के किरदार का रुख़ दुशमन ने ही बदला था. .... सलाहुद्दीन अय्यूबी अपने मकसद और अज़्म में इस हद तक मगन रहा कि उस ने कभी सोंचा ही नहीं था कि वह आलमें इसलाम का सब से बड़ा क़ाएद है मिस्र का हाकिमे कुल है और फ़ने हरब व ज़रब का ऐसा उसताद कि सलीबीयों के कमाण्डर मुत्तहिद होकर भी उस से ख़ाएफ़ रहते हैं। उस की माली हालत ये थी कि वह हज न कर सका। जिहाद ने उसे मोहलत न दी। आख़री उमर में इस की यही एक ख़्वाहिश रह गई थी कि हज पर जाए मगर अब इस के पास इतनी रक़म नही थी। वह जब फ़ौत हुआ तो उस की ज़ाती मता सिर्फ़ सैंतालीस दिरहम चान्दी के और एक टुकड़ा सोने का था। इस की जाएदाद सिर्फ़ एक मकान था जो उस के बाप दादा का था"

ये उस की किरदार की पुख़्तगी का हैरान कुन मुज़ाहिरा था कि उस ने जब अपने सालारों वग़ैरह को कान्फ्रेंस के लिये बुलाया तो उस के चेहरे पर घबराहट या परीशानी का शाएबा तक न था। कान्फ्रेंस के हाज़ेरीन पर ख़ामूशी तारी थी। उन्हें तवक़्क़ो थी कि सलाहुद्दीन अय्यूबी घबराया हुआ होगा। मगर उस ने मुसकुराकर सब को देखा और कहा।–" मेरे रफ़ीक़ो! तुम ने बड़े ही दुशवार और पेचीदा हालात में मेरा साथ दिया है। आज ऐसे हालात नें हमें ललकारा हैं जो बज़ाहिर हमारे क़ाबू में आने वाले नहीं। लेकिन याद रखो, अगर हम ने इन हालात पर क़ाबू न पाया तो हम सब के लिये दुन्या में भी रुसवाई है और ख़ुदा के हुज़ूर में भी रुसवाई। दूनया में तारीख़ हमारी क़बरों पर लानत भेजेगी और रोज़े महशर वह हमें शर्मसार करेंगे जिन्हो ने इस्लाम की आबरू पर जाने क़ुरबान की हैं। अब वक़्त आगया है कि हम सब जानें क़ुरबान करदें"– इस तमहीद के बाद उस ने अपने आला हुक्काम को हर एक तफ़सील बताई और कहा कि अब उन्हें अपने भाईयों के ख़िलाफ़ लड़ना पड़ेगा। उस ने सब के चेहरों का जाइज़ा लिया। कुछ देर ख़ामोश रहा। सब के चेहरों के रंग बदल गये थे। उसे इतमिनान हो गया कि ये हुकाम हर सूरते हाल में उस का साथ देंगे। उस ने कहा–" मेरा पहला इक़दाम ये है कि मैं अपनी ख़ुद मुख़तारी का एलन करता हूं। मैं अब मरकज़ी ख़िलाफ़त का पाबन्द नहीं रहना चाहता। लेकिन मैं ये ऐलान तुम सब की इजाज़त के बग़ैर नहीं दूंगा। मुझे इजाज़त देने या न देने से पहले एक दो पहलुओं पर ग़ौर कर लो। ऐक ये कि ख़िलाफ़त

अमलन ख़त्म हो चुकी है। जैसा कि मैने तुम्हें बताया है कि ख़लीफ़ा गयारह साल का बच्चा है। इस पर तीन चार उमरा ने कबजा कर रखा है। ये उमरा सलीबीयों के दोस्त हैं लिहाज़ा आप को ये समझने में देर नहीं लगनी चाहिये कि ख़िलाफ़त सलीबीयों की गोद में चली गई है अब हमारी टक्कर ख़िलाफ़त के ख़िलाफ़ है अगर तुम खुद मुख़तार और आज़ाद नहीं होते तो तुम्हें ख़लीफ़ा का हुक्म मानना पड़ेगा। और ये हुक्म सलतनते इसलमिया के लिये तबाह कुन होंगे। किया इन हालात में ये इक़दाम सही होगा कि मैं मिस्र को ख़िलाफ़त से आज़ाद करदूं और उस के बाद तुम्हारा हर कदम ऐसा आज़ादाना हो जो इसलाम की बका के लिये ज़रूरी हो?"

" किया आप ख़िलाफ़त के ख़िलाफ़ कारवाई करना चाहतें हैं।" एक सालार ने पूछा।

" मैं ने अभी फ़ैसला नहीं किया "— सुलतान अय्यूबी ने जवाब दिया।—" कल परसों तक मेरे वह ऐलची वापस आजाऐंगे जिन्हें मैं ने उमरा की तरफ़ भेज रखा है अगर मुझे जंगी कारवाई का फैसला करना पड़ा तो गुरेज़ नहीं करूंगा।"

" आप मिस्र को ख़ुद मुख़तार ममलिकत करार दे दें।" एक हाकिम ने कहा—" हम गयारह साल के बच्चे को ख़लीफ़ा तसलीम नहीं कर सकते।"

" तो तुम सब मुझे सुलताने मिस्र तसलीम करोगे।"सुलतान अय्यूबी ने पूछा।

तमाम हाज़ेरीन ने बेयक ज़बान कहा कि वह उसे सुलताने मिस्र तसलीम करते हैं। सलाहुद्दीन अय्यूबी ने उसी वक़्त ख़ुद मुख़तारी का एलान कर दिया और मिस्र को आज़ाद ममलिकत करार दे दिया। इस एलान के साथ ही उसे उसी वक़्त कानून के मुताबिक़ सुलतान का ख़िताब मिल गया।

"मैं उम्मते रसूलुल्लाह स0 का नहीं मैदाने जंग का बादशाह हूं।" सुलतान अय्यूबी ने कहा।—" तुम ने देखा है कि मैं सलीबीयों के लशकर के दरमियान घूमता फिरता रहा हूं। मै ने दस दस जांबाज़ों से दस दस हज़ार लशकरों को तह व बाला किया है। मगर अपने भाईयों के ख़िलाफ़ जंग की सोचता हूं तो तमाम जंगी चालें ज़ेहन से निकल जाती हैं। मेरी तलवार नियाम से बाहर नहीं आती। मुझे और तुम सब को ये दिन भी देखना था कि हम आपस में लड़ें और सलीबी तमाशा देखें।"

" ये तमाशा हमें दिखाना ही पड़ेगा सुलतानें मोहतरम!" — एक सालार ने कहा।—" अगर अपने भाईयों पर अलफ़ाज़ का असर न हो तो तलवार इसतेमाल करनी ही पड़ेगी। हम में से कोई भी ख़िलाफ़त की गद्दी का ख़्वाहिशमन्द नहीं। हम जो कुछ करेंगे इसलाम की ख़ातिर करेंगें। ज़ाती मुफ़ाद की ख़ातिर नहीं।"

❖

सूलतान अय्यूबी ने इस से पहले दो ऐलची दमिश्क़, हल्ब, मोसिल और दो तीन और रियासतों के उमरा की तरफ़ भेज रखे थे। उस ने सब को तवील पैग़ाम भेजा था जिस में उस ने सब को सलीबी ख़तरे से आगाह किया और उन्हें मुत्तहिद होने की तलक़ीन की थी। वह उन्हें इसलामी वहदत का काएल करना चाहता था। दोनो ऐल्ची मायूस वापस आगए। किसी

एक भी अमीर ने उस के पैग़ाम को कुबूल नहीं किया था बल्कि बाज़ ने मज़ाक उड़ाया था। ऐलचीयों ने सूलतान अय्यूबी को बताया की वह सब से पहले ख़लीफ़ा के दरबार में गए। पैग़ाम पेश किया तो ख़लीफ़ा ने ख़ुद पढ़ने की बजाए उन उमरा के हवाले कर दिया जिन के हाथों में वह कठ पुतली बना हुआ था। उन्हों ने ही उसे ख़िलाफ़त की गद्दी पर बिठाया था। उन उमरा ने सूलतान अय्यूबी का पैग़ाम पढ़ा । आपस मे खुसर फुसर की और एक ने ख़लीफ़ा से कहा कि सूलतान अय्यूबी सलीबीयों के ख़िलाफ़ जंग का बहाना करके तमाम मुसलमान रियासतों को ऐ रियासत बनाने की सोंच रहा है। उस के बाद वह इस रियासत का हुकमरान बनेगा। दूसरा अमीर बोल पड़ा। उसने भी गयारह साल की उमर के ख़लीफ़ा को सूलतान अय्यूबी के ख़िलाफ़ भड़काया और कहा–" आप उसे हुक्म दे सकते है। कि जंग करने या न करने का फैसला सिर्फ ख़लीफ़ा कर सकता है। अगर सलाहुद्दीन अय्युबी ख़लीफ़ा की हुक्म अदूली करे तो आप उसे माजूल करके वापस बुला सकते हैं। मिस्र की इमारत किसी और के हवाले की जा सकती है।"

कमसिन ख़लीफ़ा ने ऐलचीयों को यही हुक्म दिया और कहा–" सूलतान अय्यूबी से कहना कि वह हमारे हुक्म का इन्तेज़ार करे। ये फ़ैसला हम करेंगे कि इसलामी वहदत ज़रूरी है कि नहीं।"

" सलाहुद्दीन अय्यूबी के पास जो फ़ौज है उस में ज़ंगी मरहूम के भेजे हुए बहुत से दसते है।" एक अमीर ने ख़लीफ़ा से कहा–" उसे हुक्म भेजा जाए कि वह दसते वापस भेज दे। उसे अपनी मरज़ी से फ़ौज के इसतेमाल की इजाज़त नही मिलनी चाहिये।"

" उसे कहना कि वह दसते और पियादह जो उसे ख़िलाफ़त की तरफ़ से दिये गये थे। वह वापस करदे।" ख़लीफ़ा ने कहा।–" और तुम लोग अब जा सकते हो।"

" और अय्यूबी से कहना कि आइन्दा ख़लीफ़ा को इस किसम के पैग़ाम भेजने की जुरअत न करे।" एक और अमीर ने कहा।

ऐलचीयों ने सूलतान अय्यूबी को बताया कि वह दूसरे उमरा के पास गऐ। सब ने पैग़ाम का मज़ाक उड़ाया। बाज़ ने सूलतान अय्यूबी के ख़िलाफ़ तौहीन आमेज़ अलफ़ाज़ भी कहे। ऐलची वापस आगए। सूलतान अय्यूबी के चेहरे पर कोई तबदीली न आई जैसे उसे ऐसे ही जवाब की तवक़्क़ो थी । उसे दर असल अली बिन सुफ़यान का इन्तेज़ार था जिसे उस ने ख़ुफ़या दमिश्क भेज रखा था। फ़ौजी जासूसी और सुराग़ रसानी का ये माहिर अपने साथ कम व बेश एक सौ लड़ाका जासूस ले कर दमिश्क गया था। ये लोग ताजिरों के क़ाफ़लों की सूरत में ताजिरों के भेस में गए थे। सूलतान अय्यूबी को उन की भी कोई इत्तेला नही मिली थी। नूरुद्दीन ज़ंगी की वफ़ात की इत्तेला के फ़ौरन बाद सूलतान अय्यूबी को ये इत्तेला मिली के अमीरों ने ख़ुद मुख़तारी का एलान कर दिया है। ये इत्तेला भेजने वाला कोई मामूली सा इन्सान नहीं था बल्कि नूरुद्दीन ज़गी की बीवी थी। जो नये ख़लीफ़ा की मां थी। उस ने ख़ुफ़या तौर पर अपना एक क़ासिद क़ाहरा की तरफ़ दौड़ा दिया था। उस ने सूलतान अय्यूबी को वही हालात बताऐ जो ज़ंगी की वफ़ात के बाद वहां पैदा हो गए थे।

उस ने सूलतान अय्यूबी को कहला भेजा था–" अब इसलाम की आबरू आप के हाथ में है। मेरे कमसिन बेटे को खलीफा बना दिया गया है। लोग मेरा एहतराम करने लगे है। कियों कि मैं खलीफा की मां हूं। वह समझते है। कि मैं खुश किसमत मां हूं मगर मेरा दिल खून के आंसू रो रहा है। मेरे बेटे को खलीफा नहीं बनाया गया बल्कि मुझ से छीन लिया गया है । सैफुद्दीन अमीरे मोसिल ने और दुसरे तमाम अमीरों ने मेरे बेटे के गिर्द घेरा डाल लिया है। मेरे खाविन्द के भतीजों ने भी खुद मुखतारी का एलान कर दिया है। अगर उन अमीरों का आपस में इत्तेहाद होता तो मैं इतनी परीशान न होती । ये सब एक दूसरे के दुशमन हो गए हैं। अगर आप कहें तो मैं अपने हाथों अपने बेटे को कत्ल कर दूं लेकिन उस के नताएज से डरती हूं। आप आजाऐं। ये आप बेहतर समझते हैं कि आप किस तरह आऐंगे और किया करेंगे। मैं आप को खबर दार करना चाहती हूं कि आप ने इस तरफ तवज्जोह न दी या वक़्त जाए कर दिया तो किबला अव्वल पर तो सलीबी काबिज़ है ही, खानां काबा पर भी उनका कबजा हो जाऐगा। किया उन लाखों शहीदों का ख़ून राएगां जाएगा जिन्हों ने ज़ंगी की और आप की कियादत में जाने कुरबान की हैं। आप मुझ से पूछेगें कि मैं अपने बेटे को अपने ज़ेरे असर कियों नही रखती ? मैं इस का जवाब दे चुकी हूं। उमरा ने मेरा बेटा छीन लिया हैं अपने बाप की वफात के बाद वह सिर्फ एक बार मेरे पास आया था। वह मेरा बेटा लगता ही नहीं था। उसे शायद हशीश पिलाई गई थी। वह भूल चुका है कि मै उस की मां हूं..... भाई सलाहुद्दीन ! जलदी आओ । दमिश्क के लोग आप का इसतकबाल करेंगे। मुझे इसी कासिद की ज़बानी जवाब दें कि आप किया करेंगे या कुछ भी नहीं करेंगे।"

सूलतान अय्यूबी ने कासिद को उसी वक़्त भेज दिया था उस ने ज़ंगी की बेवह को यकीन दिलाया था कि वह बड़ा संगीन इकदाम करेगा लेकिन सोंच समझ कर कदम बढ़ाएगा। कासिद को वापस भेजने के फौरन बाद सूलतान अय्यूबी ने अली बिन सुफ़यान को दमिश्क, मौसिल ,हल्ब ,यमन और तमाम तर इसलामी इलाक़ों मे जाकर वहां का जाइज़ा लेने के लिये कहा। ये कोई सरकारी नौईयत का दौरह नही था। अली बिन सुफ़यान को जसूसों के अन्दाज़ से बहरूप में वहां जाना था उस का काम ये था कि मालूम करे कि मुसलमान उमरा जो खुद मुखतारी काएलान कर चूके है। किया इरादे रखते है। सलीबीयों के साथ उनका कोई राबता है या नहीं । खलीफा की फौज का रुजहान किया है किया उस फौज को खलीफा के एसे एहकाम की खिलाफ वरजी के लिये तैयार किया जा सकता है जो इसलाम के लिये नुकसान देह और दुशमन के लिसे सूद मन्द हों ? और अली बिन सुफ़यान को ये भी मालूम करना था कि उन इलाक़ों के अवाम के जज़बात और नज़रयात किया हैं। और किया फ़िदाई भी खलीफा के साथ मिल गए हैं। ये जाइज़ा भी लेना था। कि सूलतान अय्यूबी दमिश्क या किसी और मुसलमान इलाके पर फौज कशी करे तो वहां के अवाम का रद्दे अमल किया होगा।

सूलतान अय्यूबी की कामयाबी का राज़ यही था कि वह अंधेरे मे नही चलता था । उसे जहां जाना होता अपने जासूसी के निज़ाम के जरिये वहां के अहवाल व कवाएफ , दुशवारियों और खतरों का जाइज़ा ले लेता था। जैसा कि पहली कहानियों में बताया जा चुका है कि उस

का जासूसी का निज़ाम बहुत तेज़ और होशियार था। उस के जासूस जाहां अदाकारी और बहरूप धारने की महारत रखते थे। वहां वह माहिर छापा मार (गोरीले और कमाण्डू) भी थे। इसी लिये उन्हें लड़ाका जासूस कहा जाता था। वह बग़ैर हथ्यिारों की लड़ाई के भी माहिर थे। अली बिन सुफ़यान को खुदा ने जासूसी और सुराग़रसानी का वस्फ़ पैदाईश के साथ ही अता किया था। अब ज़ंगी की वफ़ात के बाद इसलामी ममालिक के हालात मख़दूश होगए और सलीबी ख़तरा सर पर आगया तो उसे सूलतान अय्यूबी के इस हुक्म को समझने में कोई मुशकिल पेश न आई कि इन बदले हुए हालात का जाइज़ा लेना है और ये जाईज़ा किस तरह लेना है उसे मालूम था कि सूलतान अय्यूबी उस की लाई हुई रिपोर्ट के मुताबिक़ कोई कारवाई करेगा और ये कारवाई बक़ाए इसलाम के लिये बेहद ज़रूरी होगी।

❖

यहां हम कहानी को कुछ दिन पीछे ले जाते हैं। जब अली बिन सुफ़यान क़ाहरा से रवाना हुआ था। उसे एक लमहा भी ज़ाऐ किये बगैर लड़ाका जासूसों में कम व बेश एक सौ अफ़राद को मुन्तख़ब किया। उन्हें मिश्न बताया और कहा इसलाम की आबरू उन से बड़ी क़ुरबानी मांग रही है और इस मिश्न में इन्हें अपनी महारत का पूरा पूरा इसतेमाल करना है। उन एक सौ आदमियों को ताजिरों का लिबास पहनाया गया। अली बिन सुफ़यान मसनुई दाढ़ी के साथ क़ाफ़ले का सरदार बना। उन्हों ने ऊंटों पर मुख़तलिफ़ इक़साम का सामान लाद लिया जो उन्हें दमिश्क़ वग़ैरह की मण्डीयों मे बेचना और उस के बदले वहां से सामान लाना था। उन के साथ बहुत से ऊंट और चन्द एक घोड़े थे। तिजारती सामान में इस पारटी ने तलवारों और बरछियों जैसे हथयार छिपा रखे थे। इस में आतिश गीर मादह भी था और आग लगाने का दिगर सामन भी। ये क़ाफ़ला रात के वक़्त क़ाहरा से रवाना हुआ और तुलूअ सहर तक बहुत दूर निकल गया।

कुछ देर आराम करके क़ाफ़ला फिर रवाना हुआ। अली बिन सुफ़यान बहुत जल्दी मनज़िल पर पहुंचना चाहता था। सूरज ग़रूब होगया तो भी उस ने क़ाफ़ले को न रोका। रात ख़ासी गुज़र चुकी थी जब एक बड़ी मौज़ू जगह आ गई। ये सर सब्ज़ ख़ित्ता था और वहां उंची नीची चट्टानें भी थीं। ज़ाहिर है कि वहां पानी भी था। क़ाफ़ला आराम और पानी के लिये रुक गया। ये लोग ताजिर नहीं फ़ौजी थे। उन की हर हरकत में डिसिपलीन था। इहतियात थी और टरेनिंग के मुताबिक़ वह ख़ामोशी इख़तियार किये हुए थे। ऊंट और घोड़े भी ऐसे तरबियत याफ़्ता थे कि इनसानों की तरह ख़ामोश थे। अली बिन सुफ़यान ने चट्टानों और टीलों के अन्दर जाने की बजाए बाहर ही पड़ाव किया। फ़ौजी दस्तों के मुताबिक़ दो आदमियों को पानी की तलाश के लिये भेजा गया। सब ने हथ्यार निकाल लिये थे। कियों कि उन दिनों सफ़र में दो ख़तरे थे। एक ख़तरह सेहराई डाकूओं का था और दूसरा ख़तरह सलीबीयों के छापा मार दसतों का। उन के ये दसतें दर असल डाकू ही थे। जो मुसलमानों के क़ाफ़लों को लूटते फिरते थे।

दो आदमी इस ख़ित्ते के अन्दर चले गए। उन्हें ये भी देखना था कि यहां दुशमन के छापा

मारों या गशती के दसतों ने कियाम न कर रखा हो । कुछ दूर अन्दर गए तो रौशनी का धोका सा हुआ। वह आगे गए और एक टीले पर चढ़ गये। उन्हें बड़ी अच्छी जगह नज़र आई जो मैदान सी थी। वहां पानी भी था। हरयाली भी थी और खुजूर के दरख़्त भी थे। वहां दो मशअलें जल रहीं थीं। उन की रौशनी मे उन्हें छ सात आदमी और चार लड़कियां नज़र आईं। बहुत खबसूरत लड़कियां थीं। उन्हों ने आग भी जला रखी थी जिस पर वह गोश्त भून रहे थे। बहुत सारा सामान भी ऐक तरफ़ पड़ा था। अली बिन सुफ़यान के दोनो आदमी छुप कर क़रीब चले गए। रात के सकूत में उन लोगों की बाते साफ़ सुनाई दे रही थीं। उन का हंसी मज़ाक बता रहा था कि ये लोग मुसलमान नहीं लड़कियां बे हयाई की हरकतें कर रही थीं। उन दोनों आदमियों ने उन्हें नज़र अन्दाज़ न किया। वापस आकर अली बिन सुफ़यान को बताया।

अली बिन सुफ़यान गया और छुप कर क़रीब से देखा। उन आदमियों और लड़कियों की ज़बाने कुछ और थी। जो अली बिन सुफ़यान समझता था। वह इसाई थे अली बिन सुफ़यान सोंच रहा था कि वह उन लोगों के पास चला जाए और मालमू करे के वह कौन हैं और कहां जा रहें हैं। या उन की नक्ल व हरकत देखता रहे । उस के साथ एक सौ लड़ाका जासूस थे। उसे उन छ सात आदमियों और चार लड़कियों से कोई ख़तरह नही था लेकिन वह उन्हें सुराग़ रसां निगाहों से देख रहा था। उसे शक हो गया था कि सलीबी जासूस और तख़रीब कार हैं। और किसी इसलामी ममलिकत मे जा रहें हैं। अगर एसा ही था तो ये उस के मतलब के लोग थे। वह और ज़यादा करीब होने के लिये टीले के उपर सिरकता हुआ आगे गया तो ठठक कर रुक गया। वहां टीला ख़त्म हो जाता था। उसे अपने बिलकुल नीचे दो आदमी नज़र आए जिन के मुहं और सर सियाह कपड़े में लिपटे हुए थे। वह टीलों की ओट से उन आदमियों और लड़कियों को देख रहे थे। वह बिला शक व शुबह सेहराई डाकू थे और उन की नज़र लड़कियों पर थी। ये दो नक़ाब पोश पीछे हट आए । उन्हों ने आपस में जिस ज़बान मे बातें कीं वह अली बिन सुफ़यान की मादरी ज़बान थी।

" उन के पास हथ्यार हैं।"—एक डाकू ने कहा।

" हां"— दूसरे ने कहा—" मै ने देख लिया है उनकी तलवारें सीधी हैं। ये ईसाई हैं।"

" ये आम किसम के मुसाफ़िर मालूम होते हैं।"

" उन्हें सो जाने दो। सब को बुला लाते हैं।"

" हम आठ आदमी उन्हें सोते मे ही पकड़ सकते हैं।"

" पकड़ने की किया ज़रूरत है। आदमियों को सोते मे ख़त्म कर देंगे। और लड़कियों को घोड़ों पर डाल लेंगें।"

वह दोनो अपने साथियों को बुलाने के लिये चल पड़े। अली बिन सुफ़यान ने छुप छुप कर उन का तआकुब किया। वह किसी और रासते से बाहर निकल गये। वहां उन के घोड़े खड़े थे। वह घोड़ों पर सवार हुए और अन्धेरे में ग़ाएब हो गये। अली बिन सुफ़यान का क़ाफ़ला ऐसी तरफ़ कियाम किये हुए था जिधर डाकू नहीं गए थे। अली बिन सुफ़यान के लिये ये

फैसला करना मुशकिल होगया कि वह उन लोगों को ख़बर दार कर दे या उन्हें अपने काफ़ले मे ले जाए। गहरी सोंच बिचार के बाद उस ने ऐक तरीका सोंच लिया। अपने आदमियों मे वापस आया। बीस बाईस आदमियों को बरछी से मुसल्लह करके अपने साथ ले गया। उन्हें मौजूं जगहों पर तैयार करं दिया और अच्छी तरह समझा दिया कि उन्हें किया करना है। वह खुद भी चौकस और होशियार रहा और इधर उधर घूमता रहा। उसे मालूम नही था कि डाकू किस वक़्त आएगें। उस ने देखा कि लड़कियां और उनके सात आदमी सो गए हैं। सिर्फ एक आमदी बरछी हाथ मे लिये टहलता रहा। उस से मालूम होता था कि ये लोग तरबियत याफ्ता हैं। इस आदमी को उन्होंने सन्तरी खड़ा किया था। मशअलें जलती रहीं।

❖

सेहर हो चली थी जब टीलों के अन्दर घोड़ों के चलने की आहट सुनाई दी। सब होशियार हो गए। लड़कियों का संतरी बदल गया था। अब दूसरा आदमी पहरा दे रहा था। डाकू टीलों के दरमियान थे और अली बिन सुफ़यान और उस के आदमी टीलों के उपर। थोड़ी ही देर बाद आठ नौ डाकू उस जगह दाखिल हुए जहां उन का शिकार सोया हुआ था। संतरी घबरा गया। उस ने जलदी से अपने साथी को जगाया। डाकूओं ने उन के गिर्द घेरा डाल लिया और घोड़ों से कूद आए। लड़कियों के साथ आदमी जाग उठे मगर डाकूओं ने उन्हें हथ्यार उठाने की मोहलत न दी। एक ने ललकार कर कहा।–" अपना सामान और लड़कियां हमारे हवाले करदो अपनी जानें बचाओ "– उस ने लड़कियो से कहा। –" तुम इस तरफ़ आजाओ, मारी जाओगी।"– दो डाकूओं ने उन्हें धकेल कर उन्हें एक तरफ़ कर दिय। उन के आदमी निहत्ते थे। फिर भी दो ने मुक़ाबला करने की कोशिश की। वह वाकई तरबियत याफ़्ता थे। बेजिगरी से लड़े।

अली बिन सुफ़यान की आवाज़ पर जो उस ने पहले मुकर्र कर रखी थी, उस के आदमी उक़ाबों की तरह टीलों से उतरे और डाकू आमी समझ ही न पाए थे कि ये कौन लोग है। कि एक एक बरछी एक एक डाकू के जिस्म में दाख़िल हो चूकी थी। इस से पहले डाकूओं के हाथों लड़कियों के साथ के दो आदमी मारे जा चूके थे जिस का अली बिन सुफ़यान को कोई आफसोस नही था। वह ग़ालिबन यही चाहता था कि उन मे से एक दो आदमियों का खून बह जाऐ ताकि दूसरों पर खुसूसन लड़कियों पर दहशत तारी हो जाऐ। अली बिन सुफ़यान ने अपने आदमियों को टीलों पर चढ़ा दिय। और उन लोगों के पास बैठ गया। लड़कियां बहुत डरी हुई थीं। उन के सामने दो लाशें अपने साथियों की और नौ लाशें डाकूओं की पड़ी थीं। अली बिन सुफ़यान ने उन की ज़बान मे उन आदमियों और लड़कियों से बातें शुरूअ कर दीं। वह लोग उस के इस कदर ममनून थे जैसे उस के मूरीद बन गए हों। उस ने उन्हें मौत के मूहं से निकाला था। उन से उस ने पूछा कि वह कहां से आए हैं और कहां जा रहें हैं। उन्हों ने जवाब दिया तो अली बिन सुफ़याना मुसकुराया और बोला।–" अगर तुम लोग मुझ से सवाल पूछते तो मैं भी एसा ही ग़लत जवाब देता। मैं तुम्हारी तारीफ करुगां कि इतनी खौफ़ज़दगी में भी तुम ने अपना परदह नहीं उठाया।"

" तुम कहां से आऐ हो ? "— एक ने उस से पूछा—" और कहां जा रहे हो?"

" जहां से तुम आए हो"— अली बिन सुफ़यान ने जवाब दिया।—" और वहीं जा रहा हूं जहां तुम जा रहे हो हमारे काम मुख़तलिफ़ हैं। मनज़िल एक ही है।"

उन्हों ने एक दूसरे की तरफ़ देखा । हैरान से हुए और अली बिन सुफ़यान को देखने लगे। वह मुसकुरा रहा था। उस ने कहा—" किया तुम ने देखा था कि मैं ने कैसी चाल से इन डाकूओं को ख़त्म कर दिया है? किया कोई मुसाफ़िर या कोई काफ़ला ऐसी चाल चल सकता है? किया ये एक तरबियत याफ़ता कमाण्डर की उसतादी नही जो मैं ने दिखाई है?"

" तुम मुसलमान फ़ौजी भी हो सकते हो।"

" मैं सलीब का सिपाही हूं"— अली बिन सुफ़यान ने जवाब दिया।

" किया तुम अपनी सलीब दिखा सकते हो?"

" किया तुम अपनी अपनी सलीब मुझे दिखा सकते हो?"— अली बिन सुफ़ियान ने पूछा और सब की तरफ़ देख कर कहा—" तुम नहीं दिखा सकते। तुम्हारे पास सलीबें नहीं हैं। कियोंकि जिस काम के लिये तुम जा रहे हो उस मे सलीब साथ नही रखी जा सकती । मैं तुम से तुम्हारे नाम नहीं पूछुगां। अपना नाम भी नही बाताउगां। अपना काम भी नहीं बताउगां। सिर्फ़ ये बतादेना ज़रूरी समझता हूं कि हम एक ही मनज़िल के मुसाफ़िर हैं और हम में से मालूम नही कौन कौन अपने वतन को वापस लौट सकेगा। हम ज़रूर कामयाब होंगे। खुदा वन्दे यसूअ मसीह ने जिस तरह मुझे और मेरे आदमियों को तुम्हारी मदद के लिये भेजा है ये निशानी है कि तुम सहीह रासते पर हो और तुम कामयाब होगे। नूरुद्दीन ज़ंगी की मौत इस हकी़कत की निशानी है कि दुनिया पर सलीब की हुकूमत होगी। मुसलमानों का कौन सा अमीर रह गया है जो हमारे जाल में नही आगया? मैं तुम्हें यही नसीहत करूंगा। कि साबित कदम रहना "— उसने लड़कियों की तरफ़ देख कर कहा—" तुम्हारा काम सब से ज़यादा नाज़ुक और ख़तरनाक है। खुदा वन्दे यसूअ मसीह तुम्हारी कुरबानी को कभी फ़रामोश नहीं करेगा। हम जो मर्द हैं वह अपनी जान दे कर दुनिया की मुशकिलात से आज़ाद होजाते है। तुम्हारी कोई जान नही लेता । तुम से आबरू की कुरबानी ली जाती है और यही सब से बड़ी कुरबानी है।"

अली बिन सुफ़ियान उसताद था। उस की ज़बान में एसा तिलिस्म था कि वह सब दम बखुद हो गये। थोड़ी सी देर में उस ने उन से कहलवाया कि वह सलीबी हैं और तख़रीब कारी के लिये दमिश्क़ और दीगर इलाक़ों में जा रहें हैं। वह भी ताजिरों के भेस में थे। अली बिन सुफ़ियान सलीबीयों के निज़ामे जासूसी की खुफ़या बातें और इसतलाहें जानता था। उस वक़्त तक वह बे शुमार सलीबी जासूस पकड़ कर उन से इक़बाले जुर्म कर वा चूका था। उस ने जब इन इसतलाहों में बातें कीं तो लड़कियों औ उन के साथ के आदमियों को न सिर्फ़ यकीन हो गया कि वह सलीबी जासूस है बल्कि वह उसे जासूस का कमाण्डर समझने लगे। उस ने उन्हें बताया कि उस के साथ एक सौ आदमी हैं। उन में लड़ाका जासूस भी हैं और फ़िदाई भी जो दमिश्क़ वग़ैरह में उन आला अफ़सरों को क़त्ल करने या गएब करने जा रहे

हैं। जो सलाहुद्दीन अय्यूबी के मकतबे फ़िक्र के पैरूकार हैं। उस ने उन्हें बताया कि वह लमबे अरसे से मिस्र में काम कर रहा था। अब उसे इधर भेजा जा रहा है।

इस गिरोह ने अली बिन सुफ़ियान केसामने अपना परदह उठा दिया और एक मुशकिल पेश की। वह ये थी कि उन का कमाण्डर डाकूंओ के हाथों मारा गया था। वह इन इलाकों में पहले भी आ चुका था जहां वह जा रहे थे। उस के मारे जाने के बाद वह अंधे हो गए थे। उनहें एक राहनुमा की ज़रूरत थी। अली बिन सुफ़ियान ने उन्हें तसल्ली दी कि वह अपने मिश्न से हट कर उन की राहनुमाई करेगा। वह उसे अपना मिश्न बतादें। उन्हों ने बता दिया। उन्हें चन्द एक सालारों के नाम बता कर कहा गया था कि उन तक तोहफ़े पहुंचाने हैं और लड़कियों को ज़रूरत के मुताबिक़ इसतेमाल करना है। ऐसे सालारों और अमीरों तक रिसाई हासिल करनी है जो सलीबीयों को अपना दुशमन समझते हैं। उनहें सलीबीयों का दोस्त बनाना है।

" इस मरहले मे आकर मेरा तुम्हारा काम एक हो जाता है।"– अली बिन सुफ़ियान ने कहा–" मुझे उन सालारों और काइदीन को ख़त्म करना है जो दिल से सलीब की दुशमनी नहीं निकाल रहें .... तुम दमिश्क में कहां क़ियाम करोगे?"

" तुम देख रहे हो कि हम ताजिर बन कर जा रहे हैं "– एक ने जवाब दिया –" दमिश्क के क़रीब जाकर ये लड़कियां बा परदह मुसलमान औरतें बन जाऐंगें । हम सारए में क़ियाम करेंगे। वहां से ताजिरों के भेस में सालारों वग़ैरह तक जाऐंगे।

❖

अगली सुबह अली बिन सुफ़ियान का क़ाफ़ला दमिश्क की सिम्त जा रहा था। ये सलीबी लड़कियां भी इस काफ़ले में शामिल हो गई थीं। जानवरों में डाकूओं के घोड़ों का इज़ाफ़ा हो गया था। सलीबीयों ने अली बिन सुफ़ियान को अपना लीडर बना लिया था उन की नज़र में वह सलीबी था। उस ने उन्हें कहा था। कि वह इस के किसी आदमी के साथ बात न करें कियों कि उन में मुसलमान भी हैं जो बेशक फ़िदाई और तख़रीब कार हैं लेकिन उन का कोई भरोसा नही। रास्ते में अली बिन सुफ़ियान ने उन सलीबीयों को अपने साथ रखा और उन से बातें पूछता रहा। उसे काम की बहुत सी बातें मालूम हो गई।

अगले रोज़ क़ाफ़िला दमिश्क में दाख़िल हुआ। अली बिन सुफ़ियान की हिदायत पर सराए में जाने की बजाए क़ाफ़िले ने एक मैदान में ख़ेमें गाड़ दिये। लोगों का हुजूम जमा हो गया। बाहर से जब ताजिरों के क़ाफ़ले आते थे तो लोंग उन के गिर्द जमा होजाया करते थे। उन की कोशिश ये होती थी कि माल दुकानो में जाने से पहले ही क़ाफ़िले से ही ख़रीद लिया जाए। वहां से कम क़ीमत पर अशया मिल जाती थीं। अली बिन सुफ़ियान ने एलान किया कि दस घोड़े भी बिकाऊ हैं। इस हुजूम में दमिश्क के ताजिर और दुकानदार भी थे। दो चार घण्टों में वहां मेला लगा गया। अली बिन सुफ़ियान ने अपने आदमियों से कह दिया कि वह माल रोके रखें और जल्दी फ़रोख़्त न करें। इतना ज़ियादा हुजूम देख कर उस ने अपने चन्द एक ज़हीन आदमियों से कहा कि वह लोगों में घुल मिल जाऐं और उन के ख़ियालात मालूम करें। ये आदमी इस काम के माहिर थे। वह चुग़े उतार कर हुजूम में शामिल हो गए। उन में

से दो तीन शहर में चले गए।

अली बिन सुफ़ियान और उस के तमाम आदमियों ने मग़रिब की नमाज़ मुख़तलिफ़ मस्जिदों में तक़सीम हो कर पढ़ी। सलीबीयों को वह ख़ेमा गाह में छोड़ गए थे। मस्जिदों में उन्हों ने लोगों को बताया कि वह काहरा से आए हैं। और ताजिर हैं लोगों के साथ गप शप के अंदाज़ में उन्हों ने उन के ख़ियालात मालूम कर लिये लोगों के ख़ियालात और जज़बात उम्मीद अफज़ा थे। उन मे कुछ लोग भड़के हुए भी थे। वह नए ख़लीफ़ा और उमरा के ख़िलाफ़ बातें करते थे और उन में ऊंची हैसियत के लोग भी थे जो जानते और समझते थे कि दुनयाए इसलाम को सलीब ललकार रहीहै और अपनी खिलाफ़त अय्याश उमरा के हाथ आगई हैं वह बहुत परीशान थे और कहते थे कि ज़ंगी के बाद सिर्फ़ सलाहुद्दीन अय्यूबी है जो इसलाम का नाम ज़िन्दा रख सकता है।

अली बिन सुफ़ियान ने अपने आदमियों को बता दिया था कि ये लड़कियां और आदमी सलीबी हैं और उन पर यही ज़ाहिर करते रहें कि हम सब सलीब के मिशन पर आए हैं। उन्हें कोई शक नहीं हुआ था। अली बिन सुफ़ियान ने उन्हें बताया था कि वह आज रात आराम करें और उस की हिदायत का इन्तेज़ार करें। रात को वह एक सालार तौफ़िक जव्वाद के घर चला गया। वह ताजिरों के भेस में था और मसनूई दाढ़ी लगा रखी थी। उस ने दरबान से कहा कि अन्दर इत्तेला दो कि काहरा से आप का एक दोस्त आया है। दरबान ने इत्तेला दी तो अली बिन सुफ़ियान को अन्दर बुला लिया गया। तौफीक़ जव्वाद उसे पहचान न सका। अली बिन सुफ़ियान ने बात की तो तौफ़ीक़ जव्वाद ने उसे पहचान लिया और गले लगा लिया। अली बिन सुफ़ियान को इस शख़्स पर भरोसा था। उस ने अपने आने का मक़सद बताया और ये भी बताया कि वह कुछ सलीबी जासूसों और लड़कियों को फांस लाया है और अब ये सोंचना है कि उन्हें किस तरह इसतेमाल किया जाए।

" इस से पहले मुझे ये बताओ कि यहां की बैरूनी और अन्दरूनी हालात किया हैं।"– अली बिन सुफ़ियान ने उस से पूछा–"काहिरा में बड़ी तशवीस नाक ख़बरें पहुंची हैं।"

तौफीक़ जव्वाद ने उन तमाम ख़बरों की तसदीक़ की जो काहिरा पहुंची थी। उस ने कहा–"अली भाई! तुम उसे ख़ाना जंगी कहोगे लेकिन सलीबी ख़तरे को रोकने के लिये सलाहुद्दीन अय्यूबी को ख़िलाफ़त के ख़िलाफ़ फ़ौज कशी करनी पड़ेगी।"

" अगर हम काहिरा से फ़ौज लाऐं तो किया यहां की फ़ौज हमारा मुक़ाबला करेगी?" अली बिन सुफ़ियान ने पूछा।

"तुम लोग हमले के अंदाज़ से न आओ"–तौफ़ीक़ जव्वाद ने कहा–"सलाहुद्दीन अय्यूबी ये ज़ाहिर करें कि वह ख़लीफ़ा से मिलने आऐ हैं और ख़लीफ़ा की ताज़ीम के लिये फ़ौज के कुछ दसते साथ लाए हैं अगर उमरा की नियत ठीक हुई तो वह इसतक़बाल करेंगे। दूसरी सूरत में उन का रद्दे अमल सामने आ जाएगा। जहां तक यहां की फ़ौज का तअल्लुक है, मैं वसूक़ से कहता हूं कि ये फ़ौज तुम्हारा मुक़ाबला नही करेगी बल्कि तुम्हारासाथ देगी। मरग ये भी ज़ेहन में रखो कि तुम जितना वक़्त जाऐ करोगे ये फ़ौज उतनी तुम से दूर हटती

जाएगी। उस फौज का वह जज़बा मारने की कोशिशें शूरूअ हो गई हैं जो इसलामी फौज की असल कुव्वत है तुम जानते हो अली भाई हुकमरान जो ऐश व इशरत के दिलदाह होते हैं वह सब से पहले दुशमन के साथ समझोता करते हैं ताकि जंग व जदल का ख़तरा टल जाए। फिर वह फौज को कमज़ोर करते हैं और ऐसे सालारों को मन्जूरे नज़र बनाते हैं जो खुदाई इहकाम के बजाए उन की ख़वाहिशात के पाबन्द हों। वह सलाहुद्दीन अय्यूबी जैसे सालारों को पसन्द नही करते । ये अमल यहां शुरूअ हो चुका है। हमारे आला रुतबों के चन्द एक फौजी अफसर अपने जज़बे और ईमान से दस्त बरदार हो चुके हैं। अभी मुझ जैसे एसे सालार भी हैं। जो सलीबीयों को कभी दोस्त नहीं कहेंगे और नूरूद्दीन ज़ंगी के जज़बाए जिहाद को ज़िन्दा रखेंगे मगर वह अपने तौर पर ख़िलाफ़त के इहकाम के बेग़ैर किया कर सकते हैं?"

" किया में सुलतान अय्यूबी से ये कह दूं कि यहां फौज हमारा साथ देगी?"— अली बिन सुफ़ियान ने पूछा।

" ज़रूर कह दो"—तौफ़ीक जव्वाद ने जवाब दिया—" अलबत्ता ख़लीफ़ा के मुहाफिज़ दसते और उमरा के मुहाफिज़ दसते तुम्हारे ख़िलाफ़ लड़ेगें। उन दसतों की ख़ातिर मदारात पहले से जियादह होने लगी है। उन्हें ग़ालिबन ख़ाना जंगी के लिये तैयार किया जा रहा है।"

" यहां के लोगों में मुझे जो क़ौमी जज़बा नज़र आया है। उस से मुझे तावक़्क़ो है कि हम यहां आए तो कामयाब होंगे।"— अली बिन सुफ़यान ने कहा।

" क़ौम इतनी जल्दी बे हिस नही हो सकती"—तौफ़ीक जव्वाद ने कहा—"जिस क़ौम ने अपने बेटे शहीद कराए हों वह अपने दुशमन को कभी नहीं बाखशती और जिस फ़ौज ने दुशमन से दो दो हाथ किये हों उसे इतनी जल्दी सरद नही किया जा सकता मगर हुकमरानो के पास ऐसे ऐसे हथ कण्डे होते हैं जो क़ौम और फौज को मुरदह कर दिया करते हैं। अब क़ौम और फ़ौज में निफ़ाक़ पैदा किया जा रहा है। क़ौम की नज़र में फौज को गिराया जा रहा है।"

" मैं मोहतरम नुरूद्दीन ज़ंगी की बेवह से मिलना चाहता हूं।" अली बिन सुफ़ियान ने कहा— "वह ख़लीफ़ा की वालदा भी हैं। उन्हों ने सुलतान अय्यूबी की ख़िदमत में पैग़ाम भेजा था कि वह इस्लाम की आबरू को बचायें...... क्या यह मुमकिन हो सकता है कि उन्हें यहां बुलाया जाए?।"

"कल ही उन से मुलाक़ात हुई थी।" तौफ़ीक जव्वाद ने कहा— "मैं उन्हें बुला सकता हूं। तुम्हारा नाम सुन कर वह फ़ौरन आजाऐं गी।"

तौफ़ीक जव्वाद ने अपनी खादमा को बुला कर कहा कि ख़लीफ़ा की वालदा के यहां जाओ, मेरा सलाम कहना और उनके कान में कहना कि क़ाहेरा से कोई आया है।

❖

जब अली बिन सुफ़ियान तौफ़ीक जव्वाद के पास बैठा था उस वक़्त उस की खेमा गाह में रौनक़ थी। रात ख़ासी गुज़र गई थी। ख़रीदारों का हुजूम बहुत देर हई जा चुका था। अली

बिन सुफ़ियान के एक सौ आदमियों ने लम्बा सफ़र तै किया था। वह बाज़ार से दुम्बे और बकरे ले आए थे जिन्हे ज़बह करके वह खा रहे थे। और हंसी मज़ाक में मसरूफ़ थे। लड़कियां एक ख़ेमे में थीं। सलीबी मर्द अली बिन सुफ़ियान के आदमियों के साथ बैठे थे। उन्होंने शराब निकाल ली ताकि महफ़िल की रौनक दोबाला हो जाए। उन्होंने सब को शराब पेश की तो सब ने इनकार कर दिया। सलीबी हैरान हुए। अली बिन सुफ़ियान ने उनहें बताया था कि उन में मुसलमान भी हैं और ईसाई भी। जो मुसलमान थे उन के मुतअल्लिक बताया गया था कि फ़िदाई हैं यानी वह बराए नाम मुसलमान हैं। असल में वह हसन बिन सबाह के फ़िरके के थे जो शराब को हराम नहीं समझते थे। सलीबीयों को कूछ शक हुआ। वह आख़िर तरबियत याफ़्ता जासूस थे। उन्हों ने दो चार और ऐसी निशानियां देख लीं जिन से उन का शक पुख़्ता हो गया। वह एक एक करके वहां से इस तरह उठने लगे जैसे खेमें में सोने जा रहा हो।

उन्होंने लड़कियों से कहा कि वह अपने फ़न का मुज़ाहिरा करें और देखें कि ये कौन लोग हैं। एक लड़की ने ये काम अपने ज़िम्मे ले लिया। वह ये कह कर बाहर निकली कि ख़ेमा ख़ाली करदो। वह कुछ देर इधर उधर घूमती फिरती रही। बहुत देर बाद अली बिन सुफ़ियान का एक आदमी उठ कर उस की तरफ़ आया। वह मालूम नहीं कियों उठा था। लड़की ने उसे रोक लिया और कहा कि ख़ेमे में बैठे बैठे उस का दिल घबरा रहा था इस लिये बाहर निकल आई। वह मर्दों को उंगलीयों पर नचाना जानती थी। इस आदमी को उस ने ऐसी बातों में जकड़ लिया किवह भूल ही गया कि वह किस तरफ़ जा रहा था। लड़की ने कहा-" ये आदमी जो हमारे साथ हैं बहुत बुरे आदमी हैं। हम तुम्हारी तरह यहां किसी और काम से आई हैं लेकिन ये हमें बहुत परीशान करते है। किया ऐसे हो सकता है कि तुम मेरे ख़ेमे मे आकर सोजाओ? मैं उन से बची रहूंगी।"- और उस ने ऐसी अदाकारी की कि ये आदमी मोम हो गया और उस के साथ उस के ख़ेमे में चला गया।

ख़ेमे में छोटी कन्दीलें जल रही थी। लड़की ने रौशनी में उस आदमी को देखा तो बड़ी ही पूर कशिश और जज़बाती मुसकुराहट से कहा-"ओह! तुम तो बहुत खूबसूरत आदमी हो। तुम मेरी हिफाज़त कर सकोगे।" उस ने शराब की छोटी सी सुराही उठा कर कहा-" थोड़ी सी पीओगे?"

" नहीं!"

" कियों?"

" मैं मुसलमान हूं।"

" अगर इतने पक्के मुसलमान हो तो सलीब के लिये मुसलमानो के ख़िलाफ़ जासूसी करने कियों आए हो?"

वह आदमी चोंका उस ने कहा -"उस की मुझे उजरत मिलती है।"

लड़की जितनी ख़ूबसूरत थी उस से कहीं चालाक थी। अपने ये दोनो हथ्यार इसतेमाल करके उस ने अली बिन सुफ़यान के इस आदमी के दिल व दिमाग़ पर कबज़ा कर लिया। उस

ने कहा–" शराब न पीओ, शरबत पी लो।"वह दूसरे खेमे में चली गई और एक पियाला उठा लाई । उस आदमी ने पियाला हाथ में ले कर मुहं से लगाया तो मुसकुराकर पियाला रख दिया । लड़की से पूछा–" इस में कितनी हशीश डाली है?"

लड़की को धचका सा लगा लेकिन संभल गई और बोली –" ज़ियादा नही। इतनी सी डाली है जितनी तुम्हें ज़रा सी देर के लिये बे खुद करदे।"

" कियों?"

"कियों कि मैं तुम पर कबज़ा करना चाहती हूं"–उस ने संजीदगी से कहा–" अगर तुम्हें मेरी बातें बुरी लगीं तो अपना खंजर मेरे दिल में उतार देना। मैं तुम्हें इत्तेफ़ाकिया नहीं मिली थी। मैं ने तुम्हें उठते और इधर आते देख लिया था। मैं तुम्हारे रासते में खड़ी हो गई थी। सफ़र के दौरान मैं तुम्हें बड़ी गौ़र से देखती रही थी । ऐसे लगता था जैसे हम कभी इकट्ठे रहें हैं। और एक दूसरे को जानते हैं। तुम मेरे दिल में उतर गए हो। तुम ने देखा है कि मैं ने तुम्हें शराब पेश की थी । खुद नहीं पी थी। मैं शराब नहीं पीती कियों कि मैं मुसलमान हूं। ये लोग मुझे ज़बरदसती पिलाते हैं।"

वह चोंक कर बोला–" तुम उन काफ़िरों के साथ कैसे आगईं?"

" बारह साल से उनके साथ हूं"–लड़की ने जवाब दिया–" मैं यरोशिलम की रहने वाली हूं। उस वक़्त मेरी उमर बारह साल थी जब मुझे बाप ने फ़रोख़्त किया था। मुझे मालूम नहीं था कि मेरे ख़रीदार ईसाई हैं। उन्हों ने मुझे इस काम की ट्रेनिंग दी जिस्स के लिये मैं यहांआई हूं। मैं दमिश्क़ और बग़दाद का नाम सुना करती थी और ये नाम मुझे अच्छे लगते थे। इस सर ज़मीन पर क़दम रखा है तो उस की हवाओं ने मेरे अन्दर मेरा मज़हब बेदार करदिया है । मैं मुसलमान हूं। मुसलमानों की तबाही के लिये मैं कोई काम नहीं कर सकुंगी"– उस ने जज़बाती लहजे में कहा–" मेरा दिल रो रहा है। मेरी रूह रो रही है"– उस ने उस आदमी के दोनो हाथ पकड़ कर अपने सीने पर रख लिये और कहा–" तुम भी मुसलमान हो आओ भाग चलें। मुझे जहां ले जाओगे चलुंगी। रेगिसतान में लिये लिये फिरोगे तो खुशी से तुम्हारे साथ रहुंगी। तुम भी अपनी क़ौम को धोका देने से बाज़ आजाओ। हमारे पास सोने के बहुत से सिक्के है। मुझे मालूम है कहां पड़े हैं आसानी से चुरा लाउंगी।"

अली बिन सुफ़ियान का ये आदमी था तो अक़्ल मन्द लेकिन लड़की के झांसे में आ गया। उसे अपनी डयूटी याद आ गई थी। इस लिये उस ने हशीश नही पी थी। वह हशीश की बू से वाक़िफ़ था। उस ने लड़की से पूछा कि वह और इस की पारटी यहां किया करने आई है। लड़की ने बता दिया। उस आदमी ने कहा–" मैं तुम्हें यक़ीन दिलाता हूं कि तुम यहां मुसलमानों को धोका नहीं दे सकोगी। अगर तुम सच्चे दिल से इस काम से मुतनफ़्फ़िर हो गई हो तो तुम खुश किसमत हो कि तुम हमारे धोके में आ गई हो। अब तुम हमारे साथ रहोगी। हम मे से कोई भी सलीबी का जासूस नहीं । हम सब मिस्र की फौज के लड़ाका जासूस हैं"– लड़की जोशे मुसर्रत से उस के साथ लिपट गई। उस आदमी ने कहा–" मैं अपने कमाण्डर से कहुंगा कि तुम्हें दूसरी लड़कियों से अलग रखे और किसी अमीर वगैरह के हवाले न करे।"

लड़की बेताबी से उस के हाथ चूमने लगी। उस का फरेब कामयाब होगया। अली बिन सुफ़ियान का इतना होशियार जासूस एक लड़की के फ़रेब का शिकार हो गया।

" ज़रा ठहरो !"— लड़की ने उस से कहा—" मैं देख आऊं कि मेरे साथी सो गए हैं या नहीं।"— वह ख़ेमे से निकल गई।

❖

अली बिन सुफ़ियान सालार तौफ़िक़ जव्वाद के घर बैठा नूरूद्दीन ज़ंगी की बेवह का इन्तेज़ार कर रहा था। इसलाम के उस अज़ीम मुज़ाहिद की बेवह ने क़ासिद के ज़रिये सलाहुद्दीन अय्यूबी तक अपने जज़बात पहुंचा दिये थे। फिर भी इस से मिलना ज़रूरी था बहुत सी मालूमात लेनी थी और इक़दाम तै करने थे। कुछ देर बाद ये पुर अज़मत औरत आ गई। वह सियाह ओढ़नी में थी। अली बिन सुफ़ियान को पहचान न सकी कियोंकि वह मसनूई डाढ़ी में था। जब पहचान लिया तो उस के आंसू बहने लगे। कहने लगी—"ये वक़्त भी हमारी क़िसमत में लिखा था कि हम एक दुसरे को यूं छुप कर बहरूप धार कर मिलेंगे। तुम यहां सर ऊंचा करके आया करते थे अब इस हालमें आए हो कि कोई तुम्हें पहचान न ले और मैं घर से इहतियात से निकली हूं के कोई मेरे पीछे ये देखने के लिये न आए कि मैं कहां जा रही हूं।"

अली बिन सुफ़ियान के आंसू बह रहे थे। जज़बात का एसा ग़लबा हुआ कि वह बहुत देर बोल ही न सका। ज़ंगी की बेवह ने कहा—" अली बिन सुफ़ियान! मैं ने ये लिबास अपने ख़ाविन्द के मातम के लिये नहीं पहना। मैं इस ग़ैरत के मातम में हूं जो मेरी क़ौम का ज़ेवर है। उन छोटे छोटे हुकमरानो ने मेर बेटे को आलाए कार बना कर क़ौम की ग़ैरत सलीबीयों के कदमों में डाल दी है तुम्हें शायद मालूम न हो। कल ख़लीफ़ा के हुक्म से उस सलीबी बादशाह को जिसे मेरे ख़ाविन्द ने जंगी क़ैदी बना रखा था रिहा कर दिया गया है। ये रिजनालट था जिसे चन्द महीने पहले नूरूद्दीन ज़ंगी ने बे शुमार सलीबी सीपाहियों के साथ एक लड़ाई में पकड़ा था। उसे और दूसरे कैदियों को ज़ंगी करक से यहां लाए थे। ज़ंगी बहुत खुश थे। कहते थे कि मैं सलीबीयों के साथ ऐसी सौदा बाज़ी करके इस सलीबी हुकमरान को छोड़ूंगा जो उन की कमर तोड़ देगी। एक बादशाह और आला कमाण्डर की गिर फ़तारी मामूली सी बात नहीं होती है। हम उस के बदले सलीबीयों से अपनी शराएत मनवा सकते थे। मगर कल मेरा बेटा मेरे पास आया और बड़ी ख़ुशी से कहा—" मां ! मैं ने सलीबी हुकमरानों को और उस के साथ तमाम सलीबी क़ैदीयों को रिहा कर दिया है"— मेरे दिल पर ऐसी चोट पड़ी कि मैं बहुत देर अपने आप से बाहर रही। बेटे से पूछा कि उन जंगी कैदियों के एवज़ तुम ने अपने जंगी क़ैदी रिहा करवा लिये हैं। बेटे ने बच्चों सा जवाब दिया कहने लगा हम उन कैदियों को लेकर किया करेंगे। हम आईन्दा किसी से लड़ाई नहीं करेंगे।

" मैं ने बेटे से कहा तुम आईन्दा अपने बाप की कबर पर मत जाना। तुम जब मरोगे तो मैं तुम्हें उस कबरिस्तान में दफ़न नहीं करूंगी जिसमें तुम्हारा बाप दफ़न है। इस कबरिसतान में वह शहीद भी दफ़न हैं जो सलीबीयों के हाथों शहीद हुए थे। तुम्हें वहां दफ़न करके मैं उन की

तौहीन नहीं करना चाहती ...... लेकिन मेरा बेटा बच्चा है। वह कुछ नहीं समझता । मैं उन अमीरो से भी मिली हूं जिन के कबज़े में मेरा बच्चा है।वह मेरा एहतराम करते हैं लेकिन मेरी कोई बात नहीं सुनते। सलीबीयों ने अपने हुकमरान और जंगी कैदियों को रिहा कराके इसलाम के मुहं पर थप्पड़ मारा है। मै। हैरान हूं कि सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी काहिरा में बैठा हुआ किया कर रहा है। वह कियों नहीं आता? अली बिन सुफियान ! सलाहुद्दीन अय्युबी किया सोंच रहा है? उसे कहना तुम्हारी एक बहन तुम्हारी ग़ैरत का मातम कर रही है। उसे कहना कि वह सियाह लिबास उस रोज़ उतारेगी जिस रोज़ तुम दमिश्क में दाखिल होकर मुझे दिखाओगे कि तुम ने मिल्लते इसलामिया की आबरू उन अय्याश और ईमान फरोशों से छीन ली और बचा लिया है। वरना मै इसी लिबास मे मर जाऊंगी और वसियत कर जाऊंगी कि मुझे इसी लिबास में दफन किया जाऐ कफ़न न पहनाऐं जाऐं। मैं रोज़े कियामत अपने ख़ाविन्द और ख़ुदा के सामने कफ़न में नहीं जाना चाहती।"

" मैं इन जज़बात को अच्छी तरह समझता हूं।"—अली बिन सुफियान ने कहा—" आइए हकीक़त की बात करें । सुलतान अय्यूबी आप की ही तरह बेताब है और बेचैन हैं। आप जानती हे। कि हमें कोई कारवाई जज़बात और इशतेआल के ज़ेरे असर नहीं करनी चाहिये। यहां के हालात का जाइज़ा लेना ज़रूरी है हम इस कोशिश मे हैं कि खाना जंगी न हो । इस की एक ही सूरत है। वह ये कि कौ़म हमारा साथ दे। फौज के मुतअल्लिक तौफीक़ जव्वाद मुझे यकीन दिला चुके हैं कि हमारे फौज के खिलाफ नहीं लड़ेगी। अलबत्ता मुहाफिज़ दसते मुकाबला करेंगे।"

" कौ़म आप के साथ है।"— जंगी की बेवह ने कहा—" मैं औरत हूं। मैदान जंग में नही जा सकी। मैं एक और मुहाज़ पर लड़ती रही हूं। मै ने कौ़म की औरतों मै मिल्ली जज़बा इस हद तक पैदा कर रखा है कि आप किसी भी वक़्त उन्हें मैदाने जंग में ले जा सकते है। मेरे इन्तेज़ामात के तेहत यहां की तमाम नौ जवान लड़कियां तेग़ ज़नी और तीर अन्दाज़ी की महारत रखती हैं। औरतों ने अपने बच्चों , भाईयों, बापों और खाविन्दों को शोले बना रखा है। मै ने जिन औरतों के हाथों उन्हें तरबियत दी है वह मेरे हाथ में है। अगर नौबत खाना जंगी तक आ गई तो हर घर की औरतें ख़लीफ़ा की फौज के ख़िलाफ मोरचा बना लेंगी। अगर सलाहुद्दीन अय्यूबी फौज ले कर आए तो मेरा खलीफा बेटा और उस के हाशिये बरदार अपने आप को तन्हा पाएंगे। तुम जाओ बेरादर अली! फौज लाओ। यहां के हालात मुझ पर छोड़ दो। कौ़म की तरफ से तुम पर एक भी तीर नहीं चलेगा। अगर तुम ज़रूरत समझो के मेरे बेटे को कत्ल कर दिया जाए तो भूल जाना कि वह नुरूद्दीन ज़ंगी का और मेरा बेटा है। मै अपने बेटे के जिस्म के टुकड़े करा लुंगी। सलतनते इसलामिया को टुकड़े टुकड़े होते नहीं देख सकुंगी।"

तौफीक़ जव्वाद ने भी अली को यकी़न दिलाया कि खाना जंगी नहीं होगी। इस के बाद उन्हों ने इस्कीम बनाई कि सुलतान अय्यूबी किस तरह आएगा और यहां किया होगा। ये तै हुआ कि सुलतान अय्यूबी खामोशी से आएगा और खलीफा और उस के हाशिया बरदारों को

वे खबरी में आन लेगा।

❖

वह सलीबी लड़की जिस ने अली बिन सुफ़ियान के एक आदमी से मालूम कर लिया था कि ये एक सौ आदमी सलीब के आदमी नहीं, उसे ख़ेमे मे अकेला छोड़ कर और उसे ये कह कर चली गइ कि वह देखने जा रही है कि उस के साथी सो गए हैं या नहीं। उस ने उन साथियों को ये बताया कि वह घोके में आगए हैं। ये सब मिस्री फ़ौज के लड़ाका जासूस हैं और इनका कमाण्डर अली बिन सुफ़ियान है जो सुरागरसानी और जासूसी का माहिर सरबराह है। इस इनकेशाफ ने उन सलीबीयें को चौंका दिया और वह सोंचने लगे कि उन्हें किया करना चाहिये। इन के लिये वहां रुकना ख़तरे से ख़ाली नहीं था। लड़की उस मिस्री जासूस के पास चली गई ताकि उसे फांसे रखे।एक सलीबी बाहर निकला और अली बिन सुफ़ियान को ढुंढने लगा मगर वह उसे न मिला। उस वक़्त अली बिन सुफ़ियान तौफ़ीक़ जव्वाद के घर बैठा हुआ था। ये सलीबी यही मालूम करना चाहता था कि अली बिन सुफ़ियान यहीं हैं या कहीं गया हुआ है। उसे ग़ैर हाज़िर देख कर सलीबी ने ख़तरह महसूस किया कि अली बिन सुफ़ियान उन की गिरफ्तारी का इन्तेज़ाम करने गया है। उस ने अपने साथियों को जाकर बताय कि यहां से फ़ौरन निकलने की तरकीब करें। रात आधी गुज़र गई थी। ये लोग शहर से नावाक़िफ़ थे। दिन के वक़्त वह अपनी मंज़िल ढुंढ सकते थे। रात को लड़कियों को साथ साथ लिये फिरना नामुनासिब था।

एक ने मशवरह दिया कि सराए में चले जाते हैं। वहां जाकर कहेंगे कि हम क़ाहिरा के ताकजिर है। बाहर खुले मैदान में सो नहीं सकते इस लिये सराए में रात गुज़ारना चाहते हैं। उन्हों ने एक आदमी को चोरी छिपे इस काम के लिये भेज दिया कि सराए कि तलाश करे और वहां से मालूम करे कि रात के वक़्त चार आदमियों और चार औरतों को जगह मिल सकती है या नहीं। अगर जगह मिल जाए तो वह यहां से अकेले अकेले निकलें और सराए में पहुंच जाऐं। उन के लिये सामान एक मसला था। ये बज़ाहिर तिजारती सामान था लेकिन उस में ज़री जवाहरात और तोहफे थे जो वह सलीबीयों की तरफ़ से उमरा के लिये लाए थे। वह चूंकी उमरा के पास जाने के लिये आऐ थे इस लिये उन्हें ऐसा कोई ख़तरह न था कि पकड़े जाऐंगे। उन्हों ने बहरूप इस लिये धार रखा था कि उमरा के सिवा और कोई उन्हें न पहचान सके। उमरा से मिल कर उन्हें वहीं रहना और तख़रीब कारी करनी थी। इस लिये वह अपनी असलीयत छुपाए रखना चाहते थे।

उनका भेजा हुआ आदमी सराए की तलाश मे जा रहा था। गलयां और बाज़ार वीरान थे। उसे कोई आदमी नज़र नही आरहाथा। जिस से वह पूछता कि सराए कहां है। कुछ देर इधर उधर मारे मारे फिरने के बाद उसे सामने से एक आदमी आता दिखाई दिया। अंधेरे में इतना ही पता चलता था कि वह कोई इनसान है। वह क़रीब आया तो सलीबी ने उस से सराए के मुतअल्लिक़ पूछा। उस ने सर और आधे चेहरे पर चादर डाल रखी थी। उस ने सलीबी को बताया कि सराए शहर के दूसरे सिरे पर है फिर उस से पूछा कि वह इतनी रात गए सराए

कियों ढूंढ रहा है। ऐसे वक़्त में इस के लिये सराए का दरवाज़ा नही खुलेगा। सलीबी ने उसे बताया कि वह आज ताजिरों के काफले के साथ आए हैं उन के साथ चार औरतें हैं जिन्हें वह खेमों में नहीं रखना चाहते।"

" हां, ये एक मसला है"— उस आदमी ने कहा—" तुम्हें शाम से पहले बन्दोबस्त कर लेना चाहिये था। आओ, मैं तुम्हारी कुछ मदद करता हूं तुम परदेसी हो। यहां से जाकर ये न कहो कि दमिश्क में तुम्हारी मसतूरात खुले मैदान में पड़ी रही थीं। मुझे अपने साथ ले चलो। मसतूरात को साथ ले आओ। मैं सराए खुलवाकर जगह दिलवा दूंगा।"

वह आदमी सलीबी के साथ चल पड़ा और दोनों काफ़िले की ख़ेमें गाह तक पहुंच गए। सलीबी ने उसे एक जगह रुक कर कहा—" तुम यहीं ठहरो। मैं उन्हें ले कर आता हूं"— ये कह कर वह ख़ेमे गाह के एक तरफ़ से घूम कर कहीं ग़ाइब हो गया। सलीबीयों के ख़ेमे दूसरी तरफ़ और ज़रा हट कर थे। उस आदमीने अपने साथीयों को बताया कि एक आदमी उस के साथ आया है जो उन्हें सराए मे जगह दिला देगा। उस के साथी कुछ घबराऐ। ये आदमी भी धोका दे सकता था लेकिन वह ऐसे जाल में फंस गए थें जिस से निकलने के लिये उन्हें कोई न कोई तो ख़तरह मोल लेना ही था। मिस्री जासूस जो सलीबी लड़की के झांसे में आगया था उस ने लड़की को यहां तक बता दिया था कि ख़लीफ़ा और उमरा सलीबीयों के ज़ेरे असर आगए हैं। इस लिये अली बिन सुफ़ियान बहरूप में एक सौ लड़ाका जासूस के साथ आया है और उन का मिश्न ये है कि यहां का जाइज़ा लें कि सलीबी असरात कहां तक पहुंचे हैं और किया सलाहुद्दीन अय्यूबी के लिये जंगी कारवाई जरूरी है या नहीं।

लड़की ने अली बिन सुफ़ियान का ये मिश्न अपने साथियों को बता दिया था। ये बड़ी ही कार आमद इत्तेला थी। जो सलीबी जासूस रात ही में कठ पुतली ख़लीफ़ा तक पहुंच कर ख़िराजे तहसीन हासिल करना चाहते थे और ये इत्तेला वह अपने सलीबी हुकमरानो तक भी पहुंचाना चाहते थे ताकि वह सलाहुद्दीन अय्यूबी का रासता रोकने का बन्दोबस्त करलें। उन सलीबी जासूसो ने ये इरादा भी किया कि वह अली बिन सुफ़ियान और उस की पूरी जमाअत को ख़लीफ़ा के हुकम से गिरफ़तार करादें। उन्हो ने उस लड़की को बहुत ही ख़िराजे तहसीन पेश किया जिस ने मिस्री जासूस के सीने से ये राज़ निकलवा लिया था। ये मिस्री अब लड़की के ख़ेमे में गहरी नीन्द सोया हुआ था और लड़की ख़ेमे में नहीं बल्कि अपने साथियों के पास थी।

उन्हों ने ये फ़ैसला किया कि अली बिन सुफ़ियान के तमाम आदमी सोए हुए हैं सब इकट्ठे निकल चलें सामान और जानवरों को यहीं रहने दें। कल सुबह होते ही मिस्री जासूसों को पकड़वा देंगें फिर उन का सामान उन्हें मिल जाएगा। वह ख़ेमे गाह से भागना इस लिये चाहते थे कि उन्हें डर था कि अली बिन सुफ़ियान रात को लड़कियां ग़ाएब करादेगा या उन सब को मरवा देगा या कोई धोका देगा। बहर हाल रुकना ठीक नहीं था। वह सब ख़ेमे गाह से परे परे दबे पावं चल पड़े और उस जगह पहुंचे जहां उन का साथी एक आदमी को खड़ा कर गया था। मगर वह आदमी वहां नही था वह सब इधर उधर देख ही रहे थे कि बैठे

हुए ऊंटों की ओट में से बहुत से आदमी उठे और सलीबीयों को घेरे में ले लिया। उन्हें एक तरफ ले गए और मशअलें जलाई गई। अली बिन सुफ़ियान ने उनसे पूछा किवह कहां जा रहे थे। उन्होने झूट बोला अली बिन सुफ़ियान नें पूछा वह आदमी कौन था जो सराए की तलाश में मारा मारा फिर रहा था।"

एक सलीबी ने कहा –" वह मैं था।"

" और जिस से तुम ने साराए का रासता पूछा था "–अली बिन सुफ़ियान ने कहा–" वह मैं था।"

ये महज़ इत्तेफाक़ था कि अल्लाह का करम के अली बिन सुफ़ियान तौफ़ीक़ जव्वाद के घर से आ रहा था। ये सलीबी सराए की तलाश में जा रहा था। उस ने अली बिन सुफ़ियान से ही सराए का रासता पूछा। अगर रौशनी होती तोसलीबी उसे पहचान लेता। एक तो अंधेरा था दूसरे अली बिन सुफ़ियान ने सर पर रूमाल या चादर डाल रखी थी। सलीबी कि एक ही बात सुन कर वह जान गया कि उन्हें किसी तरह पता चल गया है कि वह घोके में आगए हैं। लिहाज़ा अब भागने की फ़िकर में हैं। अली बिन सुफ़ियान को मालूम था कि ये सलीबी बे शक जासूस हैं लेकिन उन्हें यहां उमरा मे से कोई पनाह में ले लेगा। चुनान्चे उस ने सलीबी को ख़ुश अख़्लकी का झांसा देकर फांस लिया औरउस के साथ ख़ेमे गाह तक चला गया। वह सोचता रहा कि अब उसे किया कारवाई करनी चाहिये। सलीबी ने उस पर ये करम किया कि उसे अपने खेमों से दूर खड़ा कर गया।

अली बिन सुफ़ियान ने फ़ौरन अपने दो तीन आदमियों को जगा लिया और निहायत उजलत से उन्हें बताया कि उन्हें किया करना है। हिदायात दे कर वह ख़ुद सलीबीयों के ख़ेमों तक गया। वह सब लड़कियों समेत एक ख़ेमे मे जमा हो गऐ थे। अली बिन सुफ़ियान ने दबे पावं करीब जाकर उन कीबातें सुनी। वह सिर्फ़ ये जान सका कि सलीबी जासूसों को उस का मिश्न मालूम हो गया है लेकिन ये मालूम न हो सकहा कि ये राज़ किस तरह फ़ाश हुआ है। इतनी देर में उस के बहुत से आदमी उस की दी हुई हिदायत के मफ़तहबिक़ बरछियों से मुसल्लह होकर ऊंटों की ओट में जाकर बैठ गए थे। सलीबीयों को वहीं आना था। वह जूं ही वहां पहुंचे अली बिन सुफ़ियान भी आगया और सब को घेर कर पकड़ लिया गया।

"दोस्तो! "– अली बिन सुफ़ियान ने उन्हें कहा–' तुम्हारी जासूसी बहुत कमज़ोर है। तुम्हें अभी बहुत सी तरबियत की ज़रूरत है किया जासूस इस तरह सूनसान गलियों में फिरा करते हैं? और किया जासूस किसी अजनबी को पहचाने बग़ैर बात किया करते हैं? ये फन मुझ से सीखो।"

" अगर आप ये फन अपने आदमियों को सिखादें तो बेहतर होगा।"– एक सलीबी नें कहा–" किया आप हमारी इस महारत की तारीफ़ नहीं करेंगे कि हम ने आप के एक आदमी से आप की असलियत मालूम कर ली है? ये तो क़िसमत का खेल है। आप जीत गए हम हार गए। अगर हमारा क़ाएद मारा न जाता तो हम यूं भटक न जाते।"

"मुझे वह आदमी बताओगे जिस ने ये राज़ फ़ाश किया है?"– अली बिन सुफ़ियान ने कहा।

" उस ख़ेमे में सोया हुआ है"– एक लड़की ने ख़ेमे की तरफ़ इशारा करके जवाब दिया –" वह मेरे धोके में आ गया था। "

" ये बातें अब काहिरा में चल कर होंगी"– अली बिन सुफ़ियान ने कहा।

सुबह तुलू हुई तो लोगों ने देखा के ताजिरों का काफ़िला जा रहा था। ऊंटों पर जहां तिजारती सामान लदा हुआ था वहां ख़ेमें भी लदे हुए थे। अली बिन सुफ़ियान और उस के एक सौ आदमियों के सिवा किसी को इलम न था कि लिपटे हुए ख़ेमों में चार लड़कियां और चार आदमी लिपटे हुए हैं। अली बिन सुफ़ियान ने रवांगी से कुछ देर पहले सेहर की तारिकी में एक एक सलीबी को एक एक ख़ेमे मे लपेट कर ऊंटों पर लाद कर बांध दिया था। उसे कोई फ़िक्र नहीं था कि वह दम घुटने से मर जाऐंगे। या ज़िन्दा रहेंगे। क़ाफ़ला दमिश्क से निकल गया औरजब शहर इतनी दूर पीछे रह गया कि नज़र भी न आ रहा था उस ने सलीबीयों को ख़ेमे से निकाला। सब ज़िन्दा थे। लड़कियों को ऊंटों पर और मर्दों को घोड़ों पर सवार कर लिया गया। सलीबीयों ने रिहाई के लिये वह तमाम ज़र व जवाहरात और सोने के टुकड़े पेश किये जो वह ख़लीफ़ा और उमरा के लिये लाए थे। अली बिन सुफ़ियान ने कहा–" ये सारी दौलत तो मेरे साथ जा रही है।"

❖

उस वक़्त रिमाण्ड नाम का एक सलीबी तिरीपोली का हुकमरान था। ये वही इलाका है जो आज लिबनान कहलाता है। दूसरे सलीबी हुकमरान यरोशिलम और गिर्द व नवाह में थे। नूरूद्दीन ज़ंगी की वफ़ात पर वह सब खुश थे। वह एक कान्फ्रेंस कर चुके थे। उनहोंने अपने मनसूबों पर नज़रे सानी कर ली थी उस के मुताबिक़ फरंगियों का एक कमाण्डर सीज़र अपनी फ़ौज हल्ब तक ले गया। हल्ब का अमीर शमशुद्दीन था सीज़र ने उसे पैग़ाम भेजा कि वह हल्ब उस के हवाले करदे या सुलह नामे पर दसतख़त करके तावान आदा करे। शमशुद्दीन ने इस डर से सलीबीयों के आगे हथ्यार डाल दिये कि दमिश्क और मोसिल के उमरा उसे जंग में उलझा हुआ देख कर उस की ममलिकत पर कबज़ा कर लेंगे। उस एक ही कामयाबी से सलीबी दिलेर होगए। वह जान गए कि ये मुसलमान उमरा एक दूसरे की मदद करने की बजाए एक दूसरे के दुशमन हैं। चुनान्चे उन्हों ने जंग के बग़ैर ही मुसलमान को तह व तेग़ करने का मनसूबा बना लिया था। उनहें ख़तरा सिर्फ़ सुलतान अय्युबी से था। वह सुलतान अय्यूबी के किरदार से आगाह थे। उन्हें डर ये था कि सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी दमिश्क या उन इलाकों मे कहीं आ भी गया तो वह तमाम उमरा को मुत्तहिद कर लेगा। चुनान्चे वह उमरा को बहुत जलदी इत्तेहादी बना लेने की कोशिश कर रहे थे। रिमाण्ड ने ख़लीफ़ा अल मलिकुस्सालेह को एक ऐलची के ज़रिये तहाएफ़ के साथ ये पेशकश भी भेज दी थी कि वह उसे जरूरत के वक़्त फ़ौजी मदद देगा।

इसलाम की बक़ा और आबरू कच्चे धागे से लटक रही थी। उस का दरो मदार सुलतान

अय्यूबी के इकदाम पर था। एक साअत जो गुज़र जाती थी इसलाम को तबाही के करीब ले जाती थी। सुलतान अय्यूबी काहिरा मे अली बिन सुफ़ियान का इन्तेज़ार कर रहा था उसे अली बिन सुफ़ियान की रिपोर्ट के मुताबिक कुछ फैसला करना था। वह बग़दाद, दमिश्क और यमन वग़ैरह पर फ़ौज कशी के लिये ज़ेहनी तौर पर तैयार हो चुका था। उस के लिये ये मुशकिल थी कि मिस्र के अन्दुरूनी हालात ठीक नहीं थे और फ़ौज कम थी। वह मिस्र से ज़ियादा से जियादा नहीं बल्कि कम से कम फ़ौज अपने साथ ले जासकता था और यही एक ख़तरा था जो उसे परीशान कर रहा था। कि इतनी कम फ़ौज से वह किया कामयाबी हासिल कर सकेगा। इस के बावजूद उस ने फ़ौज कशी के सिवा दूसरा कोई इकदाम सोंचा ही नहीं। वह दिन में एक दो बार अपने मकान की छत पर जा कर उस सिम्त देखा करता था जिस सिम्त से अली बिन सुफ़ियान को आना था। वह उफक पर नज़रें गाड़ देता था।

एक रोज़ उसे उफ़क पर गर्द के बादल नज़र आए जो ज़मीन से उठे और उपर ही उपर उठते और फैलते गए। सुलतान अय्यूबी उपर ही खड़ा रहा। गर्द का बादल आगे ही आगे आता गया। फैलता गया......... और फिर उस में से घोड़ों और ऊंटों के हेवले नज़र आने लगे। वह अली बिन सुफ़ियान का ही काफ़ला था। उस ने रास्ते में बहुत थोड़े पड़ाव किये थे। उसे जब काहिरा के मीनार नज़र आने लगे तो उस ने ऊंट और घोड़े दौड़ा दिये। उसे इहसास था कि गुज़रते हुए लमहों की कीमत किया है और उस के इन्तेज़ार में सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी रात को सोता भी नही होगा।

फिर वह लमहा आगया जब गर्द से अटा हुआ अली बिन सुफ़ियान अय्यूबी के सामने खड़ा था। सुलतान अय्यूबी ने उसे नहाने धोने की मोहलत न दी। वह ख़बरें सुनने के लिये बेताब था। उस के लिये खाना वग़ैरह वहीं लाने का हुक्म देकर उसे दफ़तर में ले गया। अली बिन सुफ़ियान ने उसे तफ़सीली रिपोर्ट दी। नुरूद्दीन ज़ंगी की बेवह का पैग़ाम, उसके जज़बात उसके तासुरात सुनाए। सालार तौफीक जव्वाद से जो बात चीत हुई थी वह सुनाई और आख़िर में बताया कि दमिश्क से एक तोहफा लाया है। ये तोहफा चार सलीबी जासूस मर्द और चार लड़कियां थीं। उस ने सुलतान अय्यूबी से कहा–" मैं शाम से पहले पहले कुछ कीमती मालूमात उन लोगों से हासिल कर लुंगा।"

" तो इस का मतलब ये हुआ कि हमें फ़ौजी ताकत इस्तेमाल करनी पड़ेगी"– सुलतान अय्यूबी ने कहा।

" करनी पड़ेगी और हम ज़रूर करेंगे।"– अली बिन सुफ़ियान ने कहा–" मुझे उम्मीद है कि ख़ाना जंगी नहीं होगी।"

सुलतान अय्यूबी ने अपने दो ऐसे फ़ौजी मुशीरों को बुलाया जिन पर उसे कुल्ली तौर पर एअतमाद था। वह आए तो उस ने उन्हें कहा–" मैं तुम से अब जो भी बात करूं वह अपने सीने में उतार लेना। तुम दोनों के इलावा अली बिन सुफ़ियान तीसरा आदमी होगा जो इस राज़ से वाकिफ़ होगा।"– उस ने उन्हें दमिश्क और दीगर तमाम इसलामी रियासतों और जागीरों के अहवाल व कवाएफ सुनाए। अली बिन सुफ़ियान की लाई हुई रिपोर्ट सुनाई और कहा–"

अल्लाह की फौज अल्लाह के हुक्म की तामील किया करती है। अमीर और खलीफा की इताअत हम पर फर्ज़ है लेकिन अमीर और खलीफा ही अल्लाह के अज़ीम मज़हब और उस के रसूल (स0) की नामूस के दुशमन हो जाएँ तो अल्लाह के सिपाही पर फर्ज़ आइद होता है कि वह अल्लाह और उस के रसूल (स0) और उम्मते रसूल अल्लाह की नामूस को बचाएँ। अगर मेरा वजूद मुल्क व मिल्लत के लिये खतरे और बदनामी का बाअस बने तो तुम्हारा फर्ज़ है कि मेरा सर मेरे धड़ से जुदा कर दो। मुझे बेड़ियां पहना कर कैद खाने में फेंक दो और मुल्क मे इहकामे खुदावन्दी नाफिज़ करो। आज यही फर्ज़ हम पर आएद होगया है। हमारा खलीफा कौमी गैरत और वकार से दसत बरदार होकर इसलाम के दुशमनों के हाथों में चला गया है। उन से मदद मांग रहा है। उन के जासूसों को पनाह दे रहा है। उस के हाशिये बरदार ऐश व इशरत में डूब गए हैं। सलतनते इसलामिया के हिस्से बखरे कर रहे हैं। शमसूद्दीन वालीए हलब ने सलीबीयों के आगे हथयार डाल कर तावान अदा किया और सुलह कर ली है और सलीबी आलमे इसलाम पर हावी होते जार रहें है। तो किया हमारे लिये ये ज़रूरी नहीं हो गया कि हम फौजी ताकत से खलीफा को इस मुकद्दस गद्दी से उठाएँ और इसलाम की आबरू बचाएं।"

" बिलकुल फर्ज़ हो गया है।" दोनो मुशीरों ने बयक ज़बान कहा।

" अब हमारा इकदाम जो कुछ भी होगा वह हम चारों के दरमियान राज़ होगा।" सुलतान अय्यूबी ने कहा और उनके साथ अपने सोंचे हुए इकदाम की मनसूबा बनदी शूरूअ कर दी।

सलीबी जासूसों और लड़कियों को अली बिन सुफियान अपने मखसूस तह खाना मे ले गया और उन्हें कहा–" तुम एसे जहन्नम मे दाखिल हो गए हो जहां तुम ज़िन्दा भी नही रहोगे मरोगे भी नहीं। अपने जिसमों को हड्डीयों का ढांचा बना कर जो बातें तुम मेरे सामने उगलोगे वह इसी सेहत मन्दी की हालत मे बता दो और इस जहन्नम से रिहाई हासिल करो। मैं तुम्हें सोंचने का मौका देता हूं। थोड़ी देर बाद आऊंगा।"

वह जब उन्हें बेड़ियां डालने का हुक्म दे रहा था तो एक सलीबी ने कहा–" हम सारी बातें बता देंगे। हमें सजा देने से पहले ये दरखवास्त सुन लें हम तन्ख्वाह पर काम करने वाले मुलाज़िम हैं। सजा हुक्म देने वालों को मिलनी चाहिये। हम जो मर्द है। सखतियां बरदाश्त कर लेंगे। हम इन लड़कियों को अज़िय्यत से बचाना चाहते हैं।"

" उन्हें कोई हाथ नहीं लगाएगा" – अली बिन सुफियान ने कहा–" तुम मेरा काम आसान कर दोगे, तो लड़कियां तुम्हारे साथ रहेंगी। इस तह खाने से तुम सब को निकाल लिया जाएगा और बा इज्ज़त नज़र बन्दी में रखा जाएगा।"

उन्हों ने जो इन्केशाफ किये उन से उन तमाम हालात की तसदीक हो गई जो नूरूद्दीन जंगी की वफात के बाद पैदा हो गए थे।

❖

तीन रोज़ बाद–

मिस्र की सरहद से बहुत दूर शिमाल मशरिक की सिन्दा मिट्टी के ऊंचे ऊंचे टीलों और

घाटियों का वसीअ ख़ित्ता था जिस में कहीं कहीं सबज़ह भी था और पानी भी। ये ख़ित्ता क़ाफ़िलों के आम रासतों से हट कर था। इस के अन्दर एक जगह बे शुमार घोड़े बंधे हुए थे। उन से ज़रा परे सवार सोए हुए थे और इन से अलग हट कर छोटा सा एक ख़ीमा लगा हुआ था। जिस के अन्दर एक आदमी सोया हुआ था। तीन चार आदमी टीलों के ऊपर ऊपर टहल रहे थे। और तीन चार ख़ित्ते के बाहर बिखर कर घूम फ़िर रहे थे--खेमे मे सोया हुआ आदमी सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी था। टीलों पर और टीलों के बाहर घूमने फिरने वाले आदमी संतरी थे और जो सवार सोए हुए थे। वह सुलतान अय्यूबी के सवार थे। उन की तादाद सात सौ थी।

सुलतान अय्यूबी ने बड़ी गहरी सोंच व बिचार के बाद ये फ़ैसला किया था वह कम से कम फ़ौज अपने साथ ले कर दमिश्क़ जाएगा। अगर उस का इसतक़बाल सुलतान की हैसियत से हुआ तो ज़बानी बात चीत करेगा और अगर मज़ाहिमत हुई तो वह इसी मिस्री फ़ौज से मुक़ाबला करेगा। अली बिन सुफ़ियान ने उसे यक़ीन दिलाया था कि ख़लीफ़ा और उमरा के मुहाफ़िज़ दसतों ने मज़ाहिमत की तो सालार तौफ़ीक़ जव्वाद अपनी फ़ौज सुलतान अय्यूबी के हवाले कर देगा। ज़ंगी की बेवह ने यक़ीन दिलाया था कि शहर के लोग सुलतान अय्यूबी का इसतक़बाल करेंगे। लेकिन सुलतान अय्यूबी ने अपने आप को ख़ुश फ़हमियों में कभी भी मुबतला नहीं होने दिया था। उस ने ये फ़र्ज़ करके फ़ैसला किया था कि वह सात सौ सवारों के साथ जहां जा रहा है वहां का हर एक सिपाही और बच्चा बच्चा उस का दुशमन है। उस ने अपने रिसाले में से वह सात सौ सवार मुनतख़िब किये थे। जो बहुत से मारके लड़ चुके थे। उन में छापा मार सवार भी थे जो दुशमन के अक़ब में मारके ड़ने का तजुरबा रखते थे। जंगी महारत के अलावह ये सवार जज़बे के जुनूनी थे जिन की आखें सलीब का नाम सुन कर लाल सुर्ख़ हो जाया करती थीं। आज की फ़ौजी ज़बान में ये " करेक ट्रपिस" थे।

क़ाहिरा से उन सवारों को सुलतान अय्यूबी ने रात के वक़्त ख़ुफ़िया तरीक़े से निकाला था। वह एक एक दो दो करके निकले थे और क़ाहिरा से बहुत दूर एक पहले से बताई हुई जगह इकठ्ठे हुए थे। सुलतान अय्यूबी भी ख़ुफ़िया तरीक़े से क़ाहिरा से निकला था। सिर्फ़ अली बिन सुफ़ियान और दो ख़ुसूसी फ़ौजी मुशीरों को इस का इल्म था। सुलतान अय्यूबी का मुहाफ़िज़ दसता बदसतूर क़ाहिरा में उस के घर और हेड कुवार्टर में मुसतइद रहता था इस से ये तास्सुर दिया जा रहा था। कि सुलतान अय्यूबी यहीं है।

तमाम यूरोपी और मुसलमान मोअर्रिख़ीन इस पर मुत्तफ़िक़ हैं किसुलतान अय्यूबी ने सात सौ सवार मुन्तख़ब किये। ख़ुफ़िया तरीक़े से शहर से निकला और दमिश्क़ को रवाना हुआ। क़ाहिरा और गिर्दो नवाह में सलीबी जासूस मौजूद थे। मगर किसी को ख़बर तक नही हुई कि क़ाहिरा से सुलतान अय्यूबी और सात सौ सवार ग़ाएब हैं। मोअर्रिख़ीन लिखते है। कि सुलतान अय्यूबी दमिश्क मे दाख़िल होने तक अपनी नक़ल व हरकत को राज़ में रखना चाहता था। इस मक़सद के लिय वह रात को सफ़र करता और दिन को कहीं छुप जाता था। सात सौ घोड़ों और सवारों को छुपाना मुमकिन नहीं

था। लेकिन सुलतान अय्यूबी रेगज़ार का भेदी था। एसे रासते से जा रहा था जिधर से कोई काफ़िला नही जाया करता था और वह छुपने की जगह ढुंढ लेता था। दो यूरोपी मोआर्रिख़ों ने ये भी लिखा हैकि इस ख़ुफ़िया सफ़र के दौरान वह सवारों के साथ आम सिपाहियों की तरह घुला मिला रहता , गप शप लगाता और बातों बातों में उन्हें आग के बगोले बनाता रहा। उस के साथ उन्हें समझाता रहा कि आगे के हालात किया हैं और किया हो सकते हैं उस ने सवारों को किसी ख़ुश फ़हमी में मुबतला नही किया, कोई झूटी उम्मीद नहीं दिलाई, उन्हें ख़तरों से आगाह करता रहा। सुलतान अय्यूबी की शख़सियत और किरदार में जो जलाल था वह हर एक सवार की रूह में उतर गया और सवार उड़ कर दमिश्क़ पहुंचने के लिये बेताब हो गए।

मोअर्रिखों मे अलबत्ता ये इख़तलाफ़ पाया जाता है कि ये 1174ई0 का कौन सा महीना था। बाज़ कहते है। कि ये जूलाई का महीना था, बाज़ ने नवम्बर लिखा है। बहर हाल ये वकिया नूरूद्दीन ज़ंगी की वफ़ात के बाद का है। अगर वकाऐ निगारों की तहरीरों में छोटे छोटे वाकिआत ग़ौर से पढ़े जाऐं तो मालूम होता है कि सुलतान अय्यूबी सिंतम्बर के इबतिदाई दिनों में दमिश्क़ के लिये रवाना हुआ था। उस ने मिस्र की हाई कमाण्ड ख़ुफ़िया तौर पर अपने दो मुशीरों के सुपुर्द कर दी थी। सूडान की तरफ़ की सरहद पर मोरचा बन्दी और दिफ़ाई इनतेजामात मजीद मज़बूत कर दिये थे। शुमाल की तरफ़ बहरिया को हुक्म दिया गया था कि हर वक़्त , दिन और रात समुन्दर मे दूर दूर तक कशतियां गश्त करती रहें और जंगी जहाज़ बहरी सिपाहियों के साथ हर लमहा तैयारी की हालत में रहें। सुलतान अय्यूबी ने अपने जा नशीनों से कह दिया था कि किसी भी तरफ़ से हमला आए तो वह उसके हुक्म का इन्तेज़ार न करें। उस ने ये भी हुक्म दे दिया था कि सरहद पर दुशमन ज़रा सी भी गड़ बड़ करे तो शदीद किसम की जवाबी कारवाई करो। हर वक़्त जारहियत के लिये तैयार रहो। अगर जरूरत महसूस हो तो सूडान के अन्दर जाकर मिस्र का दिफ़ा करो।

सुलतान अय्यूबी मिस्र को अपनी फ़ौज और ख़ुदा के हवाले करके चोरी छुपे सात सौ सवारों के साथ दमिश्क़ जा रहा था।

❖

दमिश्क़ के किले पर संतरी घूम फिर रहे थे। उन्हे दूर उफ़क़ पर गर्द के घने बादल उठते नज़र आए जो दमिश्क़ की तरफ़ आ रहे थे। वह कुछ देर देखते रहे । शायद ताजिरों और मुसाफिरों का कोई बड़ा काफ़िला होगा मगर ऊंट इतनी गर्द नहीं उड़ाते। ये घोड़े मालूम होते हैं–गर्द बहुत करीब आ गई तो उस मे ज़रा ज़रा घोड़े नज़र आने लगे और फिर ऊपर उठी हुई बरछियों की अन्नीयां नज़र आने लगीं। हर बरछी के साथ कपड़े की लमबूतरी झण्डी थी। ये बिलाशक व शुबहा कोई फ़ौज थी। और ये फ़ौज ख़लीफ़ा की नहीं हो सकती थी। एक संतरी ने नकारह बजा दिया। किले की दूसरी दीवारों पर भी नक़ारे बज उठे । क़िले में जो फ़ौज थी वह तैयारी की पोज़िशन में अगई। दीवारो के ऊपर तीर अन्दाज़ों ने कमानों मे तीर डाल लिये। किले का कमाण्डर भी ऊपर आ गया। गर्द उड़ाते हुए सवार किले के क़रीब

आगए और हमले की तरतिब में आकर रुक गए। किले के कमाण्डर ने सवारों के कमाण्डर को देखा तो वह ठठक गया। ये सुलतान अय्यूबी का झण्डा था, किले दार को सरकारी तौर पर बताया जा चुका था कि सुलतान अय्यूबी ने खुद मुख़तारी का एलान कर दिया है जिस का मतलब ये था कि अगर वह इस तरफ आए तो उसे बिला रोक टोक शहर में दाख़िल न होने दिया जाए।

" आप किस इरादे से आए हैं?"– किलेदार ने पूछा–" अगर ख़लीफ़ा से मिलना है तो अपने सवार दूर पीछे ले जाऐं और अकेले आऐं।"

" ख़लीफ़ा से कह दो सुलतान अय्यूबी बाहर बुला रहा है" –सुलतान अय्यूबी ने बुलन्द आवाज़ से कहा–" और तुम सुन लो। मेरे सवार पीछे नहीं जाऐंगे। शहर में जाऐंगे। ख़लीफ़ा को इत्तेला दो कि वह बाहर न आया तो बहुत से मुसलमानों का ख़ून उसकी गरदन पर होग।"

" सलाहुद्दीन अय्यूबी बिन नजमुद्दीन अय्यूब !" किले के कमानदार ने कहा–" मैं तुम्हें ख़बरदार करता हूं कि तुम्हारा एक भी सवार ज़िन्दा वापस नही जाएगा। मैं ख़लीफ़ा के हुक्म का पाबन्द हूं। तुम्हारे लिये शहर का कोई दरवाजा नहीं खुलेगा।"

किले के बाहर जो सीपाही पहरे पर थे। उन्हो ने ख़लीफ़ा की तरफ़ एक सीपाही दौड़ाया था। यह उन लोगों की डयूटी थी कि ख़लीफ़ा को ख़तरे से आगाह करदें ताकि फ़ौज को तैयारी का हुक्म दिया जाए। इधर सुलतान अय्यूबी ने अपने सवारों को कुछ हुकम दिया। सवारों ने बिजली की तेज़ी से हरकत की। वह और ज़यादा फैल गए। सवारों ने कमानें निकाल लीं। और उन में तीर डाल लिये। उधर दमिश्क शहर का बड़ा दरवाजा बन्द कर दिया गया और शहर की फ़सील पर भी तीर अन्दाज़ तैयार हो गए।

किले दार यानी किले के कमाण्डर ग़ालिबन ख़लीफ़ा के हुक्म का या शायद अन्दर से आने वाली फ़ौज का इन्तेजार कर रहा था। उस ने कोई कारवाई नही की। मुक़ाबले के लिये वह तैयार था ख़लीफ़ा को बाहर की सूरते हाल की इत्तेला मिल गई वह बच्चा था एक बार तो जोश में अगया फिर घबरा गया। उस के मुशीरों ने उस का हौसला बढ़ाया और उस से हुकम दिलवाया कि फ़ौज बाहर निकल कर सुलतान अय्यूबी को घेरे में ले ले और हथ्यार डलवाकर सुल्तान अय्यूबी को गिरफ़तार करले। इस असना में शहर के लोगों को भी पता चल गया कि सुलतान अय्यूबी फ़ौज लेकर आया है। नूरूद्दीन ज़ंगी की बेवह हरकत में आगई उस ने औरतों की जो ज़मीन दूज़ जमाअत बना रखी थी वह भी सर गरम हो गई घर घर इत्तेला पहुंच गई कि सुलतान अय्यूबी अया है। औरतें बाहर निकल आई और ख़ूश आमदीद सलाहुद्दीन अय्यूबी के नारे लगाने लगीं। बाज़ ने फूल भी इकट्ठे कर लिये मर्द भी निकल आए। नारों से दमिश्क गोंजने लगा। ख़लीफ़ा के हाशिये बरदारों को शहरियों का ये रवय्या पसन्द न आया। मगर शहरियों का सैलाब शहर के दरवाज़े पर टूट पड़ा था। लोग शहर की फ़सील पर चढ़ गये थे और सुलतान अय्यूबी को ख़ूश आमदीद कह रहे थे।

ख़लीफ़ा और उस के हवारियों को सब से बड़ी चोट ये पड़ी कि उन्हें ये इत्तेला मिली कि फ़ौज ने सुलतान अय्यूबी के मुक़ाबले में आने से इन्कार कर दिया है। सिपाहियों तक तो हुक्म ही नहीं पहुंचा था। इंकार करने वाले सालार और दीगर कमाण्डर थे। कमाण्डरों में कुछ एसे थे जो उमरा के परवुरदा थे। वह अपने दसतों को तैयारी का हुक्म देने लगे तो ख़लीफ़ा मुख़ालिफ़ कमाण्डरों ने उन्हें ख़बर दार कर दिया कि उन्हों ने सुलतान अय्यूबी के ख़िलाफ़ हथ्यार उठाए तो उन्हें घोड़ों के पीछे बांध कर शहर में घसीटा जाएगा। तीन चार कमाण्डरों ने एक दूसरे के ख़िलाफ़ तलवारें निकाल लीं। मामला ख़ून ख़राबे तक पहुंचने वाला था कि ज़ंगी की बेवह आन पहुंची। ये औरत पागलों की तरह दौड़ रही थी। वह घोड़े पर सवार थी घोड़ा बूरी तरह हांप रहा था वह देखने आई थी कि फ़ौज किया कर रही है। कहीं ख़ाना जंगी की सूरत तो पैदा नहीं होगई उस ने ये मनज़र देखा कि तीन चार कमाण्डर तलवारें निकाल कर एक दूसरे को ललकार रहे थे और दूसरे बीच बचाव कर रहे थे उन में तौफ़ीक़ जव्वाद भी था। ज़ंगी की बेवह को देखते ही वह दौड़ कर उस तक गया। और कहा – " आप यहां किया कर रही हैं।"

"यहां किया हो रहा है?" उस अज़ीम मुजाहिदा ने पूछा–" किया फ़ौज सुलतान अय्यूबी के इसतक़बाल के लिये जा रही है या मुक़ाबले के लिये?"

" फ़ौज़ नहीं जा रही।" तौफ़ीक़ जव्वाद ने कहा–" हम ने ख़लीफ़ा के हुक्म की तामील नही की। ये लोग आपस में लड़ना चाहते हैं।। उन में दो ख़लीफ़ा के वफ़ादार हैं।"

ज़ंगी की बेवह घोड़े से कूद कर उतरी और उन कमाण्डरों के दरमियान आगई जो एक दूसरे को ललकार रहे थे। उस औरत ने अपना सर नंगा कर दिया और उन से चिल्ला कर कहा–" बेग़ैरतो! पहले इस सर को तन से जुदा करो। अपनी मां का सर इस मिट्टी में फेंको फिर काफ़िरों की हिमायत में लड़ना। तुम उन बेटियों को भूल गये जिन्हे काफ़िर उठा कर ले गए थे। तुम अपनी उन बच्चियों को भूल गए हो जो काफ़िरों की दरिन्दगी से मर चुकी हैं। तुम किस की हिमायत में एक दूसरे के ख़िलाफ़ तलवारें निकाले हुए हो? मेरे बेटे के वफ़ादार काफ़िर है। आओ पहले मेरी गर्दन उड़ाओ। फिर अय्यूबी के मुक़ाबले में जाना।"

ज़ंगी की बेवह के आंसू बह रहे थे। मुहं से झाग फुट रही थी। कमाण्डरों ने तलवारें नियामों मे डाल लीं और सर झुका कर इधर उधर हो गये।

" किया फ़ौज ने हुक्म अदूली की है?" ये ख़लीफ़ा के एक मुशीर की घबराई हुई आवाज़ थी। जिस ने ख़लीफ़ा के दरबार में सन्नाटा तारी कर दिया था।

" मुहाफ़िज़ों के दसते बाहर निकालो।" एक अमीर ने गुस्से से कहा–" जम कर मुक़ाबला करो।"

थोड़ी ही देर बाद मुहाफिज़ों के दसते तैयार हो गए। उस वक़्त तक शहरियों का हुजूम और ज़यादा बढ़ गया था। औरतें चिल्ला रहीं थीं–" दरवाज़े खोल दो। हमारी इसमतों का पासबान आया है।" मर्द नारे लगा रहे थे मुहाफ़िज़ दसतों को आगे बढ़ने का रासता नहीं मिल रहा था। उस वक़्त ख़िलाफ़त का काज़ी कमालुद्दीन सामने आगया। वह ख़लीफ़ा के

दरबार में गया। काज़ी की हैसियत सब से ऊंची और काबिले इहतराम समझी जाती थी। उस ने खलीफ़ा से कहा कि अगर उस ने सलाहुद्दीन अय्यूबी के मुकाबले के लिये अपनी फ़ौज भेजी तो शहरी उस फ़ौज पर टूट पड़ेंगे। इस से ज़यादा तर नुकसान शहरियों का होगा। खाना जंगी होगी। अपने हाथों अपने बच्चों और औरतों को मरवाने के इलावह सब से बड़ा नुकसान ये होगा कि सलीबी फौज जो यहां से दूर नहीं किसी मज़ाहिमत के बग़ैर अन्दर आ जाएगी। फिर आप रहेंगे न आप की ख़िलाफ़त। ईंट से ईंट बज जाएगी। शरिअत का हुक्म ये है कि भाई भाई के खिलाफ़ नहीं लड़ सकता। ज़रा बाहर आकर लोगों की बेताबीयां देखें। किया आप इस तुफ़ान को रोक लेगें?"

"शहर की चाबी मेरे हवाले करदें।"— काज़ी कमालुद्दीन ने कहा।

चाबी काज़ी के हवाले कर दी गई। उस ने अपने हाथों शहर का दरवाज़ा खोला। शहरियों का हुजूम रुके हुए सैलाब की तरह बाहर निकला। काज़ी कमालुद्दीन ने चाबी सुलतान अय्यूबी के हवाले कर दी। सुलतान अय्यूबी ने दो ज़ानो होकर काज़ी के हाथ चूमे और उस के साथ शहर में दाख़िल हुआ। और जब नूरूद्दीन ज़ंगी की बेवह सामने आई तो सुलतान अय्यूबी की सिसकियां निकल गईं। ज़ंगी की बेवह उस से लिपट गई और बच्चों की तरह बिलबिलाने लगी। उस की हिचकियां थम नही रही थीं। सुलतान अय्यूबी के सवारों पर औरतों ने फूल फैंके। बलाए लीं। और उन्हें जूलूस में अन्दर ले गईं।

किले की चाबियां भी सुलतान अय्यूबी के हवाले कर दी गई। वह सब से पहले अपने घर गया। वह दमिश्क का रहने वाला था। बड़े जज़बाती अन्दाज़ से उस पुराने से मकान में दाख़िल हुआ जहां वह पैदा हुआ था।

❖

कुछ देर आराम करने के बाद उस ने फ़ौज के छोटे बड़े कमाण्डरों को अपने मकान में बुलाया। उन के साथ बातें करके मालूम किया कि उन पर किस हद तक एअतमाद किया जा सकता है। फ़ौज की हालत और कैफ़ियत पूछी और अपने इहकाम जारी किये। इसी दौरान उसे इत्तेला मिली कि ख़लीफ़ा अपने वफ़ादार मुशीरों वज़ीरों और अमीरों के साथ लापता हो गया है। फ़ौज के दो तीन आला हुक्काम भी उस के साथ फ़रार हो गए थे। सुलतान अय्यूबी फ़ौरन उठा और फ़रार होने वालों के घरों पर छापा मरवाए। ये घर दर असल महल थे भागने वाले अपनी जाने बचा कर भागे थे। उन का माल व दौलत पीछे रह गया था। हरम की औरतें ,रक़ासाएं और ऐश व इशरत का सारा सामान पीछे रह गया था। सुलतान अय्यूबी ने उस तमाम दौलत पर कबज़ा करके उस में से कुछ बैतुल माल में दे दिया और ज़यादा तर ग़रीबों और अपाहिजों में तकसीम कर दिया।

उस ने ख़लीफ़ा और मफ़रूर उमरा वग़ैरह के तआकुब की ज़रूरत महसूस न की। उस ने मिस्र और शाम की वहदत यानी एक सलतनत का एलान कर दिया और अपने भाई तक़ीयुद्दीन को दमिश्क का अमीर मुकर्र कर दिया। दूसरे हिस्सों के नए गवरनर मुक़र्रर किये और उस सलतनत के इसतेहकाम और दिफ़ा के इन्तेज़ामात मे मसरूफ़ हो गया।

मगर उस की एंटली जिन्स की रिपार्टें उसे बता रही थीं। कि उस के उमरा जो अल मलीकुस सालेह के वफ़ा दार थे उसे चैन से नहीं बैठने देंगे। यूरोपी मुमालिक से आई हुई इत्तेलाआत से पता चला कि सलीबी बहुत बड़ा लशकर तैयार कर रहे हैं ज़िस से वह आलमे इसलाम पर फ़ैसला कुन हमला करेंगे। उस के लिये सब से बड़ा ख़तरह ये था कि उस के अपने उमरा उसे शिकस्त देने के लिए सलीबियों की राह देख रहे थे। लेहाज़ा उस के लिए ज़रूरी था कि पहले उन बाग़ियों को ठिकाने लगाए। ये मामूली सी मुहिम नहीं थी। दमिश्क की फ़ौज की अहलियत से वह वाक़िफ़ न था। उस ने फ़ौरी तौर पर उस फ़ौज की टरेनिंग शूरू करदी। उसे जहां लड़ना था। वह पहाड़ी इलाक़ा था। मौसमे सरमा में उन पहाड़ों पर बरफ़ भी पड़ती थी। और मौसमे सरमा आ रहा था।

क़ाहिरा और दमिश्क मे उसे एक फ़र्क़ नुमाया तौर पर नज़र आ रहार था। क़ाहिरा मे सलीबी और सूडानी जासूसों और तख़रीब कारी के ख़ुफ़िया अड्डे थे और वहां के लोगों पर सुलतान अय्यूबी को पूरी तरह भरोसा नहीं था। दमिश्क में भी सलीबी तख़रिब कार मौजूद थें लेकिन यहां कौम का बच्चा बच्चा उस के साथ था बल्कि उस के इशारे पर आग में कूद जाने को तैयार था। इस लिसये यहां के लोगों के मुतअल्लिक़ ये ख़तरा बहुत कम था कि वह दुशमन के जासूसों और तख़रीब कारों के आलाए कार बन जाऐंगे। दमिश्क और शाम के लोगों ने नूरूद्दीन ज़ंगी के ज़माने में पुर वक़ार ज़िन्दगी गुज़ारी थी। उस की वफ़ात के फ़ौरन बाद उन का ज़ाती वक़ार ख़त्म हो गया था। नये हुकमरानों ने उन्हें रिआया बना लिया था। अमीर वज़ीर ऐश व इशरत और ज़ाती सियासत बाज़ियों में मसरूफ़ हो गए। और इन्तेज़ामिया के हाकिम लोगों के लिये वबाले जान बन गए थे। क़ानून का इहतराम ख़त्म होना शूरू हो गया था कहबा ख़ाने और शराब ख़ाने खुल गए थे। चार पांच महीनों में लोगों का जीना हराम हो गया था अनाज तक की कमी हो गई थी। लोगों को पता चला कि अनाज बाहर जा रहा है। उमरा और वुज़रा ने अनाज दरपरदह अपने हाथों में ले लिया था और दर परदह बाहर कहीं भेज देते थे। बाज़ारों में हर चीज़ के भाओ चढ़ गये और लोग तंगदसती महसूस करने लगे थे।

वहां के लोग तंगदसती और फ़ाक़ा कशी तक बरादश्त करने को तैयार थे। लेकिन वह कौमी सतह से गिरने को तैयार नही थे। वह सलीबीयों के साथ दोसती करने पर आमादा नहीं हो सकते थे। वह महसूस करने लगे थे। कि उन के हुकमरान उन्हें दुशमन की झोली में डाल रहें हैं। नूरूद्दीन ज़ंगी के दौरे हुकूमत में झोंपड़ियों और फटे पुराने खेमों में रहने वालों को भी मालूम होता था कि सरकारी सतह पर किया हो रहा है। जंग की सूरत में वह मैदाने जंग की सूरते हाल से आगाह होते थे ज़ंगी के मरते ही लोगों को अछूत क़रार दे दिया गया था। उन्हें बता दिया गया था कि हुकूमत के उमूर के मुतअल्लिक़ किसी को इसतफ़सार की जुरअत नहीं होनी चाहिये। दो मस्जिदों के इमामों को सिर्फ़ इस लिये मस्जिदों से निकाल दिया गया था कि वह लोगों को ग़ैरत और हुर्रियत का वाज़ सुना रहे थे। ख़लीफ़ा के महल और दीगर सरकारी इमारतों

के करीब आना अवाम के लिये जुर्म करार दे दिया गया था। वही लोग जो नूरूद्दीन ज़ंगी को भी रास्ते मे रोक लिया करते और मुहाज़ों की ख़बर सुना करते थे। अब मामूली से सरकारी अहलेकार को भी देख कर हट जाया करते थे।

लोग घुटन महसूस करने लगे थे। जिहाद के नारे भी मरते जा रहे थे। नारे तो मर सकते हैं जज़्बे इतनी जल्दी नहीं मरा करते। लोगों ने चोरी छुपे मिल बैठ कर सोंचना शुरूअ कर दिया था कि वह किया करें। नूरूद्दीन ज़ंगी की बेवह ने औरतों की एक जमाअत बना ली थी। इन हालात और इस घूटन में उन्हें इत्तेला मिली कि सलाहुद्दीन अय्यूबी आ गया है और अप्नी फ़ौज साथ लाया है तो वह इसतक़बाल के लिये बाहर निकल आए और जब उन्हें पता चला कि ख़लीफ़ा सुलतान अय्यूबी को अपनी फ़ौज के ज़ोर से रोकना चाहता है तो लोग फ़ौज पर टूट पड़ने के लिये तैयार हो गए। ख़लीफ़ा के मुहाफ़िज़ दसते की उन्हों ने बहुत बे इज़्ज़ती की थी। यही वजह थी कि ख़लीफ़ा अलमलिकुस सालेह और उस के हवारी अमीर चोरों की तरह दमिश्क़ से भाग गए थे।— और अब लोग सुलतान अय्यूबी पर जानें फ़िदा करने को बेताब थे। लोगों की इस जज़बाती कैफ़ियात ने सुलतान अय्यूबी का काम आसान कर दिया था।

❖

औरतों में क़ौमी जज़्बा पहले से ही था अब ये जज़्बा दहकते अंगारे बन गये। जवां साल लड़कियों का एक वफ़्द सुलतान अय्यूबी के पास गया। और ये अरजदाश्त पेश की कि लड़कियों को मुहाज़ के साथ भेजा जाए और उन्हें असकरी तरबियत दी जाए। वह ज़ख़मियों की मरहम पट्टी के इलावा लड़ना भी चाहती थीं। सुलतान अय्यूबी ने उन के जज़्बे को सराहते हुए कहा–"मुझे जिस रोज़ तुम्हारी ज़रूरत पड़ी तुम्हारे घरों से निकाल लुगां। अभी तुम्हारा मुहाज़ घर है। मैं तुम्हें घरों का क़ैदी नही बनाना चाहता। अगर तुम माएं हो तो बच्चों को मुजाहिद बनाओ। अगर तुम बहनें हो तो भाईयों को इसलाम का पासबान बनाओ। मैं तुम्हारी असकरी तरबियत का बन्दोबस्त करदुंगा मगर ये न भूलना के तुमहें घरों का निज़ाम संभालना हैं"–ऐसी चन्द और बातें करके उसे जैसे याद आ गया हो। उस ने कहा–" एक मुहाज़ और है जिस पर तुम काम कर सकती हो। तुम ने सुना होग कि हम ने ख़लीफ़ा के महल और अमीरों, वज़ीरों और हाकिमों के घरों से बहुत सी लड़कियां बर आमद की हैं। उन की तादाद दो तीन नहीं दो तीन सौ है। हम ने उन्हें आज़ाद कर दिया था। वह यहीं कहीं शहर मे या गिर्द व नवाह में होंगी। मालूम नही वह कहां कहां की रहने वाली थीं। और अब कहां कहां ख़राब होती फिर रही हैं। मैं इन ज़रा ज़रा से मसअलों की तरफ़ तवज्जह नही दे सकता। मेरे सामने बड़े बड़े ऊंचे पहाड़ खड़े हैं। मैं ये काम तुम्हारे सुपुर्द करता हूं कि लड़कियों को तलाश करो। उन मे बहुत सी एसी होंगी जिन्हें ख़रीद कर या अग़वा कर के हरमों मे दाख़िल किया गया होगा। अब उनका मुसतक़बिल यही है कि वह ख़ुफ़िया क़हबा ख़ानों में चली जाऐंगी। सराए मे मुसाफ़िरों की ख़िदमत करेंगी और ज़लील व

ख़्वार होती फिरेंगी। उन के साथ कोई शादी नहीं करेगा। उन्हें ढूंढो और उन में खोई हुई इज़्ज़त अज़ सरे नौ पैदा करके उन की शादियों का इन्तेज़ाम करो।"

लड़कियों ने इस मुहिम का आग़ाज़ कर दिया उन्हों ने अपने घरों के मर्दों की मदद हासिल कर ली और चन्द दिनों में कई एक लड़कियां बरआमद करके उन्हें अपने घरों में रख कर उन की तरबियत शूरूअ कर दी। उन बद नसीब लड़कियों में सेहर नाम की एक लड़की थी जिसे ज़बरदसती रक़्क़ासा बनाया गया था। उसे एक अमीर के घर से बरआमद करके रिहा किया गया था। उस ने एक ग़रीब से घराने में पनाह ले रखी थी। इत्तेफ़ाक़ से लड़कियों को पता चला तो उसे वहां से ले आईं। उस ने जब देखा कि दमिश्क की लड़कियां बाक़ाइदा फ़ौज की तरह काम कर रही हैं तो उस की सोई हुई ग़ैरत बेदार होगई और उस में जज़्बा ए इनतक़ाम भी पैदा हो गया। उस ने लड़कियों को बताया कि उस के साथ की एक रक़्क़ासा सराए के मालिक के पास है। सेहर सराए के मालिक को जानती थी। उस ने बताया कि ये आदमी सलीबीयों का जासूस है। उस ने एक तह ख़ाना बना रखा है। जहां फ़िदाई (हशीशीन) और सलीबी जासूस रातों को जाते हैं। रक़्स होता है और शराब के मटके ख़ाली होते हैं। सेहर को भी एक रात वहां ले जाया गया था। उस ने कहा– "मैं उन जासूसों को पकड़वा सकती हूं लेकिन मैं उन्हें पकड़वाना नहीं चाहती। सराए के मालिक को उनके साथ अपने हाथों क़त्ल करना चाहती हूं। मगर ये काम मैं अकेले नहीं कर सकती। तुम मेरा साथ दो।'

लड़कियां तैयार हो गईं। उन्होंन ने एक मनसूबा तैयार कर लिया। उस के मुताबिक़ एक शाम सेहर परदे में सराए के मालिक के पास चली गई। वह उसे देख कर बहुत ख़ुश हुआ। सेहर ने कहा–" मैं फ़ौरन तुम्हारे पास पहुंच जाती लेकिन शहर में पकड़ धकड़ हो रही थी। मुझे डर था कि मैं तुम्हारे पास आई तो तुम भी पकड़े जाओगे। मैं एक ग़रीब से घराने में यतीम लड़की बन कर छुपी रही। अब हालात साफ़ हो गए हैं। तुम पर किसी ने शक नही किया इस लिये तुम्हारे पास आगइ हूं।"

सराए का मालिक उसे अपनी रक़्क़सा के पास ले गया। वह भी बहुत ख़ूश हुई उस शाम के बाद वह चन्द रातें वहीं रहीं। उस ने देखा कि ख़लीफ़ा और एय्याश उमरा के चले जाने और सुलतान अय्यूबी के इतने सख़्त इहकाम के बावजूद सराए के तह ख़ाने की रौनक़ वही थी। इस में कोई फ़र्क़ नही आया था। मुसाफ़िर अपने कमरों मे सो जाते थे। तो तह ख़ाने की दुनया आबाद हो जाती थी। वहां अब भी सलीबी जासूस और फ़िदाई आते थे। सेहर उन का दिल लुभाती रही। और रातों को नाचती और उन्हें शराब पीलाती रही। ये लोग मुसाफ़िरों के बहरूप में सराए में आते थे। सेहर ने ये भी देख लिया था कि रात को सराए के बाहर पहरे का इन्तेज़ाम भी होता है ताकि कोई ख़तरा नज़र आए तो तह ख़ाने तक कबल अज़ वक़्त इत्तेला पहुंचा दी जाए। सेहर को वहां क़ैद कर लिया गया था वह अकेली बाहर नहीं जा सकती थी। वह दिल पर पत्थर रख कर वहां नाचती रही। वह मायूस हो गई थी कि वह

इन्तक़ाम लेने आई थी। मगर क़ैद हो गई । उस ने किसी पर अपनी मायूसी का इज़हार न होने दिया। उस से ये फ़ाइदा हुआ कि वह लोग उस पर एअतबार करने लगे । बाज़ राज़ की बातें भी उस के सामने कर गुज़रते थे।

एक रात तह ख़ाने की महफ़िल मे एक सलीबी जासूस ने सराए के मलिक से कहा –" हम इन दो लड़कियों से उकता गए हैं। कोई नई चीज़ लाओ।"

सेहर और दुसरी रक़्क़ासा भी वहीं थी। दूसरी रक़्क़ासा को तो अफ़सोस हुआ होगा। सेहर को उम्मीद की एक किरन नज़र आ गई। सराए के मालिक ने कहा कि सलाहुद्दीन अय्यूबी ने ऐसी फ़िज़ा पैदा कर दी है कि अब दमिश्क़ में कोई और रक़्क़ासा या कोई और नई चीज़ नहीं मिल सकेगी।

" मिल कियों नही सके गी?"—सेहर ने कहा–" जिन नाचने गाने वालियें को अमीरों के घरों से पकड़ कर आज़ाद करदिया गया था वह अभी यहीं हैं। मेरी तरह वह भी छुपी हुई हैं। अगर तुम लोग मुझे दो तीन रोज़ के लिये बाहर जाने दो तो मैं उन्हें परदा दार ख़्वातिन के भेस में यहां ले आऊंगी।"

सेहर को इस वक़्त तक क़ाबिले एअतमाद समझ लिया गया था। उन्हों ने उसे इजाज़त दे दी और कुछ रक़म भी दे दी। सुबह हुई तो सेहर परदे में बाहर निकल गई।

❖

चार पांच रोज़ बाद सराए के चोर दरवाज़े से आठ मसतूरात दाख़िल हुई और सराए के मालिक के कमरे में चली गई। मसतूरात ने बूरका नुमा लिबादे ओढ़ रखे थे जिन मे उन के चेहरे छुपे हुए थे। कमरे में आकर सब ने नक़ाब उठा दिये। सराए के मालिक ने आंखें मल कर उन्हें देखा। उसे यक़ीन नही आ रहा था कि ये सब जवान लड़कियां थीं और एक से एक बढ़ कर ख़ूबसूरत । उन के साथ सेहर थी। उस ने बताया कि उन मे से कौन किस के पास थी। और ये भी बताया कि इन का रक़्स देख कर और गाना सुन कर तुम पर मदहोशी तारी हो जाएगी। उस ने कहा–" आज रात अपने तमाम दोस्तों को तह ख़ाने में बुला लो।"

साराए का मालिक पागलों की तरह उठ दौड़ा। वह अपने साथियों को रात तह ख़ाने मे आने को कहने गया था। सेहर लड़कियों को दूसरी रक़ासा के पास ले गई । वह रक़ासा उन्हें देख कर हैरान हुई कि वह उन मे से किसी को भी नहीं जानती थी। उस रक़ासा ने एक लड़की के साथ अपनी मख़सूस इसतलाहों में बात की तो वह लड़की ज़रा झेंप गई सेहर ने उसे कहा–" ये डरी हुई हैं। मैं इन्हें ज़मीन के नीचे से निकाल कर लाई हूं। रात को इन का फ़न देख कर तुम समझ जाओगी कि ये कौन हैं और कहां से आई हैं।"

वह रक़ासा मुतमईन न हुई। उसे कुछ शक होता या न होता उसे ये अफ़सोस ज़रूर था कि इन लड़कि यों के सामने उस की क़दर व क़ीमत ख़त्म हो गई है। उस ने सेहर को अपने कमरे में ले जाकर कहा–" मालूम होता है तुम्हारा दिमाग़ ख़राब हो गया है। ये नई लड़कियां हैं और ख़ूबसूरत भी हैं। उन के मुक़ाबले में हम दोनो बहुत ही पूरानी नज़र आएंगी। हमारी

क़ीमत इतनी गिर जाएगी कि ये लोग हमें पुराने सामान की तरह उठा कर फैंक देंगे। तुम उन्हें कहां से लाई हो? कियों ले आई हो? तुम ने बहुत बड़ी ग़लती की है।"

"मैं दर असल अपनी मुशक्कत कम करना चाहती हूं।"सेहर ने जवाब दिया–" उन के आ जाने से हम दोनों का काम कम हो जाएगा।"

दूसरी रक़ासा उस की ये दलील नही मान रही थी। सेहर के पास और कोई दलील नही थी जिस से वह उसे मुतमईन करती। दोनों में तकरार हो गई। दूसरी रक़्क़ासा गुस्से में आगई और बोली–" मैं सराए के मालिक से कहुंगी ये लड़कियां नाचने वाली नहीं, ये इसमत फ़रोश लड़कियां है। जिन्हें इस नाज़ुक जगह नहीं आना चाहिये कियोंकि तह ख़ाने के राज़ को ख़तरे में डाल सकती हैं। इन नौजवान लड़कियों का किया भरोसा?"– ये रक़ासा बहुत तजुरबा कार और चालाक थी। उस ने सेहर की ज़बान बन्द करदी फिर भी सेहर इस की बात नही मान रही थी। उस रक़ासा ने आख़िर में ये धमकी दी–" अगर तु उन्हें यहां से चलता नही करोगी तो मैं यहां आने वालों को ये कहकर आने से रोक दुंगी कि तुम उन्हें गिरफतार कराने के लिये उन लड़कियों का जाल फैला रही हो।"

सेहर परीशान हो गई। दूसरी रक़ासा गुस्से में बाहर जाने को उठी और दरवाज़े की तरफ़ चली। सेहर ने फुरती से अपनी कमीज़ के नीचे हाथ डाला और कमर बन्द से खंजर निकाल कर दूसरी रक़ासा की पीठ में घोंप दिया। वह ज़ख़्म खाकर घूमी तो सेहर ने खंजर उस के दिल में उतार दिया और दांत पीस कर कहा–" मैं तुझे क़त्ल नहीं करना चाहती थी। बदबख़्त तुझे भी मेरे ही हाथों मरना था।"– उस ने उसी के कपड़ों से खंजर साफ़ किया। रक़ासा की लाश पर उस के पलंग से बिसतर उठा कर फैंक दिया और दरवाज़ा बाहर से बन्दर करके अपने कमरे में चली गई। अपने ख़ून आलूद कपड़े बदले और ख़ंजर कमर में उड़स कर कमीज़ के नीचे छुपा दिया।

❖

रात सराए के मालिक के इलावह छे आदमी तह ख़ाने के इस कमरे में आए जहां रक़्स और शराब का दौर चला करता था। सराए के मालिक ने सेहर से दूसरी रक़्क़ासा के मुतअल्लिक़ पूछा तो सेहर ने नफ़रत के लहजे में कहा–" वह इन लड़कियों को देख कर जल भून गई है। वह अपने आप को इन सब से ज़्यादा हसीन समझती है। आज रात वह यहां न ही आए तो अच्छा है महफ़िल के रंग में भंग डालेगी।"

"लानत भेजो!" सराए के मालिक ने कहा–" कल उस से निमट लुंगा। उसे पड़ी रहने दो अपने कमरे में।"

सेहर ने उन छे आदमियों से कहा–" उन लड़कियों के पास अच्छे कपड़े नहीं हैं। उन का लिबास तुम्हारे ज़िम्में है। आज रात वह जिन कपड़ों में हैं। उन्हीं कपड़ो में तुम्हारे सामने आएंगी।"

उन्हो ने जब लड़कियों को देखा तो भूल ही गए कि उन्हों ने कैसे कपड़े पहन रखे हैं। लड़कियां चेहरों से पेशा वर नाचने वाली गाने वाली लगती ही नही थीं। उन के चेहरे तरो

ताज़ह और मासूम थे। उन के बालों को भी नही सजाया गया था। उन की कोई हरकत ज़ाहिर नही करती थी कि ये पेशा वर हैं। उन का अन्दाज़ सीधा सादा सा था। सेहर ने उन्हें कहा कि अपने मेहमानों को शराब पेश करो। वह जब सुराहियों से पियालों में शराब उंडेलने लगीं तो एक आदमी ने एक लड़की को छेड़ा। लड़की बिदक कर पीछे हट गई। उस का चेहरा लाल सुर्ख हो गया।

"सेहर!" उस आदमी ने कहा—" इन्हें कहां से लाई हो? ये किस के पास थीं?"

सेहर ने कहकहा लगाया और बोली—" अपना फन भूल गई हैं। ये सलाहुद्दीन अय्यूबी का खौफ है जो इन सब पर तारी है। अभी खुल जाएंगी।"

" सलाहुद्दीन अय्यूबी!" हमारे जाल में वह अब आया है। हम उसे उसी के अमीरो और सालारों से मरवाऐंगे।"— उस ने अपने एक साथी के कन्धे पर हाथ मार कर कहा—" इस का खंजर सलाहुद्दीन अय्यूबी के खून का पियासा है जानती हो ना इसे? ये हसन बिन सबाह की उम्मत से है। फिदाई!" उस ने एक लड़की की गाल पर हलकी सी थपक देकर कहा—" अय्यूबी का खौफ दिल से उतार दो। वह चन्द दिनों का मेहमान है।"

थोड़ी सी देर बाद शराब रंग दिखाने लगी और रक्स की फ़रमाइश हुई। लड़कियां सुराहियों और पियालों को इधर उधर करती और भरती उन छे आदमियों के पीछे हों गईं। अचानक सब ने कमीज़ों के नीचे हाथ डाले, खंजर निकाले। सेहर ने भी खंजर निकाल लिया था। उस ने सराए के मालिक पर वार किया और दूसरी ने छे आदमियों के पे दर पे वार करके लुढ़का दिया। किसी को भी संभलने की मोहलत न मिली। सेहर हर एक पर वार पे वार किये जा रही थी जैसे पागल हो गई हो— उस ने इंतक़ाम ले लिया।

ये लड़कियां शरीफ़ घराने की बेटियां थीं जो सुलतान अय्यूबी के पास अर्ज़ दाश्त ले कर गई थीं। कि वह मर्दों के दोश बदोश लड़ना चाहती हैं। उन्हों ने ही सेहर को एक गरीब घराने से बर बरामद किया था। उसने जब लड़कियों को जंगी पैमाने पर काम करते देखा तो उसे सराए के मालिक का खियाल आ गया था। उस ने लड़कियों को बता दिया था कि सराए का तह खाना जासूसों और तखरीब कारों का अड्डा है। उन लड़कियों की मदद से वह उन्हें पकड़वाना चाहती थी। मगर वहां गई तो सराए के मालिक नेइस का बाहर निकलना बन्द कर दिया। जासूसों की इस फ़रमाइश पर कि नई लड़कियां लाओ। उसे मौका मिल गया। उसे नई लड़कियां लाने की इजाजत मिल गई उस ने उन लड़कियों से ज़िक्र किया और कहा कि वह नई लड़कियां बन कर चलें और उन आदमियों को खत्म किया जाए। लड़कियां तैयार हों गईं। उन्होंने इसकीम बनाई और उस के साथ चली गईं। उन्हों ने ये सोचा ही नही था कि उन छे आदमियों को अपने जाल में फांस कर गिरफ़्तार किया जाए। अगर उन्हें गिरफ़्तार कराया जाता तो उन से बड़ी कीमती मालूमात हासिल की जा सकती थीं और उन से निशानदेही करवाके उन के कई और साथी पकड़वाए जा सकते थे। मगर लड़कियां जोशीली और जज़बाती थीं। वह इतना ही जानती थीं कि दुशमन को हलाक किया जाता है। वह अपने

जज़्बाए जिहाद की तसकीन करना चाहती थीं और सेहर का सीना जज़्बा इनतक़ाम से फटा जा रहा था। वह उन्हें अपने हाथों से क़त्ल करने को बेताब थी। उस ने दूसरी रक़ासा को इसी लिये क़त्ल किया था कि उन लड़कियों की असलीयत बे नक़ाब होने का ख़तरा पैदा हो गया था। उन की असलियत तो बेनक़ाब हो ही चली थी। उन्हें इस क़िस्म की ग़लीज़ महफ़िल के तौर तरीक़ों और शराब पिलाने के अन्दाज़ से वाक़फ़ियत ही नहीं थी। उन्हों ने बरवक़्त ख़ंजर निकाल लिये और अपने मक़सद में कामयाब हो गईं।

वह सब चोर दरवाज़े से निकलीं और अपने ठिकाने पर पहुंच गईं। उन की रिपोर्ट पर कुछ देर बाद फ़ौज ने सराए पर छापा मारा और तह ख़ाने में गए। वहां लाशें पड़ी थीं। तह ख़ाने के कमरों की तलाशी ली गई एक कमरे से दूसरी रक़ासा की लाश बरआमद हुई और सराए के मालिक के कमरे से कई सबूत मिले कि ये लोग जासूस और तख़रीब कार थे— मगर आने वाला वक़्त सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी और सलतनते इसलामिया के लिये तारीख़ के सब से बड़े ख़तरे ला रहा था। और सुलतान अय्यूबी दिन रात जंगी मनसूबा बन्दी और फ़ौज की ट्रेनिंग में मसरूफ़ रहता था।

❖❖

❖❖❖
❖❖
❖